

॥ श्री ॥

मदनकोष ।

अर्थात्

जीवनचरित्रस्तोम ।

(BEING A DICTIONARY OF UNIVERSAL
BIOGRAPHY FOR SANSKRIT AND
HINDI READERS

जिसमें

संग्रहके १००० महानुभावोंके चरित्र संगृहीत हैं ।

जिसको

संस्कृत व हिंदी पाठकोंके हितार्थ,

श्रीमान् पण्डित मदनलाल तिवारी असिस्टन्ट
टीचर गवर्नमेन्ट हाईस्कूल इटावाने
निर्माण किया,

और

खेमराज श्रीकृष्णदासके
वर्षई "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें
मुद्रितकराय प्रसिद्ध किया ।

FIRST EDITION

Copies 1,000

संवत् १९६४, सम १९०७

प्रमुक्तिको-रक्षित है



प्रस्तावना ।

—०×०—

पश्चिमोत्तर व अथय देशके लफटिनेट गवरनर, सर ए पी मेकडानल साहब
यहादुरने शिक्षाविभागी रिपोर्टका गुणदोष विवेचन करते हुए, रेजोल्युशन नं० १८८
के द्वारा नैनीतालसे ८ अक्टोबर, सन् १९०१ को टचेजनाके साथ सूचना दी थी कि
शी यमापामें अच्छे २ जीवनचरित लिखाजाना अत्यावश्यक है, क्योंकि विचार-
शील चित्तवृत्ति छात्रोंपर इतना प्रमान किसी प्रकारके साहित्यका नहीं पडता है जि-
सना कि अच्छे २ चरित्रोंका ।

लार्डसाहबके पूर्वोक्त कथनसे प्रेरितहोकर मैंने यह रचना की जो अपने ढङ्गकी अनू-
ठी है क्योंकि इसमें ससारके १ सहस्र श्रेष्ठजनोंके चरित है जिनमेंसे बहुतसे संस्कृत व
हिंदी साहित्यसे सम्बन्ध रखने वाले हैं ।

ग्रन्थका सामग्री केवल अत्यंत विश्वसनीय स्रोतोंसे एकत्र की गई है और प्राचीन तथा
सहस्रमय चरित्रोंके लिखनेमें पुरातत्त्ववेत्ताओंके अन्वेषणका भलीभांति व्यवहार
किया गया है । जिन बातोंके विषयमें प्रामाणिक विद्वानोंका मतभेद है, उनके निर्णय
करनेमें केवल अधिक बुद्धिसम्मत तथा न्यायसगत मतोंको ग्रहण किया है ।

बहुधा स्थलोंमें तो चरितान्वेषणके लिये केवल मूल स्रोतोंका ही आश्रय लिया है
और यदि कोई चरित सग्रहग्रंथोंके आधारपर लिखा है तो उसकी शुद्धताकी परीक्षा
सावधानीसे कर ली है ।

यह ग्रन्थ अध्यापक, जिज्ञासु तथा पाठकोंका समानरूपितसे लाभदायी होगा
क्योंकि बहुतसे चरित विस्तृतरूपसे भी लिखे हैं ।

जिज्ञासुओंकी आवश्यकता पूरक इस प्रकारका यह पहलाही ग्रन्थ है । संस्कृत और
हिंदी साहित्य शिक्षाकी इससे बड़ी उन्नति होगी और पढ़नेवाली दुनियापर नीति तथा
बुद्धिमत्ताका, निस्संदेह यह ग्रन्थ स्रोतप्रोत्तहै, अवश्यही प्रभाव पड़ेगा ।

इटावा
७ मार्च, १९०७।

मदनलाल तिवारी

D G D I G A T E S

WITH

HIS HIGHNESS' GRACIOUS PERMISSION

TO

*MAHARAJ ADHIRAJ SIR SHIVAJI RAO HOLKER,
BAHADUR, G C S I*

RETIRED

MAHARAJA OF INDORE

AS A HUMBLE TAKEN OF



GREAT REGARD FOR HIS HIGHNESS' HIGH
MINDEDNESS, GENEROSITY, & LOVE
OF HINDI LITERATURE

BY

HIS HIGHNESS MOST DEVOTED ADMIRER & WELL WISHER
PANDIT MADAN LAL TEWARI
THE AUTHOR

PREFACE

In Resolution No $\frac{448}{XV \frac{4}{b}}$ dated Naun Tal, the 8th October 1901, Sir A. P Macdonnel, the then Lieutenant Governor of N W P & Oudh, very emphatically pointed out the need of fairly good biographies being written in Vernacular and observed that no form of literature impresses a boy of a thoughtful turn of mind so much as a well written biography

Influenced by these remarks of the Lieutenant Governor, I have written this book which is the first one of its kind in Hindi, in as much as, it contains in alphabetical order the lives of about one thousand celebrities of the world, with Special reference to Sanscrit and Hindi literature

Information has been collected from the best and most reliable sources and the researches of modern scholars have been freely made use of in writing the lives of prehistoric personages

Only the most reasonable and logical explanations have been accepted to settle those points upon which the best authorities are at variance

On most occasions I have had recourse to original sources of information and where I have borrowed from other compilers I have always taken care to be assured of their accuracy

The book may with equal advantage be employed both for reference and general reading most of the biographies being written at full length

As a work of reference, it will supply the long-felt want, and will greatly improve the Study of Sanscrit and Hindi languages. The moral tone which pervades the whole work will not be without its influence on the reading public

Etawah

The 7th March 1907

MADAN LAL TEWARI

❀ जीवनचरित्रस्तोम ❀

(मदनकोष.)



अकबर (मुगलसम्राट् विह्वी)—जय बादशाह हुमायूँ शेरशाह सूरेसे हारकर ईरानकी तरफ भागाजाता था तो रास्तेमें स ई १५४२ का साल अमरकोटके किल्लेमें उसके अकबर पैदा हुआ । अकबरने बचपन में ही अस्त्र शस्त्र चढाना तथा घोड़ेपर चढ़ना सीखा और १३ वर्षकी उम्रमें दिल्लीका तख्त पाया । मुगलोंका राज्य उस समय केषल दिह्वी और आगरेके भास पासही था कुछ कालतक राजकाज धैरमझौँ खानखौँनावी नदसे होता रहा पर उसके अन्यायसे लोग धोड़ेही दिनोंमें उकळा उठे एष स ई १५६० में अकबरने सब काम अपने कानूमें करलिया और अन्य मुखल्मान बादशाहोंकी अपेक्षा हिन्दुओंके बृहत् बृदकोभी अपने द्वार तथा सेनामें अधिक उच्चपद दिये, राजपूर्वसे शादी व्यवहार किये, गोहिंसा बंदकी, तीर्थोंके कर माफ किये, सब राजपूत राजोंको महाराना तिसौद्धके सिवाय घशमें करके उनसे राजस्व लिया और हिन्दू मुखल्मानोंको मिलाकर सहजहीमें पंजाब, कश्मीर, काबुल, कंधार, गुजरात, बगाल, आसाम, उड़ीसा और खानदेश इत्यादि देश जीतकर अपने राज्यमें मिलाये फिर सब राज्यको सूबोंम बाटा, माल, गुजारी बसूल करनेका तथा प्रजाकी रक्षाका सुमबंध किया और जागीरोंकी जगह फौजके सिपाहियोंको नफ़द तनख्वाह देनेका नियम चलाया, बचपनकी शादी तथा सती होनेकी रसम बंद की प्रत्येक शहरमें हिंदू मुखल्मानोंके लिये पूथकूँ मोहताजखाने खोले, आगरेको अकबरशाह नाम से बसाकर अपनी राजधानी बनाया और प्रयाग तथा आगरेमें छाल पत्थरके किल्ले बनवाये । अकबर चाधु, संतोसे मिलता था, सब मतोंके सत्य विज्ञानी तथा ब्रह्मज्ञानी पंडितोंके शास्त्रार्थ सुनता था, किसी मत का विरोधी न था, हिंदू मुखल्मान सबही प्रसन्न थे, राजकाज न्याय और नीतिसे होता था, देखनेमें बड़ा स्वरूपवान्, गौरांग हृष्टपुष्ट, दयालु, मिलनसार, हृदयित और ताम्रशुद्धि पुरुषथा, स्वभाव परिश्रमी था, दिनमें ३० + ४० मील पैदल चल सकता था और शिकार खूब करता था । वषम ३मास पर्यंत मांस नहीं खाता था, रात दिनमें केषल ३ घंटे सोता था,

मंत्री सेनापति आठिकोसे मित्रता भाव रखता था, जो उससे मित्रता था यही जात्रता था कि बादशाह मुझको सबसे अधिक चाहता है। धीरे-धीरे, टोहर मल, राजागानसिंह, अम्बुलफल्म, फ़जी, अब्दुलरहीम खानखाना, मिर्जा गोकलताश तानसेन और खुर्राम दरारके नवरत्न थे। भवधर सन् १६०१ म मग, मगदेवक सबसे हाथ जोड़कर बोला "मेरा भवधर क्षमा करना और मेरा मित्रपत्न रहना"। मालगुजारी उसके वक्तम १७११ करोड़की थी। पिताकी अतिम वृद्धा देख शाहजादा खलीम जो पहिले बागी होगया था परावर गिरफ्तार और विकलहा फूट रोया। अकबरने उसे बड़ा छानसिल लगाया और कहा "बेटा पुगने नौकराकी प्रतिष्ठा करना और बेगमाकी तनख्वाह जारी रखना"। अकबरकी बर आगरेके पास सिधदरेके रोजेमें है जा लाल पथरका बनाहुमा है

अगस्त्यऋषि—ऋग्वेदम लिखा है कि, ऋषि मित्रावरुणके धीप्यसे जो उषशी अस्तराजो देखकर गिरा अगस्त्य तथा वसिष्ठऋषि पैदाहुये-ये विध्या बल पर्वतके समीप विध्याननवनमें गोदावरतट रहतेये-महाभारतम लिखा है कि राजा नहुप इहाँके शापसे सौपहुये-गमर्चंजरी वनवासके समय इनके आश्रमम पधारेये-ऋषण वेशवासियोंको इन्हाने अनेक प्रकारकी विद्या पढ़ाई थी-इनका पुत्र शतानंद निमिच्छुलथा पुरोहितता- भगहतसराय नामक एक खेड़ा जिलापेटाम है, लोग कहते हैं कि अगस्त्यमुनिने वहाँ बहुतकालतप तपस्या की थी-भगहत अपर्चंज अगस्त्यका है-स इ १६८५ म अफगानाने वहाँ पर सराय बनवाइ तपसे अगहतसराय कहलाया-विदुभ (बरार) के राजाकी, रापाभासे अगस्त्यऋषिने शारी की थी-रावण एडुग इनके वंशमे था-ऋषि पुलस्त्य इनके दादा थे-दक्षिण देशम्य सय राक्षस इनकी भाजा मानते थे-समुद्रको तीन चुल्लु करके पीजाने और उसको मृतदाग निफालकर ग्यारी करनेकी पुराणोक्त तथा इश्वरे विषयम है

अग्निमित्र (मगधदेशका राजा)-इसका भाप पुष्यमित्र मगधके मौर्यवंशी राजा बृहद्रथका सेनापतिया-बृहद्रथको यथकरये पुष्यमित्र मगधका राजा बना पुष्यमित्रके मरनवर अग्निमित्र उसका बेटा इसोसे १७० वर्ष पूव राजासहासन पर बैठा-यचि कालिकासने इसी अग्निमित्र और माह्यिकाकामे " मालविकाग्निमित्र " नाम नाटकमे घणन कियाहै-मालविका विदुभ की रानीकी सहोदरी परमहृदी मर्द्दात शास्त्रधी पूर्ण ज्ञाता थी

अजातशत्रू-ये अपने भाप विम्पसा मगध नरेशको मारकर ईसाके ४८५ वर्ष पूर्व गद्दीपरपैठा ३३ वर्ष राज्यकरये भापभी बलबसा राजप्रह इसकी राजधानी थी गौतम बुद्धने इसको अपना मतप्रहण कराया था इसका मक्षपर बेटमेसे ८ वर्ष पीछे महारामा बुद्धका परलोच हुआ

अजीतसिंह राठौर (जोधपुरनरेश) इनके पिता महाराज यश-
वर्तसिंहसे औरङ्गजेब मनमें शत्रुता रखता था एव औरंगजेबने तख्तपर बैठकर
उनको फापुरकी मुखेदारीपर भेजदिया था काबुलहीम वीरपिताके अंगसे वीर
पुत्र अजीतसिंहने गर्भ धारण किया पर इनको पेटहीम छोड़कर यशवर्त
सिंहजीका घेहात होगया जब ये जन्मे तो औरंगजेबने पिताका बदला उसके
बालक पुत्रसे लेना चाहा निदान जोधपुरकी रियासत जप्तकरली और
अजीतसिंहको कैद करनेका ठहराव किया यह देख यशवर्तसिंहके
साथियाने अजीतसिंहको भावू पशतपर जा छिपाया और यशवर्तसिंहकी
रानियाने प्रतिष्ठा बचानेकेलिये जान खोदी बड़ेहोकर अजीतसिंहने उदय
पुरकी एक राजकुमारीसे शादी की और धीरे २ अपने राज्यपर अधिकार
जमाया इतिहास साक्षी देताहै कि, पराक्रमी अजीतसिंहने औरंगजेबका
मान मर्दन करके एक समय दिल्लीमें ७ दिनतक राज्य किया था । स ई
१७०६ में अजीतसिंह और औरंगजेबम संधि होगइ जिससे अजीतसिंहने
बादशाहका आधिपत्य स्वीकार किया थोड़ेही दिनोंबाद अवसर पाकर
औरङ्गजेबने अजीतसिंहको उनके पुत्र वख्तसिंहके हाथसे मरवाहाला और
इसके बदलेमें वख्तसिंहको इहरका राज्य दिया अजीतसिंहकी ६४
रानिये पतिके मृतक शरीरके साथ सती होगई अजीतसिंहका महिष्ट और
छत्रुरी जोधपुरम देखने योग्य हैं

अङ्गरेजी (सिक्खाके द्वितीय गुरु)—इनके बाप फीरुमलखत्री फीरोज
पुरके हाकिमके काय्य करता थे । माताका नाम सुभराईजी था । स ई १५१० में
इनका विवाह हुआ जिससे २ पुत्र और २ पुत्री हुई । स ई १५३१ में गुरु
नानकके चले होगये । गुरु इनकी भक्तिसे ऐसे प्रसन्न हुये कि मरती समय निज
पुत्रोंकी अपेक्षा इन्हींको अपनी गद्दीका उत्तराधिकारी नियत किया । ये बड़े सत्य
वादी और दानीये जो कुछ खेलासे मिलता धर्मार्थ खचकर दिया जाता था ।
पहुँचे हुये साधू थे अनेक सिद्धताकी बातें इनके विषयमें प्रसिद्ध हैं । समाधी
इनकी अभीतक खंडौर नामक ग्राममें विद्यमान है जिसके खचके लिये १४५८ रु०
वार्षिक आपकी भूस्वामि सरकार अङ्गरेजीकी तरफसे माफ है । स ई १५०४
में जन्मे । स ई १५५० में मरे ।

अङ्गिराऋषि—१० मजापतियों तथा सप्तऋषियोग इनकी गणना है ।
बृहस्पति, मार्कण्डेय इत्यादि इनके पुत्र थे ऋग्वेदका नवीं मण्डल इन्होंने
मकट किया और एक धर्मशास्त्र स्मृति तथा एक ग्योतिष सिद्धांत बनाया
ये वर्णके ब्राह्मण थे पर इनके वंशधारियोंका स्वभाव ऋषियोंकासा था
सन्वति इनकी अनेक पीढियोंतक अङ्गिरानामसे पुष्परीजातीरही

अदीशुर-बंगालका राजा स ई १९४ में विद्यमान था (देखो यीरसेन)

अनङ्गपाल-बंजावके राजा जयपालका पुत्र घर्णका ब्राह्मण था । स ई के ११ वें शतकमें जयपालने सुलतान महिमुद्द गज़नवीसे हारकर राजपाट निजपुत्र अनङ्गपाल को सौंपदिया और अपना वेह भूमिमें हवन करादिया । मदि मुद्दने अनङ्गपालपरभी चढाईकी और बहुतसा माल लूटकर लेगया । कुछसमय पीछे महिमुद्दने अनङ्गपालपर फिर चढाई की इससमय यद्यपि राजाका कोष खाली था पर क्षत्रियोंने अपनी जान लड़ाई और क्षत्रानियोंने निज पतिपुत्राकी जो राजाकी फौजमें थे जेवर बँचकर और सूत फातकर रणभूमिमें सहायता की । अनङ्गपालवे मरनेपर महिमुद्दने उसके पुत्रजयपाल द्वितीयको परास्त करके स ई १००० में लाहौरका राज्य छीनलिया

अनङ्गमिदेव (उड़ीसाकाराजा)-इस गंगावंशी राजाने स ई ११७५ से १२०२ तक राज्य किया और पुरीम जगन्नाथका मंदिर बनवाया

अनन्तदेवज्ञ (ज्योतिषकार) विदर्भ प्रदेशान्तर्गत धर्मपुर निवासी चिन्तामणि वैशेष्य पुत्रथे- नीलकण्ठी नाम ज्योतिष ग्रंथके कर्ता ५० नीलकण्ठ वैशेष्य तथा मूर्त्तचिन्तामणि ग्रंथके कर्ता ५० राम वैशेष्य इनके पुत्रथे- ये वराहसे पार्श्वम भा बसे थे- जातकपञ्चति और कामधेनुगणितटीक इनके रथेग्रंथ हैं- अनन्तसुधारसायसारिणी नाम ज्योतिष ग्रंथके कर्ता अनन्तवैशेष्य वृसरे थे-स ई के १६ वें शतकमें हुए

अनन्यदास (भाषाकवि) अनन्ययोगप्रकाश नाम ग्रंथ इन्हींका रच्यारुआ है-ये जातिके कायस्थ किले बीकानेरमें पैदा हुएथे और अपने घरमें बैठे भगवद्भजन किया करतेथे- उस समय बीकानेरमें राजा रायासेइका राज्य था जिनकेभाई पृथ्वीराज बड़ेकवि, भगवद्भक्त और भयबर बादशाहके कृपा पात्रथे-इन्हीं पृथ्वीराजजीको एक समय घेराग्य टपघ्न हुआ और उन्होंने घेरवार त्यागनेकी तैयारी की-कुटुम्बी तथा मित्रादिकोंने घेरवारर मनको अनन्यदासजीसे मिलवाया-अनन्यजीके उपदेशसे तत्त्वज्ञानको प्राप्त होकर पृथ्वीराज पहिलेकी तरह सब कामफाज करनेलगे-अनन्यजीने जो उपदेश पृथ्वीराजको कियाथा वही "अनन्ययोगप्रकाश" में लिखा है

अनुभूतस्वरूपाचार्य (धैयाकरण)-सारम्यतर्घटिका नामक व्याख्येण ग्रंथके कर्ता-बंजावके रहनेवाले सारम्यत ब्राह्मणथे

अंप्यदीक्षित (धर्मप्रवक्त) द्रयणदेश वाली रङ्गराज मर्त्यके पुत्रथे-इनका जन्म विष्णुमर्षी १६ वीं शतान्दाम हुआ, ये दीवथे-अंरिण्ड नामक मत इनका पालाया हुआ है-विद्वानोंकी दृष्टिमें स्वर्ण प्रतिष्ठा-शैकरम्यामीये

समान है—इनके अनेक वंशधरोंने आग्निष्टोम, वाजपेय इत्यादि यह्नकरके मंत्री वीक्षित, वाजपेई इत्यादिकी पदवी प्राप्तकी थी—प्रायः सब शास्त्रोंपर इनके रचे ग्रंथ मिलते हैं—वेदांतम परिमल आदि, मीमांसामें विविरतापरादि, साहित्यमें वृत्तिवार्तिक, चित्रमीमांसा, कुवलयानन्द इत्यादि और शिवदशनामें शिवादेत्य मणिदीपिका—अनेक काव्य तथा स्तोत्रभी इन्होंने रचे थे और स्वरचित अनेक ग्रंथोंपर तिलकभी बनायेये—इनके रचे सब ग्रंथ मिठाकर १०१ मतीत होते हैं

अफलातून हकीम (Plato) यूनानमें एक बड़े फ़िलासोफ़र (ब्रह्महानी) होगये हैं । स ई ४२९ म अरिष्टनक्रेपर जेये-समें उत्पन्न हुये प्राचीन कालमें इनके पूर्वज यूनानके राजाये एवं इनका वंश प्रतिष्ठित था इन्होंने उच्चश्रेणीकी शिक्षा पाई थी और कविता रचपनहीसे करते थे २० वर्षकी उम्रमें सुकरातके शिष्यहो फ़िलासोफी पढ़ना शुरू किया और स्वरचित कविताकी पुस्तकोंको जलादिया बुद्धि इनकी अत्यंत तीव्र थी एवं थोड़ेही कालमें योग्य फ़िलासोफ़र होगये सुकरातके मरनेपर वेदाः उनको निकले और १० वर्षतक मिश्रम रहकर पढ़ते रहे बादको इटली जाकर फ़ीसा गोरसकी फ़िलासोफी पढ़ी ४० वर्षकी उम्रमें अपनी जन्म-भूमिको छोड़ आये और वहाँ एक पाठशाला स्थापनकरके विद्यार्थियोंको पढ़ाने लगे उम्रभर विवाहनहीं किया ८२ वर्षकी उम्रमें मरे बहुतसी पुस्तकें इनकी बनाई हुई हैं जिनमेंसे “फ़ेडो” अत्यंत प्रसिद्ध है सुकरातके अनेक उपदेश इन्होंने निररचित ग्रंथोंमें सम्मिलित किये हैं

अब्दुलरहिमानखाँ (सर अबदुर्रहमानखाँ, जी सी एस आई अमीर अफगानिस्तान) अमीर शेर अलीके पुत्र थे । स ई १८८० में ब्रिटिशगवर्न-मेंटकी मददसे काबुलकी गद्दीपरबैठे । अमीर काबुलको ब्रिटिशगवर्नमेंटकी तरफसे कितनेही लाख रुपया सालाना इसलिये दियाजाताहै कि यह इंदोस्नानकी सरहद्वर अमन सैन कायम रखे और रूससे न मिलें । अमीरके राज्यका विस्तार २७००० वर्गमीलहै, भाषाही प्राय ४९ लाख मनुष्योंकी है, फ़ौजमें २० हजार सवार, ४० हजार पैदल और २१० तोपें हैं । अफगानिस्तानकी ममा स्वभाषसेही लहाकू, हठीली, रक्तकी प्यासी, उपद्रवी और स्वदेश भक्तहै । अमीर काबुल या किसी विदेशी शत्रुके खिलाफ जहादका झंडा खड़े होतेही पेशा—जीवका छोट मध्यम स्वदेशकी रक्षाके लिये हायेपार लेकर निकल पढ़ते हैं । मनुष्य घघ करना और गाजर मूली घाटना उनके नजदीक बराबर है इसी लिये अमीर काबुलको उन लोगोंके साथ सदा घताव करने की जरूरत है । अमीर अब्दुर्रहमानके पूर्वजोंके समयमें वहाँ सदैव मारकाट ट खसोट, खून खराबी होती रहती थी, मुल्ला सदांग तथा जाति-

याके मुखिया मनमानी करते थे और अमीर काबुल के आधीन होते हुये भी स्वाधीनही रहतेये। राज कुटुम्बम टैपची आग सदैव धँधकती रहती थी। ऐसी कहर प्रजाको अब्दुलरहिमाख़ान गद्दापर बैठकर खूब ही डीला किया। छोटे-छोटे अपराधां पर उपद्रवियोंको फांसी देने, तोपसे उड़ा देने, हाथ पर नाक फान काटने, पत्थरोंकी भांगसे मार डारने, जीतादीवारमें चुनवा देने आदिने कहे दंड दिये। ऐसी कड़ी सजाय देनेसे उनका भातडू ऐसा जमगया था कि कठोरसे कहर लोगभी उनका नाम सुनतेही पैदाव घर वृत्त थे। निज भातडू बैठनेके साथही वे खूब जानसेथे कि प्रजाकी शांति नष्ट करना किसी भंशम भी राज्यके लिये अच्छा नहीं है क्य़ाकि अफगानिस्तानका छोटासा राज्य अंग्रेजा तथा रुसियाके बृहत् राज्याके बीचम है और घक्त पड़नेपर यही उपद्रवी राजा उसको बचासक्ती है। इसी लिये उन्होंने ब्यापागी उद्यमतिथे साथही निज प्रजाको नवीन नियमाके अनुसार सैनिय शिक्षा दिव धार, नये ढंगके हेनरीमटिनी रीफ्ल, गिफ्ट गन आदि भयानक शस्त्राये बनानेके लिये कारखाने खोले और थोड़ेही कालम अपनी पराक्रमी प्रजाको युद्ध शिक्षा और उत्तम शस्त्राले सुसजित करा दिया। उनकी राजनीति ऐसी विलक्षण थी कि स्वराज्यको भलेप्रकार दृढ करते हुये और निज प्रजाका भलीभाँति उखाड़ फटाते हुये भी कभी अंग्रेजों व रुसियाले थिगाइकी नोकत नहीं पहुँचनही। उन्होंने अपने हागतकी एक पुस्तक लिखी है जो शिक्षाजनक और रोचक है। स ई १००१ म ५८ वर्षकी उम्रम मर और उनके पुत्र हर्षी गुल्लाख़ान गद्दी पर बैठे

अब्दुलरहीम खानखाना (द्वार भयवर्गीके नगरम) धरमखौं खान खानाके पुत्र स ई १५५६ में लाहौरम पैदा हुये, युवायम्बार्हीम भयवले इनकी भर्ष्य योग्यता देख मिज़ाखानकी उपाधि दी और दाहिजादे सन्निमय मिशर इनको नियत किया

पश्चात् मुझफ्फरशाह सूबेदारक पराम्भ करनेके लिय इनको भेजा उत्त सूबदारका इन्ताने कड़ी शूरवीरताले परमन्त किया, जिसके पुरस्कारमें अयकरने प्रसन्न होकर इनको पत्र हजारांका मनउव और लान पावाया गिताय लिया और थोड़ेही दिन पीछे "यरीके मन्तनत व पपर निपुक्त किया इसके पात्र पे क्रम"न जैनपुर, मुल्तान और सिन्धी सूबेदारीकर रद और दक्षिणकी लद्दा में कड़ी वीरतासे लड़े अर्था, पारसी, तुर्कों, संभूत और भापाय बड़ विद्वान् थे और निदानों तथा शुर्णाजनाका सखार करते थे समा इनकी विद्वानसि भरीपुरी रहती थी इनके रचे संभूत ओर बहुत मटिन है और भाषाम ° रखने कथिन तथा दोदो अर्थात् लालित है नीति सम्बंधी सामयिक यथिताभी अपुवही थी है और रहिमन

या रहीम नामसे पदपूर्ति थी है भाषा पद्यमें " मदनाष्टक " ग्रंथ इन्होंने बनाया हुआ है फारसी दीवानभी इनका बनाया उत्तम है दरबार अकबरके नवरत्नमें इनकी गणना है अकबरके घाट जहाँगीरके समयमें २१ वर्ष जीवन धारणकरके ७० वर्षकी अवस्थामें दिल्लीमें मरे. एकदिन खानखानाने यह आधा दोहा बनाया " तागापन शोडैरैन प्रति सूर होहिंशभिगैत " दूसरा धरण रोज रात्रियो सोचा करते पर नहीं बनता था दिल्लीकी एक क्षत्रीनी ने दूसरा धरण इसप्रकार बनाय बहुतखा इनाम पाया 'तदपि अंधेरो है सखी पीठन देखे नैन" खानखानाका कुछ घृत्नांत गोस्वामीतुलसीदासके भी सम्बंधमें हुआ है (देखो तुलसीदास)

अब्दुलफजल (अकबरका प्रधान मंत्री) स इ १५५१ में शोरा मुव रिख नागोरीके घर भागरेमें पैदाहुआ १५ वर्षके होनेतक सब विद्या भले प्रकार सीख ली थी बुद्धि पेसी सीध थी कि जो इशारत एकदफे देखी याद होगइ ये बड़ा तत्त्वविद्वानी था एवं और विद्वानोंकी अपेक्षा इसकी सम्मति अधिक गौरव पाती थी अकबरने इसकोसबगुणसम्पन्न देख अपना वजीर बनाया ये अकबरके घंटोंको भागरेमें अधिक नहीं ठहरने देता था दूर २ सौकी गवनरीपर भेजता रहता था इसीलिये से सब इससे जलते थे शहिजादा सलीम जहाँगीरनामम लिखता है कि "अब्दुलफजल बादशाह सलामतके प्रेमसे हमारी तरफसे गवला करता रहता था इसीलिये नरसिंहदेवके उद्वेग नरेशके हाथसे मैंने उसको मरवाडाला " अब्दुलफजलका अधिकार राज्यकार्योंमें अधिक बढ़ा हुआ था इसीलिये उसके बहुतसे शत्रु थे । स इ १६०२ में जब अब्दुलफजल दक्षिणकी लडाइपरसे केवल ६ सिपाहियोंसहित लौटा आरहा थातब नरसिंहदेवने १० हजार सेनासाहेत उसे आ घेरा और यह बड़ी वीरतासे लड़कर कट मरा अकबरने अपने प्यारे मंत्रीके वध होनेकी खबर सुन बड़ा शोक किया साधारण मनुष्याकी तरह घंटों बराबर हिनकी भर २ रोया और नरसिंहदेवको सपरिवार नष्ट करनेके लिये फौज भेजी अब्दुलफजल बड़ाभारी विद्वान था अकबर नामा, अब्दुलफजल श्यादि फारसीके ग्रंथ उसके बनाये हैं मसिद्ध विद्वान फैजी उसका ज्येष्ठ भ्राता था अब्दुलफजल नास्तिक था

अब्दुलफैजफैजी—(मसिद्ध विद्वान) जोख सुवारिक नागोरीका घंटा तण अब्दुल फजलका बड़ा भाइ था । १४ वर्षकी अवस्थाम अर्धी फारसी तुर्की भले प्रकार पढ़कर संस्कृत पढ़ने बनारस गया । जब पढ़कर पूण विद्वान हुआ तब ब्राह्मण गुरुने निज पुत्री इसको विवाहनी चाही, तब फैजीने उत्तस सच्चा हाल कहा कि मैं मुसलमान हूँ । गुरु यह सुन शोकितहो फैजीके बोला "जित प्रयत्न चाहे अनुवाद करना, पर वेदाका अनुवाद न करना" । अकबरने गद्दी पर बैठनेसे २० वर्ष पीछे फैजीको अपने दरबारमें उच्च पद दिया । पश्चात् फैजीने

अबुलफ़ख़्ख़ अपने कनिष्ठ सहोदरको दरबारमें पहुँचाया। फ़ैज़ीकी समान तथा तथा ब्रह्मविद्याका ज्ञाता कोई दूसरा दरबारी न था। उससे अक्षर तथा द्बारके और सब लोग प्रसन्न थे अक्षरने उसको राजदरबारे पदपर नियुक्त किया था। बंभुक्तकुरान सुलेमान बिल्कीस, हफ़तकिश्वर हफ़सपैकर, मसनवी नरुदमन इत्यादि फ़ारसी ग्रंथ और बादशाह अक्षरकी आज्ञानुसार रामायण, महाभारत, राजतरंगिणी, लीलावती, वज्रगणित इत्यादि संस्कृत पुस्तकोंका फ़ारसी अनुवाद फ़ैज़ीने किया था और अध्ययन वेदमें अष्टोपनिषद् बनाकर मिलाया था। फ़ैज़ीकी तनख़्वाहका अधिक भाग पुस्तक खरीदने में खर्च होता था। स ई १५०० में फ़ैज़ीका देहांत हुआ। ४६०० पुस्तक उसके कुतुबख़ानेमें निकलीं। भाषामें उसके बनाये दोहरे अनेक मिलते हैं। ऐसा तीव्र बुद्धि पुरुष था कि जो पुस्तक एक ठके पढ़ली याद होगई

अमिनव गुप्त आचार्य (संस्कृत कवि) विक्रमकी ११ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें कश्मीर में हुआ। ये संस्कृत का बड़ा विद्वान् था। निम्नस्पृहतांत इसीके बनाये एक ग्रंथसे विदित हुआ है—अमिनव गुप्तजी चाराह गुप्तके पौत्र और बुख़र गुप्तके पुत्र थे, इनके कनिष्ठभ्राताका नाम मनोरथ था। निम्न लिखित ग्रंथ इसके रचे हैं—भनुतराष्ट्रिया, क्रमस्तोत्र, घटकपर, कुल्लव वृत्ति, संघषट्थानिका, परमायसार, मालिनीविजयवार्त्तिक, भगवद्गीता तिग्ग, भरत नाट्य शास्त्रटीका

अम्यरीप—सूर्यवंशी राजा, बड़ा धार्मिक, दृढप्रतिह और प्रजापालक था। श्रुतिदुर्घांताने उसकी परीक्षा की और दृढचित्त पाया—अंततसमय राजपाट छोड़ घनया श्वागया और ईश्वरोपासनामें तत्पर हुआ

अमरदास (विष्णुकोके चर्तीय गुरु) जिला भनृतसरमें तेजमानु खर्वाये पर सुलखनीजीके उदरसे उत्पन्न हुए— २० वर्षकी उम्रमें शार्दीयी जितसे २ घंटे और १ घंटी हुई—बचपनसेही इनकी रुचि साधु सेवा और ईश्वरोपासनामें लगी रहतीथी—स ई १५४० म इन्होंने गुरु भद्रजीके शिष्य होय १२ वर्षतक उनकी टहल निज देहके समान थी— स ई १५५२ म गुरु भद्रजीके परमधामको सिधारनेपर गुरुवार्त्तीय गद्दीपर बैठ—सालसायंकी इनके समयम बड़ी उन्नति हुई—अनेक पहाड़ी रामाभायो इन्होंने अपने मतक अनुगामी बनाया—ये रज्जु होय रतदिन ईश्वरोपासना करतये और बड़े सत्यवादी तथा नितेन्द्रियये—भूय महताजीयो सद् स जार्गी रणसेये और पट्टेच हुए साधु थ—बादशाह अक्षरको इनका निम्न था— १०० वर्षकी अवस्थाम इनके देहांत हुआ और इनके जामादू रामदासजी इनकी गद्दीये उत्तराधिकारी हुये

ग्राम गोर्यदवालमुल्क पंजाबमें इनकी बनावई हुई एक बावड़ी है और इसी ग्राम में इनके वंशके बहुत लोग रहते हैं

स ई १४७८ में जन्मे

स ई १५७९ में सिधारे.

अमरसिंह (कोपवार) ये बीरू ये—मुद्र गयाके मंदिरके एक शिलालेखसे प्रतीत होता है कि उसको अमरसिंहजीने विक्रमा संवत्की छठी शताब्दीमें बनावया था—ये विक्रमादित्य हर्ष महाराजा उज्जैनके द्वारके नवरत्न नामक प्रसिद्ध पहिसोमेंसे थे—इन्होंको अमरसिंह सेवड़ा कहते हैं—इनके बनावे बहुतसे ग्रंथ थे जिनमें से अमरकोपके सिवाय और सबको ब्राह्मणोंने नष्ट कर दिया

अमीरखाँ—(रियासतटांक्का संस्थापक)—टांक्के नब्बाब इसीके वंशमें हैं ये पहिले जसवंतराव हुलकरके यहाँ सेनापति था जसवंतरावके सिद्धी होजानेपर ये अपनी माताहित सेनासहित पिंढारियासे मिलगया और सब पिंढारी दख्खन मुख्य नायक बनगया इस भयानक दलकी मददसे इस्ते अनेक राजाओंको आपसमें लड़ाकर डीलाकर दिया कभी किसी राजासे मिलजाता और कभी किसीसे अंतमें घृटिशगवर्नेमेंदने वह सब मुल्क जो इसको रियासत इन्दौरकी तरफसे मिला हुआ था इसको देकर अपना भाधिपत्य स्वीकार कराया और इसके पास जितना तोपखाना था सब लेलिया और इसके भयानक लुटेरे दख्खसे हथियार रखवा लिये इस लुटेरे दख्खे राजपुत्राना तथा मालवामें दो घपतक बहुतसे निर्दईपनेके ऐसे काम किये थे जिनके सुननेसे शरीरके रंगटे खड़े होजाते हैं। स ई १८३४ में मरा

अर्जुन (सिक्कोंके पंचमगुरु) गुरुरामदासजीके कनिष्ठ पुत्र थे ग्राम गोर्यदवालमुल्क पंजाबमें पैदा हुये इनके दो विवाह हुये दूसरे विवाहसे गुरुहरगोविंद पैदा हुये अर्जुनगुरुके समयमें गुरुकी भेंट पूजाकी प्रणाली चली इन्होंने अमृतसरके निकट "संतोपसर" नामक तालाब खुदवाया था शहर अमृतसरकी आबादी इनके समयमें बहुत बढ़गई थी। कुष्ठी, भंधे इत्यादि अनेक असाध्य रोगियोंको इन्होंने आराम किया था सिक्कोंकी धर्म पुस्तक "ग्रंथसाहिब" को पहिले पहिल इन्होंने संग्रह किया था ये बड़े चतुर और हृदयवत् पुरुष थे खालसा पंथकी जड़ इनके समयमें खूब जमगई थी चंडूखाल दीवानने इनको मरवाहाळा इनकी समाधि लाहौरमें है जिसके खर्चके लिये ९०० रु सालकी माफी है

स ई १५६३ में जमें

स ई १६०६ में मरे.

अर्जुन—(पांडव)—चंद्रवंशी महाराज पांडुके तृतीय पुत्र रानी कुंतीके उदरसे थे धनुर्धरा तथा यलाकौशलादिम ऋद्धितीय थे पंजाबके राजा द्रुप वकी कन्या द्रौपदीसे इनका विवाह स्वयंवर विधिसे हुआ था श्रीकृष्णजीकी सहित सुभद्रा तथा मणिपुरकी राजकुमारी चित्रांगतासेभी इनकी शादी हुई थी महाभारतके युद्धमें अर्जुनने षडे ० वीरता और साहसके काम किये भीष्म पितामह तथा कर्ण इन्हींके हाथसे मारेगये इस लड़ाईमें श्रीकृष्ण इनके सारथीपने थे और भगवद्गीताका उपदेश इनकी किया था ये पेशे याणधारी थे कि पक्की कपेम ५।५ सी पाण छोड़कर हाथी, घोड़ा और शूरीराकी सेनाया परास्त करते थे राग्यासंहानपर घंटकर जय महाराज युधिष्ठिरने अश्वमेध यज्ञ किया तब ये यज्ञके घोड़ेकी रक्षाके लिये सिंध, मर्णापुर, गुजरात, दक्षिण इत्यादि देशाम गये और जहां बड़ा विसी राजाने सामना किया उसको परास्त किया अंतमें जब यादयमि आपसमें झगड़ा फैला तब श्रीकृष्ण जीने इनको द्वायिका बुलाया और वहाँ द्वायने श्रीकृष्णके परमधाम सिधारनपर वाकी अत्योष्टिक्रिया की पश्चात् दक्षिणापुर आय महाराज युधिष्ठिरने श्रीकृष्ण जीके अंतधान होनेकी खबर सुन इनके पौत्र परीक्षितको राजपाट सौंपाया और पांचा पांडवाने द्रौपदीसहित हिमालयपर जाकर देह त्याग की

अरस्तू हर्षाम (Aristotle) हर्षाम निवोमबसके पुत्र स्टगिरा (पुनात) में पैदा हुये माता पिता इनको बालक छोड़ मरगयेये किसी अन्य धनाढ्य पुरुषने इनका पालन पोषण किया और पढाया था १७ वर्षकी अवस्थाम स्टगिरासे पेंथस भाग और अफगावनसे विशेष विद्या पढी अफला सूत्र मरनपर किसी राजभूमारीसे इनका विवाह होगया स इ से ३४० वर्ष पूर्व यादशाह फिलिपन निज पुत्र भलेगेंदरका शिक्षक इनका नियत किया और इनके कामसे बहुत प्रसन्न रहा अलेग्जडरने गद्दीपर बैठकर जब देश विदेश घडाइ थी तब अरस्तू उनके साथ नदों गये पर गयसमें रहकर छायाफी पढाते रह और पुनः र ग्यत रहे इन्होंने वाप्य, राजनीति विधिशा, गणित, वाय, जीव तथा विज्ञान विषयों २० पुस्तक रचना की भाषाम बनाई थी जिनमेंस अनेक भषाभी मिलती हैं अंतमें अलेग्जडर (सिकंदर) के मरनेके बाद मुख्यतकी तरह नामिकर गनेवा अभिगाप इनको भी गगाया गया निदान पेंथस छोड़ इनका दूसरी जगह भाग अगता पडा इनकी समाधि यतुर पुरुष भाजता सुनर परगम दृत्तग नदा दूभा

स इ से ३०२ वर्ष पूर्व जन्म

स इ से ३८४ वर्ष पूर्व मृत

अरिस्टोटल-देखोअरस्तू

अलवरुनी-जिस्को अबूखर्हो भी कहते है स इ ९७३ मे खीवामे वेदा हुमा जव महिमुद गजनवीने स इ १०१७ म खीषा विजय किया तो वह अलवरुनीकोभी और लेगाके साथ केद करके अपनी राजधानी गजनीमे लेगया गजनी पहुँच अलवरुनीने अनेउ भारतवासियोको जिनको महिमुद यहासे पकड़कर लेगया था देखा हिंदोस्तानके घृत्तातम अलवरु नीने फारसीम पव ग्रंथ रचा है जिससे इस देशकी प्राचीन गौरवता स्पष्ट मालूम होती है इस कितायम भारतवपकी उससमयकी सामाजिक तथा ऐतिहासिक व्यवस्था अच्छीतरह दर्शाइ गइ है और इस देशकी विद्या, धर्म घणव्यवस्था, खानपान, रहिनसाहिन, खेतीवाड़ी, वणिज व्यापार, राजनीति, फलफूल, इत्यादिवाभी सविस्तर घृत्तात लिखा गया है, घराहमिहिरज्यो सिधीकी भी प्रशंसा की है और लिखाहै कि, भारतवासियाने और देशकी अपेक्षा गणित शास्त्रम अधिक उन्नति की थी यहभी लिखा है कि भारतवासी विद्वान् वैशाल सब शक्तिमान् परमेश्वरको मानतेथे जिंसा कि वेदों और उप निषदाम लिखा है और कृपदलोग अनेक मृतियोंकी पूजा करते थे अलवरु नीने बहुतसे और ग्रंथ भी घनाये थे ४० घप इसने हिंदोस्तान इत्यादि अनेक देशाम भ्रमण करनेम विताये थे वहा ज्योतिषी, इतिहासका ज्ञाता और नैयायिक पंडित था भविष्यवाणी इसकी सही होती थी, मुक प्रभ खूब घताता था-स इ १०५९ म मरा

अलाउद्दीन खिलजी (दिल्लीका चान्शाह) जव इसका चन्हा

जलालुद्दीन खिलजी हिंदोस्तानम बाटशाही करता था तब यह प्रयाग प्रवेशा न्तर्गत कड़ाफा हाकिम था और उसी समय इसने विन्पाचलपवतके पार जाकर शहर मिलसाको लूटाया । इसके बाद बुंदेलखण्ड तथा मालवाके हिंदू राजावाको परास्त करके दक्षिण देशान्तगत महाराष्ट्र राज्यकी राजधानी देव गिरिपर बदाई की और बहुतसा माल अस्वाव लूटकर प्रयागको आया और अपने बन्हाको मारकर दिल्लीकी गद्दीपर बैठा और स इ १२०५ से १३१५ तक राज्य किया । स.इ १२९७ म गुजरात, १३०० मे रणथम्भोर और १३०३ मे चि नौड़ विजय किया, अनेक दफे मुँगलोंको परास्त किया और अपने भतीजाको जिन्हाने इसके समयमे उपद्रव किया ओंखें निकलवाकर मरघाहाला । फिर स इ १३०३ से १३०६ तक दक्षिण-देशपर अपना अधिकार बढानेमे लगाया । चिसाई विजय करनेके अवसरपर बहाईकी महारानी यमिनी १३०० सप्रानिया सहित प्रसिद्धा बन्हानेके लिये अग्रिम जलकर मरगई और कत्री लौग फटते फटते मेरावली पहाड़की ओर भागगये । दिल्लीके खिलजी घशोत्पन्न बाद

शाहोंमें ये सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ और मुसलमान बादशाहोंमें प्रथम इसी-
ने दक्षिणदेश विजय किया-स इ १३१५ में इसके सेनापति मलिककाफूरने
विष खिलाकर इसे मार डाला

अलावर्दीखॉ (बङ्गालका मन्त्रिमन्त्र्याध) -स ई १७४० म गद्दीपर बैठा
सुर्हिदाबाद् इसकी राजधानी थी-अत्यंत क्रोधीया पर राजकाज सावधानीसे
करताया-इसके समयमें मरहूठा सवारोंने बङ्गालको लूटना आरंभ किया यह
देख नब्बाधने स इ १७४२ में कलकत्तेके गिर्द एक खाई खुदवाई जो आजतक
“मरहूठोंकी खाई ” के नामसे प्रसिद्ध है-स इ १७५६ म इसके मजेपर
इसका पीव सिराजुद्दौला नब्बाध हुआ जो एकही वर्ष पीछे पलासीकी लड़ाईमें
अपना मुल्क अङ्गरेजोंको दे बैठा

अलेग्जेंडर दी ग्रेट महाराजा यूनान (Alexander the great
Emperor of greece) बाबुशाह फिलिपके घर स ई से ३५६ वर्ष पूर्व
पैदा हुआ । इसको अपनी मातासे बड़ा प्रेमया, यहाँतक कि एकदफे माताकी भारही
मितासे भ्रमसग्र होगया था । हकीम अरस्तूने इसको अनेक प्रकारकी विद्या
पढ़ाई थी, यवि होमरकी रची “ इलियड ” नामक पुस्तक बहुधा पढाकरता था ।
बाल्यावस्थासेही बड़ा पराक्रमी, साहसी, शूरवीर और होनहार मालूम देता
था, जब इसका पाप कोई देश विजय करता था तब यह कहता था कि यदि
पिता सब देश विजयकर लगे तो मैं क्या करूंगा । २० वर्षकी उम्रम पिताके
देहांत होनेपर राष्ट्रासहासनपर बैठा और निज पिताके शत्रुभाको परास्त करके
योद्धेही दिनाम सब यूनानदेशपर अधिकार जमा लिया । २० वर्षे पीछे पिताके पुत्रने
शत्रु दाराशाह यूनानपर ३५ हजार सेना लेकर चढ़गया, दाराने ५ लाख पौजस
सामना किया, ३ वर्षे लड़ाई हुई जिसम दाराही हार और तीसरी दफे अपने
ही साथियोंके हाथसे मारागया, सिद्धंवरन दाराके मृतक शरीरपर जाकर शोक
किया, मारनेवाले नमकहरामाको सजादी, मुल्क और मालपर अधिकार कर लिया,
सस्यी बेटी रौशनवसे विवाहकर लिया, उसकी बेगमोंके कतबे बहाल रखे, न
माम मुल्कयों अपने न्याय और सुमबंधके सुशाकिया और मजाके धर्ममें किसी
प्रकारकी बाधान थी। पश्चात् मुल्कनामके दमिन्क भादि मनष शाह्ण विजयकिये
फिर मिश्रदेश जीतकर “ अलेग्जेंडरिया ” नामक शहर बसाया और सुर्हिस्तानके
सुये बुखारा तथा कूम और अरबइत्यादि देशोंमें विजय किया स इ से ३०७ वर्ष
पदिह हिंदोस्तानपर चढ़ाई की और पंजाबमें राजा पारसपो परास्त किया पर

उसकी चातुरी और धीरतासे प्रसन्न होकर उसका मुल्क उसीको देविया इसकेबाद अलेग्जेंडर ईरानकी तरफ लौटा, रास्तेमें अनेक कठिनाईं झेलीं, फौजमें धीमारी फैल गई, केवल चौथियाई फौज जाती ईरान पहुँची। अंतमें सिकंदरने शहिर बाबुलकी तरफ धावा किया पर रास्तेहीमें ३२ वर्षकी उम्रमें ज्वरसे पीड़ित हो परलोकगामी हुआ मृतक शरीर सोनेके ताबूतमें बंदकरके यूनान भेजागया। इटली, मिश्र, साइथीरिया, आइथीरिया, कार्पेज, सिदालिया इत्यादिके राजदूत साथ थे। भभागिनी माताके शोकका जिससे सिकंदरको इतना प्रेम था कुछ हाल न पूछो। सिकंदरने थोड़ीसी उम्रमें घरसे निकलकर इसने देश जीते और जगत् विजयी कहलाया, जिसने सीस झुकाया उसे निहालकर दिया, जिसने सीस उठाया उसे खाकमें मिला दिया, जिस देशको विजय किया वहाँके धर्मकी प्रतिष्ठा की, प्रजाको सुख धन दिया और विद्वानोंका सत्कार किया। कहि मराया कि “मेरे हाथ ताबूतसे बाहिर निकाल देना ताकि लोग जानें कि नकुछ लाया था नकुछ लेगया”। उसके सेनापतियों और रिश्तेदारोंने सब राज्य आपसमें बांटलिया क्यूंकि अपुत्र मराया सिकंदर भाजुम तथा शकेंद्र इसीको कहते हैं

अश्वत्थामा (द्रोणाचार्यका पुत्र) कौरवाकी फौजका सेनापति था इसने पंजाबके राजा द्रुपदके पुत्र धृष्टदुम्नको महाभारतकी लड़ाईमें मारडाला क्योंकि धृष्टदुम्नने इसके पिताको बध किया था पश्चात् इसने द्रुपदके दूसरे पुत्र शिखण्डीको मारा और द्रौपदीके पाँचों पुत्रोंका भी सिर काटा जब पाहियोंको अपने पुत्रोंके मारेजानेकी खबर मिली तब उन्होंने अश्वत्थामासे यह अमोल मणि छीनली जो वह सदैव अपने पास रखता था पश्चात् इस मणिको पुधिष्ठिरने अपने ताजमें जड़वालिया अश्वत्थामा उन १० मनुष्योंमेंसे था जो महाभारतकी लड़ाईके बाद जीते बचे थे अनेकोंकी राय है कि यही अमोलमणि अब “कोहनूरुद्दीरा” के नामसे प्रसिद्ध है और आज दिन महारानी अलेग्जेंद्राके मुकुटमें लगी है

अश्वलायन (शौनकब्राह्मणके शिष्य) -ऋग्वेदके श्रौत सूत्र १० अध्यायमें इन्होंने रचे थे- श्रौत सूत्रोंमें अनेक प्रकारके यज्ञ करनेकी रीतिय लिखी हैं। ऋग्वेदके गृह्यसूत्रभी इन्होंने बनाए थे और इन्होंने तथा इनके गुरुने मिलकर पेत्रेय आरण्यकके अन्तिम अध्याय भी लिखे थे

अस्फादियार (पहिलवान) ये ईरानके बादशाह गुस्तासपका बेटा तथा कंसरे रुमका दौहित्र बड़ा पहिलवान था इसने रुस्तम पहिलवानको मल्ल युद्धमें पछाड़ा था परंतु रुस्तमने इसे थालाकीसे परास्त करके मारडाला अंततमय इसने रुस्तमसे अपने पुत्र बहिमनको शिक्षा देनेकी प्रार्थनाकी एवं रुस्तमने बहिमनको सैनिकविद्या भलेप्रकार सिखाई गुस्तासपके मरनेके बाद बहिमन

इरान की गद्दी पर बैठा और अपने बापका बटला रुस्तमके बेटे फरामुजको सुली ठकर लिया साधारण मतसे अस्फंदियार स ई से १ हजार वर्ष पहिले हुआ पर फिरकी विद्वान केवल ५२५ वर्ष पूर्व सन इस्वी इसका होना लिख करते हैं। इसने जल्दतया मत सबद इरानियाकी सल्तनतमें फैलाया इरानियाकी सल्तनत काबुलसे पुनानतक थी और उसमें भरपूरतया तुर्किस्तान भी शामिल था।

अशोक (हिन्दुम्यानका बौद्ध महाराजा) पटनामें राज्यासिंहासनपर बैठा ये पहिले वैश्विकमतको मानता था पश्चात् बौद्धमत ग्रहण करलिया-स ई से २४४ वर्ष पूर्व इसने पटनामें तृतीय बौद्ध सभापुत्र धम्म संबंधी नियम बनाये और हिमालयसे लेकर बन्पाकुमारी पर्यंत सब देशोंमें तथा ग्राम, मिश्र, भंसेहन इत्यादि प्रदेशोंमें उपदेशक भज मरयेक नगरमें स्तूप (बौद्धमन्दिर) भीषघालय, अनायालय, धम्मशाला, आतिथ्यालय, पाठशाला इत्यादि जागीरों, और ४८००० पर्यन्त सम्भापर तथा पहाडाकी घनाना पर बौद्ध धर्मके १७ उपदेश हिन्दुम्यान के सब प्रान्तामें अद्वित करये अपने भाग महद्वारियरों स ई से २४२ वर्ष पूर्व लंफाम भेजकर बौद्धधर्मका प्रचार कराया अगोष्ठी मित्रता ऐन्टियोक्स, तारुमी जयालि पुनानके ७ राजाभासे थी इसक समयमें बौद्धमतकी भार्यंत उत्तति हुई इससे पिता बुन्दसारण १६ गनियासे १०१ पुत्र थे अगोष्ठीने गद्दीपर बैठकर अपने सहोष्ठी निशी नामकपो छोड़कर सब भार्ययाको मर्यादा-३६वर्षे राज्यकरके परमधामको सिंघार य हिन्दुम्यानका चक्रवर्ती राजा था।

अहिमदशाह अल्दाली (काबुल संघारकी सल्तनतका मूल राणयकता) अफगानाकी कौम अल्दाली या दुर्यनीक सार्ग था-पहिले कुन्दिनसव नादिरशाहका कोपाध्यक्ष रहा और दिल्लीकी लूटके समय उसका साथ था- नादिरशाहके मरनेपर इसने काबुल संघारके सूबा को निजअधिनारम करके; काबुलशाहका अतिथि धारण किया पश्चात् छत्रपति हुस्तानपर चढाईकी-पहिले हमलेमें हमको परास्त होकर लौटना पडा पकड़ी वर्ष बाद स ई १७४८ में दूसरी वर्षे चढाईकी और दिल्लीके बादशाह अहिमदशाह मुगलका परास्त करके पंजाप छीन लिया-स ई १७५१ में दिल्ली के बादशाह आलमगीर द्वितीयने जब पंजापपर हाव करने शुरू किये तब इसने फिर चढाईकी दिल्लीको लूटा और पंजापको पुन विजयपरके संघार को लौटगया- स ई १७६१ में जब पुनापराय पेशवान पंजापपर चढाईकी तब अल्दालीको फिर हिन्दुस्तान जाना पडा, पानीपतके मैदानमें मरहटाणा पराजय हुआ-अतम सिंघाने यहूदक लड़ाई हुई जिसमें सईय अल्दालीकी जीता- इसका राज्य पूरव पंजापसे पश्चिममें हिणततप और दक्षिणमें भारपया गादीसे उत्तरमें यमीरतप था- स ई १७३४ में उत्पन्न हुआ और १७३१ में मरा

अहिल्याबाई (इन्दौरकी प्रसिद्ध महारानी) इंदौर राज्यके मूल

गोपण कता मल्हाररावहुल्करकी पुत्रवधूयी २० वर्षकी अवस्थाम विधवा हो गई थी और सती होना चाहती थी पर ससुर इत्यादि वृद्धजनाके बहुत समझानेपर रुकी- इसके १ वेटा और १ बेटी थी- स ई १७६६ म मल्हाररावके मरनेपर इसका पुत्र मालीराव गद्दीपर बैठा पर ९ ही महीने घाट मरगाया- राज्यका उत्तराधिकारी न होनेके कारण अहिल्याको स्वयंराजका ज सम्हालना पड़ा राजपुरोहितने दत्तक पुत्र लेनेको बहुत समझाया पर महारानीने रोकर यह उत्तर दिया कि "एक राजाकी १ रानी थी और दूसरेकी माता यदि ईश्वरको मल्हाररावका वंश चलानाही मजूर होता तो भेरेपति और पुत्र क्या नष्ट होजाते " इसपर स्वयं पुरोहितने भासपासके राजागोंको उसकाया पर किसीका ब्राह्म महारानीसे छुड़नेका न पड़ा-पश्चात् महारानीने तुळोजीराव हुल्कर अपने एक नातेदारको सेनापति नियत करके अनेक काम सौंपे जो स्त्री होनेके कारण सुद नहीं करसकती थी-भगे त्वारमें बैठकर प्रजाका न्याय करती थी, भूखानेको खाना और कपड़ा बँटवाती थी, सिद्धियोंके लिये खेत खुदवावेती थी, नदियाकी मछ-लियाको सुगानेके लिये भादमी नाकरथे, चिकित्सिक लोग नियतथे जो घर २ गांव २ दौंग करते थे, प्रजागण उसको माताके समान समझतेथे, तुळोजी सेना पति उससे मातुःश्री कहकर बोलतेथे और ईश्वरको ची इ कर राजकाज करतेथे- विधवा होकर उसने रंगीन वस्त्र कभी नहीं पहिना न सिधाय एक मालाके कोई आभूषण धारण किया-गर्वका लेश मात्रभी उसमें न था और सुशामद पसंड न थी-कुछ अधिक सुंदरी न होने परभी बेहरा धर्मसे तेजसे दीक्षाथा-इन्दौरका नगर उसीका बसाया हुआ है-काशीम विग्नेश्वर नाथका मंदिर उसने बनवायाया काशी, प्रयागपुरी, झारिका, सेतबंदरामेश्वर, वेदारनाथ इत्यादि तीर्थ स्थलों म धमशाला बनवाईया और सदाव्रत बैठाये थे-कूप, तड़ाग, पुल, घाट इत्यादि भी अनेक बनवाये थे स ई १७९५ म ३० वर्ष धम राज्य करके ६० वर्षकी उम्रमें परलोकको सिधारी-भारत में इस सहस्राब्दीके बीच ऐसी सुप्रबंधकर्ता, धार्मिक और उदार हृदयस्त्री दूसरी नहीं हुई-उसका समय ईश्वराराधन राज्य प्रबंध और प्रजापालनके काममें विभागीत था-मैल्कम साहिब स्वराचित इति हासमें अहिल्याके विषयमें लिखते हैं कि " निम्संबेह यह परम आश्चर्य है कि स्त्री होकर ऐसी गंभीर और सांसारिक विषय भोगोंसे ऐसी विरक्तहो अपने धर्म और मतकी ऐसी पक्कीहो और फिर अन्य मतवालेको तुच्छ न जानतीहो और किसीको अपने २ नीतिधमानुसार चलनेकी कुछ रोकटोक न करती हो, जिसके मत संघर्षी विश्वास ऐसे अप्रमाणिक और तुच्छहो पर उसको अगत उपकार और दूसरा को संतोष दिलानेके अतिरिक्त और कुछ चिन्ता नहो, एक स्वतंत्र अध्यक्षहो और फिर उसमें ऐसी विनय और दीनताहो, ईश्वरका भय करके कामकरतीहो और दूसरोंके दोषोंको छिपाती हो इत्यादि "

आदम (Adam) महात्मा इसासे ४ हजार वर्ष पूर्व हुये-इनसे और इव्या (Eve) नाम स्त्रीसे इसाई और मुसलमानी मतोंके अनुसार सृष्टि उत्पन्न हुई थी जो नूहके वृक्षान म इसासे १६५६ वर्ष पूर्व हूषकर नष्ट होगई

आनन्दधन (भाषाकवि) जातिके कायस्थ सुहृद्मन्त्रशाह बन्धुशाह दिल्लीके दरबारमें मुर्गीये-गानविद्या और कविता दोना म भक्ति कुशल थे-सबसे प्रेमी थे और कविता इनकी सूर्यके समान भासमान है-अंत समय घरबार छोड़ श्री वृंदावन वास करते थे-कृष्णगदये राजा जसवंतसिंह उपनाम नागरीदासजीसे इनका बड़ा प्रेमया-फारसी, अर्बी, संस्कृत इत्यादिके पण ज्ञाता थे और दिल्लीके रहने वाले थे-इनकी फुटकर काव्य बहुत मिलती है-नादिरशाहने जब स इ १७५७ म मथुरा लूटी तब उसी मारकेमे यह भी मारेगये

आनन्दगिरि (प्रसिद्धवेदांगी पंडित) सन् इस्वीकी दशवीं शताब्दी में हुये-स्वामी शंकराचार्य इनके गुरुथे-शंकर द्विविजय नाम ग्रंथ तथा भगवद्गीतापर आनंदगिरि नाम तिलक इन्हींका रचा हुआ है

आनन्दवर्धनाचार्य (संस्कृत कवि) इन्हाने दो भागोंमें "धन्यालोक" ग्रंथ रचा है-कारिग्यारूप भागवानाम "धनि" है और धृतिरूप भागका नाम "आलोक" है-राजतरङ्गिणीसे विदित होता है कि ये विक्रमवी १० वीं शताब्दीम कर्मीके राजा अश्वन्ति यम्मादे दरबारमें थे-निम्नस्य ग्रंथ इन्हींके रचे हैं-अथी शतक, विषम बाणलीला, प्राकृतभञ्जिनपरिचय, और विनिश्चय टीका-राजशेखर कविने सुकमुत्पावलीके इस श्लोकमें आनन्दवर्धनाचार्यकी प्रशंसाकी है -

श्लो०-ध्वनिनातिगर्भरेण काव्यतत्त्वनिवेशिना ।

आनन्दवर्धन कस्य नासीदानन्दवर्धन ॥

आपस्तय ऋषि-इन्हान प्राचीन वालम होवर कृष्ण परब्रह्मणे कल्पसुष जिनम अंतसूत्र धमसूत्र और शृद्धसूत्र शामिल है ३० अध्यायमें रचे- ३० व अध्यायम शुद्ध सूत्र है जिनम रेणागणितया घणन हुआ है-डॉक्टरथोबो (Dr Thibaut)ने शुद्ध सूत्रम अनुवाद अट्रुग्रेजीम परये प्रकाश किया है कि सबस प्रथम रेणागणितथे मुग्ध, नियम इसी उद्यम प्रापियान दर्शाफ्त किये थे-कीसागोरस यूनानी हर्षामने "शुद्धसूत्र" भागत वर्ष में आगर पठ और उनका प्रचार निज देशम जावर किया-यथात् युक्तिइन इन्हीं शुद्धसूत्रोंक आणपर भवने मामयी पुस्तक रची-डॉक्टर बुल्हर साहिब (Dr Bulher) के मतानुसार ये ऋषिम ई स प्राय ८०० वर्ष पूर्व दक्षिण देशम उक्त जगदय समीप रहतेथे जिसयो भय भमरावृत्ती परत है

आर्करायट (Arkwright) स ई १७७४ म इङ्ग्लैडर्म जन्में ।

पहिले हजामत बनानेका पेशा करते थे पश्चात कलाकी वेस्त्रमालम इन्होंने चित्त लगाया और अंतमें कपड़ा बुझेकी कल तैय्यारकी- वास्तवम फल तौ एक औरही आदमीने तैय्यार की थी और उसने इसविचारसे नहीं चलाई थी कि, लोगोंके उद्यमको हानि होगी- भाकरायटने उसी फलको सुधारकर पूण रीतिसे बनाया और लोगोंको उससे कपड़ा बुनकर दिखाया-

आर्यभट- (ज्योतिषी) धीज गणित तथा ज्योतिष शास्त्रके अनेक सूक्ष्म विषयोंका अनुभव पहिले पहिले इन्हींको हुआ- इन्होंने गणित तथा ज्योतिष शास्त्रमें पेशी २ बातें दरियापत कीं जो अन्य देशवासियोंको स ई की १६ वीं शताब्दीसे पूव नहीं मालूम हुई ये राजा युधिष्ठिरके सम्बतसे ज्योतिष लगा तेये निम्नरूप वृत्तांत इन्हींके एक ग्रंथसे मिला है- आर्यभट वि स ५३३ म पैदा हुए और कुसुमपुर (पटना) म रहितेये- नीचे लिखे ग्रंथ इनके बनाये है- आर्यभटीय तंत्र (आठपासिजांत) ४ अध्यायमें, धीज गणित, आर्य देश रीति सूत्र, आर्य भटगत, सूर्य सिद्धांतका टीका-

आलमगीर-देखो औरगजेव

आल्हा (प्रसिद्ध सावन्त) महावा (बुंदेलखण्ड) वासी जगनायक कविने आल्हाखण्डरचकर आल्हा और उसके भाइ ऊदन का यशगाया है ये षडे योद्धा ब्यूह रचनाम दक्षिणे इनका बाप यशराज महाबेक राजा परमाल (परमारविदेव) की फौजका सार्वत था- पिताका देहांत होजानेके कारण आल्हा ऊदल दोनो भाइयाका पालनपोषण और शिक्षा राजा परमालके दरबारमें हुई थी- प्राय ६५ लडाइयोंमें इन्होंने परमालकी तरफसे लड़कर शत्रुओंको परास्त किया था-५२ गदाके राजे आल्हा ऊदलसे इस प्रकार धरत तेये जैसे नेपोलियन बोना पाटसे यूरोपीय राजे- इन दोनो भाइ योंने महाराज पृथ्वीराजको परास्तकरके उनकी बेटी बेलका विवाह अपने स्वामी राजा परमालके पुत्र ब्रह्मा से कराया अंतम बेलके मौनेकी भिदापर पृथ्वीराज और परमालमे घोर युद्ध हुआ जिसमे परमालका सघनाश होगया केवल आल्हा जीता बचा पर विरक्त होकर सुंदरवनको चला गया

स ई के १२ शतक म हुये-

आरुफुदौला (नवाब वजीर अवध)

निज पिता शुजा उद्दौलाके घाट स ई १७७५ मे अवधकी गद्दी पर बैठे

फिजाबादके बजाय लखनऊमें अपनी राजधानी कायम की-लखनऊम इनका घनघाया इमामवादा भवतक मौजूद है और देखने लायक है-यह इमामवादा वसवक्त घनघाया गया था जब लखनऊमें बड़ा भकाळ पड़ा था- ये बट दयालू और दानी थे लखनऊके युवानदार भवतक इनका नाम लेकर हुकान खालते हैं सूबे अवधमें प्रसिद्ध है कि ' जिसको न दे मौला उसको दे भास्कुईना ' इन्होंने गुणीजनाया सरकार किया एक दीवान उर्दू तथा फार्सीमें बनाया-बहुत रूपया पार्श्वकें एक कुतुबखाना संग्रह किया । स इ १७९७ में मरे और अपने इमामवादेमें दफन हुय इनके कोई भौलाद न थी एवं ब्रिटिश गघनमटने इनव भाई सभापत भलीखाँकी लखनऊका नवाब बनाया-

औरङ्गजेब (मुगलवादशाह दिल्ली) निज पिता शाहजहाँको कैद करे और अपने भाइयोंको बध करे स इ १६५९ म दिल्लीकी गद्दीपर बैठा ये अपन बापको जो भागेरके किलेमें कैद था छेवल एकही प्रकारया खाना और गरम पानी पीनेके लिये देता था ये बड़ा कृतघ्नी था और सबर्षा तरफसे शक रखता था इसने हिंदुभापर "जजिया" नामक कर लगाया और मथुरा, भयोष्या, बनारस इत्यादिमें अनेक मंदिर सुइवाये वास्तवम हिंदोस्तानस देशका जहाँ अनेक जातियोंके लोग रहिये हैं, य बादशाह होनेके योग्य न था इसक खेनापति २५ वर्षतक दक्षिणदेश जीतनेमें लगेरहे, पर कुछ करनेम समय न हुये, मरहटाने इसे बड़ी तकलीफ दे रक्खी थी-शिवाजी मरहटावीरके मरनेपर औरंगजेबको ६५ वर्षकी उम्रमें दक्षिणविजय करनेके लिये सुद जानका रा हस हुआ और २५ वर्ष लड़कर उसने दक्षिणदेशवर्ती गोलकुटा, बीजापुर, विजय, घरार और महमदनगरकी रियासतोंको पराम्त करके अपनी सलतनतम मिलाया यदि बाप भाईयाको मार डालने, सबर्षी तरफसं धाँका रखने कृतघ्नी होने हिंदु आसे टप रखने और उनके मंदिर सुइयानेका घोर कलङ्क इसके माये न होता तो इसका बाल बालन दोपरहित समझा जाता, क्योंकि ठोपियोंके सीने और गितार्योंके लिखनेसे जो आमदनी होती थी वही इसने निजपर्यम भाती थी इसका दूसरा नाम भालमर्गार भी प्रसिद्ध है

स इ १६१७ म पैदा हुआ

स इ १७०७ में मरा

औद्यटपंडित (यशुवंदभाष्यकार) कश्मीरदेशवासी जिय्यट उपाध्याय के पुत्र थे इनके बड़े भाई मम्मटने इनका विद्या पढाई थी-भ्यानरण भाष्यकार के प्यटभी इनके सहोदर थे विक्रमरी ११ वीं शतान्दीके अंतमें इनका जन्म हुआ ।
 इयराहीमअदुहम-इनके बाप मखदुद गुज़नीवे अष्टम गलीबा (राजा) थे बल्लभ इनकी राजधानी थी. पिताके बाद कुछ दिनतक इनके भाई कर्दपजाए

ने राज्य किया बादको ये गद्दीपर बैठे ये बड़े न्यायकारी और ईश्वरभक्त ये उन्होंने हिन्दोस्तानकी पश्चिमी सीमापर अनेकवार चढाई करके विजय प्राप्त की इसीवारण इनका नाम अदहम अर्थात् विजयीपट्टा ४२ वर्ष राज्य किया और अनेक विक्रिसालय, और मसजिदें बनवाई । कई शहर बसाये गुणी जनाका सत्कार किया कहियेहैं कि, स्वप्नमें इन्होंने एकभादमी छतपर चढेहुये कुछ दूरते देखा-पूछनेपर उसने कहा कि मेरा ऊंट खोंगयाहै । इन्होंने कहा भरे मूर्ख ! छतपर ऊंट कहाँ-इसके उत्तरमें उसने कहा "भरे मूर्ख ! राज्य करते परमेश्वर कहाँ" उसीदिनसे इबराहीम राजपाट छोड़ फकीर होगये-प्राय ५ वर्ष फकीर रहिकर स ई ८८०में जब इन की ११० वर्षकी उम्र थी परमधामको सिधारे.

इबराहीम लोदी (दिल्लीकाबादशाह) निज पिता सिकन्दरलोदीके बाद स ई १५१५ में राज्य सिंहासनपर बैठा इसके चित्तमें सबकी तरफसे शक रह साया सदांग और सूबेदार इससे फिरे हुये ये और इसके बर्बाद करनेकी पि-फ्रमें ये पहिले तो सूबेदारलोग उपद्रव मठाते रहे और परास्त होते रहे-अंतमें दौलत खां सूबेदार मुल्तानने वागीहोकर बाबरको फाबुलसे बुलाया-बाबर और इम्रा-हीमका पानीपतके मैदानम स ई १५२६ म सुकाबलाहुमा और इबराहीम लड़ कर मारागया

इस्माईलयोगी-कामरूप (आसाम)का रहिनेवाला तंत्रविद्याका प्रसिद्ध सिद्ध हुआहै-स ई की १७ वीं शतान्दीके उत्तरार्द्धमें इसका होना सिद्ध है क्योंकि इसी समयमें होनेवाले सिक्खोंके अन्तिमगुरु गोविन्दसिंहजीसे इसके साथी खोनिया साधू (होनाचमारी) की मुलाकात हुईथी तंत्रविद्याके प्रयोगसे इसने एक विचित्र फूलबाग लगायाथा

इक्ष्वाकु-अयोध्याके सूर्यवंशी राजा इन्हींके नामसे इक्ष्वाकुवंशी कहिला तेहें-ये वैवस्वत मनुके पुत्र और सूर्यके पौत्र बड़े प्रभावशाली और पराक्रमी थे-इनके १००पुत्र थे जिनमेंसे सबसे बड़ेका नाम विकुन्ती था-निमीभी इनका एक पुत्र था जिसके नामसे मियेलाका राजवंश जिसमें महाराज जनक हुये प्रसिद्ध है इक्ष्वाकुके द्बारमें उरू ऋषिकी बड़ी प्रतिष्ठा थी-महाराज राम-चंद्र इनकी ५७ वीं पीढीमें भारतके चक्रवर्ती राजा हुये इक्ष्वाकुने अयोध्या मगरी बसाई थी

ईश्वरचंद्र विद्यासागर सी आई ई ये पंडितजी मेदनीपुर (बंगाल) के धीरसिंहनामक ग्राममें टाहुरदास वंशोपाध्याय एक साधारण ब्राह्मणके घर स ई १८२० में पैदा हुये-बचपनहीसे इनका चित्त पठन पाठनमें खूब लगता था-स्वभाव अत्यंत ध्यालू और परिश्रमी था-स ई १८२९ में पिताने इनको संस्कृतकालिज कलकत्तामें पठनेकेलिये भिठलाया रातभर पढाकरसे ये केवल २ घंटे सोते थे, नींद आती तब सरसोंका तेल भाँखोंमें लगाते थे-कईदफे सी

सौ रूपयेका इनाम पायाथा-स्वाध्यायियों तथा अन्य मनुष्याकी यथाशक्ति तन मन धनसे सहायता करतैये एवं इनका नाम दयासागर पढ़ गयाथा-

स ई १८४१म संस्कृतकालिजकी शिक्षा संपूण करके विद्यासागरकी उपाधि पाइ और फोर्ट विलियम कालिज कलकत्तामें ५०) रु मासिकपर नौकर हो गये हिंदी तथा अङ्ग्रेजी भाषाभी अपने परिश्रमी स्वभावसे शीघ्रही सीखलीं-बद ते २ तनख्वाह ५००) रु होगई और प्राय ५००) रु मासिककी आमदनी स्व रक्षित पुस्तकॉसभी थी । विद्यासागर इस सब आमदनीको परोपकारमें लगा दे तैये-स ई १८६६ के अकालमें जैसा दान उन्होंने दिया वैसा राजाभोंषोभी दुर्लभ है,अनेक मद्रपुरकी विधवायच्चाका पालनपोषण करतैये-अनेक सुपात्राव मवान हजारों रुपया ऋणका चुकाकर नीलाम होनसे बचाये थे अनेक बनाय गे गियाको निजगृहमें लाकर टहिलकी और बंगालिया या बंगालम उनक उद्योगसे सकटाल स्कूल और शफाखान जारी हुयेये-एक छापाखानाभी जारी दियाथा जिमें प्राचीन ग्रंथ शोध २ कर छापेजातैये हिंदूकालिज परलयत्ता उहाँके उद्योगसे सुरा और बहुत फाल तय उसका स्वर्च वेही बदागत करते रह-

फुलीनप्राप्तना और शत्रियामसे अधिक विवाह वर्गकी कुरीति उन्हीं उद्योगसे मिटी बालविधवाभावा दुःख दूर विधवाविवाह साम्राज्य सिद्ध करन तथा जारी करनेमें बड़ा उद्योग दिया गवनमटसे उक्त विषयपर बन्सेन्टविल पास कराया अनेक विधवाविवाह अपने सामने कराये, निजपुत्रया विवाहभी एव विधवाले करादिया,अनेक पुस्तकभी विधवाविवाह सिद्धकरणाय छापी-गेसी २ सखी देशहितकारिणीपर समाज विरुद्ध यातें चलानेसे उनर ठिकड़ा ठानु हागये और प्राय ५० हजार रुपयेका ऋण हागया पर भतसमयतय सब ऋण चुकादिया य जखलाह साहित्य मिलनेशो जाते तय दूरी कपड़की चादर ओडता और घंतेला जूता पहिनथ परलयत्ता पुनीपसिटी तथा सिपिण सांसल परीक्षायी मद्रल कर्मिणके मेन्बर थे, गवनमटया जय योर यानून हिंदु भाय विषयमें बनाना हाता था तब विद्यासागरकी,राय भयपटी बढी जाती

ईसप—(Aesop) ये अनेक शास्त्रोंका ज्ञाता, परमचतुर और महानपुक्त स्वभावका था एशियाई रूममें पैदा हुआ, और बादको यूनामे जावसा था—देखनेमें कुरूप कुबडा और पस्तकद था मयम किसीके यहां गुलाम था पश्चात् निज योग्यताके कारण बादशाहके दरबारमें पहुँच प्रतिष्ठाका भागी हुआ था स ई से प्राय १००० पूव इसका समय है इसका और पृथ्वीप्रसिद्ध हकीम लुकमानका वृत्तांत बहुत कुछ मिलता है सम्भवतः ये दोनों एकहीहों—ये उसशिक्षाका आचार्य गिनाजाताहै जिसका व्यवहार किम्सा कहानियों द्वारा कियागया है, पशु, पक्षी, घनस्पति, धातु इत्यादिको बोलनेवाला फर्ज करके उनकी जवानसे अपना मतलब भदा किया है इसपकी शिक्षाका अभिप्राय यह था कि, मनुष्यको ईश्वरकी स्रष्टिकी सब छोटी बड़ी चीजोंको गौरसे देखकर उपदेश लेना चाहिये, क्योंकि पशुभाके अनेक स्वभाव मनुष्यको बुराई भलाईमें भेद बतलाते हैं, जैसे फुत्तेकी स्वामिभक्ति, शेरकी धीरता, लोमड़ीकी मछारी, और ऊँटकी सहनशीलता इत्यादि ईसपकी रची कहानियोंमें लालित्य नहीं है पर ये शिक्षासम्बन्धी उपदेशसे भरपूर हैं इन कहानियाके पढ़नेसे मनुष्यको अनेक अमूल्य उपदेश मिलते हैं और बच्चाको इनका पठाना परम लाभकारी है और इसी कारण इनका व्यवहार सब मुल्कों और कौमोंमें पाया जाता है अफलातूनने लिखा है कि, मुकरातने इन्ही कहानियोंकी पद्यरचना की थी—

ईसामसीह (Lord Jesus Christ) भूमंडलके धर्म प्रचारकोंमें गौतम बुद्धके बाद आपहीका दर्जा है यूरुप और अमरीकाके रहिनेवाले आपके मतानुगामी हैं और एशिया, आफरिका इत्यादिमें भी आपके मत पर चलने वाले करोड़ों हैं प्राय १९०० वर्ष पहिले आप एशियाई रूमके सूबे ज्यूडामें हजरत दाऊदके वंशमें बीथी मिरियमके पेटसे पैदा हुये, उस समय भूमंडलके पश्चिम विभागके रहिनेवाले मूसाके मतानुगामी यहूदी थे जूडसलम में यहूदियोंका एक बड़ा मंदिर था, जहाँ साल भरमें एक दफे बड़ा मेला होताथा मसीहने १२ वर्षकी उम्रमें मेलेके बीच इस मंदिरके पुजारियोंको परास्त किया, पश्चात् मसीहने निजधमका उपदेश किया घोड़ेही दिनाम १२ शिष्य होगये जि नको चारों तरफ उपदेशकरणार्थ भेजा—मसीहने अनेक आश्चर्यजनक बातें कीं अंधोंको नेत्र दिये, मुर्दोंको जिन्दा किया कुटियों को खंगा किया ५ हजार भादमियोंकी दावत एक खुराकसे की, समुद्रके तूफानको रोका पानी पर पैदल कई कोसतक चले, सूर्यकीसी क्षमफ दिखाई। ३३ वर्षकी अवस्थामें मसीह एक दिन शिष्योंसहित जूडसलम गये, वहाँके यहूदी पुजारिने, जो इनसे द्वेष रखताथा इनको एक इवाकर मुकद्दमा कायम करादिया और सूली ठिलवादी जूडसलममें इनकी कबर है और ईसाइयाकी धम पुस्तक बाइबिलमें इनके अनेक उपदेश हैं

सी रुपयेका इनाम पायाया-स्वाध्यायियों तथा अन्य मनुष्याकी यथाशक्ति तन मन धनसे सहायता करतेये एवं इनका नाम क्यासागर पढ़ गयाया-

स ई १८४१में संस्कृतकालिजकी शिक्षा संपूण करके विद्यासागरकी उपाधि पाई और फोर्ट विलियम कालिज कलकत्तामें ५०) रु मासिकपर नौकर हो गये हिंदी तथा अङ्ग्रेजी भाषाभी अपने परिश्रमी स्वभावसे शीघ्रही सीखली-बदले २ तनख्वाह ५००) रु होगई और प्राय ५००) रु मासिककी आमदनी स्व रचित पुस्तकोंसभी थी । विद्यासागर इस सब आमदनीका परोपकारमें लगा दे तथे-स ई १८६६ के अकालमें जैसा दान उन्होंने किया वैसा राजाभाकोंभी दुर्लभ है, अनेक भद्रपुरुषोंकी विधवाविवाहा पालनपोषण करतेये-अनेक सुपात्रोंके मकान हजारों रुपयेका झुकाकर नीलाम होनेसे बचाये ये अनेक अनाथ रो-गियोंको निजगृहमें लाकर दहिलकी और बंगालिया या बंगालमें उनके उद्यागस सेकड़ा स्कूल और शफाखाने जारी हुयेये-एक छापाखानामा जारी कियाया जिमें प्राचीन ग्रंथ शोध २ कर छापजातये हिंदूकालिज कलकत्ता उन्हाके उद्यागसे सुला और बहुत धाल तक उसका खर्च वेही बर्दागत करते रह-

पुलीनब्राह्मणों और क्षत्रियोंसे अधिक विवाह करनेकी कुरीति उन्होंने उद्योगसे मिटी बालविधवाभाका दुःख देख विधवाविवाह आम्नाक सिद्ध करने तथा जारी करनेमें बड़ा उद्योग किया गघनेमटसे उक्तविषयपर कन्सेन्ट्रिबिण पाल कराया अनेक विधवाविवाह अपने सामने कराये, निजपुत्रका विवाहभी एक विधवासे करादिया, अनेक पुस्तकभी विधवाविवाह सिद्धयग्याथ छापी-पसी २ सखी दशहितधारिणीपर समाज विरुद्ध बात खलनेसे उनये सज्जा शत्रु हांगये और प्राय ५० हजार रुपयेका झुण होगया पर अक्षममपतय सबझुण चुकादिया ये जबलाट सादिसमें मिलनेको जाते तय वेडी कपड़ेकी धाडर आडता और येतला जूता पहिरतेये कलकत्ता यूनीवर्सिटी तथा सिविल सर्विस परीक्षाकी स्कूल प्रमीरीक मेम्बर थे, गवर्नमेंटका जब काइ पानुन हिंदू भाष विषयमें बनाना होता था तय विद्यासागरनी गय अकथही पड़ी जाती थी स ई १८९१ में स्वर्गवासी हुये मिनलोगानी सहायता जीतनी करतये उनके लिय अपने पीछेभी उत्तम प्रबंध दानपत्रदारा परगप है-दानपत्रम २ हजार रुपये प्रतिमास पांनेरी व्यवस्था है

विद्यासागरके नामसे अथवा बंगाली लिपि शोधमय गीतामें गार्गी है

बहुलांमें उनकी रची पुस्तक प है-वासुदेवचरित्र अष्टमस्कान्त नामक एवं परिश्रम, अध्यात्मज्ञान, सौम्यदय, चरित्रावली आख्यायनमयानी जीवन्मूर्तिवत् इत्यादि संस्कृतम व्याकरणकी उपग्रमगिया और अष्टमु पाठ ३ भागोंमें उनकी या बनाया हुआ है

ईसप-(Aesop) ये अनेक शास्त्रोंका ज्ञाता, परमशत्रु और प्रहसनयुक्त स्वभावका था पासियाह रूममें पैदा हुआ, और बादको यूनाम जाबसा था-देखनेमें कुरूप कुपट्टा और पस्तकट्ट था प्रथम किसीके यहां गुलाम था पश्चात् निज योग्यताके कारण बादशाहके दरबारमें पहुँच प्रतिष्ठाका भागी हुआ था स ई से प्राय १००० पूर्व इसका समय है इसका और पूर्वामसिद्ध हकीम लुक्मानका वृत्तांत बहुत कुछ मिलता है सम्भवतः ये दोनों एकहीहैं-ये उसशिक्षाया आचार्य गिनाजाताह जिसका व्यवहार किस्सा कहानियों द्वारा कियागया है, पशु, पक्षी, वनस्पति, धातु इत्यादिको बोलनेवाला फर्ज करके उनकी जवानसे अपना मतलब भदा किया है इसकी शिक्षाका अभिप्राय यह था कि, मनुष्यको ईश्वरकी सृष्टिकी सब छोटी बड़ी चीजोंको गौरसे देखकर उपदेश लेना चाहिये, क्योंकि पशुआके अनेक स्वभाव मनुष्यको बुराई भलाईमें भेद बतलाते हैं, जैसे कुत्तेकी स्वामिमक्ति, शेरकी वीरता, छोमहीकी मछारी, और ऊँटकी सहनशीलता इत्यादि ईसपकी रची कहानियोंमें लाळित्य नहीं है पर ये शिक्षासम्बन्धी उपदेशसे भरपूर हैं इन कहानियाके पढ़नेसे मनुष्यको अनेक अमूल्य उपदेश मिलते हैं और बच्चोंको इनका पढ़ाना परम लाभकारी है और इसी कारण इनका व्यवहार सब मुल्कों और औमोंम पाया जाता है अफलासूनने लिखा है कि, मुकरयतने इन्ही कहानियाकी पद्यरचना की थी-

ईसामसीह (Lord Jesus Christ) भूमंडलके धर्म प्रचारकामें गौतम बुद्धके बाद आपहीका दर्जा है यूरूप और अमरीकाके रहिनेवाले आपके मतानुगामी हैं और एशिया, आफरिका इत्यादिमें भी आपके मत पर चलनेवाले करोड़ों हैं प्राय ३९०० वर्ष पहिले आप एशियाई रूमके सूबे ज्यूद्धाम हजरत दाऊदके वंशमें धीबी मिरियमके पेटसे पैदा हुये, उससमय भूमंडलके पश्चिम विभागके रहिनेवाले मूसाके मतानुगामी यहूदी ध जुडूसलम में यहूदियोंका एक बड़ा मंदिर था,जहाँ साल भरमें एक दफे बड़ा मेला होताथा मसीहने १२ वर्षकी उम्रमें मेलेके बीच इस मंदिरके पुजारियोंको परास्त किया, पश्चात् मसीहने निजधमका उपदेश किया थोडेही दिनमें १३ शिष्य होगये जिनको श्रापें तरफ उपदेशकर्णार्थ भेजा-मसीहने अनेक माश्वर्यजनक बातें कीं अर्थोंको नेत्र दिये, सुर्दोंको जिन्दा किया कृष्टियों को खंगा किया ५ हजार भाद्रमियोंकी दावत एक खुराकसे की,समुद्रके सूफानको रोका पानी पर पैदल कई कोसतक चले, सूर्यकीसी चमक दिखलाई । ३३ वर्षकी अवस्थामें मसीह एक दिन शिष्योंसहित जुडूसलम गये, वहाँके यहूदी पुजारोंने, जो इनसे द्वेष रखताथा इनको पकड़वाकर सुषुद्धमा कायम करादिया और सूली ठिलवादी जुडूसलममें इनकी कबर है और इसाईयोंकी धम पृस्तक बाइबिलमें इनके अनेक उपदेश हैं

उकलैदस (Luohid) मिभदेशांतरगत अस्कुरिया नामक शहरम स. ई. से ३०० वर्ष पूर्व जन्मा और निजनामका एक गणितग्रंथ रचकर जगत्प्रसिद्ध हुआ इसग्रंथमें वे सब साध्यभी शामिल हैं जिनको फीसागोरिस भादि विद्वानोंने इससे पहिले होकर प्रकट किया था ये अस्कुरियाके महाविद्यालयमें अध्यापक था और अस्कुरिया इसके समयमें गणितशास्त्रका देश विद्यालय गिनाजाताथा स. ई. १७१८ म पंडितजगन्नाथने जयपुरके राजा जयसिंहसब-इके हुकमसे उकलैदसके १५ अध्यायका अनुवाद हिंदीभाषाम करके उसका नाम रेखागणित रक्खा- अस्कुरियावासी प्रसिद्ध गणकटालमी उकलैदसका शिष्य था डाक्टर थीबो साहिब (Dr Thibaut) ने भापस्तबरचितस न्वसूत्रोंका अनुवाद भंगरेजीम करके प्रकट कियाहै कि, यूनानीहकीम फीसा गोरिसने भारतम आकर इनसूत्रोंको पढ़ा और फिर मिश्र तथा यूनातमें जाकर अनेवाओं इनकी शिक्षा दी-पश्चात् उकलैदसने इन्हीं सत्यसूत्रोंके भाष्य पर निजनामकी पुस्तक रची ।

उदयनाथकवींद्र (भाषाशायि) ग्राम वनपुरा (भंतरवेद) के रहनेवाले थे भाषाशायि फालीदास त्रिवेदी इनके बाप थे कवि मूलह इनके पुत्रथ-प्रथम बहु तदिनातथ राजा हिम्मतासिंह बंधहगोती भमेडीनगरे यहां रहकर कविता परतरहे उससमय कवितामें अपना नाम उदयनाथ लिखतेथे पश्चात् उक्त राजा के नामसे "रसचंद्रोदय" ग्रंथ रचकर "कवींद्र" उपाधि पाई और तबहीसे काव्यम अपना नाम कवींद्र लिखा पश्चात् कवींद्रजी राजा गजसिंह जोधपुरनगरे के दरबारम रहे और बादको रायबुद्धदादाकवींदीनरेणये दरबारमें भाद्र सायब सहित रहकर बाल व्यतीत किया ।

वि. स. १८०४ में विद्यमानथे

यतीग्राम भिल्ला राय बरेली के रहनेवाले कवींद्र त्रिवेदी दूसरे थ

उदयसिंह (रानाचिसीह) वि. स. १५९८में चित्तौड़की गद्दीपर बैठे-यद्यपि इनके बाप राना साहाजी १० फरोदकी सारहीदुई साहिबी पटते २ घोड़ीही रहगईपी, पर फिरभी इनका भताप इतनाथा कि जब वि. स. १६१६ में इन्होंने हामीली पदान पर चढ़ाईं गी थी तब मयानके मुजहिरी प्रदेके साथ बंदी, बीकानर इंटर, सोडा, मइत, मूंगरपुर, घांसयादा देवलिया, रामपुर इत्यादिके अलग रायराज भनी २ सेनासहित छटनेका गये थे-पर जोधपुरके राय मानदेवसे विगाह था, जय १५०० अंगीरारीका गिनायी सदापता सटनहीमें हामीलीसे मिलगा और रानाजी हार हुई इस समय रानाजी भगतदारी भी भजमानत थी परंतु जय वि. स. १६३४ म भाष्य

बादशाहने चित्तौड़ पर चढ़ाई की तब उस समय रानाके पास बहुत थोड़े परगने रहिगये थे कई महीने किलेमें घिरेरहिनेके पीछे जब बचनेकी कोई भागा न रही तो राणा उदयसिंह तो पहाड़पर चलेगये और उनके सेनाध्यक्ष जयमल्लन बड़ी सावधानीसे दुर्गकी रक्षा की जयमल्लके मारे जानेपर स्त्रियां तो चितापर जलकर मर गईं और पुरुष मात्र लड़कर कट मरे उस युद्धम जितने क्षत्री मारेगये थे उन सबके जनेऊ तीरम ७४॥ मन निकले इसीसे चित्तौड़पर ७४॥५ लिखते है

राना उदय सिंहका वि स १६२९ में देहांत होगया और उनके पुत्र राना प्रतापसिंहने गद्दीपर बैठकर अपने पूजनोंका गयाहुआ राज्य पुन विजय कर लिया और अपने घापके नामसे उदयपुर बसाया जो अबतक मेवाड़राज्यकी राजधानी है-

एडवर्ड सप्तम कैसरे हिंद (Edward VII Emperor of India, स १८४१में श्रीमती महारानी विक्टोरियाके द्वितीय गर्भसे भापका जन्म हुआ जन्मोत्सवमें २० लाख रु. खर्च हुये और साथ ही पुषराज तथा ड्यूकऑफसेक्स्त कोषगर्हंगायाकी उपाधि भापको दीगई-ब्रिटिश राज्यकी ओरसे ६० हजार पौंड आपकी घापिक व्ययके लिये नियत हुये-७ वीं वषमें भापका विधार्भ हुआ-पढते समय साधारण व्यक्तिके समान भापसे वत्ताष किया जाता था और इंग्लैंडकी भविष्यति स्थितिके अनुकूल भापको शिक्षा दीजाती थी स ई १८६१ में आपने कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटीकी मॅट्रिकुलैशन्के परीक्षा उत्तीर्ण की स ई १८६८ में माक्स फौड यूनीवर्सिटीने डी सी एल और एडिनबरो तथा डबलिनकी यूनीवर्सिटियाने एल एल डी की उपाधि सन्मानाय प्रदान की- १० वषकी उम्रम श्रीमतीने आपको सेनाका अर्धतनिक कर्नेल नियत किया, पश्चात् एडिनबगमें रहिकर आपने इटाली, फरान्सीसी, और जर्मन भाषा पढी और इतिहास शिल्प, भाईन तथा रसायनादि शास्त्रका विशेष अभ्यास किया स ई १८६३ में डेन्माककी राजकुमारी प्रसिद्ध सुंदरी अलेग्जडीनासे शादी की-विवाहके पश्चात् पार्लियामेंटने आपकी तनख्वाहमें ४० हजार पौंड घापिक बढाया और १० हजार पौंड घापिक आपकी पत्नीको देनेका ठहिराव किया स ई ६४ में आपके स्वगवासी प्रथम पुत्र ऐल्बर्टाधिकरका जन्म हुआ वृसंगे ही वष वत्तमान पुषराज पैदा हुये स ई १८७१ में आपको अर्पकर स्वरपीडा हुइ, जीनेकी आशा कम रहिगई, ब्रिटिश राज्य भरमें आपकी भारो ग्यताके लिये इस्सरसे प्रार्थना कीगई-स ई १८७५ में हिन्दुस्थान देखनेके लिये लंडन से बिदा हो पेरिस, ऐथेन्स, इटाली होते हुये बम्बई पधारे, भागरेम आपके स्वागतमें बढा मारी दर्बार किया गया और प्राय ५ लाख पौंडका माल

राजा महाराजाआकी भोरसे आपकी भट किया गया, भक्तगानिस्थानकी सीमा पर जब रुसन प्रयमवार चढाई की थी तब प्रजाकी प्रार्थनासे माताकी आज्ञा पाकर आप पत्नीसहित सेंटपीटसवग पधारे वहाँ पहुँच आपने रुसक सम्राटका और आपकी पत्नीने सम्राज्ञी अपनी बहिनयो समझाकर बखेडा शांत किया-स ई १९०१ म श्रीमती महारानी विक्टोरियाके स्वर्गवासी होनेपर इंग्लैंडके राग्यांसहासनपर बैठे राग्यपर बैठते ही भावका स्वभाव बदला है, जिन मित्राके साथ रातदिन बैठक रहती थी अब भावग्यवता विना नहीं भान पात आपयो कहिनेकी अपेक्षा करवग्ये दिखलाना अधिक पसंद है पाहियामदन पीन छ' लाख रुपया धार्मिक घतन आपको देना स्वीकार किया है-शुष्कीप्रसिद्ध कोहनूर हीरा जो आपकी माताके मुकुटम था अब आपकी मिला है-

एल्फिन्स्टन साहिब इतिहासकार (The Hon Mount Stuart Elphinstone) इसका पूरा नाम भानरेविल मोंट स्टुवर्ट एल्फिन्स्टन था-१८ वर्ष की भवभ्याम इंग्लैंडसे विदाहो दि-दुम्पान भापे और बंगाल सिविल सर्विसमें नियत हुये-बादको पेशावे दुर्बारम भेजे गये वहाँसे कुछ काल पीछे भोंसलाके दरवाजे रजीडेंट नियत होकर नागपुर गये और फिर राजदूतबनकर वापस गये-स ई १८३० म बम्बईके गवर्नर नियत हुये-७ वर्ष इस पदपर रहे और स ई १८३७ म पेन्शन लेकर इंग्लैंड चले गये-अंगरेजी विद्याका प्रचार बम्बई प्रांतमें इहाँके समयम हुआ दि-दुम्पानियों इनका स्मारक सिद्ध स्थापनकरणार्थ बम्बईमें "एल्फिन्स्टन फालिज" सोला-इंग्लैंड पहुँचकर इ-हाने हिंदोस्थानका सविस्तर विन्वासयोग्य इतिहास लिखा जो परम मनोहर है-

स ई १७३८ में पैदा हुये

स ई १८५९ म मरे

एलिजाबेथ, इंग्लैंडकी रानी (Queen Elizabeth) इंग्लैंडक बादशाह इनकी अष्टमयी बटी निज पिताके बाद इंग्लैंडकी गद्दीपर बैठी, प्रारिस्टेंट मतकी थी, जब गद्दीपर बैठी थी उस समय इंग्लैंडकी प्रजाभ धर्मसंबंधी घोर विप्लव उपस्थित हो रहा था, भारी प्रजा प्रारिस्टेंटकी और भारी रोमन कैथोलिक-रानी एलिजाबेथ प्रजामेव बनना चाहती थी, ज्ये उसने दानों मताकी समानतासे यत्न और भेज समयतय अपना विवाह भी इसी कारण नहीं किया और न अपना उत्तराधिकारीही नियत किया यदि यह किसी प्रारिस्टेंटसे शादी फालती तो सब रोमनकैथोलिक उभय शिष्टाज हाजान और भगर किसी रोमन कैथोलिक

शादी होती तो प्राटिस्ट लोग विगड़ बैठते—पूँजगासकोंकी अपेक्षा राज काज इसके समयमें अच्छा चला इतरफ शांति रही, प्रजाको सुख चैन मिला और लोगोंकी स्थितिमें अनेक प्रकारकी उन्नति हुई, सदारलोग सब प्रसन्न रहे और शैक्सपिअर भादि अनेक प्रसिद्ध कवीश्वर इंग्लैंड तथा स्कॉटलैंडमें इसी समयमें हुये—

तिजारतको तरफ्की हुई समुद्रम अनेक रास्तें और टापू दरियाफ्त हुये—तम्बाकू और आलूके बीज सर वॉल्टर राली साहिबन अमेरिकासे लाकर इंग्लैंडमें रोपण कराये अब इन दोनों चीजोंका प्रचार भूमण्डल भरमें होगया है—

स इ १६०३ म ४५ वर्षकी उम्रम मरी

ऐडीसन (Joseph Addison) पूरा नाम इनका जोसेफ ऐडीसन था—

स इ १६७० में एक अंगरेजी पादरीके घर विल्टशायरम पैदाहुये प्रथम शिक्षा चाटर हाँस लंडनम पाई, यही स्टीलके साथ इनकी मैत्री होगइ जो मरणपर्यंत निभी—बादको मैग्दालेन कालिज भाक्स फोडसे इन्होंने एम ए पास किया और यूरोपके अनेक देशाकी यात्रा की—यात्रासे लौटकर ल्वेनहेमकी लड़ाइ पर कविता रचनेके बदलेम कमिअर भाफ अपीलकी पदवी पाइ और स ई १७०६ म अंहरसेक्रीटरीभाफस्टेटके पद पर नियुक्त किये गये—कुछ दिन बाद लाइ छपिटनट घाटनके सेक्रेटरी नियत होकर भायलैंड गये वहां रहिकर अनेकानेक मज़मून अपने मित्र स्टीलके जारी किए हुये पत्र “टेटर” नामकको लिखे स ई १७११ म “स्पेक्टेटर” नामक पत्र जारी हुमा और उसके लिये भी अनेक प्रबंध इन्हाने लिखे—पश्चात् अनेक ग्रंथ रचे—स ई १७१६ मे इन्होंने अपनी शादी की परंतु सुखदाइ न हुई—स ई १७१७ मे सेक्रेटरीभाफस्टेटके पद पर नियत हुये और थोड़ेही काल पीछे पेंशनले घर बैठे—

स इ १७१९म परमधामको सिधारे और वेस्टमिनिस्टरपेर्वाम दफन किये गये। डाक्टर जानसनकी राय है कि, ऐडीसनरचित ग्रंथोंको पढ़कर सुदीर्घ, रसमी सुंदर, और सभ्य इबारत लिखना आजाती है— मकाले साहिबकी भी सम्मति है कि “अंगरेजी इबारत ऐसी सरल, सौंदर्यसे परिपूर्ण और उत्तम किन्तीने भी नहीं लिखी” पर इनकी इबारत प्रभाव उत्पन्न करनेवाली नहीं है, इन्हाने मौन साथ लिया था—

ऐडीसन, प्रोफेसर (Professor Addison) अमेरिकावासी प्रसिद्ध विद्वान् धे प्राय स ई १८८० म इन्हाने बिजलीकी रोशनीका आविष्कार किया इनकी योजनाके अनुसार गैस और तेलके बिना औषधियाके योगसे बिजली उत्पन्न होकर प्रकाशका काम देती है— इन्होंने महाशयने एक युक्ति ऐसी निकाली

जिसस सूर्यका प्रकाश रात्रिसे समय भी दीखपड़े इस युक्तिसे एक वागुमन्त्र
 टुकड़ा बितनीही भीषणियोंके योगमें बुझाकर सूर्यके प्रकाशमें रक्खा जाताहै
 धूपमें रखनेसे वह टुकड़ा सूर्यकी किरणोंको छुल्लेताहै इसी टुकड़ेको रात्रिसे
 समय यदि अंधकारमें रक्खाजावे तब उसमेंसे थोड़ी देरतक स्वतः प्रकाश होताहै
 फोनाग्राफका आविष्कारभी इन्हींके द्वारा हुआ इस यंत्रके समीप जो बात बर्ही
 जातीहै या राग गाया जाताहै, वह इसमें भरजाताहै और उसे जब और जहाँ सुनना
 चाहें सुना सकते हैं मनुष्यका स्वरभी इसमें अच्छीतरह पहिचाना जा सकता है

पेपामीनान्हाजी (Eppaminondas) थेबीज नियासी प्रसिद्ध सेनापति
 तथा सुमधुधवार के मोटियाके राज्यवर्षशम हुआ निजशुभभाचरणों तथा रणकुशल
 होनेके कारण प्रसिद्ध हुआ उन्नभरमें कभी भारतपर भाषण नहीं किया स ईसे
 ३७१ वर्ष पूर्व स्पार्टावासियोंको ल्युफ्टराकी लड़ाईमें परास्त करके अनेकजय प्राप्त
 करता हुआ ५० हजार सेनासहित स्पार्टाके राजा लिफ्टेमनके राज्यमें घुसगया
 इसके बाद थेबीजमें लौटकर आया, वहाँके लोगोंने उसपर यह दाय लगाया कि
 उसने लड़नेमें नियमसे अधिक समय व्यतीत किया, इसदापके बदलेमें उसको सुली
 त्रिये जानेवा हुकम दिया गया पेपामीना जानने यह हुकम स्वीकार कर न्यायाधी
 शासे प्रार्थना की कि मेरी छतरपर यह अद्विष्ट करा देना कि, स्वदेशको बचा
 देनेके बचानेके बदलेमें सुली दीगइ यह बात न्यायाधीशोंके हृदयमें अस्तरणर गइ, एवं
 उन्हान अपराध क्षमा करके पेपामीना जानको सम्पूर्ण पक्षपर नियत किया
 ४८ वर्षकी उन्नम किसी लड़ाईमें घायल होकर मरा, थेबीजकी प्रजाने बड़ा
 शोक किया क्याकि, उन्होने इसीके उद्योगसे स्वतंत्रता पाई थी और इसने मर
 नेसे १० ही वर्ष पीछे वह स्वतंत्रता जाती भी रही-

स ई से ४१४ पूर्व जन्मे

स ई से ३६२ पूर्व मरे

एल्फ्रेड आज़म (Alfred the Great) पश्चिमी सैक्सन लोगका राजा
 क्विन्ट युक्सया पुत्र था स ई ८५८ में इससे पापका देहांत हुआ और इसका
 म्यष्ट भ्राता राजगद्दीपर बैठा स ई ८६६ में भाइय मरनपर राज्य इससे
 अधिकारमें आया वेरा डैनवी लड़ाईमें इसने जेस लोगारो परास्त किया पर
 थोड़ीही दिन पीछे डेन्स लोगारो हारकर इस जंगलकी भार भाग जाना पड़ा-

थोड़े दिन जंगलमें रहकर इसने सेना एकत्र की और डेन्स लोगारो पर
 पराजय पुन गिजय पाई जय व धरम ५६ पुस्तक लिखे, यानुन बनाये पंचापतन
 मुगईमें कैन्टन करनके प्रापद घटाये, पाठशालय जारी कीं द्वा चित्तशाय
 मुलकर भव्यापय नियत किये, पूर्वीपश्चिमी गालिज भागमें पेशगी मुलकरन
 की-बहुतसी पुस्तक रहीं और भाग पुस्तकोगा मनुष्याद् लिखित अंगरहीम

किया, खोरी होना इसके समयमें बंद होगइयी दिनमें ८ घंटे पूजा पाठ, ८ घंटे राज काम और ८ घंटे खाने, पीने, सोने इत्यादिमें चिताता था

स ई ८४८ म जन्में

स इ ९०१ म मरे.

पेल्वर्ट राज कुमार सैक्सकोबग और गोथा घाले (Prince Albert of Saxe coberg and gotha) भारतेश्वरी विक्टोरियाके पति थे स ई १८१९ म सैक्सको बगके ड्यूकके घर इनका जन्म हुआ ये उन सैक्सन लोगोंके घरा घर थे जिन्होंने अपने देशकी स्वतंत्रताको जमनीवालोंके आक्रमणसे बड़ी धीरतासे बचायाथा

इनके बड़े दो भाई थे—बुभाग्य घश इनके जन्मके पश्चात् इनके मातापित्ताने विवाहका बंधन तोड़ दिया था और इसलिये राजकुमारको माताका संग त्याग पिताके साथ रहना पड़ा था टादीने इनका पालन पोषण किया पर वह भी इनको १२ वर्षका छोड़कर मरगइ राजनीति सायन्स साहित्य संगीत इत्यादि नाना शाखोंकी शिक्षा पाकर इन्होंने देशाटन किया—हॉलैंड जर्मनी, आस्ट्रिया, इंग्लैंड, इटाली, स्वीटजरलैंडका अवलोकन किया इनकी दादी विक्टोरियाकी नानी थी—उसने इन दोनोंमें बच्चपनहीसे मेल जोड़ करादिया था स ई १८४० में दोनोंका विवाह हुआ, और पार्लियामेंटने ३ लाख रुपया वार्षिक बखत आपका नियत किया और ब्रिटिश सेनाके “फील्डमार्श्ल” का पद तथा “हिजरायलहाइनेस” की उपाधि दी और राज्यमें आपका राजा सम्भाव रहा पर महारानी विक्टोरियासे सले विवाहने एकही वषवाद् १ फन्पा और दूसरीही वर्ष प्रिंसपेल्वट पदवह जो आजकल पदवह सप्तमके नामसे राज्य करतेहैं पैदा हुये—पतिपत्नीमें अत्यंत प्रेम था और प्रिंस पेल्वट अपनी पत्नी श्रीमती विक्टोरियाको राजकाजमें बड़ी सहायता देते थे वे परमनीतिज्ञ विद्वान चतुर और संगीतविद्याके रसिक थे—स्वभाव शान्तिपुक्त था देशोन्नतिके उद्योगी और स्वरूपवान् थे स इ १८६१ म आपका स्वाम्य बिगड़ा, इलाज बहुत कुछ हुआ पर रोग दिन प्रति दिन बढ़ताही गया—परिणाम यह हुआ कि, १४ वीं दिसंबरकी रातको आपका देहांत होगया—प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ सी प्रेविल साहिबने अपनी पुस्तकमें लिखाथा कि “प्रिंसपेल्वट मानो स्वयं राजा हो गये हें, उन्हें काम करना बहुत पसंद है, रानी विक्टोरिया चाहे रानीकी उपाधि धारण करती हैं परंतु वास्तवमें शासन तो प्रिंस पेल्वटहीका है, सब प्रचारसे वही इंग्लैंडके राजा हैं” इंग्लैंडके प्रधान अमात्य लाड वॉजन्स फील्डने राजकुमारकी मृत्युके बाद स्पष्ट कहा था कि “प्रिंसपेल्वटके साथ मानो हमने इंग्लैंडके राजाको वफ्त कर दिया” जिस समय प्रिंसपेल्वट का शरीर

भूमिसमपण कियो गया ता प्रजावगने पक्क स्वस्से "सदृणी राजकुमार" नामसे पुकारकर हृदयका दुःख हलका किया भापकी समाधि प्रामोस मैदानम संगममरकी घड़ी दर्शनीय बनीहै-समाधि पर लट्टिन भापामें पा लेख भक्ति है-"विपोगिनी विधवा रानी विकटोरियाने प्रियपति प्रिसण्डबर्टें यावत् नग्यमान पदाथ यहारखवाय ! यहीं पर वेभी भंतसमय पतिके साथ सुखकी निद्रा लेगी "

कनफुशिअस (Confucius) चीनके रहनेवाले प्रसिद्ध तथ्य विज्ञानी और उपदेष्टा थे पिता इनको ३ वर्षका छोड़कर मरणपेये-नाद इनके पालन पोषण और शिक्षाका प्रबंध कियाया-१० वर्षकी उम्रम इन्होंने शार्दा की पर पठन पाठनम बाधा महते देख स्त्रीको त्याग दिया-राजसेवा चीनने इनको सुयाग्यवाकर कृषिधिभागका भफसर नियत किया और कुछ दिन बाद माजकी मंडिया, भेढाके गड्ढा तथा चरागाहाका इन्स्पेक्टर बनादिया-राजसेवा ये बड़े परिश्रमसे करतेये ३१ वर्षकी उम्रम माताके दुर्घात होने पर राजसेवा छोड़ ३ वर्ष पर्यंत शोकमें रहे और फिल्लासोकी पढठरह-पश्चात् राम्यसम्यधी यास्योका विचार ठाना और लोगको उपदेश करना शुरु किया, भनक मतपर इनके समाजविकरुद्धये पंध जातिघालने इनको छोड़दिया पर ये दृढतासहित उपदेश करतही रहे, बादयो ये देशाटन करन चले, भनक सुधारये हाकिमाने इनका उपदेशक नियत किया-इसी समय इनको किसी सुबकी सुबेदारी मिलगइ और एकही वषम उक्तसुबेकी इतनी उन्नति इन्होंने की कि अन्यसुबदार इनसे इंपांटेस खानेलेगे-सबन मिलकर सम्राट चीनस इनका पिकापत की जिसस उक्त सम्राटन इनको पदभुत करदिया १३ वष तक इपर उपर घूमकर उपदेश देतेरहे-भेतमें निज जम्मभूमिको लीट और परलोकके सिधार-इनके बहुतसे खेले होगये ध-ध्यान, धार्थान और धोरियायासी इनके रथेधियाकी भपला चातुर्पताकी मूज जानत है इन्हाने कोई नया मत नहीं चगाया पर राम्य प्रबंध, देशरीति, गहिन सहिन इत्यादिये सम्यधमें बहुतसे उपयागी सुधार किये, देशोन्नतिकी इनको ध्याने थी, किसी मतपर नहीं चलेतेथ पर नाम्नि धनधे-ध्यानमें इनके धंधकी भपतय प्रतिष्ठाहै प्रथय नगरम इनके नामकी मंदिर है जिसमें प्रति वर्ष राजा तथा प्रजा इनकी मूर्तिकी पूजा भपती चरताहै-ये सर्व्व उपदेश करतेये कि किसीका मत सताभी सपना भद्वयनी, परिश्रम करो और मेरू मिलवमे रहो

स ई स ५५१ वष पूव हुये

स ई स ४७९ वर्ष पूव मर.

कनिष्क इसका राज्य काबुल कंधारसे लेकर आगरा और गुजरात तक था चीन तकके बादशाह इसका हुकुम मानतेथे और द्वेनय सङ्गके लेखानुसार ये चीनापति कहिलाताथा बौद्ध मतानुगामी थाऔर उत्तरीय बौद्धोंकी सभा इसाक समयमें हुई इसने बौद्ध मतके उपदेश करनेके लिये दूर उपदेशक भेजे राजधानी इसकी काश्मीरम थी और ये सुरानका रहिनेवाला यूर्ष्वाकौमका था—स ई ७८ में ये कश्मीरके राज्यसिंहासन पर बैठा इसने बौद्धमतकी धमपुस्तकोंका पुनर संस्कार कराया जिनका रिवाज भयतक तिब्बत, ततार, और चीन इत्यादिदेशोंमें है इसके दादा हविष्कने जो काबुलम राज्य करतथा, कश्मीर विजय किया हविष्कके बाद हुष्क और हुष्कके बाद कनिष्कने राज्य किया—कनिष्कने निजपूर्वजोंका राज्य बहुत बढायाथा

कपिलदेव मुनि (तत्त्वसमास सांख्यसूत्रोंके कता) कर्दम ऋषिके घर देवहृतिके उदरसे जन्मे कपिलके बड़े होनेपर कर्दम ऋषि इस समयकी प्रणालीके अनुसार वनको चलेगये और धोड़ेही दिन पीछे मृगपुत्रश हुये कपिलने तत्त्वसमास सांख्यसूत्राका उपदेश करके निजमाताको शोकरहित किया और आप कल्कत्तये पास गंगासागरको चलेगये वहां रहिकर योगाभ्यास करते रहे और शुकादिऋषियोंको सांख्ययोग पढाते रहे सांख्ययोगका मुख्य अह्वेय यह है कि, आत्माको आविनाशी और शरीरको नाशवान् जानकर संसारी मायाम चित्त न लगाना चाहिये कपिल दर्शनकारोंमें सबसे प्राचीन हैं महा भारतसे पहिले हुये कर्णोंके गीतामें सांख्यका निम्नस्थ उपदेश पाया जाताहै—
 “ एषा तेभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगस्त्वमा श्रुणु ” पुरातत्त्ववेत्ताओंकी सम्मति है कि कपिलदेवहीने गौतमबौद्धकी जन्मभूमि “ कपिलवस्तु ” नामक नगरको बसाया था और इन्हींके सांख्यसूत्रोंके आशयपर बौद्धने अपना मत बलाया—
 छःअध्यायोंमें सांख्यसूत्रोंके बनानेवाले कपिल दूसरे थे और महाभारतके पीछे हुये येही दूसरे कपिल फिरङ्गी विद्वानोंके मतानुसार स ई से प्राय ७०० वर्ष पूर्व हुये

कर्षीन्द्र—वेष्मो उदयनाथ भापाकवि—

कबीर (कबीर पन्थ संस्थापक) वि स १५४५ में इनका विद्यमान होना सिद्ध है ये वास्तवमें किसजातिके थे ठीक विदित नहीं केषल इतना मालूमहै कि एकदिन “ नीमा ” जुलाहिन निजपति नूरीके साथ किसी विवाहोत्सवमें गईथी रास्तेमें लहिरतारा झीलमें, जो काशीके पासहै, पानी पीने गइ । वहां एक मुर्तका पैदाहुआ बच्चा पड़ा पाया, नीमा उसे उठा लाई और बड़े प्रेमसे पाला, और कबीर नाम रख्वा बड़े होकर कबीर जुलहै

का पेशा कर अपना समय ध्यतीत करने लगे, उनके हृदयमें भगवद्भक्ति तथा
 अतिपिसेवाका भंडुर जन्महीसे पाया जाताया "गुरुरूपी वृणधार (शिवैया)
 के विना भवसागरमें इसदहरूपी नौकाका फौन पार लगावेगा।" यह मंत्र
 सर्ववर्ही उनके मनम उठय हुआ करता था, और भक्तसर उनके ब्याकु
 करवृत्ता था-पश्चात् कबीर गुरु रामानन्दके शिष्य होगये और निज योग्यता
 कारण मुख्य शिष्याम गिने गये गुरुने इनको शब्दयोगकी जिज्ञासा दी-
 सद्गुरुको प्राप्त हो कबीरसाहिब प्रकृत साधु और सिद्ध पुरुष हुये, और
 हिंदू मुसलमानाएँ तीव्र प्रतादिपर तीव्र प्रतिवाद् करनेमें प्रकृतहुये, विप्रीक
 बादशाह सिखदर छोदीके थहां कबीर साहिबक नाम मुसलमान धमका
 निन्दा करनेका अभियाग उपस्थित हुआ, पर बादशाहने उनकी परमात् देख
 उनसे मित्रता करली कबीरपंचम शब्दयागका उपदेश किया जाता
 कबीरका कथन है कि "भगवान् शब्दरूपसे सबके घटमें विद्यमान है शब्दपार्गी
 जन साधन बलसे अपने २ शरीरके भीतरही उस शब्दको सुनते और गुरुकी
 ईश्वरका दर्शन करते हैं, मनुष्य भगवान्को इन्द्रियोंद्वारा किसी तरह प्यासमें
 नहीं लासवता न देख सकता है, इसी कारण परमेश्वर जीवके उद्धारके द्विप
 गुरुरूपसे भयतार लेकर दर्शन देते हैं, पेशही गुरुको सद्गुरु कहिये है सद्गुरुकी
 शोभमें प्रत्येक मनुष्यको रदिना साहिब, सद्गुरुकी पहिचान ये है कि, उनके ईश
 रस्यया भाभास बचपनहीसे अनेक अद्वैतिक त्रियायलाप द्वारा प्रगट हल
 लगताहै, सद्गुरुके अतिरिक्त संसारमें प्रत्येक ईश्वर और पतेश्वर नहीं है" कबीर
 साहिबन यहूतकालतक जीवन धारण करके बगाल, पंजाब, आसाम इत्यादि
 देशाम निजमतया प्रचार किया-धर्ममें लयदिन निजशिष्योंको उपदेश करते
 देह त्यागदी-हिंदू, मुसलमानोंमें सुकफकारीर पर झगडा हुआ, परन्तु जय रूपसे
 सादर उठाकर देयातय शककी जगह फुडोवा कर पाया-कबीरकी यविता जग
 त् प्रसिद्ध है, साक्षात्, बीजक, कृपादि उनके धनारे, प्रपोंमेंछ मुख्य है-कबीरका

जिससे दोनामे विरुद्ध होगया-पश्चात् कमलाकरने तत्सविवेक नाम एक ज्योतिष सिद्धात रचा जिसम अनेक उपपत्तिया और युक्तियां मुनीश्वरके मतके खण्डनाथ लिखीहैं-बादको मुनीश्वरने ग्रहोंका स्पष्टस्थान जानने केलिये "भङ्गी" नाम एक क्षेत्रक्रिया रची-कमलाकरने उसके खण्डनके लिये अपने छोटे भाई रङ्गनाथसे "भङ्गीविभङ्गी" नामधरप्रथ रचवाया कमलाकरने भास्कररीय बीजगणितके अनेक प्रकारोंकी उपपत्तियां अपने बुद्धिबलसे बहुतही उत्तम कीहैं-जिस अंकका वर्गमूल पूरा २ नहीं निकलता उसके मूलकाभी वृद्धा करसे पूर्णविचार है-सूयसिद्धांतके भी अनेक प्रकारोंका समयन खूबही कियाहै और महामारी भूकम्प इत्यादिकाभी अपने ग्रंथमें भलीभाति निरूपण किया है-निर्णयसिंधु धर्मशास्त्रका ग्रंथ इन्हींका बनाया हुआहै-इनके पूर्वजोंका निवास स्थान गोदावरीतट गोल नामक ग्राममें था पर इनके पिता बालक्याँसहित काशीमें आ बसेये

जन्म इनका शाके १५३८ में हुआ

कमलावती रानी ये राजपूत जातिका गौरव बढ़ानेवाली अगतप्रसिद्ध सुंदरी गुजौरकी रानी थी निम्नन्य दोहा इसके विषयमें मराहूर है-

दो०-ताळ तो भूपाल ताळ, और सब तलैयां ।

रानी तो कमलावती, और सब विलैयां ।

इसका वृत्तांत भूपाल राज्यके संस्थापक सदाशिव मुहम्मदखाँके सम्बन्धमें देखो

कमाल-देखो वकीर

कर्ण (महावानी) सूर्यके धीर्यसे कुन्तीको गर्भ रहा जिससे कर्ण पैदा हुआ-कुन्तीका विवाह उस समय राजा पांडुके साथ नहीं हुआथा एवं उसने बच्चेको संतुकर संद करके जमुनानदीमें छोड़दिया धृतराष्ट्रके रथधानको यह संतुकर घदिता मिठा संतुकरको पाकर उसने बच्चेको निकाल लिया और उसका पालन पोषण किया जब कर्ण जवान हुआ तब दुर्योधनने उसको अङ्ग देशका राज्य दिया महाभारतकी लड़ाईमें कौरवोंकी तरफसे लडा और अर्जुनके हाथसे मारागया प्रसिद्ध है कि, राजा कर्ण स्वामन सोना रोज पुण्यकरता था-ये बड़ा धीर और धनुर्धारीया-द्रौपदीके स्वयंवरमें पहिले इस्तिने वांस पर टैंगी चक्रमें नाचतीहुई सोनेकी मछलीकी परछाईं पृथ्वीपर रखे हुए सेलके कटोरेमें देखकर ऊपरको तीर चलाकर मछलीकी आँखमें निशान लगा याया पर प्रतिष्ठित वंशावली न दिखला सकनेके कारण द्रौपदीको न विवाहसका

कल्याणवर्मा (ज्योतिषकार) होरा शास्त्रमें सायबली नाम बहुत बडी पुस्तक इनकी रचीहै-ये रीवाँके बचेखवंशी राजाओंके मूल पुरुष थे और इतर साहित्यके लेखानुसार स ई ११५ में रीवाँ में राज्य करतेथे-इनके बापका नाम व्याघ्रदेव था-देवग्राममें इनकी राजधानी थी

कल्हण पण्डित (कर्मीर राजतरङ्गिणीके कता) इनके पिता चम्पव कर्मीर द्धारम मंत्रीके-इन्होंने पांडवाक समवालीन भाद्रिगोनदसे लेकर राजा अणु सिंह तत्रका कर्मीररा इतिहास राजतरङ्गिणीमें लिखाहै-यह ग्रंथ इन्होंने स ई ११४८ में सम्पूर्ण किया-नीलमत नामक ग्रंथ भी इन्हींका बनाया हुआहै- कर्मीर राजतरङ्गिणीका दूसरा भाग जौनपुरने बनाया और तीसरा भाग पं श्रीवरे से ई १४७७ म सम्पूर्ण किया-चीया भाग प्राहभट्टने बादशाह अकबरके वक्तमें लिखा-कल्हणजीने राजतरङ्गिणीके लिखनम ११ मार्चिन इतिहास ग्रंथ तथा अनेक दानपत्र अनुशासनपत्र और शिवालय आदिकी लिपी भी देखीयीं-इसके ग्रंथाके देखनेसे प्रतीत होता है कि य वड़े उद्धत और अभिमानी थे और गवपणा इनकी अत्यंत गंभीरथी इनके मतानुसार ३५० वर्ष कलिपुग र्वातने पर महाभारतका युद्ध हुआ था

कश्यप-इसकी गणना सप्त क्रापिया तथा १० प्रजापतियोंमें है-ऋग्वेदका ऋचाओंम इनका नाम आया है-यस्य ज्योतिष सिद्धांत इनका बनाया प्रसिद्ध है-कश्यपमेह जिसका अपर्धश कर्मीर है इन्होंने बनाया दक्ष प्रजापतिकी १३ कन्यायें इनकी शिवाही गइ थीं जिनसे बहुत संतति उत्पन्नहुईथी इनका कथन है कि " क्षमा धर्म है, क्षमाही यह है क्षमाही तप है और क्षमाहीसे यह जगत् स्थिर है "

कात्यायन चरुचि (पाणिनीय सूत्रार धातयकार) मौकेसर मैसल मूलरके मतानुसार ये स ई स प्राय ३५० वर्ष पूर्व मगधदेशा धिपति महाराज मन्दके द्धारम मंत्रीरहे-ये कर्ताः ऋषिये वंशम थे निरस्य ग्रंथ इनके बनाय हुये है-

ऋग्वेदकी अनुक्रमणी, ऋग्वेदीय औत सूत्र २६ अध्यायम, पाणिनीय धातय, धर्मप्रदीप, कात्यायनस्मृति, सामवेदीय गृह्यसूत्र, भयवण्यकारिया, कात्यायनी तर्पण,

कात्यायन (धर्मसूत्रकार) इन्दान सूत्ररचनाके आगत मार्चिन समयम कर्ताः ऋषिये वंशम उत्पन्न द्धारधर्म सूत्र ग्रंथके पगान् इन्हीं धर्म सूत्रोंके भाग यपर कात्यायन धर्मग्रंथिने कात्यायन स्मृति र्थी शूद्रपञ्चवेदीया माप्येन्द्रीशास्त्राया प्रातपाप्य भी जिसम पन्द्रोशाण्यके नियम है इन्हींका बनाया हुआ है-

फार्नेयालिस (माण्डस भाय फार्नेयालिस) Marquis of Cornwallis) इंग्लैड कीपजाती जटन और विभूतके फार्नेयाले इन्होंने किया पट्टी-स ई १७७८ म अंग्रजों सनाम फार्नेयाले पदपर नियत हुये स ई १७६७ में एचरन्ट फार्नेयाला भादश पाया। और निज निवार मन्तर अणु दानपाणि

सकी पदवी प्राप्त की—स० इ० १७७० म कोटाधीश हुये और सात वर्ष बाद अमेरिकाके मुद्रमे सेनापति नियत कर भेजे गये वहाँ इन्होंने वहाँ २ वारसाके काम किये इन सेवाभास प्रसन्न होकर स० इ० १७८६ मे घुट्टिश गवर्नरमदने इनका हिंदोस्तानका गवर्नरजेनरल तथा कमांडर-इन-चीफ नियत कर भेजा हिंदोस्तान भाकर इन्होंने बङ्गलौर विजय किया और मैसोरके नवाब टीपूसुलतानको परास्त किया—इसके बाद इंग्लैंडको वापिस गये और माड्रिडकी पदवी पाइ—स० इ० १८०४ म दूसरी दफे गवर्नर जनरल नियत होकर हिंदोस्तान भाये पर दूसरीही साल ६७ वर्षकी उम्रमें मर गये

कालिदास—(कविकुलचक्रवर्ती) लोकविदित है कि कालिदासकी कविता जगतसाहित्य में अनुपम सामग्री है—किसी महात्माने कहा है कि 'कालिदासकविता नव वय' सम्भवन्तु मम जन्मजन्मनि ' इन्होंने अपने कथित्व शक्ति और नाटकगत—चरित्र चित्रण तथा अन्यान्य सौंदर्य और कल्पनाकी सृष्टिद्वारा भूमंडलके समस्त कविकुल चक्रमें उच्चासनको पाया है—वैज्ञानिक, राजनैतिक तथा सामाजिक तत्त्वोंके दर्शानेमे कोई कवि इनकी बराबरी नहीं करसका उपमाके विषयमें प्रसिद्ध ही है कि "उपमा कालिदासस्य " मानवचरित्रको तथा चित्तके सूक्ष्म भावोंको इन्होंने ऐसी स्पष्ट रीतिसे बरसायाहै कि मानों चरित्र खँचकर प्रत्यक्ष दिखा दिया है—जो ग्रंथ कालिदास प्रणीत मिलते हैं वे कालिदास नामके १ कवियाने भिन्न २ समयमें होकर बनाये थे और उपरोक्त कथन उन तीनाकी कवितापर घटता है—कालिदास नामके ३ कवियोंका होना विक्रमी संवत्की १२ वीं शताब्दीमें होनेवाले राजशेखर कविके निम्नस्थ श्लोकसे सिद्ध होता है—श्लोक—“एकोपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित्। शृंगारे छलितोद्गारे कालिदास प्रथी किसु " इनमेंसे प्रथम कालिदास तो विक्रमादित्य सकारीकी सभाके भलेकार थे और कर्मीरके रहनेवाले किसी सामान्य ब्राह्मणके घर जन्मे थे छद्मपनमे कुछपढा लिखा न था केवल एक राजकन्यासे विवाह हो जानेके कारण भ्रमोल विद्याधन इनके हाथ लगा—कहते हैं कि राजा शरवानन्दकी कन्या विद्वत्तमाका प्रण था कि जो शास्त्रायमें मुझे हरावेगा उसी को मैं बरूंगी—बुर २ से बड़े २ पंडित भाये पर सब हारे—निदान लजित हो पंडितोंने एका किया और किसी निरक्षर मूर्खसे राजकुमारी की शादी कर-वेनेका विचार ठाना—यह ठान उन्होंने एक अत्यंत मूर्खको तलाश किया और उसको समझा दिया कि राजकुमारीके सामने कुछ बोलना नहीं, जो बातकरना हो सो सकेतद्वारा करना इस प्रकार समझाय वे उस मूर्खको सभाम लाये और राजकुमारीसे कहा कि ये हमारे गुरु आपसे शादी करने भाये है, पर भाज कल्ह मानी साथे हुये हैं, इसलिय सकेतद्वारा शास्त्राथ करलीजिये राजकुमारीने इस अभिप्रायसे कि, एक परमेश्वर है एक ठंगली

उठाई-मुखने समझा कि, मेरी प्ये भौख फोड़नेको कहिली है एवं उसने रंज
 लिये इस विचारसे दिखलाई कि, मैं तेरी दोनों फोड़ देऊंगा परंतु पंडितों
 उद्यम देखे २ अर्थ निकाले कि राजकुमारीको हारमाननीपड़ी-दोनोंया विधा
 ह होगया और राजभवनम रहिने लगे-ये धार्मिक मूर्ख बोलता नहीं भा और
 पशु समान रतिक्रीड़ा करता था बहुत दिनोतक राजकुमारी पर इसका कुछ
 भेद विदित नहीं हुआ एक दिन रातको सोतेपर ऊंटकी विज्ञाहट सुन
 राजकुमारी खौब उठी और पूछने लगी "क्या है?" मूर्ख जो कि शीशान्द्रभी
 तीव्र उच्चारण नहीं करसकता था अपने मौनव्रतको भूल घड़िने लगा उट
 उट!! उट!!! तब तो पंडितोंका छल राजकुमारीको मालूम हुआ और
 उसने क्रोधमभा मुखका बड़ा निरादर किया मुख भी लजित हो भातमघात करने
 लगा पर कुछ समझसोच विद्या पढ़ने चल दिया-विद्या पढ़पंडित हो परको
 लीटा, जब मकानपर भाया तो रिंघाड खोलनेके लिये अपनी सीमा
 पुवारकर कहा "अनावृतवपाटे टांटेदि" यिष्ठसमाने पतिकी बोरी
 पहिचान पूछा "अस्तिवभिद्राग्निशेष" अर्थात् क्या अथ कुछ योत्नार्थक
 भाये कालिदासजीने निम्नपत्नीका प्रश्न सुन उसका एव २ पद ग्रहण करते
 कुमारसम्भय, मेघदूत और रघुवंश नाम काव्य बनाये पश्चात्, कालिदासकी
 उल्लेखसे राजा विक्रमादित्य स्वामीके दरबारम भाये और वही मन्त्रिण
 भार्गी हुये धार्मिकसे राजा प्रवरसेनके निमित्त इन्होंने महाराज विक्रमकी भाठसे
 "स्तुतुषु" नामक काव्य बनाया

कालिदासद्वितीय-(अभितानशाकुन्तल आदि नाटकों के कर्ता) इनके
 निम्नमेव स्रोतसे विदित जाता है कि ये नाटकों के कर्ता कालिदास और भव-
 भूति वर्धाहर एवही समयमें हुए। अथ- "नाटिके भवभूतिर्वा यथे वाचयमयवा,
 वसते रामचरिते भवभूतियदिभ्यते ॥" भवभूति वर्धाहरा यि० सं० की उद्धृ-
 त मूलकां शातान्दीम दाना इतिहासोत्तरे सिद्ध है, इसी समय उल्लेखनीय गद्य-
 पर महाराज विक्रमादित्य हुए राज्य करते थे जिसमें प्रतीत होता है कि ये
 द्वितीय कालिदास महाराज विक्रमादित्य दशवी सभाके अंतर्गत थे-निम्नमेव
 नाट्यग्रंथ इनके रचे हुये हैं-शाकुन्तला, विक्रमादित्य, मातृगोत्राग्निमित्र,
 नागोदय, हाम्यार्णव और अश्वमेधवार अभितानशाकुन्तल एव नाटक ग्रंथोंमें
 सर्वात्म्य है, उसके नाट्यदर्शनी रचनाकी तुलनामें कालिदास भूमदत्तमें एवही
 हुए इनके नाट्योंमें ग्रीक देशीय नाटकोंका आगंतक सादृश्य, अर्सेन देशीयना-
 टकाकी प्रणालीगत भाष्यामिश्रता और कर्त्तव्यता तथा ईश्वरदेवीय नाटकों
 का यार्थगतनीयन्तभाव पृथक्ता पापा जाता है इनके नाटक पात्र सब वर्त-
 म्यरसण थीर, रिप्य और नीतिनिपुण हैं-विक्रमादित्य दशवी सभाके

नवरत्न नामक ९ प्रसिद्ध पंडित थे जिनमें से कालिदासजी सर्वोत्तम गिने जाते थे, विक्रमने कालिदासको भण्ड्यक्ष नियतकर्कें सब प्राचीन ग्रंथोंको दुंदुषाकर शुद्ध श्रेणीबद्ध कराया था-

कालिदास तृतीय—महाराज भोजके द्धारमें थे, भोजने उजैनकी गद्दी पर वि० स० की १० वीं शाताब्दीमें राज्य किया, भोजकी सभामें जो कोई नया श्लोक बनाकर लाता था श्लोक मुद्रा इनाम पाता था, परंतु श्लोक कानया ठहिराना कठिन था, क्यों कि द्धारके पंडित कहिदेते थे कि इस श्लोकको तो हम जानते हैं यह देख कालिदासने २ नये श्लोक बनाय राजाकी भेंट किये, उनका आशय यह था, कि महाराज आपके पिताने जो रत्न मुझसे कज लिये थे वह दीजिये नहीं तो इन श्लोकोंको नया ठहिराकर मुद्रादानदीजिये राजाने श्लोक सुन दर्शा रके पंडितोंसे पूछा कि कालिदासको क्या उत्तर देना चाहिये एक पंडितने कहा कि "महाराज, आपके पिताके हस्तलिखित एक ग्रंथमें यह लेख है कि हमने हमारी नदीके तीर उतरते भापाट दुपहरके घक्त बगीचेके मध्य ताल वृक्षपर अनेक रत्न रक्खे हैं सो हमारे पुत्रको षडे होनेपर मिलेगे, सो भाप कालिदाससे कहदीजिये कि पढ़पर रक्खे हुये स्वर्गवासी महाराजके रत्न हे लेवें" भोज यह सुन प्रसन्न हुआ और निज पिता का लेख कालिदासको देकर कहा "जाओ यह रत्नलेखो" कालिदास उस कविताका आशय समझ बलदिये और वृक्षकी जड़मसे २ कलस २ कोटिखनोसे भरे खोदलाये भोजने पूछा कि कवितामें तो "वृक्षके रूपर रत्न रक्खे हे" यह लेख है, भापने जड़ कैसे खोदी कालिदासने उत्तर दिया कि, मध्याह्नके समय चोटीका साया जड़पर पड़ता है इसलिये जड़को खोदा, भोजने प्रसन्न हो वे सब रत्न कालिदासको देदिये, पश्चात् भोजने कालिदासको अपने द्धारके मुख्य पंडितोंमें नियत किया और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा की, इनका स्वभाव महत्सन्पुक्त था जिसके अनेक उदाहरण मिलते हैं निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हैं— श्यामलादंडक, शृंगारतिलक, श्रुतबोध, असज्जनवर्जन और प्रभोत्तरमाला

कालिदास त्रिवेदी—(भाषाकवि) ग्राम वनपुरा (अन्तरवेद) के रहनेवाले थे हरिद्वार और प्रयाग के बीचका मुख्य अन्तरवेद बड़लाता है पहिले पाहिल बादशाह औरंगजेबके साथ गोलकुंडा इत्यादि वक्षिणी देशोंमें बहुत दिनोंतक रहे, पश्चात् जोगजीवसिंह जम्बूनरेशके द्धारम गये और "घधूषिनोद" नाम अद्भुत ग्रंथ बनाकर उनकी भेंट किया "कालिदासका हज़ारा" नामक ग्रंथभी इन्हींका संग्रहीत है, एक और ग्रंथ जंजीराबंध इनका बनाया हुआमिलता है, इनके पुत्र कर्षाद्र उद्यनाथ और पौत्र कवि वृल्लभी भाषाक सुकवि हुये ह जन्म इनका वि० स० १७४९ मे हुआ

कालिदास-(ज्योतिषी) "ज्योतिर्विदाभरण" नाम ज्योतिष ग्रंथक कवि, स० श्री १४वीं शताब्दीमें हुये, ज्योतिर्विदाभरणहीके एक श्लोकमें विक्रमचंद्रवर्षके नवरत्न नामक ९ प्रसिद्ध पंडितावे निम्नस्य नाम लिखे हैं-कालिदास क्षपणक, धन्वन्तरि, अमरसिंह, शंकर, घेताळभट्ट, घटकपर्ब, वाराहमिहर् और वरदाचि-

कालीप्रसाद मुशी--(वायस्य पाठशाला प्रयागके संस्थापक) इनका वाप शहिजापुर जिला इलाहाबादके रहने वाले जौनपुरमें नाकर थे-शालाप्रसादका जन्म स० ई० १८४० में जौनपुरमें हुआ बचपनहीसे बुद्धितीव्र थी और बहुत हीनहार मालूम होते थे, १२ वर्षकी उम्रमें फारसीकी शिक्षा सम्पूर्ण करके लखनऊ पगड़ी पाई, इसके बाद वह यथार्थ संस्कृत पढ़ी और बनारसमें रहे पहाड़ अखिलद्वैजकी सकलतका इम्तिहान पास किया और लखनऊमें रहकर पद्यालत करने लगे स० ई० १८८६ में घौमार होकर लौटो गये, इलाज बहुत हुआ पर वह भा पहुँचा था। इनके उद्योगस्य फायस्य जातिमें निज सुधारकी उत्तम उत्पन्न हुई, वायस्य सभाय स्थापित हुई स० ई० १८७३ में "वायस्यसमाचार" नामक कौमी पत्र इन्हान जारी किया और "वायस्यपाठशाला" नामक सृष्ट प्रयागमें शाला, "वायस्य ट्रेनिंग कम्पनी" लखनऊमें स्थापित की और वायस्यकी क्षत्री सिद्ध करणार्थ "वायस्य ग्यनोलोनी" नामक ग्रंथ रखा अंतमें उच्चभरती के माइ प्राय ६ लाख रुपय वायस्यसमाचार तथा वायस्यपाठशालाकी भेंटकर दिये जिससे यह सद्य स्थिर रहने

काशीनाथच्यम्बकतेलङ्ग--(भारतवर्षीय प्रसिद्ध राजनीतिपेशावर) ये महाराष्ट्र शेषधी ब्राह्मण स० ई० १८५० में पैदा हुये १७वर्षकी उम्रमें श्री ८ पास किया और बादकी शीघ्रही गम्भीर तथा गज गज श्री श्री परीक्षा उत्तीर्ण की-स० ई० १८८० में मद्रासके इम्तिहान पासकिया और पद्यालतगुरु की संस्कृतय पूर्णपिटान और धर्मशास्त्रमें प्रसिद्धता पाये-स० ई० १८८९ में बम्बई हाईकोर्टमें जजय रूपपर नियुक्त कियेगये बम्बई पुनर्जागरण के पत्रोंमें संप्रामर्श सृष्ट करणकार्य में अग्रणी पर सर्वत्र गणिया उपदेशदाता और उनका उपधानका इनका पड़ा शीघ्र था इनकी सनत्कारी धूम पुरुषतय मंगलाया इति भगवतीना, भतरीगतय और मुद्राराक्षसनाटक इत्यादि संस्कृत ग्रंथाया अनुवाद आदिके नाम गिया अनेक सभाभार में अग्रणी स्रष्टार तथा प्रयागेट रह-निशामेवकी समीपानर्थ मध्य रहने के कारण स० ई० १८८३ में श्री भाइ ई श्री टपापि पाई-अनातनधर्म पर आक्रुष्टता और युवायस्याय में परना गणामी हुए-उद्दीपना लोटा नाम का टी स्रष्टार है

कतुबुद्दीन चैधक (सिद्धारा पालिका मुम्बैनानपाठशाला) गणपुद्दाय मुद्दाम्भ गोगरी गुन्नाम या और हिंदुम्नानम ग्रंथके रचयता नायक था गरीय ना

ने पर इसने दिल्लीमें अपनी राजधानी नियत की और हिंदोस्तानका सुलतान बनवैठा सब सर्दार तथा सिपाही सिंधसे लेकर बगालतक इसका हुकम मानतेये और इससे प्रसन्न रहितेये ये बड़ा बहादुर, चतुर सेनापति था, स० ई० १२१२ में मरा, दिल्लीमें कुतुब मसजिद तथा कुतुबकी छाट इसीकी बनाई हुई हैं कुतुब मसजिदके खम्भोंपर अनेक देवताओंके चित्र खुदे हुये हैं और उसके दर्वाजेपर अंकित है कि २७ मंदिरोंको तोड़ उन्हींके मसालेसे यह मसजिद बनाई गई थी कुतुबकी छाट दिल्लीसे ११ मीलकी दूरीपर है, पृथ्वीकी सब छाटोंमें ऊंची है प्रथम इस छाटको पृथ्वीराजने बनवाना आरंभ किया था, परंतु मुसलमानोंकी बढाईके कारण वह पूरी नहोसकी कुतुबुद्दीनने निज स्वामी शहाबुद्दीनगोरीकी विजयका स्मारक चिन्ह स्थापनकरणार्थ इस छाटको ऊंचाकरके उसपर अपने स्वामीका नाम खुदवा दिया

कुमनदास—(भाषाकवि, अष्टछाप) गोवर्धनके पास जमुनावसे गांधके रहिनेवाले ब्राह्मण थे श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य थे और ऐसे सुकवि थे कि, अष्ट छापम गिनेगये इनके ७ बेटे थे जिनमेंसे चतुर्भुजदासजी अच्छे कवि थे और अष्टछापमें गिने गये थे बह्मन्नाचार्यने श्रीनाथजीकी सेवा गोवर्धनके शिखरपर पधारकर कुमनदासको कीर्तनियां नियत किया था ये अत्यंत दरिद्री और त्यागी थे जयपुरनरेश मानसिंहने इन्हें बहुत कुछ देना चाहा था परंतु इन्होंने कुछ भी ग्रहण नहीं किया था एक समय इनके गाँवकी प्रशासक सुन चाद-शाह अकबरने इनको फतेपुरी सीकरी बुलाया, वहा जाय इन्होंने निम्नस्य पद गाया था—

भक्तनको कहा सीकरी सों काम ।

भावत जात पनैहिया दूटी घिसरगयो हरनाम ।

जिनको मुख देखव दुख उपजत तिनकी करनी पढ़ी खलाम ।

कुमनदास छाल गिधेर बिनु और सबै वे काम ॥

कुमनदासजी बहुत धृष्ट होकर मरे थे ॥

कुमारिलभट्ट—(मीमांसादर्शनके भास्कार्य) इनका समय वि० स० ६५७ से ७७ तक प्रतीत होता है विहारके रहिने वाले ब्राह्मण थे जैन तथा बौद्ध मतवादिवाको इन्होंने अनेक दफे शास्त्रार्थमें परास्त कर्के उनके मतकी मूल उपाधि और वैदिक मतका पुन संस्कार किया इस महत्कार्यके बढके सब लोगोंने एक मत होकर इनको ' भट्टपाद ' उपाधि दी एकदफे भट्टपाद और बौद्ध पंडितोंमें शास्त्रार्थ ठहिरा और एक बड़े उंचे महिळपर शास्त्रार्थ कर मेको बैठे भट्टने अपनी सीखबुद्धिसे प्रतिवादि पोंके युक्ति जालकी छिन्न भिन्न करदिया निदान बौद्धोंने भट्टको परास्त करना असम्भव जान छतपरसे नीचे ढकेल दिया पर वे भीते और वैदिक धर्मकी धूम मर्ची इन्होंने मीमांसा

दर्शनपर घातिय भाष्य दिया है श्लोकरूपवार्तिक "श्राद्धघातक (भृश-
 त्तिक)' कहिलाता है और गद्यरचनायुक्त वार्तिक "संववार्तिक" कहाता
 है पुरी, टारका, सेतुबंधरामेश्वर इत्यादि तीर्थोमे भी इन्हाने भ्रमण किये
 या प्रभाकर तथा मुरारि मिश्र मीमांसाज्ञानके विद्वान् इनके शिष्य थे
 भट्टपाद भूतम भाग्यिम प्रवेश कर मरे थे

कुम्भकर्णसिंह-(महाराजा चित्तौड़) निज पिता राना मायलदेवसे
 रणगाई होनेपर म० ई० १४१९ में चित्तौड़की गद्दीपर बैठे उस समय मानवा
 तथा गुजरातके राजे बड़े प्रबल थे दोनोंने मिलकर राना पर खडाकी,
 रानाने डोनाको हरया और गुजरातके मुसलमान राजा महिमून्का बँध
 कर लिया परंतु थोड़ेही दिना बाद बहुत फुल्ल धन देकर छोड़ दिया और
 निज उदारताका परिचय दिया-मेवाड़म कुम्भकरका खिला तथा ३१ और
 चित्तौड़के बनवाये और भाष्य पहाडकी खोलीपर ८ लाख रुपयें मन्मने रूपभय
 लीया मंदिर बनवाया चित्तौड़म भी इनका बनवाया ग्य बहुत बडा मंदिर अब
 तक है जिसम इनकी अष्टधातुकी मूर्ति रखी हुई है, ये भाष्यके सुगधि ये गीत
 गोविन्दका तिलक भाषा पद्यम इनका बनाया गलित है-संक्षिप्त य बहुत धीर
 वीर, पराक्रमी विद्वान् और अनृभवशील पुरुष थे, इन्हान अपने देशके शत्रुओंको
 परास्तकर अपने राज्यको पुनरपिया-म० ई० १४६० म इनका पुत्र उदयसिंह
 इनको माकर गद्दीपर बैठा

कुरु-(चंद्रवंशी राजा) धृतगट्ट तथा पांडु इन्को वंशम हुये-धृतगट्ट
 के १०० पुत्र इन्को नामसे रीसय कहिलाये

मृडा-महााराज रामचंद्रजीके ज्येष्ठ पुत्र थे-वृशाचकीया राज्य इनको मि
 लाया-इनके योगालपत्र शर्वा सारवाह कहिलाय हैं और जयपुर तथा भयवर्मे
 अथवा राज्य परते हैं-

कुर्मदेवी-पहनवी राजकुमारी चित्तौड़के राजा समरसिंह (समरमें)
 का ध्याती थी-राना समरसिंहका मंगलम म म ११०० में शहाबुद्दीन
 और पृथ्वीराज द्विप्रतिरक्षण पीय हुआ मागया-पृथ्वीराजकी संहित पदा
 बाई भी समरसिंहो काप्राणीपी-कुर्मदेया राजेय साथ रानी हाना चारती थी परंतु
 पुत्रय बालक होनेसे कारण न हासगी पुत्री बाल्यामस्याम समरात पड़ी
 कावर्गानीस समरात और जयपुरके समीन कनकुर्दान शाण्या थापन लिया-

केठाव (ज्योतिषराज) चि में री १६ री शताब्दीम हुए-नर सिंग
 ममलाकरती पश्चिमसमुद्रतीरकी जन्मस्थाने रहिनगाले १-वैद्यनाथ स्थाने
 भी इनके गुरु थे और मतिज्ञ प गणेशदियात इनके पुत्र थे-निग्रय ग्रंथ इनके

घनाये हैं प्रहकोतुक, वपग्रहासिद्धि, जातकपद्धति ताजकपद्धति, सिद्धांत-
घासनापाठ, मुहूर्ततत्त्व, कायस्थादिधमपद्धति, कुण्डाष्टकलक्षणम्, गणित-
दीपिका और तिथिसिद्धि

केशवचन्द्रसेन (ब्रह्मोधर्मप्रवक्तक) स इ १८३८ में प्यारी मोहन
सर्वारके घर कलकत्तेमें जन्मे बच्चपनहीसे दयालु थे हिन्दूकालिज कलकत्तामें
प्रथम श्रेणीतक शिक्षापाई थी स्वभावके गंभीर थे, बोलते कम थे, इनकी वक्तृ-
ताफी बड़े २ लोग प्रशंसा करते थे, २० वर्षकी उम्रमें इन्हान ब्रह्मोसमाजमें
नाम लिखाया और एक वर्ष पश्चात् ब्रह्मो समाजके मंत्रीके साथ सङ्गलक्ष्मीपिको
गये—पश्चात् इन्होंने अपना तन मन पूरणीतिसे ब्रह्मोसमाजकी उन्नति करनेमें
लगाया—स इ १८६२ में भारतवर्षीय ब्रह्मोसमार्जोंके प्रधान आचार्यपदके पद
पर नियत किये गये फिर तो पञ्जाब, बम्बई, मद्रास, बङ्गाल प्रांतोंमें भ्रमण
करके इन्हाने हजारों व्याख्यान दिये जिससे ब्रह्मोधर्मका बहुत कुछ प्रचार
हुआ स ई १८७० में इन्हें हट गये और सामाजिक नियमोंपर उपदेश दिये
वहां सब लोगाने इनकी प्रतिष्ठाकी महारानी विकटोरियासेभी मुलाकात हुई
महाराजा कृष्णसिंहके साथ इनकी बड़ी लक्ष्मीका विवाह हुआ स.इ १८८४
में परलोकगामी हुये

केशवदास (भापावधि) इनके दादे मिश्रकृष्णदत्त तथा इनके बाप काशी
नाथ, टेहरा (बुंदेलखंड) के रहनेवाले सनातनब्राह्मण थे और उड़छानरेशके
द्वारमें उनका आदर होता था केशवजी स० इ० १५६७ में पैदा हुये, और
बड़े होकर मधुकर शाह उड़छानरेशके द्वारमें आये मधुकरशाहके बाद इंग्र-
जीसिंहने गद्दीपर बैठकर इनको २१ गाथ संकल्प करके दिये, तबसे ये कुटुम्ब
सहित उड़छामें भावसे भापाकाव्यके दशोभङ्ग पहिले पहिले इन्होंने “वसिष्ठिया”
नामक प्रथम बणन कियेये—इनके रचे ग्रंथोंको देखनसे ज्ञात होताहै कि ये अल-
कार, लक्षणा, व्यञ्जना, कोष इत्यादि काव्यके भङ्गोंमें विद्व थे उड़छानरेश
इन्द्रजीतके पास “प्रवीणराय” नामक पातर बड़ी सुंदरी तथा कविता करनेमें पर-
मचतुर थी अकबर बादशाहने उसकी प्रशंसा सुन अपने द्वारमें तलब किया
परंतु वह द्वारमें हाजिर न हुई इसपर क्रुद्ध हो अकबरने इन्द्रजीतपर १ करोड़
रुपया जुमाना किया इस अवसरपर केशवदासजाने अकबरके मंत्री राजा वीर-
बलका निम्नस्य सवैया सुनाकर जुमाना माफ करा दिया, पर प्रवीणरायको
द्वारमें हाजिर होना पड़ा—

सवैया—यावक, पक्षि, पशु, नग, नाग, नदी, नद, लोक रूप्यो दश चारी ।

केशवदेव भन्नेवरण्यो भरदेवरण्यो रसना न निवारी ।

केनरनाह बली बरवीर भयो कृतकृत्य महावृतधारी ।

दिकर्तार पन आपन ताहि दियो कतार दो कवत्तारी ।

केशवदासजीके बनाये प्रपाका आशय कठिन है और वे यह हैं—कविप्रिया, रसिकप्रिया, रामचंद्रिका, विज्ञानगीता और रामालंकृतिमंजरी

केशवदासकी कविता अर्थगाम्भीर्यके लिये प्रसिद्ध है

दो०—उत्तम पद कवि गगको, सपमाको बलवीर ।

केशव अर्थ गभीरको, सूर तीन गुणधीर ॥

दो०—सूर सूर्य तुलसी शशिन, उद्गन केशवदास ।

अथके कविश्रयोत्तम, जह तह करत प्रकाश ॥

प्राचीनछोगोका कथन है कि, “रसिकप्रिया” के किसी कवित्तके एकचरण “मखदूलेके झुलझुलावत केशवभानु मनौ शनि मंकलिये” में केशवजीने अस्मभव उपमा लिखी है, जिसके कारण राधिकाजीने इनसे स्वप्ने एकदिन कहा कि, तुम्हारी प्रतीकसी बुद्धि है, इसके बाद केशवजीने उद्ग्रेम प्रियतम विया और कुछ काल पीछे मरकर प्रतद्वये विहारीलाल भाषाकाव्य सतसईके कर्ता इनके पुत्र थे

केशवार्क—(ज्योतिषी) भारद्वाज गोत्री भृगुर्ष्य ब्राह्मण जनार्दनजीके प्रपौत्र थे श्रियादिष्य इनके दादा नमन्नातटके वासी थे इनके पिताका नाम राणग था “विद्याहृदयधन” तथा “वणकठी” नाम ज्योतिषग्रंथ इनके रचे हुये हैं स ई १७४२ में जन्मे थे

कैकेयीरानी—अथधनेरुषा दशरथजीकी सखसे छोटी रानी, राजा अश्वपति केकेयाधीशकी राजकुमारी थी भरतजीका जन्म इसके श्दरसे हुआ, ये जैसी रूपलावण्यमें सुंदर थी वंसीही बुद्धिमती थी अन्यागनियाकी अपेक्षा रामाकी इसपर कुछ विशेष कृपा थी एकसमय रणभूमिमें रथका पहिया निश्चलनेसे रोक कर इतने निजपतिवी प्राणरक्षा की थी, जिसके पुरुष्कारमें दशरथजीने इसको कोईसे २ वचन मांगनेकी आज्ञा दीथी और इतने वहिदिया था किसी और अब सरपर देखा जायगा घृद्धहा जब दशरथजीने रामचंद्रजीको युवराज नियत करना चाहा तब इतने मीथरादासीके सहितनेम आकर राजासे उपरोक्त दोनों वचन इसतरह पूर करनेकी दृष्टी कि भरतका युवराज और रामचंद्रको धनो वास दियाजाय राजाने ये ये ईंधो, जो इससे पहिले वासन्त्यादि रानियोंमें कुछ भेद नहीं मानती थी, बहुत समझाया, पर उसन एक न माना दासीकी सिखावनका देसा प्रभाव उसके बिलपर पड़ा था कि वसन सामान कठोरताका रूप धारण कर लिया और त्रियाक सहज स्वभावपर भागई राजा सत्यमनिह था पर्य उस

रामवियोगमें प्राणत्यागना स्वीकार किया पर धचन न तोड़ा कैकेई भी अंतमें अपने कृतघ्न पर बहुत पछिताई पशु कलङ्क का टीका उसके माये अमरहो चुका था भरतजीने निजमाताको उसके कर्तव्यपर अनेक कुषाक्षयकहे और जीतजी उससे कभी बात नहीं की यथा तु० कृ० रामायणे गीतावली-

“कैकेई जबळों जिअतरही-भरत भूल मुख सन्मुख कुछ कबहू न कही”

कैकेईके चरित्रसे यही नीति निकलती है कि कुसंगतिमें पड़कर स्रजन भी दुराचरण करने लगते हैं-

कुसंगतिको खर्वया त्याग करना उचित है

कैनिङ्ग (लार्डजार्ज कैनिङ्ग Lord George Canning)

स ई १८१२ में इंग्लैंडमें पैदा हुये-१८३७ में माताका देहांत होनेपर नायट कौंट की पदवी पाई स ई १८४७ में विदेशी मामलातके सीक्रेटरी-आफ-स्टेटके पद पर नियुक्त किये गये पश्चात् जंगलोंके कमिश्नर तथा पोस्टमास्टर जनरल रहे-स ई १८५६ में लार्डटेल्लहौसीके पश्चात् हिंदोस्तानमें गवर्नर जनरल होकर भाये-सन ५७ का गवर इन्हींके शासनकालमें हुआ स ई १७५८ में इंग्लैंडका लौटगये और “अर्ल” की पदवी पाई-गदरकी चिन्ता के कारण इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था पर्युषर्ष और जीकर स.ई १८६२ में परम धामको सिधारे बड़े न्याई थे, गदरके घाद सब अंगरेज यही पुकारते थे कि हिंदोस्तानियोंको जबर्दस्ती ईसाई करलेना चाहिये अधिकांशको प्राणदंड देना चाहिये पर इनके न्यायके प्रभावसे हिंदोस्तानियोंके धर्ममें कुछ हस्ताक्षेप नहीं किया गया और केवल उन्हींको मौतकी सजा मिली जो अंगरेजोंके घघकर-नेम शरीक थे

कैय्यट पंडित (भाष्यप्रदीपके कर्ता) हरमीरवासी कैय्यट उपाध्यायके पुत्र थे, विद्या इन्होंने अपने बड़े भाई मम्मटसे पढीथी-यजुर्वेदभाष्यकार प०औषट भी इनके सहोदर थे-वि०स०की ११ वीं शताब्दीके अंतमें तथा १२ वीं शताब्दीके आरंभमें हुये-व्याकरण महाभाष्यपर भाष्यप्रदीप नामक व्याख्या इनकी बनाई हुई है

कोण्डभट्ट (संस्कृत वैयाकरणी) महाराष्ट्र ब्राह्मण काशीवासी थे इनका समय भट्टोजीदीक्षितके पीछे है क्योंकि इन्होंने भट्टोजी दीक्षितकृतफारिका “वैयाकरणभूषण स्तार” नाम ग्रन्थपर टीका रखा है-२० और ग्रंथ भी इनके बनाये हैं जो काण्डविशतिकाहिलाते हैं । न्यायशास्त्रपर भी एक शृङ्खल ग्रंथ “पदार्थ-दीपिका” इन्हींका बनाया हुआ मिलता है

कोपरनी कस (Copernicus) पुशिया वासी एक ज्योतिषी हुय है इनका बच्चा विज्ञाप था प्रथम कोपरनीकसने डाक्टरी सीखी और फिर गणित विद्या सीखने की ओर विशेष ध्यान दिया तबुपरंतु कुछ फाट राम (इटेली) में गणिताप्यापक रहे अंतम अपनी जन्मभूमिको छोड़ आय और प्रहोंकी चालके विषयमें एक बहुत बड़ी पुस्तक रची इस पुस्तकके छपनेसे २ घंटे बाद मरगये

स ई १४७३ में जन्मे

स ई १५४३ में मरे

कोलम्बस (Christopher Columbus) चारसी बष पहिले पृथ्वीके पूर्वागोलाके अर्थात् पाशिया, यूरुप और अफरीकाके रहिनेवाले यह नहीं जानते थे कि अटलांटिक महासागरके दूसरी ओर भी दुनियां है इस वस्तीको सबसे पहिले कोलम्बसने बुद्धा और इसीसे इसको नईदुनियां कहिते है-कोलम्बस इटेली देशके जेनोवा नगरका रहिनेवाला था, इस्का बाप फंगाल था इसलिये लड़कपनमें इसको ठीक शिक्षा नहीं मिली कुछ तरुण हार कोलम्बस पैरिसमें भाया और वहाँ उसने लैटिन भाषा, गणित तथा भूगोल और खगोल विद्या सीखी-पढना छोडनेके बाद मल्लाहीका काम सीखा और धीरे २ एक जहाजका मालिक होगया स० ई० १४७० में पुतगालका राजधानी लिस्बनम भाया और अपना विद्याह इटलानिवासी एक जहाजके कर्मा करकी लड़कीसे किया-उनदिनों यूरुपके लोगोंको हिंदास्तानका ठीक पता नहीं मालूम था केवल अनुमान करते थे कि हिंदास्तान अटलांटिक महासागर से पश्चिम में है निदान कोलम्बसने कई बादशाहोंसे प्रायनायी यि सुझे अपनी ओर स हिंदास्तानका पता लगानकेलिये भेजिये स्पेनके बादशाह फर्डिनेन्डने यह बात स्वीकारकी और ३ जहाज कोलम्बसको दवर प्रतिज्ञायी कि जितने देश तुम हुंठ कर शासनम लाओगे उनके तुमही वायसराय नियत किये जाओगे और उनकी आमददनी का दशांश तुमरा मिलेगा-स० ई० १४९२ में बादशाहकी प्रतिज्ञा लेकर कोलम्बस जहाजका लंगड प्रठा पश्चिमकी भाग चालताहुभा चलत २ दो महीन होगये पर घोंड टापू नहीं मिला तब तो मल्लाह बहुत बिगडे और कोलम्बसके मार्गदर्शनकी चेष्टा करने लगे-कोलम्बसभी जैसी हया देवता वसी ही पीठ देता था समय २ पर उनको समझाता बुझाता और धमकाता था-इसके थोडेहीदिन पीछे कोलम्बसने टापुआंके ईरुके छुंटा पाये जिनम से क्युबा तथा हटी नामके टापू मुख्य हैं इन टापुआंस छ' मनुष्यायो साथ लेकर कोलम्बस स० ई० १४९३ में स्पेनका लौटा और बादशाहने उसका बड़ा भादर किया-इसपकार

कोलम्बसने २ दफे यात्रा और फी और बहुतसे टापू कुंठे स० इ० १४९८ में तीसरी धार गया और एक टापूमें पहुँचा जहाँ लोग छद्मिद्ध रहेये—कोलम्बसने उनमें मेल मिलापकराया, परंतु वहाँके कुछ लोगोंने बादशाह स्पेनके पास निवेदन पत्र भेजा जिसमें कोलम्बसकी अत्यंत निन्दाकी और उसपर अनेक दोष झूठे लगाये—इसकी पढ बादशाहने क्रोधमें आकर कोलम्बसको पदहीन किया और उसकी जगह दूसरा आदमी भेजकर हुकम दिया कि कोलम्बसके पैरोंमें बंधी ढालकर हमारे पास भेजदो—यद्यपि बादशाहने कोलम्बसका मुख देखतेही उसे छुड़वा दिया और बहुत कुछ इनाम दिया, पर कोलम्बसने उन बेड़ियोंको सावधानीसे अपने पास रख लिया और मरनेसे पहिले आज्ञा दी कि इनको मेरे साथ गाड़ देना—स० इ० १५०४ में चौथी धार यात्रा की और स० इ० १५०६ में परलोकको सिंघार—कोलम्बसके दुठे द्वीप अथ वेस्टइन्डिज और दक्षिणी अमेरिका कहिलातेहैं कोलम्बस इन देशोंको हिंदोस्तानका भाग समझता था और इसके समयतक कोई दूसरा मी नहीं जानताथा कि ये हिंदोस्तानके भाग नहीं हैं—

कौपर (विलियमकौपर, William Cowper) प्रसिद्ध अंगरेजी कवीश्वर व

पञ्चलेखक था इट फोहगायर अंतगत वल्लम्स्टेट नामक ग्राममें एक पादरीके घर स ई १७३१ में पैदा हुआ इसके दादा प्रसिद्ध जजस्पेसर कौपरथे—माताइसकी ६ वर्षका छोड़के मर गई थी वेस्ट मिनिस्टर स्कूलमें लैटिन ग्रीक और अंग्रेजीके प्राचीन ग्रंथ पढे और दुनियाका थोड़ासा हाक जो इसको मालूम था वह यहींकी शिक्षाका प्रभाव था स ई १७५४ में कानून का इम्तिहान पास किया लेकिन वकालतका पेशा नहीं किया स्वभाव दरपीव और वृद्धिमी था एकदफ किसी नातेदारकी सिफारिशसे हौस-भाफ-हार्डसके चार्कका ओहदा पाया पर ओहदेका कठिण काम चकानेकी फिरसे पागल होगया भाराम होकर स ई १७६५ में "हनटिङ्गटन" नामक स्थानमें जा बसा वहाँ रहिकर इसकी मित्रता अनधिनके घरानेसे होगई अनधिन साहित्यके भरजानेपर कौपर और अनधिन साहित्यकी मेम ओलनी नामक स्थानको उठगये ओलनीमें रहिकर अनेक और स्त्रियासे भी मित्रता होगई इन्हीं दिना ये दुधारा पागलहुआ मेम अनधिनने बीमारी की हालतमें इसकी पुत्रवत् रक्षाकी भाराम होनेपर मेम अनधिन तथा अन्य स्त्रीमित्राने इसका चित्त स्थिर करने और किसी काममें लगानेके लिये पदरचना की ओर इसको उकसाया एवं "ट्रास्क" नामक प्रसिद्ध पुस्तक तथा छोटे २ अनेक और ग्रंथ इतने वेसुरीतानमें रचवाले—स ई १७८६ में ओलनीसे वेस्टनअंहरबुड नामक एक पासके गाँवको उठगये और तीसरीदफे पागलहुये यहाँ स ई १७९६ में इसकी परम मित्र मेम अनधिनका देहांत हुआ जिससे इसको बड़ाखेद हुआ निदान ४ वर्ष गोकप्रसित कीकर स ई १८००

में इसने भी देहत्यागदी ६ वर्षकी उम्रसे अर्थात् जघत्स इसकी माता मरी इसको सदैव किसी न किसी आपत्तिमें रहिनापढा कभी कोई रिस्तेदार मर कभी नौकरी छोड़नापढी, कभी पागलहुमा और कभी किसी मित्रसे विरोध हुआ वचपनहीसे इसका हाथ बिलक्षण था, कभी तो बिलकुल पस्त हिम्मत होजाता जिससे चित्तमें अज्ञाति और भय फैला रहिता था और कभी इस दमै साइस बढ जाताया कि सौंखने छगता था कि मौतभी मेरा कुछ नहीं करसकती इसके छिखे पत्रोंसे द्वातहोताहै कि ये साफ दिख था और बनावटका छेशमात्र भी इसमें न था, तुच्छ वाताकी जोश भरी इबारतमें छिखनेकी इसकी शक्ति असा धारण थी इसके खतोंकी इबारत सरल सादी और महाभरेदार है बहुधा स्त्रियों से इसकी मित्रता होनेके कारण लोग इसको जनानासवातेहै, परस्त्रियां जना नेको हिकारत करती है और मित्रता करती है तो मर्वनेसे इसलिये इसका जनाना होना सिद्ध नहीं

कौलादेवी—गुजरातके राजा रायकरणकी परमसुंदरी रानी थी स ई १२४७ में अठावदीन खिलजीने गुजरात विजय किया इसी मारकेमें कौलादेवी उसके हाथ पडी जिसको उसने अपनी औरत बना लिया देवछलदेवी इसीकी प्रसिद्ध सुंदरी बेटी थी जो स ई १३०६ में गुजरातसे पकड़कर आई और अठावदीनके गुलाम मलिक काफूरको विवाही गई

कौसल्या—(महाराज रामचंद्रकी परम पूज्यमाता), इनके चरित्रामें धर्म और धीरजका पालन जो राम सरीखे पुत्रको जनजाते समय इन्होंने किया प्रधान है ये उत्तर कौशलके राजा रविर्मतकी पुत्री थी रविर्मतने अपना राज्य दशरथजीको दहेजमें दियाया राम चंद्रजीसे सबलोग अत्यंत प्रसन्नपे और पदि इशाच भी पाठे तो मुरत बिगडबैठत और धीर उपद्रव होजाता पर कौशल्याजीके धर्म और धीरजके प्रभावसे कोई उर्वेष्टव न होने पाया क्योंकि उस नीतिनिपुण माताने पक्षी बिचारा कि “राक्षीं सुतहि कैरा अनुरोधु-धर्मनाय और बहुविरोधु” कौशल्याजीमें उस सहज घेरकी जो सीताम दुभाकरताहै भाभीमात्रभी नहीं, घरन ऐसा स्नेह था कि स्त्री मात्रमें होना दुर्लभहै जैसाकि रामजीके प्रति धनोवासके अवसरपर कौशल्याजीके इस वचनसे स्पष्ट प्रतीत होताहै

‘ जो देवछल पितु भायसु ताता तो किनजाहु जानिघटि माता ’

“जो पितुमातुषहैड घन जाना सीकाननशत अवधसमाना”

अपइस नीतिपर ध्यान दीजिये कि कौशल्याजीने निजपुत्र रामको “पितुर्दशगुणा माता गौरवेणातिरिच्यते । मातुर्दशगुणा मान्या विमाता धमभीरुणा ’ अर्थात् पितास माताका दशगुणा गौरव और मातास सौतेली माताका दशगुण अधिक गौरव रखनेको चितना उसेजित कियाहै धन्यहै कौशल्याजीके धीरज और

नीतिनिपुणताको कि उन्होंने सीता माता खरीखी पुत्रवधूको, इतना प्रेम होतेभी कि "जीवन मूरिजिमे जुगधतरुइँ दीपवातनहिँ टारनकहइँ ॥" मोहत्याग पवित्रतथर्म निर्वाह करनेके लिये रामजीके साथ भेअविया कौशल्याजीका धर की जगह सौतोसि अत्यंत प्रेम रखना इस बातसेभी सिद्धहै कि जब मुमित्राजीने रामवनवासकी खबरसुनी तब उन्होंने विषरहा निजपुत्रलक्ष्मणसे कहाकि

"तात सुझारि रामवैदेहीं पिताराम सबभासि सनेही",
 "जो पै सियरामधनजाहीं अवध सुझारि काजकहुनाहीं"

रामके धनको बिदा होते समयकी कौशल्या महारानीकी वशा पाषाणाके हृदयको भी टुक २ करदेनेवाली है जब रामजी धनको जाने लग तब कौशल्या महारानी यथा तु० कृ० रामायणे "बहु विधि विलपचरण छपाटनी-परम अभागिनि अपुहीजानी । दारुण दुसह दाह उरध्यापा-वरणि न जाइ विलाप कलापा । फिराहदशा विधि बहुरि किमोरी-खेखिहौ नयन मनोहर जारी । सुदिन सुघटि तात कब होई जननी जिभत धन विधुजोइ

कूर्ण (अवतार) यदुषंशी वसुदेवक घर मथुरामें भा०कृ० ८ को देवकीके उदरसे अर्धसे ५ हजार पहिले अवतरेये-बापा नन्द तथा यशादा रानीने आपका पालन पोषण गोकुलम रहिकर किया जिसकी कथा लोकाविदित है-आपके ईश्वर-त्वका आभास अनेक अलौकिक क्रियाकलाप द्वारा वषपनहासे प्रगट होने लगा था जिसका वृत्तान्त भागवतादि पुराणोंम वर्णित है-वचपनके खेलाम आपने अनेक ऐसे कार्य किये जो बड़े-शूर वीरासेभी होना असम्भव है बड़े होकर आपने अपने मामु मथुराके अन्याइ राजा कंसको बध किया और अपने नाना उग्रसेन को गद्दीपर बैठाया-मगधके राजा जरासन्धने अपने जामात कंसका बदला लेनेके लिये श्रीकृष्णजीपर मथुरामें चढाईकी पर परास्त होकर मारागया-एक समय अत्यंत वृष्टि हुई जिससे सब मकान बहिनगे तब आपने गोवधन पर्यंत एक उंगलीपर उठा-कर उसके तले धूमवासियाको शरण देकर उनके प्राणाकी रक्षा की और गिरिष रघारीनाम पापा-कौरवों तथा पांडवोंसे आपकी रिशेद्वारी थी-महाभारतकी लड़ाई में आपने पांडवोंकी सहायता की और आपहीकी राजनीतिके प्रभावसे पांडवलोग कौरवोंकी वीर सेनासे जीतनम समर्थ हुये भगवद्गीताका उपदेश इसी युद्धके भवसर पर आपनेअर्जुनके प्रति किया था-पश्चात् आप द्वारिकाको च लेगये और वहीं वस रहे-आपके १६०० गनी और ८ पटरानी थीं जिसस बहुत सन्तति उत्पन्न हुईथी और "यादव"काहिरासीथी-यादवोंमें अंतिम फुट पहगइ जिस से वे सब आपसम फट मरे-जब आप द्वारिकाम रहते थे तब सुदामा नामव १ दीन ब्राह्मण जो बाल्यावस्थाम आपका सपाठी बहया दृष्टिसे दुःखी होआपके

में इसने भी देहत्यागदी ६ वर्षकी उम्रसे अर्थात् जबसे इसकी माता मरी इसको सर्वैष किसी न किसी आपत्तिमें रहिनापडा कभी कोई रिश्तेदार मरा कभी नौकरी छोडनापडी, कभी पागलहुआ और कभी किसी मित्रसे विपत्त हुआ. वचनपनहीसे इसका हाथ घिलझण था, कभी तो बिलकुल पस्त हिम्मत होजाता जिससे चित्तमें अज्ञांति और भय फैला रहता था और कभी इस दर्जे साहस बढ जाताथा कि साँचने लगता था कि मौतभी मेरा कुछ नहीं करसकती इसके छिसे पत्रोंसे ज्ञातहोताहै कि ये साफ दिल था और घनाघटका छेशमात्र भी इसमें न था. तुच्छ घातोंकी जोश भरी इशारतमें लिखनेकी इसकी शक्ति मसा धारण थी इसवे सतोंकी इशारत सरळ सादी और महाबरेदार है बहुधा स्त्रियों से इसकी मित्रता होनेके कारण लोग इसको जनानाघटातेहैं, परस्त्रिया सना नेकी हिकारत करती हैं और मित्रता करती है तो मर्दानेसे इसलिये इसका जनाना होना सिद्ध नहीं

कौलादेवी—गुजरातके राजा रायकरणकी परमसुंदरी रानी थी स. ई. १२४७ म अलाउद्दीन खिलजीने गुजरात विजय किया इसी मारयेम कौलादेवी उसके हाथ पडी जिसको उसने अपनी भीरुत घना लिया देवदयेवी इसीकी प्रसिद्ध सुंदरी बेटी थी ओ स ई १३०६ में गुजरातसे पकड़कर आई और अलाउद्दीनक गुलाम मलिक काफूरको विवाही गई

कौसल्या—(महापुत्र रामचंद्रकी परम पूज्यमाता), इनके चरित्रोंमें धर्म और धीरजका पावन जो राम सरीसे पुत्रको घनजाते समय इन्होंने किया प्रधान है ये उत्तर कौशलके राजा रविमंतकी पुत्री थी रविमंतने अपना राज्य दशरथजीको दहेजमें दियाथा राम चंद्रजीसे सबलोग अप्यंत प्रसन्नये और यदि इशारा भी पाते तो मुस्त बिगडपैठत और घोर उपद्रव होजाता पर कौशल्याजीके धर्म और धीरजके प्रभावसे कोई उपद्रव न होने पाया क्योंकि उस नीतिनिपुण माताने यही बिचार्य कि "राजों सुतहि घेरा अनुरोधु-धर्मजाय और बंधुविरोधु!" कौशल्याजीम उस सहज घरकी जो सीतामें हुआकरताहै भाभीमात्रभी नहीं, धरन ऐसा स्नेह था कि स्त्री मात्रमें होना दुर्लभहै जेसापि रामजीके प्रति घनोवासके अवसरपर कौशल्याजीके इस वचनसे स्पष्ट प्रतीत होताहै

‘ जो केवल पितु भायसु ताता सी किनजाहु जानिबहि माता ’

‘ जो पितुमातुक्हेउ घन जाना तौ काननशत अवधसमाना ’

अथ इस नीतिपर ध्यान दीजिये कि कौशल्याजीने निजपुत्र रामका "पितुद्शगुणा माता गौरवेणाऽतिरिच्यते । मातुद्शगुणा मान्या विमाता धर्मभीरुणा" अर्थात् पितासे माताया दशगुणा गौरव और मातासे सातली माताया दशगुण अधिक गौरव रखनेको नितना उत्तेजित कियाहै धन्यहै कौशल्याजीके धीरज और

नीतिनिपुणताको कि उन्होंने सीता माता खरीखी पुत्रवधूको, इतना प्रेम होतेभी कि "जीवन मूरिजिमि जुगधतरदई दीपवातनहिं टारनकहइ ॥" मोहत्याग पतिव्रतधर्म निषाह करनेके लिये रामजीके साथ भेजादिया कौशल्याजीका घर की जगह सौतोसे अत्यंत प्रेम रखना इस बातसेभी सिद्ध है कि जब मुमित्राजीने रामधनवासकी खबरसुनी तब उन्होंने विवश हो निजपुत्रलक्ष्मणसे कहाकि

“तात मुझारि रामवैदेहीं पिताराम सबभाति सनेही”,
 “ओ पै सियरामधनजाहीं अवध मुझारि काजबहुनाहीं”

रामके धनको बिदा होते समयकी कौशल्या महारानीकी वशा पापाणोंके हृदयको भी दुःख करदेनेवाली है जब रामजी धनको जाने लग तब कौशल्या महारानी यथा तु० कृ० रामायणे “बहु विधि विलपचरण लपाटनी-परम भमागिनि अपुहीजानी । दारुण दुसह दाह उरव्यापा-वरणि न जाइ विलाप कलापा । फिरहिदेशा विधि बहुरि किमोरी-देखिहौ नयन मनोहर जोरी । सुदिन सुयति तात कब होई जननी जिमत धदन विधुजोइ

कृष्ण (अवतार) यदुवंशी वसुदेवके घर मथुराम भा०कृ० ८ को देवकीके उदरसे भवसे ५ हजार पाहिले अवतरये-बाबा नन्द तथा यशादा रानीने आपका पाछन पोषण गोकुलम रहिवर किया जिसकी कथा लोकविदित है-आपके ईश्वरत्वका आभास अनेक अलौकिक क्रियाकलाप द्वारा ध्वजपनहीसे प्रगट होने लगा था जिसका वृक्षांत भागवतादि पुराणाम घणित है-ध्वजपनके खेलोंमें आपने अनेक ऐसे कार्य किये जो बड़े-शूर वीरोसेभी होना असम्भव है बड़े होकर आपने अपने मामु मथुराके अन्याई राजा कंसको बध किया और अपने नाना उग्रसेन को गद्दीपर बैठाया-मगधके राजा जरासन्धने अपने जामात कंसका बटला लेनेके लिये श्रीकृष्णजीपर मथुराम चढाईकी पर परास्त होकर मारागया-एक समय अत्यंत घृष्टि हुई जिससे सब मकान बहिगये तब आपने गावधन पर्वत एक उंगलीपर उठाकर उसके तले धृजवासियोंको शरण देकर उनके प्राणाकी रक्षा की और गिरिव रघारीनाम पाया-कौरवों तथा पांडवोंके आपकी रितेदारी थी-महाभारतकी छद्मह म आपने पांडवोंकी सहायता की और आपकी राजनीतिके प्रभावसे पांडवयोग कौरवोंकी घोर सेनासे जीतनम समर्थ हुये भगवद्गीताका उपदेश इसी युद्धके भयसर पर आपनेभज्जुनके प्रति किया था-पश्चात आप द्वारिकाको चले गये और वहीं धर रहे-आपके १६०० रामी और ८ पटरानी थीं जिससे बहुत सन्तति उत्पन्न हुईथी और “यादव”कहिलातीथी-यादवोंमें अंतम कुट पदगई जिस से वे सब आपसमें कट भरे-जब आप द्वारिकाम रहते थे तब सुग्रामा नामक १ दिन धाक्ष्ण जो बाल्यावस्थाम आपका सपाठी बहया दारुणतासे दुःखी होआपके

पास पहुँचा, उसको आपने निहाल कर दिया—अंतसमय श्रीकृष्ण भगवानक पैरों पर एक शिकारीका तीर लगा और परम धामको सिधारे अर्जुनने अंतैष्टी क्रिया की।

कृष्णा कुमारी—राना भीमसिंहदेव उदयपुराधीशकी कन्या स० ई० १७९२ में पैदा हुई अत्यंत रूपवती और सुलक्षिणी थी—उसका मंदगमन, मृदुभाषण ऐसा मनोहर था कि बहुधा लोग उसे 'राजिस्थानका कमल' कहते थे—प्रथम कृष्णाकुमारीका विवाह जोधपुरके राजाके साथ ठहिराया, परंतु विवाह होनेसे पहिलेही राजाका देहांत हांगया निदान जयपुरके महाराजने उसके साथ विवाहके संदेसे भेजे तिलक बदनकी सज्जारी थी कि महाराज मानसिंहन जोधपुरकी गर्दीपर बैठकर रानासे कहिलामेजा कि कृष्णाकुमारी पहिले हमारे भाईकी ठहिरायी, अब हम उनकी जगह हैं, अब उसकी शादी हमसे होनी चाहिये इसप्रकार जयपुर तथा जोधपुरके राजे विवाह करनेके लिये उपस्थित होगये और रानाको धमकाने लगे कि यदि कन्या दान न दोगे तो तुम्हारा राज्य विध्वंस करवा देंगे रानाबश पक्षधरों और सधराजोंसे धड़ा मानाजाताथा पर समयके हेर फेरसे उसवक्त इनके सामना करनेका बल पौरुष नहीं रखताथा—दोनों राजाओंने अपनी सेना तथा पिंडारी इत्यादि अनेक लुटेरोसहित रानाके राज्यमें जाकर लूट मार मचादीथी राना बड़ी बुविधामें था कि किसतरह पति बच्चे इस भवसर पर पिंडारियोंके सदार निदई अभीरखेंने रानाको प्रबल भूमिके शांति करनेका यह उपाय बताया कि कृष्णाकुमारीको नष्ट करके सब झगडा मिटादिया जाय भायी बलवान राना उस म्येच्छे मतमें आकर अपनी कन्याकी चोर दर्या कर नेको उद्यत होगया जब कन्याके मारनेके लिये किसीका हाथ न उठा तब विष देनेका विचार हुआ कईदिने विषका प्याला पीनेके बाद वह निरापराधिनी कन्या सदैवके लिये सो गई उसने निजजननीका विकलहोते देख कहा था "माता! क्यों दुखी होती हो, उचितही है कि मेरे प्यके मारे जानसे पिताका राज्य बचे और मजाया भय बूरही, पिताकी अत्यंत कृपाथी कि उन्होंने अभीतक जीतारक्या, क्योंकि राजपूत तो अपनी लड़कियोंको जन्मतेही मारहा-लतेहैं" कृष्णाकुमारीकी माता निजकन्याके शोकमें रोते २ पागल होगई और थोड़ेही दिनों बाद चलबसी

कृष्णचन्द्रसिंह [नदिया (बंगाल) के राजा] निज पिता रघुरामक बाद गद्दीपर बैठे और बादशाह तिल्लीने हुकमसे महाराजथा खिताब पाया—इन्होंने पार्सीसे पंडितोंको बुलाकर ३३ लाखके खखसे अग्निहोत्र और याजपई यज्ञ किये, यहाँ अंताम पंडितोंने "अग्निहोत्री याजपेई श्रीमान् महाराज राजेंद्र कृष्ण

चन्द्रराय" की पदवी इनको दी—ये उन सब छात्रोंको, जो दूरसे नदिया शास्त्रिपुरमें न्यायदर्शन पढनेको आतेथे धजीफा देते थे और इसीकारण न दिया इनके समयमें न्यायदर्शनका देश विद्यालय गिना जाता था—इनके दरबारमें बहुत पंडित विद्वान रहते थे, हजारों जागीर तथा मिलके इन्होंने विद्वान लोगोंको दे रक्खीयाँ—प्रसिद्ध पंडित कृष्णानन्द सार्वभौम के प्रवर्धक तथा (भागमवगीश,) बंगालमें "काली-पूजा "तत्रसार" नाम पुस्तकके कर्ता इन्हींके दरबारमें रहिते थे—महाराजकृष्णचंद्र सङ्गीत तथा शिल्प विद्याकेमी अनुरागीये, काशीमें ज्ञानवापीकूपके भीतर जानेके छिये सीढियां इन्होंने बनवाई थीं, स० ई० १७५७ में पलासीकी लड़ाईके भयसरपर सरकार अंग्रेजबहादुरकी मदद की थी जिसके बदलेमें "राजेंद्रबहादुर" की पदवी और १२ तोप मिली थीं जो अबतक नदिया राज्यवंशमें मौजूद हैं ७० वर्षकी वयम परमधामको सिधारे और आपके पुत्र शिवचन्द्रसिंह गद्दीपर बैठे

कृष्णदास (भाषाकवि—अष्टछाप) श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य थे व्रजके ८ सुप्रसिद्ध भाषाकवियोंमें इनकी गणना है—चौरासी वैष्णवोंकी घासोंके छेखालु सार ये वर्णके शूद्रथे—वल्लभाचार्यने श्रीनाथजीकी सेवा गोवर्धनके शिखरपर पधरा कर वहाँका प्रधान अधिकारी इन्हींको नियुक्त कियाया—इनमें और गगाबाई खत्रानीमें जो कवितामें अपनी छाप विठ्ठल गिर्धरिन रखतीथी खेह था, इसपर वल्लभाचार्यजीके पुत्र गोविठ्ठलनाथजीने कुछ असन्तोष प्रकाश किया, कृष्णदासने इस बात पर चिठ्ठकर गोशाईजीकी श्रीजीद्वारमें डुगुठी बंद करवाी, पर्व गोशाई जीके मधीनेतक गोवर्धनके तले परसोली ग्राममें पड़े रहे—राजा बीरबलने यह समाचार सुन कृष्णदासको कैद कर दिया—गोशाईजीने यह खबर पातेही भद्र जल छोड दिया और हाथ = कर काहिने लगे कि "पिताके शिष्यको यह कष्ट" बीरबलको जब यह मालूम हुआ तब उन्होंने कृष्णदासको कैदसे छुड़ा गोशाईजीके पास भेजदिया—गोशाईजी उनको भाता सुन आगे बढकर मिले, कृष्णदासजी चरणों पर गिरपड़े गोशाईजीने फिर उनको श्रीनाथजीके मंदिरका प्रधान अधिकारी नियत किया—अंतमें कृष्णदासजी एक कूपमें गिरकर मरे— ये बड़े भक्त थे भक्तिभावकी इनकी अनेक कथानकें भक्तमालादि ग्रंथोंमें हैं निम्नस्य ग्रंथ इन्हींके रचे हैं—शुद्धनचरित्र, पञ्चाध्याई, रुक्मिणीमंगल और प्रेम रसराम ! यह कृष्णदास साधू दुसर थे जिनका घृत्तांत रीघानरेश महाराजा रघु राजसिंहकृत "रामरसिकावली" ग्रंथमें इस तरह लिखाहै कि उन्होंने महाराज रघुराजसिंहके सामने सबसे ५० वर्ष पूर्व एक वैश्यके मृतक शरीरपर खड़े होकर सितारके साथ सूरदासजीका निम्नस्य पद गाकर मृतकको जिला दियाया—

पद-धमारे प्रभु अवगुण चित्त न धरघो
 समदर्शी प्रभुनाम तुझारो वैसेही पार करघो
 एक छोहा पूजाम रहितो एक् तो जाय वधिक घर परघो
 खो बुविधा पारसनहिं जानत कंचन करत खरघो
 एक् नदिया एक् नार कहावत मैलोही नीर भरघो
 सो जब जाय मिलत गगाम सुरस्वारि नाम परघा
 एक माया एक् जीव कहावत सुर ग्याम सिगरो
 कीयाको निर्वाह करो प्रभु नाहीं तो हे प्रणजात टरघो

कृष्णदेवज्ञ (ज्योतिषकार) ये काशीवासी बल्लालजीवे पुत्र दक्षिणी
 ब्राह्मण थे और टिहरीके बादशाह जहांगीरके द्वारके प्रधान पंडित थे-निम्न
 ज्योतिष ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं-भास्करीय बीजगणित टीका, नवांकुरा, आ-
 पति पद्धति टीका और छात्रकनिणय एक वृक्षे जहांगीरने इनसे राज्यके भद्रिमका
 की सूची बनानेको कहा, तलाशकके ५० भद्रिमकोंके नाम इन्होंने लिख-जब
 बादशाहके साहने सूची पेशकरनेको चले तो सुना कि बादशाहने कुछ दिन
 हुये अजनबी सादागरीको एक लाख रुपया घोडाके घास्ते दिया है, उस सूचा
 निकाल पाहिले नाम बादशाहका लिख लिया-बादशाहने देख कारण पूछा,
 पंडितजीने उत्तर दिया कि उससे ज्यादा कीन भद्रिमका हांगा जो भनजान
 मुसाफिराको एतना रूपये घोडाके घास्ते दे दे बादशाहने कहा कि यदिये पाइ
 छे आय? पंडितजीने कहा कि तौभी भद्रिमकाकी तादाद ५१ ही रहगी क्युकि
 भापका नाम काटकर उनका नाम लिख दिया जायगा

कृष्णानन्ददयासेख (राग सागरादय राग कल्पद्रुमके संग्रहकार)
 बंगालके रदिनेवाट बड़े महात्मा ब्राह्मण धर्मीकर थे इन्होंने रागसागरोद्भवमें सुर
 दास, तुलसीदास कृष्णदास, हरीदास, अग्रदास, तानसेन, मीराबाद, हितहरवंश
 विठ्ठलनाथ, कुम्भनदास इत्यादि प्रायः दोस्रो घणव धारियेके पदसंग्रहकिये हैं-
 यह ग्रंथ सभी कलकत्तेमें छपा था और १०० रु म बिकता था, अब नहीं मिलता-
 वि० सं० १९०० में यह ग्रंथ संपुन हुआ टा० राजद्र लालमित्र लिखते हैं कि
 कृष्णानन्ददयासंगीत विद्याम निपुण होकर हर्षत मदस्वरसे गाते रहते थे लेकिन
 गानेचजानेया पेशा नहीं करते

क्रामवेल (भालीवर क्रामवेल-Oliver Cromwell) सर हेनरी क्राम
 वेल्लय घर सं० ई० १५८८ म इंग्लैंड कीपातगत हाटिङ्गटन नामक नगरम पैदा
 हुये-इनके माता पिता दानोहीका वंग प्रतिष्ठित था सं० ई० १६२८ में इङ्ग
 लिस्तानकी पार्लियामेंटम मन्वर निय गय-सं० ई० १६३६ म मायूक मरनेपर ५००
 पाट धार्मिक भापयी भूलम्पति इनका मिली-जय सं० ई० १६४२ म इंग्लैंडक

बादशाह चालस प्रथम और पार्लियामेंटम हागडा हुआ तब ये पार्लियामेंटको तरफ होकर बादशाही फौजसे छड़े और बादशाह चालसका शिर काटनेमें समय हुये—तदुपरात मजागणने इंग्लैडका राज्य पञ्चायती ठहिराया, और क्रामधेल्को उस पञ्चायती राज्यका सरपञ्च नियत किया—ये बड़े सुप्रबधकर्ता साहसी और धीरपुरुष थे—स० ई० १६५८ में ज्वरसे पीडित होकर मरे—

क्लायथ (लॉर्ड राबर्ट क्लायथ—Lord Robert Olive) इन्होंने हिंदोस्ता-
नम अह्मरेजी राज्यकी मूलरोपणकी बन्धनमें पिताने इनको पढानेका अर्यत उद्योग किया पर इन्होंने कुछ भी ध्यान न दिया निदान इनकी उद्धृतासे थककर पिताने ईस्ट इण्डिया कम्पनीके वक्तरमें ६०) ६० मासिकपर लेखककी नौकरी कराके इनको हिदास्तान भेजादीया—स० ई० १७४७म ये फौजमें भरती हो गये और तंजोरके राजाका विद्या विजय करके “कमीसेरीजेनरल” के पदपर तरफ्ती पाई पश्चात् इन्होंने शहर अर्काटको पही धीरतासे लड़कर फरासीसोंके जुंगलसे बचाया—स० ई० १७५३ में जलवायु बदलनेके लिये इंग्लैड गये २ वर्ष पीछे मदरासके गवर्नर नियत होकर हिंदोस्तानमें वापिस आये—स० ई० १७५७ म थोडेसे सिपाही लेकर पलासीके मैदानमें सिराजुद्दौला नन्हाब बंगा-
लाकी बिकगल सेनाको परास्तकिया, जिससे अंग्रेजाका बल पराक्रम खबत्रदे-
शमें विदित होगया—इसीसमयसे हिंदोस्तानमें अंग्रेजी अमल्दारी की बुनियाद पड़ी क्योंकि इससे पहिले अंग्रेजलोग केवल व्यापारियोंकी तरह रहते थे और केवल थोडेसे सिपाही अपनी हिफाजतके लिये रखते थे—स० ई० १७५९ क्लायथने “इन्च” लोगाको पराम्ताकिया और एकवर्ष बादही जलवायु बदलनेके लिये फिर इंग्लैडगये—स० ई० १७६४ में गवर्नर जेनरल हिंदू नियत होकर तीसरी वफे हिंदोस्तान को आये और ३ वर्ष इस पदपर रहिकर अन्तिम वफे इंग्लैडको गये और पार्लियामेन्टम हाउस—आफ—कामन्सके मेम्बर होगये—७० हजार पौड इन्होंने फौजके बीमारको दानकिया— स० ई० १७७३ म हाउस—आफ—कामन्सने इनको यह दोष लगाया कि इन्होंने ईस्टइण्डिया कम्पनीकी खाकरीमें अपने अधिकार का अनुचित व्यवहार किया—इसीबातके रंजम इन्हे ने स० ई० १७७४ में आरम-
यात किया

खटाङ्गदलीप—अयोध्याके सूर्यवंशी राजा भागीरथका पुत्र था, इने पिता-

वृक्षसमय देव और दानवोंकी लड़ा

ईमें इसने देवताओंकी सहायता की देवतामाने इसकी धीरतासे प्रसन्न होकर वहा “धर्मोर्ग” इसने कहा कि मुझे यह मालूम होजाय कि मेरी भायु कितनीई यह मुन देवताओंन तपोबलसे विचारकर कहा “तेरी भवस्थामें एकदिन शेष है” राजान हुरत एकाग्रचित्तहोकर तपस्या करना आरंभ किया और मोक्षपाई

खड्गसिंह—पंजाबके शरी महाराजा रणजीतसिंहका ज्येष्ठपुत्र स० ई० १८३१ में निजपिताके देहांत होनेपर पंजाबकी गद्दीपर बैठा-इसने अपने पिताकी रानियोंका बड़ी २ जागीरें देनेका वायदा एक सतीहोनेसे बहुत रोका पर उद्योगे एक न माना सतीहोनेसे पेश्वर रानीकुंदनने ध्यानसिंह वजीरका हाथ मृतक महाराज रणजीतसिंहकी छातीपर रखवाकर यह करामती कि खड्गसिंह साप कभी दगा नहीं करूंगा और इसीतरह खड्गसिंहसे ध्यानसिंहक साथ दगा न करनेके लिये कसम ली परंतु खड्गसिंहका मन ध्यानसिंहके तरफसे भनेका कारणोंसे महाराज रणजीतसिंहके जीतेजीही विगडगप था, एवं उसने गद्दीपर बैठसेही ध्यानसिंहका महिलाके भंदर जाना कर दिया-इस बातसे नाराज होकर ध्यानसिंहने सिक्खोंमें यह झूठा भय वाह डडा दिया कि, खड्गसिंह अह्मेजाको पंजाबमें छाकर इसकी, छ भ्रा मुवरर किया चाहता है इस बातको सुनकर सब सिक्खलोग खड्गसिंहकी तरफसे फिर गये-पश्चात् ध्यानसिंहने छिपे २ खड्गसिंहक पुत्र कुँवर नौनिहाल सिंहको पशाघरसे पुलाया और उसको पेसा सिखाया पढायाकि, उसने अपने साथ खड्गसिंहको केंद्र कराया भा। राजकाज खुद करन लगा-इसी भसमें खड्गसिंह बामारपड़ा और विक्रम दवा मिलनसे अरु मरगया-कहत है कि ध्यानसिंहने आप बैठके दिख इस कदर रोह दिये थे कि नौनिहालसिंह मरत वक्त भी अपने बापके पास नहीं गया लेकिन खड्गसिंहकी लादा जाउनस पेश रहीं नौनिहालसिंहपर एक धुरवाजा दूधर गिरा जिससे धरुभी मरगयाक साथ है म्यजनासे विगेधकरके गैरासे मिलनेवालोंको यही दशा होती है

खफीखौं (इतिहासकार) सुगलगन्यक ठसराद्धयी एक विश्वासपात्य सधारीन इसने फारखीमें लिखी है-यादशाह औरअजबका हुकम था कि, मेरे सम यफी कोई सधारीन न लिखी जाये पर मीरजुहम्मदने औरंगजेबके समयके भंत्तम स० ई० १७०० के लगभग छिपे २ एक सधारीन लिखी और इसीलिये "खफीखौं" लख पाया

सुमानखानौं—देखा भयदुल्गर्हाम स्नानपानौं, धर्मऔरमानखौंना खुमान (भावावधि) पचरखारी बुन्देलापण्डके वासीभाट जन्मापहोनग कारण कुछलिये पढेनेवे-द्वेषयोगसे इनके घर कोई महापुरुष सन्यासी भाप और ५ महीनेतक ठहरे चलते समय भनेकलोग उनको बिदाउरतवे लिये पुरु २ दूर जाप लौट भाये, पर सुमान साथही चलगये और सन्यासीके समझानपरभी नलौट और कहने एगे कि "महाराज हम अंधे भपद, निक्कमे घरने विसी कामक नहीं है इसलिये आपहीकी खियाम रहने" सन्यासीने यह सुन सुमानकी जिद्दपर मरम्बसोमत्र लिख दिया और कहा कि, हमारे य मंडलुकी प्रशसान कडित बनाओ सुमानन दीयही २५ वचित कर्मदलु पर बनाये और सन्यासीके चरण छुकर पर

आये और संस्कृत तथा भाषा कविता करने लगे—पश्चात् महाराजा संधियाके दरबारमें खालियर गये, संधियाने रातभरमें एक संस्कृतग्रंथ बनानेकी आज्ञा दी, एक इन्होंने रात्रिभरम ७०० श्लोक बनाये—लक्ष्मणशतक और हनुमन नखशिख इनके रच्ये ग्रंथ है सं० वि० १७४०में विद्यमानथे—अमरकोषका भाषा छन्दोंमें उल्या करनेवाले सुमान कोई दूसरे थे

गणेश (ज्योतिषकार) भारद्वाजगोत्री गुजरब्राह्मण गोपालके पुत्र थे—इनके बाद कान्दजी गुजरातके राजाकी सभामें कवीश्वर थे—इन्होंने ३५ वर्षकी अवस्थामें “जातकालङ्कार” नाम ज्योतिषग्रन्थ बनाया—जन्म इनका शाके १५०० में हुआ

गणेशदेवज्ञ (ज्योतिषकार) वि० सं० की १६ वीं शताब्दीमें हुये पश्चिम समुद्रतीरवर्ती नन्दीग्रामनिवासी पं० केशवके पुत्र थे माताका नाम लक्ष्मी था—निम्न स्व ग्रंथ इनके बनाये हैं—ग्रन्थालय (१४ वर्षकी उम्रम बनाया), लघुतिथिसिन्तामणि, बृहत्तिथिसिन्तामणि, सिद्धांतशिरोमणिटीका, विद्याहृद्वाचनटीका, महूततत्त्वटीका, आर्द्धनिणय, सुधीरञ्जनतजनीयंत्र, कृष्णाष्टमीनिणय, होलिकानिणय, लीलावतीटीका और छन्दोणवटीका—गणेशदेवज्ञको इस देशके लोग गणेशजीका अवतार मानते थे

गदाधर (नैयायिक पंडित) वि०सं० की १७ वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें घड़देशम हुये—रघुनाथ शिरोमणि गचित “दीधित” ग्रंथपर इन्होंने गदाधरी, व्युत्पत्तिवाद, शाक्तिवाद इत्यादि ६४ वाद ग्रंथ रचे हैं—रसकसुमाञ्जलि और बाँझाधिकार को व्याख्या तथा अनेक और ग्रंथभी इनके बनाये मिलते हैं—इनकी विलक्षण बुद्धिको वेही जानसकते हैं जिन्होंने इनके गदाधरी भाष्ये पूर्वोक्त ग्रंथको टिप्पणी—

गफ (सर ह्यू गफ—Sir Hugh Gough) इंग्लैंडके रहनेवाले वीरपुरुष सं० ई० १७९४ में अंगरेजी फौजमें भरती हुये—एकवर्ष बाद कैप्टन होप विजय करनेके लिये भेजे गये—बादको पश्चिमी हिंदके अनेक छिपोंमें ब्रिटिशसेनाके अफसर रहे और तालवेड़ाकी मसिद्ध लड़ाईमें घायल हुये—इसीतरह अनेक साहसपूर्ण काम करनेके बाद सं० ई० १८३० में मेजर जनरलके पदपर पहुँचे—सं० ई० १८३७ में इनकी बदली हिंदोस्तानको हुई पर थोड़ेही दिन बाद सेनापति नियत करके खान भेजेगये—यहा केन्टनके धावेंमें जो बहादुरी इनसे हुई उसके बदलेम जी० सी० वी० वी पदवी पाई—सं० ई० १८४० में कमांडर-इन-चीफ नियत होकर पुन हिंदोस्तानका आये—महाराजपुर, सुदधी, फीरोजशाह और सुधराउनकी लड़ाईयाँ जिम्में इस्टइंडिया-कम्पनीकी विजय हुई इन्हींकी मौजूदगीमें हुई थी सं० ई० १८४८ में पेन्शन लेकर इंग्लैंड गये—

सं० ई० १७७९ में जन्मे—

सं० ई० १८६९ में मरे—

गर्गपुरोहित-वास्तवमें क्षत्रिय कुलोत्पन्न थे परंतु अपने शुभ भाचरणोंके कारण ब्राह्मण होगये-इनके वंशज गर्गोय कहिलिये और उनकी गणना ब्राह्मणोंमें हुई इनके पिताका नाम रितय था-गर्गसंहिता नाम ग्रंथ इनका बनाया हुआ है-ये श्रीकृष्ण भादि यदुवंशीयोंके पुरोहित थे

गलीलियो-(Galileo) इटैली निवासी एक अनुभवशील ज्योतिषी हुये हैं-दूरदर्शक यंत्र, सूक्ष्मदर्शकयंत्र, तथा धर्ममिटर (गर्मी नापनेका यंत्र) पाहिले पहिले इन्होंने बनाया-२५ वर्षके उम्रमें गलीलियो ग्रहिर पिताके कालिजम गणित अध्यापक हुये पश्चात् नौकरी छोड़ घर आये-खगोल तथा ज्योतिष विद्यामें इनकी बड़ी रुचि थी, रातभर नक्षत्रोंको निर्या करते थे स० ई० १६१४ में इन्होंने पृथ्वीविग्रहको पहिले पहिले देखा और यह भी प्रकट किया कि पृथ्वी सूर्यके चारोंतरफ घूमती है-निजकृत दूरदर्शक यंत्रके सहारेसे इन्होंने पृथ्वीके भास पास चंद्रमा देखे और यह भी जाना कि चन्द्रमाकी तरह शुक्रभी रूप बदरता है और कि आकाशगंगाम बहुत छोटे २ नक्षत्र हैं-अपने इन सब खिद्धांतोंको गलीलियोने पुस्तकाकार करके छपवाया, पादरियोंने पृथ्वीके घूमनेको अपन धर्मके विपरीत समझकर, मिथ्यामत फैलानेका इनको दोषी ठहिराया और ७० वर्षकी उम्रमें इनको कैद करादिया परंतु १ वर्ष पीछे टस्कनीके राजाके पहिले नेसे छोड़दिये गये-इसी मानवानिके शोचमें ७८ वर्षकी उम्रमें अंधे होकर मर गये ज्या २ विद्या और फलोंका प्रचार घटता गया विश्वारशील विद्वानान इन्के अनुभवा और खिद्धांतोंको जा इनके समयमें झूठे और धम विरुद्ध समझे जात थे सच्चा पाया

स० इ, १५६४ म पैदा हुए

स० ई १६४० मे मरे.

गंधारी-(कौरवाकी माता) कंधारके राजा सुकन्दकी पुत्री थी वियाह इसका चंद्रवंशी महागज भूतगणके साथ हुआ था इसके पटसे १ कन्या और १०० पुत्र जो कौरव कहिलाते थे, पैदा हुए-यह बड़ी पतिव्रता थी, अपनी शीलामें सदैव पटी बधि रहिली थी, क्योंकि पति अंधा था और यह पतिसे बढकर किसी बातमें भी नहीं होना चाहती थी महाभारतकी एडाईय वाद् जिसमें इसके सब पुत्र मरिगये तपस्या करनेके लिये पतिये साथ बनको चली गई और वहाँ भाग लगनेसे पतिव्रत जन्मकर मरगइ

गिरिधर कविराय-जयपुरनरेश जयसिंहसवाईकी सभामें थे जाति के भाट थे महागज जयसिंहने इनकी बुद्धिकी श्रमाधारी देख कविरायकी उपाधि दी थी इनकी मीति सामाजिक कुंठालिय विषयात है माधीनमनुष्यावा वचन है यि, जिसको इनकी १०० कुंठालिये वाद् हा उद्योगी मंधीसे उपदेश

लेनेकी आवश्यकता नहीं रहती इन्होंने कुंडलियोंका एक ग्रंथ लिखना आरंभ किया था पर समाप्तिसे पूर्वही इनका देहांत होगया, बादको इनकी स्त्रीने उस ग्रंथको पूरा किया जिन कुंडलियोंमें सार्ई शब्द पढा है, वे इनकी स्त्रीकी कही हुई है

स० इ १७१३ में विद्यमान थे

गिरिधरबनारसी-देखो गोपालचंद्र कवि

गुणाढ्य-इन्हाने पिशाची भाषामें बृहत्कथा नाम ग्रंथ लिखकर दक्षिणेश्वर शर्ती प्रतिष्ठानपुरके राजा सत्यवाहनकी भेंट किया था, बृहत्कथाका संक्षेप सोमदेवने संस्कृतमें प्रायः स० ई ११२५ में किया और "कथासरित्सागर" नाम रक्खा

गुमानमिश्र-(भाषाकवि) भाषा साहित्यमें महानिपुण और संस्कृत विद्यामें परम प्रवीण थे-काव्य इन्होंने मिश्र सर्वसुखसे पढा था, प्रथम दिल्लीमें बादशाह मुहम्मदशाहके दरबारमें (स ई १७१९-४८) राजा जुगलकिशोर भट्टके पास रहे, पश्चात् मुहम्मदीनरेश राजा अलीमकबरखानके पास गये और उनकी आज्ञासे श्रीहर्ष कृत नैषध काव्यको श्लोक प्रति भाषा छन्दबद्ध करके "काव्यकलानिधि" नाम ग्रंथ रचा, और पञ्चनलीको भी जो नैषधकाव्यमें कठिन स्थल हैं सलिल करदिया-इस ग्रंथके दखनेसे गुमानमिश्रका पांडित्य सिद्धित होताहै-"कृष्णचन्द्रिका" नाम ग्रंथ भी इन्होंने वि० सं० १७८८ में बनाया-जि०हरदोईके किसी गाँवके रहनेवाले थे

गुरुदत्त-(५ गुरुदत्त विद्यार्थी एम् ए) इनके पिता मु० रामकृष्ण, पंजाबके रहनेवाले मिडिल स्कूल अंगमें ६०) मासिकपर शिक्षक थे गुरुदत्तने गवर्नमेंट कालिज लाहौरसे स० ई० १८८७ में एम् ए. का इम्तिहान पास किया, बी ए और एफ ए के इम्तिहानोंमें यूनीवर्सिटी भरम अग्रेष्ठ भाये थे-थोड़े दिनोंके लिये इन्हाने गवर्नमेंट कालिज लाहौरमें विज्ञानके असिस्टेन्ट प्रोफेसर तथा प्रोफेसरके पदपर काम किया पर यह नौकरियां अंदरोजह थीं फिर इन्हाने "वैदिक मैगजिन" नामक एक पत्रिका निकाली जिसको स्वमाप और परम उपयोगी बनानेके लिये इन्होंने वेद, उपनिषद् और अनेक धर्मशास्त्र ग्रंथ धाँडे ही कालमें घोर परिश्रमकरके पढ लिये, ये शुरुहीसे गणितशास्त्रमें ऐसे तीव्र थे कि बड़े बड़े सवाल जवानी हल कर लिया करते थे और सैकड़ा नाम बिना किसी क्रमके सुनकर फिर सुना दिया करते थे बुरी संगतिसे पचते थे और बेहूदा बातचीत कभी नहीं करते थे मौलभक्षणका निषेध करते, पुष्टदायक भोजन खाते, और कसरत किया करते थे प्रथम कन्दैयालाल अलखधारीकी किताबें पढ़कर नास्तिक होगये थे, पश्चात् आर्यसमाज लाहौरमें दाखिल होकर इनके ख्याल बदलगये थे, दयानन्द ऐङ्ग्लोवैदिक कालिजलाहौरका अर्द्धा अध्याने तथा

साहिब खनाई भीरगजेबसे इनकी सख्त लड़ाई हुई जिसमें हजारों सिक्ख और इनके २ पुत्र काम भाये ये भी देश छोड़ परदेश बहुत दिनातक घमोंपदेश करते हुये धमण करते रहे बंदानामक फकीरको जिसको बंदी गुरु कहते हैं इन्होंने उपदेश करके पंजाबमें अपने धाप और बख्शोंका बंदूका मुसलमानोंसे छेनेके लिये भेजा था बंदा साहिब जब पंजाब भाये तो लाखों सिक्ख जो अपने गुरुके नुवचानों पर भांसू बहा रहे ये हथियार छे २ घर निकळ पड़े-फिर तो बन्दा साहिबने मुसलमानोंकी बह गत की कि, न कहना बेहतर है, नाकचने चबा दिये, लाखों भारत मद् बखे बुहदे काट डाले-गोंबके गोंब फूंक दिये माल छूटलिया बड़े २ मकाब टादिये-अब गुरु गोविंदसिंहने बंदाकी कर्तुत सुनी तो यही बह्दा "बाह गुरुकी इच्छा!" गुरु गोविंदसिंहको उनके मुसलमान नाथराने छुरी भोंककर मारडाला गुरुने मरनेसे पेसर फरमाया कि "गुरुमाकी परम्परा हमसे म्यतम है हमारे पीछे केषल प्रय साहिबही गुरु करके माने जायगे

स० ई० १६६६ में जन्मे

स० ई० १७०७ में मरे.

गोरखनाथ (गोरक्षनाथ)-ये योगशास्त्रके प्रसिद्ध सिद्ध हुये हैं बहुतसाका विश्वास है कि, अभी जिन्द्द हैं, महाराज मत्तूंदरी इन्हींके उपदेशसे योगी हुये, नागाठोग इनके आधिक चेले हैं और नैपालक रहनेवाले इन्हींके नामसे गोरखिया कहिल्लते हैं गोरखपुर इन्हींका बसाया हुआ है और वहां इनका एक मन्दिर अतीतक विद्यमान है ये गुरु जलधरके शिष्य थे संत्राधिषाका सिद्ध इनके समान भाजतक दूसरा नहीं हुआ अनेक संस्कृतग्रंथ इन्होंने बनाये थे जिनमेंसे कामशास्त्र अथतक मिलता है * नाथ तथा ८४ सिद्धोंम इनकी गणना है, ये तनु पर विभूति रमाये, सिद्धरूप बनाये, दिग्बर धूप धिय, हाथमें कमडल्लु लिये, मृगीनाद बजाते, लिप्यासहित पाहर नियालाकरतेये संपेदे योगरह अथतक गुरुगोरखनाथकी दुहाई अपने मंत्रोंम लगात है

गोल्डस्मिथ-(आलीवर गोल्डस्मिथ-Oliver Goldsmith) ये अंग्रेजी कवि भाषण्डके एंगपोड प्रदेशातगत पैलसके रहनेवाले थे प्रथम ट्रिनिटी कालिज डबलिनम इन्हां शिक्षा पाई, पश्चात् डाक्टरी पढ़ने एटिनघरानगर घो गये, फिर डाक्टरी छोड़ कानून पढ़ने लग ऐयिन् कानूनकाभी अधूराही छोड़ों स० ई० १७५५ म जेबम वेयल एक गिनी (१५ ६० भरखा सिक्का), पीठपर एक कुर्ता और हाथम सँ सुरी लिय हुय यूगपय अनेक देशाधी यात्राय लिय पैदल निघले-इस यात्रासे लॉटकर लंडन नगरम ठहारे और स्कूलमास्टरी करली, समाचारपत्रोंको मजमूनभी लिहा करत थे पश्चात् एक समाधिकपत्र जारी किया ऐयिन् कुछ चला नहीं-इसके बाद गोल्डस्मिथन स्वर्गचित "थीनीवना"-को मुबरी खालिय "पब्लियलजर" नामक समाचारपत्रमें छापनयो भेजा.

स० इ० १७६५ में सौंदर्यसे परिपूर्ण इनका रचा एक उपन्यास छपा जिसकी विक्रीसे इनकी हालत माफूल होगई पर इनको स्वाभाविक लापवाही, बेहूदगी और जुभा तथा शराबपीनेकी ओर रुचि होनेके कारण सर्वश्रम अनेक आफतोंमेंही पड़ा रहिना पड़ा यह शराबखानों और चंदूखानोंमें पड़े रहिकर २। २ पैसे पर अपनी पथ रचना सुनाया करते थे इसीसे इनकी इज्जत न हुई-इनके घाप पादरी थे, जिनसे ४० पौंड धार्मिक आयकी जायदाद इनको मिळी थी-डिङ्ग टैंड विलेज (ठजाहगांव) और ट्रेषलर (पाथिक) इत्यादि अनेक ग्रथ इनके रचे रोचक और ललित हैं-इबारत साफ खादी और सरल है-विचार प्रहसन नम्रता और खूबीसे युक्त हैं-स० इ० १७७४ में लंडनमें मरे।

गौतमऋषि-(न्यायदर्शनकार)इनका दूसरा नाम शतानन्द था-पितृमेधसूत्र तथा सामवेदके गृह्यसूत्र इन्होंने रचे थे और न्यायदर्शन शास्त्रभी इन्होंने निर्माण किया था-इनका समय सांख्यदर्शनकार कपिलसे प्रायः २०० वर्ष पीछेका है-सामवेदीय धर्म सूत्रभी इनके कहे मिलते हैं-भूमण्डलपर से सबसे पहिले न्यायशास्त्रके आशय हुये और इन सरीखा दूसरा "न भूतो न भव्यति"-इनकी स्त्री अहल्या और राजा इंद्र तथा चन्द्रमाके मुगा बन्धन बोलनेकी पुराणोक्त अलंकाररूप क कथा जगत्प्रसिद्ध है

गौतमबुद्ध-देखोपुद्ध

गंगकवि-(भाषा कवि) जिहा इटावाके रहिनेवाले ब्राह्मण स०इ० १५९५ में जमे थे,पूरानाम गंगामसाद था अक्षरके द्धारमें इनका बड़ा आदर सरकार होता था कविता करनेकी शक्ति वैधी थी, इनके बनाये पद अत्युत्तम होते थे जिसके विषयमें प्रसिद्ध है कि,

दोहा-उत्तम पद कवि गंगको-उपमा को चळधीर ।

केशव अर्थ गंभीरको-सूर तीन गुणधीर ॥

षादशाह अक्षर, अच्युलरहीम खानखानों तथा जयपुरनरेश मानसिंहने इनको अनेक अवसरोंपर बहुत कुछ इनाम दे कर निहाल किया था थीर चळने इनको छप्पयमें १ लाख इ०इनाम दियाहीथा अक्षरके बाद जहागीरने भी दिल्लीके तख्तपर बैठकर इनको कईदफे इनाम दिया था एकदिन ये जहागीरको कवित्त सुना रहे थे जहागीर उस वक्त अपने पाइआमेंमें हाथ डाले गुप्त स्यानयो खुज ला रहा था, यह देख गंगने कहा "बादशाह सलामत, कबीरोंके कवित्त सुन कर मर्दोंका हाथ मूँछपर जाता है, आप यह क्या कर रहे हैं" इस बातसे चिदक्षर जहागीरने कवि गंगको हाथीसे चिरवाढाला-यह देख द्धारके अमीरोंने शोक किया और बादशाहसे अर्जकी कि, गंगके समान वैधीशक्ति रखनेवाला दूसरा कवि पैदा नहीं होगा, बादशाहने भी अफसोस किया और गंगके १० वर्षके

लड़केको अपने द्वारम गुलवापा-इस बख्तेने द्वारमे भातेही घातशाहका निम्रस
पद मुनापा और फूट २ कर रोसा हुआ लौट गया-

गांको हत कहा-कल्लरको खेत कहा
वेग्याको विग्वास कहा गुप्त घात पाइके
रांगके रुपैयाको कहांली परस्त्राइये
तोसे कहा गांनको गद्दी ठहिराइये
गुलामनके तिलाम .तिपाके षादशाह
कवि गंगसे गुणीको क्या जंघसे चिराइये

गंगेशठपाध्या-(नैयायिक पंडित) इन्होंने न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों
का साराश लेकर चारभागमें चिन्तामणि ग्रंथ रचा-यह ग्रंथ ऐसा उपयोगी
कि इसने अल्पकालहीम न्याय वैशेषिक भाषि प्राचीन ग्रंथोका विरस्त्रार का
दिया-इस ग्रंथपर उत्तरोत्तर क्रमसे १० तिलक रचेंगे हैं-गंगेशजी उत्तमकुर-
मैथिल ब्राह्मण थे प्रसिद्ध पंडित घधमान उपाध्या इनके पुत्र थे

ग्लेडस्टोन- The Right Honorable William Gladstone) महारा
नी बिकटोरियाके समयमें यह बहुतदिनतक प्रधान मंत्री रहे-इनकी राजनीति
ऐसीथी कि जिससे शत्रुभी इनकी प्रशंसा करते थे वर्तमानकालके सुप्रसिद्ध
राजप्रबंधकताओं तथा उपदेष्टाओंम इनकी गणना है-महाराजो बिकटोरियाकी
इनपर पूज्य मुद्रि थी-ये बड़े उच्चस्वरसे वक्तृता देते थेजिसका प्रभाव सुर्ग सिन
पर पड़ता था,यह योग्य परिणामदर्शी और विश्वासशील थे-१४ वर्ष बराबर पार्लो
मेंटके मेम्बर रहे-सदैव सोचतेविचारते रहिते थे, चालठाल सादी थी इतन पुष्ट
होगये थे पर परिश्रम करनेकी धान नहीं छोड़ते थे-लंडनम रहितेरजय य ५ जात
तो अपने ग्रामकी पार्चशापर म चलेजात और वहां १०। १५ दिन रहितर
शाहबुल्लसके दरस्त पाटाकरतेथे जिसस उनके बदनमें खूब फुटी और सुन्दरी
भाजाती थी-इतन अमीरहानेपर भी गहिन सहिन इतनासादाया थि बहुधा पैदल
चलतेथे-होमकाल उपाधिने कारण इनकी बहुत प्रसिद्धी हुई-यह उदारचित्तों
के पुरुष थे-भायल्लेखालोंका पृथक् पार्लामेंट देनेकी उदार इच्छा इन्होंने प्रक
शी थी यह अग्रणीग्रंथभी रचे थे-ठिकरपूलके एक सांदागर्य पर स०३०१८०० में
जमे स० ३० १८९८ म और

ग्वाल (भाषा कवि) मथुराके रहनेवाले भाट स० ई० १८७० मं विद्य
मान थे, साहायम परमचतुर थे निम्रम्य ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं-

नखशिल, गोपीपत्नीसी, यमुनालहरी, साहित्यदृषण, साहाय्यदर्पण, भाषि
भाष, शृंगारदोहा, शृंगारयमित्त, हमीरहठ इनके सिवाय २ ग्रंथ इनपर संग्र
हीत भी मिलते हैं-नीचे लिखा प्रसिद्ध दोहा इन्होंने हमीरहठका है-

दोहा-सिंहगमन सापुर्णघञ्चन-कदली फल एकवार

त्रियातेल हमीरखठ-घटे न दूजी धार

घटकपर्पर-ये विद्वान् महाराज विक्रमादिभ्य हर्ष उज्जैनघालेके दधार्के

नधरत्नोंमेंसे था इसने एक ग्रंथ संस्कृत पद्यमें, जिसमें वर्षाश्रुतिका मनोहर वर्णन है, अपने नामसे रचा था ये वर्णके ब्राह्मण थे.

घाघ-(भाषा कवि) जिहा कानपुरके किसी गांवका रहनेवाला कान्य

कुब्ज ब्राह्मण वि० सं० १७५३ में विद्यमान था इसके बनाये दोहे, छप्पय, लोकोक्ति, ग्रामीण बोलचालमें विख्यात हैं-घाघशब्द आजकल चतुरपुप वाची होरहा है, निम्नस्थ दोहा इसीका है-

दोहा-ढीकोर्वेट कुल्हाडी डरि-इसके मागी दम्मा

ये हो करके मार बुलावै-घघ्या तीन निकम्मा

चङ्गेजखौं-(तातारका बादशाह) इमका बाप पिस्केखौं सुगल सर्दार

इस्को १३ वर्षका छोड़कर मरगया था २० वषकी उम्रमें इसने बाँगखौं तातारी सर्दारकी बेटीसे शादी की, यह बात और सर्दारोंको बुरीलगी, पर्व उन्होंने बागखौंपर चढाई की, पर चङ्गेजखौंने मदद करके उसको बचाडिया, पश्चात् बागखौंने फतही होकर चङ्गेजखौंके पकड़नेका इरादा किया, पर चङ्गेजखौंने उसको परास्तक मारडाला और तातारया तख्त अपने कब्जेमें करडिया-फिर चङ्गेजखौंने निजसेनाका सुधार किया, जिसमें छ लाखसे अधिक सिपाही भरती किये और उत्तरीय चीन तथा तातार प्रदेशान्तर्गत अनेक देशोंको जीता इस तरह तातारके ठोटेसे राज्यको पूरव पश्चिम ६ हजार मील और उत्तर-दक्षिण ३ हजार मीलम फैलाया ऐसा बृहत्त राज्य इसनी शीघ्रतासे किसी दूसरे बादशाहने आजतक नहीं विजय किया-स० ६०१२१७में हिंदोस्तानपर हमला किया और ईरानसे लेकर सिंधु नदीके किनारेतक जो साम्हने पहा उसको मारडाला शहर तथा गांव जलादिये और छूटलिये-जब चङ्गेजखौं पूरबी देशोंम विजय प्राप्त कर रहा था उसने अपने प्यारे पुत्रके मरनेकी खबरपाई जिससे उसको बड़ा गाय हुआ और ज्वर भागया अत समय उसने अपने सब पुत्र पौत्रादिकोंको बुलाकर कहा कि सब मिलजुलकर रहना,ऐसा न हो कि,भापसके सिगाइसे राज्य नष्ट होजाय, ये बड़ा विजयी निर्दयी रणकुशल और कानून बनानेम दक्ष था

स० ई० ११६० में जन्मा

स० ६० १२२७ में मरा

चतुर्भुजदास-(भाषाकवि-भट्टराय) गोस्वामी विद्वलनाथजीके शिष्य थे और श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य कुंभनदासके सप्तमपुत्र होकर जमनावसे प्रामथे रहने-

घाले थे-इनकी भाङ्गौरवा थी-ये पिता पुत्र भस्यत धनहीन थे और बड़े सुकवि प
साधु महारामाभोंके यथाशक्ति सनमानी थे-इनके बनाये अनेक पद जा मन्त्र
भाषसे भरपूर हैं, कृष्णानंदकृपास देवकृत रागसागरोद्भवमें है

चंद्रा-(पंजाबकेशरी रणजीतसिंहकी सबसे छोटी रानी) महाराज रणजीत
सिंहके मरते समय इसकी उम्र बहुत छोटी थी और इसका पुत्र दलीपसिंह दूषर-
ता था स०ई०१८४३ में दलीपसिंह ५ वर्षकी उम्रमें गद्दीपर बैठा-हीरासिंह का
जवाहिरसिंह क्रमशः दीवान नियत हुये और फौजके सिपाहियोंके हापस मार
ये-सब सौ रानीने दरबारमें बैठकर राजकाजकरना स्वयं आरंभ करदिया और छ
सिंहको दीवान नियत किया-छालसिंहपर रानीकी विशेष कृपा थी, पर पद
रानीके दोषोंको छोड़, जो स्त्रीमें स्वतंत्र होनेसे पैदा होजाय है, उसकी बुद्धिमत्ता
हीका वृत्तांत लिखनेसे प्रयोजन है-रणजीतसिंहके बाद छालसा फौज बड़ी बढ़ती
होगई थी इसलिये वसरी और प्यान घटानेकेलिये रानीने फौजको त्रिही भा
बनारस छूटनेके लिये भेजा-यथार्थ में इसकायवाहीसे रानीका विचार भ्रमेजो
छटनेका न था बरन इस वहानेसे उपद्रवी फौजको मटयराके अपने प्राण और
राज्यकी रक्षा करनेका था-फौज तो आधीसे अधिक कटमरी पर पंजाबमें अग्र
रजावेट मुकर्ररकिया गया रानीको राजकाजसे अलहिदा करके डेक्कलास करप
वार्षिक पेन्शन दीगइ और लालसिंहको २ हजाररुपया मासिक पन्शन देकर रानी
से अलहिदा होकर घृटिशराज्यमें बसनेका हुकम दियागया-उह बात रानीने
पसंद न आई परं उसने घृटिशराज्यकी सुगम बनकर वापुल, बंधार, कापीर
और राजपुतानाके सबराजाओंको अपनीतरफ मिलाया और भ्रमेजोकी सिफ
फौजको बिगडनेके लिये उकसाया उससमय कोई सिफस खदर ऐसा नहीं प
कि जिसके दिलम यह ख्याल न पैदाहोगया हा कि पकड़फ सिफखोंका इन्टाफि
करावे-पर ठीक समयपर यह भेद गुलगया, रानीकी पन्शन घटाकर ४ हजार
करदीगई और उसको बंदकरके बनास भेजादियागया-चंद्रसे रानी शियाजी मर
टेकीतरह टोकरमें लिपकर निकलभागी और नेपालपहुंची-नेपाल दरबारने उसका
१ हजार मासिक पेन्शन नियत की और धार्की उम्र उसने यहीं याटी-घृटिश
गयमेंमंटेने नेपालद्वारासे हठपूर्वक रानीके धापिस करनेको लिखा पर उक्तद
रने साफ जवाब देदिया कि "शरण धापहुयका अशाण करना हमारे धमय विरु
घृटिश गयनमटथो उससे कुछ भय नहीं रखनाचाहिये हम उसकी रुद्र संहा
रवयेंगे "

चंद्रासाहिय-(नयाबकरनांरक) अकाटये नयाबकी लक्ष्मी इसकी
विवाहोर्गंधी-नानांरकये मारवेम इसय समान धीर पुठप फोइ वृसग नया-स०ई०
१७३६ में द्विचनापक्षीवा राज्य इसन जूबदस्ता छान लिया-स०ई० १७५१ में म

लहरोके हाथ पड़गया और सतारा के किलेमें कैदकियागया—फरासीसी गव-
र्नर डफलेसाहिबने इसे कैदसे छुड़ाकर कर्नाटककी गद्दीपर बिठलाया—स० ई०
१५२ में मरहटोंने इसका शिर काटहाला

चंद्रचर्चाई—(कविचंद्र) दिल्लीके भन्तिम हिंदूपाति महाराज पृथ्वीराजका
धान मंत्री तथा राजकवि जातेका भाटअसलमें छाहौरका रहनेवाला था—इसके
ईजमी कवीश्वरधे और अजमेर तथा रणयम्भोरके चौहान उनके यद्यमानधे चंद्र-
च० वि० ११२० में रणयम्भोरसे दिल्लीभाकर पृथ्वीराजके दरबारमें उच्चपदको
प्राप्तहुआ—कवीश्वरहोनेके सिवाय बुद्धिमान, धीर, चतुर, रणकुशल, नीतिज्ञ और
धार्मिकभी था और विद्वानहोनेमती कुछ शकही नहीं सचछड़ाइयोंमेंमहाराज
पृथ्वीराजके साथही रहा—इसका वनवाया एक कुंवा अथवा कूँचजिला हमीर-
पुरमें है यह उच्चतक वनवायागया था जब राजापरमालके साथ युद्धमें
पायलहोकर पृथ्वीराज कूँच में ६ महीनेतक पड़ा रहा था—चंद्रका ज्येष्ठपुत्र कवि
रुद्र पृथ्वीराजकी बहिन पृथावाहि के दुहेजम चित्तौड़के राना समर्षाको त्रिया-
याया—जल्दकी संतति अथवा मेवाड़में है और वहाँके राज्यमें उसको प्रतिष्ठा है—
जैसे है कि कविचंद्र और पृथ्वीराजका जन्म तथा मरण साथ २ एक ही दिनहु-
ता—पृथ्वीराजका जन्म वि० सं० १२०५ में और मृत्यु वि० सं० १२४९ में हुई
इंदने पृथ्वीराजके वृत्तांतमें “ पृथ्वीराजरायसा ” ग्रंथरचकर स्वामिभक्तिका पूण-
रिचय दिया है—१ लक्ष श्लोकोंका यह ग्रंथ ६९ खण्डोंमें विभाजित है—इसमें पृथ्वी-
राजके जीवनकालकी मुख्य घटनायें, क्षत्रियोंकी वशावली, आनूपधतका माहा-
त्म्य, दिल्ली इत्यादि राजधानियाकी शोभा और क्षत्रियोंके स्वभाव, चलन व्यव-
हार आदिका विस्तारपूर्वक वर्णन है—यह ग्रंथ वीररससे परिपूर्ण है—भाषा इसकी
राफ्तके भन्तिमरूप और हिंदीके भादिरूपसे मिलती है—इसमें दिये सन् संवत्
प्रानन्द विक्रमीषवतक अनुसार है—आनन्द विक्रमीषवत् प्रचलित विक्रमीषव-
त्से ९० वर्ष पूर्व शुरूहोता है कवि चंद्रके १२ पुत्र थे

चंद्रगुप्त—(मगधनरेश) महाराज नन्दका पुत्र मुरानामक नाइनके पेटसे था
इसकी राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) में थी मसिद्ध पंडित चाणक्यने तिरस्कृत
होकर महाराज नन्दको ८ पुत्रों सहित नाशकिया और चंद्रगुप्तको गद्दीपर बिठ-
लाया और आप प्रधान मंत्री बना चंद्रगुप्तबड़ा धीर धीर पुरुष था, उसने भारतव-
र्षसे परदेशियोंको निकाल दिया था यूनानके सादशाह सेल्युषने उसपर चढ़ाई
की पर हारकर अपनी लड़की, ५०० हाथी तथा सिन्धुनदीके किनारेका मुल्क देकर
संधि करली और मैगेस्थनीज़ नामक राजदूतको पटनाके दरबारमें छोड़कर
यूनानको लौटगया इस राजदूतने अपनी पुस्तकमें चंद्रगुप्तके राज्य संबंधका
विस्तार वृत्तांत लिखा है जिसका सारांश यह है कि पटना उस समय अत्यंत

रमणीक शहिरें था सफाई तथा पुलिसका प्रबंध अच्छा था, रथोंमें ७५।२ घोड़े और चलते समय बेल जोते जाते थे सड़काका जीर्णोद्धार होता रहता था और खेत सींचनेके लिये नहरें जारी थीं जमीनकी पैदावारसे खूबिया हिन्द राजकोशमें जाता था फौजमें ६ लाख पैदल, ३० हजार सवार और ८ हजार हाथी थे इसका पुत्र बुन्दसार इसके बाद गद्दीपर बैठा प्रसिद्ध बौद्ध मठान गामी राजा अशोक इसका पौत्र था

स० ई० से ३१५ वष पूव गद्दीपर बैठा

स० ई० से २९१ वषपूव मरा

चन्द्रनराय-(भाषा कवि) पुषार्या जिला शाहजहाँपुरका रहिनेवाला भाट महा विद्वान् और संतोपी था और राजा कशरीसिंह गौड़के यहा रहि था केशरीप्रकाश, भृंगारसार, बल्लोलतपस्विणी, काम्याभरण, चन्द्रनसतल्य और पथिकबोध इत्यादि ग्रंथ इसके बनावे हुये हैं-मनभायन भादि इसके शिष्य महा कवि हुये है, चन्द्रनराय पुषार्या छोड़ कहीं नहीं गया-एक बफेरिहं बुन्देल खण्डी राजाने इसको बुलवाया था पर ये नहीं गया और निम्नम दोहा लिखकर भेज दिया-

दोहा-सरीट्टर स्वर खरतुआ खारीनोन सयोग ।

येतो जो घाही मिले चदन छप्पन भोग ।

वि०स० १८३० में विद्यमान था

चरकमुनि-(चरकसंहिताके रचयिता) कहिते हैं कि आपुर्वंशके प्रणेता चरक, सुभुत और वाग्भट, तीना धन्यतरि वैद्यके शिष्य थे चिकित्स ग्रंथोंमें चरकसंहिता सर्वोत्तम है यथा-"निदान माधय मोक्त सूत्रम्याने तु वाग्भट । शारिरे सुभुत मोक्तचरकस्सुखिविस्तके" चरकके बिना पढ़े अन्य खयहों ग्रंथोंक अवलोकनसे भी वैद्य निपुण नहीं होसकता, यहामी है "चरक्याता लोकितो येन स वैद्यो यमर्षिकर" चरकसंहिता निम्नम्य ८ भागोंमें विभा गित है-सूत्रस्थान, निदानस्थान, विमानस्थान, शरीरस्थान इन्द्रियस्थान, शिबि रसास्थान, फल्यम्यान, और सिद्धिस्थान इनका समय बहुत प्राचीन है पर माग सी० वृत्त सी० यस स्वराचित भारत इतिहासमें इनका स० इ० ये छठ शत वषम होना सिद्ध करत है-चरकसंहितापर सप्तस प्राचीन ध्याग्या हरिश्च द्रव्य है और विप्रमर्षी १२ वीं शताब्दीसे पूवकी मालूम देती है

चरणदास-(भानाकवि) इन्होंने माराणके भजन, स्मरण, स्थान और गुणानुवाचमें एक बड़ा ग्रंथ "चरणदाससागर" बनावे है और "म्यराद्य" नामकी एक छोट्टीसी पुस्तक भी, जिसमें २०७ छन्द हैं और जिसका साधन बह १ छानी, प्यानी, योगी, जती लोग करते हैं इनकी रचित है, ये बहच प्राप्त

परियासत अर्द्धवर्षके रहनेवाले मुरझीधर दूसर वैग्यके पुत्र वि० सं० १७६० में जन्मे थे इनका नाम पहिले रणजीत था और एक पैरसे लंगड़े थे—कुछ बड़े होकर माताके साथ अपने नानाके घर दिल्ली गये—दिल्लीमें एक दिन कोइ महात्मा मिल गये, उनके पैर इन्होंने पकड़ लिये और कहा “प्रभो ! मुझ अपंगको पार लंगामी मैंने आपके चरणोंकी शरण ली हूँ” महात्मा इनको कंधेपर रखकर कुछ दूर लेगये और चरणदास नाम रखकर अपना परिचय दिया और राम मंत्रका उपदेश किया

दोहा—गुरु शुक्रदेव मंत्र यह दीना राम नाम तत्सारा ।

चरणदास निश्चयसे अपले उतरे भवनिधि पार ॥

गुरुपदेशके प्रभावसे चरणदासजी कुछ दिन बाद बड़े महात्मा हुये, बहुतसे इनके शिष्य हुये जिनकी परम्परा दिल्ली, लखनऊ, बांदा आदि नगरोंमें अद्यतक चलती है—इनके मतानुगामी फकीर चरणदासी कहलाते हैं दिल्लीमेंही वि० सं० १८१९ में इनका देहांत हुआ—जहां दाह दीगई थी वहां इनकी समाधि बनी है और उसपर हर बसंत पंचमीको मेला होताहै

चाँदबीबी—अहिमद नगरके नन्दावकी घेटीथी और बीजापुरके नवाब अली आदिलशाहको विवाही गई थी सं० ई० १५८० में विधवा होनेके कारण राज काज इसको खुद सम्हालना पड़ा बादशाह अकबरके बेटे मुगदने सं० ई० १५९५ में इसके किलेका घेरा किया परंतु चांद सुल्तानाने यही धीरतासे सामना किया मुगलोंने हारकर संधि करली—अपने समयकी मुख्य राजनीति विशारद स्त्री थी—और बड़ी निडर तथा हौसलेमंद थी

सं० ई० १५९९ में वृक्षिणी लोगोंने इसे मार डाला

चाणक्य पंडित—पूरा नाम इसका विष्णुगुप्तचाणक्य था नीति, वैद्यक, ज्योतिष, रसायनादि विद्या पढ़कर ब्रह्मचर्य धारण कियेहुये पटना नगरकी ओर आया था और विवाह करनेकी इच्छा रखता था शहरके बाहर ही पैरमें कुशा गड़ जानेसे इसके मनोरथ में विघ्न हुआ और इसको बड़ी तकलीफ हुई, एवं रास्तेमें से कुशाको उखाड़ २ उनकी जड़ में मठा इस गरजसे डालने लगा कि, फिर न उगे — मगधनरेश महाराज नन्दके तिग्स्कृत मंत्री शकटारने इसको पसा करते हुये देख कारण पूछा—चाणक्यने कहा कि, जबतक रास्तेमें उगे हुये इन कुशाकी जड़-तक न नाश करलूंगा तबतक शहरमें न जाऊंगा—शाकटारने इस दृढमतिज्ञ पुरुष को महाराज नन्दसे उलझाकर अपनी मानहानिका बदला लेना चाहा—एवं मजदूर लगाकर कुशा सब खुदाके फिन्का दिये और चाणक्यको समझा बुझाके शहरमें लेआया और एक पाठशाला खुलवादी—कुछ दिनोंबाद महाराज नन्दके यहां आस्र हुआ जिसमें बहुतसे ब्राह्मण निठलेगये शकटारने इसको

सुभवसर जान महाराज नन्दकी आज्ञा बिना घाणक्यको निठला दे दिया उसने विचार कि, महाराज नन्द उस कुरूप बनेबते ब्राह्मणको देखकर रुद्र उठावेगा जिसके बदलेम यह भवरयही उसका नाश करदेगा और ऐसाही हुआ महाराज नन्दने आतेही घाणक्यको उठादिया और इस मानहानिके कारण घाणक्यने भी नन्दको भाठों पुर्वो सहित नाश करनेकी प्रतिज्ञा की-निदान घाणक्यने नन्दके पुत्र चंद्रगुप्त को जिसको नायनके पेटसे छरपत्र हानके कारण और भाइयाकी अपेक्षा पिताके बाद गद्दी मिलनेकी कुछभी आशा न थी, अपनी तरफ मिला लिया और महाराज नन्दको भाठ पुर्वो सहित विष दिलवाने तैयार कर दिया पश्चात् घाणक्यने चंद्रगुप्तको राजसिंहासनपर बिठलाया और आप उसका मंत्री बना ये राजनीतिका पूण ज्ञाता, चतुर और विद्वान् पुरुष था इसने मंत्री होकर राज्यप्रबंध ऐसा किया जिससे चंद्रगुप्तका प्रताप भारतवर्ष भरमें तथा अन्य टापुभूमि भी फैल गया-घाणक्यकी राजनीति विशालदृष्टिकृत सुद्वाराक्षस नाटकसे समग्र होसकती है, घाणक्यसूत्र तथा घाणक्यनीति इसके रचे ग्रंथ हैं

चार्वक-(मखिद्धनास्तिक) महाभारतमें लिखाहै कि, ये राक्षस था और कौरवपांडव युद्धके अंतमें इसने यह भकथाह फैलाकर कि भीम मार गया, पांडवोंका नाश करनाचाहा था-इसने एक शास्त्र रचकर नास्तिकताका प्रचार किया, वालुषमें अनीश्वरघादी शास्त्रके मुख्य नियम जिनको "चार्वकसूत्र" कहतेहैं, पहिल पहिल गृहस्पतिने निर्माण किये थे, चावकने बेचल उनका अधिक प्रचार किया और उनको अणीयद्ध किया

चार्ल्स ब्राडला-(Sir Charles Bradlaugh) ये पृथ्वीमासिद्ध नामित एक स० ई० १८३३ में लंडनमें पैदा हुआ एक तथा ६६ कृतताद्वारा पथाशक्ति नामित कता फैलानेमें श्रमोक्त किया पहिले निधनी होनेके कारण घोषणा के साकारता और छोटी २ नौकरियों करता था-पश्चात् २ पॉटमासिधपर एक घण्टीएली नौकरी करती थी-इस नौकरीपर रहकर इसने स्वामिसेवा पेशी सक्रमतासेकी कि, उसने अपना कर्ष इसको बना लिया-इस नौकरीपर रहकर धोटेही यत्न में बहुतसी कानूनकी बातें इसको मालूमहोगई और ये अच्छी वस्तुताभी बेनेलगा-स० ई० १८५९ में इसने और जोसेफग्यार्डर साहिबन मिलकर "नेशनल रीफार्मर" नाम के साप्ताहिक पत्र जारी किया और कुछदिनपाद यह उसका स्वतंत्र सम्पादन बन गया-स० ई० १८८० में हिंदोस्तानकी तरफसे पार्लियामन्टया मन्पर हुआ दूसरी साल नेशनल कांग्रेसमें शरीर होनेयो हिंदोस्तान भाया, उनदिनों इसका स्वागत्य अथवा न था-थोटेही दिनोंपाद मर गया

चासर-(ग्योफरी चासर, Geoffrey Chaucer) ये अंग्रेजी भाषाके आदिपद्यि थे-इनका बाप लंडन नगरका खनघाला बड़ा भभीर चौदागर था

कैम्ब्रिज और भाक्स फोर्डके कालिजोमें इन्होंने पढ़ा था इंग्लैंडके बादशाह एड-
वर्ड तृतीयके समयमें ये फरासीसोंसे लड़े, बाद अनेक पदा पर रहे, १ दफे
मठविवादका खोपी ठहर कर कैद भुगतनी पड़ी थी अंतमें आक्स फोर्ड नामक
शहरमें बस रहे थे "कैन्टर घरीटैल्स" नामक पुस्तक अंग्रेजी पद्यमें इनकी रची
हुई है, स० ई० १३२८ में लन्डनमें जमे स० ई० १४०० में मरे-

चिन्तामणि त्रिपाठी (भाषाकवि) टिकमापुर जिला कानपुरके
रहनेवाले ब्राह्मण थे इनके पिता रोज टिकमापुरसे एक मीलके फासलेपर
बनकी भुइयां नामक देवीके मंदिरमें दुर्गापाठ करनेको आया करतेथे—एक दिन
भगवतीने प्रसन्न होकर ४ मूँद दिखाय घर दिया कि, तेरे ४ पुत्र हागे—पेसाहो हुआ
क्याके पंडितजीके चिन्तामणि, मतिराम, भूषण और जटाशंकर ४ पुत्र हुये—ये
चारों भाई बड़े पंडित और कवीश्वर थे चिन्तामणिजी बहुत दिनोंतक मकरं-
शाह भोंसलाके दरबारमें नागपुरमें रहे और उन्हींके नामसे छन्दाविचार नाम
पिढ़ल बनाया—काव्यविवेक, कविकूलकल्पतरु, काव्यप्रकाश तथा रामायण
आदि ग्रंथभी इनके बनाये हुये हैं, रुद्रसाहिमुलकी तथा दिल्लीके मुगलबाद-
शाह शाहजहानेभी इनको बहुत इनाम दिया था इन्होंने कावेताम कहीं २
अपना नाम मणिलालभी लिखा है—

चूडामणि जाट (भरतपुरराज्यके संस्थापक) जब बादशाह आलम
गौरकी फौज दक्षिणसे लौट रही थी तब इन्होंने फौजका सब सामान रास्तेमें
छूट लिया और मालदार होकर भरतपुरका किला बनवाया और जाटाके सर्दार
र बन बैठे—बड़े साहसी और वीर पुरुष थे भरतपुरका राज्य भवतक इस प्रभाव
शाली पुरुषके वशमें है—स० ई० १७२० में मुगल बादशाह दिल्लीकी फौजसे लड़
कर मारेगये और बदनसिंह इनके पुत्र गद्दीपर बैठे

चूडामणि कवि—काशीवासी था हरिश्चंद्र भारतेन्दुके कविचूडामणि
नामसे पदपूर्ति की है—देखो हरिश्चंद्र भारतेन्दु

चेतसिंह (काशीनरेश) स० ई० १७७० म निज पिता बलवंतसिंहके पीछे
गद्दीपर बैठे, बलवंतसिंहके पीछे नव्याष धर्मीर भवधने बनारसका राज्य खाल
सा कर लेना चाहा था पर इस्ट-इन्डिया-कम्पनीने जोर लगाकर चेतसिंहको
गद्दी दिलवाई—बलवंतसिंहको बनारस, जौनपुर तथा चिनारकी जागीर और
राजा बहादुरका खिताब बादशाह दिल्लीकी तरफसे स० ई० १७३९ म मिला था
छाई वारन हेस्टिङ्गज गवर्नर जनरल हिंदू और महाराज चेतसिंहम कुछ
दिनबाद झगड़ा हुआ क्योंकि जूजरत पढनेके कारण राजासे मामूली खिराजके
सिधाय अधिक रुपया मागा गया था, जिसके देनेसे उसने इनकार किया था इस
झगड़ेका नतीजा यह हुआ कि, महाराज चेतसिंहको अधिकार रहित करके

उनके भाजे महीपनारायणको राजा बनाया गया, चेतसिंहने शेष उमर ग्वास्ति-
यरमें महाराजा सधियाके पास रहकर गुजारी स० ई० १८१० में मरे-महा-
राजमहीप नारायणके बाद क्रमशः उदितनारायणसिंह, ईश्वरीनारायणसिंह व
सर प्रभुनारायणसिंह के सी यस आई (वर्तमान काशीनरेश) गहीपर १३
महापज चेतसिंहका जीवनचरित्र ' चेतचद्रिका ' नामक ग्रथमें है जो उन
पुत्रका बनाया हुआ है ।

चैतन्यमहाप्रभु (वैष्णवधर्मके प्रचारक) मि० फा० सु० १५ वि० स०
१५४२ को सन्ध्यासमय बंगदेशके नवद्वीपनगरमें इनका जन्म हुआ-एक
दिन चंद्रग्रहण था पिताका नाम जगन्नाथ मिश्र और माताका शची देवी था
विद्यामें यह वेदावपुरीके शिष्य थे और वीक्षागुरु इनके माधवद्र थे-आठ
पनमें यह बड़ेही उपद्रवी थे इनके माता पिताको सदा उलहना भिडा करता
था-पिता इनको छोटा छोड़ मरे थे और बड़े भाई विश्वरूप पहिलेसेही संन्यास
धोगये थे, इनका विवाह बल्लभाचार्यकी कन्या लक्ष्मी देवीस हुआ था इनकी
विद्याकी प्रशंसा अकथनीय है बचपनहीमें परम विद्वान् केशव भद्र काशीपी प्र-
ह्लाणको धर्मसेवधी शास्त्रार्थमें हराया था इनकी पहिली स्त्री सौंपके फाटसे मर
गई तब माताके अनुरोधसे इनका विवाह नवद्वीपमें प्रधान राजपंडितकी कन्या
विष्णुप्रियाके साथ हुआ उन दिनां सद्यः बंगदेशमें शाक्तधर्मका प्रचार था और तब
मंत्रका बड़ा जोर था २४ वर्षकी अवस्थामें गृहत्यागी हो इन्होंने वैष्णवमतका
प्रचार किया पहिले तो ६ वर्षतक व्रज तथा जगदीशपुरीमें भ्रमण करके त्रिज-
मखका प्रचार किया और उपयुक्त शिष्यमेंढली संग्रहण की फिर व्रजमेंढलीमें
अने शिष्यरूप सनातन गोम्यामीपर और बंगदेशमें अद्वैत और नित्यादिमता-
प्रभुपर धर्मप्रचारका भार छोड़कर भाप १८ वर्षतक भीमगदायजीकी सेवामें
नियुक्त रहे

अंतर्गो ४८वर्षकी उमरमें एक दिन सप्तदशे तीर नहाने गये थ यहाँस नहीं छोट
निद्रास्थ संस्कृतग्रथ इनके बनाये हुये हैं- गोपालचरित्र, तारुधार, मेमामृत,
संज्ञनभागवतामृत, हजितामयवच्य चैतन्यदेवको पगवासी लाग कृष्णका
अवतार मानते हैं

चौंहा- ये राजा छत्तापाम तिसौठ मरेशये ज्येष्ठ पुत्र बड़े पण्डित और हठ
प्रातः हुये हैं इन्होंने निजपिताके किसी सुवासपर भ्रमसत्र होयर चितौडका
राज्य त्याग करअपने छोटे भाई मोकलदेवजीको इस वात्पर दे दिया था कि, चौंहा
भीर प्रसंगी संततिवा चितौड दबाये सरदारामें सदैवधाक्रिये खयांथपद् रहेगा
भीर उलका चिह्न भाला सदैवराजा चितौडये दस्तायताये साथ छिया जापगा
राजा छत्तापामके पश्चात् स० ई० १३९८ में राजा मोकलदेव अपने बड़े भाई

चौडाकी दोनों शर्तोंको स्वीकार करके चित्तौड़की गद्दीपर बैठे अबतक महाराजा उदयपुरके दस्तखतोंके साथ चौडाका भाला चिह्न लिखाजाता है और साठघरके रावत जो चौडाके वंशज हैं अबतक उदयपुर दरबारके सर्वाच्च सरदारोंमें गिने जाते हैं

चौडा (चौड़ियाराज) पृथ्वीराज अन्तिम दिल्लीपतिका मुख्य सेनापति था ये बड़ा चालाक कलाकौशल्यादिमें निपुण, रणकार्यमें वक्ता, धीर पुरुष था बहुधाषेप बदल २ कर स्त्रियोंके वस्त्र और भाभूषण पहिनकर शत्रुओंके दृष्टमें घुस जाता और प्रधान शत्रुको धध करता था एक दफे पृथ्वीराज धायल होकर घूचमें ६ महीनेतक अपनी सेनासहित पढारहा था उसीवक्तकी बनवाई चौडाकी बैठक अबतक कूचम विद्यमान है अन्तिमे पृथ्वीराज और परमालके युद्धमें ऊदल आदि अनेक वीर साधन्तोंको मारकर चौडा रणशायी हुमा मक्षार और दिलवरी स्त्रीको अबतक चौडरा कहते हैं

चंद्रसखी—ये भाषा कवि स० ई० १५८१ के साल ब्रजमें जन्मे । इनके बनाये अनेक भजन देश भर में प्रसिद्ध हैं । इनका छाप यह है—“चंद्रसखी भज बाल कृष्णछवि”

च्यवन ऋषि—ये भृगुऋषिके पुत्र थे नर्मदातटपर बैठ कर इन्होंने बहुत दिनोंतक तप किया था एक दिन राजा भजात शिकार खेलता हुआ सुकन्या नामक राजकुंवारीसहित च्यवनऋषिके स्थानपर जा निकला—सुकन्याने च्यवनऋषिको मट्टीका टेंटा समझकर उनके नेत्रोंमें जो दो सूराखसे मालूम पडते थे उनमें लकड़ी सुभोदी—जब रुधिर बह बरहा तब हात हुआ कि, यह तो कोई ऋषि है जो तप करते ० देहासुख धान रहित हो गये हैं राजाने यह देख राजकुमारीको ऋषिके स्थानपर छोड़दिया और खुद अपनी राजधानीको लौटगया कुछ दिनों बाद अश्विनीकुमार घेच वहां जानिकले और सुकन्याके यौवन पर तरस खाकर च्यवनऋषिकी आँखाका आराम करदिया और एक ओषधि (च्यवनरसायन) उनको खिलाकर बूढेसे तरुण करदिया बादको च्यवनऋषिने बहुतकालतक गृहस्थाभ्रम धारण किया उनकी सतति दूसर बहलाई आराम करनेके बदले च्यवनऋषिने अश्विनीकुमारका पहलमें भाग नियत कराया इनका नाम घेदकी अनेक ऋचाओंमें भी पायाजाता है “जीवदान” नाम चिकित्सा ग्रंथ इन्होंने बनाया था

छाति* स्वामी—(भाषाकवि—अष्टछाप) ये गोस्वामी विठ्ठलनाथजीके शिष्य अच्छे कवि थे ब्रजके ८ प्रसिद्ध कवीश्वरोंमें इनकी गणना है ३५० घणवम-रत्नोंकी घात्ता तथा राजा नागरीदासकृत पदमसङ्गमालामें लिखा है कि, ये मयुराके चौथे थे पाहेले बड़े गुडे थे लोनोंसे छेठछाड किया करते थे और गोस्वामी विठ्ठल-नाथजीकी प्रशंसा सुन ईर्षावश जलधुन आते थे एक दिन तग करनेकी इच्छासे खो-

धनी हाकर नष्ट होगया, जगतसेठ कृष्णचन्द्रको मिटिठागवनमटसे एक हजार रुक मासिक पेन्शन गुजरानके लिये लेना पड़ी, ये काशीम भा वसे थ और स० १८९० में विद्यमान थे इनके कोई भौलाद न थी एवं इनके पीछे जगतसेठके वंश में कोई न रहा सत्य है-

दो०-सदान काहूकी रही, पीतमके गल बँह। दुरती० या गद्, ज्या तरुवरका छोड़।

जगन्नाथ कवि-ये मधोवा (मुंदेश्वर) वाली कवि स० १० ११९१ मे राजा परमालके दशरम मौजूदया। आल्हखण्ड इसीका बनाया हुआ है।

जगन्नाथ त्रिशूली, पंडितराज-बैलभूरेगवासी पुरुभट्टके पत्र प माताका नाम लक्ष्मी या ये सम्पूर्णशास्त्र निजपिताहीसे पढ़े थ बनाएके राजाको भनेक श्लोक पनाकर इन्होंने भेंट किये पर उसने कुछ ध्यान न दिया निदान ये जयपुर चले भाये जयपुरनेराने पाठशाळाम इनको भष्यापत्र नियत किया और पंडित राज उपाधि दी उसीसमय दिल्लीमें सस्कृतका ज्ञाता एक फार्मी था उसने धर्मविषयकशास्त्रार्थभनेव पंडिताका हरा लिया था पंडितजीन पद्द वात सुनकर एवं धर्ममे सब यथनधर्मके प्रिय पढ़े और फिर दिल्ली जाय एक फार्मीको परास्त किया मुगलशाहशाह शाहजहानने इनको अपने शाहजादे दाराशिकोएकी शिक्षक नियत किया थोड़ेही दिनमें शाहशाहसे इनका इसनामेल होगया गि, यह महलोंमें जाने लगे, ये बड़े खूबसूरत हूट पुट और आभेमानी पुरुष थे ये एक दिन शाहशाहके साथ शातरंज खेल रहे थे पादशाहकी लड़की लवंगी इनको भेय मोहित होगइ और निजपिताको पानी पिलानके सहानसे खानकी सुराज लेकर थ्यागे भाइ शाहशाहने पंडितजीसे कहा कि, हमारी शाहजादीपर आय पनाभे पंडितजीने तुरंत यह श्लोक पढ़ा-

श्लो०-इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्तकृष्णा पृसुम्भारणधारचोर्ध्वाना।

समस्तस्य लोपस्य चेतश्मृतिं गृहीत्वा घट स्थापिता नायभाति ॥

शाहशाहने प्रसन्न हो कहा कि, "माँगोइनाम" पंडितराजिन उत्तरमे यह श्लोक पढा-

श्लो०-न याचे गजानि न वा वाजिरानि न वित्तेषु चित्तं मदीयं पद्मानि ॥

इयं सुस्तनी मस्तकन्यस्तकृष्णा एवंप्री प्ररूने हगद्रीपरानु ॥

निदान लघुगीका विवाह पण्डितराजके साथ बड़ी धूमधामसे होगया और पत्र महारथी गहनेके लिये दिया गया कुछ दिनों को दिल्ली रह पीछे फार्मी चले भाये-यहाँके पण्डितान पत्रनीके त्याग करने तथा यथाविधि प्रायागिन पर नेको बहुत समझाया पर इन्होंने नहीं माना इनके रवे १२ संस्कृतप्रणामसे गंगा लहरी करुणाकरि, मनोगमापृषमदन भागिनायिकास और रसगगाधर मुग्ध -गमालहरीकी रचना बड़ी सरस और भनायी है, इनके रचनया कारण था मुनेमें भाता है कि, जब काशीके पंडितोंन इनका बड़ा अपमान

किया तो इन्होंने काशीके मणिकर्णिका घाट पर बैठकर गंगाजीकी स्तुति पढ़ी प्रति श्लोक गंगा एक सीटी बहती गई ५२ श्लोक पूरे होनेपर गंगा उसी सीटीपर पहुच गई जहाँ पंडितजी साहजादीसमेत बैठे थे और हजारों मनुष्योंके देखते २ वे दोनों गंगाजीमें लोप होगये इनके समान संस्कृतकवीश्वर इनके बाद आजतक दूसरा नहीं हुआ

जगन्नाथ सम्राट् (जयपुरराजगुरु-रेखागणितके कर्ता) ये जयपुरनेत्रा महा राज जयसिंह कछवाहेकी सभामें प्रधानपंडित थे मिजास्ती नामक ज्योतिषसिद्धांतका अरबीसे संस्कृतमें इन्होंने उद्या किया और सम्राट्सिद्धांत उसका नाम रक्खा उक्तग्रंथमें १० अध्याय और १४१ प्रकरण हैं उन सब यंत्रोंकाभी जो महा राज जयसिंहने जयपुर, दिल्ली, मयुरा, काशी और सज्जनके आकाशलोचनामें ल गवाये थे उक्तसिद्धांतमें सधस्तर श्रुतांत लिखा है शाके १६४० (स० १६६१) में एकलैदसके १५ हों अध्यायका अनुवाद अरबीसे संस्कृतमें करके रेखागणित नाम रक्खा यह रेखागणित अद्यतक जयपुरराज्यके पुस्तकालयमें मौजूद है-रेखागणित बनानेके इनाममें ५ गाँव इनको मिलेये जिनपर अद्यतक इनकी संततिका जयपुरमें अधिकार है-ये अर्धी, फारसी, संस्कृत इत्यादिके पूण ज्ञाता थे, जन्म इनका शाके १५७४ में हुआ

जर्नेट्मोहन टागोर—(महाराजा सर जर्नेट्मोहन टागोर बहादुर, के सी यस भाई) कलकत्ताके प्रतिष्ठित टागोर (टाकुर) वंशमें बाबू हरकुमार टागोरके ज्येष्ठ पुत्र हैं—प्रसिद्ध संगीतज्ञ राजा सुरेंद्रमोहन टागोर आपके धर्मिष्ठ सहोदर हैं—आप टाकुर नहीं हैं बरन आपके ब्राह्मण हैं—टाकुर (जिसका अपभ्रंश टागोर है) आप इस लिय कहलाते हैं कि, पहिले पहिले उन सब लोगोसे जिनका काम काज ईस्ट इण्डिया कम्पनीसे पढ़ता था अंग्रेजलोग टाकुर (टागोर) कहते थे हिंदूकालिज कलकत्तेमें आपने बंगला, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा-भौक्ति शिक्षा पाई, आपने अनेक नाटक रचे हैं जिनमेंसे विद्यासुंदरनाटक बंग लामें बहुत अच्छा है, बंगालप्रान्तमें बड़ी भारी जमींदारीके भी मालिक हैं, आसा मिषापर बड़ी दया रखते हैं, अकालवे समय प्रजागणकी रक्षाके लिये अपना धन जुदाते हैं, ब्रिटिश इण्डियन ऐसोसिएशन के प्रधान हैं, और बंगालकी है-जिस हेटिव कौन्सिल तथा वायसरायकी कौन्सिलके मेम्बर अक्सर बनाये जाते हैं, निम्नस्थ विस्ताव आपने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी ओरसे पाये हैं—

“ राजा बहादुरका खिताब स० ई० १८७१ में

महाराजाका खिताब स० ई० १८७७ में

सी यस भाइ का खिताब स० ई० १८८० में

वे सी यस भाइ का खिताब १८८० में ”

महाराजा बहादुरकी पदवी सर्वैवको उत्तराधिकारियातकके लिये
सं० ई० १८९० में-

आप बड़े दातार और उदारभी हैं-

मेभो हस्पताल बनने के लिये जमीन तथा १० हजार रुपये दिये थे, अन्न
बजीके तथा सोने चांदीके पदक अपने बाप तथा चाचाके नामसे इम्तिहान पास
करनेवाले लड़कोंको दिये जानेके लिये कलकत्ता यूनीवर्सिटीको पूरी २ रकम
प्रदान की है-

निज माता शिवसुंदरी देवीके नामसे हिंदू विधवाओंके पालन पोषणमें
१ लाख रुपया प्रदान किया है-बहुतने और ऐसेही परोपकारके काम करके
आपने अपने अनेक पूर्वजोंकी अच्छी स्थापन की है-महाराज कुंवार प्रद्योत
कुमार टागोर आपके पुत्र हैं-बलिहार होनेका मौका होता है जब आपके छोटे
भाई राजा सुंदरमोहन टागोरसरीखे प्रधान पुरुष आपके घरणोपर गिर जाते हैं

जनक-मिथिलादेश (तिरहुत) के राजा थे इनकी राजकुमारी सानई
माताका विवाह स्वयंवरविधिसे रामचंद्रमहाराजके साथ हुआ ऋषि पाद
बल्क्य इनके पुरोहित तथा मंत्री थे-राजा जनक बड़े विद्वान् तथा धर्मशील थे
और निजयोग्यताके कारण राजऋषियपदके प्राप्त हुये थे बहुधा देहातुसन्धान
रहित होजाते थे, इसीलिये विदेह कहलाते थे

जनमेजय-चंद्रवंशी महाराज परीक्षितके पुत्र तथा अर्जुनके पौत्र थे-महाराज
परीक्षित ब्रह्मपनहीमें सौंपके फाटेसे मरकर इनको राज पाट सौंपगये थे-बड़े
होकर इन्हाने धर्मस्थापन मुनिसे महाभारतकी कथामें सुना वि महाराज परी
क्षित सौंपके फाटेसे मरेये, एवं इन्हान सपमथ यज्ञ किया और वरान सौंपांवि
कलके फूल जलघादिये जनमेजयने भारतवर्षका परब्रह्म राज्य विया था

जमदग्नि ऋषि-यमधममें अत्यंत निपुण थे जिसके कारण अबहलें
कहते हैं कि, अमुक मनुष्य कम धर्म म जमदग्निसे समान निपुण है भृगु
वंशोत्पन्न ऋषीयऋषिष पुत्र थे, माताया नाम सत्यवती था येद्विघाते ताता
हायर बिकालह थे, योगबलस जो चाहते थे पन्ध्र मार्गमें गन लेते थे पुगणा
म आपसी अन्ध कथाएँ बणित हैं और येद्वी ऋष्यामोमभी आपरा नाम आ
या है आपके ५ पुत्रोंमेंसे पाशुरामजी प्रविद्ध शशियफुलद्राही सचसे छाटे थे

जमशौद (ईरानया पादशाह) निजचचा तहमूरसेबे पाद इसासे
प्राय २ हजार वर्ष पहिले पारिस (ईरान) की गदीपर बैठा इसके समयमें
फारिसम ऋषिवा प्रचार हुआ गौय भाबाद हुये जंगल साय पिय गये, सहर्ष
और महर्षे निवासी गई बहुतने देय इससे यही नामक थे जिन्हाने इसरी

प्रजाको कपड़ा बुनना, सीना, मकान बनाना, बाग लगाना, लोहे धाँगरहकी चीजें बनाना तथा पढना लिखना इत्यादि सिखाया था और इसके वास्ते एक उड़नखटोळना (विमान) तथा एक प्याळा जिसमें पृथ्वीभरका हाल मालूम पड़ता था बना दिया था यह प्याळा सम्भवतः पृथ्वीका ऐसाही गोला होगा जैसे कि आज दिन स्कूलोंमें प्रचार है, और यह बातभी अपुक्त नहीं है कि, जमशैदके यहाँ जो देव नौकर थे वे शापद भारतवासी विद्वान् ही हो क्पाकि भारतवासी अपने विद्वानोंको देव और उनकी बोलियोंको देवभाणी कहते हैं जमशैद भग्निपूजक था और उसकी प्रजा ४ वर्णोंमें विभागीत थी अंगूर खानेका उसको बड़ा शौक था अंगूरी शराब बनानेका तरीका उसीके समयमें दरियापत हुआ जमशैद अंतम ईश्वरसे विमुख हुआ प्रजागण इससे फिर गये, अरबके बादशाह जुहाकने इसपर चढाई की जिसके कारण ये अफगानिस्तानकी तरफ भागा और वहाँके राजाकी छद्मकीसे विवाह किया पश्चात् हिंदोस्तानमें भाग आया पर यहाँसे पकड़कर जुहाकके पास इरान भेज दिया गया और वहाँ घब किया गया

जमशैदजी जीजीभाई वैरन नायट (Sir Jamsedji Jiji Bhai Bart.) स० ई० १७८३ में पैदा हुये माता पिता इनको छोटाईसा छोडकर मरगये थे एवं सुसरालियोंने इनकी परवरिश की थी स० ई० १७९९ में एकनाते दारके साथ थे (१००) रु० लेकर चीनको गये और वहाँ व्यापार किया कुछ दिन बाद स्वदेश को लौटे और १५ हजार रुपया फज लेकर फिर चीनमें जाकर तिजारत शुरू की और इतना रुपया पैदा किया कि, थोड़ेही दिनोंमें कजा अदा होगया और करोड़ों रुपयके आदमी होगये—ईमानदारीके कारण इनकी तिजारत आफ्रिका, अमेरिका और आस्ट्रेलिया आदि देशोंमेंभी फैलगइ थी स० ई० १८०७ में थे बम्बईमें आकर बसे उस वक्त इनके पास कई करोड़ रुपये थे इन्होंने कभी किसीपर नाछिश नहीं की और जितनी आमदनी बढ़ती गइ ये उसनीही अधिक खैरात करते गये—सैंकड़ोंही उदारताके काम इन्होंने किये जिनमसे निम्नस्थ मुख्य हैं—

१५ हजार रुपयेके खर्चसे एक मंदिर बनवाया—

आग लगनेसे नुकसान ठठायेहुये पूनावासियोंको ३५ हजार रुपये दिये—

पूनामें पानीके नल जारी करनेके लिये १० लाख ७० हजार रुपये दिये

१ लाख रुपयेके खर्चसे १ धर्मशाळा, २ लाख रु० के व्ययसे एक चिकि

त्सालय तथा ४० हजार रु० के खर्चसे एक दूसरा मंदिर बनवाया—

भायकी परनीने भी प्रायः ११ लाख रुपयेके खर्चसे बम्बईमें एक पुल बनवाया था

उपर्युक्त भीदार्यके कामाके पुरुष्कार मे ब्रिटिश गवर्नमेंटने आपको नायट तथा वैरोनेटकी असाधारण अंग्रेजी उपाधियां दीं—यह उपाधियें आजतक किसी दूस-

रे हिंदास्तानांको नहीं मिली है-सं० ई० १८५० म परमधामको सिपार-म्हने
आपकी पापागमूर्ति स्थापन कीगई है-

जयचंद्र राठौर-(अन्तिम महाराजा कन्नौज) विजयपाल राठौरके-

वि० सं० १२२५ म कन्नौजकी गद्दीपर बैठे पृथ्वीराज दिल्लीनरेशके इन
इपां देप था, एष इन्होंने राजसूय यज्ञ किया जिसके अंतर्हीम अपनी कन्या सता
गताका स्वयवरभी रच दिया-इस यज्ञम सब राजे भाये थे पर समझीं यह
चिन्ताई और पृथ्वीराज दिल्लीनरेश नहीं भाये थे क्योंकि उनका जयचंद्रक पर
दासकृत करना स्वीकार न था, निम्न जयचंद्रने अन्परराजाभाकी हाथमें प्रति
ठा घटानके लिये उन दानोंकी सुवणमूर्ति बनवाकर एकको बतन धोनेकी जा
पर और दूसरीको टप्टीपर खड़ा करदिया था, संपोगता जब सुभाम हुआ
ई गईं ता उसने सब राजाभाका देख भार जयमाल पृथ्वीराजकी मूर्ति
म जो टप्टीपर खड़ी थी डालदी, पृथ्वीराज और संपोगतामें भान्तरिक
मम था एवं पृथ्वीराज पहिलेहीसे दिल्लीम छिपा हुआ मौजूद था
अधसर पाकर अपनी प्राणवल्गभाषा घोड़ेपर लाद दिल्लीकी तरफ बल पड़ा, स
प्रांज और दिल्लीके बीच गस्तेम ७ दिनसब दोनों राजाभाकी फौजमें घे
युद्ध हुआ पर पृथ्वीराज संपोगतासहित दिल्ली जीता पहुँच गया यह अमति
महाराज जयचंद्र महन न करसक्य पर अवेले कुछ परभी न सरते थे निदान उन्हां
शाहापुर्हीन मुहम्मद गोरियां काबुलस पृथ्वीराजपर सदाई करनेके लिये युद्ध
भेजा शाहापुर्हीनने कट दुपे सदाई करनेके बात पृथ्वीराजका रणशापी किया
जिसस हिंदुओंका बल बहुत घट गया यह देख सं० ई० ११०५ (सं० वि० १३५१)
में शाहापुर्हीनन कन्नौजपरभी सदाई करदी जिसमें महाराज जयचंद्र चंद्रयार
र घाते

उपर्वतके समीप तपोवनमें जावालि ऋषिको अशोकवृक्ष के तले बैठके आस
 नपर बैठा देखा, वे उन दिना अत्यंत बूढ़े थे पर उनका तेज सूर्यकासा था वे तप
 स्वी थे और एवं क्षमाशील शान्ति अक्रोध और शतपथदर्शिताके अवतार
 मालूम होते थे उनके देखनेसे चित्तमें भय और विस्मय दोनों पैदा होते थे त्रिकाल-
 दर्शी थे और ज्ञानदृष्टिद्वारा संसार उनके करतल पदायकी भांति था-अनेक शिष्य
 उनसे विद्या पढ़ते थे और बहुतसे मुनीश्वर लोग तपोवनमें रहकर तप करते थे
 और फुर्सतके वक्त वैद्यशास्त्रके सूक्ष्म विषयोंपर उनसे धार्तालाप करते थे, वैद्य
 कग्रंथ हारीतसंहिताके कर्ता हारीत मुनि उनके पुत्र थे ऋषि जावालिके प्रतापसे
 तपोवनके वृक्ष, फल फूल और पत्तोंसे टुके हुये थे इलाइची और एषगके
 वृक्षोंपर औराके छुड़के छुड़ रहते थे सुगंधि चारों ओर छाई रहती थी

अनेक लताओं और वृक्षाकी छालियोंके मिलनेसे म्यान २ पर सुंदर रमणीय
 गृह बनगये थे जिनमें धूप नहीं जाती थी-बड़े २ ऋषि लोग वेद मंत्र पठ २ कर
 होम करते थे वायु होमकी सुगंधिसे ध्यात होकर धीरे २ बहती थी-त्रोड ऋषि-
 कुमार उषस्वरसे वेद और कोई शान्तभावसे धर्मशास्त्र पढ़ते थे-वृक्षोंकी शाखाओंमें
 मुनीश्वरोंके मृगचर्म, कमण्डलु और माला लटकरही थीं और तले बैठनेको घेदी
 बनी थीं, तपोवनके गऊ, मृग, सिंह और शृगाल इत्यादि अनेक पशु, पक्षी सह-
 ज वैरको भूलकर सङ्ग २ निभय करते थे हिंसा, द्वेष, घैर और मात्सर्प्यका यहाँ
 छेदामात्रभी न था कामधेनु गाये पर भातेही बतनोंको दूधसे भर देती थीं यह
 सब जावालिके ऋषिके तपका प्रभाव था, न्यायशास्त्र तथा वैद्यकशास्त्रके ये पूर्ण
 ज्ञाता थे और "नैप्रसार" नामक चिकित्साग्रंथ इनका रचा हुआ है, ये अवधनरेदा
 दशरथजीके पंडित थे रामवनवासकी सम्मति इन्होंनेभी इस कारण दी थी
 कि, रामजी राक्षसाको मार ऋषि मुनियाका सखट दूर करेंगे

जालीनूस (Galen) ये यूनानी हकीम स० इ० के दूसरे शतकमें
 पैदा हुआ वैद्यकशास्त्र पढ़नेके लिये इस्ते देश विदेश बहुत भ्रमण किया
 मिश्र और यूनानक सब बड़े २ वैद्यक स्कूला और हस्पतालोंमें जाकर रहा
 वैद्यकशास्त्रकी भाषा ४०० पुस्तकें इस्ते लिखी थीं अंतमें ये रोम में जाबसा
 अनेक असाध्य रोगियोंको खंगा करके प्रसिद्धि पाई इसके रसे बहुतसे
 ग्रय रोमके एक मठिरेमें जलगये अपने समयके यूनानी हकीमामें अद्वितीय गिना
 जाता था स० इ० १९३ में ९० वर्षकी उमरमें मरा

जीवाजीराव संधिया, के० सी० बी०, जी० सी० यस्० आई०
 (ग्वालियरनरेदा) महाराज जनकोजीराव संधियाकी अपुत्रविधवासे इनको ८
 वर्षकी उमरमें गोद लिया नाबालिगीकी हालतमें अग्रेज रजिस्ट्रार रियासतका

काम करता रहा स० इ० १८५४ में रियासतका पूरा भविष्यत आपको ही दिया गया आपके समयमें रियासतम अनेक सुधार हुये और मुल्कम धन धन फैलाया गया, आपका मंत्री सर दिनकरराव, के० सी० यस० आई० एक सुपुत्र प्राप्ति था सन् ५७ के गदरमें महाराजने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी मदद की जिसे पुरस्कारमें पुत्र गोद लेने तथा फौज और शोध बढानेका अधिकार तथा कुछ मुल्कभी और आपको दिया गया स० इ० १८८५ में ग्वालियरका विलास वाळतराव सेंधियाके समयम अंग्रेजाने फतह करलिया था महाराजको प्राप्त बढलेमें चापिस मिला आपने बड़ा खजाना जमा किया था जिसका भव किसीके नहीं मालूम था आपके बाद उसम ६ करोड़ २० लाख रुपया नकद पाया गया और जवाहिरातका ढेर इतना बड़ा निकला कि, पृथ्वीपर दूसरी जगह नहीं हम ५२ बपकी उमरमें स० इ० १८८६ के साल एक पुत्र माधोराव सेंधिया (वर्तमान नरेश) को छोड़ आप स्वयं गामी हुये आपका स्वमाय सुंदर और सरल था, चित्त उग्र और निष्कपट था, गुर्जाजनोका सखार करत थे और प्रजापालनम दत्तचित्त राव थे ग्वालियरराज्यका विस्तार ३० हजार वर्ग मील है १० लाख पाउंड वार्षिक आय है अनेक स्कूल और कालिज रियासतम जारी है

जुगलाकिशोरभट्टराजा (भापाय वि) ये दिल्लीनरेश मुहम्मदशाह मुगलम मुसाहिब थे वि० स० १८०३ म 'भट्टकारनिधि' नामक ग्रंथ इन्होंने बनाया जिसमें १६ भट्टकार उदाहरणसहित वर्णित हैं इसी ग्रंथमें निम्नस्थ काव्य इन्होंने अपने विषयमें लिखे हैं-

दीदा-प्राप्तमह हों जातिधो, निपट भधीन निदान ।
 राजापट मोर्ची दियो, मुहम्मद शाह सुजान ॥
 चार हमारी सभाम, वीथिद कथिमति थार ।
 सदा रहत भानैद बडे, रसधो धरत विचार ॥
 मिभरुद्रमणि विमर, भा सुखलाल रसाल ।
 शतजीव सुगुमान है, शोभित गुणनि विशाल ॥

ये कैयलवे रहनेवाले थे

जेनर- (डाक्टर जेनर-Doctor Jenner) ये इंग्लैंडके यिस्ती गाँवके रहने वाले थे प्रथम जब ये वैद्यकशास्त्र पढते थे तब स० इ० १७६६ म इनको एक ग्वालियरसे यह भेष मिली कि, ग्वालियाथ संघय बहुत कम निकलती है डाक्टर साहिबने बड़े परिश्रमसे दग्गियापत किया कि, मनुष्यकी तरह गायाँमें कभा २ यह रोग यनोंके ऊपर लोटेरे जल भर कपोलके सहज देख पटता है जिसका नाम यम जातला कहते हैं इन कपोलामगा रूप ग्वालियाँके हावमें लगघर इनको सदैवके लिये संभालसे निभय घरदता है जब यह निभय हो गया तो इत बपकी

परीक्षा आदमियोंपर की गई और उसमें सफलता प्राप्त हुई, पर गडकोंके धनासे यह चेप थोड़ाही मिलता था और इसीकारण चेपका अभाव रहता था निदान सोचते २ डाक्टर साहिबने निश्चय किया कि, टीका लगानेसे जो बालकभी बाहोंमें फफोले पड़ते हैं उनमेंसे जो ७ व या ८ वें दिन चेप निकलता है वहही टीका लगानेका काम दे सकता है अब दुनियाभर इसी चेपका प्रयोग टीका लगानेमें करती है ब्रिटिश पार्लियामेंटने स० इ० १८०२ की सालमें डाक्टर जेनरको चेचकके टीकेकी इजाजतके पुरस्कारमें एक लाख रुपयादिया और स० इ० १८०७ में २ लाख और दिये जबतक डाक्टर साहिबको इस काममें सफलता प्राप्त नहीं हुई थी लोग उनपर हँसते थे और अनेक प्रकारके फट उनको देते थे परंतु जब मालूम हुआ कि, उन्होंने एक बड़ीभारी इजाजत की है तब तो सब के घाँत खुल गये

जेम्स वाट— (James watt) इन्होंने न्युकोमन साहिबकी बनाई धुपकी कलको पूर्णरितसे बनाकर सुधारा ये स्काटलैंडके रहनेवाले थे बुद्धि बलपनहीसे बहुत थी ६ वर्षकी उम्रमें युक्तिहकी १ साम्य इन्होंने सिद्ध की थी पदार्थ तथा विज्ञानशास्त्रके तजरुबे करते रहते थे जिस खिलौनेको खरीदते उसको तोड़कर देखते थे कि, कैसे बना है १८ वर्षकी उम्रमें लन्डन नगरको गये और १ वर्ष वहाँ रहकर अनेक प्रकारके औजार व यंत्रोंका बनाना सीखा फिर स्काटलैंडको वापिस आये और एक कारखाना जारी किया इन्होंने बहुतकालतक धुपकी प्रकृति और उससे पहियोंमें हरकत पैदा करनेकी तरकीबपर गौर करके लोकोमोटिव एंजिन (धुपकी कल) बनाई दो और कलेंभी इन्होंने बनाई थीं एक तो खत छापनेकी दूसरी भाप सुखानेकी जो काम हजारों लाखों थोड़ों पैलोंसे लेना कठिन था वह अब इनकी बनाई धुपकी कलसे रेल जहाज और पुतली घरोंमें लिया जाता है स० इ० १८१० में ८३ वर्षकी उम्रमें मरे, असम्भय मनुष्य सब काम अपने हाथसे करते हैं अद्भुत सम्भलोग दूसरे लोग और जानवरोंसे काम लेते हैं, सम्भलोग जैसे आज कलके यूरोप और अमेरिकादेशवासी बड़े काम जल, वायु और अग्निसे चलनेवाली कलोंके ठाग करते हैं और सम्भ्यताके सर्वोच्च शिखरपर पहुँचकर मनुष्य सब घटिन और असम्भय काम पलक मारतेमें योग अथवा सपोषणसे करलेते हैं जैसे इस देशके प्राचीन रूपि एंजिन

जैमिनि ऋषि— (पूर्वमीमांसाशास्त्रके रचयिता) ये महापिंप्यासके शिष्य थे— हाथीने इनको मार डाला—

जैयट उपाध्या— ये काशीवासी प्रसिद्ध वैद्य हुये हैं, मम्मट, कैयट तथा भौषट तीनों इनके पुत्र महाविद्वान् हुये हैं—सुभ्रुतसहिताका टीका सबसे

पहिले इन्हींने किया-विक्रमी संवत्की १० वीं शताब्दी इनका समय है-
अपभ्रंश जेजट भी कहीं २ लिखा पाया जाता है-

जैसाल-(रावल जैसाल जैसलमेरु राज्यके संस्थापक) प्रायः स० ११५६ म इन्होंने जैसलमेरु बसाकर वहाँ एक किला बनवाया-जनस १७ फीट बाढ़ घरायसिंहने होकर फरीदपोटका राज्य स्थापन किया, घरायसिंह तीसरी पीढीमें फूलसिंह एक वीर पुरुष हुये जिनकी सतति भवतक मीर, तम भादौर और पटियालामें राज्य करती है, फूलसिंहके द्वितीय पुत्र रामसिंहने पटियाला राज्यसंशकी मूलरोपण की-रामसिंहके पुत्र आल्हासिंहने पटियाल शहर बसाया और अहमदशाह दुधनीसे राजाका खिताब स० ई० १७६२ म प्राप्त

जोधबाई- ये जयपुर नरेशकी बेटी बादशाह अकबरकी स्पर्धा कब्रपनमें इसने स्वप्न देखा था कि, चाँद इसकी घोखसे निकलकर अकबरकी तरफ ऊँचा हुआ और ये उसके पीछे उड़ी-जब चाँद बहुत ऊँचा होकर तब ये गिरपड़ी-यहिसोंने इस स्वप्नका फल यह बताया कि, ये किसी बहन जातीय बादशाहकी स्पर्धा जायगी और अपने पुत्रके गद्दीपर बैठनेसे पहिले मर जायगी पट्टियोंका कयन ठीक हुआ-स० ई० १५६९ में इसका विवाह बादशाह अकबरसे हुआ और भागरानिवासी फरीर शैख सलीम चिश्तीकी दुआसे इसके "सलीम" नामक शहजादा पैदा हुआ जो बादकी जहांगीर नामसे तब पर बैठा जोधबाईका १० रामानन्द महलमसाकर पढातये पश्चात् कुछ दिनोंतक धीरयाल पढाते रहें-शहजादे सलीमके पैदा होनेपर पढना लिखना छोड़ पुस्तकालन पालनमें लगी और सुदही कृषि पिढाया-जोधबाई माया कविता भी करती थी और इनके महलमें खातादिव सभा स्त्रीयवीश्वर्यकी हुआ करती थी-अत्यंत सुदरी और गुणवती होनेके कारण अकबरकी अन्ययोगमा की अवेस अधिव प्यारि थी अकबरसे ११ वर्ष ६ महीने छोटी थी और राजपूतों के अमलातम निजपतिफो बहुधा सम्मति दिया करती थी ये यद्दी उदार, दयाम और शीलस्वभावकी अश्री थी घड़े पर चढ़ना भेख छलाङ्गना लूब जानती थी और बड़ी निलास थी मरते दमक्य हिंदुओंके स्थांकारको मानती रही इसके पुत्रा मरनका मंदिर भयतक भागलेके निलमें है-स० ३० १६०० म वर्षकी होकर मरी-शहजादा सलीम इसका जनाजा पकटवर रोवा जिसे दण बादशाह अकबर भी रोनेख न रुकसका इसके मरनपर बादशाह अकबरने सब राजपूतोंको भद्र यरातकी भाहा की और १० दिन तब सब क्यदिलियाँ बंद रहीं-अकबरके बेटे जहांगीरकी भी रायमाइरे जोधपुर मरेशकी जोधबाई नामक रामकुंवारि स्पर्धा थी, पर वह विशेष प्रसिद्ध नहीं

जोधसिंह राठौर-(रायजोधा जोधपुर नरेश) राय म्गुणमलके २४ पुत्रोंमें सबसे बड़े थे, इन्होंने जोधपुर शहर बसाया और स० ई० १४९

में उसको अपनी राजधानी बनाया—अपने समयके अत्यंत पराक्रमी और साहसी राजा हुये हैं—इनके छोटे पुत्र बिकारसिंहने बीकानेर बसाया—

जोराष्टर—(Zoraster) इन्हींका दूसरा नाम जर्दग्थ है इन्होंने अग्निपूज कोको मत चलाया—इनके घाप पोशस्य बलबलके रहनेवाले थे स० ई० से ३ हजार वर्ष पहिले इनका समय है, पर फिरङ्गी विद्वान् स० ई० से ५२५ वर्ष पूर्व इनका होना सिद्ध करते हैं, पठन पाठनकी तरफ बलपनहीसे इनकी अधिक रुचि थी प्रतीत होताहै कि, इन्होंने भारतवर्षमें आकर विद्या पढी थी क्योंकि इनके मतके नियम वैदिक मतके नियमोंसे बहुत मिलते हैं और इनकी निर्माण की हुई पुस्तक“जैदावस्ता”में वेदोंका हवाला भी मिलता है और उसकी भाषा भी कुछ २ संस्कृतसे मिलती है, जर्दग्थ अत्यंत विद्वान् होकर ज्योतिषशास्त्रमनिपुण थे बादशाह कैखुसरो ईराननेइस इनके मतके विरुद्ध था एवं उसने इनके मरवाढालनेके अनेक उपाय किये पर एव न चला कैखुसरोके बाद गुस्ताशपने ईरानकी गद्दीपर बैठकर इनका मत ग्रहण किया और अस्फदियार पहिलघान द्वारा अपने राज्यभरमें जो काबुलसे यूनानतक था भीर जिसमें अरब तथा तुर्किस्तान भी शामिल थे, इनके मतका प्रचार कराया जब सिकंदर भाजमने ईरानके साम्यको नष्ट किया तब अग्निपूजक लोग स्वदेश छोड़कर अन्यदेशोंमें जा बसे अब इस मतके अनुगामी धर्ममें थोड़ेसे फारसी लोग रहगये हैं जो बड़े घनावध है अग्निपूजकोकी “वसातीर” नामक पुस्तकमें लिखा है कि, एक यूनानी ब्रह्मज्ञानीको जर्दग्थने अपनी जन्मकुण्डलीके ग्रह दिखलाकर विश्वास करा दिया था कि, मैं मफार नहीं बनूँ शतपथ वद्वानेवाला महात्मा पुरुष हूँ हिंदोस्थानसे भी एव जैनी विद्वान् और दूसरे महर्षि वेदव्यास जर्दग्थसे शास्त्रार्थ करन इरानको गये थे शास्त्रार्थसे पहिलेही एक शिष्यने“जैदावस्ता” खोल वे सब प्रश्नोत्तर जो ऋषिपलाग करनेको थे दिखलाये जिससे दोना जर्दग्थकी प्रशंसा कर लौट गये जर्दग्थकी पुस्तकमें यहमी लेख था कि, जब ईरानी अधर्मी होजायेंगे तब यूनानका एक बादशाह उनको परास्त करेगा जब सिकंदरने यूनानियोंको जीता तब किसी भादमीने उक्त लेख उसको दिखलाया जिससे वह जर्दग्थके मतपर विश्वास करनेलगा ७० वर्षकी उम्रमें तुर्किस्तानके बादशाह अजासपके एक सख्तारने जर्दग्थको घायल करके मारहाला

जयदेव मिश्र (गीतगोविंदके रचयिता) थे किन्तु बिल्वगौम जिला धारभूमिमें जन्मे पिताका नाम भोजराज और माताका नाम रमादेवी था वे दोनोंइम को छोटाही छोड़कर मर गये थे जयदेव ऐसे तीव्र बुद्धि थे कि, गुरुसे एकसमय में ही पक्षभरका पाठ पढलेते थे जिसके कारण इनका नाम पक्षधर मिश्र पढगया था

विद्या पढ़नेके बाद राजा लक्ष्मणसेन बगालाधिपतिके दरबारमें पदको प्राप्त हुये यह बात महाराज लक्ष्मणसेनके सभाम्यानके द्वारा ज्ञात हुये पत्थरपर अंकित निम्नस्य श्लोक से विदित होती है-

श्लो०-गोवर्धनश्च शरणो जयदेश उमापति ।

कविराजश्च खनानि समितौ लक्ष्मणस्य च ॥

स० ई० १३०६ में जब राजा लक्ष्मणसेन सुलतान मुहम्मद गोरीके सन्निहित मलिक काफूरसे परास्त होकर उड़ीसाको भागे सो जयदेशजी भी उनके साथ उड़ीसा चले गये और जगन्नाथ स्वामीकी सेवामें बहुत दिन रहे-वहीं इनका विवाह एक ब्राह्मणकी पद्मावती नामक कन्यासे हुआ और यहीं रहकर गीत गोविन्द बनाया-उड़ीसानरेश इनकी बड़ी प्रतिष्ठा करता था-पहले दिनाबाद जो इनकी पतिव्रता स्त्रीया देहान्त होगया सो यह दुःखी हो अपनी जन्मभूमि किंबु बिल्वको लौट आये और एक पाठशाळा स्थापन करके पढ़ाने लगे-भजन बहुत किया करतेथे और परम धर्णव थे-विद्यार्थी इनका नाम सुनकर दूर से आते प्रसिद्ध पंडित रघुनाथ शिरोमणि इत्यादि इनके शिष्य थे-किंबुबिल्व (बेंदुली) गाँवमें अबतक इनकी समाधि है, जिसपर मकरकी सजावटके दिन बड़ा मेला होता है हजार धर्णव इकट्ठे हाकर सकीर्तन करते हैं-भक्तमालका लखे विदित हाताहै कि, ये परमयोगी और तपस्वी, क्षमा, दया, शील और उदारताके अवतार थे अपने भयवारियोंका भी उपकार करतेथे गीतगावियके समस्त विस्ती वृत्तरे सस्कृतप्रंयकी रचना मधुर कोमल रसीली और मनोहर नहीं है-अत्यंत पदमें प्रेमरस भी भक्ति इत्यवती है-गीतगावियका अनुवाद भक्तक परंगी तथा हिंदुस्तानी भाषाभामें होगया है

जयपाल-(पजाबका प्रार्थीन राजा) प ब्राह्मणवंशोत्पन्न राजा हितपालका पुत्र था-सद्यः पजाब में इसका राज्य था-लाहौर राजधानी थी स० ई० ५३ में इसने गजनीपर चढ़ाई की पर द्वारा और गजनी प सुलतान मुयुक्तगीया ५० हाथी देकर और छह लाख रुपया दनका वायदा करके हिन्दुस्तानका लौट आया-भक्तियाकी राय थी कि, वायदा पूरा किया जाय पर ब्राह्मण पंडिताकी राय थी कि स्वेच्छागत रुपया दनसे धर्म नष्ट होगा-ब्राह्मणों की मति मानकर राजाने रुपया नहीं भेजा एवं मुयुक्तगीन हिन्दुस्तानपर चढ़ाई का और पेशावरपर आपि सार जमा लिया स० ई० १७३० मुयुक्तगी मरगया और उसका बेटे मद्दुद्देने हिंदोस्ता नपर पड हमल किया जिनमस १३ तो कयत पजाब ही पर गिये दिल्ली भक्तम यादुजिगर और कर्पोज ये राजे महापज जयपालकी मददके लिए आपसे पर भी मददकी खताय खामने कुछ न करसके निदान जयपाल फिर द्वारा और उक्त समय की खतानुसार ३ दफ हाग्नेर कारण भागम सपर मरगया और राज

पाट निजपुत्र अनङ्गपालको सौंपदिया-अनङ्गपालके समयमें भी महमूदने कई हमले किये पर सफलता नहीं हुई क्योंकि अनङ्गपालके राजपूत सिपाही जीतोड़-कर लड़े और राजपूतस्त्रियोंने अपने पति पुत्रादिकोंकी जो फौजम सिपाही ये, भा-भूयण और घख घँच २ कर तथा अपने शिरके घालोंकी रस्सियें बना २ कर सहायता की स० ई० १०१२ में महाराज अनङ्गपालके बाद उनका पुत्र जयपाल द्वितीया लाहौरकी गद्दी पर बैठा स० ई० १०२२ में महमूदने जयपाल द्वितीयाको परास्त करके पंजाबका राज्य छीन लिया

जयसिंह कछवाहे-(अम्बरनरेश) ये महाराज मानसिंहके वृत्तक पुत्र स० ई० १६१५ में गद्दीपर बैठे दिल्लीके बादशाह शाहजहाँके समयमें इन्होंने अनेक साहसपूर्ण काम किये स० ई० १६२८ में काबुलम जाकर उपद्रव शान्त किये औरंगजेबके समयमें मिर्जा राजाके नामसे यही प्रसिद्ध थे स० ई० १६६४ में औरंगजेबने इनको दक्षिण की सूबेदारी दी स० ई० १६६६ में इन्होंने मरहटा घोर शिवाजीको कुसलाकर औरंगजेबके दरबारमें हाजिर किया और इस तरहसे बड़ा भारी युद्ध जो होनेको था मेटा स० ई० १६६७ में दक्षिणसे छोटती समय रास्तेमें बुरहानपुरके मुकाम मुरघुषदा हुये गुणीजनोंका सरकार करते थे ज्योतिष तथा गणितशास्त्रके पूर्ण ज्ञाता थे, संस्कृत, हिंदी, तुर्की, अर्बी, फारसी खूब पढ़े थे, इमारत बनवानेके शौकीन थे कवि विहारिलाल सतसईये कर्ता तथा प० जगन्नाथ सम्राट् रेखागणितके रचयिता इन्हींकी सभामें ये सतसईये ७०० दोहे हैं, प्रत्येक दोहेके बच्चे महाराजने विहारिलालकी १।१ भगर्नी इनाम दी थी रेखागणित रचनेके पुरस्कारमें अगन्नाथको कई गाथ दिये थे दिल्ली, मथुरा, जयपुर, बनारस व राजैनमें आकाशलोचन बनवाये थे जो अबतक विद्यमान हैं आगरेमें जयसिंहपुरा नामक मुहल्ला इन्हींके नामसे प्रसिद्ध है इस स्थान पर महाराजने बहुत से मकान बनवाये थे, जिनका भव पता नहीं है

जयसिंह स्वार्ड-(जयपुरनरेश) निजपिता विष्णुसिंहके बाद स० ई० १६९९में अपने पूर्वजोंकी गद्दीपर बैठे उस वक्त इनकी उम्र कम थी जब औरंगजेबके सामने पेश होनेको जाने लगे तो इन्होंने अपनी मातासे पूछा कि, यदि बादशाह कुछ हमसे पूछें तो हम क्या कहें? माताने उत्तर दिया कि, मौकेके मुवाफिक बात कहना मिदान जब ये औरंगजेबके रोबरू गये तो उसने इनसे दोनों हाथ पकड़ कर कहा कि, तेरे भापने मेरे समयम अनेक उपद्रव किये अब तू क्या कहससि? इन्होंने उत्तर दिया कि, शादीके वक्त मदकाण्य हाथ पकड़ाजाताहै जिसकी राजसे स्त्री उसको जिदगीमर निबाहती है सो भापने तो मेरे दोनों हाथ पकड़े हैं इस उत्तरसे खुदा होकर औरंगजेबने इनको सवाइ तथा राजाका खिताब दिया और पूर्वजोंका राज्य इनको सौंप दिया और २ हजार-१। मन सब इनका मुकर्रर किया और औरंगजेबके बाद बहादुरशाहके समयमें इनके भाई

विजयसिंहने राज्यका दावा किया. बहादुरशाह ने किसी भाँसेको भी तोड़ा करनाचाहा एवं इनका राज्य जप्त करके एक सुखलमान सर्दारके सुपुर्द करिष्यो थोड़ेही दिनबाद बहादुरशाहको ठपद्रव शान्ति करनेके लिये दक्षिण जानास्वाँ वान अवसर पाकर जयसिंहने अपना राज्य छीन लिया पश्चात् फर्रुखसिंहने दिल्लीके तख्त पर बैठकर इनको महाराजाधिराजका खिताब दिया और मुम्मदशाहने तख्त पर बैठकर इनको मालवाका सूबेदार मुकर्र किया. स ई० १७२० मे जयसिंह परगना जिला मयुरामें इन्हीने बसाया स० ई० १७२८ में जय शहर बनवाकर बसाया और अम्बरकी जगह उसको अपनी राजधानी बना स० ई० १७४३ म सिधारे और इनके पुत्र ईश्वरीसिंह गद्दी पर बैठे कुच्छदिये कता गिधर कविरोय इन्हीके दरबार म थे "जयसिंहके १०९ गुण" इनकी एक पुस्तक भाषाम अच्छी है और "जयसिंहकल्पद्रुम" नामक ग्रन्थ जिसमें सल मती वसोंकी विधि विधान, उद्यापन आदिहैं इन्हीके आश्रित पंडिताका बनाया हुआ

जयादित्य पंडित—इ होने सथा पंडित घामननी मिलकर पाणिनायक पर सूत्रक्रमसे "काशिका" नामक अत्यंत सरल वृत्ति बनाई है यह वृत्ति महाभाष्य पीछे की बनी मतीत हार्तीहै क्योंकि उसके शुरुमें "वृत्ता भाष्ये" इत्यादि म्यने भाष्यका नाम लिखाहै

जरदस्त—देसो जोराष्टर.

जरासन्धु—(मगधदेशका राजा). इसकी छद्मकी मयुराथ राजा वंसको ग्याई थी कंसके मारेजाने पर जरासन्धुने अपनी छद्मकी बहनेसे वंसया बदला म नेके लिये १८ दूके मयुरामें भीरुण पर चढाई की पर भतम द्वारा और भीरुणके इ शारेसे भीमसेनने उसको खीरटाया तहसील जदेसर जिला पन्नाम जगम-धुफ बनयाया जिला अबतय इटाफटा पड़ा है जय जरासन्धुन मयुरा पर चढाई की थी सब अपनी कौजके टहरने के लिये यह जिला बनयाया था किराही विदा मोके मतानुसार ईसासे १२८० वष पूष जरासन्धु गद्दी पर बैठाया

जस्यतराठ हुल्कर (इन्दौरदेश) मुजोजीगउ हुल्करसे सुप्रथ निज पिता के बाद बहुतसे मगड़े तै गरव गद्दीपर बैठे इ शाने स० ई० १८०० म मंधिया तपा केबायो पराम्त किया और अपना अधिपार बहुत कठ बढाया

पश्चात् ब्रिटिश गवर्नमेंटने इनकी तिड़ी बहुत दिनातय लड़ाई जारी रही जिसमें कभी इनको और कभी ब्रिटिश गवर्नमेंटको हार हुई—भतम स० ई० १८०५ में सन्धि होगई—स० ई० १८११ मे मद्दरराठ हुल्कर नामय पाठयपुत्र छोड़कर मरे—मद्दरराठके समयमें दियाखत इन्दौरने ब्रिटिश गवर्नमेंटको अधिपत्य स्वीकार किया

जस्वतसिंह—राठौर हफ्त हजारी (जोधपुर नरेश भाषाभूषणके कर्ता) निज

पिता गजसिंहके रणशायी होनेपर माडवाड़ राज्यके धारिस हुये—दिल्लीनरेश शाहजहाने खुद अपने हाथसे इनको राजतिलक किया—उस वक्त इनकी उम्र १२ वर्ष की थी ये ४२ वर्ष बराबर माछवा, गुजरात, दक्षिण, दिल्ली, पंजाब और काबुलकी सूबेदारी पर रहे और अनेक मुहिम्माँपर गये मनसब इनका दस हजार था जिसके घेतनमें १७ लाख रुपये वार्षिक आयका मुख्य माडवाड़, गुजरात, हांसी, हिसार इत्यादिमें मिला था और सघापाँच लाख रुपया साछाना बादशाही खजानेसे मिला करता था काबुल तथा ईरानके फल फूलोंके बीज लाकर इन्होंने जोधपुरके घागोंमें बोये थे, जिनमेंसे अनारका बीज अथवा ककामहूँ-ये बड़े स्वामीमक्त और उदार चित्त थे भाषाकषिताभी अच्छी करते थे—संस्कृत खूब जानते थे “भाषाभूषण” तथा भागवतका तिलक इनके रचे ग्रंथ हैं—बनियरसाहब निज पात्राके ग्रंथमें लिखते हैं कि “शाहजहानके धीमार होनेपर जो झगड़ा तख्तके लिये उसके बेटोंमें हुआ उसमें औरंगजेब और मुरादकी मिली हुई फौजोंके मुकाबिलेके लिये महाराज जस्वतसिंह भेजे गयेथे तबउनके मैदानमें सामना हुआ, फौजके मुखल्मान अफसर औरंगजेबसे मिलगये, महाराज अकेलेही लड़तेरहे जब थोड़ेही साथी रहे तो धैर्य प्राणदेना समझ अपने राज्यकी तरफ कूच किया महाराजकी रानीने जो राना उदयपुरकी बेटापी किलेके फाटक बंद करा दिये और कहा कि, घड़ जो रणम पीठ दिखावे महाराना उदयपुरसे वीर क्षत्रीका जवाई बहलाने योग्य नहीं—सुरंतही रानीने चित्त प्रचल करनेका भी हुक्म दिया क्योंकि उसने विचार कि, मेरा पति कभी रणमें पीठ दिखानेवाला नहीं है घड़ तो अवश्य जुझ गया होगा—थोड़ेही देर बाद संदेह मिटगया—महाराज महलपर पहुंचगये रानी कई दिनतक कोपमनमें पड़ी रही और घेबल निज माताके मनानस जो उदयपुरसे इसी कामके लिये आईथी, मानी औरंगजेबने सख्त पर बैठकर महाराजको काबुलकी सूबेदारी पर जहां उन दिनों उपद्रव फैलरहाथा भेज दिया—निरंतर मंगी तलवार हाथमें रखकर महाराजने काबुलकी कहर प्रजाको खूबही ठीका किया औरंगजेबने महाराजके जीतेजी हिंदुओंके मंदिर नहीं तोड़े क्योंकि एक दफे महाराजने कह दिया था कि, मंदिरोंके बंदे मसजिदें टाई जायेंगी—सं०, वि० १७१५ में ५२ वर्षकी उम्रमें जमरोद (पंजाबमें) मरे—सिंघाय २ गर्भवती रानियोंके और सबने सत विया—सुविख्यात अजीतसिंह भाषादीके पुत्र थे

जस्वतसिंह—(महाराजाधिराज सर जस्वतसिंह मदादुर, जीसी यस भाई जोधपुरनरेश) निजपिता महाराज सख्तसिंहके बाद सं० ई० १५७३ म ३६ वर्षकी उम्रमें गद्दीपर बैठे इनके समयमें राज्य प्रबंध प्रशंसनीय रहा, प्रजाको सुख चैन मिला, रियासतमें गौव २ स्कूल जारी हुयेजिसके कारण प्रजाका अधिक भाग

हिंदी लिखना पढ़ना सीख गया—जखतकालिज जोधपुर आपहीने जारी था—प्रजापे हिसार्य अनेक और कामोंमें भी लाखों रुपया सालाना खर्च किया जाता था कवि मुगरीने जखतयशोभूषण ग्रंथ रचकर १ लाख मुद्राके ४ वर्ष इनाम पाये थे ब्रिटिसगवर्नमेंट आपके राम्यप्रबंधसे सबैव प्रसन्न रही—जखत वैकुण्ठवास होने पर महाराज कुमार सर्दारसिंहजी (वर्तमान जोधपुरनेज) गद्दी पर बैठे—रियासतका विस्तार ३७ हजार घगमील और आबादी प्राय १००००० अहाईस लाख मनुष्योंकी है—

जहाँगीर (मुगल बादशाह दिल्ली) बादशाह अकबरका बेटा स० ई० १५९१

में पैदा हुआ—बहुते हैं कि, नामी फकीर शैखसलीम खिस्तीजी दुमा स फतवा सीकरीमें इफवा जन्म हुआ—निमपीताके मरने पर स० ई० १६०५में गद्दी पर बैठा बड़ा शराबीया लेकिन दूसरों को शराबपीनेसे बहुत रोकता था इसी लिये कभी इसका कहना ठीक २ नहीं मानता था—इसने रेशमकी टोरीमें बाँधकर सोनके घंटियों अपने महिलमें छटका रक्की थी—दोरीका दूसरा सिर महिलसे बजा छटका था—इन घंटियोंके बजावेनेसे हरकोई परियादी बाइशाहके पास मुर्त गुलापा जाता था—सम्प पर बैठतेही इसने शेरअफगानकी बंगालक सुबेदारके मरवाडाला और उसकी बीबी नूरमहलको अपनी बेगम बनालिया और नूरजहाँ नाम रक्खा जहाँगीर नूरजहाँका बशीभूषण—सर्वांगी कागमोंकोभी नूरजहाँकी सुना करती और हुकम दिया करती थी नूरजहाँका चेहरा जहाँगीरके साथ लिये पर भी छपता था और उसके बापको यजीर का भौहदा दिया गया था अंतम महावतलों पजाबके सुबेदारने जहाँगीरको कैद कर लिया, पर नूरजहाँ बड़ी चालापी से उसको छुड़ा लाइ थोड़ेही दिन बाद स० ई० १६३३ में लाहौरको जाते चल रास्तेमें जहाँगीर मरगया और किलेके बाहर नूरजहाँके बागमें दफनाया गया ये विचारखाल न था पण खूब सूत लौटैगीभी जिन्दा खाल इसने रिचवाडाली थी

जंगयहादुर—(सर जंगयहादुर, जी० सी० बी० जी० सी० यस भार्०

राज्य नेपालके मंत्री) नेपालके रहनेवाले पण प्रतिष्ठित पेशोपन्न क्षत्री थे स ई० १८४६ में नेपाल राज्यके बजार हुग, स० ई० १८५० में इंग्लैंड की तरफ गय तपसे नेपाल दरबार और ब्रिटिशगवर्नमेंटम गादी सिबता हो गई स० ई० १८५६ में नेपाल दरबारने इनको महाराजकी उपाधि दी स० ई० १८५७ का गदरमें दरबार नेपालने अपनी गोरगा पल्लनने सुबे अवधम बगावत मिटयादी इस सदा यतापे पुष्कळामें जंगयहादुरको जी० सी० यस० भार्०, जी० सी० बी० पी उपाधियां ब्रिटिशगवर्नमेंटने प्रदान कीं, स० ई० १८७६ में जब सिन्ध आप बेस्त नेपाल परघाते थे तो जंगयहादुरने प्रतीता बेग गियापा ब्रिटिशराजमें इनकी समा

भी तोपके १९ कैरोंकी थी स० ई० १८७७ में व मुकाम पिथौरा घाट तराई पल-
कमारतेमें मरगये शीरचीतेका शिकार खूब करते थे अनेक प्रकारके जनावरोंके पाळ-
नेका शौक था जिसमानी कर्तबों और खेलोंमें अद्वितीय थे अब इनके पुत्र रियासत
मिपाळके सुयोग्य मंत्री हैं टामसरो (सरटामसरो—Sir Thomas Roo) स०
ई० १६१४ में इंग्लैंडके बादशाह चार्ल्स प्रथमने इनको राजदूत नियत करके मु-
गलबादशाह जहांगीरके दरबारमें हिंदोस्तान भेजा—सरटामसरोने यहाँ ४ वर्ष रहकर
अंग्रेजोंकी तिजारती कोठियां बंगाल, मद्रास इत्यादि में स्थापन करनेकी आज्ञा
प्राप्त की—इंग्लैंड लौट कर इन्होंने अपने सफरका मनोहर घृत्तांत छपवाया—हिंदो-
स्तानसे सरटामसरो बहुतसी हस्तालिखित पुस्तकें संग्रह करके ले गये थे, जो
इन्होंने स० ई० १६२८ में किसी पुस्तकालयकी भेंटकर दीं हस्तालिखित सिक्कर
की बेविल भी ये यहाँसे लेगये थे, जो इन्होंने बादशाह इंग्लैंडकी भेंट की—स०
ई० १६३९ में इनके उद्योगसे पोलैंड और स्वीडेन के बादशाहोंमें संधि हुई
स० ई० १६४१ में राजदूत नियत होकर रहिस्वन गये—यहाँसे लौटने पर प्रिवी
कांसलके मेम्बर इंग्लैंडमें होगये—स० ई० १६४४ में ६४ वर्षके होकर मरे.

टीपू सुल्तान—निज पिता हैदरअलीके बाद स० ई० १७८२ में मैसोरकी
गद्दी पर बैठे—उस समय मैसोर राज्यमें १ लाख फौज थी और कोशमें ३ करोड़
रुपया और बहुतसी जवाहिरात थी—पुरनिया नामक ब्राह्मण इनका मंत्री
था—टीपू निज पिताके समान रणकुशल और निर्दयी था—३० हजार
ईसाइयोंकी इसने सुन्नत करवाई और १ लाख हिंदुओंको मुसल्मान किया प्रजा
इस निर्दयीके अन्यायसे अफ़्जाय उठी थी—स० ई० १७९० में मरहटा, निजाम
और अंग्रेजोंने मिलकर इसकी राजधानी शृगापहनका घेरा किया—२ घण्टक
छड़ाई जारी रही—अंतमें संधि हुई, जिसके अनुसार टीपू को अपना भाधा राज्य
और ३ करोड़ रुपया छड़ाईका खर्चा देना पड़ा—इस छड़ाईके बाद टीपूका बल
पराक्रम बहुत घटगया था पर उसके दिलमें बदला देनेकी भाग भयकतीपी
निदान उसने फरासीसोंसे मेल किया—यह देख लार्डवेल्लिजली ब्रिटिश गवर्नर
जेनरल हिंदने टीपूकी राजधानीका स० ई० १७९९ में घेरा किया और टीपू
बड़ी धीरतासे छड़कर मारागया—अंगरेजों मरहटो और निजामने उसका
राज्य आपसमें बांट लिया और मैसोरके भासपासके थोड़ेसे मुल्क पर मैसोरके
प्राचीन हिंदू राज्यवशाका एक छड़का बिठलाकर मैसोर की रियासत बनादी

टेनीसन—(Alfred Tenneyson) इनका पूरानाम पेरुकेड टेनीसन था—इनके
बाप लिन्कनशायरके पादरी थे कैम्ब्रिज देश विद्यालयमें पढ़कर इन्होंने बी०
ए० की परीक्षा पास की थी पहिले पहिल स० ई० १८३० में इन्होंने निजकवि
साकी एक पुस्तक छपवाई और स० ई० १८४२ के बाद इनके रचे अनेक और

प्रयत्नी छपे, जिनसे इनकी प्रसिद्धि दिन प्रति दिन बढ़ती गई, यहां तक कि, अंग्रेजीके उत्तम कवीश्वरोंमें इनकी गणना हुई। स० ई० १८५१ में कवि वार्डस्वर्थके मरने पर इंग्लैण्डके राजकविष्ठा पद इनको दिया गया। स० ई० १८५५ में आल्फोर्ड विश्व विद्यालयने डी० सी० एल की पदवी इनको प्रदान की० और स० ई० १८८३ में ब्रिटिशगवर्नमेंटने पीअरैज (Peerage) की पदवी इनको प्रदान की। स० ई० १८९० में ८० वर्षकी उम्रमें मरे।

टोडरमल—(अकबरके दरिबान आला) दरबार अकबरके नवरत्नोंमें इनकी गणना है। लाहौरमें एक खत्रीके घर जन्मे थे और ५ ही वर्षकी उम्रमें पिता विहीन हो गये थे। निदान माताने इनको अपने मायकेमें रहकर गुजरातकी किसी ग्रामीण पाठशालामें पढाया था। ११ वर्षकी उम्रमें ये राजा हरखंसरायके यहां नौकर होकर लाहौर गये। ३ वर्ष बाद हरखंसरायके मरनेपर इन्होंने शेरशह सूरेके यहां मुश्कियोंमें नौकरी कर ली। शेरसूरेके मरने पर बादशाह अकबरकी फौजमें नाम लिखाया योग्य पुरुष तो येही थोड़ेही दिनामें अर्धी मैजरके पदपर पहुँच गये और द्वादशसौ सूबेदार बंगालको जो बागी होगया था बड़ी धीरतासे परास्त किया। स० ई० १५८० में अकबरने इनको बंगालका सूबेदार नियत किया। वहाँ रह कर इन्होंने निम्नस्थ सुप्रबंध किये जिनके कारण इनका नाम अबतक लोगोंकी ज़बान पर है—

- १ ईरानदेशके अनुसार हिसाब किताबका तरीका जारी किया
- २ खैताकी पैमायश कराके सीमाबन्दी की और लगान लगाया
- ३ रुपयेके ४० टाम ठहराये जिससे सर्व साधारणको लन देनेमें सुभीता हुआ
- ४ राज्यभारमें डिपुटी कमिश्नर नियत किये
- ५ सरकारी घोड़ोंके दाग लगवाये
- ६ सहस्रों लौकी और गुलामाको बंधनमुक्त कराया अंतमें

बादशाह अकबरने इनको दरिबान आलाके पदपर नियत करके दिल्ली बुला लिया। पंजाबी खत्रियोंमें तीन साहू सिपायोंकी रसमको उठाकर धार्मिक रसम इन्होंने जारी की। ये फारसी, अरबी और संस्कृतके पूर्ण विद्वान् थे। भाषाविविताभी अच्छी करते थे। भाग्यतका फारसीमें सत्या किया था। निजपुर्व जोंके धर्मजी दृढ़तासे मानते थे। बागीवासी पं० रामध्वजने, "टोडरानन्द" उपोत्तिपत्रय इनके नामसे रखा था।

स० ई० १५८९ में ७२ वर्षके होकर लाहौरमें मरे। इनका इकठोठा घेरा था। रासिंधकी किसी लड़ाईमें मारागया। छद्मि ग्राम जि० सीतापुरके रहनेवाले टोडरमल कायस्थ, दाहजहाँके दरबारमें धर्मिये।

टोलेमी प्रथम—(Tolemy) सिन्धुदर भाजमका साँतेलाभाई था। सिन्धुदरके उत्तम सेनापति रहा और उसके साथ देश विदेश घूमा। सिन्धुदरके निःसन्तान मरनेपर राज्य सेनापतिपा और रिस्तेदारोंके बीच बँटा और मिश्रदेशका राज्य

टोलेमीके हिस्सेमें आया इसने बड़े ध्याय और प्रवचसे राज्य किया और उत्तरी-य अफरीकाको विजय किया इसकी राजधानी अस्कदरिया पृथ्वी भरकी विजारी मदी थी अस्कदरियामें एक रोशनीका मीनार, एक अजायबखाना और एक पुस्तकालय इसने खोलाया इस पुस्तकालयमें ६० लाख पुस्तकें करोड़ों रुपयेके खर्चसे भूमण्डलके अनेक भागसे हूँदुवाकर संग्रह करलीगईया जब मुसलमानोंने मिश्रदेश फतेह किया ता खलीफा उमरके हुक्मसे यह पुस्तकालय जलाकर धरसाद किया गया टोलेमी बड़ा विद्याभुरागीया उसने म्बर्य कई ग्रंथ रचेये जिनमेंसे एक सिन्दूरके जीवनचरित्रकी पुस्तक थी स० ई० से २८५ वर्ष पूर्व मरा और उसके पुत्र टोलेमी द्वितीयने गद्दी पर बैठकर अपने दो भाइयोंको बध किया, अपनी भार्त्री तथा बहिनसे शादी की, रोमन लोगोंसे मेल किया, व्यापारकी उत्पत्ति की, झालसागरपर एक शहर बसाया, जहाजों के बड़े घनवाये, विद्वानोंका सत्कार किया, धार्मिकका अनुवाद ग्रीक भाषामें कराया और ६ वर्षकी उम्रमें स० ई० से २४७ वर्ष पहिले मरा

टोलेमी—(ज्योतिषी) स० ई० १४० में मिश्रमें हुआ—ज्योतिष और भूगोल पर इसने बड़ी पुस्तकें रची थीं—“मजस्ती” नाम ज्योतिषसिद्धांत इसका रचा हुआ है—इसी सिद्धांत के अनुसार फिरजी लोग हजारों वर्षतक मानते रहे कि, पृथ्वी उठरी हुई है और उसके चौरागिर्द सूर्य चंद्र इत्यादि ग्रह घूमते हैं इसीका दूसरा नाम घतलीमूस है

डफरन—(मार्कुइस-आफ डफरन Marquis of Dufferin) इनका असली नाम फ्रेडरिक टेम्पिल्लैव्क बुट था—स० ई० १८१६ में पैदा हुये—पटन और भाक्स फोर्ड के कालिजों में उच्च श्रेणीकी शिक्षा पाई, स० ई० १८४१ में पिताके मरने पर डफरनके वरनका पद पाया—स० ई० १८५९ में भायसलैंड (वर्फिस्तान) की सैरको गये और उक्त यात्रा का बृत्तांत एक पुस्तक में छपवाया—स० ई० १८६० में कमिश्नरके पद पर नियुक्त होकर स्यामद्वीपको गये और ईसाइयोंके कालकी सहकीकास की और वापिस आनेपर के० सी० वी० उपाधि पाई—स० ई० १८६४ से ६६ तक हिन्दोस्तानके उपमन्त्री और फिर रणविभागके उपमन्त्री हुये पश्चात् पोस्ट मास्टर जनरल रहे—

स० ई० १८७२ में कनाडाके गवर्नर जनरल हुये—योईही दिनबाद महाराजा रूसके दरबारमें राजवृत नियत करके भेजेगये स० ई० १८८१ में शाह रूसके दरबारमें राजवृत बनकर गये—दूसरी साल झगड़ा शांति करनेके लिये मिश्रभेजे गये—स० ई० १८१४ में भायसराय नियत होकर हिंदोस्तान आये—इस पद पर ४ वर्षे रह्यर स० ई० १८८८ म इस्तीफा देकर इंग्लैंडको वापिस गये—इनके समय में उपरी ब्रह्मा विजय हुआ अमार काबुलसे मित्रता भाव जारी हुआ और आइन-सभामें स्थापित हुई—हिंदोस्तानसे वापिस जाकर मार्कुइसकी उपाधि पाई और

शाहजहाँ के दरबार में राजदूत नियत करके भेज दिये गये—अर्ल छिटन के मरने से ये फ्रांस के दरबार में राजदूत नियत किये गये—स० ई० १९०२ में मरने से पहिले इनको व्यापार में बड़ा घाटा बैठा था जिससे इनको व्यथा लगी थी—इनकी पत्नी लेडी डफ्टन ने हिंदोस्तान में सब जगह जनाना हस्पताल जारी किये—राजा महाराजा खाँस अमीरों ने दिख खोलकर जनाना हस्पतालों के लिये धन दिया था और बड़े खिताब पाये थे—

सबसे पहिले जनाना हस्पताल जारी करनेको मेरणा इस प्रकार हुई एक समय महारानी पद्मा बहुत बीमार हुई रोग ऐसा था कि, जिसका इलाज लजाके कारण पुरुष डाक्टरसे नहीं करा सकती थीं बहुत कष्ट सहन करनेके पीछे एक डाक्टर मेमने लखनऊसे आकर महारानीको आराम किया इन्हीं मेमनों महारानीने लखनऊ भेजकर राजराजेश्वरी विक्टोरियासे जनाना हस्पताल जारी करानेके विषयमें विनती की—इस विनतीपर करुणामय होकर विसरे—हिन्दूने लेडी डफ्टनसे जिनके पति उन विनो वायसराय होकर हिंदोस्तान आनेको ये जनाना हस्पताल जारी करनेको कहा था लेडी डफ्टनने हिंदोस्तान में आते ही सन्दा सघानेका उद्योग निज पतिकी मददसे किया जिसके द्वारा हिंदोस्तान में सब बड़े शहरों और कस्बों में जनाना हस्पताल खोल दिये गये, जिनके द्वारा अब लाखों स्त्रियां उन रोगोंसे मरनेसे बचती हैं जिनका इलाज पहिले लजाके कारण डाक्टरों या हकीमोंसे नहीं करासकती थीं—

१ डागीर—(Dawgore) एक फरासीसी था जिसने स० ई० १८२९ में फोर्टोप्राफी (भक्ती तस्वीरें खींचनेका इल्म) अन्वेषण किया

डामाजी गैकवाड़ प्रथम—(बरोडा राज्यके संस्थापक) ये वेरोर्ज मरहटाके पुत्र राजा साहू सतारा गठवालके दरबार में सेनापति थे मुगल तथ अन्य शासकोंसे ये बड़ी वीरतासे लड़े थे जिसके पुरस्कार में साहूने इनको मरहटा राज्यमें दूसरे दर्जेका पद, शमशेर बहादुरका खिताब और गुजरात प्रांत में बर्द जागीर दी थी, स० ई० १७२० में डामाजी गैकवाड़का देहांत हुआ बरोडामें अबतक इन्हींकी सन्तति राज्य धरती है—पहिले पहिले डामाजी गैकवाड़ के दरबार में छोटे दर्जेके नौकर थे बालापुरकी लड़ाई में इन्होंने बड़ी वीरतासे लड़कर मुगलसम्राट् दिल्लीकी फौजके दांत खट्टे करदिये निदान मरहटा राज्यके सेनापतिकी सिफारिशपर राजा साहूने इनको उपसेनापति नियत किया.

डामाजी गैकवाड़ द्वितीय—(बरोडानेठा) पिछाजीके पुत्र तथा डामाजी गैकवाड़ प्रथमके पौत्र ये स० ई० १७३१ में पिछाजीके बाद इन्होंने गद्दीपर बैठकर ४० वर्ष पर्यंत लड़भिड़कर गुजरात तथा भासपासके देशोंको स्वराज्यम मिलाया—स० ई० १७३१ की साल पानीपतकी लड़ाई में इन्होंने

बड़े २ वारसके काम विय और स० ई० १८३२ में इ.हर.रं.डा.प.सेह किया-
पश्चात् शहर पट्टन और गुजरातकी प्राचीन राजधानी अहिमदाबादपर अधि-
कार जमाया अन्तमें काठियावाड़के सब राजोंने परास्त होकर इनको राजस्व
देना स्वीकार किया-इनके पीछे इनके २ पुत्र गोविंदराव तथा अहमदसिंह क्रमशः
बरोडाकी गद्दीपर बैठे-स० ई० १८०३ में रियासत बरोडाने ब्रिटिश गवर्नमें-
टका आधिपत्य स्वीकार किया सबसे एक ब्रिटिश रेजीडेन्ट राजधानी बरो-
डामें रहता है और गवर्नमेंट हिंदको राजस्व दिया जाता है-कई पीढ़ी बाद
इस गद्दीपर स० ई० १८७५ में महाराज सैय्याजीराव तृतीय (वर्तमान नरेश)
सुशोभित हुये आप सवगुणसम्पन्न प्रतापी नरेश हैं-

डिकेन्स-(चार्ल्स डिकेन्स-Charles Dickens) ये पृथ्वी प्रसिद्ध
उपन्यासकार पोटस मैथ (इंग्लैंड) के समीप लैंड पोर्टमें जन्मे-इनके बाप
जान डिकेन्स ब्रिटिश गवर्नमेंटकी सामुद्री सेनाके वक्त्रकी दफ्तरमें
क्लर्क थे चार्ल्स डिकेन्स ८ भाई बहिन थे, एवं इनके बापका गुजरात
कठिनतासे होता था और इसी लिये इनको किसी स्कूलमें शिक्षा देनेकी जगह
निज परिश्रमसे ही विद्योपार्जन करना पडा था बड़े होकर इन्होंने कुछ दिन-
सक किसी वकील की मुहारिरी स्वल्प वेतन पर की पश्चात् भखबारीके लिये
मजमून लिखना आरम्भ किया और स० ई० १८४५ में अखबार "डेलीन्युज"के
सम्पादक हो गये कुछ दिनबाद उपन्यास रचना की तरफ इनका ध्यान हुका
जिससे जगत्में प्रसिद्धि पाई और धनाढ्य हो गये फिर तो रोचेस्टरके समीप
इन्होंने " गैडशीलभवन" खरीदा इनका कुटुम्ब बड़ा था और ये उन सबका
पालन पोषण करते थे कई दफे अमेरिका गये और वहाँके निवासी इनके उप
देशोंसे कृतार्थ हुये निर्भय होकर अन्याय, छपटता, कमीनेपन इत्यादिकी निन्दा
करतेये और सहनशीलता, न्याय इत्यादि सुकर्मोंकी प्रशंसा करतेये स्वराचित
ग्रंथोंमें इन्होंने प्रहसनके साथ २ शत्रुयता और सत्यताके उपदेश संयुक्त किये
हैं हजारों मनुष्य इनकी वक्त्रताको सुनकर प्रसन्न होते थे और लाभ उठाते थे
३० वर्ष निर्वाह होनेके बाद इसमें और इनकी छुर्मीमें अतनन हुई और सम्बंध
टूट गया स० ई० १८७० में १ दिन बीमार रहकर ५८ वर्षकी उम्रमें मरे और
वेस्ट मिनिस्टर पेसीके कबरस्तानमें दफन किये गये

डेलहौजी-(James Andrew Lord Dalhousie) इनका पूरा
नाम जेम्स पेटरु लार्ड डेलहौजी था हाथ और आक्सफोर्डमें पढ़कर एम० ए०
की परिक्षा पास की थी स० ई० १८४३ में बोर्ड-आफ-ट्रेडके उपप्रधान हुये
स० ई० १८४७ में गवर्नरजेनरल नियत होकर हिंदोस्तान आये पंजाब इन्हींके
समयमें सर्कारी अमलदारीमें मिलाया गया नागपुर, सतारा, झांसी, घराट,
और अवध इन्हींके समयमें खालसे किये गये महिरे, सड़के, रेल, वार इत्यादि

इन्हींके वक्तमें हिंदोस्तानमें जारी हुआ ये चाहते थे कि, गैर-२ सब देश राज्य ब्रिटिश राज्यमें मिलाखिये जायें और किसी राजाको गोदलेनेकी सनद दी जावे

स० ई० १८५७ के गदरके कारणोंमें लार्ड डेलहौजीकी यह राजनीतिभी मानी जाती है-अतम ५ हजार पाउंडकी वार्षिक पेन्शन पाई

स० ई० १८६० में ४८ वर्षकी उम्रमें मरे

ड्यूक-आफ़ वेलिङ्गटन (Sir Arthur Wellesley Duke of Wellington) पूरा नाम सर आर्दर वेलिङ्गटनी ड्यूक-आफ़-वेलिङ्गटन, पान् इन्दाने कुछ दिन इंग्लैंडमें और फिर फ्रांसमें रहकर विद्या पढी-स० ई० १८०० में अंग्रेजी सेनामें भरती हुये स इ १७९७ में हिंदोस्तान आकर मैसूर के गवर्नर नियत हुये-असईकी लड़ाईमें जो स० ई० १८०३ में हुई, इन्दाने ८०० सिपाहियोंसे संधियाकी ३० हजार फौजको परास्त किया-स० ई० १८०५ में इंग्लैंडको वापिस गये और अनेक कठिन अवसरोंपर राज्यसेवा प्रदर्शनीय और परकी-नेपोलियन सेनापार्टको घाटरलूकी लड़ाईमें परास्त करके ड्यूक-आफ़ वेलिङ्गटनकी उपाधि पाई-पश्चात् बड़े २ ओहदों पर रहे-युद्ध में कभी पीठ न दिखलानेवाले प्रामाणिक और यूरुपमें परम प्रतिष्ठा प्राप्त महा पुरुष थे-

स० ई० १८५२ में ८३ वर्षकी उम्रमें मरे-महारानी विक्टोरियाने मृत्युकी तदपविचारक खबर पाकर कहा 'आज इंग्लैंडका नहीं ब्रिटिशनेका गय कीर्ति महापुरुष नहीं रहा इसके समान कोई दूसराम हुआ न होगा' श्रीमतीने स्वयं इस वीर पुरुषके विषयमें लिखा है "स्मरणीय योधा ड्यूक मरनेपरभी अपने सुखायी से चिरंजीव रहेगा-उसमें भूमण्डलके सम्मानका समावेश था-प्रजागणमें वह सम्बोधित था दोनों दल उसका आदर करतेथे-राज्यका परम मित्र होनेपर भी बड़ा सादा था-सब काम धर्य और निभयतासे करता था इस राज्यको कभी ऐसा स्वामीभक्त महारमा नहीं मिलेगा-वह सबंध सुसम्मति और कठिनवाक समय सहायता देनेका तैय्यार रहता था ऐसा कोई मनुष्य न होगा जो उसकी मृत्युपर न रोया हो!" पार्लियामटने अपने तख्तसे इनको राजसी ठाटसे दफनाया लार्ड वेलिङ्गटनी गवर्नर जनरल हिंद इनके बड़े भाई थे

ड्रेक-(सर्फ्रांसिस ड्रेक-Sir Francis Drake) इस मखिड इंग्लैंडका ही अर्माकल बहिरने रानी एलिजाबेथके समयमें स० ई० १५७९ की साल ७ वर्ष १० महीनेमें पूर्वीकी परिक्रमा कीयी स० ई० १५८९ में पार्लियामटय में म्पर होगये

स० ई० १५३९ में जन्मे

स० ई० १५९५ में मरे

। **ढोलाराठ** इन्होंने जयपुर प्रान्तमें कछवाहोंका राज्य स० ई० १६७में स्थापन किया इनके पुत्र अथवा पौत्रने पुरानी राजधानी अम्बरको मीना लोगोसे फतेह कियाया स० ई० १७२८ में जयसिंह सवाईने जयपुर बसाया और अम्बरकी जगह उसको अपनी राजधानी बनाया माव नामक स्त्रीसे ढोलाका अत्यंत प्रेम था, जिसके विषयमें गीत अथवा गायेजातेहैं ढोलाके पश्चात् इस गद्दीपर बैठने वाले राजोंमें सवाई माधोसिंहजी (वर्तमाननरेश) १०६ वें हैं

तरुतसिंह—(रावल सर तफ्तसिंह, जी० सी० यस० आई०, यल० यल० सी०) भाउनगर (काठियावाड़ नरेश) स० ई० १८५८ में जन्मे निजपिता महाराजा जस्वंतसिंहके बाद स० ई० १८७० में गद्दीके वारिस हुये स० ई० १८७१ में राजकोट कालिजमें पढनेके लिये भेजेगये कालिजके अध्यापक आपके परिश्रमी स्वभावसे सुश रहे स० ई० १८७४ में आपके ३ विवाह हुये और ३ विवाह और पीछे किये स० ई० १८७५ में कालिज छोड़नेके बाद लफटेन्ट करनेके लिये साहबके साथ हिंदोस्थानका दौरा किया और उक्त साहबसे विशेष शिक्षा भी पाई स० ई० १८७७ के दिल्लीद्वारमें आपकी सलामी तोपके ११ फैरसे १५ फैर किये गये स० ई० १८७५ में राजका पूरा अधिकार आपको सौंपागया आपने २ रेल्वे लायन्स १२० मीललम्बी ८० लाख रुपयेके खर्चसे बनवाई स० ई० १८८१ में के० सी० यस० आई० और स० ई० १८८६ में जी० सी० यस० आई० की उपाधि पाई इनके समयमें २५ लाख रुपये देश सुधारनेमें खर्च हुये शिक्षा विभागपर आपकी विशेष दृष्टि थी श्रीशिक्षाके भी उद्योगी थे पानीके नल आपकी के समयमें भाउनगरमें जारी हुये १ लाख रुपया नार्थवुक इण्डियन क्लबको अर्पण दिया इस क्लबका उद्देश इंग्लैंड और इण्डियामें मेल मिलान कराना है स० ई० १८९३ में इंग्लैंड जाकर यल० यल० सी० की उपाधि कैम्ब्रिज विश्व विद्यालयसे प्राप्त की स० ई० १८९६ में मृत्यु हुये और आपके ज्येष्ठ पुत्र महाराजा भाठसिंहजी (वर्तमान नरेश) २१ वर्षकी उम्रमें गद्दी पर बैठे राज्यका विस्तार २८६० घगमील है सालियाना आमदनी ४१ लाख रुपयेकी है इस रियासतके राजे गोहेलवंशी हैं गोहेल वंश अर्द्धशकी एक शाखा है गोहेल वंशी राजोंका स० ई० ८१२ के बहुत पहिलेसे खौराटू (काठियावाड़) में अधिकार है पहिले राजधानी सीहीर थी स० ई० १७२३ में राघलभाठसिंहने भाउनगर बसाया और उसको अपनी राजधानी बनाया

ताजगीची—(इसका असली नाम अर्जुमंदबालु बेगम था और शाहजहां बादशाह दिल्लीके साथ शादी होनेपर मुमताजमहल छव्व पायाया ये नूरजहांके भाई आसफखीं वजीरकी बेटा थी स० ई० १५९२ में पैदा हुई—स० ई० १६१२ में शाहजहांके साथ इसकी शादी हुई स० ई० १६३१ में बुरहानपुरमें

मरी-भरते समयका इसका वृत्तांत यों है कि, ये उन दिनों हामला थी दूधमालिनी १ दिन गर्भमें बच्चा रोया-जिसके गर्भमें बच्चा रोता है वह स्त्री जीती नहीं है निदान ताजपीपीने बादशाहको बुलाकर गले लिपट रोकर कहा कि, बादशाह सलामत में आपसे रुखसत होती हूँ, आपकी बादशाहीका मैंने योड़ाही सुख भोग पाया क्योंकि आपको सख्तपर बैठे पूरे ४ वर्ष भी नहीं हुये हैं और मालिनी ककी मर्जीमें कुछ बश नहीं, लेकिन दो बार्थें में आपसे कहती हूँ एक तो मा अक्ष दूसरी शादी न करें क्योंकि आपके दाराशिकोह आदि ४ बेटे और धेटियें मौजूद है और दूसरी बात यह है कि, आप मेरा मकबरा ऐसा बनवायें कि उसकी समान पृथ्वीपर दूसरा न निकले शाहजहानि इन दोनों बातोंपर अन्न किया-दूसरी शादी नहीं की और अमनाके दिनारे आगरेमें ताजपीपीका रोस संगममरका ऐसा बनवा दिया कि जिसकी समान भूमण्डलपर दूसरा मकबरा नहीं है-पहिले तो ताजपीपीकी छाया पुरहानपुरमें गाढ़ की गई थी फिर आगरेमें रोजा बनकर तैयार होगया तो वहांसे हड़ियें उखाड़कर रोजेमें दफनाई गई

तांतियाटोपी-(सन् ५७ के गदरवा प्रसिद्ध बागी) ये पूनाके अछोमें घूमता पकड़ा गया और १८अग्रेल स० ६० १८५९को फांसी दिया गया फांसी दियेजानेसे पहिले जो इसने अपना बयान लिखाया वह यह है " मैं पूनाका रईस वाला आदमण हूँ ३० वर्ष हुए तब पूनासे मध्यहिंदमें आया और तोपखानेमें खाक करली बादको सिद्धर (कानपुर)आकर नाना साहिबसे यहां नौकरी की गदर समयमें मैं नाना साहिबहीका नौकर था कानपुरमें मेरेही ठगखानेसे मेमा भ उनके बख्तोंको बागियोंने मारवाला नाना साहिब मेरी इस काररवाईपर बहुत माराज हुये क्योंकि वे उनकी हिकाजतका खयन दे चुके थे १० आकटुबर स ५७ को बागियोंकी ८ हजार सेना जो आगरेमें अंग्रेजोंपर धावा किया था उसका सेनापति मेंही था यदि मैं धोखा न खा जाता तो अंग्रेज सहिल नहीं जीत पाते अतयाकी लड़ाई में मेरे पास २२ हजार सेना और १२० तोपें थीं, इसमें अधिक फौज मेरे अधिकारमें और कभी नहीं रखी थी

तांतिया भील-(डॉकर) जिला नीमर मुल्क बरोडाके त्रिखी गाँव में स० ६० १८४२ की साल पैदा हुआ माता इसको छोटाछा छोड़ मरी थी भी इसका बाप भाउसिंह कृषिकारया लड़कपनही से पराक्रमी मालूम होता था सायबे खेडनेवालिले लड़के मातंग मानते थे लड़कपनमें इसने शेरती करन सार फमान खलाना और निशाना लगाना सीखा था जब ये ३० वर्षक था तब इसका बाप मर गया बापके जीत जी इसने दाराब पीने और मातंग गानेमें अपना समय बिताया था गरीबों पकीरायी सहायत करनेकी भावत इसने

शुद्धीसे पाई जाती थी बापके मरनेसे कुछ दिनाबाद एक दफे तांतियासे माल-
शुजारी भदा न हो सकी इस लिये सरकारने उसके खेत नीलाम कर दिये तब
तो लाचार होकर वह धरोदासे पोखड़को चलागया क्योंकि वहाँ उसके बापकी
कुछ जमींदारी थी पर वहाँके जमींदार शिवपटैलने बहुतसे लोगोंसे मिलकर
उसकी वहभी जमींदारी छीन ली सर्कारि अफसरोंने भी बहुतसे लोगोंकी
गवाही पर ' उसके खिलाफ फैसला कर दिया पश्चात् शिवपटैल
और उसके साथियोंने मिल मिछाकर निर्दोष तांतियाको कैद करा दी कैदसे
छुटकर वह बेचारा हुलकरकी रियासतमें बसकर खेती करने लगा परंतु
पोखड़वासी उसके शत्रुओंने पुलिससे मिलकर जैन नहीं लेने दिया, मुकदमें
बनाने अफसर उसको सजा कराते रहे—इन कमीनेपनकी चालोंसे तंग आकर
तांतिभाके दिलमें पोखड़वासी शत्रुओं तथा पुलिससे बदला लेनेकी भाग मथक
ठठी, पर कोई उपाय न देख उसने डांकूका पेशा इस्तिफार करलिया और मध्य
हिंदके जंगलोंमें रहने लगा—उसकी चातुर्यता और उदारताको देख बहुतसे
डांकू उससे आमिले—फिर तो तांतियाने शिवपटैल और उसके बहिकानेसे
उत्पन्न हुये अनेक पोखड़वासी शत्रुभाको नाक थने चबादिये उनके घर फूव
दिये, माल अस्वाध लूट लिया अनेकोंकी नाक काट डाली और उनको बाहिन
भांजी, बहु घोटियोंके सतास्य भग कर दिये, बहुतसे शत्रुओंके प्राण इत डाले
शिवपटैलका बीज बकला नष्ट कर दिया, पुलिस उसके पकड़नेकी फिरमें
मुशर्तों तक रही, पर उसने अनेक खिपाहियों को नासिका हीन करदिया, पुलिस
अफसरोंके सामनेसे उनके घोड़े छेरे कर भाग गया, और कितनी दफे हवालातसे
निकल चम्पत होर गया—भलि लोग तांतियाके सुशील स्वभावसे बहुत प्रसन्नथे,
वे उसका पता किसीको नहीं बताते थे और वहभी उनकी सब प्रकार मदद
करताथा—एटका माल अपने साथियोंमें बराबर २ घांट देताथा—भरीरोंको कूटता
और गरीबोंको देता था—एक दफे टापटी नदीके तीर एक दिन म भूखोंको ६ हजार
रुपये दे दिये थे—अतमें जब पुलिस कुछ न कर सकी तो फौज को तांतियाके
पकड़नेका हुक्म हुआ सर लेपिल ग्रेफिन और रिंसाळदार मेजर ईश्वरीसिंह
इस कामपर तईनाथ हुये निदान एख सुन्दरी स्त्रीकी मददसे, जिससे कि,
तांतियाकी मुलावात थी, वे डांकू स० इ० १८८९ में पकड़ा-
गया जन्वल्पुरमें उसका मुकद्दमा हुआ और फांसीका हुक्म मिला—अपने
बयानमें झूठ नहीं बोला अतमें केवल यह प्रार्थना की कि, मुझको फांसी देनेकी
जगह गोलीसे मार दिया जाय, लेकिन कुछ सुनाइ न हुई जब फांसीको लाया
गया तो उसको कुछ करना बाकी नहीं था मुझपर प्रसन्नताके चिह्न मालूम
देते थे क्योंकि दुष्ट शत्रुओंसे यथोचित बदला लेकर परम धामकी
सिंघारता था

मरी-मरते समयका इसका वृत्तांत यों है कि, ये उन दिनों हामला थी वैकाली १ दिन गर्भमें बसा रोया-जिसके गर्भमें बसा रोता है वह स्त्री जीती नहीं, निदान ताजबीबीने बादशाहको बुलाकर गले छिपट रोकर कहा कि, बादशाह खलामत में आपसे बखसत होती हूँ, आपकी बादशाहीका मैंने योद्दाही मुझ भोग पाया क्योंकि आपको तख्तपर बैठे पूरे ४ वर्ष भी नहीं हुये हैं और माफिककी मर्जीमें कुछ बश नहीं, लेकिन दो बातें मैं आपसे कहती हूँ एक तो आप अब दूसरी शादी न करें क्योंकि आपके दाराशिकोह आदि ४ बेटे और बेटियों मौजूद हैं और दूसरी बात यह है कि, आप भोग मखबरा ऐसा बनवा दें जिसकी समान पृथ्वीपर दूसरा न निकले शाहजहाने इन दोनों बातोंपर भय किया-दूसरी शादी नहीं की और जमनाके किनारे आगरेमें ताजबीबीका रोज संगमर्मरका देखा बनवा दिया कि जिसकी समान भूमण्डलपर दूसरा मकल नहीं है-पहिले तो ताजबीबीकी छाश गुरहानपुरमें गाड़ दी गई थी फिर आगरेमें रोजा बनकर तैयार होगया तो वहांसे दहिये तखाइपर रोजेमें दफ्तरी गई

तांतियाटोपी-(सन् ५७ के गदरका मसिह घागी) ये पूनाके जंलोंमें घूमता पकड़ा गया और १८अप्रेल स० ई० १८५९को फांसी दिया गया फांसे दियेजानेसे पहिले जो इस्ने अपना बयान लिखाया वह यह है "मैं पूनाका एक बाला ब्राह्मण हूँ ३० वर्ष हुए तब पूनासे मध्यहिंदमें भाया और तोपखानेमें चार्ज करली बादको विदूर (फानपुर)आकर नाना साहिबके यहां नौकरी की गदर समयमें मैं नाना साहिबहीका नौकर था फानपुरमें मेरेही तख्तानेसे मेमा भी उनके बच्चोंको घागियोंने मारहाला नाना साहिब मेरी इस काररवाईपर बहुताराज हुये क्योंकि वे उनकी हिफाजतका यत्न दे चुके थे १० आक्टुबर स ५७ को घागियोंकी ८ हजार सेनाने जो आगरेमें अग्रेजोंपर धावा किया था, इसका सेनापति मैंही था यदि मैं धोखा न खा जाता तो अग्रेज सहिल नहीं जाते पाते बतवाकी लड़ाई में मेरे पास २२ हजार सेना और १३० तोपें थीं इसमें अधिक फौज मेरे अधिकारमें और कभी नहीं रही थी

तांतिया भील-(डॉक्टर) जिला नीमर मुल्क बरोहाके किसी गांव में स० ई० १८४२ की साल पैदा हुआ माता इसको छोटासा छाड़ मरी थी भी इसका बाप भाठसिंह कृषिकारण लड़कपनही से पराक्रमी मालूम होता था चापके खेलनेवाले लड़के भातक मानते थे लड़कपनमें इस्ने खेलती करत सार फमान चलाना और निशाना लगाना सीखा था जब ये ३० वर्षक था तब इसका बाप मर गया बापके जाते जी इस्ने शराब पीने और नाचने गानेमें अपना समय बिताया था गर्भवा फकीराकी सहायत करनेकी आदत इस्ने

अफगानलोग ताजिखोंमें लखलीन ये पृथ्वीराजने अघसर पाकर टैलापर चढाई की ताराबाई अस्त्र शस्त्र कस पुरुषका रूप भर निजपतिके साथ रणभूमिमें गई, फौजको शहरके बाहर छोड़ तारा और उसके पतिने अकेले जाकर लैलाका काम तमाम किया और फिर बड़ी हौशियारीसे अपनी सेनामें आ मिले लैलाके मारे जानेसे उसकी फौजके दिल टूटगये और सिपाही इधर उधर भाग निकले, जिनमेंसे बहुतोंको पृथ्वीराजकी सेनाने काटझाला—इस तरह ताराने अपने धापका राज्य अफगानाके हलकमें उंगली डालकर निष्काल लिया—पश्चात् २३ वर्षकी उम्रमें सब उपकार भूल पृथ्वीराजको उसके सालेने किसी तुच्छ निरादरका बद्दला देनेके लिये मलावारके समीप मिष्टान्नम विष मिलाकर दे दिया—माया देवीके मंदिरके पास पहुंचते २ उसके पैर छरखड़ाने लगे और जीभपर कांटे जग आये तब तो उसको मालूम हुआ कि, छलसे मेरे प्राण जाते हैं—निदान तारा अपनी रानीको तुरंत बहला भेजा कि, मेरा अन्त समय है, आनेमें जरा भी विलम्ब न कर, विष तीक्ष्ण था, रानीके पहुंचनेसे पहिलेही पृथ्वीराजका देहांत होगया—रानीने पहुंचकर पतिके मृतक शरीरको गोदमें लेकर सत् किया—इन दोनों धीरोंके नामकी राजस्थानमें अबलौं बड़ी प्रतिष्ठा है—

तुक्षोजीराठ हुल्कर—(इन्दौरकी महारानी अहिल्याके सेनापति) इन्दीराज्यके संस्थापक मल्हरराव हुल्करके वंशमेंये मल्हररावके बाद जब उनकी पुत्रवधु अहिल्याके शिर राजकाजका भार आन पड़ा तो उसने तुक्षोजीको सुयोग्य समझ अपना सेनापति नियत किया और अनेक काम जो स्त्री होनेके कारण महारानी सुद नहीं करसकती थी इनकी सौंपे ये बड़े स्थिर प्रकृति, धर्मभीरु, रणकुशल और राजनीतिनिपुण ये महारानी अहिल्यासे मात्रा श्री कहकर बोलते थे और वह भी इनको पुत्रवत् मानती थी—

ये ईश्वरसे डरते रहते थे—कभी कोई काम ऐसा नहीं किया जिससे इनकी स्वामिभक्तिमें शका उत्पन्न होती स० ई० १७९५ में महारानीके बाद इन्दौरका राज्य इन्हींको मिला स० ई० १७९७ में सिधारे और इनका पुत्र प्रसिद्ध जस्वंत राठ हुल्कर गद्दीका मालिक हुआ

तुञ्जीन—(काश्मीरनरेश) निजपिता राजा जलीकके बाद वि० स० से १२६ वर्ष पहिले गद्दीपर बैठा—३१ वर्ष राज्य किया—ये अयुक्त था और इसकी रानी धाक्यपुष्टा नाम्नीने अग्निमें प्रवेश करके देह त्यागी थी धानकी खेती मारे जानेसे एक समय इसके राज्यमें अकाल पड़ा था तब इसने कोशका सब रूपया प्रजाका दुःख मेटनेमें खर्च करदिया था—माड़वाड़ देशमें इसने सड़कोंके किनारे दोनों तरफ वृक्ष लगवाये थे हिमालयकी चोटीपर तुङ्गनाथ विषका मन्दिर इसका बनवाया हुआ अबतक, विद्यमान है—प्रसिद्ध पंडित चन्द्रक इसीके वक्तमें हुआ

तानसेन—(गवैया) इतिहासकर्ताभाकी राय है कि, इस तानसेनकी समान दूसरा गवैया नहीं हुआ इनके पूर्वजों का विकास पेशवा का था, पर इनके बाप मकरंद पांडे गौड़ब्राह्मण ग्वालियर में रहते थे सीता शास्त्रकी प्रथम शिक्षा इन्होंने निज पितासे पाई विशेष विद्यापटनार्थे मल्लि संगीतज्ञ गोकुलस्थस्वामी हरिदासजूको गुरु किया और बादको मशहूर गैर शैख मुहम्मद गौस फकीर को अपना उस्ताद बनाया—शैखजीने अपनी मर्तबे इनकी जीभ में लगादी, जिसके प्रभावसे भावाज खूब सुलगाइ और ये मुसलमान होगये तानसेनने योग्य होतेहुये भी अपने को सर्वैष तुच्छ ही समझा जिससे संगीत शास्त्रका विद्वान् जाना उसीके पास गये और नम्रहो जिसप्रकार शैख विद्या पढी—अंशमें संकीर्त शास्त्रके पूण विद्वान् बन बादशाह अकबरके दरबारमें पहुँच्य नौकर होगये—बादशाह अकबर तथा दरबारिलोग इनकी मुक्तकठसे प्रशंसा करतेथे—इतिहासमें इनके गानेकी बड़ी प्रशंसा कीगइहै—जब गाते तो पशु, पक्षी छीन होजातेथे, हिरन चौकड़ी भूलजातेथे—एक दफे बादशाह अकबरके सामने सहस्रों मनुष्यों के देखते इन्होंने जमुनाजीमें स्नाने होकर एक राग गाया जिसके प्रभावसे जलमेंसे छपट निकलकर दर २ फैलनेलगीथी इन्हीं सुरदासजी की प्रशंसा म यह पद कहा था—

श्री०—विधौं सुरको सर छग्यो, विधौं सुरको तीर ।

विधौं सुरको पद छग्यो, तन मन धुनत शरीर ॥

सुरदासजीने इसके उत्तरमें कहा—

श्री०—विधना यह जिय जानये, शेष न कीने कान ।

धरामेरु सब डोलते, तानसेनकी तान ॥

ग्वालियरमें २ इमलीये द्रष्ट अथवा तानसेनके नामसे प्रसिद्ध है, गवैया इनके पते खसोट २ के खाते है और कहते हैं कि, उनको खानेने भावाज सुन जाती है—कई पुत्र छोड़कर दिल्लीम स० इ० १७८८ की साल सिंधार गये

ताराबाई—रायसुरसेन विजनौरवालेकी कन्या चित्तौड़ नरेश रायमल्लके पुत्र पृथ्वीराजको विवाही गई थी ऐलाभपगानने विजनौरके सिवाय सब मुल्क रायसुरसेनसे छीन लिया ताराने निजपिताको राजकीण होनेसे दुःखित देखकर स्त्रियोंके ब्यसन सब त्याग दिये और पोंडेपर चढ़ना तथा तीर यमान बढाना इस अभिप्रायसे सीखना शुरू किया कि, अभी अपने पिताका गया हुआ राग्य अकगानोंसे धापिस लेलंगी अकसर पाकर सुरसेनने अकगानापर चढ़ाई भी की, तारा निज पिताके साथ पोंडेपर सवार हायर धनुष बाण लेकर गई पर दारही मजर आई अंतमें ताराने पृथ्वीराजके साथ शादी इस शर्तपर की कि, उसको अपने ससुरका राग्य अकगानोंसे छीन देने होगा मुहरंमये दिनाम जब

अफगानलोग ताजिकोंमें छवलीन ये पृथ्वीराजने अघसर पाकर छैलापर चढाई की ताराबाई अख शख कस पुरुषका रूप भर निजपतिके साथ रणभूमिमें गई, फौजको शहरके बाहर छोड तारा और उसके पतिने अकेले जाकर छैलाका काम तमाम किया और फिर बड़ी होंशियारीसे अपनी सेनामें भा मिले छैलाके मारे जानेसे उसकी फौजके दिछ दूटगये और सिपाही इधर उधर भाग निकले, जिनमेंसे बहुताको पृथ्वीराजकी सेनाने काटहाला-इस तरह ताराने अपने घापका राज्य अफगानाके हल्कमें ठंगली डालकर निवाल लिया-पश्चात् २३ वर्षकी उम्रमें सब उपकार भूल पृथ्वीराजको उसके सालेने किसी मुच्छ निरा दरका बदला लेनेके लिये महावारके समीप मिठाभ्रमें विष मिलाकर देटिया-माया देवीके मंदिरके पास पहुंचते २ उसके पैर लरखड़ाने लगे और जीमपर घुटि उग आये तब तो उसको मालूम हुआ कि, छलसे मेरे प्राण जाते हैं-निदान तारा अपनी रानीको तुरंत कहला भेजा कि, मेरा अन्त समय है, भानेमें जरा भी बिलम्ब न कर. विष लीक्षण था, रानीके पहुंचनेसे पहिलेही पृथ्वी राजका देहांत होगया-रानीने पहुंचकर पतिके मृतक शरीरको गोधमें लेकर सत् किया-इन दोनों धीरोंके नामकी राजस्थानमें अबळी बड़ी प्रतिष्ठा है-

तुक्षोजीराठ हुल्कर-(इन्दौरकी महारानी अहिल्याके सेनापति) इन्दौरराज्यके संस्थापक मल्हरराव हुल्करके वंशमेंये मल्हररावके बाद जब उनकी पुत्रवधु अहिल्याके शिर राजकाजका भार भान पड़ा तो उसने तुक्षोजीको सुयोग्य समझ अपना सेनापति नियत किया और अनेक काम जो खी होनेके कारण महारानी सुद नहीं करसकती थी इनको सौंपे ये बड़े स्थिर मक़ति, धर्म-भीरु, रणकुशल और राजनीतिनिपुण ये महारानी अहिल्यासे मातृश्री कहकर बोलते थे और वह भी इनको पुत्रवत् मानती थी-

ये ईश्वरसे डरते रहते थे-कभी कोई काम पेसा नहीं किया जिससे इनकी स्वामिभक्तिमें शंका उत्पन्न होती स० इ० १७९५ में महारानीके बाद इन्दौरका राज्य इर्हीको मिला स० इ० १७९७ में सिधारे और इनका पुत्र प्रसिद्ध जसवंत राठ हुल्कर गद्दीका मालिक हुआ

तुञ्जीन-(काश्मीरनेशा) निजपिता राजा जलीकके बाद वि० स० से १२६ वर्ष पहिले गद्दीपर बैठा-३२ वर्ष राज्य किया-ये भुव्रु था और इसकी रानी वाक्यपुष्टा नास्तीने अग्निमें प्रवेश करके वेद त्यागी थी धानकी खेती मारे जानेसे एक समय इसके राज्यमें मकाल पड़ा था तब इसने कोशका सब रूपया प्रसाका दुःख मेटनेमें खर्च करदिया था-मादघाट देशमें इसने सड़कोंके किनारे दोनों तरफ वृक्ष लगवाये थे हिमालयकी चोटीपर सुङ्गनाथ शिवका मंदिर इसका बनवाया हुआ अवसक, विद्यमान है-प्रसिद्ध पंडित चन्द्रक इसीके वक्तमें हुआ

तुलसीदास गोस्वामी—(रामायणके कर्ता) राजापुर

रहनेवाले सर्जुपारी ब्राह्मण वि० सं० १५८९ में जन्मे थे सु० कृ० रा० कृष्ण
घलीमें लिखा है कि, इनका पथार्थ नाम रामबोला था, पिताका नाम भद्रमण्डल,
माताका हुलसी, समुरका दीनबन्धु पाठक और स्त्रीका रसावली था. न्याय
शास्त्रके मतानुसार मूलनक्षत्रके प्रथम चरणमें जन्मनेके कारण माता पिता
तत्क्षण इनको त्यागदिया था, सु० कृ० विनय पत्रिकामें लिखा है—

“जननी जनक तप्यो जनम, करम भिन विधि चिरज्यो भवबेरे.”

नरसिंहदास नामक एक साधु इनको पढ़ापाय उठाकर सोरोंमें ले जाये थे—परि
उक्त साधुने इनको रामकथाका प्रेमी बनाया और सचेत होनेपर सेवा करलिया
कुछ दिनोंबाद महारामा दीनबन्धु पाठकने इनको सुयोग्य जान अपनी
विवाह दी ये ऐसे खेण थे कि, १ दिनको भी अपनी स्त्रीकी भिदा नहीं करत
निदान इनका साठा भवसर पाकर अपनी बाहिनका एक दिन लिवा लेगए
घर आकर जब इनको हाल मालूम हुआ तब ये तुरंत सुखरालको चलदिये
अभी मिलभेंट भी नहीं पाई थी कि, ये जापहुंवे, निदान छजित हा
“जितनी प्रीत तुमको मेरे हाड़ मांसके शरीरम है, इतनी प्रीति यदि रामके
होती तो क्या बात थी” स्त्रीका वचन सुन गुसाईंजीको वैराग्य उत्पन्न
और उची क्षण घरसे निकल काशीकी राह ली और ईश्वराराधनम तत्पर हुये
पश्चात् चित्रकूट, प्रयाग, अयोध्या, जगन्नाथपुरी और ब्रजमें विचरे—रामायण
रचनाका आरम्भ अयोध्याजीमें रहकर किया था यथा सु० कृ० रामायणे बालकाण्ड-

“संघत् सोलहसौ इक्तीसा । करै कथा हरिपद घर सीसा ॥ नौमी भीम
मधुमासा । भवधपुरी यह चरित प्रकाशा” ॥ कवि वेनीमाधवदासजी जो इन
साथ बहुत दिनोंतक विचरते रहे ये लिखते हैं कि, गुसाईंजी बड़े महारामा, राम
पासक, महायोगी और सिद्ध थे सिद्धताके विषयमें अनेक उदाहरण माभा
भक्तमालमें लिखे हैं राजे, महाराजे, मेट, साहूकार, पंडित, विद्वान् सबही
इनकी प्रतिष्ठा करते थे और देखीही प्रतिष्ठा इनके नामकी अक्षतक है और
रहेगी इनके रवे प्रन्याये देखनेसे विदित होता है कि, ये ४ वेद, ६ शास्त्र, १८
पुराण तथा अनेक और विधाभावे पूर्ण हाता होकर परम नीतिज्ञ थे उन दिनों
बादशाह अकबरका राज्य था, पर इनको राजद्वारमें रहना पसंद न
अपनी मृत्युके विषयम यह दौहा कई वर्ष पहिले कह दिया था—

दो०—संघत् सोलहसौ असी, इसी गंगये तीर ।

आयनशुक्रा सप्तमी, तुलसी तर्ज शरीर ॥

गुसाईंजीके अन्तिम वचन यह थे

दो०—राम नाम यश पर्णिके, भयो चहत भव मौन ।

तुलसीके मुख दीजिये, भवही तुलसी खान ॥

गुर्साईजीका जन्म राम उपासनाके प्रचाराथही इस जगत्में हुआ था, जब तारसमें इनके रहनेसे रामसर्वाचारोंतरफ फैली तो वहाँके बड़े २ पंडित विद्वान् इनसे शास्त्राय करने आये और कहा कि, भापाका प्रमाण बतलाइये उत्तरमें गुर्साईने निम्निस्य दोहा पढ़ा-

दो०-हर हरि यश सुरनर गिरा, घणाईं संत सुजान ।

हाडी हाटक चार चिर, राधें स्वादसमान ॥

जब पंडितोंने उससमयके प्रसिद्ध विद्वान् मधुसूदनाचाय दण्डी स्वामीसे आकर यह बात कही तो स्वामीने यह श्लोक पढ़ गुर्साईजीको धन्यवाद दिया-
श्लो०-परमानंदपद्मोऽयं जंगमस्तुलसी तरु ।

कवितामञ्जरी यस्य रामधर्मरभूषित ॥

अकबरके मंत्री रहीमखानखाना गुर्साईजीके परममित्र थे एकदफे गुर्साईने उनके पास यह समस्या लिखकर भेजी- "सुरतिय नरतिय, वैशतिय, वैधन हि सबकोय" खानखानाने निम्निस्य पद बनाय दोहा पूरा किया-

"गर्भालिये हलसीफिरै कि तुलसी सो सुत होय" कुछ विशेष वृत्तांत गुर्साईजी को छोराय कवीश्वरके सम्बंधमें है (देखो छोराय) निम्निस्य ग्रंथ तु कृ मिले-

मानसरामायण, दाहावली रा०, कवितावली रा०, छंदावली रा० धरवै रा० प्रप्य रा०, कुण्डलिया रा०, रामान्नामत्र, कलिधर्मा धम निरूपण, हनुमान् रा०, हनुमान्बाहुक, संकटमोचन, रामशलाका, कृष्णगीतावली, रामगीता वली, सतसई, जानकी मंगल, पावतामंगल, रामनेहू, वैराग्यसंदीपनी, कड़काछद, शलाकाछंद, शूलाछंद, सूर्यपुराण और अनेक भजन । इन सब ग्रंथोंम मानसरामायण की शोभ्य है उसका प्रचार इस देशमें घर २ है पंडितसे मूखतक सब लोग उसको पढ़ते हैं और निजबुद्धिके अनुसार भय लगाते हैं "अक्षरवामधेनु" की कहावत के ग्रंथपर ठीक २ घटती है

तेगूबहादुर-(सिक्खोंके गुरु) ये गुरु हरगाविंदके कनिष्ठ पुत्रथे और नाना जीके उदरसे अमृतसरमें पैदा हुयेये-१५वकी उम्रमें इनका विवाह हुआ स० १६६४ में गुरुभाईजी गद्दीपर बैठे औरगजेधने इनको दिल्ली बुलाकर सम्मान हो जानको कहा जब दन्वोंने नहीं माना तो उस दुष्टने इनको मरवा लाया सिक्खोंके अंतिम गुरु गोविंदसिंहजी इनके पुत्रथे स० १६१५ की, ५४ वर्षकी उम्रमें मारेगये

तैमूरलङ्ग-(अमीर तैमूर तुर्किस्तानका बादशाह) खोजखाना तातारीके शम स० १३३६ की साल समरकंदमें पैदा हुआ थाप इसका गढरियका शा करताथा बच्चपनके खेलोंमें ये लड़कोंका सदांर बनकर लड़ाइ किया त्वाथा स्वप्रफळ तथा मंत्र निकाळने और ज्योतिष पढनेका इसको शौक था.

धर्मसम्बन्धी शिक्षाभी कुछ पाईयी मुसलमानी मतको मानताया पहिले
 अनेक कठिनाइयोंका सामना दृढता सहित करके तदुणाइके शुद्धमें इसने
 कईवर्षे बादशाहके दरबारमें राजदूतका पद पाया बादशाह योंदेही कि
 इसकी धारणा और सुंदर स्वरूप देखकर सुश्र होगया, और उसन अपनी
 इसको विवाहकी बादशाहके मारे जानेपर तैमूर लङ् भिड़कर समरकन्दका
 शाह बन बैठा फिरसो इसने पशियाके प्राय सबही मुल्क लूटे और उजाड़े
 ईरान, अफगानिस्तान, तुर्किस्तान और हिंदोस्तानपर चढाई की-ये निदर्श जहाँ
 वहाँके लाखों मनुष्योंको बध कराके तमाशा देखा-इसका बपन या कि,
 आस्मानपर एक बादशाह है वैसेही पृथ्वीपर एक बादशाह होना चाहिये कि
 स्वानपर चढाई करके दिल्लीनेरेश मुहम्मद मुगलकको परगस्त किया और
 धन देता कि, ९० हाथियोंपर लादकर समरकंद भेजा भरउसे? लाख मनुष्य
 करके लेगयाया पर जब उनके खान पीनेका प्रबन्धन बन पडा तो उन सबके पिर
 वाढाए पश्चात् इसने मुल्क शामपर चढाई की और वहाँके बादशाहको कैद
 लाया स ई १४०५ में खानपर चढाई करनेके लिये ३ लाख सेना सहित
 किया पर रास्तेहीमें अफमे फँसकर ७१ वर्षकी उम्रमें मरगया इसने का
 सलतनत नहीं स्थापनकी पर अनेकदेशोंपर चढाई करके माल अस्वा
 लूटा और लाखों मनुष्योंको नष्ट किया हिन्दोस्तानके मुगल बादशाह
 यंशोरपदये ।

दण्डी-(सम्कृत कवि) राजा भोजके समयमें हुये भोजका समय इत
 राजेंद्रलाल मित्रने बहुत घादानुवादके बाद स ई १०२६ से १०८३ तक
 कियाई दशकुमार चरित्र तथा काव्यादश आदि साहित्य ग्रंथ इनके
 हुयेहैं पदलालित्यके विषयमें प्रसिद्धही है कि, "दण्डिन पदलालित्य" एक
 बहुत बडी सभा हुईयी उसम दण्डीजीने अपनेको घालीदाससेभी श्रेष्ठ कपन
 याया, पर इन दोनाके न्यूनाधिक्यका निणय वीन करसकताया, निदान पर
 सरस्वतीका भाषाइन कियागया और घटमेंस यह थावान निकली "दण्डि
 कापिदण्डी, धविदण्डी न संशय"

१. दत्तकवि- देखो देवदस घानपुरनिवासी-

दत्तात्रेय-भरिमानक पुत्र अनुसूयाके उदरसे जन्मेये ये बहरी
 पाजीहें जिनके चरण परम पुनीत ज्ञान सीतामाताने घनोवासके समय
 दत्तात्रेयके ३ पुत्र दत्त, सोम और बुवासा हुये दत्तात्रेय बडे विवेकी प नि
 २४ गुण उन्नत विषये पृथ्वी, वायु, भावाश, जल अग्नि, चंद्रमा, सूर्य, ब्रह्म
 अजगर, नमक, पतङ्ग, गृह्य की मन्थी, मन्त हाथी, भौरा, हिरन, मउली,
 या, गिद्ध, मालिन्य, कन्या, तीर बनानेवाटा, सप और मवर्दी

दधीच ऋषि-अयवणऋषिके पुत्रपे इनका नाम वेदोंमें आया है ये उसस-
मयमें हुये जब हड्डि के श्लोका प्रचार था दधीचके हाड अत्यंत पोटे और लम्बे
चौड़ेये एवं देवताओंने असुरोंसे तंग भाकर बुढ़े दधीचसे प्रायना की कि, आप
अपने जिस्मकी हड्डिया हमको वज्र बनानेके लिये दीजिये, ताकि हम उनसे असु-
रोंके मारनेमें समयहों दधीचने धमकाय जान अपने प्राण देना स्वीकारकिया

दमयन्ती-इसका पुरानाम भुवनमोहनी दमयन्ती था ये विदमं (विपद)
राजा भीमसेनकी कन्यायी विवाह इसका नियम (मगधदेश) के राजा नल-
का साथ हुआ था विवाहके बाद १२ वषतक समय सुख खनसे बीता और इसी
वषतरमें १ पुत्र तथा १ पुत्री भी पैदा होगइ पश्चात् महाराज नलपर विपत्ति
पडी और उस क्लमयमें रानी दमयन्तीने निज पतिको खूब साथ दिया, जिसका
दृशात् नलके चरित्रमें लिखागया है (देखो नल) दमयन्ती अत्यंत सुशील,
गुणवती और पतिव्रता थी

दयानन्द सरस्वती- (आध्यसमाजाके संस्थापक) वि स १८८१ में
काठियावाड़के एक धनी भवदीच ब्राह्मणके घर जन्मे और मूलशङ्कर नाम पढा
बच्चपनहीसे पढने लिखनेका बडा चाव था और बुद्धि अत्यंत तीव्र और चपलथी
जब १९ वषके हुये तो इनको छोटी बहिन तथा इनके चचा मरगये, जिससे इनको
घरान्य घरपन्न होगया यह देख मातापिताने विवाहकी तैय्यारी करदी विवाहके
बखेहेसे जन्मभरको बचनेके लिये ये स० वि० १९०३ में घरसे सदैवके लिये नि-
कल गये मागमें बडे बडे विद्वानोंस मिले और पूणानन्दसरस्वतीके शिष्य हो
संन्यासी होगये और दयानन्दसरस्वती नाम पाया इसीप्रकार विचरते हुये ३०
वषकी उम्रमें प्रथमकृम हरिद्वारका गिया पश्चात् प्राय ४ वषतक उत्तराखण्डम वि-
चरते रहे वि० स० १९१६ में मयुरा भाकर विरजानन्दसरस्वतीसे कई वषतक
विशेष विद्या पडी, जिसका श्रुतात् विरजानन्दसरस्वतीके सम्बधमें देखो फिर
मुक्तप्रदेश, पंजाब, बम्बई, बंगाल और राजपूताना आदि प्रान्तोंमें घूम २ वर
वैदिक मतका उपदेश किया, आर्यसमाजोंकी बुनियाद् डाली और अजमेरम
स्वरचितग्रंथोंके छापनेके लिये एक यंत्रालय खोला-

स ई १८८३ में स्वामीजीने अपने घर, पुस्तकें, धन और यंत्रालयादि-
का अधिकार त्रियोर्विंशत् उपकारिणी सभाको देकर वैदिकमतका प्रचार
तथा भनाथोंकी रक्षा करनेकी आज्ञा दी इसी साल स्वामीजीका देहात् हुआ
इन्दौर, उदपपुर, जोधपुर तथा शाहपुरानेखाने आपकी बड़ी प्रतिष्ठा कीयी-
शाहपुराहीमें प्रथम जुकामसे पीडितहो स्वामीजी अधिक बीमार होगयेये-बीमार
होनेका विशेष कारण कुछ और है जो यहां नहीं लिखा जायगा-रोग निवृत्तिकेदि-
ये शाहपुरासे भादू और वहाँसे अजमेर पधारे, पर रोग बढ़ताही गया- मन्तिम

द्विन स्वामीजीने मजमेरतनाजके सभासदोंके साहजने ईश्वरकी स्तुति हुये इस लोकका सम्बन्ध छोड़दिया-आपकी यादगारमें लाहौरमें पेन्शन खातिग और बरेली तथा फीरोजपुरमें अनायालब जारी कियेगये-पहुं- ऋग्वेदका भाष्य और सत्यायप्रकाश आवि अनेक ग्रंथ आपके रचे हुये हैं

दयाराम ठाकुर-ये जातिके जाट थे-इनके पूर्वजडा मकसतसिंह पुरानासे आकर प्रायः स इ १६०० में मुरसान जिला मथुराम बसे-मकसत सिंहके प्रपौत्र ठा नन्दराम स इ १६०६ में १४ पुत्र छोड़कर मरे, जिनमें से करनसिंहकी संताति अबतक मुसॉनमें राज्य करतीहै और जयसिंहके पुत्र ठाकुर दयाराम हायरसवालें थे-ठा दयारामके पास जागीरमें माट, महावन, जहसनगढ, सहमक और खंडौली इत्यादि ग्रामथे-इनकी गढी हापराममें मजबूत बनी हुईथी-स इ १८१७ में भेगरेजी फौजने दयारामकी गढी आ घेरा-दयाराम बड़ी धीरतासे लड़े, पर अतमें हारे और रातमें भागवर भरतपुर पहुँचे ब्रिटिश गवर्नमेंटने उनकी जागीर जप्त कर ली और खखके छिये १००० रु मासिक पेन्शन दी-अयोमसार तथा सुतना नामक दो पुस्तकें ठा दयारामहॉके किसी नौकरकी रची हुई हैं

स इ १८४१ में ठा दयाराम परमपाम सिधारे-सन ५७ के गूदरकी खरखवाहीमें दयारामके पुत्र ठा गोविंदसिंहका ५ हजार रुपया नकद और १३ गांव तथा कोयलकी जमींदारी और राज खिस्ताब मिह्या रा गोविंदसिंहके पुत्र रा०हरि नारायणसिंह अबतक विद्यमान हैं

दलीप-सूर्यवंशी राजा स्युफे पिता थे रामचंद्र महाराज इनकी चौथी पीढ़ी अबतरथे-नाछिदासकृत स्युवशमें इनका पूणवृत्तांत है-ये बड़े यशस्वीय

दलीपसिंह-महाराजा, जी सी यस भाइ (पंजाबनरेश) पंजाबके महाराज रणजीतसिंहके कनिष्ठ पुत्र रानी चदावें उदरसेये महाराज होयें-इस मारेजानेपर स इ १८४३ की साल १० वर्षकी उम्रमें गद्दीपर बैठे इनके बचपन इनकी माता रानी चंद्रा राज्यका सब काम धरतीथी लहिनासिंह हीरासिंह, सुसिंह और जवाहिरसिंह वृमश घंजीर हुए और खालसा फौजके हाथसे जवाहिरसिंहके बाद पंजाबमें पूरी बदममारी फैल गई और घोड़ बजीर मुकर्र हुआ फौज परई-पदवी होगईथी पर्य रानीन बुरुका भगेजासे मिह्यापर नष्ट युक्ति बिखारी अंग्रजों और खिरगोंशी सनामें यह न दाय्य हुई आतिर पुनः छदाइस खिखदल बिलपुल नष्ट होगया और १६ मार्च स इ० १८४० को सिधारोंमें अजरलसाहियस पास हाजिर होकर हायिया रणनिघे २० मार्चको नरयेनरल हिंदवा दुबस पंजाबकी जमीने विपन्न जारी हुआ उरमा. २५ में ब्रिटिशगवर्नमेंटका आगलकारी हा इ दलीपसिंहका ५ लाख रुपय सा पेन्शन मिसी और परता इमें विनसिंह ७००० रुपये यहाँसे इहाँ

० ई० १८२५ में इंग्लैंड चले गये और एक मिश्रकी सुदरीने शादी करती इंग्लैंड में उनकी प्रतिष्ठा बढ़े २ लाडाके बराबरपी स० ई० १८८७ में इनको पञ्जाब देखनेकी आज्ञा मिलीपी पर इन्होंने जहाजपर सवार होतेही सिक्ख धर्म धारण किया तेससे हमकी तरफसे शक हुआ और हिंदोस्तान आनेसे रोक दिये गये इसबात पर नाराज होकर दलीपसिंहजी फ्रांस और रूसको गये पर वहां कहीं ठिकाना पाकर इंग्लैंडको लौटे, और क्षमा मागनेपर माफ्करदिये गये इसीसमय पहिली खीके मरजानेसे इन्होंने दूसरी शादी श्री प्रिंस दलीपसिंह विकटर इनकापुत्रहै और इंग्लैंडमें रहिताहै-

दशरथजी-(भवधनरेड) सूर्यवंशी राजा भजव पुत्रये-वैसल्या सुमित्रा और कैकेईनाम तीन रानियोंसे इनके रामचंद्र लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न ४ पुत्रिये इनके सुमंतभादि ८ प्रधान मंत्रीये और वसिष्ठ ऋषि राजपुरोहितये दशरथजीका अपनी तीना रानियोंपर प्रेम था, पर कैकेय सबसे छोटीपर कुछ विशेष प्रेमथी एकदके युद्धके समय रणभूमिमें दशरथजीके रथका पहिया निकलनेही ज्ञिया कि, कैकेईकी हृष्टपदा कैकेईको आसन बनपदा पच ठसने पाहियेको निकलनेसे रोक पतिकी प्राणरक्षा की इसबातपर प्रसन्नहोकर दशरथजीने कैकेईको २ भवन मांगलेनेकी आज्ञा दी, पर कैकेईन कहा कि, किसी और भवसरपरदेखा-आपका घूठ हो जब दशरथजीने रामजीको युधराजनियत करना चाहा तब रानी कैकेईने निज पुत्र भरतको युधराज तथा रामजीको १४ वर्षके लिये धनोवास देनेका हठ किया और कहा कि, रणभूमिमें दिये हुये दोनों भवन भव पूरे कीजिये-दशरथजीको रामचंद्रपर इतना प्रेमथा कि, वे उनकी क्षण मात्रभी जुदा नहीं करसकतेये इसलिये उन्होंने रानीको बहुत समझाया पर उस आमागिनीने एक न माना-दशरथजी सत्यप्रतिज्ञ थे, निदान उन्होंने रामधनोवास सरीखे अनर्थ होनेपरभी " रघुकुलीरिति सदा शक्ति आई। प्राण जायें पर ध्वन न जाई " इस अपने ध्वनको पूराकिया और रामधियोगमें हा राम २ फाह प्राण त्याग दिये-दशरथजीके घृतांतसे यही नीति निकलती है कि, बिना पूर्वापर बिचार किसी मनुष्यसे धायदा नहीं करना चाहिये और धायदा करलेनेपर उसका निवारह मरणपर्यंत करना चाहिये

दक्ष प्रजापति-ब्रह्माजीके मानसी पुत्रये-ब्रह्माजीने इनको सष प्रजाप-तियोंका सदांर सुकरंर कियाथा प्रसृति नामक स्त्रीसे इनके ६० कन्यायें उत्पन्न हुई जिन्मेंसे १३ कन्यपजीको विवाहीगइयां जिनसे देव असुर मनुष्य, पखेरू इत्यादि उत्पन्न हुये इसीप्रकार इनकी और कन्यायेंभी विवाही गईं जिनसे बहुत सृष्टि उत्पन्न हुई पश्चात् दक्षने दूसरा विवाह किया जिससे सती आदि अनेक कन्या उत्पन्न हुई सतीका विवाह शिवजीसे हुआ-एक श्रेष्ठ ब्रह्मसभामें शिवजी और दक्षप्रजा

पतिमें किसीबातपर झगड़ा होगया पीछे जब ब्रह्माजीने दक्षको सब योंका सदाँर नियत किया तो दक्षने गंगासट इच्छारमें एक महायज्ञ किया यज्ञमें शिवजी तथा सतीजीको दक्षने द्वेषके कारण नहीं बुलाया-सतीजी यज्ञमें खबर पाकर शिवजीके घरजनेपरभी निजपिताके घर बेमुलायेही चलीगयी-पहुँच जब सतीजीने शिवजीकी तथा अपनी अप्रतिष्ठा देखी तो इधनकुण्डमें कूट कर देह त्यागदी-सतीजीके जलमरनेकी खबर जब शिवने पाई तो उन्होंने भी भद्रको कोप करके भेजा-धीरमद्रने यज्ञ विध्वंस करदिया और दक्षका भिरक डाला-इन्ही दक्षप्रजापतिके धर्ममें सूर्यवर्षीयोंके मूळ पुरुष महाराज सूर्य हुंटे

दाऊद-(इसराइल जातिके दूसरे यादशाह) पहिले निजपिता जर्भत भेड बकरियाँकी देखभाळ रखतेथे-बादशाह शावके मरने पर धीमपुत्रके राजा हुये-३०वषतक राज्य किया और जुद्धसलम तथा भासपासकी कामोंपर परास्त किया-जुद्धसलम इनकी राजधानी उस समयमें बड़ी रानकपर इन्होंने अपनी प्रजाकी गिनती कराइयी-भाखिर निजपुत्र सुलेमानको जितने राजपाट सौंप विररिक्त होगये-ईसाइयोंकी धमपुस्तक बेधिलका एष भाग इनका बनाया हुआहै-

स ई से १०७४ वष पूवजमे

स ई से १००१ वष पूव मरे-

दादाभाई नौरोज़जी(यम पी)-सबसे पहिल और केवल एवहीपेसे हिंदोस्तानी हैं जो पालियामटके मेम्बर हुंग हैं-नेशनल काँग्रेसहिंदके मद्रा सहायक हैं जब काँग्रेस पञ्जाबम हुई थी तब आप इंग्लैंडसे भायर उसके प्रेसीडेण्ट बनेथे लाहौर स्टेशनसे शहर तक बड़े २ रॉसाने आपकी गाड़ी खींची थी हिंदियामटके मेम्बर होवर आपन इस देश की यही मददकी है स ई १८२५ में एष पारसीधरानेमें बम्बईम जन्मे एल्फिन्स्टन कालिजमें विद्या पढी और बादको इसीकालिजम मोफेसरीका ओददा पाया अनेक सभाओंके मेम्बर रहे श्रीनिदादाका उषाग किया "रास्तगुप्तार" नामक एष समाचार पत्र जारी किया था स ई १८५१ म इंग्लैंडसे विजारत करनेवाली एष व्यापारिक कम्पनी स्थापन की और उसम शरीक हुये स ई १८५५ म इंग्लैंड खल गये और वहाँ रहिनेलगे स्वभाव पेसाहै वि, संकटों दोस्त आपके यहाँ भी होगये हैं हिंदोस्तानस जानेवालाकी सदैब मदद करतेहैं एक टफे किसी मित्र सादागरका विगड़त देग आपने उसपर २ लाख रुपयेसे मदद कीथी स ई १८७३ म महा राजा गणघाड़ चरोटापे दौघान नियत होकर हिंदोस्तानको आपे पर घोटकी दिन पीछ इस्तेफा देदिया स ई १८७५ म बम्बई फौंसलके मेम्बर होगये और एकाही वर्षबाद बम्बई लेजिस लेटिव फौंसलकी मेम्बरी पाइपशाव फिर इंग्लैंडमें गये और किन्सयरीकी तरफसे मेम्बर पालियामेन्ट हुये

दारा- (Darius Hystaspes) ये इरान (फारिस) का बादशाह था। इसका राज्य फारिससे अरुगानिस्तान तक फैला हुआ था। परदेसके मतको मानता था। सेना इसकी ५ लाखसे भी ज्यादा थी। सिक्ंदर आजमके घात फिलियसे इसकी लड़ाई रहीं। १२ वष राज्य करके मर गया और उसका बेटा दाराद्वितीय तख्तपर बैठा। फिलियके बाद सिक्ंदर आजमने तख्तपर बैठ कर दाराद्वितीयपर ३ हफ्ते बदाई की दारा सीनों दफे द्वारा आखिर स ई से ३२० तक पाहिले दाराको उसके एक सदांरने मार डाला और सिक्ंदरको खबर का सिक्ंदरने दाराकी लाशपर जाकर गम किया और नमकहराम घातकोंको स त्त सजा दी उसके मुल्क और मालपर अधिकार करालेया और उसकी लडकी पोशनकसे शादी करली और उसकी बेगमों तथा सदांरोंके खतवे बहाल रखे

दाराशिकोह- दिल्ली नरेश शाहजहाँका ज्येष्ठ पुत्र ताजशाहीके उदरसे स० ई० १६१५ में पैदा हुआ। आलमगीर, गुजाम तथा मुराद इसके तीनों भाई हुए २ सुबेदार थे, पर ये दिल्लीमें रहता था और बलीभाइद (युवराज) था-सब लोग जानते थे कि, शाहजहाँके बाद येही गद्दीपर बैठेगा ये दिन मुहम्मदीको नहीं मानता था और हिंदू मत्तानुगामी था-शाहजहाँ स० ई० १६५७ में बीमार पड़ा-पह सहर मुनकर आलमगीर, गुजाम तथा मुरादने तख्तके घास्ते चढ़ाई की-दाराशिकोहने उनका मुकाबला किया पर दारा-आलमगीरने गद्दीपर बैठनेसे दूसरी वष स० ई० १६५९ में दाराको परास्त करके पकड़ लिया और उसका काला मुंह करके हाथीपर बिठलाकर तमाम शहरमें घुमाया और मरवा डाला दाराको इस हादसे हाथीपर सवाग देख महिलाकी बेगमोंकी किलकारिये निकलती थीं दारा बड़ा साहसी और उदार था, पर मिजाजमें क्रोध और जल्दी अत्यन्त थी सुलेमौशिकोह और सिपहिरशिकोह उसके २ पुत्र थे

दासकवि-दसो भिखारीदास, बेनीमाधो दास,

दिनकरराव- (राजा मुशोरे खाससर दिनकरराव बहादुर, के सी यस भाई) महाराष्ट्र ब्राह्मण बड़े मिलनसार और उदार चित्त थे-इनके पूर्वज बम्बईमातके रहनेवाले थे जब स० ई० १८५४ में महाराज जीवाजीराव साँघिया ग्वालेयरकी गद्दीपर बैठे तो सर दिनकरराव बजीर थे महाराज जीवाजीने इनकी सुसम्पातिको मान रियासतमें अनेक सुधार किये सन् ५७ के गद्दरमें ग्वालेयर राज्यकी तरफसे जो मदद त्रिटिश गवर्नमेंटको दी गई उससे पुरस्कारमें महाराज साहिबको सा बहुत फुल मिला लेकिन सर दिनकररावको भी के सी यस भाई, की उपाधि मिली-ये बड़े सुप्रबन्धकत्ता थे कानपुर, आगरा और बनारसमें इनके अनेक मकान हैं स० ई० १८५९ तक ग्वालेयरमें प्रधान मंत्री रहे, पीछे

रियासत धौलपुरके सुपरिटेण्ड नियत किये गये बरोडा नरेशके रजौहेन्दका सि देनेके मुकद्दमेम जो कमीशन बैठा था उसका मेम्बर ब्रिटिश गवर्नमेंटने इनके भी मुकद्दर किया था इन की रायमें राजा निर्दोष था महारानी विक्टोरियाके कैम्बेरीहंदका खिताब लेनेपर जो द्धार दिल्लीमें हुआ था, उसम सर दिवकरायको राजा मुर्गारि खास बहादुरका खिताब मिला और पश्चात् गवर्नमेंटकी आह्रासे यह खिताब खदैवके लिये इनके उत्तराधिकारियोंका दिया गया इनके पुत्र रघुनाथराव दिनकर स० इ० १८५८ म जमे और भागेरम रहत हैं-

दीनदयालगिर-(बाबा दीनदयाल गिर गुर्साई) ये बरसाना जिला मथुराके रहनेवाले महात्मा जानिसे ब्राह्मण वि सं० १९०० के लगभग विद्वमान् थे-महाराजा रीवा इनका बहुत मानते थे-उत्तम कथियोंमें इनकी गणना है-निम्नस्थ ग्रय इनके रचे हुये हैं-अनुरागबाग, दृष्टांततरङ्गिणी, अन्योक्त कल्पद्रुम, काशीपंचरत्न, शंकरपंचक, दीपपंचक-

दीनदयाल-(राजा दीनदयाल मुखर्जरजग) ये हिंदोस्तानी फोटोग्राफों म अत्यंत मनिष्ठ हैं-लाह्ला हिम्मताराय अग्रवाल वैश्यके घर सधना जिला मेरठमें स०इ० १८४६ के साल पैदा हुये मुख्य निवासस्थान सिकन्दरबाद् है प्रथम शिक्षा सधनावे सहसीली स्कूलमें पाई और स० इ० १८६६ में तामसन फारिग स्कूलसे ओषरासियरीका इम्तिहान पास किया-

पश्चात् २० वय तक इन्दौरके शरिसे तामरित्तम नौबरी करके पेन्शन लीं तब से खास तौरपर अक्सी तस्वीर खींचनेका पेशा इच्छित्यार किया है-स०इ० १८९४ में मिजाम हुंदराबादने आपकी योग्यता से प्रसन्न होकर आपको राजा मुखर्जरजगका लिताब दिया और बड़ी प्रतिभार्की आपका धारखाना बम्पइम बहुत बढ़ाई और देखने लायक है बडे मिलनसार और योग्य पुरुष हैं जो काम आने करनेलायक हो तो तुरंत मदद करनेवा तैय्यार होजाते हैं आपने कई मक लायक बटे हैं

दीनदयालुशर्मा-ये पंडितजी ब्रह्मदक रहनेवाले एक विद्वान् ब्राह्मण हैं, इनके सारगभित उपदेश सिकने नहीं सुने होंगे हरजगहकी धमलभार्की यही इच्छा लगी रहती है कि, पंडित दीनदयालुजी पधारवर उपदेश हैं परंतु ये दीनदयालुजी ग्य हैं और धमसभावे बहुत पंडितजीये उद्योगसे भारत धर्ममहामटल स्थापन हुआई और उसकी रनिम्ती फरिगई है और अनेक राजे महाराजे उसम शरीय हुये हैं

बाह्ला पंडितजीकी गंसी तदुपमदिनी और सुलेप्येय होती है कि, जिस यो मृदवर पड़े २ अंग्रेजी विद्वान् आश्रयमें आजाते हैं और तारीफ किये जिमा

नहीं रहसकसे लाखा ही मनुष्य पंडितजीके उपदेशोंको सुन धमपगपरसे षिग-
आनेसे रुक गये हैं

दुर्गावती—(गढमढलकी मरदानी रानी) बुदेखण्डकी प्राचीन राज-
धानी महोवाके चंदेलराजोंकी बेटी और गढमढलके गोह राजा वलपतशाहकी
रानी थी—गढमढलमें गोंदोंका राज्य किसी जमानेमें बड़ा प्रबल था अब यह रा-
ज्य नष्ट भ्रष्ट होकर अंग्रेजी अमलदारीके सुबे नर्मदा और सागरमें मिलाहुआहै
दुर्गावती और वलपतशाह दोनों अत्यंत स्वरूपवान् थे और इनका विवाह भा-
सुरी विधिसे हुआ था वलपतशाह विवाहसे ४ वष बाद एक ३ वर्षका पुत्र छोड़
कर मरगया रानी दुर्गावतीको बालक पुत्रके निमित्त राजकाज सहायता पढ़ा
जब लड़का कुछ बड़ा हुआ तो स ई १५६४ में वादशाह अकबरने गढमढल पर
घटाह की—दुर्गावती १५०० हाथी ७ हजार सवार और बहुतसे प्यादे लेकर धनुष-
बाण तथा अन्य अस्त्र शस्त्र धारण कर रणभूमिमें सुगलोंसे युद्ध करने आई
२ दफे उसने मुसलमानोंकी फौजका मुंह फेरदिया और दौंत खट्टेकरदिये सी-
खरी दफे रानीका पुत्र जो अभीतक बड़ी वीरतासे लड़ा था घायल हुआ और जब
बहुत बधिर बहिनसे उसको मूछा आने लगी तब रानीने आज्ञा दी कि कुँवरको सम्भ्रमें
लेजाओ कापरोंको भागनेके लिये यह अच्छा बहाना मिला यहाँतक कि, रानीके
सास केवल ३०० आसमी राहिये पर रानी तो भी रणसे नहीं हटी—एक वीरगण बाण
उसकी आँखमें लगा जिसको उसने हाथसे पकड़कर खींच लिया—फिर १ तीर
उसकी गर्दनमें लगा, रानीने उसकोभी खींचकर निकालबाह्य पर अत्यंत रु-
धिर बहिनसे रानी को हाथीके हाथपर मूछा आनेलगी तब तो वैरीके हाथमें पढ़नेके
भयसे रानीने छातीमें बछों भोंककर प्राणत्याग दिये—सेनापतिलोग रणसे भागनेकी
आज्ञसे बचनेके लिये अपनी स्वामिनीके मृतक शरीरपर टुकड़े २ होकर कटमरे-
रहीमेन साक्षि लिखते हैं कि, दुर्गावती की समाधि भयतक उन पर्वतोंके बीचमें
बनी हुई है जहा युद्ध हुआ था २ पत्थरके खम्भे समाधिके समीप खड़े हुये हैं—
लोग कहते हैं कि, ये रानीके ढोल थे जो अब पायाण होगये हैं—लोग यह भी
कहते हैं कि, आधी रातके समय पर्वतोंमें उन ढोलोंका भयंकर शब्द लड़कईमें
मार गये हुये वीरसेना पतियों की आत्माओंको समाधिके निकट बुलानेके
लिये हुआ करताहै पथिव लोग जो उस निर्जन वनमें होकर निकलते हैं
बिल्लोरके टुकड़े जो वहाँ अधिक साखे मिलते हैं रीत्यानुसार समाधिपर बढाते
हैं—रानी दुर्गावतीने भाषा कवि,हरनायको सवालक्ष रुपया इनाम दिया था, रानी
दुर्गावतीके वनवाप मदन महिष्ठके खरौंदर भयतक बिल्लोरकी बहानोंके बीच
जबलपुरसे ११ मील दूर पड़े हैं

दुर्वासा ऋषि—अभि ऋषिके पुत्र, पुराणोंमें इनके क्रोधकी सूचक अने-
क कथोप हैं—इन्होंने अनेकोंको शाप दिया था

दुर्योधन-धृतराष्ट्रके सौपुत्र कौरवोंमें सबसे बड़ा था-जब धृतराष्ट्रने अपने सबसे बड़े भतीजे युधिष्ठिरको युधराज नियत करना चाहा तब दुर्योधनने विरोध करके युधिष्ठिर आदि पाँचों पांडवोंको १४ वर्षके लिये वनवास दिखवा दिया जब पाण्डव वनवाससे वापिस आये तो धृतराष्ट्रने उनको आधा राज सौंप दिया, पर दुर्योधनने जुभा छिटाकर उनका राज्य फिर जीत लिया और १४ वर्षके लिये फिर वनवास दिखवा दिया-वनवासके समय दुर्योधनने पांडवोंको मरवा डालनेके अनेक उपाय किये पर वे भी नाफिर न थे, एवं निष्फल दूसरीबार वनवाससे लौटकर जब पांडव लोग आये राज्यके दावेदार हुये तो दुर्योधनने वेनक इनकार किया-छाचार महाभारतकी छद्माद् शुरू हुई जो १८ दिनतक रही इस युद्धमें हिंदोस्तानके सब राजे शरीक थे-कोई कौरवोंका और कोई पांडवोंका तरफदार था १८ वें दिन जब सब कौरवदल शान्ति होशुका था तो दुर्योधन और भीष्म मल्लयुद्ध हुआ, जिसमें दुर्योधन मारा गया-रणभूमिमें पड़े ससकते दुर्योधनका देख अश्वत्थामा उसके पास गया दुर्योधनने उससे भीमका शिर काट लानेको कहा-निदान अश्वत्थामा पांडवोंके खेरमें घुसगया पांडव लोग तो वहाँ न मिले, पर उनके ५ पुत्र जो द्रौपदीके उदरसे थे मिलगये-अश्वत्थामा उनहीके शिर काट दुर्योधनके पास लेगया-दुर्योधनका दम उस वक्त निकल रहा था बच्चोंके शिर देख उसने कहा " मेरी शत्रुता तो भीमसे थी, हाय ! इन बच्चोंका गला नृया काट क्यों वंशान्त किया " ।

दुष्यंत-(चंद्रवंशी प्राचीन राजा) महाभारत तथा पद्मपुराणमें लेख है कि दुष्यंत नामक चंद्रवंशविभूषण, महातेजस्वी वेदयेदाङ्ग पारङ्गत, सर्वराजगुणा न्वित पौरव राजर्षि था-बहु धनुर्विद्याम निपुण, रूपमें कामदेव, धैर्यमें हिमाव्य, गांभीर्यमें समुद्र, ऐश्वर्यमें कुबेर, प्रतापमें इन्द्र तेजम सूर्य, स्नेहमें चंद्रमा और पमा संघमें मनुके समान था-उसने अपनी प्रजाओंका निजपुत्रोंकी समान पाळन किया था " शाकुन्तलाके गर्भसे राजा दुष्यंतके भरत नामक पुत्र बड़ा प्रतापी हुआ जिसके नामपर इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा-प्राचीन नाम आर्यावत था.

दूलह त्रिषेदी-(कवि दूलह) बनपुरानिवासी उदयनाथ कर्षादिक पुत्र तथा काठियावाड़के पंथ वि० सं० १८०३ में विद्यमान थे भाषाकाम्य उत्सम कर रहे-इनका बनाया "कविकुल कण्ठाभरण " भाषासाहित्यमें प्रमाणिक ग्रंथ है

दुशासन- धृतराष्ट्रके सौपुत्र कौरवोंमेंसे एक बड़ा धूर्त था-जब पांडवोंने अपना राज्य तथा रानी द्रौपदीको दुर्योधनके पास जुयेमें हारदिया तब दुःशासनने द्रौपदीको संरक्षार बाळ पकड़कर परीटा और उसके बदनपरसे सीर रीप आळना चाहा, पर भीष्मणकी कृपासे और इतना बढ़गया कि, दुशासन जीबते।

क गया। यह देख भीमसेनको क्रोध आया और उसने शपथ खाई कि, मैं दुशासनका रक्त पिऊगा—महाभारतकी १६ वें दिनकी छद्मार्थमें भीमने दुशासनको मार कर खून पिया और शपथ पूरी की

देवकावि—देखो देवदत्त

देवजानीसकल्पी—(Diogenes) बड़ा प्रासिद्ध त्यागी हकीम सिक्न्दर आजमेके वक्तमें यूनानमें हुआ है सिक्न्दरके तख्तपर बैठनेके समय सब विद्वान् हकीम छाग मुवारिकवादी देनेको हाजिर हुये, पर देवजानीस नहीं गया—सिक्न्दरको बड़ा आश्चर्य हुआ निदान इसके मकानपर दशनोंको गया और इसको दिग्म्बर बैठापाकर कहा “जो मांगना हो सो माँगो” इसने कहा “मेरे सामनेसे खलाजा केवल यही मांगता है” स्वभावका बड़ा चिढ़ाचिढ़ा था। या तो किसीसे यातही नहीं करता और यदि करता क्रुद्ध होकर इसीछिये कल्पी अर्थात् कुत्तेकी तरह टांग छेनेवाला इसका नाम पढगया था—कभी ० अर्द्धरात्रिके वक्त पुकारता कि, कोई है—छोग यह जान कि, किसी चीजकी जरूरत है दौड़ते—ये उनमें सोंटे लगाता और कहता “खलेजाओ” तुम भादमी नहीं हो, तुम तो इन्द्रियोंके बशीभूत कुत्ते हो ”

देवदत्त—(भाषाकवि) समाना ग्राम जिला मैनपुरीके रहनेवाला ब्राह्मण वि० सं० १६६१ में विद्यमान थे अपने समयमें भाषाकाव्यके अद्वितीय आचार्य थे। इनके रचे ग्रंथोंकी गिनती ७२ मालूम हुई है, जिनमेंसे कुछ के नाम नीचे लिखे हैं प्रेमतरंग, भावविद्यास, रसविद्यास, रसानन्दकहरी, सुजानविनोद काव्यरसायन, पिगल, देवमाया, प्रपंचनाटक, प्रेमदीपिका, सुमिळ विनोद और राधिकाविद्यास। और-गजबके पुत्र आजमेका यश उर्दोने गाया है और कवितामें अपना भोगदेव कहा है।

देवदत्त त्रिपाठी—(भाषाकवि) धान्यकुञ्ज ब्राह्मण कन्नौजके समीप फुसु-महा ग्रामके रहनेवाले छलनरुके नवाब शूजाउद्दौलाके समयमें वि सं १७०३ के लगभग विद्यमान थे शूजाउद्दौला इनकी खातिर किया करता था और कुछ वार्षिक निबन्ध भी करदिया था शब्दरसायन और अष्टयामनाम पुस्तकें इनकी बनाई हुई हैं कवितामें अपना भोगदेव कहते थे।

देवदत्त—(भाषाकवि) वर्णके ब्राह्मण जिला कानपुरके रहनेवाले प्राय-वि सं १८३६ में विद्यमान थे राजा सुमानसिंह खर्द्वारिनरेशके यहां रहते थे पद्मा कर तथा ग्यारकविसे इनकी खूब छेदछाड़ रहती थी “धारा बाँधि घुटत फुहारा मेघमालासौं” इत्यादि कवितामें राजा सुमानसिंहने दत्तजीको बहुत इनाम दिया था इन्होंने कवितामें अपना भोगदत्त कहा है।

देवलदेवी-गुजरातके राजाकी बेटी थी अपने समयमें हिन्दोस्तानमें परम सुदूरी गिनी जाती थी हिन्दोस्तानके सबही राजे महाराजे इसके शाद किया चाहते थे जब स० ई० १२९७ में सुल्तान अल्लाउद्दीनने गुजरात फतेह किया तो इतिफाकसे देवलदेवी उसकी फौजसे हाथ पकड़कर दिल्ली लाई गई और शाद जादे खिजरखोसे उसका विवाह हुआ इन दोनोंके प्रेमकी कहानी फारसी कवि बमीर खुसरौने लिखी है पश्चात् जब खिजरखोको मारकर मुबारिक खिलजी गद्दीपर बैठा तब उसने भी देवलदेवीको अपनी जोड़ बनाया कुछ दिनों बाद मुबारिक खिलजीको धक्करसे उससे गुलाम खुसरौने तख्तपर बैठकर देवलदेवीको अपनी बेगम बनाया खुसरौ स० ई० १२३० में मारा गया देवलदेवीको देवलदेवानी भी कहते हैं ।

दोस्त मुहम्मदखो सरदार-(रियासत भूपाळके संस्थापक) ये अफगानिस्तानसे भाकर सूबे मालवामें किसी राजाके यहाँ भौकर हुए पश्चात् कुछ दिन तक एक बड़ी जागीरकी ठेकेदारी करते रहे थोड़ेही दिनोंमें जगदीशपुर (इसलामनगर) आदि कई स्थान अपने अधिकारमें करके भूपाळकी शहर पनाह बनवाई और उसको फिरसे बसाया स० हि ११५३ में मरे और अपने बन्धाये हुए किले फतेहगढ़में दफन हुए-

माघ स० हि० १२०० में इनके पौत्र शरीफमुहम्मदखोने गुजरातके किलेपर चढ़ाई की किला तो छद्मसे लेलिया और गुजरातकी राजपूतवशात्पन्न जगत अखिल सुदूरी रानी कमलावतीकी प्रतिष्ठा नष्ट करनेको उपस्थित होगया रानी का नहीं करना स्वयं या क्याकि वह बलपूर्वक उसे अपने घरमें डाललेता निदान रानीने कोई टपाय न देख अमृत्य घब्र और आभूषण छाँटादिबक छिये भेजे और २ घंटेके बाद निकाहका वक्त नियत किया नियत समयपर खो साहिब आ पहुँचे और रानीया मोहिनी रूप देख कामातुर हो बार बार याताछाप करने लगे इतनेहीमें रंगमें कुछ औरही भंग होने लगा खो साहिबका मुख नीला पला होगया, गर्मसे मृच्छा होनेलगी, जल ३ पुकारने लग, फपटे फाट ३ फेंकने लगे, पखे होने लगे, गुलाब छिड़के जाने लगे, तोया सिल्दा मखगद, भागट पदवाई, पर क्या होसकता था, खोसाहिब शहीद हो चुके थे, रानीने जा कपटे भेजे थ तीक्ष्ण धिपमें रंगेदुपेये-खोसाहिबकी यह दशा देख रानी किलेकी गुमटीपरसे नभदा नदीम गूदपड़ी और कूप गई

दौलतराठ संधिया-(गालियरजंठा) माधोजी संधियाके बाद स० ई० १७५४ में १५ वर्षकी उम्रमें गालियरकी गद्दीपर बैठे माधोजी संधिया इनके दादाके भाई थे शुरूहासे दौलतराठमें निमपूयजाकी धीरता और वीरता दखलते

छगी थी माधोराव पेशवाके मरनेपर जो झगडा गद्दीके लिये हुआ उसमें इन्होंने बाजीरावका पक्ष लेकर उसको गद्दीपर बिठादिया— पश्चात् जस्वंतराव हुलकरसे इनकी ठनी जिसमें बहुतसा मुल्क इनके हाथ लगा कुछ दिनोंतक जैसा इनका बळपराक्रम था वैसा हिन्दोस्तानभरमें किसी दूसरे राजाका न था— स० ई० १८२० में जब पेशवाने ब्रिटिश गवर्नमेंटसे मेल मिलाप किया तो दौलतराव को यह बात पुरीलगी, निदान उन्होंने यह उद्योग करना शुरू किया कि, मेल कायम न रहे, यह देख ब्रिटिश गवर्नमेंट इनसे लड़नेको उपस्थित होगई अलीगढ, दिल्ली, असाई, आगरा, लखारि और अरगावकी लडाइयोंमें दौलतरावकी हार हुई आखिर मुल्क हुई, परबहुतसा मुल्क इनके हाथसे निकल गया पहांतक कि, ग्वालियर और गोंडवका फिलाभी इनके अधिकार में न रहा—४६ वर्षकी उम्रमें स० ई० १८२७की साल वैजाबाद् अपनी अपुत्रविधवाको छोडकर दौलतरावका देहांत हुआ वैजाबाद्ने जनकोजीराव संधियाको गोद बिठाया, जनकोजीकी अपुत्रविधवा या यानीने महाराज जीवाजीराव संधियाको गोद लिया—महाराज जीवाजीके पुत्र वर्तमान ग्वालियरनरेश महाराज माधोराव संधिया हैं ॥

द्राह्यायण—इनके रचे सामवेदके श्रौतसूत्र मिलतहैं, जिनमें विविधभातिके यह कथनेके नियमहैं—

द्रुपद्—पंजाबका प्राचीन राजा इसकी कथा द्रौपदीको अजुननेस्वयंवरमें जाता था महाभारतके युद्धमें चौदहवें दिन राजा द्रुपद् द्रोणाचार्यके हाथसे मारागया दस रेही दिन द्रुपद्के पुत्र घृष्टद्युम्नने द्रोणको मार अपने बापका बदला लिया, द्रोणके पुत्र अश्रत्यामाने घृष्टद्युम्नको मारडाला—द्रुपद्के शिखंडन नामक पुत्र तथा शिखंडनी नामक कन्या और भीर्यी जब द्रुपद्ने द्रौपदीका स्वयंवर रखा तब दूरसे शूरवीर पराक्रमी राजा आ उपस्थित हुये स्वयंवर का प्रण यह था कि, जो कोई बांसके ऊपर अक्रमे नौचती हुई सोनेकी मछली की परछाई पृथ्वीपर रखे हुये तेलके कटोरेमें देख ऊपर को चीर चलाकर मछली की आंखमें निशाना लगावे वह द्रौपदी को धरे—जब द्रौपदी जयमाल लेकर सबामें आई तो सब राजे उसके रूपको देख मोहित होगये, पर कोईभी अंकित चिह्नके वेधनेमें समथ नहीं हुआ—राजा द्रुपद् कहिनेहीको या कि, “धीरचिह्नान मही में जानी” कि, इतनेहीमें भिखारीके घेपमें प्यधीर पुरुष घटा जिसकी छबि प्रशंसनीय थी और जिसको देख द्रौपदी मोहित होगई—इस धीर पुपुसने धनुष घटा क्षणभरमें नियमानुसार मछलीको वेधदिया—द्रौपदीने मुरंत जयमाल उसके गलेमें डाल दी—ये पुरुष अजुन पांडव था जो वनोवासमें होनेके कारण भिखारीका घेप धारण कियेहुये था

द्रोणाचार्य—भारद्वाज ऋषिके पुत्र थे भीष्मपितामहकी सौतेली धरिन कृपासे इनका विवाह हुआ—अश्रत्यामा इनका पुत्र था—कौरवा तथा पांडवोंको धनुषेदखी

देवलदेवी-गुजरातके राजाकी बेटी थी अपने समयमें हिन्दोस्तानभरमें परम सुन्दरी गिनी जाती थी हिन्दोस्तानके सबही राजे महाराजे इसके शार्प किया चाहते थे जब स०ई०१२९७ में मुल्तान बख्शखानने गुजरात फतेह किया तो इतिफाकसे देवलदेवी उसकी फौजके हाथ पकड़कर दिल्ली लाई गई और शाह जादे खिजरखॉसे उसका विवाह हुआ इन दोनोंके मैमकी कहानी फारसी वरि अमीर सुसरोने लिखी है पश्चात् जब खिजरखॉको मारकर सुभारिक खिलजी गद्दीपर बैठा तब उसने भी देवलदेवीको अपनी जोरू बनाया कुछ दिनों बाद सुभारिक खिलजीको बधकरके उसके गुलाम सुसरोने तख्तपर बैठकर देवलदेवीको अपनी बेगम बनाया सुसरो स० ई० १३२० में मारा गया देवलदेवीको देवलदेरानी भी कहते हैं ।

दोस्त मुहम्मदखॉ सरदार-(रियासत भूपाळके संस्थापक) बे अफगानिस्तानके भावर सूबे मालखामें यिखा राजाके यहां नौकर हुए पश्चात् कुछ दिन तक एक बड़ी जागीरकी ठेकेदारी करते रहे थोड़ेही दिनोंमें जगदीशपुर (इसलामनगर) आदि कई स्थान अपने अधिकारमें करके भूपाळकी शहर पनाह बनवाई और उसको फिरसे बसाया स० हि० ११५३ में मरे और अपने बन् वायेहुण किले फतेहगढ़में दफन हुए-

माप स० हि० १२०० में इनके पौत्र शरीफमुहम्मदखॉने गुझौरके किलेपर चढ़ाई की किल्ला तो छड़से लेलिया और गुझौरकी राजपूतबशात्पत्र जगत मसिद्ध सुन्दरी रानी कमलावतीकी प्रतिष्ठा नष्ट करनेको उपास्थित होगया रानी का नहीं करना ब्यर्थ था क्योंकि वह बलपूर्वक उसे अपने परमें डाललेता मिदान रानीने कोई उपाय न देख अमृत्य वस्त्र और भाभूषण खॉसाहिबक छिपे भेजे और ३ घंटेके बाद निकाहया वक्त नियत किया नियत समयपर खॉ साहिब आ पहुँचे और रानीया मोहिनी रूप देख कामातुर हो बार बार घातांछाप करने लगे इतनेहीमें रंगम कुछ औरही भंग होने लगा खॉ साहिबका मुख मीला पीड़ा होगया, गर्मसे मृच्छा होनेलगी, अल ३ पुकारने लग, यपडे फाट ३ पेंचने लगे पखे होने लगे, गुलाब छिहके जाने लगे, सोबा तिल्ला मचगद, भागद पदगई, पर क्या होसकता था, खॉसाहिब शहीद हो चुक थे, रानीने जो कपट भेजे थे तीस्य विषमें रंगेहुयेथ-खॉसाहिबकी यह दशा देख रानी फिलेकी गुमटीपरसे नम्रश नदीमें गूदपही और कूब गद

दौलतराउ संधिया-(ग्यालिपरनेछा) माधौजी संधियाके बाद स० ई० १७५४ में १५ वर्षकी उम्रमें ग्यालिपरकी गद्दीपर बैठे माधौजी संधिया इनके दादाके भार थे शुक्रदेसे दौलतराउमें निजपूयर्गकी धीरता और धीरता द्वायकरे,

लगी थी माधीराव पेशवाके मरनेपर जो झगडा गद्दीके छिये हुआ उसमें इन्होंने वाजीरावका पक्ष लेकर उसको गद्दीपर बिठादिया— पश्चात् जस्वंतराव हुलकरसे इनकी ठनी जिसमें बहुतसा मुल्क इनके हाथ लगा कुछ दिनोतक जैसा इनका बळपराक्रम था वैसा हिन्दोस्तानभरमें किसी दूसरे राजाका न था— स० ई० १८२० में जब पेशवाने ब्रिटिश गवर्नमेंटसे मळ मिलाप किया तो दौलतराव को यह बात बुरीलगी, निठान उन्होंने यह उद्योग करना शुरू किया कि, मेळ कायम न रहे, यह दख ब्रिटिश गवर्नमेंट इनसे लडनेको उपस्थित होगई अलीगढ, दिल्ली, असार, भागरा, लस्वारी और अरगांवकी लडाइयामें दौलतरावकी हार हुई आधिर सुलह हुई, परबहुतसा मुल्क इनके हाथसे निकल गया यदांतक कि, ग्वाळियर और गोहडका किलाभी इनके अधिकार में न रहा— ४६ वर्षकी उम्रमें स० ई० १८२७की साल वैजावाड अपनी अपुत्रविधवाको छोडकर दौलतरावका देहांत हुआ वैजावाडने जनकोजीराव संधियाको गोद बिठाया, जनकोजीकी अपुत्रविधवा रानीने महाराज जीवाजीराव संधियाको गोद लिया— महाराज जीवाजीके पुत्र वर्तमान ग्वाळियरनेश महाराज माधीराव संधिया हैं ॥

द्राह्यायण— इनके रचे सामवेदके श्रौतसूत्र मिलतहैं, जिनमें विविधमांतिके पद्ध करानेके नियमहैं—

द्रुपद— पंजाबका प्राचीन राजा इसकी कथा द्रौपदीको अजुननस्वयंवरमें लौटा था महाभारतके युद्धमें चौदहवें दिन राजा द्रुपद द्रोणाचार्यके हाथसे मारा गया वृक्ष रेखी दिन द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नने द्रोणको मार अपने बापका बदला लिया, द्रोणके पुत्र अश्वत्थामाने धृष्टद्युम्नकी मार डाला— द्रुपदके शिखंडन नामक पुत्र तथा शिखंडनी नामक कन्या और भीष्मी जष द्रुपदने द्रौपदीका स्वयंवर रखा तब दूरसे शूरवीर पराक्रमी राजा आ उपस्थित हुये स्वयंवर का प्रण यह था कि, जो कोई बासके ऊपर चक्रमें नाँचती हुई सोनेकी मछली को परछाई पृथ्वीपर रखे हुये तेलके फटोरेमें देख ऊपर को वीर चलाकर मछली की आंखमें निशाना लगावे वह द्रौपदी को घरे— जब द्रौपदी जयमाल लेकर सबामें आई तो सब राजे उसके रूपको देख मोहित होगये, पर कोईभी अंकित चिह्नके घेधनेमें समय नहा हुआ— राजा द्रुपद कहिनेहीको था कि, “वीरविहान मही में जानी” कि, इतनेहीमें भिखारीके घेपमें एक वीर पुरुष उठा जिसकी छवि महासनीय थी और जिसको देख द्रौपदी मोहित होगई— इस वीर पुपहने धनुष उठा क्षणभरमें नियमानुसार मछलीको घेधदिया— द्रौपदीने दुरत जयमाल उसके गलेम डाल दी— ये पुरुष अजुन पांडव था जो वनोवाचमें होनेके कारण भिखारीका घेप धारण कियेहुये था

द्रोणाचार्य— भारद्वाज ऋषिके पुत्र थे भीष्मपितामहकी सौतेली बहिन कृपासे इनका विवाह हुआ था— अश्वत्थामा इनका पुत्र था— कौरवा तथा पांडवोंको धनुर्वेदकी

शिक्षा इन्होंने दी थी—महाभारतके युद्धमें द्रोणाचार्य कौरवोंके उत्पन्न
 भीष्मके मारे जानेपर सेनापति नियत किये गये थे—इस पदको प्राप्त होनेसे धर्म
 बाद द्रोणने पाश्चात्ताधिपति तृपदको वध किया—दृपदके पुत्र घृष्टपुत्र
 दूसरेही दिन द्रोणको मार गिराया—द्रोणके पुत्र अश्वत्थामाने घृष्टपुत्र
 रणशायी किया

द्रौपदी—पंजाबके राजा दृपदकी बेटी पांडवोंको स्वयंवररीतिसे विवाही।
 थी इसके स्वयंवरका वृत्तांत रामा दृपदके सम्बन्धम हुआ है (देखो दृपद) द्रौ
 दीका रंग गौरा न था, पर लक्ष्मि अत्यंत मनोहरण थी जब पांडव छान द्रौपदी
 ले घर आये तब उन्होंने अपनी मातासे कहा कि, हम एक भयंकर वस्तु लाने
 माताने सहज स्वभावसे कह दिया कि, पांचा आपसमें घांट लो इसी वक्त
 द्रौपदी पांचा पांडवोंकी पत्नी बनी और पंचमताऊ कहिलेहो वारी २ से
 दो दिन पांचा भाइयोंके पास रहती थी इसने अपने शुभभावणोंके द्वारा पति
 पतिपोंको वशम करलिया था, ये इसका मानभंग होना कदापि नहीं
 सकते थे और इसके कहनेका प्रभाव उनव क्षिसपर बहुत पड़ता था
 दके जब युधिष्ठिरने अपना राज्य तथा द्रौपदीको कौरवोंके पास हार दिया था
 दु शासनने द्रौपदीका जूड़ा पकड़ खरे दुबार पसीटा था और मानहानि की थी।
 मानहानिका मयाल पांडवोंको अत्यंत था जिससे उनके और कौरवोंके बीच इत
 ईपां द्वेष बढ़कर सर्वनाश हुआ गिर्धर वधिरायने भी लिखा है

“नारी अतिबल होते है, द्यौऊ दलनको नाश ।

कौरव पांडववंशको, कियो द्रौपदी नाश” ॥

एक वक्रे जब श्रीकृष्णजी अपनी पटरानी सत्यभामा सहित पांडवोंकी स
 लेने वनम पधारे थे तब सत्यभामाने द्रौपदीसे पूछा कि, महिषि जि
 प्रकार तुम अपने पतिसे वशमें रखती हो यह हमेंभी पताभो द्रौपदीने उत्तर
 दिया कि, खीका पातिव्रत धर्म निषाहना ही एक वशीकरण मंत्र है ऐसा करने
 समुदाह और मायकेकी लाज रहती है और इश्वरके यहांभी पर मगति मिला
 है हम काम प्रोध छोड़ निजपतिकी सेवा करती है परमह छोड़ उन
 आत्मा मानती हैं, सुपाप्य और कुचालसे बचती हैं, बरुंगे रूपसे कभी नहीं र
 ती, निजस्वामीके विचारके अनुधारही ग्राम करती हैं, सियाय पतिके अपने
 से भी अग्रन्तमें बात नहीं करती हैं और न किसी की भार आज ठगकर दु
 तो हैं, भीष्मि भांगपर नम्रता भावसे सबसे बोलती हैं, छोटे दुर्जेक स्त्री पुत्रको
 सुहै नहीं लगाती, घुरे पाल बलनवाली स्त्रियोंमें मंत्र नहीं रखती, अप
 स्त्रियों की सेवा करती हैं गैरपदिवान स्त्रियोंसे हलमेल नहीं करती, खरे व पा

के घाद भोजन करती हैं और दास दासियोंके होते हुये भी पतिके बाहिरसे भाने पर खड़ी होजाती हैं और पानी पंखा लेकर दौड़ती है भोजनादि पदार्थ शुद्ध रखती हैं और सब गृहस्थीके काम उचितसमयपर करलेती है, बिना बात हैंसने टार तथा घत भादिपर खड़े होकर झांकनेसे और मन उपघनमें जानेसे परहज करती है पतिके प्रवेश रहिने पर मुठी कामनाओंको त्याग उपघास और हरि भजन करती हैं जिस घन्तुको पति नहीं चाहते उसको हम भी नहीं चाहती और पतिसे कुछ भी पुराव नहीं रखती हैं बड़ोंकी आज्ञा पाछन करती हैं, पतिके द्रव्यका इम्तिजाम करती हैं और श्मदनी स्त्रयका हिसाब रखती हैं सबसे पहिले उठती, सबसे पीछे सोती हैं—महाभारतके युद्धके अंतम द्रौपदीके पांच पुत्रोंको अश्वत्थामाने मार डाला था घादको बहुकालतक राजसी सुख भोगकर महारानी द्रौपदी पांडवोंके साथ हिमालयपर जाकर वनमें सीजगई

धन्वन्तरिवैद्य—(आयुर्वेदके प्रकट करनेवाले) पुराणोक्त कथानुसार समुद्रके मयेजानेपर १४ रत्न निकले जिनमेंसे एक आयुर्वेदके प्रकट करनेवाले धन्वन्तरि वैद्य भी थे जिनको भारतवासी इश्वरका अंशावतार मानतेहैं इनसे कुछ काल पीछे दिवोदास नाम काशिराज आयुर्वेदका बड़ा विद्वान् धन्वन्तरि नामसे प्रसिद्ध हुआ इस दिवोदास धन्वन्तरि द्वारा आयुर्वेदका बहुत कुछ प्रसार हुआ और इसने चिकित्सावत्स्वविज्ञान, चिकित्सादर्पण, तथा चिकित्साकौमुदी नामके ग्रंथ रचे जो अब लुप्त होगये हैं इसके घाद आत्रेय, पुनवसु, स्पषन, अगस्त्य, जाबालि, अश्विनीकुमार आदि ऋषियोंने ब्रह्मवैवर्त पुराणांतगत ब्रह्मखण्डके १५ वे अध्यायमें वर्णित अनेक वैद्यक ग्रंथ रचे थे जो अब नहा मिलते हैं घादको श्वरक, सुश्रुत, चाग्भट्टऋषियोंने आयुर्वेदपर अपन २ नामकी बड़ी २ संहिताये बनाई जो अब गृह प्रयी नामसे प्रसिद्ध हैं यह तीनों संहिता परम उपयोगी हैं और इसीकारण इनके साम्प्रने प्राचीन वैद्यकग्रंथोंका प्रसार रफतेरे उठगया और आखिरको वे लुप्तही होगये अंतमें अश्वसे पहिले ४ और ५ सौ वर्षके बीच अनेक वैद्यक ग्रंथ बने जिनमेंसे माधवनिदान, शाङ्गधरसंहिता और भावप्रकाश मुख्य हैं और लघुत्रयी नामसे विदित हैं

धृतराष्ट्र—चंद्रवंशी राजा विश्वित्रवीर्यके निर्धश मरजानेपर उस समयकी रीत्यानुसार विधवा रानियों अम्बिका और अम्बालिकामें व्यासजीसे गर्भाधान कराया गया, जिससे धृतराष्ट्र और पांडु २ पुत्र हुये और चंद्रवंश नष्टहोनेसे बच्चा धृतराष्ट्र जन्मांश थे, पर्य राजा पांडु राज्य करते थे जब पांडु राज्य छोड़ वनको चले गये तो कान्चार धृतराष्ट्रको काम सम्हालना पड़ा धृतराष्ट्रके हुयोंधन भादि १०० पुत्र थे जो कौरव कहिलेजाते थे और पांडुके युधिष्ठिर भादि ५ पुत्र थे जो पं-

इस नामसे प्रसिद्ध थे जब धृतराष्ट्रके पुत्र तथा भतीजे समग्रहुये तो उन्होंने मघा राज्य अपने पुत्रों और भाधा अपने भतीजोंको बाँटकर दे दिया कौरवोंने इस बातपर विरोध किया और सब राज छेनाच्छादा, निदान अनेक प्रकारसे पांडवोंको दुःख देने और घनकी प्रतिष्ठा भंग करनेका उपाय करने लगे महाराज धृतराष्ट्रको बड़े परिणामदर्शी थे और जिसको अपने संबंधियोंमें श्रमदा होना अत्यंत दुःखदाई आन पड़ता था बहुत दिनोंतक टाळते रहे, किंतु होतव्यताअड़ी प्रबल है, निदान भतमें कौरवों और पांडवोंमें छिड़ी कुरुक्षेत्रके मैदानमें युद्ध हुआ जो १८दिन तक जारी रहा और जिसका सविस्तर घृतांत वेदव्यास कृत महाभारतमें लिखा है इस छडाइमें भारतके सब छोटे बड़े राजे महाराजे शरीक हुये थे कोई कौरवों का और कोई पांडवोंका तरफदार था भतमें सब कौरवे और सब राजे महापते जो दोनों तरफ शरीक हुये थे मारे गये पाँचों पाँडव श्रीकृष्णमहायजकी मदद से जीते बचे, जिनमेंसे सबसे बड़े युधिष्ठिर गद्दीपर बडे महाराजधृतराष्ट्र अपने उपद्रवी पुत्रोंक मारेजानेसे दुःखी हो तपोवनको खले गये वनमें एक दिन अलग छगी वलीमें स्त्रीसहित जल मरे. इनके चरित्रोंसे यही उपदेश निकलता है कि, आपसका विवाद बँशको नष्टकर देता है और दूसरोंके श्रमदेमें कूदनेवालोंकाभी नाश होता है जैसे इस युद्धमेंकेकई भारतवासी राजा, महाराजाका हुआ और कि उपद्रवी पुत्र छोटी उँगलीके समान है जिससे रहनेसे भी दुःख और घाटनेसे भी दुःख निकुल (पाँडव) महाराज पाँडु हास्तेनापुराथोशके चतुर्थे पुत्र रानी माद्रीके उदरसे थे सहदेव इनके सगे भाई थे और युधिष्ठिर, भीम, अशुन सौतेले भाई थे नकुलका रंग साँवला और डीछ डौल भारी था इनकी माता रानी माद्री जिन पालिके साथ सर्वा हो गई थी निदान सौतेली माता रानी कुन्तीने इनको पाछापा ये पशुचिनिरसामें निपुण थे "वैद्यकसर्वस्व" इनका बनाया ग्रंथ अब नहीं मिलता है भतमें पाँचों पाँडवें हिमालयपर जाकर एकमें सीजगये नकुल अशु शत्रु भी खूब खलाना जानतेथे और ज्योतिषविद्यामें निपुण थे द्रौपदीके सिवाय इनकी दूसरी रानीका नाम विजया था जिससे सुहोत्रनामय पुत्र उत्पन्न हुआ था

नम्रस्वामी—ये चित्रकार विष्णुमादिरय हच महागजा वज्रैतके वंशमें था इसने राम्यदर्शको सुत्रोभित करनेके लिये उस वक्तको जगत् प्रसिद्ध सुंदरियाने चित्र सँचि थे

नन्द—(महायजनन्द मगधनरेश) इनके बापका नाम महानन्दीन था ३० ई० से ३७० वर्ष पूर्व गद्दीपर बैठे और ५० वर्ष राज्य करये विय प्रिजायर मार काटे गये इनके धर्जिर शत्रुठारने अपमानित होकर एक महाक्रोधी, हटप्रसिद्ध विद्वान् प्राज्ञ वाणश्य नामकरो इनके भिक्षाकर अपनी मानहानिका बदला छि पा. इसका घृतांत वाणापछ संबंधमें हुआ है (देतो वाणश्य) वाणश्यने

एक दासीके द्वारा महाराज नन्दको भाँटो पुत्रसहित विप दिखवाकर स० इ० से ३२० वर्ष पहिले नष्ट करदिया और चंद्रगुप्तको जो महाराज नन्दके धीर्यसे मुरा नामक नायनम उरपुत्र हुआ था गङ्गोपर विठलाया नन्दकी राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) में थी और शकटार तथा राक्षस उसके धर्तार थे—महाराज नन्दके पूर्वोक्तहित नष्ट होनेका कृतांत कवि विशाखदत्तने “सुदाराक्षस” नाटकमें विन्वृत रूपसे लिखा है ।

नन्ददास—(भाषाकवि, अष्टछाप) अष्टछापका विवरण विद्वानायक प्रसङ्गमें पटो—इनकी रासपञ्चाध्यायीम वही आनन्द माता है जो जयदेवराचित गीत गोविंदमें—इनकी कविताके विषयमें यह उक्ति प्रसिद्ध है कि, “और सब गदिया नन्ददास जडिया” गोरे भी विद्वानायकी इनके गुणसे २५२ वैष्णवोंकी श्रवणमें लिखा है कि, ये पूरवके रहिनेवाले सनाढ्य ब्राह्मण बड़े पंडितसे बड़े भाइका नाम मुलसीदास था—एकदके अपने ग्रामके लोगोंके साथ टारिकापुरी-के दर्शनको गये रास्तेमें स टगया, निदान भटकते हुये सिन्धुनदीपर पहुँचे—वहाँ एकदकपवती खडानीपर मोहित हो उसके घरका फेरा करन लगे अथ यह बात फैल गई ता उस स्त्रीके घरके लोग लोकमिन्दाके भयसे गीगर छोड गोकुलको चलदिये—नन्ददासजमी पीछे होछिये—गोकुल पहुँच गो० विद्वानायके दर्शन और उपदेशसे चितकी वृत्ति छोट गई, निदान शिष्य हो वहाँ रहिने लगे—इन्होंने समग्र भागवतका भाषानुवाद कियाथा, परन्तु यह सोच वि, ब्रजवासी व्यासोंके साम्हने मेरी कथाका कौन भावर करेगा समग्र ग्रंथ जमुनाजीमें हुआदिया—केवल रासपञ्चाध्यायी गो० विद्वानायकी आग्रह करेपर रहिनेदी अकधरने इनकी प्रशंसा सुन अपने धर्तारम इन्हें लायाथा—वहाँ पहुँच इन्होंने एक रासका पद सुनाया, जिसके अंतमें था कि, “नन्ददास तहाँ टाडो निपट निकट” यह सुन अकधर पीछे पडगया कि, “निपट निकट” का भेद कही नन्ददासजीने उसी समय वहाँ प्राणत्याग करेये—भक्तमालमें इन्ह रामपुरवासी चंद्रदासका पुत्र लिखाहै—शकटार भीमसे-ने इनके बनाये निम्नस्य ग्रंथोंके नाम लिखे हैं—नाममाला, अनेकार्यपञ्चा-पाई, रुषिमणीमंगल, दशमस्कंध, दानलीला और मानलीला इनका विद्वान-या कि, सस्संग करनेसे अवश्य मोक्ष होजाता है—प्राय वि० सं० १५८५में ज-मेध

नन्दववा—(नन्दराय) महावन जिहा मथुराके रहिनेवाले जातिके होर थे—श्रीकृष्ण महाराजको पुत्र करके इन्होंने पाळा था—इनकी रानीका नाम गोदासी था—इनके अनेक मऊ बछेडे थे और अपनी जातिके लोगोंके नायक नन्दगोव जिहा मथुराम इन्हों का बसाया अथतक विद्यमान है—नन्दगो-रूपसिंह जाटका बाबाया नन्दववाका एक मंदिर है महावनमें नन्द-

पत्राके महिष्ठके भद्री खम्भे अक्षक मौजूद है- खम्भे पत्राके हैं, और उनपर अतिसुन्दर खुदाई है ।

नरहरि-(भाषाकवि) असनी ग्राम जि० फतेहपुरके रहनेवाले भाट महापात्र थे-दशरथ भक्तके पदों के कवीश्वरोंमें इनकी गणना एक अक्षरने असनी ग्राम इनको नानकार दियाया-इन्होंने निजग्राम असनी कुलवान कान्यकुब्ज ग्राहणोंको पलाया और जजमानीका कामभी न किया-इनके वंशके लोग अक्षक भाटोंमें सर्वात्तम गिने जाते हैं-उपरोक्त इन्होंने बहुतसे कहे हैं-निम्नस्थ छप्पय गौंभाके गलेमें बांध करके साम्हने पेश करते इन्होंने गोवध संद करायाया-

छप्पय-भरिषु दूत तृम द्रवहिं चाहि नहिं मारसककोइ ।

हम समस्त तुन चरहिं पचन उच्छरहिं धीन होइ ॥

अमृतपय निव स्रवहिं पच्छ महियम्भन जावहिं ।

दिन्दुन मधुर न देखिं कटुक तुरवतन पिपावहिं ॥

काहि नरहरि सुन दाहपद विनयत गऊ जेरे करन ।

केहि अपराध मोहि मारियतु सुपेऊधाम सेइयतु चरन ॥

नरहरिजाने शीघ्रानेदा रामसिंहके यहाँ जाकरभी मान सम्मान पायाया-इनको पुत्र भाषाकवि हरनाथभी पदों प्रतापी हुये हैं- नरहरिजी स० इ० १५५० में विद्यमान थे यादशाहने इनको "महापात्र"की उपाधि दीयी और कहाया कि आपके विद्याप जो और भाट हैं वे गुणके पात्र हैं इनके यक्षम अक्षक पनाए तथा बेटी जिन्हा रायबेटीमें मौजूद हैं । ग्राम असनी पर अक्ष इनके वंश जाते अधिकार नहीं हैं और इनका मकान भी गंगाजीन कटालेया ।

नरसीमेहता-(गणितज्ञ) भक्तमाला के अनुसार वे जनागत (गुजरात) के रहनेवाले थे एक दिन भावमय सानेपर इनको कुछ हुआ और घर छोड़ भगवद्भक्तियों प्राप्तहुये-इनका वृत्त शाक्तथा और जातिवे नागर प्रायणवे-सनय इनका पि० स० १५५० स १६५० तक होता निश्चय है-नरसिंहजी हरनये और विश्वेश्वरद्वारा गानेये-जामलिपाशाह (श्रीरुण) के इनका घेडाफ घर जाकर भात पहिनात गया इनके बेटेजी दादी घरनेरी साने जो भक्तमाला में लिखा है इन ही भगवद्भक्तियों मुख्य है

नल-वे निषध (भगवद्भक्त) के रागा घोरसेवक पुत्र थे विश्व (मराठ) नरेश भीमसेनकी कन्या भुवनमाइनी दमपत्नीसे इनका स्वयंवररीति में विवाह हुआ था वे पदों घोर घोर स्वयंवरसमय धमामा राजा के पदविषा, धनुर्विद्या और अश्वविनिसामें निपुण थे घोड़ोंको दौड़ने से

उनपर सवार होनेमें आदिधीय थे और पाँसा खेलनेके रसिकथे विवाह होनेके बाद १२ घण्टक खूब सुख चैनसे धाती और इंद्रसेन नामक पुत्र तथा इंद्रसेना नामक कन्या पैदाहुइ इसके बाद राजा नलपर विपत्ति पड़ी, निदान एक दिन निजघाता पुष्करके साथ पाँसा खेल कर अपना सर्वस्व हारगये पुष्करने राम्याधिकार पाय वंदोरापित्रयादिया कि, नलको राज्यभरमें कोई कारण न देवे राजा नलने निर्धन और निस्सहाय हो ब्रह्माको तो ननिहाल भेजादिया और आप रानी दमयन्तीको साथले केवल एक धोती पहिने हुये जंगलका रास्ता छिया रास्तेमें ३ दिन रात बिना भन्न जलकें बँते तब तो भूखसे व्याकुल हो नलने पक्षेरुओंके पकड़नेके लिये अपनी धोती फेंकी परेकर धोती भी लेकर उड़ गये, निदान रानी दमयन्तीकी साड़ीके २ टुकड़े कर काम बलाया पश्चात् कुछ मछलिय पकड़कर भूनीं छेकिन जब राजा नल नहाने लगे तो भूनी हुई मछलिय सालायमोंको खल पड़ीं तबहीसे मसल मठाहूर हुई कि, "विपत्तिके समय भूजीं सालै जाती है" ऐसी भाषाके समय नलने दमयन्ती को नैह्य खड़ेजाने को बहुत कुछ समझाया, पर उसने पत्तिका साथ त्यागना स्वीकार न किया और भूखसे व्याकुल हो पत्तिके गलेमें हाथ डाल एक पेड़केवले सोगह विपत्तिके समय अकलभी उलटी होजाती है निदान राजा नल सोती हुइ पतिव्रता रानी दमयन्ती को अकेला घनमें छोड थँछते हुये रानी जब जागी तो उसने निज पत्तिको न पाकर छाती कूट ३ कर विहाय किया भि ससे पाषाणभी पसीज साथ फिर इधर उधर दूँदती हुई अनेक अपत्तियोंसे घबरी पतिविपोगमें बिलपती सुषाणुनगरनरेशके यहाँ पहुँच रानीकी दासियोंमें भौंकर होगइ और वहाँसे उसके पिताके भेजे हुये दूत उसको विदर्भको छगये उधर नल घूमते २ राजा ऋतुपण अवधनरेशके दरबारमें पहुँच घोड़ा हाँकनेपर नौकर होगये थे पश्चात् दमयन्तीके पिताने नगर २ गाँव ३ नलकी खोजमें दूत भेजे अपोष्यासे छोटकर एक दूतने कहा कि, राजा ऋतुपणके यहाँ बाहुक नाम घोड़ा हाँकनेवालेके मांस दमयन्तीका नाम सुन्तेही, बड़ी खळे थे यह सूचना पाकर दमयन्तीके पिताने राजा ऋतुपणको उनके कोचवान् सहित बुला भेजा विदर्भ पहुँच राजा नलने जो कोचवान्के भेसमें थे, अपनी रानी और बच्चोंका पापा सबको आनन्द हुआ राजा भीमसेनने नलको अपना राज्य दे विदर्भहोमें रहनेको कहा, परंतु नलने सुसरालमें रहिना भंगीकार न किया तब तो राजा भीमसेनन भनक रय, घाडे, श्यापी, प्यादे, सहित राजा नलको बिदा किया और दमयन्तीको अपने पासही पहिने दिया-निषध देश पहुँच राजा नलने पुष्करको बुला फिर चौंसर लेखने पर आमादा किया-ऋतुपणके यहाँ रहिखर नलका चौंसर खेचना खूब अगपा था, निदान वहाँने अपना राज्य पुष्करसे जीत छिया, पुष्कर मारे डरके

कांपने लगा-तब नरुने समझाया कि, जो हुआ सो भाग्यवश हुआ, व पहिले काम करतेये घेसेही काम करते रहो-फिर दमयन्तीको भी बराबर समेत बुलालिया और बहुत दिनोंतक राज्य किया

नहुष-चंद्रवंशी महाराज पुरुरवाके पुत्र थे पुराणोक्त कथानुसार एवं भूमण्डलका एक छत्र राज्य किया परम प्रभावशाली राजा ययाति इनके थे नहुषने अपनी पालकी ब्राह्मणऋषियोंसे उठवाद, अतपस ब्राह्मणाने र दिया जिससे राजा नहुष सांप होगया

नागरीदास-(भाषाकवि) कृष्णगढनरेश महाराज यशवर्तसिंह उपनाम नागरीदास था कवितामें वहाँ २ नागर तथा नागरिया नामभी लि है ये वल्लभीय संप्रदायके वैष्णव थे अनेक बड़े २ मंदिर इनके बनवाये भक्त कृष्ण गढ़में मौजूद हैं इनके हृदयमें राज करते हुये भी विरसता समाइ हुए देखो इनका निम्नस्य पद-

पद-जहां कलह तहां सुख नहीं, कलह सुखनको शूल ।
सबहि कलह एक राजमें, राज कलहको मूल ॥
अपने या मन मूढ ते, इरत रहत हा हाय ।
घृन्दायनकी भोरते मत, कयहू फिरजाय ॥
छेत नसुख हरिभक्तिको, सकल सुखनको सार ।
कहा भयो नृपहू भये, दोषत जगवेगार ॥

वि० सं० १८०८ में मुगलसम्राट् विहलिते इनयो उपद्रव शान्ति करनेके । कुमारु पयतपर भेजाया वहा बड़ी वीरतासे लड़े और सन्धि करये दिष्ट लोटे- दिल्लीसे बिदा हो फिर भाप कृष्णगढ नहीं पधार, परंतु संसारका सब समझ धराय धारण करालिया, राजपुट्टम्पसे सुई मोटा और राग ठाट त्याग घृन्दायनकी ओर गमन किया- इस विषयमें भाप लिखते हैं वि-

फिर घेनेनीय राजसमयाह- गये इंद्रमन्य हिये पिरहदाह ॥
राज दियो तहां सप प्रभृत संग- भय प्रजस सुख फिर पठयो रंग ॥
तय श्वरे धरण बरसाने ओर- विये पैग २ तीरथ सराइ ॥
ऐसो बरसानो निरख-भट्टि भायो पुनि प्रम ॥
बरत दंडयत लुटसरज- छुटि गय राजसनम ॥

इससे पहिले एक दफ और जब भापन प्रजये रीयाँकी यात्रा यायी बड़े २ साधु महात्मा लोग भापका महाराज कृष्णगढ जान उदा भायमे मलग रह थे, लयिन जप मुता कि, नागरीदास वेही है तब तो वीर सर भापका लिपट गये थे, जैसा कि, भापन इस घाहेमें लिखा है-

दो०—सुन व्यवहारिक नाममो, ठाढ़े वूर उदास ।

स्यैडमिले भरनेन सुन, नाम नागरीदास ॥

प्रसिद्ध भाषा कवि आनन्दघनसे आपकी बड़ी मित्रता थी—

निम्नस्य ग्रंथ आपके बनाये हैं—

बिहारसंग्रहिका (वि० सं० १७८८), निकुञ्जविलास (वि० सं० १७९४)
 वृजसार (वि० सं० १७९९) स्वजनानन्द (वि० सं० १८०२) भक्तिमग-
 शीपिका, युगलभक्तिविनोद (वि० सं० १८०८), वनविनोद (वि० सं० १८०९)
 बालविनोद, उत्सवमाला, तीर्थानन्द (वि० सं० १८१०), वनजनप्रशंसक
 (वि० सं० १८१९)

आपकी कविता माधुर्य और गूढ भाव तथा प्रेमरससे भरी हुई है

नागेश— (पं०नागेश प्रसिद्ध विद्वान्) काशीके रहनेवाले महाराष्ट्र ब्रा-
 ह्मण थे पं० हरदीक्षिणजी इनके गुरुये वि० सं० की १८ वीं शताब्दीमें हुये ये
 मनेक शास्त्रोंके पूर्ण विद्वान् थे विविधशास्त्रापर इनके बनाये ग्रंथ मिलते हैं
 और ये नीचे लिखे हैं—

विवरणनामक व्याख्यान भाष्यप्रदीपपर, मंभूषा, लघुशब्देन्दुशेखर, परिभाषे-
 न्दुशेखर, तीर्थेन्दुशेखर, प्रायश्चित्तेन्दुशेखर, काव्यप्रदीप, रसगगाधरव्याख्यान,
 उत्तशतीटीका, सप्तशतीमयोग, धारमीकिरामायण की टीका और सांख्य तथा यो-
 गशास्त्रोंपर वृत्ति

नागोजीमठ— (मनोरमा शेखरके पत्नी) ये संस्कृतविद्याके पूर्ण ज्ञाता
 थे—परतापगढ (अवध) के राजा रामबकससिंहने इनका मान सत्कार किया
 था—इनका बनाया मनोरमा शेखर नामक व्याकरण ग्रंथ देशमाप्य है—स० ई०
 १७०० के लगभग इनका समय है—

नाथकवि—उदयनाथ, काशीनाथ, शिवनाथ, शम्भूनाथ, हरनाथ कधीश्वरोंने
 अपना भोग नाथ लिखाहै—पृथक् २ देखो

नादिरशाह— (बादशाह ईरान) खुरसानके एक गढ़रियेका बेटाथा—ब-
 चपनहीते लड़ने भिड़नेका इसको शौक था—पुढा होकर कुछ छुरेयोंको संग्रह
 करके आसपासके गाँव लूटने लगा—पश्चात् एक बड़ी फौज संग्रह करसका
 और खुरसानके भक्तगानोंको मार भगाया—फिर ईरानके बादशाहको गद्दीपरसे
 उतारकर इसने सूफीवशये एक शाहजादेको तख्तपर बिठलाया और कुछ-
 दिनों पीछे आपही ईरानका बादशाह बनबैठा और काबुलकधारतक राज्य
 बढाया—स० ई० १७३९ म ६५ हजार सेना लेकर हिंदोस्तानपर चढाई की
 और युगलसम्राट् मुहम्मदशाहने कनालके मैदानमें मुकाबला किया पर हारा
 और नादिरशाहके साम्हने बलागया—नादिरशाहने उसके खाधोस्तीका बतवा

क्रिया और अपनी सेनासहित दिल्ली देखनेको आया प्रथम नादिरशाहका इगदा कुछ दिन मेहमानके तौरपर दिल्लीमें रहकर इरानको लूट जानेवाया, पन् एक दिन दिल्लीमें लोगोंने यह खबर उठादीकि, नादिरशाह मरगया यह खबर पाती दिल्लीकी प्रजा नादिरशाहके सिपाहियोंपर दूटपट्टी और सिक्कोंको मारबालाघन काट उठकर जब नादिरने यह हाल देखा तो बरले-आमका हुकम दिया-जब प्रजावा अधिक भाग बटगया तो मुगलसम्राट् मुहम्मदशाहने नादिरके पास हाजिर हाकर मायना की कि, यदि सब प्रजा काटहाली जायगी तो फिर बादशाहत किसके धर जायगी-इसपर नादिरने करल मौकूफका हुकम दिया-हुकम पातेही फौज सिपाहियोंने तलवारें जहाँकी वहाँ रोकलीं नादिरशाहकी सेना उसका हुकम पक फुल्लोसे मानतीथी कि, जिसकी धनहूये " हुकम नादिरशाही, ' मसिद्दह-पचास नादिरने दिल्लीको लूटा और ३२ करोड रुपयसे अधिकका धन लेगया, जिसके तखते-ताऊस और कोहनूर हीरा भी शामिल था-सिंधसे इस पार जा मुल्क मुगल सम्राट् मुहम्मदशाहको अपनी तरफसे देगया और वडे-सदागोंको समझा गया कि, बादशाहका हुकम मात्रा नहा तो तुम्हारे समझानेको मैं फिर हिंदोस्ता दूंगी, इसके बाद इरानको तरफ कूच किया जिस मौख और शाहिरम होकर नादिरशाह और उसको फौज निकलतीथी प्रजागण अपनी जान लेकर भागत य-आदिर रास्तेम कांगदेवे समीप एक साधु अपनी श्रुषामेंसे निवृत्त निभय नादिरशाहके साम्हने चलागया और कहा कि, " बाबा अगर तू दवताह तो देवताक कामकर और जो पंडितह तो छागा को मुक्तिका रास्ता बता भार यदि तू बादशाह है तो प्रजाको सुखे " इसये उत्तर मे नादिरने कहा कि, मैं न देयता हूँ, न पंडित हूँ न बादशाह हूँ जो उनयसे काम करू, मुझको तो परमेश्वर अधर्मी और पापी लोगो को समावनेके लिये भजता शुकुम नादिर दयालु था, परंमु हिंदोस्तान से लौटनेके बाद बहा निदयी होगयाया, यहाँतय कि, एक दिन छुद् हाकर अपने बेटेकी भाव निकलया टालीं स० इ० १७५७ म प्रजागणने उसको माग्दाला नादिरशाह जबतक जातारहा तबसे नहीं हारा-इसीकारण इस दाम यह उक्ति अबतय मसिद्द ह "जबतय जिये नादिर शाह तबतय सीस नगाय बादि"

नान्हक-(सिक्कोंके प्रथम गुरु-खालसाययके संस्थापक) जिदा लोहाके खालसादी नामय गोंयमें बालमल खवाये पर यि०स० १७०६ में धार्मिक श्रुदी१५ को जन्म इनके पिता खालसादी गोंयके पटवारी थे इनके बालभारें थये पठनेसे माधुम दोठा है कि, बुद्धि शुरुदासे भार्यत सीध थी और मन सं-सारी यामोंसे विरक्त था थोड़ेही दिनामें इहाम गुरु पारसी और दिजाय कि ताप भीमही सींगलिपाया जब य बड़ हुये ता पिताने बालनामग विधीना टक लाय इनको ४०६० देवत स्थापार करनेके लिय बाहर भेगा परतम

साधु मिलगये उनके खिलाने पिलानेमें चाट्टीखों रुपये खर्च कर नान्हकजी घरको लौट आये, निदान पिताने निराश हो इनको बहिनके घर सुलतानपुर भेजादिया, और बहिनोईने सिफारश करके इनको नवाब दौलतखी लोदीका खजांची करादिया और थोड़ेही दिन बाद जिह्वा गुरदासपुरमें एक सत्रीकी बेटी सुलखनीसे इनकी शादी करादी, जिससे श्रीचंद व लक्ष्मीदास २ पुत्र हुए श्रीचंदसे वेदा संप्रदाय और लक्ष्मीदाससे उदासी संप्रदाय खली पुत्र होनेके बाद गुरुके चित्तमें विशेष वैराग्यका उदय हुआ, निदान एक दिन घरबार छोड़ जंगलको चले हुये और सुलखनीकीको पुत्रो सहित नहर पहुँचा दिया याला और मराना २ जन गुरुके साथ रहितेथे मदाना जो बहावी मुसल्मान था बाजा बजाताथा और गुरुहानमागके भजन गातेथे हिंदू मुसल्मानोंको मिला कर एक करदेनाही इनका मुख्य उद्देश था इनका सिद्धांत था कि, ईश्वर एक है जाति पांति कुछ नहीं है, और पन्थ वा मत कोई पदार्थ नहीं है ये उत्तम साधु थे जीवन अच्छे कामोंमें बितातेथे अनेक तीर्थोंकी यात्रा कीथी, मक्का भी गयेथे हिंदू मुसल्मान दोनों इनके चेले हुये थे वि० सं० १५९६ में ७० वर्षके होकर सिधारे इनके मृतक शरीरपर हिंदू मुसल्मानों में झगडा हुआ परंतु बादर उठाकर देखा तो छाश नहीं पाई नान्हकजी जन्मभूमिपर एक मंदिर बनाहै जिसको नान्हकाना कहिते हैं बाबरने जब हिंदोस्तानपर चढाई की थी तो गुरुसे उसकी मुलाफात पंजाबमें हुईथी इनके बतये अनेक छावनी व भजन हैं और "गुरुकी साखी" नामक ग्रंथभी इन्हीका बनाया हुआ है

नानाधन्वूपथ-(नानासाहिब) ये पूनाके अन्तिम पेशवा बाजीराव द्वितीयका गोद लिया घेटा साक्षर और प्रशसनीय खाल ढालका सुदौल तृप्रपुट, मिठ नसार, अपने पूर्वजोंके धर्मपर आरुढ़ और वर्णका श्राद्धण था कान्पुरके निकट घिटूरमें रहिता था पेशवा बाजीरावने बाद घृटिश गवर्नमेंटने यह पेंशन जो बाजीरावको मिलती थी नानासाहिबको नहीं दी, इसी वजहसे नानासाहिब दिल्लीमें घृटिश गवर्नमेंटसे शत्रुता मानता था पर कानपुरमें रहितेवाले अंग्रेजों तथा मेमोंसे खुब मिलता और मित्रताभाव रखता था स० इ० १८५७ के गदरमें नानासाहिबने कानपुरवासी सब अंग्रेजों, मेमों और उनके बच्चोंको बंधा नेका वापश किया था पर अफसोस है कि, बागियोंने उन सबको मार डाला गदरके समय नानासाहिब जिधर होकर निकल जाता था सब म्छेच्छ कान टूक जाते थे और दशा लगलियें सुद्धमें देवर प्राण बचातेथे अंतमें सर हेनरी हैयलाकसे परास्त होकर नानासाहिब फतेहपुरके सुकामले मागा और भाजतक नहीं मिला गदरके बाद घृटिश गवर्नमेंटने नानासाहिबको कानपुरके किराखूनका दोषी ठहराया और फाँसीका हुकम दिया लेकिन नाना

साहिबका पता कहीं नहीं लगा अनेक छोग साधुके भेषमें पकड़ २ कर फांसे दे दिये गये परंतु विश्वास है कि, उनमेंसे कोईभी नानासाहिब न था
स० ई० १८२४ में जमे

नानाफर्नवीस—(मरहटासद्वार) जगतिके महाराष्ट्र ब्राह्मण थे अंग्रेज ई

हास लेखकगण इस बातपर एक मत हैं कि "नानाफर्नवीस बड़े सुमधकार ग-
भीतिनिपुण और चतुर पुरुष थे" नरायण राव पञ्चम पेम्बाने इनको अप-
वर्जित बनाया। कुछही दिनों बाद मनन्दी साहने अपने भतीजे नरायणरावको नि-
वेके मरवा दिया और नरायणरावके चचा रघुनाथराव पेम्बा बन बैठे। मर-
कुछही महीने बाद नरायणरावके माधौराव नारायण नामक पुत्र हुआ जिस-
रघुनाथरावने सो हराम का ठहियया लेकिन नानाफर्नवीस आदि सब मर-
सद्वारोंने मिलकर उसको गद्दीपर बिठलाया और रघुनाथरावको उतार दिया
इस पर रघुनाथरावने अंग्रेजोंसे मदद ली और नानाफर्नवीस फरारसीधोंसे मि-
गये, निदान युद्ध हुआ नतीजा यह निकला कि, माधौराव नारा-
सो पेशवा रहे और रघुनाथरावको भी खखके लिये पेन्शन मिला। माधौ-
व नारायणकी नाषाछिर्गामें नानाफर्नवीसका अधिकार पूनाद्वारमें था
कुछ बड़ा हुआ था इसी कारण खेधिया हुस्कर, भोंसला तथा गैरवा-
जो पेशवाके भाधीन होकर राजस्य देते थे नानाफर्नवीससे जलने ल-
और स्वधीन होजाना चाहते थे लेकिन जो २ इनमेंसे सर उठाता गया नान-
फर्नवीसकी राजनीतिले उसीको खूब डीछा होमा पड़ा। सबसे पहिले महाद्वार
खेधियाने सर उठाया और पूना द्वारका भाधिपत्य त्याग दिया लेकिन मन्-
वालहीम स० ई० १७९४ की सल्ल बसने मरकर नानाफर्नवीसकी किरू सल्लही
मिटायी इसी समयके लगभग नानाफर्नवीसने निजाम हैदराबादपर राज
युसूल न होनेके कारण चढ़ाई की और फतेहगढ़ स० १७९५ में माधौणन
रायणने २ वर्षका अन्नम आत्मपत्त किया और बानीराव द्वितीय अन्तिमपेशवा
हीपर बैठे इनके समयमें गैरवाड, भोंसला और निजामन पूना द्वारसे मुहें मा-
टा यह देख धार्ज रायने नानाफर्नवीसकी रायसे अंग्रेजोंसे सहिदो पैमान किया
जिसके अनुसार फेवाणो कुछ अंग्रेजी फौजवा खचा गयारा करना पड़ा भी
अंग्रेजोंने पूनाद्वारके शत्रुओंको परास्त करनेवा यत्न दिया निदान द्वितीय म-
रहटापुत्र शुरु हुआ जिसम गैरवाड, भाखला और निजामको परास्त होकर अ-
पने २ मुन्धया भाधिपोग देकर संधि करनी पड़ी फिर हुस्करने फिर उठाया
लेकिन सबकी भी अन्नम भोंसला और गैरवाडकी तरह अंग्रेजी फौजके मुका-
बलमें डीला होना पड़ा भापसये ईपाटिपका पद पर हुआ कि, मरहटोंवा २
पराक्रम मट होकर उनको दूसरावा भाधीन बनना पड़ा

नानाफर्नवीस स० ई० १८०० म मरे इनका अन्नपनी नाम जमाईन घाशानी था

नाभाजी—(भक्तमालके कर्ता) इनका असली नाम नारायणदास था इनके बाप रामदास ब्राह्मण तैलङ्ग देशमें गोदावरी तट उत्तर रामभद्राचळ पर्वतपर रहिते थे और हनुमानोपासकथे बचपनहीमें नाभाजीके पिताका देहांत होगया और जब ५ वे वर्षके हुये तब इस देशमें घोर अकाल पड़ा, जिसमें बेचारी माता इनको घनमें छोड़कर चली गई देवयोगसे गुरु रामानन्दकी गद्दीक महन्त कलिहजी अपने पुत्र भद्रदाससहित उधरसे निकले और इनको अपने स्थानपर, जो जयपुरके निकट गलसामें है लेभाये वहां रहिकर साधुओंकी जूठन खाते २ इनकी बुद्धि निर्मल होगई तब भद्रदासजीने इनको अपना शिष्य करलिया और नाभादास नाम दिवसा वि० स १६४१ और १६८० के बीच नाभाजीने निज गुरुकी आज्ञासे भक्तमाल नामक ग्रंथ १०८ छप्पय छन्दोंमें लिखकर पूरा किया भारतवर्षीय उपासक सम्प्रदायके अनुसार इनकी गुरुपरम्परा यों है—

गुरु रामानन्दके शिष्य आशानन्द, उनके कृष्णदास पय महारी, उनके कीन्हजी, उनके भद्रदास और उनके नाभाजी प्रसिद्ध महारमा मल्लकदासजी इनके गुरुभाई थे पश्चात् स्वा० मियादास घदावनीने भक्तमालका तिलक कवियोंमें किया इसके बाद भक्तमालके अनेक तिलक तथा अनुवाद बने और बनते जाते हैं एक दके मयुरामें साधुसमाज हुमा था तब नाभाजीको गुस्ताईकी पदवी मिली थी, नाभाजी जन्मांध थे—

नारायणभट्ट गोस्वामी—इनके पिताका नाम भास्कर तथा गुरुका नाम सनातन गोस्वामी था गुरुमुखसे भागवतकी कथा सुनकर इनको वृजकेरूप गुप्तस्थानोंके प्रकट करने तथा भगवतलीला दर्शन करनेकी उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई तब इन्होंने पुरणोंसे पता लगाकर वृजके सब पार्श्वीन स्थानाको प्रकट किया और रासलीलाका आरंभ कराया आज कल लोग इन्हींके प्रदर्शित पथसे वृजयात्रा करते हैं और इन्हींके आविष्कृत स्थान तथा देवता इस समय पूज्य हैं वि० स १८१०में इन्होंने “ब्रह्मभक्तिविलास” नाम ग्रंथ रचा जिसमें ब्रजके स्थानों और उनके माहात्म्य का वर्णन है इस ग्रंथमें १३३ वना का वर्णन है जिनमेंसे ४२ जमुनातीके पार हैं भक्तमालमें लिखा है कि, ये बड़े पंडित थे और ज्ञान तथा स्मार्तवादके खण्डनमें परम निपुण थे ये दीक्षित भृगुवंशमें मयुरसे १५ कोस पर मन्दराज नामक ग्राममें जन्मे थे और १२ वर्षकी उम्रमें गुरुकी आज्ञासे राधाछोड़पर आबसे थे ७ वर्ष पीछे फिर घरखानेके पास हैंचे गाँवमें जा रहे इन्होंने वर्तमान शैलीकी रासलीला का प्रचार ब्रह्मदलमें किया डाक्टर प्रिभर्सनके मतानुसार स० ई० १५६१ में जन्मे खेड़ागाँव जिला मयुरा म कदम्बखण्डी के समीप इनका बनवाया नारायण-सरोवर नामक तालाब अद्यतक मौजूद है

नारायणराव—(पद्मपेशवा) बालाजी बाजीराव तृतीय पेशवा इन्हें बाप थे अपने बड़े भाई माधोराव चतुर्थ पेशवाके बाद स०ई० १७७२ मये गरीब बैठे लेकिन इनके अन्धा रघुनाथरावकी स्त्री मनन्दी बाईने स०ई० १७७४ मइना विधवा दिलवाके मरवादिया. इनकी मरुके कुछ महीनेबाद माधोराव नागायणमाने इनके पुत्र हुआ जो पेशवाकी गद्दीपर बैठा इनका बर्जर नाना फत्तबीस पर स्वामिभक्त और सुप्रबन्धकता था इन्होंने वक्तम मरहट्टा ने दिल्लीपर बरकत करके मुगलसम्राट् शाह आलम द्वितीय को कैद करलियाथा

निपट निरञ्जनस्वामी—(भाषाकवि) दिल्लीके रहिनेवाले ब्रह्म वि० सं० की १६ वीं शताब्दी म हुये थे गो०तुलसीदासकी समान महान् विद्वान् हुये हैं इनके रच ब्रह्मकी संख्या ठीक नहीं मालूम होती, परन्तु पुरान सभ्यताके पुस्तका में इनके बनाये कवित्त खूबों मिलते हैं “शान्तिचरसा” तर्क अनिरञ्जनसंग्रह’ इनके रचे ग्रंथ हैं इनकी कविता ऐसी प्रभावशाली है कि उसका अयण कीतनस काम, शोच, लोभ, माह से मनुष्य निस्संदेह छूटजाता है निम्निले प्रसिद्धपद इन्हीं का है—

धेते मये गाढ़व सगर सुत धेते भये ।
जातहू न जाने ज्यों धरैयां प्रभातकी ॥
बलु बणु भम्बरीप मानभाता महलाद् ।
कहाँलों गनार्डे कथा राषण ययातिकी ॥
तेऊ न बचे काळकीसुकीके हाय ।
भाति २ रचो सेन सहे दुःख पातकी ॥
चार २ दिनाको चाव सपकोऊ धर ।
भत लुटजैहैं जिसे पुतरी बरातकी ॥

निघासदास—(हिंदीभाषाके सुदृष्टकवि) मधुराके सउ लक्ष्मीचंद्रके सुनील लाला मंगीलाल भद्रपाल के मये इनके पिताथ । वि०सं० १९०८में इनका जन्म हुआ, इनके दो बड़े भाई और थे । ये महाजनीपापमें बड़े ही शमुरधे, घोड़ीसी उच्चमें दिल्ली जायर खेड लक्ष्मीचंद्रको पौडाया । उत्तम प्रबंध कियाथा । पंजाब-गवर्नमेंटने इनको दिल्लीका स्पुनिशिपेल्कमिन्टर निपट कियाथा और दरबारियोंकी सूचीमें इनका नाम दूज कियाथा । ये धम्मक थे छेकित सम्प्रदायके सङ्गीता इनमें नहीं पाइजातीथी । हिंदीभाषाके सुदृष्टकवि में इनकी गणना है । तत्तासम्बन्ध, संयोगताम्बन्धपर, रणधीर प्रेममोहिनी तथा वीरगामुस इनके रचे ग्रंथ भये हैं । जिन्होंने इनको देखाया वे कहते हैं कि, “निघा-

बुद्धि, धन, प्रांतेश, सहृदयता, रसज्ञता, व्यवहारकुशलता, देशभक्ति तथा ईश्वरभक्ति इत्यादिगुणों के छिद्वाजसे छाळा श्रीनिवासदास उत्कृष्टभेणीके पुरुष थे । वि० स० १९४४ में परलोकगामी हुये ।

निम्बार्कस्वामी-(सनकादिक अथात् निम्बाक सम्प्रदायके आचार्य)

ये महापद्मब्राह्मण भरुण ऋषिके पुत्रये माताका नाम जयन्तीया गोदावरी तट मुंघेरमें रहितये परमाविद्वान् होनेके सिषाय बड़े सिद्ध भी थे वेदान्तसूत्रोंपर इन्होंने भाष्य रचाया अनेक स्तोत्रभी बनायेये, जिनमें ईश्वरके रूप, जीव और मायाका निणय कियाहै इन स्तोत्रोंपर व्याख्याये भी रची हैं और उपाखनाके लिये पद्यति रचाइ हैं एक " दशश्लोकी स्तोत्र" भी निमाण किया है, जिसमें यह सिद्ध दियाहै कि, ईश्वर द्वैताद्वैतहै, जैसे सर्पका कुंडल सपसे भिन्न नहीं, जलकी तरङ्ग जलसे भिन्न नहीं, ऐसेही यह जगत् ईश्वर से भिन्न नहीं, केवल नाममात्रका फकह । निम्बार्कस्वामीकी सप्रदायके २ मुख्य स्थानहैं, जिनमेंसे एक भरुण (दक्षिण) में और दूसरा सलेमाषादमें-इनका नाम निम्बार्क पड़मेका यह कारण हुआ कि, एक दिन कोई भक्तियि सन्यासी इनके घर आया उसके लिये भोजन तैयार होते २ सूर्य छिपगया-सूयास्तके बाद स न्यासीने अपने नियमानुसार भोजन करनेसे इनकार किया यह देख इनको खेद हुआ और इन्हाने ईश्वरसे प्रार्थनाकी घोड़ीही वरमें निम्बवृक्षके ऊपर सूर्य चमकने लगा-सन्यासीने सूर्यको देख भोजन करलिया-तबहीसे इनका नाम निम्बाक (निम्ब = वृक्ष + अर्क = सूम) स्वामी पडा-स० इ० की १४ वीं शताब्दीमें हुये । इनकी संप्रदायके लोग श्रीकृष्णके युगलरूपका ध्यान पूजन करते हैं

निहालसिंह-(महापद्म राना निहालसिंह, सा० बी० धौलपुरनरेश)

स० इ० १८६२ की साल धौलपुरके जाटवंशोत्पन्न राज्यवशमें जमे आपके पूर्वजोंने स० इ० की ११ वीं शताब्दीमें चम्बल नदीके किनारे कुछ मुल्क खिजय किया था दिल्लीके सम्राट् सिकंदर छोदीने इस धरानेको रानाकी उपाधि दी और स० इ० १७७९ में बृटिश गवर्नमेंटने महापद्म रानाकी उपाधिले विभूषित किया महाराज निहालसिंह अपने दादे महापद्म मगधन्तसिंह, वे० सी० आई० ई० थे बाद स० इ० १८७३ में धौलपुरकी गद्दीपर बैठे । स० इ० १८९९ में तीराकी सदाईमें संयुक्त होनेकी अभिलाषा प्रकट करनेके बदले मे आपने चापसराय महोदयसे सी० धी० की पदवी पाई अङ्गरेजी तथा संस्कृतके पूर्ण ज्ञाता होकर अपने पूर्वजोंके सनातन धर्मपर आरुढ थे एक समय खलती गोळियाके बीच घुसकर आपने डांऊओंको पकड़ा था आप अपनी प्रजाके भक्तिभाजन तथा

उदार, गुणग्राही और सधर्मिय थे स० ई० १८७७ के अकालमें आपने प्रजाकी रक्षा की थी आप सद्बुधधरार कुशल थे और अंग्रजोंसे आपका रण हेल मेल था घुड़दौड़ तथा पोलोका शौक था महाराज पटियाला आपके परम मित्र थे उनकी मृत्युकी खबर सुनकर आप बीमार पड़ गये, और कुछ दिनोंके शिमलेमें स० ई० १९०१ की साल परमधामको सिधारे. आपकी महारानी यही पतिव्रता थी, निदान महाराजकी मृत्युकी खबर पातेही उसने भी त्रय्यागदी धौलपुर राज्यका विस्तार १२०० वर्गमील है बस्ती प्राय ३५ लाख मनुष्योंकी है राज्यमें १३९ सघार, १५८८ पैदल और ३१ तोपें हैं तोपके १५ फीटोंकी सलामी महाराज को दीजाती है- महाराज निहालसिंहके सुशिक्षित पुत्र (वर्तमान नरेश) निज पिताके समानही सुयोग्य हैं

नीलकण्ठ अध्वरी-(संस्कृत कवि) प्रसिद्ध पंडित भाचार्य दीक्षितके पौत्र वि० सं० १७की रीशतान्दीये भारम्भमें द्राविड़ देशमें हुये ये बड़े पंडित, कवीपर तथा टीकाकार थे श्रीकण्ठ मतपर खलतेये भनेक पक्ष करते इन्होंने "सर्वस्ववेदी" पदवी पाई थी दक्षिण देशस्य एक राजाके दरबारसे इनका सम्बंध था निम्नस्थ ग्रंथ इनके बचये हुये हैं- व्याकरण भाष्यमदीपव्याख्या, शिवतत्त्वरहस्य, शिवलीलार्णय महाकाम्य, नीलकण्ठविजयधम्य

नीलकण्ठ वैद्य-(ज्योतिषधर) प्रसिद्ध ज्योतिषी मनन्तदैवत इनके पिता थे ये गंगोत्री ब्राह्मण थे इन्होंने नीलकण्ठी नामक ज्योतिष ग्रंथ जिस्में वर्षकलका विचार है ३० वर्षकी उम्रमें बनाया. "मूर्तखितामणि के रचयिता पं० रामदैवत इनके भाई थे नीलकण्ठी बादशाह अफसरके दरबारमें प्रधान पंडित थे पं० गोविंददैवत जिन्होंने पीपुषधारा नाम मुहूर्त खिन्तामणि का सिलखा रखा इनके पुत्र थे

बाके साठियाहने १४७९में जन्मे

नीलाम्बर शर्मा-(ज्योतिषी) ये मैथिल ब्राह्मण जाम्बूनापजीके पुत्र पटनाके रहनेवाले जाये १७४५में जन्मे पं० लज्जाशंकर ज्योतिषिदूखे विद्या यही पं० जीवनापशर्मा इनके प्रप्रेष्ठ भ्राता थे पं० नीलाम्बरी भलवररत्न महाराज शिवदानसिंहकी खभाये प्रधान पंडित थे राज्य भलवरके पोलीटिकल एजेन्ट कप्तान टामस वेडेल खादिकके कदिनेसे यूरोपदेशकी यात्रामुसार इन्होंने "गोत्रप्रकाश" नामक ग्रंथ रचाया. हीलायतीपर एक तिष्ठक भी बनायाया जाये १८०५म मजिफाजका घाट घाशीपर परमधामको विधाते अपना तमाम धन खितारामके मंदिर बनवाने और उसकी प्रतिष्ठा करनेमें लगा दियाया.

नूरजहाँ-(दिल्लीके मुगलसम्राट् जहाँगीरकी पृथिवीप्रासेद्ध सुंदरी बेगम) इसका बाप मिर्जा ग्यास ईरानके घज़ीरका बेठाया समयके हेर फेरसे ग़रीब होकर नौकरीकी तलाशमें हिंदोस्तान आया रास्तेमें कंधारके समीप उसके येही लम्बकी पैदा हुई मिर्जा ग्यासके पास उस वक्त खानेतकको न था और बीबी सहित पैदल सफर करवाया, निदान कलेजेपर परयर रख लड़कीको सड़कपर छोड़ भागेको चला दिया पीछे २ सौदागरोंका एक काफिला आवाया काफिलेके सर्दारने बच्चेको सड़क पर पड़ा देखे ठठा लिया आगे बढ़कर मिर्जा ग्यास बीबी सहित जाते मिले काफिलेके सर्दारने ग्यासकी बीबीको लड़की को वाया नियत करके सवारी बैठनेको दी और खाना सुकरर दिया मिर्जा ग्यास और उनकी बीबीने अपने बच्चेको पाकर और उसकी सुशानसीबी देखकर परमेश्वरको लाख २ धन्यवाद दिया हिंदोस्तान पहुच ग्यास बादशाह अकबरके यहां नौकर होगये जय यह लड़की, जिसका नाम मेहरुन्निसा या बड़ी हुई तो अकबरके घंटे सलीमकी इसपर भांख पड़ी अकबरने यह बात पहिचान मेहरुन्निसाका विवाह अलीकुलीखॉ एक इरानीसे करके उसको बंगालका सूबेदार बना दिया अकबरके बाद शाहजादे सलीम (जहाँगीर) को तख्तपर बैठ कर मेहरुन्निसाकी याद आई निदान उसने अलीकुलीखॉके मारनेका इन्तजाम किया पहिछे सो अलीकुलीखॉ खूनी हाथीसे छड़ाया गया, छेकिन उसने हाथीको मार भगाया फिर निहत्थे होकर शेरसे लड़नेका हुकम मिला, परंतु उसने शेरकोभी पछाड़ "शेर अफगन" खिताब पाया जय यह कोई तरकाब न खली तो जहाँगीरने फौज भेज अली कुलीको मरवाडाळा, और कुछ दिनबाद उसकी विधवाके पास शादीका पैगाम भेजा जवाबमें मेहरुन्निसाने भौंस बिटोकर कहा कि "शेर अफगनसे खसमको गमाकर अब मैं क्या शादी करूंगी बादशाह सखामतसे कहियेना कि, मुझ रांड पर अधिक जुल्म करना लाजिम नहीं है" इस उत्तरपर जहाँगीरने निरास होकर मेहरुन्निसाको अपनी माँके खवासामे रखवा दिया और पच्चात् शोक शान्ति होनेपर उससे शादी करली, और नूरमहिळ तथा कुछ दिन पीछे नूरजहाँका खिताब दिया जहाँगीर नूरजहाँका वशीभूत था, एक परभी बिना उसके कल नहीं पढती थी, खिसपग्भी उसका नाम सुदवा था, राजकाजमें उसका पूरा अधिकार था और सर्कारी धागजों पर भी घोदी हुकम देती तथा वस्तुसत करती थी उसके बाप मिर्जा ग्यासको घज़ीरका मोहदा मिला था और उसका भाई आसफुद्दौलाके पदपर नियत किया गया था ख० ई० १६२७ में जहाँगीरने छाहौरके समीप परछोक गमन किया शाहजहाँने तख्तपर बैठकर २५ लाख रुपये धार्थक भायर्थी जागीर नूरजहाँ को दी परंतु उसकी नजरमें संसार स्याह था विधवा होनेके बाद रंगिन कपड़ा कभी नहीं पहिना

और इसी तरह जोकमे दिन काटती हुई १२ वर्ष पीछे आप भी बख्तखाने में
 रहा और अपने पतिके मकबरेके पास दफन हुई वही हाजिरजवाब की
 फारसीकविता भी अच्छी करती थी

नूह—(Noha) मुसलमानों तथा ईसाइयोंकी धर्मपुस्तकोंके लेखानुसार
 इनके घक्तम स० ई० से० १६५६ वष पूर्व एके दफे २४ दिनतक वर्षा मुसलमानों
 हुई, सबत्र पृथ्वी जलमें डूबगइ और तूफान भागया, केवल हजरत नू
 एक नौकापर सवार होकर अपने ७ बेटों सहित वचे जिनकी सत्ति
 बादकी पृथ्वीपर सब जगह फैलगइ मुख्य काबुल और पूनामें
 प्राचीन पुस्तकोंसे भी इस तूफानके आनका पता लगता है भागवतमें भी लि
 खा है कि, राजा सत्यव्रतके समयमें एक तूफान आया जिसमें सब पूर्वा ज
 लम डूबगइ थी केवल राजा सत्यव्रत सप्तऋषियों सहित एक नौका
 बैठकर बचाया भाषुनिक विद्वान् लोग ऊंचे २ पहाड़ोंकी चोटियोंपर भाई
 आदि समुद्री जन्तुओंकी इन्द्रियें पानेसे भी इस तूफानका आना सिद्ध करते हैं
 नूहके पुत्र सामरी मालावम अरब और श्यामके लोग हैं और उसके द्वितीय पु
 त्रामके वंशमें अफरीयाके इब्रहीम हैं और उसके तीसरे पुत्र याफेसके वंश
 लिया और यूरुपके रहनेवाले हैं—पहिले पहिल नूहकी सन्तति फरात और
 दज्जल नदियोंके बीच मोसेपोटेमियामें रहती थी, बहुत अधिक होमानेमें
 भिन्न २ दशोंमें जावली और राज्य स्थापन करनेमें समर्थ हुए ।

नेपोलियनबोनापार्ट— (Napoleon Bonaparte) सुन्ध प्रथम
 जगत विजयी, परम पराक्रमी और बड़ा बहादुर बादशाह हुआ—इसने सब
 यूरुपको दिलाइयाया—यूरुपीय देशोंमें माता अपने पञ्चायों पर कब्
 डे करनेसे पुपार्तीयोंके "बोना आया" । इसका अर्थन था कि, उद्यापके भाई और
 आस नालुमविन्न नहीं हैं । ये काँचीका टैपम चार्ल्स बोनापार्टके पर स० ई०
 १७६० में पैदा हुआ—१६ वषकी उम्रतक विया पढ़ा और अख लासरी गिशा
 पाइ—पश्चात् फ्रांस दरबारकी फौजमें भरती हुआ और लेफ्टिनेंट जनरलक पदपर
 पहुँच पर टोकोनका फिला फतेह विया—बादकी पिगाटेमर जनरलका मोहता
 पाया और स० ई० १७९५ में फौजका घमांडर बनाइया गया—एकही
 आठ फ्रांसदरबारने इसको कमांडर इनचीफ नियत करके इटली भजा
 पाँच इमने ४ दफ भास्त्रियाके बड़े भागी दल्हा सामना घोरती की
 करके विजय प्राप्त की—इन लड़ाइयोंमें इटली, लोम्बार्डी या सुन्ध +
 हुआ और बहुतसा धन बोलत इसक हाथ लगा स० ई० १७९७ में फ्रांसकी
 आया और दूसरे साल मिशदेश विजयकरणपर ३० हजार फौज लेकर लड़ाई
 और सुन्ध नाम तथा मिशदेश विजय विया इती दिनों फ्रांसमें कुछ

हमा, निदान नेपोलियन फौजको छोड़ अकेला फ्रांस आया और पन्थापती राजको तोड़ सब राजकाज निज अधिकारमें करलिया स०ई० १८०२ में फ्रान्स-वाला ने सभ भरके छिये इसको "कासल" नियत किया स०ई० १८०५ में इसने शाहन्शाही ताज शिरपर रख्या और सख्तपर बैठा घोड़ेही दिन पीछे जमनीपर चढ़ाई की और ३० हजार आस्ट्रिया वासियोंको कैद किया स०ई० १८०५ में पु-तर्नशिया विजय किया और महाराजा रूसको परास्त किया तथा पुतेगाल पर फ्रांजाधिकार जमाया स०ई० १८०७ में स्पेन विजय किया । जिन २ मुल्काको फतेहकर-ता गया उनपर अपने भाई भतीजेको बादशाह बनाता गया स०ई० १८१२ में रूसके शहिर मास्को को भलाकर परबाध करदिया अंतमें रूस, आस्ट्रिया, पु-तर्नशिया और इंग्लैंडकी फौजांते मिलकर इसपर चढ़ाई की । नेपोलियनको परा-स्तहो, सख्त छोड़ पेशान छे, पल्लावे टापूमें जाकर रहित पड़ा परहु इससे त-खाली न बँटागया निदान एकही वष पीछे फ्रान्समें आया बहुत लोग इसके इद-त-गिर्व इक्टे हागये और एक बड़ी सेना तैयार होगई यह खबर पाकर स०ई० १८१८ में इंग्लैंड, जर्मनी और रूसकी फौजान मिलकर इसे चारोंतरफसे घेरा और वॉटरलू की प्रासिद्ध लड़ाइमें वोलिजली साहिब अंग्रेजीसेनापतिने इसको परास्त करके ड्यूक आफ वेल्लिङ्टनका खिताब पाया और इस को पकडकर सेंट हेलेनाके टापूमें कैद किया, जहाँ पेटम फोडा निकलनेसे बीमार होकर स०ई० १८११ में मर गया फ्रांसको लाश लाईगई और बड़ी धूम धामसे द-फन हुई

नेलसन-(एच होरोशियो नेलसन Lord Horatio Nelson) बृटिश गवर्नमेन्टकी समुद्री फौजका सम्थाश्च सेनापति था इसके बाप पाद्री थे १३वर्षकी उम्रमें इसने जहाजपर नौकरी की और निजयोग्यताके कारण म-र्राहसे लेकर पदमिरलके पदतक पहुँचा स्पेन तथा फ्रान्सके जहाजों के बेड़ेको इसने द्राफलगारकी लड़ाईमें वीरतासहित नष्ट करके प्रसिद्धि पाई । इसी लड़ाइ-म नेलसनके गोली लगी थी, जिसे कुछ दिन बाद उसके प्राण नष्ट हुये । नेलसनकी वीरताके बदलेमें उसके भाई, बहिनोको पार्लियामेन्टने पेन्शन, इनाम और जायदाद दी नेलसन बड़ा साहसी, वीर, और स्वदेशभक्त विचारशील पुरुष था

स०ई० १८५९ में जन्म

स०ई० १८०५ में मृत्यु

नैपियर-(सर चार्लस नैपियर Sir Charles Napier) अंग्रेजी सेनामें वरपनहीसे भरती होगयेये और पहिले पहिल भायलैंडके उपद्रव शान्ति करने में इनसे काम छियागया था । स०ई० १८०६ में फतान बनाकर कौरसाकी लड़ाई

पर स्पेन भेजे गये इस छद्म नामों के कर्तव्य लगे, स० ई० १८१३ का
को उत्तरीय अफ्रीका में भेजा गया, वहाँ इन्होंने बड़े बहादुरी और साहस
काम किये स० ई० १८४१ में ब्रिटिश सेनाक कमांडर इनचीफ नियत हुए
हिंदोस्तानको आये स० ई० १८४३ में बड़ी धीरसासे मियानी की छद्म नामों से
अमीरोंको परास्त किया और सिंध विजय किया स० ई० १८४७ में इन्होंने
घापिस गये जब ब्रिटिश गवर्नमेंट और सिक्खोंमें छद्म नामों शुरू हुए तो
साहिब हिंदोस्तान फिर भेजे गये-स० ई० १८५० में दूसरी दफे इन्होंने
गये-इनका मिजाज चिढ़ा दिया था

स० ई० १७८२ में लन्दनमें पैदा हुए

स० ई० १८५३ म मरे.

नौशेरवाँ- (इरानका न्यायकारी राजा) कैकूबादका पुत्र स० ई० ४८१

में जन्मा-इसका असली नाम कैकूसरो था, लेकिन प्रजागण इसमें बसपन
मनुष्यके लक्षण पाकर नौशेरवाँ नामसे पुकारते थे-कैकूबादने एक दिन
नौशेरवाँ से कहा " बेटा मैं तुममें सब शुभ लक्षण पाता हूँ, लेकिन एक
अवगुण है कि, तुम दूसरोंको मूर्च्छ समझते हो, देखो जितन तुममें
विश्वास रहित होनेसे होते हैं उतने विश्वास रहित होनेसे नहीं" स० ई० ५३१
में कैकूबादके बाद नौशेरवाँ इरानका बादशाह हुआ थोड़ेही दिन पछे रुमपर
चढ़ाई की, बहुतसा मुल्क निज अधिकारमें किया और शहन्शाह रुमसे पित्त
ज बसूक किया. इसके बाद जीहू नदीके उत्तर सातारके एक जिल्ल तथा हिंदोस्तानके
पश्चिमोत्तरमें बहुतसा मुल्क और भरवये भी अनेक सूबे स्वयंसेवक मिळये
फिर नौशेरवाँने अपनी राजधानीके बनाउ सुधारमें मन लगाया था
हिंदोस्तानके राजे नौशेरवाँके प्रसन्न रखनेके लिये अपने २ दशके सोहरे भेजा
करते थे अंतिम स० ई० ५७९ की साल नौशेरवाँ शह रुमसे एक लड़ाईमें
हारकर भागा और कीमार होकर मर गया और हुसमुज उसका बेटा सातार
बैठा नौशेरवाँ यद्वा न्यायकारी था- यह यद्वा करता था कि, शहजायम्याम में
एक दिन देखा कि, एक मनुष्यन पुसेय दग मार कर अपनी टांग तोटती मनुष्य
थोड़ाही दूर गया था कि उसके एक पोदेने छात मारी थोड़ा थोड़ाही दूर गया
था कि उसकी टांग एक रातमें फेंककर डूब गई उस दिनसे ईश्वरका भय कर
में न्याय करनेपर कटिपट्ट हुआ जरदस्तके मतपर बहता था और पिछाछ
रहित था इसका यज्ञीर युजुमें गेहर बटा यज्ञर था यद्वाय नामक ईरानी दर्जी
मको दर्जीने हिंदूधाम भेजकर "अथतय" नामक ग्रंथ भेगाया और उसका अनु
वाद पाणिनी भाषामें कराया था यद्वाय हिंदोस्तानसे उत्तरजगत् सेत भी सी
रागया था नौशेरवाँका दूसरा नाम किसय था

न्युकोमन-(New Coman), डाटमौप (इंग्लैंड) मेरहिते ये और ताका प-
नानेका पेशा करतेये, पहिले पहिल इन्होंने प्राय सं० ई० १६८५ में एक घुर्से
बलनेवाली कल बनाई थी, जो अबतक इनके नामसे मसिद्ध है पश्चात् इसी कल
को जेम्सवाट साहिबने पूर्ण रीतिसे सुधारकर बनाया, जो आज कल्ह रेककी गा
दियोंमें जोती जाती है (देखो जेम्सवाट)

स० ई० १७१३ में मरे

न्युटन-(सर ऐसक न्युटन Sir Issac Newton) लिङ्गन शाय
इंग्लैंड) में जमे बाप इनको छोटासा छोड़ मरे थे १२ वर्षकी उम्रमें मातार्ने
उनको ग्रैन्यमके महाविद्यालयमें पढ़नेको भर्ती कराया वहाँ रहिकर ये वर्षकलामें
अत्यंत निपुण हुये और फुसंत पातेपर जलयत्र तथा वायुयत्र इत्यादि की रच-
नामें निपुण रहितेये रफते २ इन्होंने एक पवनचक्की तथा एक पवनघड़ी बनाई थी।
१८ वर्षकी उम्रमें न्युटन कैम्ब्रिजके विश्वविद्यालयमें विशेष विद्यापठनाथ गये।
वहाँ रहिकर इन्होंने दयापत किया कि, मोटे कांचके टुकड़ेके छिद्रमें से बाहर
निकले हुये प्रकाशका कैसा रूप होता है और कि, प्रत्येक प्रकाशमान पदार्थ
के विरणोंमें वृत्तही ७ रङ्ग होतेहैं जैसे इन्द्रधनुषमें । इन्होंने २२ वर्षकी उम्रमें १०
१० की परीक्षा उत्तीर्ण की सं० ई० १६६५ में महामारीके फैलनेपर न्युटन कैम्ब्रिजसे
अपना जन्मभूमिको लौट आये और एक दिन यागमें बैठे हुये फलोंको दरख्तोंपरसे
पृथ्वीपर गिरते हुये देख पृथ्वीकी मध्याकषणशक्तिका रहस्यभेद किया और यह
सिद्धांत स्थिर किया कि, आकाशम जितने ग्रह और पिंडहैं वे सब परस्परके आकर्षण
णसे निराधार घूमते हैं सं० ई० १६६७ में इन्होंने कैम्ब्रिज आकर २०००० की परीक्षा
पास की, और २ वर्ष पीछे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयमें इनको गणितशास्त्रक प्रधान
प्रोफेसरकी जगह मिलगई न्युटनम इतने विद्वान् होते हुये भी गर्वका लेशमात्र
न था और इसीछिये सधमिय थे

स० ई० १७०७ मे ८५ वर्षकी उम्रमें २० दिन बीमार रहिकर मरे

नृसिंहदेवज्ञ-(मसिखगणक) इनके पिताका नाम कृष्णदेवज्ञ और
छाटे भाईका नाम शिवदेवज्ञ था विष्णु, मछार, केदाव और विश्वनाथ इनके
अध्याये: दिवाकर, धमलार, गौपीनाथ और रङ्गराज इनके पुत्रये नृसिंह
देवज्ञने गौदावरीतट गौल नामक ग्रामसे आकर काशीजीम वेदान्तशास्त्र
पढ़ा और पश्चात् वहाँ मकान बनाछिया और सुयसिद्धांत आदि कई ग्रंथाकी
टीका बनाई आज कल जितने ज्योतिष (फलित) ग्रंथ मिलतेहैं उनमस अधिक
इसी घरनेके लोगोंने बनाये हुये हैं नृसिंहजीका जन्म शाके १५०८
में हुआ

यही इसकी सुन्दरताईके विषयमें इतनाही कहिना काफी है कि, "न भूतो न
 ति" चित्तौड़दरबारसे राघव नामक पंडित निकाले जानेपर दिल्ली गया
 हाके बादशाह भलाउद्दीन खिलजीको पद्मिनीके स्वरूपकी प्रशंसा सुना
 त्तौड़पर बग़ाई करनेको उद्यत किया निदान भलाउद्दीनने चित्तौरपर
 की, पर जब अपनी अभिलाषा पूर्ण करनेका कोई उपाय न देखा तो रानासे
 पूवक कहा कि, यदि आप रानी पद्मिनीके दर्शनमात्र मुझको करावें तो मैं
 को छोड़ जाऊँ—राजपूर्तोंमें उस समय पदा न होनेके कारण रानाने इसमें
 कुछ असहिष्ठा नखमझ दूरसे रानी पद्मिनीका दर्शन करादिया और
 शाहकी मीठी २ घाँते सुनते हुये किलेके बाहर पादशाहके लश्करतक
 गये बादशाहने लश्करमें पहुँच रानाको कैद करलिया और निर्लज्ज
 कहिदिया कि, जबतक तुम रानी पद्मिनीको हमारे हवाले न करोगे
 क नहीं छोड़े जाओगे—रानी पद्मिनीने यह सुनकुडुम्बियोंसे सलाहकी और
 शाहसे कहिला भेजा कि, आप स्नाहयोंके इस पार लश्कर उठालाइये
 प्रथम सहेलियों सहित आपस द्वादीकरने भाती हूँ, निदान ८०० डोलियों
 पार हुई, जिनमेंसे प्रत्येकके भीतर एक एक शस्त्रधारी रणधीर क्षत्री और
 २२२ रानाके मरने मारनेवाले सिपाही कड़ाहोंके भेसमें लश्करको चलेते
 लश्करमें पहुँच रानी पद्मिनीको बाध धंटेका अवकाश रानासे अन्तिम
 मिलनेके लिये दियागया अल्लाउद्दीनकी सुशीका कुछ ठिराना न था
 कि समझताथा कि, बाध धंटे बाद रानी पद्मिनीसे द्वादी हो जायगी—
 तु पक्ष मारतेभ कुछ और ही कौतुक दीक्ष पड़ा राना और रानी अत्यंत
 प्रगाभी घोड़ोंपर सवार हा चित्तौड़की तरफ उड़ चले और रणकरशक्षत्री
 पटरूप त्याग बादशाहके लश्करपर सलवारों छेकर डूट पड़े लश्करमें
 दपड़ फेलाई, कोई क्लिधर जान लकर भागा और कोई क्लिधर—बहुतस मारे
 ये, अल्लाउद्दीन अपनासा मुहँ छेकर दिल्ली चले भाये, परंतु खीले कान कटानेकी
 ही लाज थी निदान दूसरी दफे स० ई० १३०३ की साल फिर चित्तौड़पर
 गढ़ाई की जबराजपूर्तोंने देखा कि, म्लेच्छोंके टीढीवलके साम्हने कुछ रेश नहीं
 राती, तो वे अन्तिम जुझार करनेको तैय्यार होगये, जिसके सुधेवे रूगटे खड़े
 तेजातेहैं किलेके भीतर गुफामें प्रबन्ध भग्नि प्रश्वलित कीगई जिसमें सभ क्षत्रा-
 नेयें सुकुमार पद्मिनीसहित जठक राख होगई दूसरे दिन राना और उसके
 राजपूर्तोंने केसरिया वस्त्र पहिन किलेके फाटक खोल दिये और घीरना सहित
 लश्कर कटमरे पश्चात् राना हवीरसिंहदेवने चित्तौड़की गद्दीपर बैठकर ६४
 वर्षके राज्यमें निजपूर्वजोंका राजा किर विजय किया

परमानन्ददास—(भापाकवि—भट्टछाप) ये जातिके कान्पकुञ्ज ब्राह्मण

श्रीवल्लभाचार्यके शिष्य थे, भट्टछापमें इनकी गिन्ती है भट्टछापका विशरग विद्वल

नाथके सम्यग्धर्म देखो ये पहिले स्वयं स्वामीये छोगोंको खेला यनाथय और राम
 नन्ददेव कहिलतेये पीछे बल्लभाचार्यके शिष्य होकर परमानन्ददास नामसे
 हुये सूरदासकी तरह इन्हाने भी बहुत पद बनायेये, जिनके संग्रहका नाम
 नाथने परमानन्दसागर रक्खाया। इनके एक पदको सुनकर
 ऐसे प्रेममग्न होगयेये कि, कई दिनतक देहकी सुधि नहीं रहीयी इनका पर
 मया-महामु बल्लभाचार्य सूरदासादि अपने शिष्योंसहित एकसमय
 नपर कन्नौज गयेये। "संस्कृतरत्नमाला" नामक ग्रंथ इन्हींका बनाया हुआ
 श्रीकृष्णखंडमें गोपियोंकी भांति प्रेम रखतेये और इनके नेत्रोंसे जल
 रहताथा और रोमांच खड़े होते रहितेये
 वि० सं० १५८० में विद्यमानये

परशुराम- (प्रसिद्ध क्षत्रीकुलमेंही) जमदग्निमुनिके पुत्र रेणुका
 दत्तसे ये-एकसमय जमदग्निने रेणुकापर क्रुद्ध होकर क्रमशः अपने चारों पुत्रों
 उसके मारवाकनेको कहा, पर इन्होंने माताके घब करनेसे इनकार किया
 दान जमदग्निने उनको शापदिया कि, मरेच्छ होजाओ। जब कनिष्ठ पुत्र परशुर
 मजी मकानपर भाये तो इन्होंने पिताकी आज्ञा पापमाताका शिर घाटवाक्या
 पर प्रसन्न होकर पिताने परशुरामजीसे कहा "मोंगो" परशुरामने कहा कि, इमने
 माताको जिलादेजिये निदान जमदग्निने तपोबलसे उनकी माताया नि
 दिया-पुत्रके राजा सहस्रबाहु क्षत्रीने जमदग्नि मुनिये भाभमपर भाकर पु
 अपमान कियाया-परशुरामजीने सहस्रबाहुको परियारसहित जानसे मार
 ला और कहार क्षत्रीविहीन पृथ्वीको किया और मुक्त रीति पर ब्राह्मण
 को लीया परंतु ब्राह्मणोंको ब्रह्मधियाके मघार तथा साधनसे इतनी क्रुद्ध प
 हांथी जो राजघाज खंभाकते-अन्तमें महाराज रामचंद्रस धियादमें तेजहत
 परशुरामजी यनको तपस्या करने बढेगये-यह वियाद् निपत्यपरक सन
 धनुष फटनेपर हुआया

परशुराम-(भाषा ययि) बजके रहिनयाळे ब्राह्मण प्राय वि० सं० १६५५
 में जमे इनके बनाये पद रागसागरोद्भव रागगन्धर्वममें बहुत हैं, य भीम
 और हरष्यासजीके मरापर चलते ये पदें भक्त य इनकी यविता सर
 और मुद्गर के निग्रस्य दोंदे इन्हींके हैं -

- १।०-माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार ।
- परशुराम इस जीयका, सगा सो छिजन,ार ॥
- २।०-राजा योगी अगिन अद्भ, इनकी टेढ़ी रीत ।
- रतारोह्य परशुराम, धोड़ी पारि प्रीति ॥

“ देवाय निजय ” नामक इनके रचे ग्रंथमें संसारकी शक्तिपताया पत्त
 यह शिक्षाई कि पुनज मदे दुःखासे बचनेके निव धम फल करना चाहे

पराशर—निरुक्तके अनुसार ये वसिष्ठ ऋषिके पुत्र थे और महाभारत तथा विष्णुपुराण के लेखानुसार वसिष्ठजी इनके दादा थे ये वैद्यक, ज्योतिष तथा धर्मशास्त्रमें निपुण थे व्यासजी पुराणोंके कर्ता इन्हींके शिष्यसे उत्पन्न हुये थे—पराशर मुनिके बनाये अनेक ग्रन्थ अबभी प्रचलित हैं ।

परीक्षित—(चंद्रवंशी राजा) अजुनके पौत्र तथा अभिमन्युके पुत्र थे अभिमन्युतो महाभारतके युद्धमें मारे गये थे, निदाने पांडवोंने हिमालयको आते समय परीक्षित अपने पोतेको राज पाट साँपा— इन्होंने भारतवर्षका एक छत्र राभ्य किया अंतमें साँपके डसनेसे मरे शुक्रदेवजीने भागवतकी कथा प्रथम इन्हींको ७ दिनमें सुनाई थी—विष्णुमें परीक्षितपुरा इर्हाक। वसायाहुभाई ।

पांडु—चंद्रवंशी राजा विश्वित्रीविर्यके निर्वंश मरमानेपर उनकी विधवा पत्नी अम्बालिकांमें व्यासजीसे गर्भाधान कराया गया, जिससे पांडु उत्पन्न हुये पांडु रोग होनेके कारण इनका रंग पीलाथा और इसीलिये इनका नाम पांडु पड़ा । विश्वदेहोकर द्वास्तिनापुरकी गद्दीपर बैठे कुन्ती तथा माद्री इनकी रानिमें धीं जिनसे युधिष्ठिर आदि ५ पुत्र हुये जो पांडवनामसे प्रसिद्ध हैं कुछ कालतक राज्य करनेके पश्चात् राजा पांडुके हाथसे १ ब्राह्मण ऋषि मरगया, निदान राजा पांडु राज्य अपने बड़े भाई धृतराष्ट्रको साँप वनको उपस्था करने चलेगये एक दिन पल्लव मारतेमें राजा पांडुने देह त्याग की मुनीश्वरोंने उनकी अन्तेष्टि क्रिया कराई रानी माद्री सती हो गई दूसरी रानी कुन्तीने युधिष्ठिर आदि पाँचों पुत्रोंका बालन पोषण किया

पाणिनि ऋषि—(संस्कृत व्याकरण के कता) ये पणन ऋषिके वंशमें वैशाल मुनिके पौत्रये माताका नाम वाक्षीया पिङ्गलाचार्य इनके छोटे भाई थे और शालाहुर(कंधार) के रहनेवालेये इनका समय संस्कृतविद्वानोंके मतानुसार कलि-युगके प्रारम्भ से ७०० या ८०० वर्ष पीछे है क्योंकि इन्होंने जनमेजय नामके सिद्ध करने के लिये "पञ्च खण्ड" सूत्र बनायाहै राजा जन्मेजय उपमत्तरङ्गिणीके लेखानुसार कलियुगके प्रारम्भसे ६०० वर्ष पीछे हुये अगरेजी विद्वान् स० ई० से वैशाल ८०० वर्ष पहिले इनका होना निश्चय करतहैं निम्न-स्प ग्रंथ इनके बनाये हुयेहैं—व्याकरण अष्टाध्यायी, धातुपाठ, गणपाठ । शिक्षा पाणिनिके छोटे भाई विंगलकी बनाई हुई है, परन्तु व्याकरण से पहिले पढ़ाई जानेके कारण पाणिनिजीके नामसे प्रसिद्ध है

पाणिनि द्वितीय (पाटलाविजय काव्यके कता) स० ई० से प्रायः ४०० वर्ष पहिले महाराज नन्द मगधनरेशके समयमें हुये कथित हैं कि, जब पटनामें महाराज नन्दका राज्य था तो वहाँ उपवर्ष नामक पंडित रहिते थे

जिनके व्यापार, घरक अरु पाणिनि ३ शिष्य थे इन पाणिनिजीने पादशा विजय नामक काव्य रचा है, जिसमें अत्यंत कठिन पदांका प्रयोग किया गया है पाणिनि द्वितीयका गोडाम भाकर भी कुछ समयतक रहनेका ज्ञा लगता है

पारस्रजी- (मधुराम द्वारकाधीशके मंदिरके बनवानेवाल) इनका

जन्मनाम गोकुलदास था बोलने चालनेका नाम राधामोहनथा, ये गुजरात वैष्णव और ग्याष्टिपरकी महारानी बैजाबाइके यहां रहिकर रत्नोंकी परीक्षा करिकरतेथे और इसीछिये पारस्रजी कहिल्लतेथे । ये बड़े दयालु तथा धार्मिक इकरे बल्लभसम्प्रदायके वैष्णव थे, धमात्मा महारानी बैजाबाइकी भी इनपर इसीछाल कृपायी । सोधिपाकी फौज अथ उज्जैनकी लुटकी माल ग्यालियराम लाइ तो महारानी बैजाबाइने इसका अपने कोंपमें नहीं रखने दिया क्योंकि उसका नाम तथा देव मन्दिरोका भी धनहानेकी सम्भावनायी और आतावीरि, पारस्रजी इसको घनमे लेजाकर पुण्याय लख घरट । पारस्रजी यरोहुं रुपयेका माल छेकर मधुरा भाये, साथम उनके घेचल ग्य बड़भागी खण्डेइवाम बैर्य भाया जिसका नाम मनीराम था और जो धमवा त्रिगम्बरा जैरया । मधुरामें पारस्रजीने द्वारकाधीशका मंदिर बनवाया जो स०इ०१८२५म तैपस हुमा, इसके खर्चके लिये २५ हजार रुपये धार्पिय भापकी जायदाद लगाइ । सिवाय एक छोटे भाइके पारस्रके सोइ रिपेदार नहीं था लेकिन पारस्रको भाइसे प्रीत न होकर अपने दारद्री मित्र मनीराम तथा उनके ३ पुत्र लक्ष्मीचंद, राधाकृष्ण तथा गोविन्दाससे अधिक प्रमया । अन्तको पारस्रजीने अपनी समस्त सम्पत्तिका उत्तराधिकारी मनीरामके जेष्ठपुत्र लक्ष्मीचंदको बनालिया । मनीराम जब अपनी जन्मभूमि जयपुरसे भाये थे ता पानी रनेको लाटातक पार नहीं था, अथ इहाँका पुत्र बरोदा रुपयेकी सम्पत्तिका माछिये होगया तयदीर इसके कहत हैं । भोगम पारस्रजीको दस्तावी बामारी हुइ और सिधोर । रासुरी इनकी जमुनायाग मधुरामें देखने लापक बनी हुइ है । पारस्रजीका शरीर स्यू लया, दस्तोक पारस्र अन्तमें शक्ति इतनी घटगइ थी कि, बिना किसीकी सहायताके खर्चटेमी नहीं छेसकने थे । अगमें मचतक यह गदिन मारिइ है

लालायाधू मरणके घोड़ा दोष लगाय ।

पारस्रके कौरा यह विधियां यहा विद्याय ॥

पार्श्वनाथ (जनिपाके २३ वं तीर्थधर) ये वेदमें विश्वास नहीं रखते थे- यज्ञधर्मको सिध्या मानते थे- इश्वरके बिना कामका पण बतयाने थे पूजा पाठया सधया गणहन करते थे गुरुसंया तथा तीर्थधारिके माननका उपदेश

करते थे जैनधर्मकी अत्यंत उन्नति इनके उपदेशोंसे हुई जैनियोंके मंदिरोंमें इनकी लगी मूर्ति पुजती है स० ई० से प्राय ६०० वर्ष पूर्व हुये

पिङ्गलाचार्य (पिङ्गलशास्त्रके रचयिता) पिङ्गलशास्त्र जिसको छन्दशास्त्र भी कहते हैं इन्हींकारना हुआ है व्याकरणशिक्षाभी जो इनके बड़े भाई पाणिनि ऋषिके नामसे प्रसिद्ध है इन्हींकी पताई हुई है इनका विशेष वृत्तान्त पाणिनि के सम्बंधमें देखो

पिथागोरस—(Pythagoras) इन्होंने यूनान तथा इटलीमें तत्त्वविज्ञान (साइन्स) और ब्रह्मज्ञान (फिलॉसोफी) की मूलरोपण की और यूरोपके अल्प मुस्कामें इन्हींकी देखा देखी इन विद्याओंका प्रचार हुआ यूनानमें सैमोस-द्वीपमें एक सुहर खोदनेवालेके घर स० ई० से ५८० वर्ष पूर्व इनका जन्म हुआ पहिले इन्होंने मिश्रप्रदेशमें शिक्षा पाई, पश्चात् एशियाके अनेक देश देशान्तरोंमें भ्रमण किया और हिंदोस्तानमें बहुत दिनोंतक रहकर अनेक शास्त्र पढ़े । इस देशवासियोंने इनका नाम यवनाचार्य रक्खा था भारतवासियोंके १८ ज्योतिषसिद्धांतोंमेंसे एक यवनाचार्यकृत है । ये गणितशास्त्रके पूणज्ञाता थे और रेखागणितके अनेक साध्य इन्होंने सिद्ध किये थे हिंदोस्तानमें छोटकर पिथागोरस यूनान गये और थोड़ेही दिनोंबाद इटलीमें जन्मसे और पाठशाला आरी की ३०० से अधिक इनके शागिद हुये, जिनकी अंतमें १ बिरादरीही प्रथम बन गई थी पिथागोरसका रहित सहित और धर्मसम्बंधी विचार हिंदुओंकेसे थे मूल्य नहीं खाते थे और आवागमनका मानते थे अपने अनेक पूर्वजोंका हाल इन्हें याद था अनेक प्रयास भी सूझ करते थे और ज्योतिष तथा सङ्गीतशास्त्रके पूरे विद्वान्नाथ, इनके मतानुसार सप्तारचक्रका बिन्दु सूच्य है और पृथ्वी तथा अन्यग्रहनेके उसके चारों तरफ घूमते हैं इनकी रची ८० पुस्तकें अवलुप्त होगई हैं अन्तमें शत्रुओंने इनको अनेक चलों सहित एक मकानमें बंद करके भाग्य घण्टालादिया स० ई० से ५०० वर्ष पूर्व ८० वर्ष की उम्रमें जलकर मरे, फीनोस भी इन्हींको कहते हैं ।

पीटरदीग्रेट—(Peter the Great) यह बड़ा परिभ्रमी, विचारशील, प्रभाव और देशहितैषी मुल्क रूसका बादशाह हुआ है और इसी कारण पीटर दीग्रेट अर्थात् महान् पीटर इसको कहते हैं इसका पाप अलेग्जेंडर स० ई० १६ ७३ इसको ५ वर्षका छोड़कर मागया अनेक झगडोंके बाद पीटर १० वर्षकी उम्रमें तटतपर बैठा-उस समय रूसका राज्य इतना बड़ा न था और बिलकुल उजाड़था, प्रजागण असम्भये और राज्यके अनेक विभाग नियमबद्ध न थे-पीटरने तरुण हो सुधारकी ओर ध्यान दिया, निदान उसने मुशिगा, हाकैण्ड, इटली,

जिनके व्यादि, वररुखे और पाणिनि, ३ शिष्य थे इन पाणिनिमौने पाद विजय नामक काव्य रचा है, जिसमें भार्यत कठिन पदोंका प्रयोग किया गया है पाणिनि द्वितीयका गोदामें भावर भी कुछ समयतक रहनेका प्रमाण लगता है

पारखर्जी- (मथुराम द्वारकाधीशके मंदिरके बनवानेवाले) इनका

जन्मनाम गोकुलदास था, बोलने वालनेवा नाम राधामोहनथा, ये गुजरात वैष्णव और ग्वाळियरकी महारानी बैजाबाइके यहां रहिकर रत्नोंकी परीक्षा करनेके और इसीलिये पारखर्जी कहलातेथे । ये बड़े दयालु तथा धामक स्वभाव बल्लभसम्प्रदायके वैष्णव थे, धर्मात्मा महारानी बैजाबाइकी भी इनपर ईर्ष्याका कृपायी । साधिकाकी फौज जब ठजौनरी लूटया माळ ग्वाळियरम लाई ता महारानी बैजाबाइने उसका अपने कोंबमें नहीं रखने दिया क्योंकि उसम ब्राह्मण तथा वैष मन्दिरोंका भी धनहोनेकी सम्भावनायी और भागादाई, पाखर्जी इसको प्रजमें लेजाकर पुण्यामें रख कर । पारखर्जी करोड़ों रुपयेका माल लेकर मथुरा भाये, साधम उनके कैवल्य पर बड़भागी लण्डेल्बम्बईय भाया जिसका नाम मनीराम था और जो धर्मका विगमरों जैतया । मथुरामें पारखर्जीने द्वारकाधीशका मंदिर बनवाया जो १०६०१८२५म तैपत हुआ, इसके खर्चके लिये २५ हजार रुपये धार्मिक भाषकी जायदाद लगायी सिवाय एक छोटे भाइके पारखर्जीके कोई रित्तदार नहीं था लेकिन पारखर्जी भाईसे मीत न होकर अपने दरिद्री मित्र मनीराम तथा उनके ३ पुत्र लक्ष्मीचंद, राधाकृष्ण तथा गोविन्दाससे अधिक प्रेमथा । अन्तमें पारखर्जीने अपनी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी मनीरामके जेष्ठपुत्र लक्ष्मीचंदको बनालिया । मनीराम जब अपनी जन्मभूमि जयपुरसे भाये थे तो पानी पीनेको लाटालय पाठ नहीं था, अथ इहाँका पुष बरौड़ा रूपसेयी सम्पत्तिका माछेप होगया, तपस्वीर इसको बहुत है । अंतम पारखर्जीको दस्ताफी बीमारी हुई और सिधारे । मथुरी इनकी जमुनाबाग मथुरामें दैभने लाया बनी हुई है । पारखर्जीका शरीर रखे लाया, दस्ताके कारण अन्तम शक्ति इतनी घटगई थी कि, बिना सिंहाई सहा पताचे कचटमी नहीं देखते थे । प्रजमें अन्तम पद रहिन मासिक है

लालापापू मरणमें घोड़ा दौप लगाय ।

पारखर्जीके बीरा पद विधिसा गद्दा विद्याय ॥

पार्श्वनाथ (मैत्रिपाके २३ व तीर्थंकर) व यदम विश्वास नहीं रखत वे- यज्ञमंत्रों सिध्या मन्त्रते थे- ईश्वरते बिना कर्मका फल बतलात व पुत्रों काउपा सपेया गणहन करते थे गुरुसेवा तथा तीर्थंकरादिके माननेका उपदेश

कर कहा कि तनम प्राणरहिते देखा कदापि नहीं होने दगे यह सुनतही रानाके प्राण मुक्त होगये निम्नस्थ खोरठा मेवाहम भवलों प्रसिद्ध है,

खोरठा-हिंदूपति परतापु, पति राखी हिंदुभानकी ।

सहै विपत संतापु, सत्यशपथकर आपनी ॥

प्रतापसिंह—(महाराजाप्रतापसिंह, इन्द्र महेंद्र बहादुर, जी सी यन् गाई कश्मीर व जम्मुनेश) महाराज रणवीरसिंह, जी सी यश भाई के घर उ ई १८५० म जमे पिताके परमधामको सिंभारनेपर स ई १८८५ में कश्मीर की गद्दीपर बैठे, उस समय राजकासकी वशा अच्छी न थी निदान आपने ५ वर्षके लिये ४ सदरोंकी कौन्सल सहित जो ब्रिटिश गवर्नमेन्टकी तरफसे स्थापन ही गई थी, राज्य करना स्वीकार किया-इस कौंसलने अनेक सुप्रबन्ध किये-फेर तबसे महाराजा साहिब बिना किसी मददके प्रशसनीय राजप्रबंध कर रहे है-अपने पूजकोंके सनातन धर्मपर आरुढ़ हैं-पण्डित विद्वानोंका साकार करते है और प्रजापालकहैं । रियासतका विस्तार ७९७८४ वर्ग मील है और सालाना आमदनी प्राय ९० हजार पौंडकी है-८००० फौज और २८ तोपें हैं, महाराजकी सलामी तोपके २१ फेरोंकी है । पञ्जाबकेसरी महाराज रणजीतसिंहके घरानेसे पंजाब पतेह होनेके बाद स ई १८४६में ब्रिटिशगवर्नमटने आपके दादिसदार गुलाबसिंहको जो खालसा फौजके मुख्य अफसर थे, कश्मीर व जम्मुका राज्य सौंपा था महाराज गुलाबसिंहजीके पूजभी कश्मीरके राजा थे परन्तु कुछ कालसे राज्य छिन गयाथा-कश्मीरकी तारीफमें किसी फार्सी कवीश्वरने कहा है कि, पृथ्वीपर साक्षात वैकुण्ठ है-कश्मीरके शाल बुसाले और मेवे प्रसिद्ध है और वहकि मनुष्य सासवर कश्मीरी पंडिताकी स्त्रियों अत्यन्त सुन्दरी है

प्रतापसिंह—(महाराजा सर कनक प्रतापसिंह, जी सी यश भाई इन्दर-नरेश) ये जाधपुरनरेश महाराजा जस्वतसिंह, जी सी यश भाई के छोटे भाई है । महाराज तन्वतसिंहके मरनेपर स० ई० १८७३ म महाराज जस्वतसिंहजी जोधपुरकी गद्दीपर बैठे और महाराज प्रतापसिंहजी मंत्रीके पदपर नियुक्त हुये । आपके कामस ब्रिटिश गवर्नमेन्ट तथा महाराज जस्वतसिंहजी खुष प्रसन्न रह ब्रिटिश गवर्नमटने आपको मंत्रीके पदपर रहितेही राजोंकी समान जी० सी० यस० भाई० की पदवी प्रदान की थी और महाराजा जस्वतसिंहजीने अपने बराबर महाराजा का खिताब आपको दिया था ब्रिटिशसेनाके आप भवैतनिय कर्नल हैं तीराकी चढाईपर, चित्तारकी लड़ाईपर तथा स्थानके युद्धपर आपने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी मददके लिये जोधपुरकी सेना टेजाकर अपनी धीरता और सहस्रका पूण परिचय दिया था श्रीमान् केसरीसिंहकी मृत्युसे इन्दरकी गद्दी खाली होनेपर

या तथा गुजरात पंजाब इत्यादिके राजोंको परास्त करके उन्हे भरत
 भाधिपत्य स्वीकार कराया था पृथ्वीराजके संशयोंने इधर उधर जाकर घोर
 राज्य स्थापन करलियेथे जिनकी सत्तति अथतक सिरोही, गजौर इत्यादि गाय
 करती है । महाराज पृथ्वीराजका मन्त्री खदबदाई बड़ा थीर घफादार था, उमर
 "पृथ्वीराज रासो" बृहत ग्रंथ रचकर अपनी स्वामिभक्तिका पूर्ण परिचय दिया है
 पृथ्वीराज महान् शूरवीर, बली तथा पराक्रमी राजा थे, शादभेदी तीर मार
 थे और हाथ उनके इतने लम्बे थे कि पृथ्वीसे छूठेथे

पृथुयज्ञा—(ज्योतिषी) पदपञ्चाशिया उद्योतिष ग्रंथ इहीका बनाया हुआ है
 ये वराहमिहिरके पुत्रथे (देखो वराहमिहिर)

प्रजापति—ब्रह्माजीके १० मानसीपुत्रोंको प्रजापति याहिते है । देव, मनुष्य,
 मनुष्य इत्यादि सब उन्हींसे उत्पन्न हुए । प्रजापतियाके नाम मरीचि, भवि, भगिष्,
 पुण्डरीक, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ, दक्ष, भृगु और नारद हैं ।

प्रतापसिंह राना—(चित्तौडनरेश) इनके पिता खदबदाईके बहन
 मेवाडराजका अधिकांश मुगलाने छीन लियाथा यद्यपि कि चित्तौड भी
 छूट गया था-वि० सं० १६०८ म राना खदबदाईके मरनेपर प्रतापसिंहभी
 गद्दीपर बैठे लेकिन इनको अपने पृथकोंके मुन्क छिन जानेका यद्वा अस्वास्ति
 था और अक्षर पादशाहको सेवा करना भी मंजूर नथा निदान इग्लान मुगलोंने
 लड़ा जाये रक्खी-बादशाहने बहुत खाहा कि, अन्यराजोंकी तरह या नाम-
 मात्रको कुछ घोड़ाहीसा राना भी हुसम उठाव, अर्भक और निमित्त तथा
 मनसब छेयें परंतु रानाने यह बात बिल्कुल नहीं मंजूरकी-लाखार हादर
 वि० सं० १६३३ म अक्षरने राजा मानसिंहको रानाके दमन करनेको भेजा
 खदबदाईपर रानाने मुयाबिल्ला दिया पर हारा और मंदलगढ़ तथा उदयपुर भी
 छूटगये और रानाको गुंभलमेरुम जागर रहिना पड़ा-३ वर्ष पीछे गुंभलमेरु भी
 छूटगया और तमाम मुन्हम बादशाही याने चैत्रगढ़-६ वर्षतक राना बड़ी
 विपत्तिमें रहा, मेवाड़क पहाडाम भी उस रहिनेको जगह न मिटी निदान
 भायके पास एक पहाडाम छिपाहुमा सेना करतारहा-फिर भीहा पाकर
 रानाने गिराफ, मंदलगढ़, उदयपुर इत्यादि अपना सब मुन्ज जीतलिया और
 पादशाही यानेद्वाराको मारकर भगादिया । इसके पीछे १० वर्षतक ग्यापपुत्रक
 राण करके वि० सं० १६५३ में रानाका देगलाक हुआ-भंतसमय रानाका
 वम नहीं निहलता था तब खन्नुमरके राज्यने गुहा कि, आपके प्राण बचाने
 अटव है ? कहा कि मैंने निज पृथकोंके राज्यको छाननेमें बड़ा बट भोगाट तो
 मुझ निरदे कि मुसलमान फिर न छीन छे, वृं कर अमरसिंहका तो मुझे गिन्ना
 नहीं । क. राजवंताने दिये इतना बट इगो-यह बात सुन सब चर्चाने छ

कर कहा कि तनम प्राणरहिते ऐसा कदापि नहीं होने दंगे यह सुनतेही रानाके प्राण मुक्त होगये निस्संख खोरठा मेवाडमें अबलौं प्रसिद्ध है,

खोरठा-हिंदूपति परतापु, पति राखी हिंदुआनकी ।
सह विपत संतापु, सत्यशपथकर भापनी ॥

प्रतापसिंह—(महाराजामतापसिंह, इन्द्र महेंद्र बहादुर, जी सी यस भाई कर्मीर व जम्बूनरेश) महाराज रणवीरसिंह, जी सी यस भाई के घर उ ई १८५० में जमे पिताके परमधामकी सिधारनेपर स ई १८८५ में कभी लकी गद्दीपर बैठे, उस समय राजकाजकी दशा अच्छी न थी निदान आपने ५ वर्षके लिये ४ सर्दारोंकी कौन्सल सहित जो ब्रिटिश गवर्नमेंटकी तरफसे स्थापन की गई थी, राज्य करना स्वीकार किया-इस कौंसलने अनेक सुप्रबंध किये-फिर तबसे महाराजा साहिब विना किसी मददके प्रशासनीय राजप्रबन्ध कर रहे है-अपने पूज्याये सनातन धर्मपर भारूढ हैं-पंडित विद्वानोंका सत्कार करते है और प्रजापालक है । रियासतका विस्तार ७९७८४ वर्ग मील है और सालाना आमदनी प्राय ९० हजार पौंडकी है-८००० फौज और २८८ तोपें हैं, महाराजकी सलामी तोपके २१ फेरोकी है । पजाबकेसरी महाराज रणजीतसिंहके घरानेसे पजाब फतेह होनेके बाद स ई १८४६में ब्रिटिशगवर्नमेंटने आपके दावेसदार गुलाबसिंहको जो खालसा फौजके मुख्य अफसर थे, कर्मीर व जम्बूका राज्य सौंपा था महाराज गुलाबसिंहजीसे पूज्यभी कर्मीरके राजा थे परन्तु कुछ कालसे राज्य छिन गयाथा-कर्मीरकी तारीफमें किसी फार्सी कवीश्वरने कहा है कि, पृथ्वीपर साक्षात् वैकुण्ठ है-कर्मीरके शाह दुसाले और मेघे प्रसिद्ध है और वहाके मनुष्य खासकर कर्मीरी पंडितकी स्त्रियो अत्यन्त सुन्दरी हैं

प्रतापसिंह—(महाराजा खर वनल प्रतापसिंह, जी सी यस भाई इन्दरनरेश) ये जोधपुरनरेश महाराजा जस्वंतसिंह, जी सी यस भाई के छोटे भाई हैं । महाराज सरतासिंहके मरनेपर स० ई० १८७३ म महाराज जस्वंतसिंहजी जोधपुरकी गद्दीपर बैठे और महाराज प्रतापसिंहजी मंत्रीके पदपर नियुक्त हुये । आपके कामसे ब्रिटिश गवर्नमेंट तथा महाराज जस्वंतसिंहजी खूब प्रसन्न रह ब्रिटिश गवर्नमेंटने आपकी मंत्रीके पदपर रहितेही राजोंकी समान जी० सी० यस० भाई० की पदवी प्रदान की थी और महाराजा जस्वंतसिंहजीने अपने बराबर महाराजा का खिताब आपयो दिया था ब्रिटिशसेनाके भाप अवैतनिक वनल हैं तीराकी चढाईपर, चित्तूरालकी लड़ाईपर तथा थानके युद्धपर आपने ब्रिटिश गवर्नमेंटकी मददके लिये जोधपुरकी सेना लेजाकर अपनी वीरता और सहस्रका पूण पारिचय दिया था श्रीमान् केशरीसिंहकी मृगुमे इन्दरकी गद्दी खाली होनेपर

मिंटिदा गवर्नमेंटने महाराज । प्रतापसिंहकी इंडरका राज्य स० ई० १९०२ ई०
 दिया भाप सुशिक्षित सहज धीरपुरुषह भार उदारता, न्यायपरता एतदि
 सर्वगुण सम्पन्न हैं भाप सूर्यवंशी राठौर राजपूत हैं, सम्राट् पृथ्वीराज
 राज्याभिषेकमें भाप इच्छेड बुलाये गयेथे-

प्रवरसेन प्रथम-(कमीनरंग) इन्होंने सेतुबंध नामक प्रकृत महाराज
 रखा है, जिसका नाम पाणभट्टकृत भीष्मधरित्तके निम्नस्थ श्लोकमें आया-

श्लो०-कीर्ति प्रवरसेनस्य प्रयाता कुसुक्षोमघला ।

सागरस्य परं पारं कपिसेनव सेतुमा ॥

सेतुबंधकी प्रदीप नाम्नी व्याख्यासे मालूम होताहै कि, प्रवरसेन भूराजों
 निमित्त छत्रधारी राजा विक्रमादित्य द्वयं उज्जैनयुक्तेयः। आजासे कवि काविलि
 खने सेतुबंध काव्य रचा था। हिरण्य तथा तोरमाण इनके पुत्र थे हिरण्य
 इनके षट् वर्षीयकी गद्दीपर बैठा और ३० वर्ष राज्य करके सिंघारत-पक्ष
 प्रवरसेन द्वितीय गद्दीपर बैठा और छत्रधारा राजा हुआ (छोदेयो।)

प्रवरसेन द्वितीय-(कमीनरंग) प्रवरसेन प्रथमका पोता तथा हिर
 ण्यके भाइ तोरमाणका पुत्र था इसकी माता भद्रना इक्ष्वाकुवंश राजा यम
 द्वयी बेटी थी जब हिरण्य गद्दीपर बैठा तो तोरमाण उसका भ्राता बना तोर
 मणने अपने नामसे सिंघे उल्लयके, इसीसे हिरण्यन उल्लको कैद करदिया
 इससे कुछही महानि याद तोरमाणकी थी। भद्रनासे हिरण्यके भयसे एक कुन्दा
 के घरमें छिपकर प्रवरसेन नामक पुत्र बना-जब यह कई वर्षका हुआ तो इतने
 विक्रमण पुष्टि और अपने पहिनेके लक्ष्मि मित्रता सुरत देग राजा जयदेवका
 लंदेह हुआ कि यह भोग भोगा है जब पता लगाकर जयदेव उग्र कुन्दाके घर
 गया जहाँ प्रवरसेन रहता था तो अपनी पहिनका पापा-भाइ यादेन मिहारा
 बद्धत रोये इसी भयम हिरण्यने तोरमाणको कैदसे लाद दिया, पर यह
 कैदसे निकलतेही मर गया- इस भांति पर प्रवरसेनने माताको
 सती होनेसे रोया भर भाप साधाउनरो यन्त्रिया जुहारी दिनपार
 हिरण्यने भी भयम मरकर कुन्दाका सिंहासन गाली परदिया उप
 खमप यशवती राजा विक्रमादित्य द्वयरा उज्जैनम राज्यका निदान करने
 द्धारत भापे हृदयक गतिव पति । मातृगुमरी कमीरणा राज्य देदिया ज
 मातृगुम माप ४ वर्ष राज्य करगुराया तो प्रवरसेन तीर्थोके छोटा और सिंग
 (पोर्नागदा) इत्यादि देग जितका महाराज विक्रमने लदने का भाग बना
 यमकीमें खने यशवती राजाविक्रमक मनेके समाचार सुन और दुर्गवती
 दिन मातृगुमद राज एग स चाली हात नरा दार मातृम विप-शमने का

प्रखरेन कश्मीरकी गद्दीपर बैठा, सब राजाओंको जीत चक्रवर्ती राजा हुआ और महाराज विक्रमके पुत्र सिद्धादित्य प्रतापशीलको जिसको शत्रुभोजन राज रहित करदियाथा वज्रैतकी गद्दीपर बिठाया और निम्न पूर्वजोंका ३२ तुलियोंका सिंहासन जिसको विक्रम (सम्भवतः विक्रमादित्यसकारी) कश्मीरसे वज्रैतमें ले आयाथा फिर कश्मीरमें पहुँचाया । प्रखरेनने छेछम सिद्धीके तीर छोटे घड़े सब मिलाकर ३६ लाख ग्रहोंका एक विश्वित्र नगर बसाया था, जिसके बीचमें घड़े ऊँचे २ मकान तथा एक पहाड़ी और प्रखरे-श्वर महादेवका मंदिरथा और नगरके दर्वाजोंपर श्रीमादि देवियोंके मंदिरथे । ६० वर्ष राज्य करनेके पश्चात् जब एक दिन राजा प्रखरेन प्रखरेश्वर महादेवपर लक्ष शठा रहाथा तो कलशमेंसे ताम्रपत्रपर लिखा हुआ यह श्लोक गिरा

श्लोक-कृतकृत्यं महद्दत्तं भोगा भुक्ता घषो गतम् ।

किमन्याकरणीय ते एहि गच्छ शिवालयम् ॥

श्लोकका अर्थ समझ राजा राज त्याग कलासको चछदिया । इसकी रानीका नाम रत्नप्रभाया । इसका पुत्र युधिष्ठिर इसके बाद कश्मीरकी गद्दीपर बैठा । राजा प्रखरेन द्वितीय रागद्वेपररहित था

वीणराय पात्र (आपाकवि)ठड्डानरेश इन्द्रजीतसिंहके यहाय पात्ररहिती । कविता करनेमें परम चतुरथी-यादशाह अकबरने इसकी सारीफ सुन दर्वा-रि हाजिर होनेका हुक्म दिया-जबहाजिर न हुई तो इन्द्रजीतपर १ करोड रुपया जमाना किण । कवि केशवदासजीने जो इन्द्रजीतके दरबारमें रहितेथे भागरे जावर कबरके मंत्री राजाधीरबळको एक सवैया सुनाया और सिफारिश कराके जमाना फ करादिया (देखो केशवदास), परंतु प्रवीणके हाजिर होनेका हुक्म जारी हा निदान प्रवीणने इन्द्रजीतके साम्हने आकर निम्नथ कवित्त पढ़ा-

कवित्त-आइ हौं बृहन्न मंत्र तुम्हें प्रभु शास्त्रनभे सब विधि मति गोइ ।

प्राण तजौं कि भजौं मुहूर्तानें मैं न लजौं लजि है सब फोइ ॥

बखोरहै परमारथ स्वारथ चित्त धिच्यार बहौ प्रभु खोइ ।

जामें रहै प्रभुकी प्रभुता और मोर पतिव्रत भंग न होई ॥

इस कवित्तको सुनकर भी जानेहीकी आज्ञा देनी पड़ी जब प्रवीण अकबरके साम्हने लाइ गई तो अकबरने उससे कहा- "उँचे है सुर घश किये, सम है नर जश कीन" प्रवीणने उत्तरम कहा "अब पताळ बलिघश करन, छछट पयानो कीन" इस प्रकारके अनेक प्रश्नोत्तर होनेके बाद प्रवीणके चित्तमें स्त्री होनेके कारण संदेह हुआ, निदान अन्तरे अकबरसे कहा-

दो०-विनती राय प्रवीणकी, सुनियो शाह सुजान ।

जूंठी पात्र भद्वत है, धारी वैस और स्वान ॥

यह सुन भयवरने प्रवीणको विदा कर दिया-कवि केशवदासजीन प्रवीणके नामसे " कविप्रिया " ग्रंथ बहुत उत्तम रचा है और उससे शुरुमें प्रवीणके बड़ी तारीफ की है उड़छा (पुन्देलखण्ड) में वि० सं० १६४० म जन्मी

प्रभाकर-(मीमांसादशानके भाचाप) कुमारिलभट्टके प्रधान गिष्ये इनका समय वि० सं० ६४७ से ७०७ तक निश्चय है जब कुमारिलभट्ट सेतुपुर रामेश्वरके दशनाको गये थे तो दक्षिण देशम किसी ग्रामके सर्वाप मार्गम वाले कालके वृत्त बलकाको खेलेते देख पंछने लगे कि " गौय यहाँसे कितना दूरे है? " यह सुन उनमसे एक लड़का हँसकर बोला कि, भाप यह नहीं जानते कि सायकालके वृत्त लड़के गौयसे कितने दौंस दूर खेलेनेको चले जाते हैं. कुमारिलजी लड़केका ऐसा वचन सुन विस्मित हुए और उसके मकानपर जा ठहरे. कुछ देरबाद कुमारिलजीने भोजन बनानेके लिये उसी लड़केसे पूछा मंगथाइ-लड़केने चारा तरफ देखा जब अग्नि रलनेकी कुछ न पाया तो हवा पर रेंता पिछा उसपर अग्नि रगलाया-तेसी विलक्षण बुद्धि देना कुमारिलजीने उस लड़केको उसके मापसे मांगलिया-यह लड़का प्रभाकरही था जो कुमारिलजीस पठपर सब शास्त्राया परामर्शी होगया एक दिन कुमारिलजी स्वराचित घोड़े ग्रंथ लिख्याकी पढ़ारह थे, उस समय उस ग्रंथकी " ननु नोक्तं तत्रापि नात्ममिति टिरक्तम् " पंक्तिकी बहुत देर बिचारा परंतु समझ न आइ, तब तो कुमारिलजीने मध्याह्नका समय जान उस पाठके यही छोड़ दिया यह देना प्रभाकरने उन पंक्तिके " भाव तुजा उक्तं तव अतिवक्तम् " पदार्थके लिये पुस्तक पर रगदिया जब कुमारिलजी फिर पढ़ाईके लिये पुस्तक देखन लगे तो पदार्थके दोषोंके देना सुनत अर्थ समझ लिया. यह भी निश्चय कर लिया कि प्रभाकरके लिखाय इसप्रकार पदार्थके दोषोंके देना कर सकता। तबने कुमारिलजीने प्रभाकरका नाम सुर प्रसिद्ध पर दिया है प्रभाकर नेसी विलक्षण बुद्धिके व कि, इन्होंने मीमांसादशानके सम्पूर्ण ग्रंथोंके कारण कुमारिलजीसे त्रिपरीग योजन किया है

प्रतापनारायण सिंह (भाग्यशिल राजा प्रतापनारायण सिंह, के १६६६ माइ ई अगस्तमें) सं० १८७५ म भयन नाना महाराज भाग्यशिलके भयभयोंके, वी गद्दीपर बैठे। भार विद्वान समिष्टिता धर्मात्मा, गद्यशक्ति तथा विद्वान्नीतिपुष्प है। गंगासंगीतके कई कई भाषाओं सुत मातृका लक्ष्मणनट मन्तराजके अगम्यापक सुभार्य मन्तर बनाया है और यह ही भाइ है की उपनिषित विभूषित किया है। मयापाम पुणे महिरका जगद मया राज भयभयने इनम बनाया है और उत्तम गंगाका रगती, गंगाके बल्लोयके पण तथा देवीके लक्षण देना इनम प्रकाश है। राजभजन इन रंगीतके

हुआ है कि, उसका प्रत्येक भाग सबकी आँखोंके सामने होनेपर भी जो जै उसमें गुप्त रखने लायक हैं उन्हें कोई नहीं देख सकता । भवनके देखनेकी ई साधारणको इजाजत है, नित्यप्रति यात्रियोंकी भीड़ लगी रहती है जो भाव विखे ऋषिसन्तानको "अवधनरेश" महा पवित्र नामसे विभूषित जान हुगण ब्राह्मणद्वित साष्टाङ्ग दंडवत् करना अपना सौभाग्य समझते हैं । भवनके भीतर तीनरीसिसे भापका बनवाया तथा सजायी हुआ श्रीराधाकृष्ण इत्यादि देवता का मंदिर है जिसकी नियत समयपर प्रार्थना होती है और जहाँ बैठकर नित्यप्रति १५ पक्ष महापूजा करते हैं । प्राँकीके समय शृङ्गार विलक्षण होता है दर्शकोंके चित्त रमानन्दमें मग्न होजाते हैं और स्मरण होता है कि—“त्रिप्रसादा ऋणी धरोह प्रसादा एकमळा धरोह” । आपके महिष्के सामने मुसल्मानोंका एक प्राचीन का कबरिस्तान था जो रास्ता रोककर यात्रियोंको बड़े कष्टका कारण होता था, अपने नया राजभवन बनवाते समय, किसीके बिना कान हिलाये हुये, बंधकको खुदवाकर फिकवा दिया और उसकी जगह सुंदर सड़क निकलवाकर उसकी रोशनी तथा फुव्वारे इत्यादिका प्रबन्धकरके प्राचीन अयोध्या नगरकी गीमा बढ़ाई और भारतको कृत्य २ किया । भापका मातङ्ग असाधारण है, बिना आशा आपके सन्मुख कोई नहीं बोलता है और सच छोग भय, प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे भी प्रेमसे भी रिक्त नहीं है आपको देखते हैं । अयोध्या में नये घाटकी सड़कपर भी बगीचेके भीतर आपका बनवाया श्रीराधाकृष्णका एक छोटासा अत्यंत मनोरंजक मंदिर है जो बिलकुल संगमरमरका है । आपके समयका अधिक भाग जापाठ तथा देवदर्शन करने और इलाकेके मामलातकी देख माल रखनेमें बीतता है । आप आमदनी तथा खर्चपर सदैव दृष्टि रखते हैं ।

आपके रचे निम्नस्थ ग्रंथ देखने योग्य हैं—रसकुसुमाकर सचित्र (भाषासाहित्य, प्रांसदेशविद्व (मीमांसाविषय), द्विजदेशकृत शृङ्गारकविषाका तिलक । १० इ० १९०३ म महाराज प्रतापकी सन्न प्राय ५० वर्षको मालूम होता है, अभी तक आपके कोई पुत्र नहीं है । परमेश्वर आपको चिरायुकरे और पुत्रका सुख सजावे ।

प्रतापसिंहसवाई—(जयपुरनरेश) ये सुप्रसिद्ध राजा जयसिंह सवाईके भ्रातृपुत्र थे । कविता अच्छी करतये और वैद्यक शास्त्र पारंगतये । अमृतसागर इन्हीं का रखा हुआ है । अहसग्राम (स० इ० १७९५) इत्यादि ग्रंथ भी इन्हींके रचे हुये हैं । आपकी "व्रमनिधि" नामसे करतये । अछवरके राव इन्हींके समयम जयपुर राज्य की आधीनता त्याग स्वार्धीन हुये । स० इ० १८०३ में सिधारे ।

प्रिन्सेप—(जेम्सप्रिन्सेप—James Prinsep) युवावस्थामें इंग्लैंडसे भारतको आकर बनारस में एकसालमें नौकर हुये और "स्केचेज—भाफ

बनारस " नामक पुस्तक अङ्ग्रेजीमें लिखी स० ६० १८३२ में एशियाटिक इन्स्टीट्यूट कलकत्तेके दैनिक समाचार पत्रके सम्पादनका काम इनके सुपुत्र कुल मर्दाने पीछे एशियाटिक सुसाइटी कलकत्तेके मंत्रीका भोददा इतनी उक्त भोददेपर रहिकर इन्होंने संस्कृतविद्याये अनेक मार्चीन तथा गुप्त रस्ये सोजकिया और सिकंदर आजमसे एवर अपने समयतकके सब बादशाहों लिखे एकर किये स० ६० १८४० में ४० वर्षके होकर मरे.

प्रियादासनाभा-(भक्तमालके टीकाकार) पृन्दावनके रहिनवाक- महामा ब्राह्मण थे नामाजीकी आज्ञासे भक्तमालकी टीका भाषा कवित्तोमें ए वि० स० १७६९ की साल इन्होंने सम्पूर्ण किया

फतेहसिंह-(महाराना सर फतेहसिंहजी, जी सी एस आई मेवा रेशा) स इ १८५० में जन्मे और महाराना सजानसिंहके बाद स० ६० १८ उदपपुरकी गद्दीपर विराजे। आपके समयमें राज्यमें सड़कें तथा नहरें ज और स्कूल, दापाखाना, कचहरी, जेल, सिपाहियोंकी बाराक इ यदी ३ इमारतें बनवाई गई। खिर्किये लिये भी कई क्षपाखाने खोले गये और डाकघर मौकर रखी गई- आपकी प्यही वादी दुर् दु मिसेसे कई शहीद तथा गमीके खर्चोंके घटानेका भीमान् अपने राज्यमें उद्योग कर क्योंकि, मध्यमश्रेणीके मनुष्य इन खर्चोंके कारण बहुधा ऋणो दानों महाराना फतेहसिंहजी पढ़े विषेयी तथा म्यायकारी हैं। रहिनखदिन खाया शिक्षाकरना शौक है और प्रजागण भीमान्को प्यार करते हैं। प्रिटिशगवर्नमें सेवाद राज्य की तरफसे ३० हजार पौंड वार्षिक राजस्व दिया जाता है। १८५१ मस्दारीमें महारानाकी उल्लामी तोपवे २१ फौंका है। खण्डर वैद्व मिः २१॥ हजार फौज विपाततमें है जिसमें भीलौलीभी १ पश्चिम शामिप नैवाल, महापगढ, दूंगरपुर, चौसवादा मन्डीराजपुर, और धामपुर २ थे महाराना, महाराना सादरके कुटुम्बों हैं-भयकर इत्यादि सु बादशाहके समयम अम्य सब राजपूत राजाओंमें बादशाहमें करमा रवीवार दिया था परंतु राजा प्यौदुन तनमें मात्र रहिन ऐसा करमा रवीवार न किया था। महाराना फतेहसिंहजी भी धरन प्रगया विचार रगत हैं, "दूज दिन दुये आपके इफ्तौत पुषकी पक्षाया जब शीव उपाय फतेपर भी राजकुमारका भाराम न हुआ तब सदांरने राजा सादरको रतदामके रहिनेवाये किसी करामाती गुलामान परीरब देगर कहा कि, राजकुमारको उछने दापगे अफय भाराम होजायगा, भयरे येम हदबतिठ मरेको निउने स्पष्ट कह दिया कि, गुलाम

जोड़ना तो हमारे वंशकी प्रतिष्ठाके विरुद्ध है" । महाराना फतेहसिंहजीका रानीके रहिते दूसरी शादी न करनेका छुट व्रत है । १९ वड़े वज्रके और ३२ वज्रके खर्दार श्रीमानको राजस्व देते हैं । महाराना मेवाड़ श्रीरामचंद्रजीके खर्तस सूर्यवंशी हैं, इस वंशमें होने वाले नरेश सदासे क्षत्री धर्मका पालन अपने वंशकी प्रतिष्ठाकी रक्षा करते आये हैं और इसीछिये यह वंश हिंदी-त भरके राज्यवंशोंसे अधिक प्रतिष्ठित समझाजाता है ।

फर्कससियर—(सुगलसम्राट् दिल्ली) जहांदारशाहके मारे जानेके पीछे ई० १७१३ में दिल्लीकी गद्दीपर बैठा, इसके समयमें अजीतसिंह भोधपुर नि अपने राज्यकी सब मसजिदें गिरवा दी थीं और उनकी जगहपर बनवा दिये थे फर्कससियरके दरबारमें इस्ट-इण्डिया-कम्पनीकी तरफसे जदुत भेजे गयेथे, जिन्मेंसे एक डाक्टर हैमिल्टन नामकने फर्कससियरको नरोगसे चकृत किया था जिसके बढ़केमें कम्पनीको बंगालमें ३८ गाँव-जमींदारी खरीद नेकी आज्ञा मिली और अंग्रेजी माळपर महिसूळ माफा गया सिक्कोंके गुरु बंदासाहब इसीके यत्नमें मारेगये, ये बड़ा बेभकळ इसके समयमें सदैव फिसादरहा जिससे सलतनत तबाह हो चली थी-वं राज्य करनेके पीछे मारहाला गया

फातिमा—(बीबीफातिमा) मुसलमानोंके पैगम्बर मुहम्मद साहिब की इफ्ती बेटी थी प्रायः स० ई० ६०६ में मकामे पैदाहुइ, मुहम्मद साहिबसे ६ महीने स० ई० ६३२ में मदीनामें सिधारी हजरत अलीसे इसका वियाह हुआ था न और हुसेन इसीके पुत्र थे

फाह्यान—(चीनीसन्त) ये चीनकारहनेवाला बौद्धसाधु प्रायः स० ई० ४०० में । पशियामें होताहुआ हिंदोम्पानआया पहिले काबुलकंधारमें ठहिरा और देखा बौद्ध मत खूब सन्नतिपर था पश्चात् पेशावरमें आया और बौद्धमतका एक बड़ा देखा पादको सिधुनदी पारकर मयुरा गया और देखा कि वहाँ उस समय नार बौद्ध साधु रहितेथे पश्चात् राजपूतामा और मध्यहिंदम गया और वहाँके राजाओंको बौद्धमतानुगामी पाया फाह्यान लिखता है कि एकसब राज्योंमें यधियोंको जिस्मानी सजाके बढके छुमाना किया जाता था, कहदफके अप-तिका सीधा हाप काटाजाता था, चाँदाळोंके सिवाय कोई शिकार नहीं करता न खाता था, न बैचताया, न सुअर, मुर्गे इत्यादि पाळताथा, शराबकी भट्टी नाम भी कहीं न थी और बौद्धोंके स्तूप सब जगह बने हुए थे जिनके खखके छिये १३ जायदाईं सुखरं थीं, स्तूपोंमें रहिनेवाळे या भाकर ठहिरनेवाळे साधुओं भोजन, वस्त्र, दूध, चटाईं इत्यादि आवश्यक चीजें मिला करती थीं । त फाह्यान कलीज, अयोध्या, गया, कपिलवस्तू, पाटलीपुत्र तथा अनेक और

राजधानीपर्मि, जिनके अब नामतक मिटगये हैं विचरता किरा-पाटर्कपुर (पटना) में फाह्यानने १ वर्ष रहिकर बौद्धमतकी अनेक धर्मपुस्तकको जो चीनमें नहीं मिलतो थीं पाहीले चीनी भाषामें अनुवाद किया-इसके बाद एक व्यापारी जहाजपर सवार होकर फाह्यान १४ दिनमें सिंहलद्वीप पहुंचा-सिंहलद्वीपमें फाह्यानके लेखानुसार उस समय एक ४७९ फिट ऊंचा था तथा एक स्तूप भी था जिसमें ५ हजार बौद्धसाधु रहितेये सिंहलद्वीपमें ठहरकर फाह्यानने विनयपताका नामक बौद्धोंकी धर्मपुस्तककी एक प्रति लिखी-फाह्यान लिखताहै कि, पहिले सिंहलद्वीपमें कोई नहीं रहिता था, धीरे-धीरे उधर उधर व्यापारीलोग भावसे और सिंहलद्वीप एक बड़ा राज्य बन गया-पश्चात् उपदेश कोंने हिंदोस्तानसे आकर उनको बौद्धमत ग्रहण करया-स्वदेश छोड़े हुए जा कई वर्ष होगये थे, तौ एक दिन सिंहलद्वीपके किसी मंदिरमें एक व्यापारीक चीनका बनाहुमा पंखा बुझकी २२ फिट ऊंची जर्जरदवा मूर्तिको भेंट करे हुये बेश फाह्यानको स्वदेशका स्मरण हो आया और उसके भास निकल भागे निदान कुछेक दिनबाद वह एक व्यापारी जहाजपर सवार हो चीनको चउ दिया-रास्तेमें तूफान आनेसे जहाजकी पदीमें छेद होगया और फाह्यानको महीनेके करीब, सुमाट्रा तथा जावाके टापुभूमि पड़े रहित पड़ा फाह्यानके लेखानुसार शक्त द्वीपमें उस समय वैदिकमतका प्रचार था, और गणेश, देवी, शिव इत्यादिकी पूजा होतीथी पुनः एक व्यापारी जहाज पर सवार होकर जिसपर वैदिकमतानुगामी २०० मनुष्य और सवार थे फाह्यानने यात्रा की और ८१ दिनमें चीन पहुंचगया-उपरोक्त लेखसे प्रतीत होताहै कि, उन दिनों हिंदोस्तान और चीनके बीच खूब व्यापार होता था इस यात्राके श्रुतान्तमें फाह्यानने एक पुस्तक रची थी जो बड़ी रोचक है-फाह्यान जब हिंदोस्तान भाषाया तब बौद्धमत यहांपर दमनिके दख शिखरपर था, पर वैदिकमतभी बिच्छुल नष्ट नहीं होगया था-

किर्दासी-(फार्सी कवि)पूरा नाम इनका हकीम अबुलक़ासिमहसन किर्दासी था, और इनके बाप इसहाक, तूस (ईरान) के रहनेवाले फूपीवार थे किर्दासीको छुट्ठीसे पढ़ने लिखनेका बड़ा शपसन था और कविता तारीफये एक करतेये, इन्होंने सुलतानमहिमूद गजनवीके हुक्मसे "शाहनामा" नामी फार्सी पुस्तक रची थी महिमूदने प्रतिशेर (दोहा) किर्दासीको १ भदार्की कब्र कदा था, परंतु जब ३० सपयाद् १२०००० शेरों (दोहा) का श्रद्धा ग्रंथ रचकर किर्दासीने पेश किया तो महिमूद परराया और देने दिखानेकी कुछ बात नहीं-परंतु दिनोंबाद जब किर्दासीने याद दिलाई तब महिमूदने १३०००० रुपये भेजे-किर्दासीने एनेसे इन्कार किया और महिमूदकी निन्दा लिखी जिसे

को देख महिमुद्देने १२०००० अशकिये भेजीं लेकिन् भफसोसकी बात है कि शहिरके एक वर्षाजेसे तो महिमुद्देके सिपाही अशकियोंके तोड़ेकेकर चुसे और वसरे वर्षाजेसे फिर्दीसीका जनाजा निकला-फिर्दीसीके कोइ बेटा या नहीं, निदान सिपाही अशकिये लेकर उसकी इफलाती बेटीके पास गये बेटीने छेनेसे इनकार करदिया-

फिर्दीसी स० ई० १०२० में ८० वर्षके होकर मरे

फिरिदता-(इतिहासकार) इसका असलीनाम मुहम्मदकासिम था इसके बाप मौलाना अलीहिंदुशाह, पेप्राबादके रहिनेवाले बड़े विद्वान् थे और इसको बचपनहीमें लेकर हिंदुस्तान चले भाये थे और आहिमदनगर (दक्षिण) के नव्वाबके यहां पढानेपर नौकर हो गये थे, परंतु थोड़ेही समय पीछे मरगये थे । बड़े होकर फिरिदता नव्वाब घाजापुरके दरबारमें गया और उर्दू-के कहिमेसे उसने तारीख फिरिदताखिखी-फिरिदता घाजापुरके नव्वाब इबराहीम आविळशाह द्वितीयके दरबारमें स० ई० १५८९ से १६१२ तक रहा तारीख फिरिदतामें स० ई० ९७५ से १६०५ तकका हिंदुस्तानका इतिहास लिखा है- इस तवारीखका अङ्गरेजी अलुबाद खोसाहिबने किया है-

स० ई० १५५० में पैदा हुआ

स० ई० १६१२ में मरा

फीरोजशाह तुगलक (सम्राट् दिल्ली) मुहम्मद तुगलक सम्राट् दिल्लीका चचेरा भाईया-इसने स० ई० १३५१ से १३८८ तक दिल्लीके तख्तपर नादशाहत की-येबड़ा रहिमदिल था, फौज और प्रजा सब इससे प्रसन्नथी, अन्याय इसके समय में नहीं होने पाताथा-विद्वान् भी था, "फुतूहाते फीरोजशाह" नामक फार्सी पुस्तक इसीकी बनाई हुई है-इसके समयमें बहुतसा मुल्क फतेह हुआ था और इसके अधिक मन्न होनेके कारण बङ्गाल और दक्षिणके सूबे स्वाधीन होगये थे अर्मारोंकी सामिशोंके कारण तथा सदैव रोगी रहिनेकी वजहसेभी इसको बड़ा घट भोगना पडाया, इसने बहुतसे पुछ, सराप, तालाब, पाठशाला, जमुनाकी नहिर, शफाखाने और मसजिदें बनवाईथीं पुरानी दिल्लीमें फीरोजाबादका किछा इसीका बनवाया हुआहै स० ई० १३८७ में राजपाठ भयने घेटेको सौंप विरिक्त होगयाथा परंतु बेटा निकम्मा निकला और थोड़ेही दिनबाद तख्तसे उतार दिया गया निदान इसको फिर तख्तपर बैठना पडा-स० ई० १३८८में ८० वर्षका होकर मरा-पुरानी दिल्लीमें इसकी कबर है

फैकालिन-देखो वेजमिन फैंकालिन-

बन्दीगुरु (बंदासाहिब)-इनके बाप रामदेव राजपूत, इलाके पूछकेरबारी ग्रामके रहनेवाले थे १६ वर्षकी वयमें बन्दीगुरु, जिनका नाम प्रथम लक्ष्मणदेव था किसी बैरागीके शिष्य होगये और बैरागी साधुओंकी मंडलीके साथ तीर्थ यात्रा करते फिरे. पश्चात् पञ्चवटीपर रहिकर बहुत दिनाहक जप तप करते रहे फिर सिक्खोंके गुरु गोविंदसिंहजीके पास पहुँच गुरुदीक्षा ली और खालसापथ धारण करके बन्दा नाम पाया कुछ दिनबाद गुरुने इनको पंजाबकी तरफ मुसल्मानाको नीचा करनेके लिये भेजा जहाँ २ बन्दासाहिब पहुँचे वहाँ २ सिक्ख लोग, जो अपने गुरुओंके दुःखोंपर भाँसू बहा रहे थे, हथियार ले २ कर मददको आगये फिर तो बन्दासाहिबने छाया मुसल्मान बुढ़े, बच्चे, औरत, मक्क कटवाढाळे, लाशें जलवादीं, मसजिदें गिरवादीं, मुसल्मानोंके गाँवके गाँव फुँकवादिये और छुटयालिये, मुलाखा यह है कि, मुसल्मानोंका नाक घने खबा दिये पंजाबके पहाड़ी राजे बंदा साहिबसे डरते थे, मुसल्मान इनके नामसे कौंपते थे बन्दासाहिब पोट्टे पर खूब सवार होते थे, सिकार खूब सेइते थे और करामाती साधू थे इनके २ विवाह हुये थे और इनका पंजाबपठक खजौराबाद (पंजाब) में है फर्रुखासिपर मुगलसम्राट दिल्लीने २० हजार फौज भेजकर इनको बड़े जोड़ सौदसे पकड़वा लिया और मरवाढाला परंतु इनको जो कुछ करना था करधुके थे

स० ६० १६५० में जन्मे-

रहे सखेमित्र, परमेश्वरसे डरनेवाले, सुन्दर स्वभावके और दानी थे शिरपविद्या, कृषि और इमारतका इनको शौक था अंतमें पार्लियामेंटके मेम्बर होगये इनकी वक्तुता प्रभावशाली होती थी कई ग्रंथभी अंग्रेजीमें इन्होंने रचये

स० ई० १७३० में जन्मे

स० ई० १७९७ में मरे.

धरद्वाराज १ (तार्किकरक्षाके कर्ता)—सूक्ष्मविचारसे इनका समय वि० सं० १०४१ और ११४७ के बीच निणय किया जासकता है ।

धरद्वाराज २ (छपुकौमुदीके रचयिता)—ये तैलङ्ग ब्राह्मण दक्षिणसे आकर काशीमें बसे थे । सिद्धांतकौमुदीके कर्ता भट्टोजीदीक्षित इनके विद्यागुरु थे । वि० सं० १६७६ और १७१६ के बीच इनका समय निणय किया जासकता है । सिद्धांतकौमुदीको बालकोंके लिये कठिन जान इन्होंने मध्यकौमुदी, छपुकौमुदी तथा सारकौमुदी रची थीं ।

धरद्वाराज ३ (सामवेदीयकल्पसूत्रकी व्याख्याके कर्ता) ये वौशिक गोत्रि ९० धामनाचार्यके पुत्र थे । अम (स० ई० १९०३) से ५०० वर्ष पूर्व इनका समय प्रतीत होता है ।

धरद्वाराज ४ (मीमांसक)—नैविवेकग्रन्थकी टीका इन्होंने बनाई थी । इस टीकाकी एक प्रति बनारस संस्कृतकालिजमें ४०० वर्षसे कुछ अधिक पुरानी मिलती है । इनके गुरुका नाम सुदर्शनाचार्य और पिताका नाम रङ्ग नाथ था ।

धर्ममान गुरु—देसो महावीर स्वामी—

धर्मियर—(फ्रेंसिसधर्मियर—Francis Bernier) आंजू (फ्रांस) के रहिनेवाले प्रसिद्ध पाषिक और डाक्टर हुये हैं ये हिंदोस्तान आकर १२ वर्षतक औरङ्गजेबके दरबारमें रहे ये जिसमेंसे प्रायः ८ वर्षतक औरङ्गजेबके राज्य बैध रहे अमीरदानिमंदाखीके साथ इन्होंने कश्मीरकी खैर की थी स्वदेश लौटकर इन्होंने अपनी यात्राके घृत्तांतमें एक पुस्तक रची

पेरिसमें स० ई० १६८८ में मरे

धरुचि—विष्णुमहर्षके दरबारके नगरत्न नामक ९ प्रसिद्ध पंडितोंमें इनकी गणना है इन्होंने “ प्राकृत व्याकरण ” रचा था जिस में महाराष्ट्री, सुरसेनी, पिशाची तथा मगधी भाषाओंका, जो संस्कृतसे विगडकर घनी हैं, वर्णन है

धराहमिहर (ज्योतिषी)—इनके बाप आदित्यदास सिंहलद्वीपी ब्राह्मण (मगध) पटनाके रहिनेवाले बड़े ज्योतिषी थे पितासे विद्यापट धराहमिहरजी

माजीवकाके किये विक्रमदर्पके द्वारमें उजैन गये पावनी भाषामी जानते थे, विक्रमने इनकी प्रतिष्ठा की और दरबारके नवरत्न नामक प्रसिद्ध पंडितोंमें इनको रक्षक। निम्नम्य ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं-

पञ्चसिद्धान्तिका, बृहत्संहिता, बृहत्जातक, लघुजातक, योगपारा, विद्यापटल, समाससिद्धांत और होडाशास्त्र पञ्चसिद्धान्तिकाम धण्ड मिहरने निम्नस्य ५ मार्चीनसिद्धान्तोंके भाष्यको संग्रह किया है- पौष्टिक सिद्धांत, रोमकसिद्धांत, घण्टिसिद्धांत, सूर्यसिद्धांत और पितामहसिद्धान्त । घराहमिहरकृत "बृहत्संहिता" में १०६ अध्याय हैं जिनमें सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, ग्रह, मेघ, वायु, भूकम्प, उलकातारा, इन्द्रधनुष, बिजली, भौंधो, वनस्पति, जीव जगत्, अनंतघात, जवाहरात और वाग छगाने तथा मूर्ति, मकान बनाने और सजानेका घणन है घराहमिहरने ज्योतिषशास्त्रके कई ग्रंथ प्राकृत तथा भाषाम भी रचेये और उनमें केवल अनुभवसिद्धपातें लिखीयां जिनको लोग महसी कहतेहैं आजकल महली शब्द उन ज्योतिषोंके किये इस्तेमाल किया जाता है जो उपरोक्त ग्रंथोंके अनुसार फल बताते फिरते हैं घराह मिहराचार्यके पुत्र ५० पृथुपदाभी बड़े भारी ज्योतिषी थे (सो देखो)

स० ई० ५०५ में जन्मे और स० ई० ५८७ में मरे, अनेकाधी सम्प्रति है जि १०० वर्ष जीकर स० ई० ६०५ म मरे थे

बलदेवजी (श्रीकृष्णचंद्रके ज्येष्ठ भ्राता) बसुदेवजीके पुत्र रोहिणी दरसे थे मयुराके राजा कंसके दरसे रोहिणीजी गोकुलम मन्दबाबाके व रहिती थी बलदेवजीया वियाह राजा रेवतीके कन्या रेवतीसे हुआया जिससे ३ पुत्र हुये बलदेवजी बड़े बलवान् थे हल तथा मूसल इनके हथियार थे बलरामजी सब लड़ाइ झगड़ामें श्रीकृष्णजी के साथ रहे और श्रीकृष्णजीके पहिलेही द्वारकामें परमधामके सिधारे

बलभद्रमिश्र (ज्योतिषी) कन्नोजवासी दामोदरके पुत्र थे प्रसिद्ध ज्योतिषी रामदेवक इनके गुरु थे ये बङ्गालके सुषेनार शाहशुजाके पाठ राजमदिल (बंगाल) में रहा करते थे शाहशुजा दिल्लीके बादशाह शाहजहाँके पुत्र था "हाफ़तरत" नामक सामकग्रंथ वर्षकाल विचारमें इन्होंने शाके १५६४ म रचाया ज० श० १५१४

बलभद्र- (भाषाकवि) ये प्रसिद्ध कवि केशवदास सनाढ्यप्राज्ञके भाई थे स० स० १६१० में विद्यमान थे-इनका बनाया नखदिय सब कविकी-विक्रमोंम प्रमाणिक है, बालकृष्णत्रिपाठी तथा वाशीनाथ इनके दोनो पुत्रभी बड़े कविये । विशेष बृहन्त इनका कवि केशवदासके सम्बंधमें देखो ।

वल्लभाचार्यमहाप्रभु (गोकुलस्य सम्प्रदाय प्रवर्तक) इन के पिता लक्ष्मणभट्ट वैष्णव ब्राह्मण थे और इनकी माताका नाम इल्लमगारु था । जब इनके माता पिता काशीको आ रहे थे तौ मिति वैशाख घटी ११ को वि० सं० १५३५ की साल चम्पारन—सारनके पास खौरागौवमें इनका जन्म हुआ । काशीमें ५ वर्ष की अवस्था में इन्होंने सुप्रसिद्ध पं० माधवाचार्यसे विद्याध्ययन किया । इनके दो भाई और थे, बड़े रामकृष्ण और छोटे रामचंद्र, वे दोनों संस्कृतके अच्छे कविये । पिताके देहांतके बाद वि० सं० १५४८ की साल १३ वर्षकी अवस्थामें इन्होंने दक्षिणकी ओर गमन किया और विजयनगरके राजा कृष्णदेवकी सभामें पहुंच शास्त्र मतघालोंको शास्त्रार्थमें जीता । ऋक्षर त्रिभुवन अनुमान करते हैं कि ये कृष्णदेव सम्भवतः कृष्णारायलू हैं जो स० ई० १५३० में राज्य करते थे । उस समय विष्णु स्वामाकी गद्दी खाली थी, सब महत्त भाषायोंने इन्हें उस गद्दीपर बैठाया और वल्लभाचार्य इनका नाम हुआ । इस दिग्विजयके पीछे इन्होंने काशीमें आकर वहाँके पंडितोंको शास्त्रार्थमें जीता फिर ब्रजगये और गिरिराजपर श्रीनाथजीकी स्थापनाके संस्थाकी वास्तव्यभावसे एक नवीनही प्रणाली निकाली । कुछ दिन पीछे औरंगजेबके उपद्रवके कारण श्रीनाथजीकी मूर्तिको मेवाड़में उठा ले गये जहां अब उनका बड़ा भारी वैभव है तथा लाखों रुपया वार्षिक भोगरागमें व्यय होता है । इसके बाद महाप्रभुने तीन दूके भारत भ्रमण कर्के मित्र मतका प्रचार किया । भारतवर्षके प्रायः सब रीषों तथा देव स्थानोंमें महाप्रभुकी बैठक है । जहां बैठकर एक सप्ताहमें श्रीमद्भागवतका सम्पूर्ण पारायण किया है वहाँ २ बैठक स्थापित हुई । ऐसी ८४ बैठके हैं । Catalogus Catalogorum के अनुसार इन्होंने ५२ संस्कृत ग्रंथ बनायेये । भागवतपर मुवायिनी लिखक, ब्रह्मसूत्रपर अणु भाष्य और जैमिनीय सूत्रपर भाष्य इनके बनाये हुये हैं । इनके मुख्य शिष्य ८४ थे जिनका वृत्तान्त इनके पौत्र गोस्वामी गोकुलनाथजीमें “खौराखी वैष्णवोंकी वार्ता” नामक ग्रंथमें लिखा है । इनमेंसे बहुतेरे हिंदीके प्रसिद्ध कविये । सुरदास, परमानन्द कृष्णदास और चतुर्भुजदास तौ ऐसे प्रसिद्ध हुये कि अष्टछापमें गिने गये । इनकी स्त्रीका नाम लक्ष्मीबहूजीया और इनके दो पुत्र थे गोस्वामीगोपीनाथजी और गोस्वामी विठ्ठल नाथजी । गोपीनाथजीका वंश नहीं चला । गोस्वामी विठ्ठलनाथजी बहुत प्रसिद्ध हुये (सो देखो) । महाप्रभुने मिति भाषाठ घटी २ को वि० सं० १५८७ का साल काशीजीमें अनुमान घाटपर देहत्यागी । उस समय सन्यास लेलिया था और सशरीर गंगाजीमें अपने पुत्रोंको उपवेश कर्ते २ प्रवेश किया । महाप्रभु भाषा कविताके बड़े उन्नापकये परंतु स्वयं भाषाकविता नहीं करते थे । ग्रमवाधियोंसे तथा ब्रज भूमिसे महाप्रभुको बड़ा प्रेम था, बहुधा कहा करते थे कि “ग्रजवासी वल्लभ खदा मेरे जीवन प्राण” ।

वल्लभ रसिकजी—(भाषाकवि) ये स्वामी हरिदासजीके शिष्य थे और प्रजमें रहतेथे । जन्म इनका स० ई० १६३४ में हुआ । “ मौझ ” नामक कविने इन्होंने राधाकृष्णका विहार वर्णन किया है ।

वल्लभन्यायाचार्य—(न्यायकीलाघतीके कर्ता) बनारसकादिन के मासिकपत्र “ पंडित ” में इनका समय स० ई० की ११ वीं तथा १४ वीं वतायीके बीच निर्णय कियाहै ।

बालि—(राजाबलि) पौराणिक कथानुसार ये वैरोचनके पुत्र थे—प्रल्हाद इनके गिषामह थे और हिरण्यकशिपु प्रपितामह—ये दैत्यवंशोत्पन्न पाताळ (अमेरिका) के राजाथे विष्णुने धामनरूप रखकर इनसे ३ वैग पृथ्वी मांगी थी—परंतु तीनों वैगमें सब पृथ्वी नापड़ी ।

वशिष्ठऋषि—१० प्रजापतियों तथा सप्त ऋषियोंमें इनकी गणना है ऋग्वेदमें लिखाहै कि, ऋषि मित्रावरुणके साथसे जो उवदी भस्त्राको बंधकर पतनहुमा वशिष्ठ तथा अगस्त्य ऋषि जन्मे थे—सूर्यवंशकी पुरोहिताई । पीछोतक इनके घरमें रही और इनकी सन्तति अनेक पीढीतक वशिष्ठनामसे पुकारा जाती रही योगबलिष्ठ ग्रंथ इन्दीका बनाया हुआहै—ये राजा दशरथ तथा रामचंद्रमहाराजके समयमें मौजूद होकर पुरोहित के पदको प्राप्तथे और यह कराया करते थे तथा मन्त्रीका भी काम देते थे । नग्दिनि गडके पिछे इनसे और राजा विश्वामित्रसे लड़ाई हुई थी (देखो विश्वामित्र)—एकज्योतिष सिद्धांत इनका बनाया हुआहै और ऋग्वेदका सातवीं मंडल इन्होंने प्रगट किया था—इनके गोषके घातण अथवा बहुतरे हैं—इन्होंने ऋग्वेदीय धर्मसूत्र भी रचेथे तपोबल द्वारा इन्होंने उच्च बुद्धि प्राप्तकी थी, ये त्रिकालदर्शी थे संसार इनके घरतक पदार्थ की भांतिया ।

बभ्रुदेव—(श्रीकृष्णके पिता) शूर नामक यदुवंशके पुत्रथे—पांडवोंकी माता दुन्ती इनकी बहिन थी—इन्होंने कंसके चचा भाद्रवकी ७ लड़कियोंसे, जिनमेंसे सबसे छोटी देवकीकी विवाह किया—देवकीके उदरसे श्रीकृष्ण जन्मे थे और दूसरी थी रोहिणीके उदरसे पद्मेधर्जका जन्म हुआ—इनका घर मथुरामें था परंतु श्रीकृष्णके द्वारवाको सिंघारनेपर यहभी कुटुम्बसहित द्वारवा चलेगये थे—वहीं इनका देहांत हुआ और ४ स्त्रिय इनके साथ खती हुई ।

बहिरामगोर (इतनाका बादशाह) स० ई० ४२० में बिद्यमान था—२३ वर्ष राज्य करके एकदिन शिकारफते हुए घोडासहित गदमें गिरकर मरगया—गोरब रके शिकारका इसको बड़ा शौक था इसीलिये बहिरामगोरनामसे मशहूर हुआ—
बाकपति (गौड़वध प्राकृत महाकाव्यके रचयिता) विक्रमकी ७ वं शातानीमें हुये थे कर्नाटकके राजा यशोवर्मनकी सभाके अलङ्कार थे—गौड़का काव्यमें राजा यशोवर्मनकीके दिग्विजयका वर्णन है—

वाग्भट्ट (आयुर्वेदकी अष्टाङ्गहृदय संहिताके निर्माणकर्ता)—“ रसरत्न समुच्चय ” वैद्यक ग्रंथकी इन्हींका बनाया है इनकी बनाई अष्टाङ्गहृदयसंहितामें सूत्रस्थान भादि छ' स्थान और काय भादिवैद्यकके ८ बंगोंका वर्णन है पुरा-
तत्त्ववेत्ता डाक्टर रायल साहिबने लिखा है कि, भारतमें वाग्भट्टकी चिकित्सा सर्वोत्तम है और भरप देशके हकीमोंने यह विद्या इसीसे सीखी थी रायट भा नरेषिष्ठ एलफिन्सटन साहबने अपने सुविख्यात भारतवर्षके इतिहासमें लि-
खा है कि “ भारतवर्षकी वाग्भट्टसे पूनामी भादि यूरोपदेशवासियोंने हिकमत सीखी थी ” वाग्भट्टकी विक्रमकी १२ वीं शताब्दीसे पहिले हुये क्योंकि इनकी २१ वीं वैद्यक संहिताके सबसे प्राचीन टीकाकार पं० हेमाद्रिये जो वि० सं० के १२ वें शतकमें हुये

शाचस्पति मिश्र (न्यायवार्तिक तात्पर्यके कता)—ये वि० सं० १०३२ में जीवितये “ खण्डनोद्धार ” नामक ग्रंथ भी इन्हीं का रचा हुआ है जिसमें श्रीहर्षकृत “ खण्डनखण्डसाध ” का समाधान दिया है ।

बाजीराव प्रथम—(द्वितीय पेशवा) निजपिता बालाजी विश्वनाथके बाद सं० ई० १७२० में पूनाकी गद्दीपर बैठे इन्होंने दक्षिणदेशवर्ती उस सब मुल्कको, जिससे शीघ्र वसूल करनेका अधिकार दिल्लीदरबारने इनके पिताको दिया था, अपने राज्यमें पूर्ण रीतिसे मिला लिया और १५ वर्ष निरन्तर लड़कर सं० ई० १७३६ में मालवेका सूबा तथा विन्ध्याखल पर्वतके उत्तरोत्तर चम्बल और नर्मदानदियोंके बीचका मुल्क अपने अधिकारमें कर लिया सं० ई० १७३९ में पेशवाने पुतगालघालोंसे वैसीनका शहर छीन लिया अतम पेशवाने निजाम हैदराबादपर चढ़ाईकी पर सन्धिफरने पड़ी सं० ई० १७४० में पेशवा बाजीरावका देहांत हुआ—

बाजीराव २ (अन्तिम पेशवा) यह रघुनाथराव पेशवाके पुत्र थे और षष्ठम पेशवा माधवराव नारायणके आत्मघात करनेपर सं० ई० १७९५ में पूनाकी गद्दी पर बैठे इतिहास प्रसिद्ध नाना फनवीस ब्राह्मण इनका बगीर था इनके समयमें हुस्कर भादि मरहटा सरदारोंने जो पेशवाके आधीन होकर राजस्व दिया करते थे श्यावह सर उठाया, निदान इन्होंने ब्रिटिश गवर्नमेंटके साथ अहिद नामा कके २६ लाख रुपये सालाना अंग्रेजीफौजके खर्चके लिये देना स्वीकार किया और अंग्रेजोंने इनकी मदद करने तथा इनके शत्रुओंको परास्त करनेका वचन दिया हुस्कर, संधिया और भोंसला नामक मरहटा सरदार मिलकर उक्त अहिदनामाके तोड़नेको कटिबद्ध हुये—इसी वजहसे अंग्रेजों और मरहटोंमें युद्ध उना जो सं० ई० १८०३ से १८०४ तक जारी रहा और जिसका नतीजा यह हुआ कि, संधिया तथा भोंसला भादि मरहटा सरदारोंको परास्त

होकर अपने २ मुस्कका अधिकांश अंग्रेजोंको देना पड़ा-इसके बाद कुछ समय तक सब झगड़े दृष्यगये परंतु स० ई० १८१८ में पेशवा, हुल्कर और नागपुरके भोंसलाने पृथक्-पृथक् गवर्नमेंटसे फिर युद्ध ठाना पर परास्त हुये पेशवाने परास्त होकर ब्रिटिश गवर्नमेंटकी शरणली, निदान उनका राज्य सूबे बंधोंमें मिला लिया गया और उनको ८ लाखवी पेन्शन देकर कान्हपुरके समीप विहूर रहिनेका हुकम दिया गया जहां उन्होंने अपनी बाकी छत्र आरामसे काटी-नाला साहिब जिनका स० ई० १८५७ के गद्दके बाद कुछ पता नहीं पेशवा बाजीरावके दत्तक पुत्र थे। "राजपुत्र होनेपर पेशवा बाजीरावके पास वह भायी सेना तब वीर मंडली नयी जो उनको सदा घेरे रहा करती थी परंतु वह विम मंडली सायपी जिसने उनके प्रबंध मत्तपका समय अपनी आंखोंसे देखा था और जो उनको उदारताके सामने भूमदलके राजामहाराजाओंको कुछ नहीं समझते थे। दूर २ से बड़े २ पंडित विद्वान् भाते थे और योग्यताके अनुसार पेशवासे पुरस्कृत होते थे, वेदपाठकी ध्वनिसे विद्वर उनके समयमें भरपूर रहिता था"।

बाणभट्ट-(प्रसिद्ध उपन्यासकार) इनके बापका नाम चित्रभानु और माताका नाम राज्यदेवी था। भद्रनारायण ईतान इत्यादि इनके बाल्यापनके मित्र थे। १४ वर्षकी उम्रमें इनके पिताका देहांत होगयाथा बड़े। होकर इन्होंने सिलादित्य हर्षवधन महाराज कलौजके दरबारमें प्रतिष्ठा पाई। सिलादित्य हर्षवर्धन का राजकाळ स० ई० ६१० से ६५० तक है इसीसे इनका समयभी निर्णय होसक्ता है। निम्नस्थ ग्रंथ इनके रचे हुये हैं-

रत्नावली, नागानन्दनाटक, कादम्बरी, हर्षचरित्र, चंडिकाशतक और पावतीपरिणय नाटक।

इन सब ग्रंथोंमें कादम्बरी बहुतही ललित है उसके विषयमें विद्वान् लोग कहते हैं कि "कादम्बरीरसज्ञेभ्य आहारोपि न रोचते" नटयम्पूके टीकाकार गुणविनय नामक जैनने कादम्बरीको 'मुष्टताड्या' नामसे लिखा है-

सूर्यदासकके कर्ता पं० मयूर भट्टकी बेटी पं० बाणभट्टको विवाही थी। ये सधुर जमाद दोना महाराज श्रीहर्षकी सभामें (देखो मयूरभट्ट तथा भीष्म)। श्रीहर्षने बाणको कादम्बरी तथा श्रीहर्षचरित लिखनेपर पुरस्कारमें "महाकवि शक्रबुद्धामणि" की उपाधि दी थी।

वात्सायन-पद्मपुराणमें इनका नाम अकसर आया है-आधुनिक तत्त्ववेत्ताभाके मतानुसार वात्सायन नामक ऋषि स० ई० ६०० में विद्यमान थे जिनका दूसरा नाम महानागया वात्सायन ऋषिने कामसूत्र रचे थे-

बादरायण-देखो व्यास।

यापुदेव शास्त्री, पंडित महामहोपाध्याय, सी० भा० ६० ई० (गणितशास्त्र

पारगत)—इनके परदादे प० चिन्तामणिदेव परांजये, कोंकणप्रदेशसे रत्नागिरि जिल्लेके घेळणेम्बर नामक ग्राममें भाकर बसे थे । घेळणेम्बरसे कुछ दिनोंबाद गोदावरी तट अहमदनगरके टोंका गाँवमें जा रहे थे । चिन्तामणिदेवके पुत्र सदाशिवदेव हुये जिनके पुत्र सीतारामदेवके घर सत्यभामाके उदरसे स० ई० १८१९ की साल नृसिंहदेव नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका उल्लापन नाम बापूदेव शास्त्री है । पं० सीतारामदेव अच्छे विद्वान्थे और छेन वेन तथा मन्यान्व व्यापार करनेके निमित्त कभी पूना और कभी नागपुरमें रहते थे । इनके ३ पुत्र थे जिनमें बापूदेव सबसे छोटे थे । १६ वर्षकी उम्रतक बापूदेवको अष्टाध्याई, अमरकोष, सिद्धांतकौमुदी, विंगलसूत्र, ऋग्वेद, शिक्षा तथा रघुवंश पढ़ाया गया था जिससे व्युत्पत्तिज्ञान वास्तवमें इनको अच्छा होगया था । बादको ये पूनाकी महाशाली पाठशालामें गणित पढ़नेके लिये गये, गणितमें इनका खूब मन लगा, गुरुकी सब विद्या थोड़ेही दिनोंमें हरली । परन्तु ये पिताके साथ नागपुरको चले आये और पं० दुर्धिराज मिश्रसे भास्करकृत छीलावती तथा बीजगणित पढ़ने लगे । फिरतौ इनको गणितशास्त्रका व्यसन लगगयाथा अहिर-निश उरुमें छषलीन रहते थे । स० ई० १८४० में सीहौरके पोलीटिकेल एजेन्ट विल्किन्सन साहबने इनकी ख्याति सुनी और परीक्षा करनेके बाद सीहौरकी पाठशालामें व्यक्ति गणित पढ़ानेकी २०) ४० मासिककी जगह इनको दी और हफ्त दिया कि, सिद्धांती पंडित खेधारामजीसे सिद्धांत शिरोमणि पढ़ाकरे । दररोज तीसरे पहिरको साहबभी खुद इनको रेखागणित तथा पद्याय विज्ञान पढ़ाया करते थे । इस प्रकार दोषपमें इनकी खूब विद्योन्नति हुई । स० ई० १८४२ में विल्किन्सन साहबने सिफारिश कर्के बनारस संस्कृत कालिजमें मे सुरल फिळावीफी तथा गणितका प्रोफेसर इनको करादिया । बनारसमें भाकर इन्होंने अंग्रेजी पढ़ी और दामोदरशास्त्रीसे पटदर्शनकी शिक्षापाई । स० ई० १८५० में मैकडॉड साहब बनारसके कलेक्टरकी भाहानुसार इन्होंने हिंदी बीजगणित रचकर लोकरलगधर्नमेंटसे दोहजार रुपये इनाम पाया, इसी बीज-गणितको जब दूसरी दफे छपवाया तौ म्यूरसाहब लफ्टिनेन्ट गवमरने १ हजार रुपया तथा १ दोशाळा इनाम दिया । छन्दनकी रायल एशियाटिक सुसायटी, बंगालकी एशियाटिक सुसायटी और कलकत्ता तथा प्रयागके विश्वविद्याल-याने इनको अपनी २ सभाओंका मेम्बर नियत किया था । वृटिशगवर्नमेंटने अप्पुविद्याके पुरस्कारमें इनको महामहोपाध्याय तथा सी० आई० ई० की उपा-धियें दी थीं । वि० सं० १९३५ के साल कार्शाके सष लोर्गोंने सभाकर्के इनको अभिनन्दनपत्र दिया था जिससे प्रतीत होता है कि, जैसी प्रतीता इनकी सरकारमें थी वैसेही लोकसभामें भी भादर था । स० ई० १८७३ म ऋद्ध तथा सूर्य ग्रहणका शुद्ध गणित कर्के इन्होंने महाराजा कार्मीरके पास भेजा था जो

कीक घड़ीसे मिला, महारामने प्रसन्न होकर १ हजार रुपये तथा ५०० रु० का एक दोशाळा इनाममें दिया । वि० सं० १९५३ से काशी नरेशकी आज्ञानुसार व प्रति वर्ष पञ्चाङ्ग बनाकर १०००० इनाम पाया करते थे। काशीकी पंचकोशी यन्त्रमें कई वर्षसे गड़बड़ थी, लोग भिन्न २ मागोंसे याना करने लगे थे, एवं काशीमें मरेखा तथा इजिनियर साहबकी आज्ञासे यंत्रादिद्वारा इन्होंने शुद्ध मर्मा निर्णय किया । स० ई० १८५८ में इन्होंने भास्कराचार्यकृत सिद्धांत शिरोमणिके वातिपत्र सदाहरणोंको चन्द्रगणितसे उपग्रह कर सिद्ध किया था कि, भारतके प्राचीन लोग चन्द्रगणितसे भी सूक्ष्म वाकिफ्यो स० ई० १८६१ में बंगाल एशियाटिक "सुसाइटीकी" "बिबलीमोथीकाइन्डीका" नामक ग्रंथमालामें इन्होंने "सूयतिर्ज्ञान सोपपत्ति तथा सटिप्पण" छपवाया था । स० ई० १८८९ में १०० रु० मासिककी पेन्शन ली और १४ महीनेबाद ७ जून स० ई० १८९० को परलोक गामी हुये । ३ छियोंके निस्सन्तान मरणपर इन्होंने चौथा विवाह किया था जिससे दो पुत्र और १ कन्या है। पं० वापूदेवदासी वक्तवे बड़े पाबन्द थे, शरीर वृद्धापस्थातक दृढ़ रहा, प्रातः ३ बजेका गंगास्नान मरणतक नहीं छोड़ा। वे स्वभावके संधिध, अहंकार का स्पर्शभी उनमें नहीं था और अपनेको यदातक सुच्छ आमा करते थे कि बातचीतमें विद्यार्थियों तकसे आप कहकर बोलते थे । परंपर भी विद्यार्थियोंको पढ़ाते रहिते थे, पं० महामहोपाध्याय सुधाकर कुबे, पं० अहमदेष पांड्या, विनायक शास्त्री इत्यादि काशीके वर्तमान विद्वान् आपहीके शिष्य हैं । एक दिन विनोदम आपने एक संज्ञ निर्माण किया था और उसका नाम अमुल्यत्र रक्खा था निम्नलिखित पद्यमें उक्तयंत्रका उपयोग दिखाया है:-

दिनमिति यथाभीष्टे काळं नतं च समुत्ततं । निरयणतनु सांशां भानोश्चयम-
मदिग्लघान् । सपदि नरभागेक्षामाभादघातिनरोयसस । तदिदमनुष्टं यंत्रं कार्यां
जयत्यनिर्घं स्फुटम् ।

निम्नस्य ग्रंथ वापूदेव कृत है:- विचित्र ग्रन्थ संग्रह, सत्त्वविधेक परीक्षा
ज्योतिषाचार्याभयवर्णन, सायनाबाद, फलित विचार और मानमंदिर वर्णन । -
वापूदेव शा० की ज० कुं०



बाबरशाह—(हिंदोस्तानमें मुगल राज्यके संस्थापक) इन्होंने वि० सं० १५५० में फरगाना (मध्यएशिया) का राज्य अपने बाप उमरशेख मिर्जासे पाया। इसके बाद ११ वर्ष पर्यंत तुर्किस्तानमें अपने सर्पिण्डियों तथा उजबक जातिके सर्दारोंसे इनका झगदारहा। अंतमें इनके पैर वहांसे उखल गये और ये भागकर काबुलमें आये वहां कुछ दिन ठहरकर इन्होंने फौज एकत्र की और अपने दादा अमीरतैमूरकी राजधानी समरकंदको विजय किया, परंतु उजबक लोगोंने इनको कुछ दिन बाद वहांसेभी निकाल दिया तब तो इन्होंने अपने पूर्वजोंके मुल्कका ख्याल छोड़ हिंदोस्तान फतेह करनेका इरादा किया—हिंदोस्तानमें उस घत्त आपधापधी, आपसमें फूट थी, बाबरने इसको सुभवसर जान हिंदोस्तानपर चढ़ाई करदी और वि० सं १५८१ में मुलतान इबराहीम लोदीको पानीपतके मैदानमें परास्त करके दिल्लीका राज्य छीन लिया और आगरेकी तरफ कूच किया। राजपूत राजाओंमेंसे चित्तौड़नरेश राना सांगाके सिंघाय और फोड़ साम्हने न पड़ा। रानाके राजपूतोंने बाबरकी फौजके दांत छेद करदिये तब तो बाबरने अपने सर्दारोंके साम्हने कसम खाई कि, अगर रानापर फतेह पाऊ तो क्षराय पाना छोड़ू और दाढ़ीघटाऊ। अंतमें फतेहपुर सीकरीके मैदानमें कई नमकहराम सर्दारोंके बिगड़ जानेसे रानाकी हार हुई। दूसरीदी वर्ष बाबरने चंदेरीका किला मेदनीरायसे फतेह किया। कुछ दिनोंबाद पठानोंने पूर्वमें इफ्टे होकर फिस्ताद करना चाहा मिदान बाबरको उनके दमन करमेके लिये भोजपुर और पटनातक जाना पड़ा। इसके कुछ दिन बाद शहिजादे हुमायूँके, जो अपनी जागीर सम्भलमें रहिताया, बीमार होनेकी खबर आई। बादशाहने सूरत उसको राजधानी आगरेमें बुला लिया, जय उसके बचनेकी कोई सूरत न देखी तो बाबर उसके पठंगका परिक्रमाके ऊपरको मुख और घोंगाहाथ ठठाकर ईश्वरसे प्रार्थी हुआ कि, “ या मौला ! इसको मारामकर और मुझको ले ” उसी घड़ीसे हुमायूँको माराम हो चला और बाबर बीमार पड़कर मरगया ये बड़ा न्यायकारी, न्यायिय तथा रमछवियाका जालेवाला और प्रजापालक बादशाहया रात तथा दिनको अकसर घेप बदल २ कर प्रजागणका हाल दर्यापस्त किया करताया अपने बच्चोंसे इसको अधिक प्रेमथा मरेतवक्त अपने ज्येष्ठपुत्र हुमायूँसे कहियया था कि, अपने छोटे भाइयोंको किसी तरहकी तकलीफ न देना—

इसने स० ई० १५२६ की साल अयोध्याके रामकूट मंदिरको विध्वंसकर रघुवंशियोंकी जमभूमिपर मंसमिद् बनवाई थी जो अबतक मौजूद है।

वि० सं० १५८७ में ४८ वर्षकी उम्रमें मरा—

वामन पंडित—इन्होंने श्रुतिसहित काम्यालंकार सूत्रोंको रचा था काश्मीर राजतरङ्गिणीके लेखानुसार वामनजी काश्मीरनरेश जयापीड़के मंत्रीये

विक्रमकी ८ वॉ व १० वॉ दशार्द्धके बीच इनका समय है काशिका भी कुछ अभ्याय घामनजीके बनाये हुये है काशिका उस सरस्वतीका नाम है जो पणिनीय सूत्रोंपर सूत्रक्रमके अनुसार है-

बालशास्त्री (काशीवासी वेद वेदाङ्गके अद्वितीय पंडित) गोविन्दभद्रानाटे नामक ब्राह्मण कोंकणप्रदेशसे काशीमें अस्सीघाटपर आकर रहे थे, इनके घर वि० सं० १८९६ में काशीबाईके गर्भसे विश्वनाथ नामक पुत्रका जन्म हुआ जो बालशास्त्री नामसे जगतमें विख्यात हुआ । गोविन्दभद्र अपने पुत्र बालको ५ वर्षका छोड़कर मरगये, घरमें कोई और या नहीं एवं मरती समय उन्होंने अपने मित्र पं० रामकृष्ण दीक्षितको बुलाकर कहा कि " भाई ! हमसौ भय जाते हैं, ये लड़का नादान है घरमें जो है सो मुम जानतेही हो, अब तुम्हाय ही भरोसा है, जहाँतक दोसके इनको पीठ नहीं देना" । यह कहि गोविन्दभद्र ५ वर्षके लड़के और २३ वर्षकी विधवाकी मौका मँझधारमें छोड़ बचसे । पं० रामकृष्णने मैत्रीधर्म खूब निहाहा, पिताका सबकाय यथासाङ्ग कराये बाळको अपनी शिक्षामें लिया और उसको तथा उसकी माताको सोह कर्मी न रखकर किसीके द्वारपर नहीं जाने दिया । बाळकी बुद्धि तथा धारणाशक्ति ऐसी प्रबलपी कि, बहुत थोड़ी उम्रमें चारोंवेद उसे कंठाग्र होगयेथे औरपं०रामकृष्णने साथ राजश्रुत पेशा वा धार्मीरावके दरबारमें पिटूरजापर उसने अपने वेदगानसे बडे २ पंडितोंको चकित कियाया । पेशाने भी प्रसन्न होकर उसको " बाळ सरस्वती" कहिकर पुकाराया और कुछ आर्थिक सहायता भी दीपी । विप्रकूटक पेशा विनायक रावके दरबारमें भी इसी प्रकार उसका आदर हुआया । इसीसमय विद्याधरभद्रने ज्योतिष्टोमपत्र कियाया और बाल सरस्वतीकी विलक्षण ख्याति सुन यत्रमें मैत्रावरुणका घठिन प्रयोग उनको दियाया जो ठहोने चढ़ी तारीफके साथ कियाया । पश्चात् बालसरस्वतीमाता सहित ग्वालियर गये, यहाँके श्रीपूज्यरिडस पं० कुप्पाशास्त्रीने उनका कुछ निर्यध घर दिया और नाख तथा व्याकरण पढनेका उपदेश किया निदान उन्होंने बाणशास्त्री भावसे सिद्धांतकीसुदी और वृत्तके मोरशास्त्रीस, जो उन दिनों ग्वालियरमये, न्याय तथा मीमांसाशास्त्र पढे । उस वक्त बालसरस्वतीकी उम्र १६वषकी थीनिदान ग्वालियरके सामुद्रिक पंडित यथाशास्त्रीने अपनी कथा उनको विधाद दी । पश्चात् काशीमें आकर ठहोने पंचमाम राम शास्त्रीसे समस्त व्याकरणक ग्रंथ पढे और वि० सं० १९१९ में संस्कृत पाणिन्यनारसमें साद्गुणे अखिरस्टेंट मोपेशरका पद पाया तथा वि० सं० १९२१ में तरकी पाकर धर्मशास्त्रके मोपेशर उक्तकालिजमें होगयेशास्त्रीजी घरपरभी विद्याधियोंको पढाते रहितेथे । म० म० पं० शिवकुमार शास्त्री, म० म० पं० रंगाधर शास्त्री जी भाई हैं, म० म० पं० दामोदर शास्त्री तथा सायनाशास्त्री आदि भाग्यशुकके भ्रातृ

विद्वान् अपनेको बालशास्त्रीका शिष्य बतलाते हैं। काशीमें आनेवाले राजे महाराजे बाल शास्त्रीजीका दर्शन किये बिना नहीं जातेथे, काशीराजके यहाँमी इनकी निर्णति व्यवस्थाका भाद्र होताथा, काशीस्थ ब्राह्मणदलके यह शिरमौरथे, यह करानेवाला दूसरा पंडित इनके समान नहीं था, यज्ञके सब षडे २ प्रयोग इन्होंने किये थे, एक निर्धनी दक्षिणी ब्राह्मण इनके उपकारसे यज्ञ करनेमें समर्थ हुआ था। जब विद्यासागरके उद्योगसे बंगालमें और वहाँकी देखा देखी दक्षिणमें विधवा विवाहकी चन्दा अत्यंत प्रचलहुई थी तौ इन्होंने देश देशांतरोंमें पूज्यपाद गुरु पं० राजाराम शास्त्री तथा अनेक शिष्योंके सहित जाकर धर्मविरुद्ध चन्दाके प्रवाहको रोका था। वि० सं० १९३१ में पं० राजाराम शास्त्रीकी मृत्युसे इनको वैराग्य उत्पन्न हुआ, वि० सं० १९३४ में इन्होंने कालिजकी मौकरी छोड़दी और व्याकरण तथा न्यायादिशास्त्रोंके बड़े वेदान्त पढ़ाने तथा भग्नसेवा करनेमें शेष समय बिताया। भण्डी (पञ्जाब) के राजा विजयसेन शिष्य होकर भापको आर्थिक सहायता देते थे। सन्तान के विषय भापको कोई बुझ नथा, दो छियें मर जानेपर इन्होंने तीसरा विवाह किया था लेकिन सन्तान नहीं थी। वि० सं० १९३७ में शास्त्रीजीने श्रितिला घाटपर यज्ञशाळा बनवाई और भग्निष्टोम याग किया। वि० सं० १९३९ में शास्त्रीजी बीमार पड़े सायही पतिव्रता पत्नी भी बीमार होगई। शास्त्रीजीको ती आराम हो गया लेकिन वह चलबसी। मृत्युसे पहिले सब लोगोंने शोच विचारकर एक ब्राह्मणके ४ वर्षके लड़केको उसकी गोदमें बिठाळ विष्णुदीक्षित नाम रक्खा। इसके बाद शास्त्रीजीने समय निकट समझ यह शाळामें पुष्पवाटिका तथा शिवमंदिर बनवाया और १ महीना ८ दिनबाद भाप भी चलबसे। माता काशीबाई जो ३३ वर्षकी उम्रमें विधवा हुई थी अपुत्र हुई और घर छोड़ वृत्तकको लेकर यज्ञशाळामें आरहीशास्त्रीजीके शिष्योंने यज्ञशाळामें "बालसरस्वतीभवन" नामक पुस्तकालय स्थापन किया और वसमें शास्त्रीजीकी सब पुस्तकोंको रख दिया।

बालशास्त्रीकी ज० कुं०



बालाजीविश्वनाथ (प्रथम पेशवा)—मुगल सम्राट् औरंगजेब मरनेपर महाराज शिवाजीके पौत्र राजाशाह मुगलोंकी कैदसे छुटकर तथा दिल्लीके सफतका आधिपत्य स्वीकार करके अपने राज्यमें छोटकर भागे डेहिन मजागण घोड़ेही दिनोंमें समझे ठकला उठे निदान घोर उपद्रव रोहनेने लिये रामा शाहूने ई० स० १७११ के साल महाराष्ट्र देशका सर्वत्र राज्य करने भत्री (पेशवा) बालाजी विश्वनाथ नामक विद्वान् तथा राजनीति निपुण ब्राह्मणको दे दिया । पेशवाने राम्याधिकार पाय पूनामें अपनी राजधाना स्थापन की और ऐसे न्याय तथा योग्यतासे राजकाज चलाया कि, पेशवाका पद पुनर्नी होकर ७ पीढ़ीतक उसकेवंशमें चला । शाहू तथा उनके उत्तराधिकारी सम्राट् रहकर नाम मात्रके राजाथे, महाराष्ट्र देशका शासन पर्यार्य में पेशवा पूनामें रहकर करता था । स० ई० १७१८ म बालाजी विश्वनाथने मुगल सम्राट् दिल्लीकी फौजकी मददकी थी, इसके बदलेमें दक्षिण देशसे चाँप छपानेकी आज्ञा तथा पूना और सम्राट्के बीचका मुस्क पाया था । स० ई० १७२० में इनका देहान्त हुआ ।

बालाजी बाजीराव (द्वितीय पेशवा)—यह द्वितीय पेशवा बाजीराव ज्येष्ठ पुत्रथे । इनके समथके समान मरहटाराम्यकी उन्नति किसी पेशवाके समयमें नहीं हुई । हुल्यर, सधिया, भासला तथा गैकवाडभादि मरहट्ट स्वयं इनको रामस्यदेतेथे और इन्हींकी कृपासे बहुत नीचे दर्जासे उच्च पदोंको प्राप्तहुये थे । निजामहैदराबादने भी परास्त होकर अपने मुल्तत्त उत्तरी- पश्चिमी भाग इनको दे दिया था तथा वार्षिक भेंट भी देना स्वीकार किया था । स०ई०१७६१ में काबुल व पारके बादशाह अहमदशाह अब्दालीने मरहट्टोंको पानीपतके मैदानमें परास्त किया । इसी शोकसे पेशवा बाजीराव बाजीराव जो बड़े साहसी वीर शासक थे परलोक गामी हुये । स०ई० १७६० में राज्य सिंहासन पर बैठे और स०ई०१७६१ म परलोक गमन किया ।

बालादित्य (फारसीके गोनर्द वंशका अन्तिमराजा)—पहला राजा दित्यका पुत्र सि० स०५३० में फारसीका राजाहुमा । बंगालदेश विजय करने परापर इसने एक पधिराअम बनवाया था तथा फारसीम भी एक अग्रहार बनवाया था और इसकी रानीने सिन्धेश्वर नामक शिव मन्दिर निर्माण किया था । राजाबालादित्यके अनङ्गलेया नामक एक भावस मुन्दरी वन्या की जिसकी जन्मपथी देव किसी ज्योतिर्पाने राजासे कहा था कि " आपके पति आपका जामाअन्तर्गतका राजा होगा " । इस पञ्चोदेशको सुन राजाने मना लिया था कि आपका विवाह अपने अन्धशाहाने दुरोगा दुर्लभअम नामक एक स्वयंसेवक परातु सामान्य कापस्थले करदिया । अनङ्गलेया निज पतिथी कृप

गाठकर मुख्यमंत्री खड्गसे फेंसी हुई थी और पुरखलीके निम्नस्पलक्षण उसमें पाये जाते थे-

“पीछे हँसते खेळते रहना और पतिके भातेही उदासीनहो जाना । विना-कारण उठ खड़े होना और मुखकुराके मार्गकी ओर देखने लगना । पति के कोपकरनेपर भौं, नेत्र, ठोड़ीनचानेकी चेटाकरके भवशा करना । पतिकुछ बुराकहेँ तौ हँसकर आँखें मीचलेना । पतिके गुण मुन उदास होना और उसके शत्रुकी स्तुतिमें प्रसन्न होना । पतिके कहनेपर ध्यान न देना पतिके चूमने पर गर्दन ठलका देना और उसके आछिङ्गनसे घषणके भागना । पतिके संगसे क्लेशमानना और उसके शय्या पर छेटतेही सोजाना ।”

एकदिन रात्रिके समय जब दुर्लभवर्द्धन महलोंमें आया तौ मंत्री खड्ग और अनङ्गलेखाको पछेंग पर पड़े एकसाथ सोते पाया । कुर्बों तथा भयान्य भङ्गोंके फड़कनेसे विदित होता था कि, रतिक्रीड़ासे खुटी पाकर अभी सोये हैं । पहिले तौ दु० वर्द्धनने खड्गके मारनेका इरादा किया परन्तु कुछ शोच विचार उसके दामनपर निम्नस्प बक्षर लिख छुपकेसे चला आया—
“स्मरण रखना कि आज तुझको बध योग्य होनेपर भी छोड़ दिया है” । होनी भमित है, थोड़ेही दिन पीछे राजाबालादित्य निर्धश मरगये और कृतज्ञमंत्री खड्गने जोड़ तोड़ लगाकर दु० वर्द्धनको कारमीरका राजा बना दिया । दुर्लभवर्द्धनसे कारमीरका कफौटक राज्यवशचला ।

घाल्मीकिऋषि(आदि काव्य रामायणके कता) — किसी भीछने एक दुरंतके जन्में घालकको घासपर पड़ा देख उठाछिया और निःसन्तान होनेके कारण पुत्रवध उसको पाछा बड़े होनेपर उसका विवाह होगया जिससे कई बच्चेहुये और वह चिडी-मारका पेशाकरनेलगा । एकदिन भक्तस्मात् उसकी कई ऋषियोंसे भेंट हुई जिन्होंने उसको ज्ञान उपदेश किया और उसने भी एकाम्र चिसहो “राम” मन्त्रके जपनेमें मन लगाया । चिसके लिए होनेसे उसकी बुद्धि निमल होगइ और तभीसे उसका नाम घाल्मीकि जगतमें प्रसिद्ध हुआ । घाल्मीकि ऋषिने २४ हजार श्लोकोंमें उत्तरकाण्ड सहित रामायण रची, उत्तरकाण्डमें जो कुछ लिख दिया था उसीके अनुसार रामचंद्र महाराजने अतसक सब काम किये । घाल्मीकिजी मियिलाके राजा अनकसे भाइका नाता मानते थे और राजा दशरथसे भी उनकी मित्रतापी, इसी कारण महाराज रामचंद्रने लोकापवादके भयसे सीताजीको त्यागकर उनके भाभ्रमके समीप बुझा दिया था, उन्हींने भी गर्भवती सीताको पुत्रोके समान रक्षाकी थी और उनके कृश व छव नामक जुरिहा पुत्रोंका पावन पोषण वकें अनेक शास्त्रोंकी शिक्षा दी थी । जब रामचंद्र महाराजने नैमिषारण्यमें अभ्यमेधयज्ञ किया तब घाल्मीकिऋषि भी सीताजीको तथा छव व द्रुग दोनों

बाळकोंको साथ लेकर भाये थे । सीताजीने तो उस भयस्वरपर देहतरा
 दिया था और कुश तथा लक्षके मुखसे वारुमीकि ऋषिने स्वर सहित रामायण
 ३० अध्याय प्रति दिनके हिसाबसे ३० ॥ दिनमें रामचंद्र महाराज
 को सुनवाई थी जिससे सन्तुष्ट होकर महाराजने उन दोनोंको १८। १८ हजार
 अशार्फयें देनेकी आज्ञा की थी लेकिन उन्होंने देनेसे इनकार किया था और
 कहा था कि, हम ऋषि आश्रमपर बनेमें रहनेवाले धनको लेकर क्या करेंगे।
 यज्ञके अन्तमें महाराज रामचंद्रने वारुमीकि ऋषिके समझाने पर अपने दोनों
 पुत्रोंको भस्मीकार किया था। वारुमीकिऋषिकी जन्मभूमि प्रयागके समीप
 कठामानकपुरमें थी। पश्चात् गंगातट बिठूर जिला घानपुरमें इन्होंने अपना
 आश्रम नियत किया था जिसके निकट अनेक ऋषि मुनि बाल्यवाद्या सहित
 पर्णशाला बनाकर रहतेथे। रामायणके लेखोंसे ज्ञातहोताहै कि " उससमय वि
 न्प्या पर्वतके उत्तरोत्तर आर्यायतदेशम पंजाब, मध्य, कौशल, मियिछा मदि
 मडलोंके भिन्न ३ आर्यराज्ये थे जिनकी मयोप्पा, मवती भादिरारूपामिपें
 स्वमकारकी सम्पत्तियोंसे भरपूरथी और देशके शेषभागम जहां तहां ऋषि
 मुनियोंके आश्रम थे, विन्प्यासे दक्षिणका देश पञ्चभा तथा गारु, भाल् भादि
 असम्पत्तिका मनुष्योंका मिधासस्थाने होकर स्वम जंगलसे ढका हुआ
 था। सबसे पहिले महाराज रामचंद्रहीन दक्षिण देशके असम्पत्त राक्षसादेवोंके
 जातकर स्वम हिंदोगतानका पञ्चम राज्म किया। उस समय वेद शास्त्रने
 अत्यंत कुशलता तथा श्री पुरुष दोनाहीपति विद्याम तरपरता और यज्ञ
 कौशलदिमे विपुलता पाईजातीहै और पहली ज्ञान होताहै कि, उस
 समय आर्यपुरुष संस्कृतभाषण करते थे और असम्पत्तिका कोई अन्यभाषा "।

वास्तुपालतेजपाल—इन दोनों भाइयोंन आवृ पयतपर देवलवादेम के
 नियोंके तीर्थकर नेमिनाय तथा पार्श्वनायका मंदिर स ई १२३६ में बनगाया।
 विमलशाहके मंदिरको छोड़कर कोई दूसरा जैनमंदिर इसके समान नहीं दे
 देखो विमलशाह। कहितेहै कि जिस स्थानपर यह मंदिर बनाई वहांपर पहिले
 एक प्राचीनशिव मंदिरके खण्डेर थे। वास्तुपाल तेजपालन बड़ी कठिनता सहित
 सिरोंही दर्बारसे उक्त स्थानको खरीदा, रुपयेमर जमीनका एक रुपया देना
 पड़ा। पश्चात् उक्त स्थानको सीये कराने तथा भरवाने म ५६ लाख रुपये खर्च
 हुये और उसपर मंदिर बनवाने म १८ करोड़ रुपये लडे। मंदिर सुंदरता तथा
 कारीगरोंम निहायत ठमदाहै, उसमें संगतराशीके १० हाथी हैं जिनपर मंदिर
 बनवानेवालोंकी तथा उनके चाचा भादि अन्य कुटुम्बियोंकी मूर्तियां सजाए
 यह मंदिर १४ वर्षमें बनाया। वास्तुपालतेजपाल दोनोंभाई अनहिल (पञ्च
 के रहनेवाले पौरपाल वीर्य थे और गुजरातके चमेडाराजाके यहां दीयनमें
 पदपर नियुक्तथे।

विक्टोरिया कैसरेहिन्द (Victoria Empress of India)-मॉ-

पका जन्म स० ई० १८१० की साल २४ तारीख मईको एडवर्ड ड्युक आफ् वेन्टकी पत्नी मेरीलुयिजाके गर्भसे हुआ था। जन्मसे एक वर्षके भीतरही आपके पिताका देहांत होगया था और जार्ज ४ तथा विलियम ४ नामक उनके दो बड़े भाईयोंने क्रमशः राज्य भोगकर स० ई० १८३८ की साल निःसत्तान मरवार इङ्ग्लैण्ड इत्यादिके राज्यका धारित्र आपको बनाया था। छ' वर्षकी उम्रसे आपको शिक्षा देना आरम्भ करदिया गयाथा और तबहीसे पार्लियामेन्टने आपके धार्मिक व्ययके लिये छ' हजार पौन्ड नियत किये थे। वंशमें सिखाय आपके कोई दूसरा बालक न होनेके कारण प्रथमहीसे आशा की जाती थी कि, किसी दिन आपको तरगत मिलेगा और इसीलिये देशकी वर्तमानस्थितिके अनुसार आपको शिक्षा दी गई थी। ग्रीक, जर्मन, लैटिन तथा इटैलीकी भाषायें और गणितशास्त्र, नाचना, गाना, तीर-न्दाजी, घोड़ेपरचढ़ना भादि आपको सिखाया गया था। स० ई० १८४० में श्रीमतीने राजनीतिके अनुसार पार्लियामेन्टसे आज्ञा लेकर अपने फुके-रे भाई प्रिन्स वेल्सर्टे आफ् सैक्सोको वर्ग देन्डगोयाके साथ शादी की (देखो वेल्सर्टे)। दम्पतिमें अत्यंत प्रेमदुआ और प्रिन्सवेल्सर्टे बहुधा श्रीमतीको राजकाजमेंभी मदद देते थे। सन ५७ के गदरके बाद पार्लियामेन्टने हिंदो स्थानका राज्यभी ईस्ट इण्डिया कम्पनीके अधिकारसे निवाळकर श्रीमतीको सौंपा। उन दिनों श्रीमतीको सब सुख प्राप्त थे। धन, प्रभुत्व, सुहाग, सन्तति, स्वास्थ्य, देशमियता इत्यादि सब कुछ प्राप्त था लेकिन सुखके बाद दुःखकी घरी आई अर्थात् स० ई० १८६१ में रात्रीपति वेल्सर्टेका देहांत होगया, यह दुःख श्रीमतीके शरीरके साथहीगया। परन्तु ४ पुत्र तथा ५ पुत्रियोंमेंसे दोपुत्र १ पुत्री तथा कई पौत्र पौत्रियोंका दुःख श्रीमतीको सहना पड़ा। स० ई० १८७७ में श्रीमतीने कैसरेहिन्द (Empress of India) का खिताब धारण किया। कैसरेहिन्दका राज्य पृथ्वीके प्रत्येक भागमें इतना बढ़गया था कि "उपर सूर्य कभी नहीं छिपताथा"। आपके बृहत् राज्यका प्रत्येक स्थाने रेलकी सड़क, भापसे चरमेवाले जहाज तथा बिजलीके तारसे जोड़ागयाथा। यूरोप अमेरिका, एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया तथा अल्पान्य द्वीपोंमें सबेही जगह आपका राज्य होगयाथा जिसके चिरम्पाई रहनेकी सबप्रकार पूरण आ-शाहै। विद्या, शिल्प तथा व्यापारकी असाधारण उन्नति आपके समयमें हुई। प्रजागणके रहिन सहिनमें पहिलेकी अपेक्षा जमीन आसमानका फर्क बढ़गया। बृटिशगवर्नमेन्टकी सेना आपके यत्नमें ७॥ लाख थी। आप बड़ी दयामयीरानी,

सेनापतियों तथा अन्यान्य कर्मचारियोंको आपसे बड़ी उत्तेजना मिलती थी और प्रजाके दुःखपर आप मौजूद बहातीथीं । छेदीडफरिने आपहीसे वसजना पाकर हिंदीस्थानमें जनाना हस्पताल खोलेये (देखो छेदीडफरन) । स० ई० १९०१ में अशक्ति बढजानेसे श्रीमतीका देहांत हुआ, ३५॥ हजार पाँड अन्त्येष्टिक्रियामें लगे, पाँकी समाधिके पास समाधिपाई, ज्येष्ठ पुत्र परबख्त सप्तम वसराधिकार हुय भं राज्यभरमें आपके, स्मार्कचिह्न स्थापित हुये। श्रीमतीके समयमें जितने पुद्द हुये उन वृद्धिशोधनमेन्टकी पराजय बहुत कमहुई । इंग्लैंडमें राजकोशया धन प्रजा समझा जाताहै, इसी प्रकारके अनुसार श्रीमतीको ३७१८०० पाँड वार्षिक धन मिलताथा और राज्यघरानेके अन्य पुरुषोंकाभी इसीप्रकार वेतन नियतथा टेलीफोन, माइक्रोफोन, गैसकी रोशनी, गैसये पंखे, गैससे चलनेवाले गाड़िये तथा फोनोग्राफ आदिकाभी आविष्कार आपहीके समयमें हुआ जिससे पूर्ण्वीकी काया परलट होगई । आपका शासनकार असाधारण उद्यतिका समय था ।

विक्रमादित्यशाकारी (सम्भवतः)—यह धारानगरीके राजा धारके दौहित्रये, भर्तृहरि इनके बड़े भाई थे और इनके पिताकानाम मंघयसे था । धारानरेश भद्रपुत्रये एये उन्हनि अपने दौहित्राको पाछकर रामसी गिर दिसवाई थी । धारानरेशके मृत्युको प्राप्त होनेपर भर्तृहरि राजा हुये और विक्रमादित्य राजमन्त्री । भर्तृहरि छेण थे राजयाजयी और कुछ प्या नहीं देते थे विक्रमादित्यने उनको जब सचेत करता चाहा तौ राजनीकी कुमंत्रण मान उन्हांने विक्रमका अपने पास आना भी बंइकर दिया । इसप्रकार भयमनित हो विक्रमादित्य देशाटनको चलेगये और विविध जार्तीय शिक्षाशास्त्र तथा राजनीति सीखते फिरे । छह्नी दिनों टाकेये दक्षिणभागमें जाकर विक्रमपुर बसाया था । इससे थोड़ेही दिनों पाछ राजा भर्तृहरि योगी होगये । यह समाचार पाकर विक्रमादित्य छंटे और राष्ट्रसिंहासनपर बैठकर उन्हे नये उन्हांने अपनी राजधानी बनाया । फिर तौ महाराज विक्रमने धंगाल, मृच्यविहार, गुजरात, सोमनाथ तथा उड़ीसा प्रभृति नानादेशोंका जीतलिया और दिल्ली, मगध तथा कन्नौजके राजाओंको परास्त करये अपने भारतीय बनाया तथा हाथ, धन म्लेच्छ जातियोंको स्वदेशसे बाहर निकालकर शाकारी नाम प्राप्तविया और अपने नामका सम्यत चलाया जो अबतक जारी है । अन्तमें प्रतिष्ठानपुर (प्रयागके समीप) के राजा शाहबख्तर से विक्रमका युद्द बना जिसमें वृद्ध राजा विक्रमादित्य मारगये । रामपारी राजा होनेपर भी विक्रमादित्य सामान्य शय्यापर खाते थे, महीके बर्तनोमें खान पान करते थे, शिमानदीसे जल भर खाते थे,

प्रजाका हाल जाननेके लिये रात्रिमें वेश बदलकर घूमा करते थे और ऐसे न्यायसे शासन करते थे कि, जिससे उनकी विमल कीर्ति आज तक प्रकाशित है । राजा विक्रम बड़े धीर, साहसी, विद्वान्, स्वरूपवान्, दानी, चतुर तथा धार्मिक नरेश थे । प्राचीन भयोध्या नगरीका उन्होंने जीर्णोद्धार किया था । पुराणोंसे पता लगाकर भयोध्या, मथुरा, काशी आदि पवित्र स्थानोंमें तीर्थस्थापन किये थे और बहुतसे मन्दिर बनवायेये जो महम्मदगजनबी तथा शहाबुद्दीन मुहम्मदगोरी आदि बादशाहोंके द्वारा नष्ट किये गये । उन्होंने कालिदास प्रथमको भण्ड्यक्ष नियतकरके पंडितोकी एकसभके द्वारा प्राचीन ग्रंथोंको शुद्ध श्रेणीबद्ध कराया था । सिंहासन बत्तीसी आदि ग्रंथोंमें लेख है कि इन्द्रने कश्चन की ठळी हुई ३२ पुताछि योंका सिंहासन राजा विक्रमको दिया था और कल्हण कृत कर्मीर राज तरङ्गिणीके अनुसार उक्त सिंहासन महाराजा काश्मीरके यहांसे विक्रमको प्राप्त हुआ था । इससे प्रतीत होताहै कि कर्मीर नरेशोंको पूर्वकालमें इन्द्र कहते थे । भायोध्यामें रघुवंशियोंकी जन्मभूमिपर रामकूट नामक मन्दिर मथुरामें श्रीकृष्णकी जन्मभूमिपर कृष्णकूट नामक मन्दिर और बनारसमें विश्वेश्वरनायका मन्दिर जिनको बाबर तथा औरंगजेब बादशाहोंने विध्वंस किया महाराज विक्रमही के बनवाये हुये थे । वेताल पचीसी तथा सिंहासन बत्तीसीकी कहानिय इन्हींके विषयमें हैं ।

विक्रमादित्य वर्ष (उजैननरेश)-यह विक्रम शकारीके वंशमें राजा श्रीहर्षके पुत्र थे । स० ई० ५१५ में उजैनकी गद्दीपर बैठे हिंदोस्थानके अनेक राजे इनके आधीन थे, इस कारण यह छत्रधारी राजा थे । यह बड़े विद्वान्, दानशील, गुणग्राही तथा स्वच्छंद गामी नरेश थे । पंडित मातृ गुप्तको इन्होंने कर्मीर मण्डलका राज्य दिया था (देखो मातृ गुप्त) । नगरन नामक ९ प्रसिद्ध पंडित इन्हींके दरबारमें थे । उनके नाम कालिदास, वररुचि, शङ्क, वेतालमह, धन्वतारि, घटकपार, क्षपणक, वराहमिह्र और वण्डी थे । इनके समयमें पदार्थ, साहित्य, काव्य, गणित तथा शिल्पादि विद्याओंकी असाधारण उत्थति हुई थी । नम्रदार नामक खिनकारने इन्हींके राज्यद्वारको सुशोभित करनेके लिये जगतकी प्रसिद्ध सुंदारियोंके चित्र खींचे थे । विक्रम हर्षने एक भूगोलका ग्रंथ रचा था, यह शिवपूजकथे परसु खौखों तथा ब्राह्मणोंका समान भावर करते थे । इनके पश्चात् शिलादित्य प्रताप शील इनके पुत्रको शत्रुओंने राजरहित करदियाथा लेकिन कर्मीर नरेश प्रवरसेनने मदद देकर इनको फिर उजैनकी गद्दीपर बिठलाया

या और विक्रम शकारीको निज पूर्वजाका दिया हुआ ३२ पुतलियोंका सिंहासन उज्जैनसे कन्नौरको लेगया था ।

विक्रमसाह (वडछानेक्ष)—देखो विजयसहादुर ।

विग्रहराज—भजमेरके राजा भरण्यराज इनके पिताये और भक्तिमहिन् राजा पृथ्वीराज चौहानके चाप सोमेश्वरराज इनके भाइये । इनके विषयमें दिव्योसवालकपर अंकित शिलालेखका भाषाय यहहै कि, "राजा विग्रहराज हिमालय और विन्धाके बीचका देश जीतपर कईवर्षे म्येछोंपो नष्ट विधाया और इस देशको भाय्यावर्त बनायाया" ।

विचित्र वीर्य—यह खंद्रवशी राजा शान्तनुके पुत्र थे । अपने बड़े भाई विशाङ्कदेवे नि सतान मजेपर हस्तिनापुरकी गद्दीपर बडे वाशी नंदाका अभिका तथा भस्मालिका नामक दोयमकुमारियों से इनका विवाह हुआ था विवाहसे ९ वर्ष बाद इनका देहांत होगया । वंश नष्ट होता देख इनकी माता सत्यवतीने अपने सौतेले पुत्र भीष्मकी सम्मतिके अनुसार इनकी विधवा यनियंमि व्यासजीसे गर्भाधान कराया जिससे धृतराष्ट्र तथा पाण्डु दो पुत्र जमे ।

विजयसहादुर (मायाकवि)—विक्रमसाहि बुंदेला चरणारीनेराजा सरनाम विजयसहादुर था । इन्होंने विक्रमबिरदावली तथा विक्रमसतमह नामक ग्रंथ भाषापरचमें रचये । स० १० १७८५ में जमे, स० १० १८०८ में मरे । भाषा कवि वेत्ता इनके दुबाराया कवीश्वरया ।

विष्टलनाथ गोस्वामी—गोकुण्डस्वाम्यदायके भाग्यार्थ महा मन्त्र घलभाचार्यजी इनके पिताये । वि० स० १५७१ में इनका जन्म बिहार जि० मिश्रापुरन दुभाया यह बड़े विद्वान् महत्प्रभा थे । Catalogue Catalogorumके अनुसार इनके पत्राये ४९ संस्कृत ग्रंथे । भाषा कविता यह नहीं करतेये परंतु भाषाव्यपका मोसाहन इनके द्वारा बहुतकुण्ड हुआ । इनके मुख्य शिष्य २५१ थे जिनका चरित्र इनके पुत्र गोकुण्डनाथजी ने "२५१वैष्णवमन्त्रकी घाता" नामक ग्रंथन कियाहै । इनशिष्यामेंसे गोविन्ददास, उदित स्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास भाषाके मखिष्ठ कवीश्वरये । गो० विष्टलनाथजी ने इनचारकों तथा अपने पिताके सूत्रासादि ४ शिष्योंको अष्टलपत्री उपनिधि दीथी जो अबतक सचमा पड़े । श्रीनाथजीके मीदिरवा धर्मइ इनके सभयमें बहुत कुछ बढ़ा । द्योविवाहसे इनके ७ पुत्र थे जिमेंसे प्रायेश्वर भागम श्रीवदभाचार्यक साथ मुख्यतःगुह्यार्थमेंसे १ । १ भाया और श्रीनाथजीके मीदिरवर लक्ष्मण अधिकार रहा । इसवकार गो० शिष्योंकी ७ गहियें स्वरित हुई

जिनमेंसे मेवाड़में ३, कोटामें १, कामवनमें २, और गोकुलमें १ है । प्रत्येक गद्दीका खर्च अर्धतक ५० । ६० हजार रुपया वार्षिकहै, इनगद्दियोंके मंदिरामें पहिलेता पूजासेवाके समय सबलोग केवल संस्कृतही बोलतेथे अब प्रायः ब्रज भाषा बोलतेहैं विधर्मियोंका नामतक नहीं छियाजाता, गाँजीपुरको गुलाबका गाँव, मिर्जापुरको मिर्चका गाँव, मुसलमानोंको बड़ीजाति और ईसाइयोंको टोपीवाले कहितहैं । गो० विठ्ठलनाथजी बड़े क्षमाधारी और सहन शील थे, वि० सं० १६३२ म परलोकगामी हुये । कृष्णदास तथा छीत स्वामीके सम्बंधमें इनका कुछ विशेष वर्णन है सो देखो ।

विद्यारण्यस्वामी—इन्हाने वेदाँत शास्त्रका पंचदशीनामकग्रंथ १५ प्रकरणमें निर्माणकिया था । ये स्यासीये, पूर्वनाम इनका सायणाचार्य था सो देखो ।

विदुर—(प्रसिद्धनीतिज्ञ)—चंद्रवंशी राजा विश्वधर्यकी शूद्रादासीके तटसे इनका जन्म हुआ । यह बड़े ज्ञानी, विद्वान् और चतुर हुये, महाराज पांडु तथा धृतराष्ट्रने क्रमशः इनको अपना मंत्री नियत किया । महाभारतके युद्धमें पांडवोंकी तरफसे छेडे, अंतमें महाराज धृतराष्ट्रको नीति सुनाई और उन्हेंके साथ वनकी बछेगये और वहाँ अग्निमें जलकर मरे । श्रीकृष्णजीको इनसे बड़ा प्रेमथा ।

विप्रगुप्त—ब्रह्मगुप्तज्योतिषीका दूसरा नाम विप्रगुप्तहै (देखो ब्रह्मगुप्त) ॥

विवेकानन्दस्वामी—कलकत्तेमें एक नामी बकीलके घर जन्मेथे । पूर्व नाम इनका मत्स्यनाथथा, अग्नेजीमें भी ए पासथे और रामकृष्ण परमहंसके शिष्य होगयेथे । गुरुके समाधिस्थहोनेके पीछे भारतके अनेक स्थलोंमें भ्रमण करतेहुये ये मद्रासमें गये, वहाँ सर्व मिळकर इनसे संसारके समस्त धर्मोंकी पाठियामेंटमें जो शिक्षागो (अमेरिका) में होनेकीथी हिंदूधर्मका प्रतिनिधित्व कर जानेका अनुरोध किया जिसको इन्हाने स्वीकार किया । इनका विशाह नहीं हुआ था, ब्रह्मचर्य अर्द्धव्या काष्णसंगीत वेदादि विद्याओंके ज्ञाताथे और नाच ना तखरीर व नक्षत्र घनाना जानतेथे । हंगवाळ दिग्गुरुओंकीसी और सुरत सुमानेवाळीथी । अमेरिका पहुँचनेपर वहाँके सर्वसाधारणका अनुराग इनकी और बहुत कुछबढा, लोग अहर निश इनको घेरे रहतेथे, पाठियामेंटम इनके ठिकघर सर्वोत्तम ठहिराये गये, वहाँके समाचार पत्रोंने भी बड़ी प्रशंसा की, पत्रसे पत्रे क्रिश्चियन भी यह बिना कहे न रुकसके कि “ विवेकानन्द मनुष्यमेंइलीमें रामाके सहशर्ह । ” पाठियामेंट हो चुकनेपर अमेरिकन लोगोंने स्वामीको आग्रहपूर्वक ठहिराया, शीघ्रही उनके प्रेमियोंकी एक मंडळीका संगठन हुआ और स्वामी ने अमेरिकाके अनेक नगरोंमें भ्रमणकरके वेदवेदाँतका उपदेश किया । पञ्चात् न्यूया

कैम ठहरकर वेदांत फिळासोफी तथा भगवद्गीता आदि ग्रंथोंकी शिक्षाक क्रिये एक स्कूल मारी किया जिसमें छात्रोंकी योग्यताके अनुसार ५ वर्षों नियतकिये, इस स्कूलमें शिक्षा ग्रहण करनेवालोंकी इतनी भीड़ हुई कि स्थानका अभाव होगा जो छात्र प्रथम प्रेमी पनेवे उन्होंने सबसे पहिले स्वामीजीके शिष्योंकी सूची में नाम लिखाया, फिर पीछे चौ हजारों छात्र पुरुष विश्वास छाये । २ वर्षपर्यन्त इस तरह अमेरिकामें रहिकर स्वामीने निरंतर परिश्रम किया । वेदांत स्कूलमें शिक्षा देने, धर्मापदेश करने, दुनियाके अनेक भागसे भाये पत्राका उत्तर देने जिज्ञासुओंका भ्रमोच्छेदन करने, और विद्यालयोंके लिये धर्मसम्बन्धी सरल पुस्तकें रचनेमें रातदिन बीतता था । स्वामी योगकी शिक्षामें देतये, मसिह डाक्टर स्ट्रिट साहब योगी होकर ज्ञानानन्दनामको प्राप्त हुये थे । पश्चात् स्वामी इङ्ग्लैंडको पवारे और लन्दनमें ठहरे, यहांभी शिक्षा और उपदेशाकी चेसीही धूम रही जैसी अमेरिकामें हुई थी । स्वयं भेगीके मनुष्य धार्ये और वैदिक मतके प्रयोगी अंग्रेजी अनुवाद टूट कर पढ़ने लगोषके २ पादरी तथा रूसोंने छिककर सुनकर स्वामीकी प्रशंसा की अंग्रेजी मखबारोंके काळमें वे कालमें स्वामीकी प्रशंसा और करसूतसे भरे हुये निकलने लगे। उनके डेलीक्रानिकलने छापाया कि "विवरानन्द स्वामी नामक महाशय जो भारतके अर्यभत मार्चीन धर्मका उपदेश करने शि कागो (अमेरिका) धीधर्मसम्बन्धी महासभामें जाकर बड़ा नाम पापुये हैं आज कल इङ्ग्लैंडमें ठहरे हैं और आगामी सितम्बरमें भारतको लौटेंगे । इस महारु रूपकी विपर लंगवाल मतिप्रिय सूरत, सरलतासे गूढ़ मन्त्रविद्याके प्रकट करने की शक्ति और अंग्रेजी भाषा पाठ्य होनेकी योग्यताने अमेरियन लोगोंसे ऐसा अखाधारण आदर सरकार स्पष्टी करालिया -- " । पश्चात् स्वामी दिनेस्तान को लौटे और कोलम्बो (एंफा) में जहांसे उत्तर, स्वदेशियोंने स्वामीके आगमन पर देखाहितवा परिषय दिया । फिर स्वामी हिमालय पर्वतान्तर्गत अनेक स्थानों तथा पंजाय में भ्रमण करके अमेरिकाको फिर चलेगये । पैरिसमें ही प्रदर्शनीमें विद्यमान रहिकर स्वामीने अनेक छिककर दियेये । पैरिससे काम्ब्रे न्डीनेोपिठ होते हुये स्वामी पम्बई को पवारे और वहांसे कलकत्ते पहुँचकर सन् १९०२ की साल सिधारगये । स्वामीके निरंतर सयोग से म्पुवाक, ब्रुकलिन के लीफोर्निया, सैनफ्रांसिस्को, शिकागो तथा लन्दन इत्यादि नगरोंमें वेदांतमा लके रगूक जारी हुये जो फलते रहेंगे । अलीपोर्नियाम एक दान्ति आध्रमधी खोजाया तथा वहां एक मंदिर बनवानेका इरादा कियाथा परंतु पाठकी गति कराछ है । अमेरियामें स्वामीके रोपण लिये हुये धर्मोपयनका काय अब गुर्भामें अभयानन्द फरासीस तथा सुरियानन्द कूखी सम्पादन करतेहैं । मुर्गिदायामें एक अनापालय, बनारसमें १ अतिष्पाठय, भरमोड़ा इत्यादि स्थानामें वेदांतदिशाके केंद्र और दरिद्वारके समीप कनकलय लक्ष्येन नामक ग्रामामें रोगी

साधुर्माको अन्नवस्त्र तथा औषधि देनेके लिये "रामकृष्ण सेवाभ्रम" स्वामीजीके उद्योगसे खुले थे । स्वामीके अमेरिकन तथा फिरंगी शिष्य जो गुरुमार्ग या गुरु बहिन कहिछाते हैं हिंदुओंकी तरह नाम धारण करतेहैं, तिळक लगातेहैं, भस्म भस्मका रूपाळ रखकर चौकेमें भोजन करतेहैं, धोती बांधते और वेद शास्त्र तथा उपनिषद्की वात्सवाको मानतेहैं । स्वामीने पुराणोंकी शिक्षा नहीं की । लोग आक्षेप करतेहैं कि, स्वामीकी शिक्षामें बौद्ध मतके सिद्धांतोंका सम्मिलन है परंतु स्वामीने स्वयं एकदफे अपने व्याख्यानमें कहाया कि "मैं बौद्ध नहीं हूँ लेकिन महात्मा बुद्धसे विमुख भी नहीं जिनको हिंदूजोग विष्णुका अवतार मानकर बुद्ध भगवान् कहिते हैं" ।

विमलशाह—इन्होंने जाबू पर्वतपर देवछवाड़ेमें जैनियाके प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देवजीका मंदिर बनवाया था जो वि० सं० १०८८ की साळ बनकर तैयार हुआ । ये मंदिर संगमरमरका घना हुआ है । लोग कहिते हैं कि आगराके ताम सहिळको छोड़कर भारत वर्षमें कोई दूसरी इमारत इसके समान नहीं है । मंदिरके आगे एक मण्डपम प्रायः ४ फीट ऊंचे संगमरमरके ९ हाथी हैं जिनपर वेमलेशाह तथा उसके वंशके लोगोंकी मूर्तियाँ सवार हैं । विमलशाहकी मूर्तिको मुखरमानोंके वृत्तमें क्षणित करदियाया, वर्तमान मूर्ति चिकनी मट्टी की बनाई हुई है । उक्त हाथियोंपर नकाशीकाकाम है, पर्यर फाटकर विश्वित्र मूळ पत्तिय निकाली गई हैं विमलशाह गुजरातके रहनेवाले जैनी व्यापारी बड़े धनाढ्य थे ।

विष्णुशर्मा (पंचतंत्रके रचयिता)—यह नीतिज्ञ ब्राह्मणस ई की छठी शताब्दीमें दक्षिणदेशमें हुएथे । इनका रवा ग्रंथ पंचतंत्र राजनीतिसे भरपूर है । पंचतंत्रका फारसी अनुवाद ईरानके बादशाह नौशेरखाने करवाया । फारसी से अरबीमें और अरबीसे प्रायः स० ई० १०८० की साळ ग्रीक भाषामें इसका अनुवाद हुआ । ग्रीकसे लैटिनमें और लैटिनसे हेब्रुभाषामें स० ई० १२५० के लगभग इसका अनुवाद कियागया । पश्चात् सब फिरङ्गी मुळकोंने अपनी भाषाओंमें इसका अनुवाद करलिया । अनबारसुहेली कुल्लेछादमना और हितोपदेश फारसीके फारसी, अरबी तथा संस्कृतमनुष्योंके नामहैं ।

विश्वनाथसिंह महाराजारीवाँ (भाषाकवि)—आपके पिता महाराजा जयसिंह पघेलेने एक बृहत् ग्रंथ "हरिश्चरितामृत" नामक भाषापद्य रचाया जिसमें विष्णुके २३ अवतारोंकी कथा वर्णितहै । महाराजा विश्वनाथ सिंह भाषाके मुकविहोनेके सिवाय संस्कृत विद्याके भी अर्धवविद्वानथे तथा ग्रंथ नाम लिखइस्थथे । आप कवियोंके कल्पतरुथे और आपके आभयसे उत्तमोत्तम आप रचे गयेथे । निम्नस्वग्रंथ आपके रचेहुयेहैं—

सर्वसंग्रह (सस्कृत), कबीरके बीमक तथा सुकसीकृतविनय पत्रिका का तिलक, रामचंद्रकी सघरि, परमतत्त्वप्रकाश, भानन्दरघुनन्दन नामक, रीवां गद्यमें धर्तुविद्या का तिलक, अष्टजामका भाद्रिक (वि० सं० १८८१), गोस्वामी जमुनादास उपमान व्रजजीवन कृष्णगीत रघुनन्दन पर "प्रमाजिका" नामक टीका (वि० सं० १९०१)। भापके पुत्र जगत प्रसिद्ध महापद्म रघुराज विह्वल सं० ई० १८३४ की साल भापके उत्तराधिकारी हुये (सो देखो)। महापद्म विश्वनाथसिंहने सं० ई० १८१३ से १८३४ तक राज्यभोगा।

बिस्वाहूराम—(भापाकाव्य कृष्णापणके कर्ता) इनका उपनाम रसिद शिषेमणि दासहै। जन्म इनका सं० ई० १८६८ की साल रायपुर (मध्य प्रदेश) के किसी ग्राममें घखोली पोतदारके घर हुआ। बिस्वा जि० रायपुरके सरनेकयूलर स्कूलमें अभ्यस (सं० ई० १९०३) में हेडमास्टर रहे। वृत्तपत्रकी से हस्तिकथा तथा कवित्तनके प्रेमीहैं। सुकसीकृत रामायणके ढंगपर इन्होंने निरन्तर ७ काण्डों में कृष्णापण रची है—

बालकाण्ड, रहस्यकाण्ड, मधुराकाण्ड, मंगलकाण्ड, पाण्डवराज्य उद्वेगकाण्ड और उत्तरकाण्ड।

यद्यपि भापा पद्यमें श्रीकृष्णचंद्रकी छोलामोंके निरूपक व्रजविद्यावादी अनेक ग्रंथ हैं लेकिन कृष्णापण अपने ढंगकी निराली होकर उन सबके अधिक भावपूर्णियहै।

बिस्मार्क शहिजादा (Prince Bismark)—यह प्रुशिया भयान्त जर्मनीराज्यके मुख्य मंत्रीथे। वॉलिनके विश्वविद्यालयमें इन्होंने विद्या पठायी और पश्चात् फ्रांस तथा आस्ट्रियामें जर्मनराज्यकी तरफसे राजदूत रहयेथे। सं० १८६१ में जर्मनीके महापद्मने इनको विदेशी विभागका मंत्री नियत किया और सं० १८६५ में पौन्टकी पदवी इनको दी। आस्ट्रिया तथा जर्मनीके राज्योंमें जो घोर युद्ध हुआ था उसमें बिस्मार्कने बड़े ३ सहासपूर्ण काम करके असाधारण उपाधि मिंस (शहिजादा) की पाई। मिंस बिस्मार्क बड़े चतुर और दूरदर्शी थे, महापद्म जर्मनीके सदैव इनकी सम्मतिसे काम करतेथे। इनका कथनहै कि भाजवन्दके राज्यसम्बन्धी प्रश्नके घातोंसे नहीं परन्तु उद्गरे फैसलकरना चाहिए। सं० १८७५ में जर्मने

बिश्वामित्र (महाप्रिय)—बाल्मीकीय रामायण बालकाण्ड सर्ग ५१-५२ में लिखाहै कि, मजापतिके पुत्र कुशा हुये, कुशाके पुत्र कुशानाम, कुशानामके पुत्र पशुपति, पशुपतिके पुत्र राजा गाधि और राजागाधिके पुत्र बिश्वामित्र हुये। रामा बिश्वामित्र पद्मसे निर्मोक्त बड़े धर्म तथा न्यायके राज्य करनेके बाद पृथक्के देश देशान्तरोंमें दौरा करने हुये वशिष्ठजीके आश्रममें परतुंगे। वशिष्ठजीने सेना सहित उन

की दास्य की । खलते समय राजाने वशिष्ठजीसे नभिदनांगी मांगी जिसका त्याग करना उनको स्वीकार न हुआ निदान गौको बलपूर्वक छीन छेनेकी राजाने भाइया दी किसी तरह न मानने पर वशिष्ठजीने ब्रह्मबलसे राजाकी सब सेना तथा उसके १०० पुत्र नष्ट कर दिये । परास्त होकर राजाने अपने एक पुत्रको राज्य सौंप दिया और भाप तप करणार्थ हिमालयके समीप चले गये वहाँ रहकर साङ्गोपाङ्ग उपनिषद्, रहस्य सहित घटुर्वेद और वेद, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षसादिकाकी युक्तिय तथा उनके भस्त्र शस्त्र बढाने की रीतियोंका पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया । ऐसा होनेपर राजा विश्वामित्र को भदङ्कार हुआ एवं वशिष्ठजीके आश्रम पर जाय उसके मष्ट करनेके छिये भस्त्र शस्त्र बरसाने आरम्भ किये लेकिन वशिष्ठजीने एक ब्रह्म वण्डहीके द्वारा उन सबका निवारण किया और राजाको परास्त किया । यह देख राजाने ब्रह्मबलकी अपेक्षा क्षत्रिय बलको सुच्छ जाना और रानी सहित दक्षिण दिशाकी ओर तप करने पधारे जिसके प्रभावसे रामर्षि पद पाया और हविष्मन्द, मधुष्पन्दादि अनेक महारथी पुत्र उत्पन्न किये । उन्हीं दिनों वशिष्ठजीसे सूर्यवंशी राजा विशङ्कु कोइ ऐसी यह क्रिया करानेका प्रार्थो हुआ कि, जिससे वह सशरिस्वर्गमें चला जाय । वशिष्ठजीने ऐसा होना असम्भव बतलाया परं उसने वशिष्ठजीके १०० पुत्राके पास जाकर, जो दक्षिणमें तप करते थे, अपनी इच्छा प्रकट की । इस बातसे पिताके ध्यानका अनादर होता जान वशिष्ठ पुत्रोंने विशङ्कु को चाँदाळ होमानेका शाप दिया । ऐसी दशामें विशङ्कुने ऋषि विश्वामित्रकी शरण गही, विश्वामित्रको उसपर दया आगई निदान उन्होंने वशिष्ठपुत्रोंको डोम होमानेका शाप दिया और शुरुशापित विशङ्कुका स्वर्गमें स्थान पाना असम्भव जान दक्षिण दिशाम एक नया स्वर्ग स्थापन किया और उसके छिये नये सप्त ऋषि तथा अनेक छोटे २ नक्षत्रों सहित भस्त्रिन्मादि २७ नक्षत्र कापम किये और उन सबके धर्मनाचे कोशिर किये हुये एक वेदीप्यमान विशङ्कु नाम नक्षत्र रूप ठहिरा दिया । विशङ्कु अपने साथके अन्य नक्षत्रों सहित जो उसके पीछे घूमतेहै दक्षिण दिशाम स्थितहै और ज्योतिषशास्त्र वर्णित नक्षत्रोंके विश्वरनेके "वैश्वानर" नामक सनातन मार्गसे बाहरहै । ऋषि विश्वामित्रके तेजसे डरकर सबने विशङ्कु आदि उनके स्थापन किये हुये नक्षत्रोंको स्वीकार कियाथा । पश्चात् विश्वामित्रने साथके सब ऋषियों मुनियों सहित पुष्करमें जा कर तप किया । उन्हीं दिन सूर्यवंशी राजा अम्बरीषने यह करजा आरम्भ किया और उसम बलिदानदेनेको वह ऋषांकमुनिसे मोल छिये हुये उनके शून शोफनामक मैझले पुत्रको साथ लियहुये पुष्करमें भाया । शूनशोफने षोडश ऋषि विश्वामित्रके शरण पकड़ छिये और शरण चाही निदान ऋषि विश्वामित्रने मधुष्पन्दादि अपने पुत्रोंसे किसी एकको राजाके साथ जाकर शूनशोफकी जान बचानेकी भाइया दी । ऋषिपुत्रने पिताकी भाइयाका निरादर किया

जिससे अमसन्न होकर विश्वामित्रने वाशेष्ठ पुत्रोंकी सहस्र निमपुत्रोंकोभी दत्त होजानेका शाप दिया और छुन्नशोक को ऐसी युक्ति बतलाशी जिससे राजा का तो यह पूरा होगया और उसकेभी प्राण बचगये । पश्चात् मेनका नामक भस्त्रराने पुष्करमें पहुँचकर विश्वामित्रको कामसे मोहित किया और शत्रुन्मत्तानामक न्याय सत्तन कराई मदन मद् घटनेपर अपना तप क्षीण होता जान विश्वामित्र पुष्कर से बचकर उत्तराखण्डम कीशिकी नदीके तीर पहुँच ब्रह्मचर्य का ब्रह्मचर्य बननेके लिये पुनः तप करने लगे । कुछदिनों बाद रम्भा भस्त्रराने जाकर उनको मोहित करना चाहा लेकिन बुद्धिमानों (देवतामा) की शाल समझे ऋषिबिश्वामित्रने क्रोधम आकर उसको फटकार दिया । फिर ऋषिबिश्वामित्र यहाँसे भी बच दिये और पूर्व दिशाम जाय घोर तप करने लगे और क्रोधम सपकी क्षीणताका कारण जान भोजन करना, सोलना तथा सांसतक देना । नुक्कर दिया और अनेकविध तपस्थित होनेपरमी अतःकरणम क्रोध न माँ दिया । देखाकरनेसे ब्रह्मचर्य पद तथा बड़ी आयुष उनको प्राप्त हुई और बगि जीसे भी मेल होगया । महर्षिबिश्वामित्र येदविद्या वायुभ्यकळा, धनुर्वेद तथा खड्गीत शास्त्रके पूर्ण ज्ञाताहोकर बड़े धीर्यवान् थे और बुद्धि उनकी ऐसी थी कि कोई काम उनके लिये वाठिन नहीं था। सर्वत्र तृप्तिपर सन्तोंने भ्रम किया था और रामलक्ष्मणको धनुर्विद्या सिखाई थी । सद्गुरुंक्रुषि मुनि का रामे महाराजे उनको शिशनवातेथे। अनेकतरहके फल फूल तथा भद्रभी उद्देशों प्रकट कियेथे और ऋषिदेके तीसरे मण्डलकी ऋषामोयो सप्रह विपत्त्या ।

विरजानन्द सरस्वती (मनाचक्षु)—पद पञ्जाबप्रदेशागत नर तारपुरके गंगापुरनामक ग्राममें नारायणदास सरस्वत ब्राह्मणके घर जन्मेथे ५ वर्षकी उम्रमें बेषक निकलनेसे भग्ये होगये थे, ११ वर्षकी उम्रतक पिताने इनको सारस्वतधर्मिका पठाई थी । १२ वर्षकी उम्रम इनके मातापिताका देहांत होगया और १५ वर्षकी उम्रमें भावमसे बुद्धित हो परसे निकल लक्ष्मीकेहा पहुँचे । यहाँ तीनवर्षपर्यन्त रहकर इन्होंने अनेक दाय रहदपयो ज्ञान्त किया और पश्चात् हरिद्वारम आकर पूर्णानन्दसरस्वतीसे सपासधमम दीक्षा ली और विरजानन्द सरस्वती नाम पाया । हरिद्वारमें कुछकालतक ठहरकर न्यामीजीने विद्यापियोंको पढ़ाया और स्वयं मत्प तथा लिखौतकीमुद्राया विचार किया । हरिद्वारसे न्यामीजी गंगाके किनारे २ बनारसको गय और यहाँ रहकर उहाँने मनोरमा, गौतम, न्याय तथा वेदान्तके ग्रन्थ पढ़े और महाचक्षु तपाधि पाई । बनारससे बचकर गया होतेहुये गङ्गामा गये और वहाँसे दौट कर सोरों निजो गङ्गामें नृत्तदिनेथे लिये उद्वारे । पश्चात् भद्रधर, भरतपुर, मुसौंन इत्यादिमें विचरते हुये न्यामीजी वि० सं० १८९३ वी साल मपुरा पहुँच और यहाँ पा

शास्त्रा स्थापन करके अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त, निघण्टु आदिग्रंथोंके पठनपाठनमें आयु बिताई । वि० सं० १९१७ में स्वामी क्यामन्दसरस्वती इनके पास विशेषविद्या पढ़ने आए, कईवर्ष बाद जब शिक्षा सम्पूर्ण हुई तो मुफलमें उससे स्वामी विरजानन्दजीने यह बात चाही कि, स्वार्थपरता तथा भ्रूखताफैला ने षाळे खन्मदादिग्रंथोंकी जड़पर कुल्हाड़ीफेरकर ऋषिकृत ग्रंथोंका प्रचार करना और अन्धकारको मिटाना । वि० सं० १९१९ की साल ७५ वर्षकी उम्रमें स्वा० विरजानन्दका देहान्त हुआ, स्वा० क्यामन्दने यह समाचार सुन कहा कि "आज भारतसे विद्याका सूर्य मस्त होगया" और उसरोज दिनभर जल तक नहीं पिया । स्वा० विरजानन्दकी स्मरणशक्ति ऐसी निर्मलयी कि, जो ग्रंथ एकदफे प्यानसे सुनलेतेथे वह उनको याद होजाता था । भिन्न २ ऋतुओंमें स्वामीजी वैद्यकशास्त्रानुसार कोई २ विशेषवस्तु खाना छोड़देतेथे ।

विल्हमगलसूर—रेखो सूर ।

विल्हणहतिहासकार—यह कश्मीरवासी ब्राह्मण प्रायः स० ई० १०८३ में विद्यमानथे । विक्रमादित्य १८ सर्गोंमें इनका रचा ग्रंथ उत्तम है । विक्रमादित्यमें कश्मीरके बड़े २ शहरों, मखिन्न पुरुषों और कश्मीरके षाळोक्यराजवंशका सविस्तर वृत्तांत है ।

विशाखदत्त (सुद्राराक्षसनाटकके कर्ता)—यह साधन्तवटेश्वर दत्तके पौत्र तथा महाराज पृथुके पुत्रथे । राजा शिवमसाद सितारेहिन्दु लिखते हैं कि पृथु दिल्लीके अतिम हिंदूपति पृथ्वीराज चौहानका दूसरा नाम है । वि० सं० की १२ वीं शताब्दी में विशाखदत्तका जीवनकाल है । सुद्राराक्षस अन्धनाटकों की अपेक्षा अधिक विलक्षण है क्योंकि उसमें राजनीतिका अंश बहुतही उत्तमतासे दर्शाया गयाहै ।

विशुद्धानन्दसरस्वती (भारत विख्यात विद्वान् सन्यासी)—

संगमलाळशुक्र कान्यकुळम ब्राह्मण मिला सीतापुरके बाई नामक ग्रामसे । आजीवन तथा देशभ्रमणके लिये दक्षिणकी तरफ गयेथे । हैदराबादके समीप कल्याणीमें पहुँच वहाँके नवाब मोहनशाहके सेनानायक लछीरामसे इनकी भेंट हुई । लछीरामभी अथवा प्रान्तके रहिनेवाळे कान्यकुळमब्राह्मणथे निदान उन्होंने अपनी बहिन यमुनाका विवाह इनके साथ कर दिया जिससे गर्भसे बंसीधर नामक पुत्रका जन्म हुआ जो देशमें स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वतीके नामसे विख्यात होसंसारभरके बालक प्रथम जिनशब्दोंका उच्चारण करते हैं वे गृहस्योपियोगी "मामा बाबा" आदि शब्द इन्होंने नहीं बोलेथे किन्तु सबसे पहिले एकदिन भक्तस्मात् यह कहा था कि "मैरी पुस्तक कहाँ है" और फिर कई मासतक यही र

रही थीं । ११ वर्षके होनेके पछिल्लेही माता पिताका देहांत होगया और तिसंतान
 मामा माई ने इनको पुत्रवत् पाला था। छठक पनमें ये बड़े उद्वण्डधे और नबाबमोर
 नशाहके छडकोके साथ कई वर्षतक कुम्भी, दण्ड, पटा, तौरन्दाजी, डोग्गा
 दीवार भादिका फांदना और थोडोका फेरना इत्यादि फीजी व्यवसाय सीखने
 रहेथे । उनदिना इनकी उम्र १६ वर्षकी थी, लोकिन सुदूर सुबोळ बलिष्ठ शरीर
 देखनेसे २५ वर्षके जवान मालूम वेतेथे और नबाबके छडकोसे सब कसतों
 बाजी माराकरतेथे, इसीकारण एकदिन छपेघरा उहोंने एक घोड़ा मरजानेके भर
 राधमें इनको थोड़ी देरके लिये हवालात करादी । यद्यपि मामा सुनतेही इनके
 बुडा, लायेथे लेकिन इस घटनासे इनकामन सखारसे उदात्त होगया निदान
 उसीरातको खुरचाप घरसे निकल नासिकक्षेत्र को खलते हुये । घर
 पहुच ३ वर्षमें इन्हाने संहिता, भटाप्यायी, अमरकोष भादि ग्रंथ कठ किये
 पश्चात् विशेष विद्यापठनार्थ उत्तरकी भोर गमन किया और दौलताबाद
 भोंकारनाथ, उजैन तथा, ग्वालियर होते हुये विदूर (वानपुर) में भाये
 समय उनदिना आजकलकासा नहीं था एवं इनको इस सफरमें बड़े ३ वा
 सहन करने पड़े, लोकिन कभी नहीं परराये, मूल मंत्र सदैव येही रहा कि
 "कार्यं वा साधयेयं, शरीरं वा पातयेयं" । विदूरम ३ वर्ष रहियर मसिद्ध पीठ
 राषबंधाचारीसे व्याकरणके समस्त ग्रंथपढ़े और अपने एक सपाठीको पटीबदापुरी
 सेगगाम कृष्णसे बधाया । विदूरसे उत्तराखण्डको सिपारे और जोशीमठ, एसी
 केश, वनखल तथा हरिद्वारम ३ वर्षपर्यंत उहिरकर म्यामी गोविन्दाभम भादि महा
 रमाओंसे योग तथा ब्रह्मविद्याका अभ्यास किया । इन तीनवर्षोंमें इन्होंने अनेक
 तीर्थोंके दशन, बहुतसे योगिया स्यासियाका सासंग अनेक प्रकारके चात्रापणा
 दि व्रत तथा गायत्री भादि मंत्रोंका जप भी कियाया कि जिससे अन्तकरणकी
 शुद्धि होकर मुक्ति निर्मल हो और इन्द्रिय विद्याका प्रकाशहो । स ई १८५० के
 साठ उत्तराखण्डसे छोटार फार्शिम भाये और महारमा गौड़ स्वामीसे स्यास
 धर्मको दीक्षा लेकर अनेक शास्त्रोंका अध्ययन उनसे किया । पि स १९१६ में
 सब छोगोंके पहिनेसे गौड़ स्वामीकी गद्दीपर बैयता तथा दशास्यमेध पाठपर
 अहस्पायाईकी धर्मशास्त्रमें रहियर विधायियायो पढ़ाना इहनि स्वीकार किया
 (देस्रो गौड़स्वामी) । इनके पढाये हजारों विद्वान आजकल देवाभरम वर्तमान
 हैं । भारत विख्यात यत्ता पं० दीनदयालु दाम्भा तथा महामहोपाध्याय पंडित
 शिष्यकुमार शास्त्री सरखे भट्टितीय विद्वान अपनेको स्वामी विशुद्धानन्द का शि
 ष्य बतलाने में गौरव समझत हैं । स्वामीजी धनिकोंसे सदैव दूर भागे लेकिन
 अन्ततक अपने सापही रहे, इसीसे वादितहै "भोक्ताके भोगकी प्रबलता"
 यत्मीर, जयपुर, इन्दौर, दरभंगा भादिके राजामहाराजान शिष्य होकर स्वामी
 की पाठशास्त्रोंके निमित्त छागों रूपये दिये पाठशास्त्रोंमें सेकहों सन्धा

वेदान्तका सूक्ष्म विचार करते तथा अन्नवस्त्रपातेषु। सैकड़ों ब्रह्मचारी तथा गृहस्थभी अनेक शास्त्रोंकी शिक्षा पातेथे और भाष्यगण्यता होनेपर उनको भी भोजन वस्त्र दिया जाताथा। काशीके सब ब्राह्मण तथा साधू अपना अन्नगण्य समझ स्वामीजीके कहनेमें चलेतेथे। उनके होते हुये कोई विद्वान् शास्त्रार्थमें काशी से जीवकर नहीं गया। उनकासा तेजस्वीपन तथा भावद्गुण काशाक किसी दूसरे विद्वानका नहींथा। वि० सं० १९५६ की साल ९३ वषकी उम्रमें स्वामीजीका देहपात हुआ कलकत्ता भादि नगरोंमें उनके नामसे विद्यालय खोले गये। उनके मृत्युकी खबर सुनकर सबने येही कहा कि " विद्याका सूप अस्व द्वागवा ! काशीका कलश गिरगया !! "

बिहारीमल कलवाहा (जयपुरनरेश)—इनका भोऊमल तथा पूरणमलभी कहतेथे, आमेर इनके वक्तम राजधानी थी, यह निज पिता पृथ्वीराजके बाद गद्दीपर बैठेथे और दिल्लीके तख्तको राजस्व देतेथे। नारनौल इन्होंने गुलामशेरखानसे फतेह कियाया और है मूबझालकी पराजयके समयभी यह मौजूदथा। पहिले पहिले जब मुगलसम्राट् अकबरने इन्हें अपने दरबारमें बुलाया तो यह पागलहाथी पर सवार होकर गयेथे, अकबरको इन्होंने अपनी बेटीका डोला दियाथा और पञ्ज आरि मनसब पायाया। राजभगवानदास इनके पुत्रथे और दरबार अकबरके मन्त्रालयन महाराजा मानसिंह इनके पौत्रथे (सो देखो) । बिहारीमलकी रानी मधुरामें विशावतारकी गळीके साम्हने जमुनातट जहाँ सतीहुईथी वहाँपर छालपत्थरका ५० फीट ऊँचा सतीधूम्र भवतक मौजूदहै। उक्तधूम्रको मुगलसम्राट् औरगोबेबने दरबारसे बुझावियाया जिसके सिम्ह भवतक पायेजातेहैं।

बिहारीलाल (भाषाकवि) परम्परासे इनके विषयम प्रसिद्धहै कि—
 १०० जन्म ग्याहिर जानिये, खण्ड बुदले वाळ ।

रठणाई भाई सुभग, मयुरा वल सुसराळ ॥
 खूब विद्यासमेस बाँकेपुरसे मुद्रित बिहारीलालके जीवनचरित्रकी पुस्तकमें सुयोग्य लेखकने उपरोक्त दोहे तथा सतसईके अनेक प्रमाणोंके आधारपर लिख कियाहै कि यह भाषा कविकेशवदासके पुत्र वर्णके ब्राह्मण नानाकेपर ग्याहिरम जमेथे। अनुमान १८ वषकी उम्रतक पिताके पास रुढ़छा (बुदेखण्ड) में रह, मय इनके पिताका देहान्त होगया और उनके सरकारकरनेवाले नरेशकी जगह भी वृत्त राजा रुढ़छाकी गद्दीपर बैठगया। तो बिहारीलालजी अपनी कविताका न्याय भादर नपाय रुढ़छासे अपनी सुसराळको मयुरामें खेलेभाषापश्चात् मयुरसे जयपुरनरेश जयसिंहके दरबारमें गये, राजासाहब उनदिनों अपनी नवयौवना रानीके प्रेममें पेत्रे मुख ये कि रातदिन रनवाचमे रहकर राजकाजकी ओर कुछ ध्यान नहीं देतेथे। यह देख बिहारीलालने निम्नस्थ दोहा लिख राजाके मुख परहुँचा या—

दो० नही पराग नहीं मधुरमधु, नहीं विकास यह काळ ।
भली बलीहीसों रम्यो, भागे कौन हवाळ ॥

इसदोहेका मतलब समझ जयसिंहनेरा सुरत बाहिर निकल भागे और विहारीलाळको १०० मुहरे इनामदी । बादको विहारीलाळजी जयपुरमें रहे और समय २ पर दोहे बनाकर सुनातेरहे तथा इनाम पातरहे । स० १६६२ में ७०० दोहे बनजानेपर विहारीलाळजीने सबको पकड़ाकेया और सतसईनाम रक्खा । सतसईके दोहापर 'भक्षरकामधेनु' की कहावत पर तीर्थ, ४८ मात्राके छंदमें ऐसी सुदरतासे इतने गम्भीरभावोंको भरकर मूर्ति मान बना भांखके साम्हने खड़ाकरदेना सहजकाम नहीं है, विद्वानजीम कहतेहैं -

दो० सतसईको दोहरा, ज्यों नायकके तीर ।
देखनके मोछे छगें, फैं पाय गम्भीर ॥

राजा जयसिंहका प्रेम विहारीलाळके साथ इतना बढ़गया। कि, बहुरोपा मुददे भयसरपरभी यह इनको भजने सायही रखतेये । स० १० १६२५ में काजुद्धर खड़ाइपर दोनों सायहीसाय गयेये और विहारीलाळजीने उसभयसरपर कहाया कि-

दो० यो दलकाटे बलछते, मैं जय साह भुभाळ ।
घदन अपासुरके परे, ज्या हारिगायवाळ ॥

स० १० १६६६ में राजा जयसिंहके सयोगसे शिवाजीमरहटा और औरंगजेबमें सन्धि होकर बदा भारो पुद्द मिटाया, उस भयसरपर विहारीलाळजीने कहायाकि-

दो० घर २ हिन्दुनिचुरकनी, देहि भरील सराहि ॥
पतिनराय प्युंदर सुरी, तरासों जयसाह ॥

स० १० १६६७ म राजा जयसिंहका देहांत हुआ और इसके बाद विहारी लाळजीका भी कुछ पता नहीं लगता । सतसईको विचारसहित पढ़नेसे ज्ञात होताहै कि, विहारीका म्यभाष तथा और खरापा । इन्हे गुणामदी मय कृष्णोपाकसये हृदय उदार भाषासे परिपूर्णया, मतमतांतरोंके झगड़ों तथा युगयुगको नापसंद करतेये। संस्कृतके पूजाविद्वानये, पारसीभी भनीभोनि जानते हैं । कुछ भाग्यप नहीं बपोंकि, पारसीके दास्य भडे खोदप और मौरसे हाडी बापे ताम्र पायेमातेहैं और हिंदीम तौ ऐसी बोलबाल तथा गये गयेहुये शब्द किहीं भयपयित्री यदितामें मिलतेही नहीं । निम्नलिखितदोहेमें जिसलरीके सतसई खेदहैं वे विहारीने सागरको गागरम मारि -

दोहा—कितीन गोकुलकुल वधू, कादिन कोहि मुखवीन ।
कौनै तजी न कुल गळी, है मुरली स्वरळीन ॥

विज्ञानेश्वर—(नोतिविशारद) यह बड़े महात्मा थे, धर्मशास्त्र तथा राज-
नीतिके मर्मोंको सूष जानतेथे। पाण्डववल्क्यस्मृतिका मिताक्षरा नाम तिलक इन्होंने
रखाया । मिताक्षराका बन्ना राजा भोजके समयसे पहिले खिन्नहै क्योंकि
भोजके समयमें मिताक्षराका व्यवहार सर्वत्र न्यायालयोंमें था । पाण्डित्य इनका
मिताक्षराके देखनेसे प्रकट होताहै और इसमेंभी कुछ शक नहीं कि, यह
वर्णके ब्राह्मण थे ।

वीकासिंह(राव वीकाजी वीकानेर राज्यके संस्थापक)—माइ
वाइनरेश रावजोधाजी इनके बापथे । वीकाजीने पिताके किसी कट्टवचनपर
नाराज होकर अपने पूर्वजोंके राज्यका हाथा छोड़दियाथा और निजभुजबलसे
माइवाडका उत्तरीयभाग जैसलमेरके भाटियोंसे विजयकरके वि० सं० १५४२
में वीकानेर वसायाथा और इधर रेवाड़ी फतेहकरके दिल्लीकी तलहिट्टीतक और
उधर हौंसीदिसारतक स्वराज्यको बढायाथा और कइइइइयोंमें मुगलसम्राट
देखीपरभी विजय पाई थी । रावजोधाजीके पश्चात् भाइयोंकी मददपर जाकर
इन्होंने मलमेरके सूबेदारको परास्त कियाथा । इनका देहान्त वि० सं० १५६१ में
हुआ । श्रीमहाराज गंगासिंहजी वर्तमान वीकानेरनरेश आपहीके वंशावतर्तमें हैं ।

वीरधर—देखो वीरबल

वीरबल(अकबरके मंत्री)—यह जिला हमीरपुरके किसीग्राममें और
अनेकाकी सम्मतिके अनुसार काल्योंमें सं० इ० १५६० की साल एक साधारण
कापकृष्णव्राह्मणके घर जन्मेथे और महेशदास इनका नाम पढ़ायां । माता
इनको ७ वर्षका छोड़कर मरगईथी और पिताने इनको बचपनहींमें अनेक
वर्षित तथा श्लोक पैसे कठकरावियेथे जो राजा महाराजामोंके साम्हने पढ़े-
जातेहैं । कईवर्षबाद इनके पिताका भी देहान्त होगया और तब इन्होंने सुन्दर
छाल एक विद्वान् ब्राह्मणसे अल्पकालहीमें संस्कृत तथा फारसीके बड़े ३ ग्रंथ
पढ़े । एकदिन सुंदरछाल छत्तपरसे गिरकर मरगये, इसके बाद इन्होंने जयपुर-
नरेश भगवानदासके द्वारमें कबोत्तरामें नौकरी करली । भगवानदासने इनकी
विद्वत्तणवृद्धिपर रीझकर सोहफेके तौरपर इनको बादशाह अकबरकी भेंट
करदिया । अकबरने प्रथम इनको कविरायकी पदवी दी और कुछही दिनाबाद
इनको सर्वगुण सम्पन्न पाकर अपना मुशीरेभाळा बनालिया और पद्महजारीका
सभ्य तथा साहिबदानिश्वर राजा वीरबलका खिताब दिया । इन्हींदिनों कांग-
देके राजा उद्योत्सवद् किसी, कारण बढकियेगये, अकबरने उनका राज्य जागी

रम इनको देना चाहता लेकिन इन्होंने स्वीकार न किया निदान कार्लिजसे समेत एक बड़ी जागीर इनको दी गई । गुजरातकी लड़ाईमें बीरबलने अपना समस्त पुण्य दिखाकर बड़ी मर्हा खाई थी, यह भकवरसे सायही रहते थे और जब कोई भारीसे भारी काम आनपड़ता था तब यह इन्हींको सौंपा जाता था । स० ई० १५५६ में काबुलके भकगानोंने सरबठापा, भकवरने एक सैनिकदल उनकी सरकोबीकी बीरबलकी मातृहितीम रवाना किया, काबुलपहुंच बीरबल संयोगवश पहाड़की एक घाटीमें फँस गये और मुंहनाचना स्वीकार नकर सेनासहित कटमेरे । भकवर अपने सखाकी मृत्युसे समाचार सुन शोकाकुल हो ज्ञानशून्य होगया, कईदिनतक खाना न खाया और सख पूछो तो मरणवर्षपत इसदुखको मभूटा, जब कभी बीरबलकी याद आजाती थी तो कहकरता था कि "सख शोभा दुबारकी गई बीरबल साय" बीरबलकी छाश नहीं मिली थी, इसी आधारपर बादशाहका शोक पटानेके लिये लोगोंने कइके यह घास उड़ाई कि, बीरबल मारे नहीं गये हैं किन्तु संन्यासीके भेषमें कागड़म घिस रहे हैं । भकवरने विश्वासकरके अनुसंधान करवा परंतु यह सब खपरें गप्प निकली । मौलमीन चाहत अपने हिंदोस्तानके इतिहासमें लिखते हैं कि " बीरबल बड़ा सुमयन्धकता, राजका स्तंभ, सभ्य, इच्छित और दीपभाशयवान पुरुष था । मधुरभाषी था पर सुमतिष्ठाका बड़ा प्यान रखता था । स्वभाव महसनपुक्त था लेकिन ऐसा महसन नहीं करता था जो सभ्यता और राज्यमतिष्ठासे घात हो । " उँव २ मनसबधारी अमीर, बेगमें और शाहिजादेतक बीरबलकी कृपादृष्टियों अपना संभाव्य समझते थे क्योंकि, यह बादशाहके मुहल्लगेये थे और बादशाह इनकी सिफारिशको मानता था । बीरबल अनेक शाहोंके दाता होकर शीखे समुद्र, दानमें वण, धर्ममर्ममें जमदग्नि और युद्धमें गृहस्पातिके सहदाये । कविर्गमको छप्पयमें १ लाख रुपया इन्होंने इनम दिया था और इद्रजात उडछानरेशका १ करोड़रुपया जुमाना कविद्वारा दासकी सिफारिशपर भकवरसे कदियर माफ्यरादिया था (देखो वेगयदाप) । जि० वाहपुरमें धाराभणपरपुर इन्हींका पलायादुभाई; इनके उद्योगसे गोवप बंदोदोकर हिंदूमुसलमानोंमें मेलमेल बढ़ाया, छेविन् मुसलमान इनके सखेण जलतरहितेये क्योंकि, उनको सुमान था कि, यह भकवरको हिन्दूमतीरी तरक सुनाते हैं । इनके दूटे फूटे महल तथा, इनकी पेटाके, जो बड़ी बहुराशी-माहिलोंके तैदर सबतक पतेपुरसीवरी जि० भागराममें पड़े हैं और इनका इपलीता बेटा लाख इनसे मुसदी दिन पाछे अपना सबला मुदाहर संपार्क होगया था । यह कवितामें अपना भोगमत्त पदितथे । मरिद दे कि-

दो०-उत्तम पद कविर्गङ्गाको, उपमाको बलधीर ।

केशव अर्धगंभरिको, सूर तीनशुण धीर ॥

राजा वीरबलकी मृत्युके शोकमें कविकेशवदासजीने कहाया कि-
पापके पुंम पखावज केशव, शोकके सँख सुने सुखमामें ।
शूटकी झालर झौंझ भलोककी, कौतुक भी कलिके कुनवामें ।
भेदकी भँरि बड़ेहरके बफ, भावत जुत्पन जानी जमामें ।
जुझतही बलधीर बजे बहु, दारिदके दर्बार दमामें ।

वीरसिंह (बुंदेलोंके मूल पुरुष)—इनके पिता हेमकरज जो बनारसमें राज्य करतेथे मुसलमानोंसे परास्त होकर स ई के १३ वें शतकमें इधर आयेथे । वीरसिंहने बड़े होकर “बुन्देला गोत्र” धारण किया और इसी कारण इसदेशका नाम बुंदेलखण्ड पड़ा । इनके वंशज अबतक पन्ना, अजयगढ़, बखारो, विजावर, उदछा तथा दतिया इत्यादिमें राज्य करते हैं ।

वीरसिंहदेव बुंदेला (उदछानरेश)—मुगलसम्राट जहाँगीरके चक्रमें बड़े मतापी हुयेथे, इन्होंने शहर झाँसीको फिरसे बसायाया और ३३ लाख रुपयेके खर्चसे मथुरामें केशवदेवजीका मंदिर बनवायाया । इनके पिताका नाम मधुकरसाहि था (सो देखो) ।

वीरसेन (बंगालका राजा)—इन्होंने स ई १८६ से स ई १०६ तक बंगालमें राज्य किया, राजधानी इनकी ढाकाके समीप विक्रमपुरमें थी । डाक्टर रामेंद्रठाकुरमित्र, एक एक डी के मतानुसार इन्दीका दूसरा नाम अदीसुर था । कहियेहैं कि, अदीसुरनरेशने कलौजसे ५ ब्राह्मण तथा ५ कायस्थ बुलाकर बंगालमें बसायेथे जिनकी औलादमें बंगालके कुलीन ब्राह्मण और कुलीन कायस्थहैं । रामा लक्ष्मणसेन जो स ई १३०२ में घञ्जियारखिल-जोसे परास्त होकर पुरीको भागगये, इसीवंशके अन्तिम राजाथे ।

वीसलदेव चौहान (महाराजा अजमेर)—शाकम्भरी भूपति भावेन्द्रदेव इनके पिताथे और दिल्ली अजमेरके राजा पृथ्वीराजचौहान इनकी छोटी पीढ़ीमें हुयेथे । कवि नरपतनारह “ वीसलदेवरासो ” में लिखताहै कि, यौसलदेवकी ६० रानियोंमेंसे एक धारानगरीके राजा भोजकी कन्या राजमतीभी थी, जिसके दहेजमें वीसलदेवको सँभर, टोंक तथा गढ़मडलके इलाके मिलेथे । “ पृथ्वीराजरासो ” में कविर्षद लिखताहै कि “ वीसलदेव घने वि सं १०२२ से १०८६ तक अजमेरकी गद्दीपर बड़ी अनीतिये राज्य किया । इन्होंने गुजरात विजय किया था, उड़ीसाके राजाको परास्त कियाथा

और अनेक अमियरानियानि मिलकर किसीतरकीबसे इनको मरुसक कराये याया । इस दशम वीसलदेवने बहुत दुःखीहो गुजारत जाय मोरुगेश्वर महा देवके दर्शन किये मिसके प्रभावसे पुंस्वको पुन प्राप्त होकर यहाँ एक देव दर्शन मठ बनवाया और अपने नामका वीसलनगर बसाकर नागराजगोंद दान किया । अजमेरके समीप एक तालाब इनका बनवाया भवतक मौजूद और जयपुर राग्यांसगत राजमहलके निकटभी " वीसलपुर " नामक धाम इहाँका बसाया हुआ है अंतम वाजीकरण ही भीषणियाक खा फुसमोंके कर ने तथा सौंयके काटनेसे वीसलदेव पागल होगये और उस हालतम अन इकलौते पुत्र सारङ्गदेवको बच कियेथे । वीसलदेवके बाद सारङ्गदेवका पुत्र भानाराजा गद्दीपर बैठा मिसका बनवाया भानाराजर भवतक अजमेरके समीप विद्यमान है ।

युकरातहकीम (Hippocrates)-प्राचीन इतिहासोंम लेख है कि युक्- रातके वंशम ३०० वर्षसे हिममतका पेशा होताया । इनके पुत्रम एरस्युला- पियस प्रथमने यूनानो चिकित्साकी मूल रोपणकीधी मिसका पूणतया सुधार वादको इन्होंने किया । एरस्युलापियस प्रथमने पहिले रागियोंका इलाज मात्र सन्नादिद्वारा हुआ करता था । युकरातने पल्प निदान, जटादाहरपादिक नियम अन्वेषणकरके ७३ पुस्तक रची थी और इसकारण येही प्रचलित यूनानीदि- यमतके प्रथम आचार्य गिने जाते हैं । युकरातके समयनानुसार रोगके दोकारण हैं, एक तो अकृत तथा स्वाभवा प्रतिकूल होना; दूसर भोजन और निद्रामें कक पटना । स इ से ४६० वर्ष पहिले यूनानम जन्मे; स ई. से ३५७ वर्ष पहिले मरे ।

युद्ध (योद्ध मतके आचार्य)- शाक्यसिद्ध, साक्यामुनि, समार्थ सिद्ध तथा गौतम बुद्ध इहाँके नाम हैं । पृथ्वीके धर्मप्रचारकोंम इनका दर्जा सबसे ऊंचा है । किसी समय तो इनके मतका प्रचार सर्वत्र भूमंडलपर होगयाया लेकिन अब भी पुनियाके एरतिहासयोग इसमतपर चलते हैं । चीन, जापान, कंबा, मला और तिबेटम इसीमतके मानमेवाछ हैं । यह कवि- यस्तुके सुवर्णगी राजा शुद्धोदनक पर स० इ० से ५५७ वर्ष पहिले जन्म- माता मायादेवी इनको ७ वर्षका मोरुवर मरगईया निदान भौती गौतमम इनको पाळाया । पड़े हाकर धनुषदादि अनेक विद्या इन्दान घोटैदा कालमें खोतली, संसारकी तरफसे इनका चित्त शुद्धोस बिरिक मालूम पड़ताया निदान पिताने शीमही संसारके यथार्थम जलानेके लिये इनके विवाहकी निरु- राजा घोमराजगी यथासे इनका विवाह स्वर्गपर विधानसे हागया जिसके बाद १० वर्षक इन्होंने राजसी मुग्ध भोग पर मनम पही विचार रदा कि, संसार

असार है और मनुष्यके जीवनका कुछ ठिकाना नहीं। ३० वर्षकी उम्रमें इनके एक पुत्र हुआ, इससे कुछही दिन पीछे एकराज आधीरातक वस्तु अपनी स्त्री तथा पुत्रको सोते छोड़, राजसीसुखसे मुँह मोड़, धोड़ेपर सवारहो यह सपोवनको सिधारे। घरसे कुछ दूर पहुँच इन्होंने अपने वस्त्र किसी पथिकके चियटोंसे षट्कलिये थे, घोड़ा तथा आभूषण नौकरके हाथ पिताके पास भेज दिये और भाप चलते हुये। गयामें पहुँच ५ वर्षतक तप किया और बुद्धपदको प्राप्त हुये। ४० वर्षकी उम्रमें काशिमें आये और निजमन्तर्भ्योका उपदेश करना प्रारम्भ किया। कौशळ तथा मगधके राजे इनके चले होगये और मगधकी राजधानी राजगृहमें उठकर इन्होंने बहुसादिनातक धम्मपादेश किया। ५० ई०से ५३ ई०पर्यंत पहिले ये गेरुआ वस्त्र पहिने अपने पितासे मिलनेको आये, पिता इनकी दशा देखे अप्रसन्नहुये लेकिन इन्होंने कुछ कपाल न किया। इनके भागमनकी खबर सुन सब नातेदार तथा प्रजागण दशनोंको धाये केवल इनकी धर्मपत्नी ने मान किया लेकिन उसके चित्तकी बात समझ यह उसके पास खुदही चलेगये पतिव्रतापत्नीके नेत्रोंसे स्वामीको देखतेही अभ्युचार वहनिकली और वह द कर इनके घरगोंथो छिपटगई। राजा शुद्धोदनके मरनेके पीछे इनकी पत्नी तथा मौसीने बौद्धमत ग्रहण करलिया और इनके पुत्र रहुलानेभी ९ वर्षपौछ राजपाट त्यागदिपा ८० वर्षकी उम्रमें बुद्धजी किसीगाँवमें उपदेश करनेगये थे, वहा मीठे चाँवल रोटी खाकर उदरशुद्धसे पीडितहुये और नवाणपदको प्राप्त हुये। इनका मुख्यस्थान गयामें उस जगह था जहाँ अब बुद्धगयाका मंदिर बनाहुआहै, वसातके ४ महीने गयामें रहिते थे और वर्षके शेष ८ महीने देशदेशांतरोंमें उपदेश करते विचरतेये। भिक्षाकरके भोजन करतेये और अनेक चलेभी इधर उधर उपदेकरणार्थ भेजेये। बौद्धमत जो साङ्गयोगशास्त्रानुकूलहै इनके जीवनकालहीमें दूर फैलगयाथा और बादको भशोक, कनिष्क तथा सिद्धादित्य प्रतापी नरेशान होकर उसका प्रचार बहुत कुछ किया। इसमत्तमें वर्णव्यवस्था नहीं मानीजाती, कर्म प्रधान समझाजाता है और सखाई, सफाई, ईमान्दारी, दान देने और प्रार्णामावकी रक्षाकरनेका उपदेश कियाजाताहै। पुराणोंके अनुसार बुद्धजी विष्णुका अवतार श्रीकृष्णजीके बाद हुये लेकिन बुद्धजीने स्वयं ऐसा कभी नहीं कहा।

शुअलीसईना इकीम (AVALINDA) यह मुसलमानोंमें सबसे पहिले इकीम हुय हैं। वलसके समीप किसी गाँवमें स ई० ९८५ का साल जन्मे और शहिर मुत्तारामें रहकर इन्होंने विद्या पढ़ी तथा वैद्यक (सिधावत) सीखी। २० वर्षकी उम्रमें एक औषधालय खोला और अनेक असाध्यरोगियाका जिनमें से वलस खाराका हाकिमभी था चद्दाकरके यही प्रतिष्ठा पाई। बादको

और अनेक अप्रियरानियाने मिलकर किसीतगकीबसे इनको मर्पुसऊ कापी याथा । इस दशमं धीसखदेवने बहुत बु'खीहो गुजरात जाय मोरुगेश्वर महा- देवके दर्शन किये जिसके प्रभावसे पुंस्तबको पुन प्राप्त होकर यहाँ एक देव दर्शन मठ बनवाया और अपने नामका धीसखनगर बसायर नागप्रादानका दान किया । अजमेरके समीप एक तालाब इनका बनवाया अथतक मौजूद है और जयपुर राज्यांतर्गत राजमहलके निकटभी " धीसखपुर " नामक ग्राम इन्हींका बसाया हुआ है अंतम वाजीकरण की औपचियिक रीति पुस्तकोंके बन- ने तथा सौंभके फाटनेसे धीसखदेव पागल होगये और उस हायतम मन इकलौते पुत्र सारङ्गदेवको धंध कियेये । धीसखदेवके बाद सारङ्गदेवका पुत्र भानाराजा गद्दीपर बैठा जिसका बनवाया भानासागर अथतक अजमेरके स- मीप विद्यमान है ।

बुकरातहकीम (Hippocrates)-प्राचीन इतिहासोंमें छेप दे कि बुक- रातके यंशमें ३०० वर्षसे हिकमतका पेशा होताया । इनके पुत्रज परासुनी- पियस प्रथमने पुनानी चिकित्साकी मूल रोपणकीयी जिसका पूर्णतया सुधार वादको इन्होंने किया । पस्सुबुद्धापियस प्रथमने पहिले रागिपौधा इलाज मन- तन्त्रादिद्वारा हुआ करता था । बुकरातने पारथ्य निदान जगदीश्वरपादिके नियम अन्वेषणकरके ७३ पुस्तक रचीयी और इसकारण पेदी प्रयक्ति पुनर्नादि- कमतके प्रथम आचार्य गिने जाते हैं । बुकरातके कथनानुसार रोगों दोकारण हैं, एक तो ऋतु तथा स्थानका प्रतिबल होना दूसर भोजन और निद्राके फर्क पटना । स ई से ४६० ब३ पहिले यूनानमें जन्मे, स ई से ३५३ वर्ष पहिले मरे ।

घुद्ध (यौद्ध मतके आचार्य)-शाकपाभद, सायनामुनि, सयाभ सिद्ध तथा तीतम बुद्ध इन्हींके नाम हैं । पृथ्वीय धर्मप्रचारकोंमें इनका दर्जा सपसे ऊंचा है । किसी समय सो इनके मतका प्रचार सदाय भूमदलपर होगयाया लेकिन अब भी बुनियादे परातिहासलोग इसमतपर शक्यत हैं । चीन, जापान, छंफा, मद्रा और तिब्बतमें इसीमतके माननेवाले हैं । यह कविट- यस्तुके सुपर्यगी राजा शुक्रोदनके घर स० इ० स ५५३ वर्ष पहिले जन्मेये, माता मायादेवी इनको ७ वर्षका छोकर मरगया निदान मीठी गौगमो- इनको पाछाया । पढ़ होकर घनुषदादि अनेक विद्या इन्होंने पढिहा पाठम- सीतली,संसारकी तरयुल इनका धिन गुरुदीसे विरक्त मान्यम पढ़ताया निरु- पियाने शीघ्रही संसारके बंधनोंमें छलानेके छिये इनके विवाहकी विफ्र ही- राजा घामराजरी कन्यासे इनका विवाह उरपर विधानछ होगया जिसका बाद १० वर्षतक इन्होंने राजसी गुण भोग पर मनम यही विचार रहा कि, संसार

अस्वार है और मनुष्यके जीवनका कुछ ठिकाना नहीं । ३० वर्षकी उम्रमें इनके एक पुत्र हुआ, इससे कुछही दिन पीछे एकराज भाघीरातक वक्त अपनी स्त्री तथा पुत्रको सोते छोड़, राजलीसुखसे मुँह मोड़, घोड़ेपर सवारहो यह तपोवनको सिधारे । घरसे कुछ दूर पहुँच इन्होंने अपने वस्त्र किसी पथिकके चिपडोंसे बदललिये थे, घोड़ा तथा भाभूषण नौकरके हाथ पिताके पास भेज दिये और भाप चलते हुये । गयामें पहुंच ५ वर्षतक तप किया और बुद्धपदको प्राप्त हुये । ४० वर्षकी उम्रमें कार्क्षामें भाये और निजमन्त्रव्योक्ता उपदेश करना प्रारम्भ किया । कौशल तथा मगधके राजे इनके चले होगये और मगधकी राजधानी राजगृहमें ठहरकर इन्हाने बहुतादिनातक धर्मोपदेश किया । ५० ई०से ५२ वर्ष पहिले ये गेरुभा वस्त्र पहिने अपने पितासे मिलनेको भाये, पिता इनकी दशा देख अप्रसन्नहुये लेकिन इन्होंने कुछ रुपाल न किया । इनके भागमनकी खबर सुन सब नावेदार तथा प्रजागण वर्शनोंको धाये केवल इनकी धर्मपत्नी ने मान किया लेकिन उसके चित्तकी बात समझ यह उसके पास खुदही चलेगये पतिव्रतापत्नीके नेत्रोंसे स्वामीको देखतेही अश्रुधार बह निकली और यह द कर इनके चरणोंको छिपटगई । राजा शुद्धोवनके मरनेके पीछे इनकी पत्नी तथा मौसीने बौद्धमत ग्रहण करलिया और इनके पुत्र रहूळानेभी ९ वर्षपौछ राजपाट त्यागदिया ८० वर्षकी उम्रमें बुद्धजी किसीगाँवमें उपदेश करनेगये थे, वहा मीठे खोंबल रोटी खाकर उदरशुलसे पीडितहुये और नवाणपदको प्राप्त हुये । इनका मुख्यस्थान गयामें उष जगह था जहाँ अब बुद्धगयाका मंदिर बनाहुभाहै, वसांतके ४ महीने गयामें रहिते थे और वर्षके शेष ८ महीने देशदेशान्तरोंमें उपदेश करते विचरतेये । भिक्षाकरके भोजन करतेये और अनेक चलेभी इधर उधर उपदेकरणार्थ भेजेये । बौद्धमत जो साङ्ख्ययोगशास्त्रानुकूलहै इनके जीवनकालहीमें दूर फैल गयाथा और बादको भशोक, कनिष्क तथा सिलादित्य प्रतापी नरेशाने होकर उसका प्रचार बहुत कुछ किया । इसमतमें घणव्यवस्था नहीं मानीजाती, कर्म प्रधान समझाजाता ह और सच्चाई, सफाई, ईमान्दारी, दान देने और प्राणीमात्रकी रक्षाकरनेका उपदेश कियाजाताहै । पुराणोंके अनुसार बुद्धजी विष्णुका अवतार श्रीकृष्णजीके बाद हुये लेकिन बुद्धजीने स्वयं ऐसा कभी नहीं कहा ।

सुअलीसईना हकीम (Avisina) यह सुसुल्मानोंमें सबसे पहिले हकीम हुय हैं । वल्लखके समीप किसी गाँवमें स ई० ९८५ का साल जन्मे और शाहिर बुखाराम रहकर इन्होंने विद्या पढी तथा वैद्यक (तिवावत) सीखी । २० वर्षकी उम्रमें एक औषधालय खोला और अनेक असाध्यरोगियाका जिनमें से वल्लख खायका हाकिममी था चलाकरके बड़ी प्रतिष्ठा पाई । बादको

हाकिमोंसे बल्लु बुझारके कुतुबखानेके देखनेकी आज्ञा मांगी । तिस दिन यह कुतुबखानेकी सब पुस्तकोंको पूर्णरीतिसे देख चुक, दस्ता-गले उसमें आग लगी जिससे वह जलगया । छोगेनि हाकिमको बहुत कुछ शमाड़ा कि, बुमछीने अपनी रची हिकमतकी पुस्तकोंका प्रचार करनेके लिये कुतुबखानेको नष्टकिया है लेकिन हाकिमने यह बात कान नहीं की । इससे कुछही दिन पीछे हाकिम मरगया, तब ता बुमछी ख्वारज्मके हाकिमके दरबारमें जाय सत्कार प्राप्त करनेमें समर्थ हुए । बहुत समय नहीं बीतने पाया कि, मुस्ताम महिमुद्दगमनर्षीने ख्वारज्मपर चढ़ा करके वहाँके हाकिमको परास्तकिया भार इकाम बुमछीको शिष्यामतानुगामी होनेके कारण बंधकरवाहना चाहा लेकिन यह भाग बचे और नैशापूर भाद्रिस्थानों म बहुतदिनोंतक छिपे रहे । इन्हींदिनों इन्होंने शाहका बूसक पकनातेदारको आराम किया उसका रोग बिकीकी समझमें नहीं आताया । निदान इन्होंने उस का माहीपर धगछारिख शहिरके सय मुहल्लोंके नाम लिये । उस मुहल्लेके नाम पर कि जिसम रोगीका प्रेमी रहिताया नाही भड़कठठी । फिर एक जानवार भाद्र मीसे उस मुहल्लेके ख्रांपुरुबोंके नाम लिखाये । जिस ख्रीबे नामपर नाही भड़की उसके कटासले रोगीको पापक दुमा जान इकीमानीने पछक मारतमें इलाक कषादिया कपोकि, रोगी छजाके कारण अपना हाथ किसीको बतलाता नहीं था । शाहकापुसने इकीमजीबा उचित साधार किया और अपने दरबारमें रख लिया लेकिन कुछ फाळपीछे शाहकाबूसको मभागणके उपद्रवसे रागग्रहित होनापड़ा । इसके बाद इकीमजी हुमेदों तथा अस्फदानके हाकिमोंके दरबारमें रहे लेकिन किसीको इनका भागमन शुभ न हुआ । अंतम ६१ वर्षकी उम्रमें ज्वरसे पीड़ित होकर मरे । मास १०० पुस्तकें इन्होंने भिन्न २ शाखों पर रची थीं ।

बेन्जामिनफ्रैंकलिन (Benjamin Franklin)— यह एक छापाखाने भमेरियायासी अंग्रजके १७ बरसोंमेंसे थे । दरिद्रताके कारण स्कूलमें नहीं जा पागयाया । जो कुछ विद्या इनको भाठीपी यह निम्नके तौरपर परिश्रम करने इन्होंने सीखली थी । इनके बड़े भाईने एक छापाखाना खोलाया । निदान विज्ञान इनको ११ वर्षकी उम्रमें समयावितानेके लिये बड़े भाईको सौंपदिया । दिन भरते यह छापाखानेमें काम करतेथे और भारीगताक पढ़ा करतेथे । अग्रजके लिये जो दाम इनको बड़े भाईसे मिलता था यह उसमेंसे कुछ बचाकर पुस्तकें मोलछेतेथे और जो पुस्तकें नहीं खरीद सकतेथे उनको औरोंसे मगनी ले पातेथे । लेकिन इनका भाई निद्रर था वर्ष इनको कुछही दिनबाद मौकरीयों खानमें विद्वेदादिकुपानगयो जाना पड़ा और पहासे छ-इननगरमें जा

किसी छापेखानेमें नौकर होगये । समयपर उपस्थित रहकर प्यान तथा
 कुर्तलिये काम करनेके कारण स्वामी इनसे सन्तुष्ट रहताया । इसीतरह प्राय
 डेढ़वर्ष छन्दनमें रहकर इन्होंने स्वर्णके बन्धेजसे कुछ धनसम्बन्ध करदिया
 और फिरेडेल्फियामें जाकर एक छापाखाना खोला तथा एक समाचारपत्र
 जारी किया । फिर तो दिनमतिदिन इनकी भाय बढ़तीगई । जितना धन इनके
 पास बढ़ता गया यह उतनेही मन्त्र होगये और कभी न इतराये वादको इन्होंने
 अपना विवाह किया, स्त्री शीघ्रस्वभावकी अच्छी मिठी और दम्पतिमें खूब प्रेम
 रहा । पश्चात् इन्होंने एक पुस्तकालय स्थापनकिया जिसमें चर्चादेनेवालों
 को पुस्तकें मिलतीथी और जो अपनी भौतिकता पहिछाही पुस्तकालयथा फिर
 इन्होंने प्रुक्सविभागकी दशा सुधारनेके लिये अनेक बैठायें कीं और आगका
 बीमाकरनेवाली समार्ये स्थापन कीं, एक स्कूलभी खोलाया और स्वदेशरक्षाके
 लिये गधनमेंटसे प्रयत्नकरके सेना रखवानेमेंभी सफलता पाईथी । इसी समय
 इन्होंने " दी वेदू वेदय " नामक ग्रंथ छपवाया जिसकी खूबही विक्री हुई ।
 अंततम इन्होंने विज्ञानकी सरफ मन लगाया और सिद्धकर दिखाया कि, कृत्रिम त-
 या अकृषिमाषिजलीमें कुछ भेद नहीं है । जब यह बात निश्चय होगई तो इन्होंने
 बड़े २ मकानोंको बिजलीसे बसानेकी युक्ति सोची । युक्ति यहथी कि, मकानोंमें
 कबोकोदेकी छद्म लगाईजावे जिसका एक सिरा धरतीमें गढ़ारहे और दूसरा
 मकानके ऊपर निकलारहे, बिजली ऊपरको सिरपर गिरकर मकानको हानिपहुं
 चायेबिना छद्मकी रास्ताधर्ममें समजायगी। विद्वान् तथा वैज्ञानिक होनेके अति-
 रिक्त यह वैशहितैपी भी पक्षमें । यूनापटेड स्टेट (अमेरिका) की राजकीयसभामें
 इनको कुर्सी मिलतीथी और सचि तथा विग्रहमें भी इनकी अनुमति लीजाती
 थी। अमेरिकावासी अंग्रेजापर प्रथम इङ्ग्लैंडका आधिपत्य पाछेकिन इन्होंने उद्योग
 करके इनको स्वतन्त्र कराया निदान उनसबने एकमत होकर इनको अपना प्रेसी-
 डेन्ट (प्रधान) नियतकिया, इसस्वसंप्रदाके विषयमें जो सचिपत्र लिखागयाथा
 उसपर प्रैकडिनइनि इस्ताक्षरकियेये । एकदफे किसी परदेशीमनुष्यने इनको
 सतलियकर सहायता माँगी, इन्हाने उसको १० अशर्किये भेजीं और लिखा
 कि जब तुमको उन्नतहोनेकी सामर्थ्यहो तो यह रकम किसी ऐसेही मनुष्यको देदे
 जा जो मुन्हारीसी वर्तमानदशामें हो और जो कुछ मने तुमको लिखाहै सो उस
 को भी बतावेना । ऐसा करनेसे तुम उन्नतहोजाओगे और इसरकमसे बहुतों
 का काम नियलेगा । स० ई० १७९० में ८५ वर्षके होकर मरे ।
 वेतालमट्ट—यह विक्रमादित्य द्वर्ष महाराजा उजैनके दरबारके नवरत्ननामक ९
 मसिख पंडितोंमेंसे थे । "नीतिप्रदीप" नामक संस्कृत ग्रंथ इनका रचवा हुआहै ।
 वेतालपंचविंशतिका जिसका छल्लूछाछमीने भाषानुवाद करके वेतालपचीसी
 नाम रक्षवाहै, इनकी रचीहुई नहींहै, उसके कर्ता कोई शिवदासकवि हुयेहैं ।

धेताल (भाषाकवि)-यह भाट ख ई १८२० म राजा विक्रमसाह उदछा नरेशके दरबारमें थे। इनका पुराना नाम साठोप राय धेतालया और य उद् भी खूब जानतेथे । इनके बनाये नीति सामयक छप्पय सुन्दरहैं ।

वेदपाय-यह ब्राह्मण पंडित नौशेरखोशाहइरानके दरबारम स ६ की त-ठीशताब्दीमें था। यजीर बुजुर्सेमेहरने इसके द्वारा हिंदोस्तानसे पद्यतंत्र नामक ग्रंथ मंगाकर उसका अनुवाद पद्विह्रुईभाषामें करया । शतरजके खेडकाप्रचार भी प्रथम इसीने इरानमें किया ।

वेनीभाधवदास (भाषाकवि)-यह महारमा ब्राह्मण जि०गाहाके रहनेवाले वि सं १६५५ में जन्मे । गो० तुल्सीदास इनके गुरुपे और इनदी नेने साथ २ बहुवदिनातक भ्रमण किया था । तुल्सीदासमीचा जीवनचरित्र इन्होंने " गुर्वाचरित्र " नामक पुस्तकमें लिखाहै । पद्पूर्तिभैलिये यह अपना नाम " दास " लिखतेथे । वि सं १६९९ में सिधारे ।

वेनीसिंह हुजुरी-यह पञ्चनरेश हि पुपतिथे दरबारम दीवानके पदके प्राप्त थे और बड़े सादसी, दानी तथा चीर होकर पबिकोवियुके खामानीके मरहटा तथा चौदाके सुसत्मानोंको इन्होंने बड़े बड़े परास्त किया । पुन्देलाखण्ड भाट तथा कर्वाश्वर भक्तव इनका यज्ञ गतिहैं । विजयगधौगढ (मध्यप्रदेश) के ठाकुर जगमोहनसिंह इन्होंने पंशम हैं ।

वेला (रायपिथौराकीबेटी)-यह महाबेर राजा परमालके पुत्र ब्रह्मरावो विवाहीगईथी । इसके गौनेयो विदापर परमाल तथा शृष्यीराज (राय विथौरा) की कौजाभ धार संग्राम हुआ जिसम राजा परमालका सर्वनाश हो गया और वेलाका पति ब्रह्मराव मारागया । वेलाथे बड़े भाईभी मारे गये और शृष्यीराजके पड़े २ धीरसायत चौदियारायइरपादि रणजार्इ हुये । वेला निजपतिका सिंग गोदम लेकर सर्तीहोगई । जिसस्थानर सर्ती हुईथी उस जगह वेलाके नामक नगर बसगया है और वहापर एक मठम प्रतिष्थप छात्रों मनुष्योंके वेलाभवानीनामसे पूजा जातीहै । दिल्लीमें एक छाटकी मुनिपाद इसन राय पाईथी लेखिन मुसन्मानाक हमलेके बारजगह पर्यतौरसे न बनसकी पश्चात् शृष्यु सुर्दानमे उसकी पूजा

बैकन (कनिष्ठ)
गोलखैरनके पुत्र
हार म... देनेथे...

1)-यह इल्लहगामी सरनि
मनुरथे। यज्ञपत्रइन्हे होन
ए और सिद्धि
१० १६३०

अंग्रेजी साहित्यमें अनुपम सामग्रीहैं, उक्त निबन्धोंका आशय कठिनहै । लार्ड-की पदवीभी इनको ब्रिटिशगवर्नमेंटने प्रदान कीथी । अन्तमें नमकहरामनौकरोंके कारण इनको घूसलेनेका दोषी ठहरनापड़ाया ।

बैजाबाई (दौलतरायसेंधियाकी रानी)—यह मरहटा सर्वार श्री जीराघयटकेकी बेटी ग्वाळियरनेरेश दौलतराय सेंधियाको ब्याहीथी । सेंधियाने यह विवाह ऐसी धूमधामसे कियाथा कि, खजानोंमें पौजकी तनख्याह खुफाने तकको रूपया न रहाया । बैजाबाई बड़ी मोहनीरूपथी एवं महाराजासेंधिया कीं उसपर बड़ा प्रेमथा । स० ई० १८१८ में बैजाबाई विधवा होगई, उसके कोई पुत्र न था और उसकी उम्रभी उससमय बहुतथोड़ीथी, सेंधियाने अपने जीतेजी किसीको गोदभी नहीं लियाथा, बाईकी इच्छा अपने पिताके वंशमेंसे किसीको गोदलेकर गद्दीपर बिठलानेकी थी परंतु सेंधियाके वंशमेंसे सुगत रावको उसे गोदलेनापड़ा । सुगतरावके बचपनमें बाई राजकाज बड़ीबुद्धि मानीसे करतीरही लेकिन जब बड़े होकर सुगतरावने सषकाम अपने अधिकारमें करनाचाहा तो रानीको यह स्वाकार नहुआ निदान सुगतरावने ब्रिटिशगवर्नमेंटकी शरण ली, उक्तगवर्नमेंटने बीचम पडकर निषटारा किया और सुगतरावको भाळीजाह जनकोजीसेंधियाके नामसे गद्दीपर बिठलादिया । बाई अपना धन, दौलत, सिपाहीलेकर भागरेमें भावसी, अतः ब्रिटिशगवर्नमेंटने बाईसे उच्चपदके अनुसार पेन्शन नियत करादी और फर्रुखाबादमें उसे रहिनेका हुकम दिया । कुछसमयपीछे ग्वाळियरदरवार में बाईको कुछ और अधिक वार्षिक देनेका उद्योग इस शर्तपर किया कि वह दक्षिणमें अपनी जागीरपर जाबसे । बाई यह बात मानकर यहीं जा रही । स० ई० १८५७ के गदरमें बाईने चागीपासे सेंधियाके कुछबाळाकी रक्षा की और उनके प्राण बचाकर क्षिप्रानदीके किनारे भागगई और पाटेही विनोबाद परलोक सिधारी । फेनीपार्क साहिबकी मेम अपनी यात्राके प्रथमें लिखतीहै कि “जब मैं बाईसे मिलनेगई वह सुनहरी गद्दीपर बैठीथी, एकतरफ उसकी पौत्री गम ज साहिबभी विराममानथी, नौकरनियें दोनों ओर बुशाले तथा सुनहरी घञ्जिहरे आदरपूर्वक खडीथी, सेंधियाका खड्ग बाईके समीप गद्दीपर रखलाया, बाईके बाळ सुफेदये, सुसकान अत्यंत मियथी, निस्सन्देह युवावस्थामें वह बनीही मोहनीरूप रही होगी, हाथमें सुवर्णकी एक चूड़ोक सिधाय वह कुछ ताभूषण नहीं पहिनेथी और विधवा होनेके कारण बहुतसे शारीरिक कष्ट सहती तथा नेमव्रत रखतीथी । उसके मुखपर देखीज्योति दासमानयो और सखी बाल ठाल अत्यन्त प्रशसनीयथी ” । रानाबैजा बाईने बनारसमें गंगा-ट पत्थरका पाट बनवाना शुरू किया था लेकिन यह अधयनाही पीछेकी

भोर घसक गया। घसका हुआ घाट अचतक पड़ा है, उसके देखनेसे माहुर होता है कि, यदि बनकर तैयार होजाता तो पृथ्वीपर अद्वितीय घाट होता। जब अजैनकी लूटका माल ग्वालिपरमें छाया गया था तो रातो वैशाखपर उसको अपने कोपमें इस विचारसे नहीं रखने दिया था कि, उसमें ब्रह्म तथा सायुर्भोकाभी धन भवत्प ही था और इसी कारण उस अटूट धनको अनेक अजैनों गोकुलवास उपनाम पारखजीको देकर देवमन्दिर इत्यादि निर्माणकरानेकी आज्ञा दी थी। उसीधनसे पारखजीने मयुरामें द्वापरिकार्थशिव मन्दिर बनवाया तथा मयुराके सेठ वंशकी मूलरोपण की।

वैजुधावरा (प्रसिद्ध संगीतज्ञ)—महाहर गवैयाँकी सूचीमें इसका भी नाम है। यह पादशाह अकबरके वक्तमें हुआ कुछ पागलता था और इस वक्त मन्दस्वरसे गाता रहता था। जातिका ब्राह्मण था और पूरानाम इससे बैजनाथ था।

वैवस्वतमनु (भूमण्डलके प्रथमनरेश)—यह महाराजा सुप्रपुत्र तथा अरुणपत्नीके पौत्र सब प्रजाओंके पति सचसे प्रथम राजा हुए। इनके पुत्र दशशतके ४८ कोस लम्बी तथा १९ कोस चौड़ी अयोध्यानगरी बसाई उसको अपना राजधानी बनवायाया (दिल्लीवार्ताकी पद्यमापण बालवाण्ड ७०० वर्षी) वेदोंके अनुकूल राजा तथा प्रजाके हितार्थ वैवस्वतमनुने "मानवधर्मसूत्र" रचवा जिनके आशयपर बादको भृगुऋषिने "मनुस्मृति" बनाई। वशिष्ठ तथा गौतम वृत्तधर्मसूत्रमें मानवधर्मसूत्रका नाम आया है। मानवधर्मसूत्र सुप्रहोगये, अनेक नहीं मिलते हैं। मनुका नाम चौड़े देरकेरसे अनेक देदोंकी प्राचीन पुस्तकमें मिलता है जिससे सात होता है कि यह, पृथ्वीके पहिले अक्रवृत्ती राजा थे। मिश्रदेशकी गावौन पुस्तकसे पता चलता है कि वहाँका सबसे पहिला बादशाह मनुक था उसका उपाधि था। इसी प्रकार यूनानी भी कहते हैं कि, मनुस ईश्वरका पुत्र सबसे पहिला हाकिम हुआ। मनुस्वशाब्द मनुहीके सम्बंधसे बनाई। पृथ्वीपर प्रथम ईर्दने खेतीकरने, मकानबनाने, धपदेयुनेने, भोजनबनाने तथा आपसमें समताका बलावकरनेका प्रचार किया। मत्स्यपुराणके प्रथम अध्यायमें तथा महाभारतयनपर्वके १८७ अध्यायमें लिखा है कि महाराज वैवस्वत मनुके समयमें पाण्डुका सुपान आयाया जिसमें सब सृष्टिभूषणपर मष्ट होगई थी केवल सप्त ऋषि खदित महाराजा मनु जीते बसेये। इस तूफानका अन्वदेशाये मार्शल प्रथम अष्टमै। ईसाई लोग स ई से ३०१६ वर्ष पहिले इस तूफानका आना मानते हैं। महाराज मनु पदे खायप्रत थे।

वैरमखॉ खानखाना—इसके पूर्वजोंने जो तुर्किस्तानके रहनेवाले थे हंपीदीतक तैमूरखॉम चाकरी कीथी, इसने बड़े होकर मुगलसम्राट् हुमायूँकी चाकरी स्वीकारकी और सेनापतिके पदको प्राप्तहुआ । तैमूरकी सप्तम पीढ़ीमें हुमायूँ हुआहै, इसने हुमायूँका दरहालतमें साध दिया और इसीके बल पराक्रमसे हुमायूँ अपना हिंदोस्तामी राज्य अफगानोंसे वापिसलेनेमें समर्थहुआ। जब हुमायूँ शेरशाहसूरसे हारकर ईरानको भागा तो उस भवसरपर वैरम उसके साथ था, ईरानपहुँचनेपर हुमायूँको वहाँके बादशाहतहिमासपने फौजकी मददकी और वैरम वहाँकी खानखानाका खिताब दिया।फौज लेकर हुमायूँ तथा वैरम हिंदोस्तानको वापिसआये, वैरमने मच्छीघाबेके मैदानमें खिकन्दरसूर तथा उसके अफगानों को परास्तकरके और पानीपतके मैदानमें हैमूको परास्तकरके स ई १५५६ को छाल हुमायूँको पुन हिंदोस्तानका बादशाह बनादिया, पश्चात् हुमायूँने वैरमको अपने पुत्र अकबरका अतालीक नियतकिया और खानघाबाका खिताब दिया । इसके थोड़ेहीदिनबाद हुमायूँ मरगया, अकबरकी उम्र उससमय १३ वर्षकी थी निदान राजकाज वैरम करतारहा । वैरमका राज्यमध्य अच्छाया, परंतु वह आन्तयमन्दी तथा निर्दई होचलाया, इसलिये सबलोग उससे बिगड़ठठेये । ८ वर्षकी उम्रमें अकबरने सब राजकाज अपने अधिकारमें करलिया, वैरमको दूध बात बुरी लगी, पक्ष उसने सर उठाया लेकिन परास्तहुआ । पश्चात् अकबरने उसे माफकरदिया और पेम्बानदेशर मक्काकी यात्राकेलिये मनादिया । जब वैरम गुजरातके समीप पहुँचा तब एक मनुष्यने उसे मारकर अपने घापका बदला लिया । द्धार अकबरीसे नवरत्न मन्बुलरहीम खानखाना इसके पुत्रये, इसका बनाया एक फार्सीवीवानभी मिलताहै पहिले इसकी कबर गुजरातमें बनवाईगईयी बादको इसके, अरपमानपदार्थोंको उखाड़कर मशाहद (तुर्किस्तान) में उफनायागया, जहाँ कबर अबतक मौजूदहै । कहतेहैं कि एकदफे शेरशाहसूरसे हारकर वैरमखॉ गुजरातको भागाजाताथा,अबुलकासिम एक आधीनकर्मचारी साथमें था, रास्तेमें शेरसूरके एक सेनापतिने आकर घेरलिया और अबुलकासिमकी दिष्पसूरत देख जाना कि यही वैरमहै । वैरमने दुरत आगे बढ़कर कहाकि “ नहीं मैं वैर-मूँ” । इसपर अबुलकासिम बोला “कि ये भेष रघामीभक्त सेवकहै और मेरे वल्लेजानवेना चाहताहै” निदान अबुलकासिम भागा गया और वैरम बचगया ।

वैलेन्टायन (डाक्टर जे आर. वैलेन्टायन—Dr J R Wallantyne)—
 २६ भाषाओंके ज्ञाता विद्वान स० इ० १८६४ में इंग्लैण्डके क्वीन्सकालिज
 नगरके मि-डेपिल नियत होकर आयेये । संस्कृतके अच्छे पंडितये । इनकी
 रीतस्वीर अबतक क्वीन्सकालिम नगरमें मौजूद है ।

धोपदेश-यह वैदिक धर्मके विरुद्ध बलताया, वि० सं० की १२ वीं प्रवृत्ति में हुआ। महाभारतभाष्य, भागवतभाष्य, सुगंधबोध व्याकरण तथा पदादृश इसके रचे ग्रंथ हैं। इसका रचा व्याकरण पाणिनीय मतके विरुद्ध है मंत्र इसने रचे महाभारत तथा भागवतभाष्यका मतलब भी असला भाष्यपत्रके विरुद्ध ही है। इस रचनासे अभिप्राय यह था कि व्यासकृत भावगत तथा महाभारतका प्रचार उठजाय पर ऐसा न होसका।

बौद्धायन-इन्होंने वेदान्त सूत्रकी सक्षेपसे एक श्रुति बनाईया जो मंत्र नहीं मिलती लेकिन उसका किसीसमय अधिक प्रचारया।

व्यासमहर्षि-यह पगशरसुनिके पुत्र महाभारतके युद्धके समयमें हुआ काव्यसंज्ञ "पृथ्वीराजरासौ" में लिखताहै कि महाभारतया युद्ध ८१४ गतकल्पमें हुआ और फारसीराजतरङ्गिणीकार ५० बल्लूण ३५० गतकल्पमें इस युद्ध का विवरण करतहै जिससे व्यासजीका जीवनकाल निर्णयहोसकताहै। यह यमुनानदीके किसी द्वीपमें उपव्रजहोकर कृष्णवणके थे इसीलिये कृष्णाद्वैपायन इनको कहते हैं यह वेदविद्यापारङ्गतये और इसी कारण वेदव्यास कहालाये। बदरिकाश्रममें भी ये बहुत दिनोंतक रहे थे जिससे इनका नाम बादरायण प्रसिद्ध होगयाया चारोंवेदको संग्रहकरके इन्होंने श्रेणीबद्ध कियाया, इनसरीखा ग्रन्थज्ञानी विद्वान् तथा बृहत् ग्रंथकार भूमण्डलपर दूसरा नहीं हुआ कविहोनेके सिवाय यह इतिहासकार, सूत्रकार, भाष्यकार, स्मृतिकार तथा ब्रह्मविद्याप्रचारक भी थे। दिव्य भाविष्य तथा दिव्यादिष्य सबही शक्तियोंका इन्होंने स्वरचितग्रंथोंमें विशेष कर दियाहै। जैमिनि, पैशम्पायन तथा उग्रश्रवा सूत्र सरीखे ३५००० मन्त्रतीय विद्वान् इनके शिष्यये और शुक्रदेवभी इनके पुत्रये। इन्होंने वेदोक्त देवामुरसंग्राम तथा ऋषिमक्रियादिभेदक भाष्यपर पुराणसंहिता रचकर अपने शिष्य लोमहर्षणके सूत्रको पढ़ाईया, पश्चात् लोमहर्षणके पुत्र उग्रधवाने पुराणसंहिताम अपने ग्रंथमें सार मिलाकर त्रिस्रम्प १८ पुराण पृथक् २ रच्ये-मत्स्य पु० मार्कण्डेय पु० भाविष्य पु० भागवत पु० ब्रह्मवैवर्त पु० ब्रह्माण्ड पु० ब्रह्म पु० वाराह पु० भास्विपु० विष्णुपु० वामनपु० लिङ्गपु० गण्डपु० कूर्मपु० स्कन्दपु० पद्मपु० शिवपु० औरनारद पु० भारतनामसंहितासभी इन्होंने २४००० श्लोकोंमें बनायाया पश्चात् विद्वानोंने मिश्र समयमें होकर षट्त्रयस और अष्टादशान छसमें मिलादिय, तब १ छत्रश्लोकसे पुत्र होकर यह महाभारतनामको मामहुआइसोमकार उपरोक्त १८ पुराणोंमें भी अनीमाधमविरोधी पदिताने पाँचसे षेसी १ बात मिलादीहै कि मिनसे पुराणकी भाषितमें पूजा अष्टादशोर्ताहै। उर्दी विषमिषाने पुराणोंकी मध्यम अनेकमध्यगायाके देवसे पररपणा विरोधभी परदिपादे कि, जिसस पुराण विद्वान्

योग्य दृष्टि गोचर नहोकर भाधुनिक प्रतीत होते हैं । वर्तमान कालतक इस्तरह की मिठावट पुराणोंमें होतीरहीहै क्योंकि, पद्मपुराणमें अत्यंत नवीन माधवगादि काकी प्रशंसाहै । विजयमुक्तावली तथा वेदात्त सूत्रभी व्यासकृतहै और १८ उप पुराणोंमें वर्णित अनेकविषयभी व्यासप्रणीतहैं परंतु इसमें भी शक नहीं कि, एक हजार वर्षके भीतरही भीतर उपपुराणोंका परिवर्तन अनेक विद्वानोंके द्वारा वर्तमान दशामें हुआहै । पारसियोंकी धर्मपुस्तक जे शावन्ताम लिखाहै कि महर्षि व्यास, जरदत्तसे शास्त्रार्थ करने बल्लभबुद्धारा गयेये, शास्त्रापम साहस्रान मौजूदया और विषय यह था कि "यदि मनुष्य अन्याय कर सकता है तो वेदधारियोंमें सर्वोत्तम क्यों है" । इन्हाने एक दृग्दर्शक यंत्रभी बनायाथा, हिन्दू लोग इनकी गणना अवताराम करतेहैं, चास्वधमें इन्हाने ऐसे कामकिये जो मनुष्यको करना कठिनहै । बदे२ राजा महाराजाभाकी गदिये नष्ट होगई परंतु व्यासगद्दी भारतमें लगी हुईहै, प्रत्येकवर्ष भाषाठ शु० १५ के दिन घर २ व्यासपूजा होतीहै और "नमोस्तुते व्यासविशालबुद्धे" की ध्वनि गूजताहै । व्यासजो दीर्घजीवीहुये, चद्रवशकी प्राय ५ पीढियोंने इनके सामने राग्याकिया, धृतराष्ट्र तथा मांडूने इन्हीके वीयसे राजा विश्वित्रधीर्यकी विधवा रात्रियाके उद्भ्रम गर्भधारण कियाथा (देखो भीष्म पितामह) ।

वृजवासीदास (भाषाकवि)—यह धृन्दावनवासी ब्राह्मण स० इ० १७५३ में जन्मे यह बड़े श्रीकृष्णोपासकये, स ई १७७० में इन्हाने ब्रजविलास नाम भाषापद्यम रचा ब्रजविलासमें श्रीकृष्णचंद्रकी अनेक लीलायें वर्णित हैं ।

ब्रजनिधिकवि—देखो प्रतापसिंह सवाई ।

धृन्वकवि (धृन्वसतसईकेकर्ता)—इन्हाने ७५१ नीतिके दोहे बना कर उनके संग्रहका नाम धृन्वसतसईरक्खा । धृन्वसतसई वि० सं० १७६१ की साल ढाके में सम्पूर्ण हुई । "भाषपंचाशिका" नामक ग्रंथ भी इहाँका रचा हुआ है ।

ब्रह्मकवि—देखो बीरबल ।

ब्रह्मगुप्त (ज्योतिषी)—इनके पापका नाम जिष्णु था, सजैनके रहनेवालेये और चापवशी राक्षा व्याघ्रमुक्कके समयमें हुएये । मिस्टर वैटली साहब स० इ० ५२७ में इनका होना लिख करतेहैं । ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त तथा खण्डखाद्य नामक ग्रंथ इनके रचेहुयेहैं । इन्हाने ब्रह्मकल्पकी गणनाका प्रकार स्थापनकिया के, जिसपर भाधुनिक ज्योतिषका आधारहै और ऐतिहासिक सम्यत्ताका भी जिसके अनुसार परिवर्तन हुआहै (vide Asiatic Researches Vol.VIII. P P 236-7)

डेलैवैटस्की (मैहम डेलैवैटस्की)-यह पियोसोकी घमकी मूळ रो पणकर्ता एक फौजी अफसरके घर स ई १८३१ की साल मुल्तानसमें पैदाहईपी बचपनमें यह बहूधा बीमार रहितीथी, १७वर्षकी उम्रम इनकी शादी अमेरिकाके एक गवर्नरके साथ जो ६० वर्षका था हुइ लेकिन उक्त सम्बन्ध इनको पसन्द नहीं आया एवं बियाहका बन्धन तोड़ना पड़ा । पश्चात् यह देशाटनके विचारसे हिंदोस्तानको आई और तिन्यतम कईवर्षतक रहकर महात्मासिद्धोस योगकी शिक्षा पाइ तथा अध्यात्मविद्या (मेस्मेरिज्म) सीखी । बादको मित्र तथा रुस होती हुइ अमेरिकाको वापिस गई और वहाँके लोगोंको अनेक कारणम दिख छाये, स० ई० १८७४ मे कर्नेल आल्फ्रेड साहब इनके शागिद हुये जिनकी मददसे इन्हाने पियोसोकिकेळ सोसाइटी स्थापन की लेकिन पादरीलोगोंने खप छता नहीं होनेदी । निराशहोकर यह कर्नेल आल्फ्रेडसाहबसहित स ई १८७९ की साल हिंदोस्तानको वापिसआई, बड़े २ शहरोंम जाकर उपदेश दिये और हिन्दूधर्मकी बड़ी प्रशंसा की तथा अनेक कारिमे दिखलाये, इन सुबषाताके प्रभावसे मद्रास इत्यादिनगरमें पियोसोकिकेळसमाजें स्थापनहोगई जिनमें बड़े २ विद्वान् शरीकहोगये हिंदू सुखलमान् पारसी इसाई सबही रूजूहुये । हमारा रूपये फीसके भानेलगे, यही २ फिताब तथा समाचारपत्र छपने लगे, और हरतरफ टोपिल टपनेहु, प्रोपेट तथा मेस्मेरिज्मकी खर्चा फैली । हिंदोस्तानमें छथा तथा अमेरिकाम इनके मतानुगामी बहुत हैं । पियोसोकिकेळ सोसाइटीके " पियोसो फिट " नामक मासिक पत्रका सम्पादन पाहिळे यहें धपतक इहाने कियाया । यह महाभारत, रामायण तथा भागवतादि पुराणाकी कथानकोंको जो साधारण बुद्धिके मनुष्याकी समझम न आनेके कारण अलम्भवागिनी जाने लगई, खर्षा छाप और सम्भवजानतीथी । शास्त्रमें उच्चबुद्धिको प्राप्तथी, मांसाहार नहीं करती थी और विद्या तथा बुद्धियलसे निम्नस्य सरीखी अनेक आश्चर्यजनक बातें खेल्के तौरपर करके दिखवा देती थी -

१ नष्ट वस्तुका कई वर्षपीछे पता लगाना ।

२ जंगलमें घरसन तथा छानेपीनेकी चीजें सुरन्त मगाउना ।

३ दूरी रकायी तथा अन्यपात्र साधितकरदेना ।

४ मुर्दाकी रूहायो बुलाकर उनसे बात करना तथा उनकी सूत्र दिखलाना ।

५ हयाके द्वारा परीक्षा उत्तर मंगाना ।

भगवतसिंह (सरभगवतसिंह, पे०सी०भा०ई०, एम०टी०, एम०भार०सी०
टी०पी०प०, प०प०टी० गो०दरेश)-चंद्रवंशी ठाकुर संप्रदायके पर

स.ई १८६५ की साल आपका जन्म हुआ । पिता आपको ४ वर्ष का छोड़कर विधा रगये थे, ९ वर्षकी उम्रमें आपको राजकोट कालिजमें पढ़नेके लिये भेजा गया और वहाँ कई वर्ष तक पढ़नेके उपरांत अंग्रेज शिक्षक वैन्काकसाहबके साथ विशेष विद्यापठनार्थ बृटिश गवर्नमेन्टकी भाषासे यह यू.रूपको गये । स.ई १८८३ में यू.रूपसे हिंदोस्तानको वापिसभाये और अपनी यात्राका वृत्तत कई भाषाओंमें पुस्तकाकार छपवाया । कुछहीदिनोंबाद स.ई १८८४ में आपका राज्याभिषेक हुआ, उसी साल बम्बईकी यूनीवर्सिटीने आपको अपना फेलो नियत किया । राज्याभिषेकके समय प्रभागणपर जो राज्यका ऋणथा वह आपने छोड़ दिया था । स.ई १८८६ में आप स्काट्लैंडको पधारे और १५ महीने एडिन्बरो यूनीवर्सिटीमें रहकर एल एल डी की उपाधि पानेमें समर्थहुये । श्रीमती विक्टोरियाकी जुबिलीके अवसरपर भी काठियावाड़ी रईसोंकी तरफसे आप स्काट्लैंडको पधारेये और इसीअवसरपर के सी आई ई का खिताब आपको मिलाया । स.ई १८८७ में आपकी सलामी तोपके ११ फेरोंकी नियतहुई । स.ई १८९० म रानीसाहब का इलाज कराने आप फिर स्काट्लैंड जाकर दो वर्ष ठीकैरे, इस अवसरपर एडिन्बरो यूनीवर्सिटीने यम धी, यम डी तथा यम आर सी की उपाधिर्ष और आफसफोर्ड यूनीवर्सिटीने डी सी एल की उपाधि आपको प्रदान की । स.ई १८९१ में आस्ट्रेलिया, अमेरिका, चीन, जापान तथा छेका होतेहुये आप निजराजधानीको पधारे । आपके समयम रियासत गोन्डलमें अनेक सड़कें, स्कूल, हस्पताल, बुंगीयर, चर्मशाला, सुहताजखाने, डॉकयर, तारघर और न्यायालय बनायेगये हैं । भूको तथा रोगियोंको भ्रम वस्त्र और औषधि देनेका आपने स्वराज्यमें अच्छा प्रबन्ध कियाहै, शिक्षा विभागकी भी बहुत कुछ उन्नति आपके शासनमें हुईहै । इन्हीं सुप्रबन्धोंके कारण बृटिश गवर्नमेन्टने आपके राज्यकी गणना दूसरे दर्जेके पहिले दर्जेमें कीहै, प्रभा गणने भी आपकी अत्यंत सुंदर पाषाण मूर्ति बनवाकर शहिरमें पधराई है । आपने प्रभापरसे अनेक दुस्रवाई कर उठादिये हैं और अपने हुकमसे स्वराज्यमें षष बंद कर दिया है । "भावनगर गोन्डल" तथा "गोन्डल पूर्वम्बर" देस्से में आप ५० लाख रुपयेके शरीक हैं । जुग २ जियो ! परोपकारी नृप ।

भगवन्सदास—देखो भगवान्दास कछवाहे ।

भगवान्दास कछवाहे (जयपुरनरेश)—निज पिता बिहारीमल के बाद गद्दीपर बैठे, आमेर आपके वक्तमें राजधानी थी । आपने भकबरके पुत्र शहिजादे सलीमको अपनी बेटीका डोळा दियाथा और भकबरने आपको अर्माच्छ समराका खिताब, पंचहजारीका मनसब तथा पंजाबकी सूबेदारी दी थी । गुजरातमें तथा राना चितीइसे छोड़कर आपने सफलता पाई थी । भ

न्तम अक्षरने भापको जाबुलिस्तानका हाकिम नियत किया, वहाँ जाना भापको पसन्द न था लेकिन जानापड़ा, अक्षर अटक पार पहुँचे तब बीमार हो कर पागल होगये और इलाज करनेके लिये जब दकीम भापके सामने आया तब भापने छुरी भाकड़ी लेकिन शाही इकॉमोंकी कोशिगखे शाप्रदी आरामहोगया। मयुराम एक बड़ा भारी मंदिर जिसको औरंगजेबने दवा दिया और गोधधनमें हरदेवजीका मंदिर भापने बनवाया था। भाप वि० सं० १६४५ की साल छाहौरम परलोकगामी हुये और राजा मानसिंह भापके दत्तक पुत्र गद्दीपर बैठे।

भगवतीदास (भापाकवि)—यह पापयुञ्ज ब्राह्मण पितामहों प्राम जि० फैजाबादके बासी थे। नाखियेतोपाष्यान वि० सं० १६८८ में इन्होंने बनाया। वि० सं० १७१४ में मरे।

भगवत रसिकजी (भापाकवि)—य दरिदास स्वामीके शिष्ये भ्रमर रहते थे स० ई० १६७४ में जन्मे थे। इनके पिताका नाम माधव दास था। इनके रचे बहुतसे ग्रंथ हैं जिनमेंसे घोड़ोंसेके नाम नीचे लिखते हैं—

भनन्य निश्चयारमक, निश्चयारमक, श्रीनिय विहार सुगल ध्यान, त्रियौय मनरत्न, भनय रसिक भरम और भगवत रसिकजीकी मोंडा।

भट्टनारायण (बेणीसहार नाटकके रचयिता)—यह उन ५ ब्राह्मणोंमेंसे थे जिनको बंगालाधिपति मदीसुरने स० ई० १०७१के लगभग कनी-जसे बुढापर बंगालमें बसाया था। यह अस्तुत्वसे सूकवि थे। फाशी मरणमुक्ति विचार, प्रयोग रत्न, बेणीसहार नाटक और गोमिठ सूत्र भाष्य इनके रचे ग्रंथ हैं। इनके वंशोत्तर ब्राह्मणोंमें बचोपापाय (बतर्मा) कहते हैं।

भट्टलि (ग्रामीन कवि)—इनके रचे भट्टलि पुराणकी ७१ प्रति में वि सं १६६० की लिखी है, विद्या प्रयादिनी जैनसमा जयपुरके पुस्तकालयमें विद्यमान है। भट्टलिपुराण पद्यमें है, उसकी भाषा ग्रामीन हिन्दी है और उद्योग ज्योतिषके शुद्धके तथा पानी बरसने इत्यादिके ज्ञान हैं। भट्टलि कृषाकारीमा ज्योतिषी तथा कबीर या और इसके ग्रंथमें उर्दूके मतारबकी बातें भी हैं।

भट्टमास्कर—तैत्तिरीयसंहिताका भाष्य, स्पन्दनप्रकाशाचारिक, वेदान्त रूपका भाष्य तथा "ज्ञानमय" नामक यजुर्वेद भाष्य इन्होंने रचेये। "ज्ञानमय" के छेपोंके विदित होना है कि ये वि सं की १० वीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें जीवितये।

भट्टराघव—(न्यायसार विजयके कर्ता) ये वि० सं० ११९६में जीवितथे ।

भट्टिकावि—(भट्टिकाव्यके रचयिता) पतालगता है कि, यह वल्लभी राजा

श्रीधरसेनके समकाळीनथे । बट्टीपुरीमें राजा वीतरागके पुत्र वसन्तरागका एक दानपत्र मिळाले जिससे सिद्धित होताहै कि, महाकवि तथा प्रसिद्ध वैषाकरण भट्टि वि सं ३८० म विद्यमान थे (देखो प्राचीनलेखोंके विषयमें डाक्टर कीलहहार्नवाहवका अंग्रेजी ग्रंथ) । डाक्टर भाठदाजी अनेक कारणोंसे इनको भट्टहारिजीका पुत्र अनुमान करते हैं । भट्टिकाव्य वल्लभी मापामें हैं, उसमें १२ खग हैं और उसमें रामकथा तथा वषाकरणका साथ २ वर्णन है ।

भट्टपाद—पं कुमारिल भट्टकी उपाधि भट्टपादपी (देखो कुमारिल भट्ट) ।

भट्टपादके गुरु प गौडपादाचार्यथे । भट्टपाद प्रयागके रहनेवाले थे ।

भट्टोजिदीक्षित—(सिद्धांतकौमुदीके रचयिता) ये काशीवासी महापद्मनाभग वि सं की १७ वी शताब्दीमें हुए, इन्होंने पाणिनिस्त्रोंके क्रमसे महाभाष्यका सारभूत “ शब्दकौस्तुभ ” नामक उपाख्यान रचा और “ सिद्धांतकौमुदी ” नामक उदाहरणसहित पाणिनिस्त्रवृत्ति रची । सिद्धांतकौमुदीमें प्रत्युक्त संधिआदिकाव्योंके विधायक सूत्रोंको छोटकर पृथक् २ प्रकरण बनादिये हैं और जिसप्रकरणमें जिन २ सूत्रोंकी भाष्यकता पढ़ी है वह सूत्र भी उन्हीं प्रकरणोंमें वृत्तिसहित संयुक्तकर दिये हैं । “ मनोरमा ” नामक सिद्धांतकौमुदीकी टीकामी भट्टोजिशिक्षितकृत है । धर्मशास्त्रमें त्रिपिनिर्णय, संवाधिकाव्यनिर्णय इत्यादिग्रंथ इन्हींके रचेहुये हैं । पं० हरदीक्षितजी इनके पौत्र थे (सो देखो) इनके पिताका नाम पं० छद्मीधर था । छद्मसिद्धांतकौमुदीके रचयिता पं० धरदराजइत्यादि अनेक विद्वान् इनके शिष्यथे ।

भवभूति कवि—इनका वृत्तय नाम श्रीकन्यया, बरारमें एक ब्राह्मणके घर इनका जन्म हुआथा और कुमारिलभट्ट इनके गुरुथे । महाराजा यशोवर्मने कन्नौजमेंदेशके दशरथमें इनका उत्कार होताथा, जब छटितादित्य कर्मीर नरे शने कन्नौज विजय किया तो वह इनको अपने साथ लेगया । माळवीमाधवनाटक, महावीरचरित्र तथा उत्तररामचरित्रनाटक इनके रचेहुये हैं । कविकाव्यिदासने स्वयं उत्तररामचरित्रनाटककी प्रशंसा की है—

श्लो०—नाटके भवभूतिवा चर्य वा धयमेव वा ।

उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते ॥

प्रोफेसर विष्णुचन साहबके मतानुसार भवभूतिकर्वाचर सं ई ७१८ म विद्यमान थे । वह भवभूति कवि वृत्तरे थे जिन्होंने काशीसे भाकर राजा भोजके द्वाराम उत्कार पाया था और जिनकी प्रशंसामें कविकाव्यिदास इने कहा था कि—

श्लो०-भहो मे सौभाग्यं मम य भवभूतेषु भणितम् ।
 घटयामारोप्यमपि फलति तस्यां कथिमनि ॥

भवानी-(बंगालप्रदेशान्तर्गतनाटौरकी पुण्यात्मा रानी) यह राजशाह
 जिल्लेमें छातिनगौषके चौधरी भारमाराम ब्राह्मणकी पुत्री नाटौरके राजा
 रामजीवन रायके पुत्र रामकन्तको प्याहापी । यह जैसी सुंदरी थी
 वैसीही सुलक्षणी थी, बचपनहीसे धर्म और परोपकारमें निष्ठापतीपी ।
 दयारामतेजी राजारामजीवनका पुराना शुभचिन्तक दीपानया, रामकन्तको
 रियासतके काममें बेकिस्र देस एकदिन दयाराम समझानेलागा जिससे नाराज
 होकर रामकन्तने दयारामको निकालदिया । दयाराम जमादारीके काममें
 बङ्गालापकपा निदान बंगालसे सूबेदार भलावर्दीलौके यहां जाकर मौ
 कर होगया । एकदिन मधर पाकर दयारामने भलावर्दीसे कहा कि "जहाँ
 पनाह ! राजा रामकन्तसे ३२ लाखरुपये परमें जमाकियेई और दोलाखरुपयेका
 एक खरपख मोलाटियाई परंतु खरघारी मालगुजारी नहीं देताई" । भलावर्दीने
 मुरन्त हुकम दिया कि रामकन्तका परवार लूटलिया जावे और उसके
 बच्चेभाई देवीप्रसादको गद्दीपर बिठलादिया जावे । दुपमपातेही पौसने
 जाकर राजबाड़ी घेरली, रामकन्त रानी भवानीखदित खोरदुयाजसे निकल
 सुशिक्षादको भाग । भवानी छनदिना गर्भधरिणी, तिसपरभी पदलचलनापदा
 लेविन भापदाफी माथि उपात्यों भागीगई सुशिक्षादादपदुब दम्पतिने जगत्सेउकी
 छरणली । कईघपपीछे एकदिन राजा रामकन्तने लिङ्गरीमेंसे दयारामसे पाठ
 कीपर जातेहुवे देख पुकारकर कहाकि "दयाभाह ! हमको इस विषयमें
 कबतक रक्खोने । दयाराम मुरत रामकन्तके पास भाया और अपने पुराने
 स्वामीकी दीनदशा देख कहनेलागा कि, यदि ५० लाखरुपये हा तो तीनहीदिनमें
 फिर मुमकी राग्य दिखवा खवताई । रामकन्तने ठंडीसीसभखर कहा कि,
 मैं तो भाजकरह रोटीतकको परापीन हूँ । रानीभवानीने पतिको मथोरदोत देग
 अपने खस आभूषण उतार दिये और दयारामने उसयो बय सब बुकान्दारी
 तथा रास्तेम बैठनेपाछेलागा और भलावर्दीलौके समीपरहिनेपाछे मौकरोंका ५
 से ५० तक रुपये बीटकर बहदिया कि, जय देवीप्रसाद सफारसे मिछनेका
 भाये तो उसे मुनाकर यह बहनेना कि "देसो, यह यही भाग्यहानि जाहा
 है" । जब देवी प्रसाद भाया तो हजारों मनुष्याने ठखर भायानेउछे
 निवान यह भलावर्दीके साम्हने जाकर रोया । भलावर्दीने कहाकि
 तिसको सभसाप्राण भाग्यहीनबई यह भाग्यही भाग्यहाह और दया
 रामने पाटा कि क्या कोई और रामजीवनके यशमें गदीके छापक नहीं है ?
 तकरमें दयारामने कहा कि, उनका बेटीही मौजूद है । जहाँयक रामकन्तकी

समर्गका खिलत दिया गया और देवीप्रसाद निकाला गया । तबसे रामकन्त दयारामको बहुत मानवारहा और १६ वर्षराज्यकरके सिंधार । रानीभवानीके कोई सन्ताननथी भत रियासतका काम उसे खुद सम्हालनापड़ा । वह बड़ी पुण्यात्मा थी, दानधर्ममें बड़े २ राजाओंको मातकरतीथी, १ लाख ८० हजार रुपये प्रतिवष पढित, चाधु, सन्त, बैरागियोंको दियाजाताथा और ५ लाख धीमे जमीन मुमाफीमें देरकसी थी, परदेशीयात्रियोंकेलिये ३०० मकान काशीमें मोलालियेये, अनेक बङ्गवासियोंको जो काशीवास करने आतेये आजम भोजन वख्र दिया जाताथा । काशीमें विश्वेश्वरनाथ, ब्रह्मपूर्णा, दुर्गा, तारा, राधाकृष्ण इत्यादिके मंदिर तथा गया, नाटौर, राजशाही और मुर्शिदाबादमें अनेकानेक मंदिर उसने बनवायेये । काशीमें पञ्चकोसीकी सड़कपर पेंड लगवायेये तथा कुँचे खुदवाये ये, कई धर्मशालाये और ताळावभी खुदवायेये, सदावर्षभी जारी कियाथा जो निरपमति ८ मन भीगे बने तथा २५ मन चौबल काशीमें घोटताथा और १०८ मनुष्योंको प्रतिदिन इच्छाभोजन करायाजाताथा । जीवजन्तु पक्षे-सर्पोंके श्रुगानेकेलिये तथा चींटियोंके बिलोंमें शङ्करहालनेकेलिये भादमी नौकरये, ८ वैद्यभी नौकरये जो रियासतभरम औषधिलेकर घर २ घूमतेये और उनके साथ बीमारोंकी टहलकेलिये सेवकभी रहतेये । दरघक्त महारानीतक दरिद्रीलोग नहीं पहुँचसकतेये निदान आहाथीकि १ ६० तक पोतदार, ५ ६० तक खजात्री, १० ६० तक मुखही और १०० ६० तक दीवान जिसको पापसमझे बिनापूछे देदेवे महारानीके चाकर भी अपनी स्वामिनीके समानही धारिबक थे । रियासतभरके ब्राह्मणोंकी कन्याओंका खर्च राज्यकोषसे दियाजाताथा, नवरात्रिमें ५० हजार ६० पढितोंको और दोहजार वख्र तथा नयनिये सुहागिनियों तथा कुमारियोंको दीजातीथी । एकसाळ इलाकेकी आमदनी आनेमें देखुई तब महारानीने वख्र आभूषण बेंच जो जिसका निबघया घट चुका दिया पर वचन नहीं तोड़ा । महारानी निरप चारघडीके तडके ठठकर भजन करतीथी, मातकाळ स्नान करके पूजा पाठ करतीथी और धर्मशास्त्र सुन तीथी, फिर कुछ जलपान करके अपने हाथसे रसोई बनाती और १० ब्राह्मणोंको निमाकर भाप भोजन करतीथी । पश्चात् दीवानखानेमें कुशासनपर बैठ काम करतीथी और कागजोंपर हस्ताक्षर करतीथी । सप्तासमय चार घडीतक ईश्वरापधन करके भोजन करती तत्पश्चात् डेढ़पहरिगत गयेतक राजकाजकी सुधि लेती तथा दर्बार करतीथी । ३२ वर्षकी उम्रमे विधवा हुईथी और ८९ वर्ष की उम्रम ५० करोड ६० धर्मिय खर्च करके वैकुण्ठवासिनी हुई । महारानीके दत्तकपुत्र रामकृष्णको मुगलसम्राट् शाहजहाँलमने “ महाराजाधिराज पृथ्वीपति बहादुर”का खिताब दियाथा । स० ई० १७५७ में महारानी मौजूदथी ।

श्लो०-अहो मे सौभाग्यं मम च भवभूतेषु भणितम् ।
 यद्यप्यमारोप्यमति फलति तस्यां लायिमनि ॥

भवानी-(बंगालप्रदेशान्तर्गतनादौरकी पुण्यात्मा रानी) यह राजशाही जिल्लेमें छातिनगौवके चौधरी आमाराम ब्राह्मणकी पुत्री नादौरके राजा रामजीवन रायके पुत्र रामकन्तको स्थायीपि । यह जैसी सुन्दरी थी वैसीही सुलक्षणी थी, बचपनहीसे धर्म और परोपकारमें निष्ठावतीपी । दयारामतेजी राजारामजीवनका पुराना शुभचिन्तक दीवानया, रामकन्तको रियासतके काममें बेफिक्र देख एकदिन दयाराम समझानेलागा जिससे नाराज होकर रामकन्तने दयारामको निकालदिया । दयाराम जमींदारीके धामम बङ्गालासकथा निदान बंगालके सूबेदार अलावर्दीखोंके यहाँ जाकर नौ कर होगया । एकदिन अचर पाकर दयारामने अलावर्दीख यहाँ पि "जहाँ पताह ! राजा रामकन्तके ३३ लाखरुपये घरमें जमाकियेहैं और दोलाखरुपयेका एक सरपच मोलाजियाहै परंतु सरकारी मालगुजारी नहीं देताहै" । अलावर्दीने मुरत हुसम दिया कि रामकन्तका घरबार लूटलिया जाये और उसके खबरेभाई देवीप्रसादको गद्दीपर बिठलादिया जाये । हुसमपातेही फौजने जाकर राजबाई धेरली, रामकन्त रानी भवानीसहित चोरदुबानेसे निकल सुनिदापादको भागा । भवानी छनदिनो गर्भसेपी, तिसपरमी पैदलघलनापना लेखिन भावदायी मारि ज्योत्यों भागीगद्दुनिदापादपहुँच दुम्पतिने जगासेउभ्री शरणली । कईयपेपीछे एकदिन राजा रामकन्तने शिबूकीमसे दयारामको पाळकीपर जातेहुये देस पुकारकर कहाकि "दयाभाई ! हमको इस विरलितमें कबतक रक्खोगे । दयाराम मुरत रामकन्तके पास आया और अपने पुराने स्वामीकी दीमदशा देख कहनेलागा कि, यदि ५० लाखरुपये हा तो तीनहीदिनमें फिर तुमको राज्य दिळया सकताहूँ । रामकन्तन ठंडीसोंसभरकर कहा पि, मैं तो आजवरह रोटीतकको पराधीन हूँ । रानीभवानीने पतिको अधीरहाते देस अपने सब भाभूपण उतारदिये और दयारामन छसको सब सब हुकान्दारी तथा रास्तेमें पैठनेवाळिलोगा और अलावर्दीखोंने समीपरदिनेवाळे नीचोंको ५ से ५० तब रुपये पोंटकरबद्धदिया पि, जब देवीप्रसाद सकारसे मिळनेकी आये तो उसे सुनाकर यह कहदेना कि "देखो, यह यही भाग्यहीन जाता है" । जब देवी प्रसाद आया तो हमतों मनुष्याने उसरर भावापेटसे निदान यह अलावर्दीके सामने जाकर रोया । अलावर्दीने कहाकि जिसको सधराधारण भाग्यहीनकहै यह भाग्यही भाग्यहाई और दया रामग दान पि क्या मोई और रामजीवनके यज्ञमें गदीके स्थापक नहीं हैं । उत्तरम दयाधमने कहा पि, उनका बेटाहो मोगूददे । इत्यांक रामकन्तको

पुष्कलावतनामकपुत्री उनके लिये बसादी । फिर कईवर्षतक उस देशमें रहकर भरतजीने निज पुत्रोंका राज्य पुष्ट किया, पश्चात् अयोध्याको छोड़ भाये ।

भरत चंद्रवर्षी—यह महाराजा दुष्यंतके पुत्र शकुन्तलाके गर्भसे जन्मेये यह बड़े पराक्रमी मनेश थे, इसदेशका नाम भारतवर्ष इन्हींके सम्बन्धसे पड़ा इनकी ९ वीं पीढ़ीमें कौरव पांडवहुए ।

भरत—इसनामके एक विद्वान्ने प्राचीनसमयमें होकर “नाट्य “शास्त्र” रचाया जो अबभी मिलता है ।

भर्तृहरि (नीत्यादिशतकत्रयके कर्ता)—इन्के पिता गंधर्व सेनको धारानगरीके राजाकी कन्या विवाहीणी जिसके गर्भसे विक्रमादित्य का जन्म हुआ, भर्तृहरिने गंधर्वसेनके धर्मसे धारानरेशकी एक दासीके उदरमें गर्भधारण कियाया । धारानरेशके कोई पुत्र नहींथा इसलिये उसने इन दो नों लड़कोंका पालन पोषण किया और अनेकशास्त्रोंकी शिक्षा दिलवाई । जब यह लड़के युवावस्थाको प्राप्तहुये तौ धारानरेशने अपनेको अत्यंत वृद्ध समझ राजपाटका भार विक्रमादित्यको सौंपना चाहा लेकिन उन्होंने कहाकि “ बड़े भाई भर्तृहरिके होतेहुये हमको राज्य सिंहासनपर बैठना उचित नहींहै एवं हम उनका मंत्रित्व करेंगे” । यह सुन धारानरेशने भर्तृहरिको राज्य सौंपा और विक्रमादित्यको मंत्रोंके पदपर नियुक्तकिया लेकिन भर्तृहरि अत्यंत विद्वान् होनेपरभी ऐसे खेणये कि, अहर्निश रनिघासमें रहकर राजकाजकी ओर कुछ ध्यान नहीं देतेये । इनके दो रानिर्य थीं, एकका नाम पिंगला और दूसरीका अनङ्गसेना था, पिंगला पतिव्रता थी, और अनङ्गसेना दुस्वारेत्रवाली थी लेकिन राजाको यह हाल विदित नहींथा एवं वह दोनोंको अत्यंत प्रेमकर्ताया । एक दिन राजाने शिकारसे लौटकर किसी स्त्रीकी तारोंफकी जिसको उसने स्वी होते देखाया, पिंगलाने यह सुनकर कहाकि पतिव्रता स्त्री तौ पतिकी मृत्युकी खबर सुनतेही प्राण त्यागदेतीहैं, लेकिन राजाको इसबातका विश्वास नहीं हुआ निदान परीक्षाकरणार्थ उसने एकदिन कईकर्म चारियोंके द्वारा रक्तमें भिगोकर अपने कपड़े रानाके पास भेजदिये और कहलाभेजा कि “ राजाको शेरने खालिया” । पिंगलाने इसखबरके सुनतेही प्राण त्यागदिये । राजाने जब भवनपर आकर हाल सुना तौ अत्यंत शोकातुर हुआ लेकिन इसखबरसे उसका प्रेम दूसरीरानी अनङ्गसेनाकी तरफ द्रुगणा होगया क्योंकि दोनोंकी जगह अब एकही रानी रहगईयी जो अपनेको परम पतिव्रता बतलाकर राजाको निरंतर भरमातीरहिती थी । निदान राजा उसके प्रेममें मुग्धहोकर पहिलेकी अपेक्षा अधिक राजकाजकी तरफसे बेपरवाई करने लगा । यह देख विक्रमादित्यने राजाको कई बफे सचेतकिया लेकिन उसने

भरत (सूर्यवशीनरेश)—यह महापुत्र रामचंद्रसे अनेक पापों सहित हुआ। महाराज सूर्यके वृत्तान्तमें इनका वंशवृक्ष देखो।

भरत (राजादशरथके पुत्र)—यह रानीकेकईके उदरसे जन्मसे, ब्रह्मपनहीन नाना भ्रमपति केकपाधीशने इनको अपने यहां बुझालेपाया और वहां इन्होंने शिक्षा पाई। जब दशरथजीने रामचंद्रको पुत्रपुत्रजनिपत करनेका विचार किया तो रानीकेकईने हठ धरके भरतको युवराज तथा रामचंद्रको धन वासका हुकम दिखवाया। दशरथजीके रामवियोगमें देहत्याग देनेपर राजपुरोहित वसिष्ठजीने भरतजीको ननिहाएसे बुलाया। भयोप्या पहुँच भरतजीने पिताकी भन्तेष्टि किया की और माताको उसके कर्तव्यपर धियाए तथा कुवाच्य कहे, यथा सु० कृ० रामायणे—

दो०—हंस वंश दशरथ जनक । रामैलपणसे भाइ ॥

जननी तू जननी भई । विधिचौं कहा बिसार ॥

पिताके भादके बाद भरतजी सबलोगोंको साथसे रामजीके छोड़नेकी गये परंतु रामजीने १४ वर्ष व्रतवासी होनेके पहिले छोड़नेसे इनकारकिया और भरतजीको समझाकर राज्यकी देखभालके लिये भयोप्याकी वापिसभेजा। जब रामजी धनवाससे छोटे तो भरतजीने रामपाट धनको सौंपादिया, रामजीने राज्यसिंहासनपर बैठकर जिसदेशका प्रबंध भरतजीको सौंपाया यह देश भरत खण्ड नामसे अथवाक प्रसिद्ध है। रामायणादि ग्रंथोंको देख भरतजीके सदाग्रण के विषयमें यही वृत्त पताहै कि "न भूतो न भविष्यति"। रामजीने स्वयं उनकी प्रशंसा कीहै यथा सु० कृ० रामायणे—

सौ०—जो न होत जग जन्म भरतबो। सनद्धधर्मधुर धरति धरतको ॥

भरतजीने अपने निष्कपटमेम, मूर्खलगम्भीर स्वभाव तथा सद्गुणोंके लिये अपनी माताके पहिले कर्तव्यकर्ता काहोवको अपने परिवार तथा प्रताप विसर्गसे धोकर निरहोषित किया, इनमें सांसारिक सुखासे मंत्र तथा राजमद और स्वायंका देशमात्रमी नया, यह सब योश से और धनुर्विद्याम विपुलये। रामयनवासये बाद भरतजीने अपनी मातासे कभी बात नहींकी यथा सु० कृ० रामायणे गीतावली—

धेकेइ जयलौ जियतरही । भरत भूट सुप ससुप बुड बपट्ट न यदी ॥

भरतजीके मामुं केकपट्टके राजा सुधाजितये धार्पना करनपर महाराज राम चंद्रने गंधर्वाका देन विजय करनेके लिये भरतजीको भेजा और हुकम दिया कि पेशवाधीनमी मद्रु पहुँचाने। भरतजीने गंधर्वाको परास्त करके उनका सर्वप्रदेश जो सिन्धसे पन्धारण या छीत्रदिया और महाराजकी मातलुसार निज पुत्र तथाको सिन्धदेशपर राज्य देकर इनके लिये तसगिया (Taxia) नाम कागरी बसा। दूसरे पुत्र पुत्रणको गणार (वणार) देशना राज देकर

पुष्कलावतनामकपुरी उनके लिये बसादी । फिर कईवर्षतक उस देशमें रहकर भरतजीने निज पुत्रांका राज्य पुष्ट किया, पश्चात् भयोष्याको छोट भाये ।

भरत चंद्रवर्षी—यह महाराजा दुष्यंतके पुत्र शकुन्तलाके गर्भसे जन्मेधे यह बड़े पराक्रमी मरेश थे, इसदेशका नाम भारतवर्ष इन्हींके सम्बन्धसे पड़ा इनकी ९ वीं पीढ़ीमें कौरव पांडवद्वय ।

भरत—इसनामके एक विद्वान्ने प्राचीनसमयमें होकर “नाट्य “शास्त्र” रचाया जो अबभी मिलता है ।

भर्तृहरि (नीत्यादिशतकत्रयके कर्ता)—इन्के पिता गंधर्व सेनको धारानगरीके राजाकी कन्या विवाहीणी जिसके गर्भसे विक्रमादित्य का जन्म हुआ, भर्तृहरिने गंधर्वसेनके वीर्यसे धारानरेशकी एक दासीके उदरमें गर्भधारण कियाया । धारानरेशके कोई पुत्र नहींथा इसलिये उसने इन दोनों लड़कोंका पावन पोषण किया और अनेकशास्त्रोंकी शिक्षा दिलाई । जब यह लड़के पुत्रावस्थाको प्राप्तहुये तौ धारानरेशने अपनेको अत्यंत वृद्ध समझ राजपाटका भार विक्रमादित्यको सौंपना चाहा लेकिन उन्होंने कहाकि “ बड़े भाई भर्तृहरिके होतेहुये हमको राज्य सिंहासनपर बैठना उचित नहींहै एवं हम उनका मंत्रित्व करेंगे” । यह सुन धारानरेशने भर्तृहरिको राज्य सौंपा और विक्रमादित्यको मंत्रीके पदपर नियुक्तकिया लेकिन भर्तृहरि अत्यंत विद्वान् होनेपरभी ऐसे स्त्रणये कि, बहामिंश रनिवासमें रहकर राजकाजकी ओर कुछ ध्यान नहीं देतेये । इनके दो रामिमें थीं, एकका नाम पिंगला और दूसरीका अनङ्गसेना था, पिंगला पतिव्रता थी, और अनङ्गसेना दुश्चरित्रवाली थी लेकिन रामाको यह हाल विदित नहींथा एवं वह दोनोंको अत्यंत प्रेमकर्ताया । एक दिन रामाने शिकारसे छोटकर किसी स्त्रीकी तारोंफकी जिसको उसने खी होते देखाया, पिंगलाने यह सुनकर कहाकि पतिव्रता स्त्री तौ पतिकी मृत्युकी खबर सुनतेही प्राण त्यागदेतीहैं, लेकिन रामाको इसबातका विग्यास नहीं हुआ निदान परीक्षाकरणार्थ उसने एकदिन कईकर्म चारियोंके द्वारा रक्तमें मिगोकर अपने कपड़े रानाके पास भेजदिये और कहलामेना कि “ राजाको शरने खालिया” । पिंगलाने इसखबरके सुनतेही प्राण त्यागदिये । रामाने जब भवनपर भाकर हाळ सुना तौ अत्यंत शोकात्तर हुआ लेकिन इसचरित्रसे उसकी प्रेम दूसरीरानी अनङ्गसेनाकी तरफ दुगणा होगया क्याकि दोनोंकी जगह अब एकही रानी रहगईयी जो अपनेको परम पतिव्रता बतलाकर रामाको निरंतर भरमातीरहिती थी । निदान राजा उसके प्रेममें सुगन्धहोकर पतिलेकी अपेक्षा अधिक राजकाजकी तरफसे बेपरवाई धरने लगा । यह देख विक्रमादित्यने राजाको कई बफे सचेतकिया एकिन उसने

कुछ न सुना और रानीकी क्रमबना मान उसको अपने पास बुलानाभी बंद कर दिया। इस प्रकार अपमानित हो विक्रमादित्य देशेदेशान्तरोंमें भ्रमण करने लगे, इसके कई वर्ष बाद किसी योगीने राजाको एक भमरफळ खाकर दिया, राजाने वह फळ अपनी प्यारीरानीके हाथ रखवा, रानी किसी भावों धर्म चारेसे फसोहुइसी एक उसने वह फळ उसको दे दिया, उक्तवमचारीका भ्रम एक बेरयापर था निदान वह भूल्य फळ उस बेरयाके पास पहुँचा, बेरयाने सोचा कि, इतनीही उम्रमें मैंने क्या थोड़ा पार किया है जो भमरफळ खाऊँ निदान घनमात्र करनेकी इच्छासे बेरयाने वह फळ राजाभद्रहरिको जाकर दिया रामाने फळको देखकर अनुसन्धानकरना शुरू किया, रानीपगलाने इस सबके सुनतेही भयसे मारे कोठेपरसे कूदकर देह त्याग दी। यह सब विषापरिच देख कर राजाके चित्तमें वैराग्यका उद्भय हुआ निदान उसने भमरफळ खा लिया और राजवाट छोड़ बनको चला दिया। यह समाचार पापधिकमादित्य भाये और राम्याँसहासतपर बैठे। निम्नस्थग्रंथ भद्रहरिकृत है -

नीरयादेशतयत्रय, वाक्पमदीप, पातश्रद्धमणीत महाभाष्यपर सेतु नामक टीका। माण्ड्य होता है कि, ये ग्रंथ महाराजभठहारने योगकी हासतमें लिखे थे।

भायनकाधि-इनका भसलों नाम भगनों मसाद था। मैराधों जिहा घनायके रहने बाल्ये और प्राय वि स १८९१ म जन्मेये। वापगिरो, मणि (काश्य घल्पद्रम) इर्हीका रचाहुभाद, इस ग्रंथमें विद्गळ, भद्रहार नायकाभेद, धृती, नवरस, पशुमनु इत्यादिक सबभद्रोका घणन है।

भागीरथ (सूर्य्यवशीनरेश)-निजपिताराजा दिल्लीके बाद रा गया मानहुये। इन्होंने गंगोत्रके समीप हिमालय पयतम स्थित भद्रुष्ट दिमा रागिसे निवृत्ते हुये जलको, जिसके मयादरूप होनेपर तिसीदिन भारतकी सद्मरा पस्तिपाके नष्टहो जानेका भय निश्चय होता था वाष्पुगियाकी मयूर युक्तियोंके द्वारा गोमुखासे निकाला और प्राय १५०० मीलपर्यन्त पहिँचें सुदगावर तैयार कराई हुई महिरम पहापर बंगालकी राकोंमें मिला दिया। भागीरथके इसगर्गस हजारों परितप कृपकर मरनेकी अथाहमापुष पचगई और भारतके अलमिय मजगणको नशानपोने. गीतमीचने. मजबदानी

एकबर्फके ढेरसे, जो सांगेरखटकी अपेक्षा भाकाशकी समान अगम्य उचाई पर स्थित है, लगभग २५ फीट चौड़ी तथा २ । ३ फीट गहिरा गंगा निकली है ।

भावमिश्र (वैद्य)—विस्सन साहसके मतानुसार यह वि सं की १६ वीं शताब्दीमें काशीमें हुये । इनके रचे " भावमकाश " में चोपन्थीनी, फिरङ्गरोग भादि कई नवीन विषय अधिक लिखे हैं जिनका पता मार्धान ग्रंथोंमें नहीं है । इनके पिताका नाम छटकनमिश्र था ।

भारतीचंद्र (बुन्देलखण्डके राजा)—यह मधुकर साहिके पुत्रये (सो देखो) ।

भारद्वाज—ये मुनिराज प्रयागम रहतेथे । रामचंद्र महाराज बना थासकी जाते समय तथा वहासे छोटते समय भाभमपर जाकर इनसे मिले थे । यह बड़े विद्वानी थे । इनका गोत्र प्रचलित है ।

भारवि (महाकाव्यकिराताऽर्जुनीयके कर्ता)—इनका रचा महाकाव्य अर्धगाम्भीर्यमें सम्पूर्ण काव्यसे शिरोमणि है, मसिद्ध है कि " भारवेर्यगौरवम् " । ये वि सं की पांचवी व छठी शताब्दीके बीचमें हुये ।

भास्कराचार्य (गणकचक्र चूड़ामाणि)—ये शांदिष्यगोत्रोत्पन्न महेश्वर उपाध्यायके पुत्र स ई १११४की साल बीजापुरमें उत्पन्न हुयेथे । निम्नस्थ पुस्तक इनकी रचीहुई हैं—छीलावती, गणिताध्याय, गोळारथाय, बीजगणीत, सिद्धांतशिरोमणि, कूर्णकुतूहल, ब्रह्मसुल्य और सर्वतोभद्रयत्न । " स्वयंघट्ट " नाम कचड़ी जलके बलसे खलनेवाली इन्हींने बनाईथी जिसका वृत्तान्त गोळारथायमें है । इनकेरचे ग्रंथोंके देखनेसे ज्ञात होताहै कि, ये बड़े भारी व्याकरणीहोकर सर्वज्ञासोंके ज्ञाताथे । सिद्धांतशिरोमणिमें इन्होंने ज्योतिष, मङ्गगणित तथा धीज गणितके वे सब गूढरहस्य अन्वेषणकरके लिखे हैं जो फिरङ्गी विद्वानोंको स० ई० की १७ वीं शताब्दीसे पहले महीं मालूमहुये । यह दृष्टेही भी गयेथे, इस उपरक वृत्तांत रोमकासिद्धांतमें लिखाहै । ७० वर्षकी उम्रमें मरे, कोई पुत्र नहीं रखतेथे केवल छीलावती एक कन्याथी सो वह भी कुंवारीही खलवसीथी । कहिते हैं कि एक दिन जब भास्करजी अपने मकानकी छिड़कीमें बैठे हुयेथे तब एक सागर्व चनेवाली डकियामें सोये तथा चूकेका सागरकसे हुये यह आवाज रगती हुई निकली कि " सोया चूका " । यह सुन इन्होंने सिद्धांत किया कि, सोनेसे भादमी चूकताहै और उची दिनसे सोना त्याग दिया, राविभर तारागणोंको निखारकरतेथे ।

भास्करानन्दस्वामी (जीवनमुक्त)—ये मैथीलाछपुर जिल्लाकान पुरम मिसरीलाछ का पकुधम ब्राह्मणके घर स० ई० १८२३ में जन्मेथे । माता

इसदफेभी ब्राह्मणको पहिलेहीकी तरह छोटनापढ़ा, तबतो राजाने १ दशमना और १० हाथी देनेका हुकम लिखकर ब्राह्मणको दे दिया, हुकमके देखतेही ब्राह्मणकारीने तामीळकी और लिख दिया कि-

श्लो०-इहं लक्षं पुनर्लक्षं दत्ताम् ददा दन्तिन ।

दत्ता अभोजराजेन आनुद्वर्षं प्रभाषिणे ॥

भारतम भोजके समान दानशालि, विद्योसाही, गुणग्राही केवळ २ । १ ई नरेश हुयेहैं, डाफटरराजद्रच्छाल मिषके मतानुसार भोजका राजकाळ स ई १०६१ से १०८१ तक सिद्धहै । कविनरपतनालहने भोजकी राजकुंवारी राजमती के अजमेरनरेशवीरलदेवके विवाहका मृतांत "वीरदेवराघौ" नामककर्म लिखाहै जिससे यहभी सिद्धहोताहै कि, भोजका राज्य मालवाके छेकर कर्णेणमें लंकातक था और गौड़देश (बंगाल) तकके आधीनहोकर खंभर टों गड़मंडळ, विसौड़ तथा अयाप्याये राज इनकी रक्षामें थे । राजधानी कुमराजे १ मीलके फासिलेपर भोजके बसाये भोजपुरके खण्डेर भषतय पड़ेहैं भोज शहर भोपाल भी राजा भोजहीका बसापाहुभाहै तथा चर्हाका भोपालतक उनहीका सुदवापाहुभाहै, भोपाल अपभ्रंशहै भोजपालका । निम्नस्थ भोजकृतहैं-

यामथेनुम्पुतिसप्रह, भोजचम्पू, सरस्वतीविधाभरण, राजमार्तण्ड, देशम्पवत विक्रमचरित, पातश्रद्धयोग सुप्रवृत्ति और करणमगावि । भोजके अन्तसमय कर्णेण दाखने निम्नस्थ श्लोक रखा-

श्लोक०-अधपाय निरपारा निरालया सरस्वती ।

पदिता र्वदिता स्वयं भोजराजे दिवगते ॥

मोरुमलकछवाहै-वेणोविदायिमल ।

मकरद्वयोतिपी (मकरद्वारिणीकेरखाविता)-य कारीपारी ब्राह्मण वि० सं० १४३० म जन्मे । इ हाने सूर्योत्थिताके आधारपर ताशगर्नीकी पत्ररिणी पत्रापी जिसके आधारपर वर्तमान फालके पंडित पत्राह बनातेहैं ।

मगेस्विनिज-(Megasthenes)-य इ खिरिया (शास) के राजा से कसवा राजवृत्त मगधनरेश चन्द्रगुप्तके दरबारमें ३०६ सप ५० ख० ई० से ५५० स० ई० तक रदाया । इसने इबतानीभाषामें एक ग्रंथरखा है जि पदनेके दिशोन्तातकी दशा जो अस्समयम थी स्पष्ट ज्ञात होजतीहै । इका का अनुपाद अवेनीमें भी लोगयाते ।

महककवि-ये संस्कृतकवि वि० सं० की १३ वीं शताब्दीम हुए । ये के रहिनेवाले थे , श्रीकण्ठचरित्र नामके इनका रखा काव्य अत्युद्धि । इनके अन्त शब्दकोषभी इहंमि बनायाया ।

मङ्गलसिंह (महाराजा, खवाई, सरमङ्गलसिंह बहादुर, जी० सी० एस० आइ०)—स० ई० १८७४ में महाराजशिवदानसिंहजीके बाद मल्हवरकी गद्दीपर बैठे । रियासतमें आपके समयमें अनेकसड़कें और इमारतें बनाई गईं, शिक्षाविभागकी उन्नति हुई । आपके वक्तमें १०० स्कूल लड़कोंके लिये और १७ लड़कियोंके लिये राज्यभरमें थे । राज्यकोषसे खर्चदेकर आप अनेकोंको आगरा मेडिकेल् कालिजमें डाक्टरी शिक्षापानेके लिये भेजते थे, छोटी डफरिनफण्डमें भी आपने ५० हजाररुपया खन्दा दियाया, आप बड़े प्रजाहितैषी थे और बृटिशगवर्नमेंटभी आपसे अत्यंत प्रसन्न थी । राजधानी मल्हवरमें आपने एक उत्तम न्यायालय बनवाया था और बृटिशसेनाके आप अवैतनिक लापेटनेन्ट कर्नल थे । आपके राज्यका विस्तार ३०२४ वर्गमीलथा जिसमें प्राय ६ लाख ८३ हजार मनुष्य बसते थे । आपके समयके रूपयेपर आपका नाम फार्सिमें अंकित है । स० ई० १८९२ में आपका देवलाकहूमा और महाराजा खवाई सर जयासिंह बहादुर गद्दीपर बैठे ।

मण्डनकवि— बुंदेलखण्ड प्रदेशान्तगत जैतपुरकेवासी थे, भाषा कविता अच्छीकरते थे । रसरत्नाशली, रसविलास और नयनपन्नासा इनके बनाये ग्रंथ भाषापर अचछे हैं । राजा मारदसिंह बुंदेलाके दरबारमें इनका सत्कार होता था । वि० सं० १७१६ में विद्यमान थे ।

मण्डनमिश्र (कर्ममीमांसा पंडित)—इनके पिता रेधानदीके किनारे माहिष्मती (मैसौर)के रहनेवाले हिममिश्र नामक ब्राह्मण बड़े विद्वान पंडित थे । इनका असली नाम विंशरूपया लोकित अनेकस्थानोंपर इन्होंने बौद्धमतका खण्डन तथा वेदका मण्डन कियाया इसलिये इनका नाम मण्डनमिश्र पड़गया था । प्रयागनिवासी प्रसिद्ध पंडित कुमारिलभट्टसे इन्होंने शिक्षा प्राप्तकी थी । इनका विवाह विष्णुमित्रनामक एकधार्मिक तथा कर्मप्रब्राह्मणकी कन्या कीलासे हुआ था । कीला बहीमारी पंडितायी और इसीलिये उसको सरस्वती कहते थे । मण्डनमिश्रने हिंदोस्थानके सब बड़े ३ पंडिताको शास्त्रार्थमें परास्त करदिया था । स्वा० शूर्याचार्यसे पं० कुमारिलभट्टने स्वयं कहाथा कि, यदि तुम मण्डनमिश्रको परास्तकरसकोगे तो और सब पंडित परास्तके मुत्प होजायेंगे । मण्डनमिश्रके घरकी वासिंयंतक विदुषी थी । शास्त्रस्वाभीने उनके स्थानपर पहुंचकर दासियोंसे पूछा कि, क्या मण्डनमिश्रकी हथेली येह है ? उत्तरमें दासियोंने निम्नस्य श्लोकपढ़ा—

श्लो० स्वतः प्रमाण परतः प्रमाणं शुकाङ्गनापन्न गिरो गुणन्ति ।

शिष्योपशिष्यैरुपगम्यमानेभवेद्दि तन्मण्डनमिश्रधाम ॥

शास्त्रार्थमें शङ्करस्वामीने मण्डनमिश्र और उनकी स्त्रीसीताबो परास्त करके
 हीछाने सुरन्त देहत्यागदी और मण्डनमिश्र शङ्करस्वामीके शिष्यत्वर को
 श्वराचार्यनामसे प्रसिद्धहुये । सुरेश्वराचार्य आदिशङ्करके शिष्योंने कृष्ण
 शमे शैव, पाशुपत्य गाणपत्य, तथा शाक्त मतया दियोको शास्त्रार्थमें परास्त किया
 और उनको उपदेशकियाथा कि सबदेवता परमेश्वरके भंशहै उनको भवेदुहिते
 पूजना चाहिये । दक्षिणदेशमें अद्यतक स्मातलोग अविषतासेहैं । "त्रिकाण्डम-
 ण्डन" नामक ग्रंथ मण्डनमिश्रदीक्षाधनायाहुभाहै ।

मतिरामत्रिपाठी (भाषाकवि) - ये टिकमापुर जि० मानपुरके पा
 खी का पञ्चम्राज्यण स० १० १६५० तथा १६८२ के बीच विद्यमानपे ।
 बहुवदिनातक पुमारुनरेश उद्योतचंद्र तथा फोटापूर्वी मरेण रायभाऊसिंह
 और शभुनाय मुलकी इत्यादि के दरबारमें रहनेके पमानु मुगलसम्राट्
 औरंगजेबके दरबारके कवीश्वरोंमें नौकर होगये और अन्तसमपताक
 वर्द्धारहे । ललितललाम नामक अलङ्कारग्रंथ इन्होंने रायभाऊसिंहके नामसे
 और छद्मर पिगलफतेशाहमुद्दला भिनगरयाहेंके नामसे रखाया । नापका
 भेदमें इनका बनाया "रसरान" अत्युत्तमहै । प्रसिद्धभाषावाये भूषणादिना
 ठी इनके छोटे भाईये ।

मदनमोहन मालवीय (देशद्वितीय) - ये पद्धितजी प्रयागके राँ
 नेयाल गौड ब्राह्मण है । आपके गृह्यसाधु पितामी प्रतिष्ठित पंडित होर
 अभो विद्यमान हैं । आपने अंग्रेजोंमें बी० ए० तथा एल एल बी ए
 उच्च परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीहैं जेकिन आपकी लिखाऊत कहीं पाकरदि
 संस्कृत विद्यामें भी आप मया विद्वान् हैं और मातृभाषा हिंदीमें आप
 अनन्य भक्त हैं । पहिले कईवपतक हिंदीमें दैनिक पत्र "हिंदुस्थान" का
 जिसको बालाबदूरसे राजा रामपालसिंह प्रकाशित करते हैं आपने बर्त
 पोष्यतामें सम्पादन किया था परन्तु आपने भाजन पढ़कर पत्र पढ़
 की थी परीक्षा उत्तीर्ण की और तपसे प्रयाग हाईकोर्टमें बसाऊत कार्य
 हैं । मौखिक भाषाकी भाषकी दो द्वाार रूपव मासिक होती । देशमें
 नया वैदुस्थाने लिये जितने भाष्योक्त इस मान्तम होत है उनमें सबसे
 पहिले आप बद्धम बहालहैं । गयमेंमन्त्रने भाषकीके उद्योगसे इस भाषा
 स्कूलमें शिक्षासम्बधी अनेक पाठोंका सुधार करके छात्रोंके लिये ब
 सुभीता कर दियाहै । हाईकोर्टमें जजोंके मिश्रर मालुभाषा हिंदी
 पुषार लिपिनेगट गयनर सर मेन्टोनी भिरदानेके पानतक पहुँचानेके ल
 उपकारण भाषकी है उस अवसरपर ६ महीनेमें अविष्ट बहालत हो
 कर आपने देशरशांतयमें अमग करत अपने विद्यार्थीको सुदिने दि

करोड़ों मनुष्योंको सचिव किया था । आपका परिश्रम सफल हुआ, गवर्नर मन्टकोभी न्यायकरनेका साहस हुआ और न्यायालयोंके कागजोंमें नागरी अक्षरोंके व्यवहार करनेका हुकम इतना सहित पासकरीदिया गया । आपकी सकृता हृदयग्राहिणी होती है, नेशनल कांग्रेसके आप मुखियाओंमेंसे हैं और आपकी बाल दाह, रहिन साहिन, खान पान सब ब्राह्मणोंकासाहै । भाग कलके विद्वानों तथा देशहितैषियोंका सरमौर आपको कहना सर्वथा उचित है । आपसे देशहितैषियोंकाजीवन सायंकहै और पवित्र है यह कु क्षाजिसमें आप सरीखे नरसिंह पुत्रने गर्भ धारणाकिया ।

मदनमोहनसूर-देखो सरदास मदन मोहन ।

मदार-दखो शाहमदार ।

मधुकर साहि (बुंदेल खण्डके राजा)-इनके पिता रुद्रप्रतापके १२ बेटे थे । रुद्रप्रतापको आखेटका बड़ा व्यसन था और इसी में स० इ० १५११ की साल उनकी जान गई । शहिर उड़ला उन्हीका बसाया हुआ है । रुद्रप्रतापके बाद उनके श्येष्ठ पुत्र भारती चंद गद्दीपर बैठे । भारती-चंदके वक्तमें राज्य वृद्धि बहुत कुछ हुई, वार्षिक आय प्राय दो करोड़ रुपये केपी और क्षेत्राह (स० इ० १५४२-१५४५) ने बुंदेलखण्डजीतना चाहा था पर कृतकार्य नहोसकया । भारतीचंद्रके अपुत्रसिधारने पर स० इ० १५४२ में मधुकरसाहि गद्दीपरबैठे । इनक समयमें अकबरने कईदके बुंदेलखण्ड छेकेकेका उद्योग किया, कभी मुसल्मान जीते और कभी बुंदेले । अंतको स० इ० १५८४ का साल अकबरकाबेटा मुराद बड़ीसेना लेकर चढ़ाया लेकिन मधुकरसाहिषी धोरसाखे प्रसन्नहोकर जीताहुआ मुल्क फिर वापिस कर दिया । मधुकरसाहिके पीछे उनके अशका राज्य केवल मोड़छेमें रहा क्योंकि राजारुद्रप्रतापने महोबेका राज्य अपने तृतीय पुत्र उदयाजीसको देदिया था जिससे महोबेकाअंश अलगहोगया ।

मधुकरसाहिके बाद उनके दो पुत्र इन्द्रभीमसिंह तथा धीरसिंहदेवने क्रमशः मोड़छेमें राज्यकिया । स० इ० १६११ में कविकेशवदासने मधुकर साहि के कहनेसे धीरसिंहदेवके छिये " विज्ञानगीता " नामक ग्रंथरचकर इलाज पायाथा । इन्द्रजीतने राजाहोकर शहिर इटावा बसाया, धीरजनरैजनामसे कविताकी और कविकेशवदासकी कविता पर रीझकर २१ गाव उनको स इत्यकरदिये । प्रसिद्धकविमधीणराय पातुरीभी इन्द्रजीतहिके दरबारमेंथी । धीरसिंहदेवने झांसीका शहिर बसाया और मधुरामें एक बड़ाभारी मंदिर केअब देवजी का बनवाया जिसको औरंगजेबने खूबयादाळा । दक्ष मंदिर शहिर

शास्त्रार्थमें शङ्करस्वामीने मण्डनमिश्र और उनकी स्त्री श्रीलावो परास्त करके पालीछाने तुरन्त देहत्यागकी और मण्डनमिश्र शङ्करस्वामीके शिष्यहोकर सुरेश्वरान्वयनामसे प्रसिद्ध हुये । सुरेश्वरान्वय भादिशङ्करके शिष्योंने दक्षिणदेशमें शैव, पाशुपत्य गाणपत्य, तथा शाक्त मतवा दीर्घांको शास्त्रार्थमें परास्त किया और उनकी उपदेशकियाया कि सबदेवता परमेश्वरके भंशहैं उनकी भवेदनुक्तिसे पूजना चाहिये । दक्षिणदेशमें अघतक स्मातलोग अधिकतासेहैं । "विक्रान्तमण्डन" नामक ग्रंथ मण्डनमिश्रकी बनायाहुआहै ।

मतिरामत्रिपाठी (भाषाकवि) - ये टिकमापुर जि० कानपुरके वासी कायकुञ्जब्राह्मण स० ई० १६५० तथा १६८२ के बीच विद्यमानये । बहुतदिनातक कुमायुनरेश उद्योतचंद्र तथा कौटुंबिकी मरेश रावभाऊसिंह और शम्भुनाथ सुळकी इत्यादि के दरबारमें रहनेके पश्चात् मुगलसम्राट् औरंगजेबके दरबारके कवीश्वरोंमें नौकर होगयेये और अतसमयतय वर्द्धिरहे । लालसल्लाम नामक मल्लहारघष इन्होंने रावभाऊसिंहये नामसे और छत्रसार विंगलकतेशाहबुदला अनिगरवालेके नामसे रखाया । नायक भेदमें इनका बनाया "रघुराज" अत्युत्तमहै । प्रसिद्धभाषाकवि भूषणत्रिपाठी इनके छोटे भाईये ।

हायके घर वै० शु० ४ वि० सं० १९२१को पं०महावीरप्रसादका जन्म हुआ । आप अंग्रेजों, हिंदी, संस्कृत, उर्दू, फार्सी, बंगला इत्यादि भाषाओंके ज्ञाता हैं, कुछ दिनोंतक पहिले राजपुताना-भाषाके लेखके डिस्ट्रिक्ट सुपरिन्टेन्डेन्टके पदपरमें फार्क भी रहि चुके हैं। पश्चात् स्वतंत्रजीवन व्यतीत करनेकी इच्छासे नौकरी छोड़ फार्सीमें बस रहे और सरस्वतीनामक मासिक पत्रिका हिंदीमें सम्पादन करने लगे जो आजकल जारी है और प्रतिष्ठित देशी समाचारपत्रोंमें गिनी जाती है। आपके गद्यलेखोंसे उत्तम होते हैं वैसेही पद्यभी । आप आजकलके ठमप्रसिद्ध कवियोंमें हैं जो खड़ीबोलीकी कविताका प्रचारकर रहे हैं। आपकी कवितामें केवल रस ही नहीं है धरनूशक्ति भी है। संस्कृत श्लोक भी आपके वनाये अच्छे हैं । प्रसिद्ध तथा माकूल पुरुषोंमें आपकी गणना की जाती है। भामिनीविद्यास, कुमारसम्भव, गंगाछहरी, यमुनाछहरी, महिस्रस्तोत्रका प्रभाव आपने भाषापद्यमें किया है । अनेक और ग्रन्थ भी गद्यपद्यमें आपके रचे हुए हैं । २८ अगस्त सन् १९०२ तककी रची हुई आपकी फुटकर कविताका संग्रह भी "काव्यमंजूषा" नामसे छप गया है ।

महावीरस्वामी (जनियोंके २४ वें अर्थात् अन्तिमतीर्थकर) — ये महारमाश्रमके समसामयके और उनके पीछेतक जीते रहेये । इनके बाप मगधनेरुशने मकानाम सिद्धार्थरक्ष्याया और महावीरकी उपाधि इनको दी थी । माता पेशाके बाद ३० वर्षकी उम्रमें बड़े भाई नन्दीवर्द्धनको रामपाटखोंप इन्होंने कुछ दिनोंतक वीथीमें भ्रमण किया और १२ वर्षतक ऋजुवाकनदके तीर चेतपका प्रकरनेका साधनके जिनत्वको प्राप्त हुये । पश्चात् जैनधर्मका उपदेश करते हुये देशदेशान्तरोंमें विचरना शुरू किया और अपने अनेक शिष्योंको घर उधर उपदेश करनेके लिये भेजा । मुख्यशिष्य इनके ११ ये जो गणधर कहलाते हैं । इनके धर्मउपदेशोंसे सुग्ध होकर १ लक्ष श्रावक (गृहस्थजैन) और १४ हजार भ्रमण (विरक्तजैन) होगये । महावीर स्वामी वर्षके ८ महीने उपदेश करते विचरते थे और बर्सातके ४ महीने किसी नगरमें निवास करते थे । ७२ वर्षकी उम्रमें ५२७ वर्ष पू० सं० ई० कार्तिक शु० ३० स्वाति नक्षत्रमें उपकाळ इनका देहांत हुआ । इन्होंने कोई ग्रंथ नहीं बनाया लेकिन इनके शिष्योंने इनके उपदेशोंको एकत्र करके अनेक ग्रंथ रचलिये जिनको जैनलोग भागम कहिते हैं । वर्द्धमानगुरु, जैनस्वामी, जैनशुद्ध तथा निर्ग्रयनाथ भी इनके नाम हैं ।

महिमूदगज़नवी — गजनीके बादशाह नासरुद्दीन मुवत्तर्गाँवे घर स० १०९६७ में पैदा हुआ और स० ६० ९९७ में तख्तपर बैठा । इसने ३३ वर्षके राज्य कालमें अपने छोटेसे राज्यको पश्चिमम ईरानतक और पूर्वमें पंजाबतक

मुल्करजी राव हुस्करको गद्दी दिखवाई । मुल्करजीके बाद तुळोजी राव हुस्कर राजा हुये जिनके पुत्र महाराज शिवाजी राव हुस्कर स० ई० १९०३ में राजसत्ता अपने बालक पुत्रको खोप धनको पधारे ।

मलिक सुहम्मद जायसी (भापाकाव्य पद्मावतके कता) - ये पद्मावत नामा साधू अवध प्रदेशान्तर्गत जैस नामक ग्रामके वासी थे । जैस मानस "अवध बहेल खण्ड रेल्वे" का एक स्टेशन है और बनारससे प्रायः १२१ मील दूर है । अमेठी (मुलतानपुर) के राजाका प्रथम पुत्र इनकी दुमासे हुआ, पर राजाने अमेठी गढ़के साम्हने इनकी कबर बनवादी थी जो अबतक विद्यमान है । स० ई० १५४० में पद्मावत इन्होंने सम्पूर्ण किया । ग्रिमर्सन खादिब इनकी कविताकी बड़ी प्रशंसा अपने ग्रंथमें करते हैं । इनके उस्ताद अशरफ् जहाँगीर तथा शेख् इरहाँ थे । शेरशाह सूरी इनका आदर करता था ।

मल्लकदास (प्रसिद्ध महारामा) - ये वर्णके ब्राह्मण प्रयाग प्रदेशान्तर्गत कड़ा मानिकपुरके वासी बड़े सिद्ध पुरुष हुये हैं । वि० सं० १६८५ में इनका जन्म हुआ । एकदफे इनके मित्र मुरारीदास वैष्णवने जो इनके स्थानसे २० कोस पूर्व गगावटखेतये भण्डारा किया परंतु मनुष्य बहुत भाजानेसे सामित्री पूर्ण नहीं हुई । जब मल्लकदासको योगबलसे यह बात मालूम हुई तो उन्होंने एक ठोकेपर मुरारीदासका नाम लिखकर गगाजी में जाकर छोड़दिया और कहा "गंगा! इसे मुरारीदासके पास अभी पहुँचादीजिये, क्योंकि मनुष्य ठोका समयपर नहीं पहुँचासकेगा" । मुरारीदास उससमय अपने घाटपर स्नानकर रहेये, तोटा ठनके पैरमें छगा, जानगयेकि मल्लकदासका भेजाहुआ है और सब साधुओंको भण्डारा तरहे भोजन करा दिया । मल्लकदासजी रामोपासक थे और रामानुजीयसम्प्रदायके महन्त कील्लुजीके प्रधान शिष्यये । इनका एक स्वतंत्रमत प्रचलित है जिसके अनुगामी दजारा हैं । पृथ्वीदायनमें धेन्नीपाटपर इनकी सम्प्रदायकी मूल्य गद्दी है जिसके अबतक महन्तलोग हैं । मल्लकदासने दूर २ तीथायी यात्रा की थी, गगावटपुरीमें महाराजके भोगके साथ इनके नामका रोटीका टुकड़ा प्रत्येक धत्रीको अबतक देता है । अनेक फुटकर पद और दशरत्न तथा हानबोधनामक ग्रंथ इन्होंने रचये हैं । वि० सं० १७६९ में परलोकगामी हुये । निम्नस्थ प्रसिद्ध दोहा इन्हींका है -

दो०-अजगरकॉनचाकटी, पक्षीरूँ न याम ।

दासमल्लकापदिगये, सबरेदाताराम ॥

महावीरमसादद्विवेदी (भाषा पवि) - शैलतपुर ग्राम जि० रायसेलीमें सुरसपीठत कान्यकुब्ज पंडित इन्मत्त द्विपदीरहितये, जिनके मुत्त वं०

हायके घर वै० शु० ४ वि० सं० १९२१को पं०महावीरप्रसादका जन्म हुआ । आप अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, उर्दू, फार्सी, बंगला इत्यादि भाषाओंके ज्ञाता हैं, कुछदिनोंतक पहिले राजपुताना-मालवा रेलवेके डिस्ट्रिक्टसुपरिन्टेन्डेन्टकेदफ्तरमें क्लार्क भी रह चुके हैं । पश्चात्स्वतंत्रजीवन व्यतीतकरनेकी इच्छासे नौकरीछोड़ झांसीमें बस रहे और सरस्वतीनामकमासिक पत्रिका हिंदीमें सम्पादनकरने लगे जो आजकल जारी है और प्रतिष्ठितदेशीयमाचारपत्रोंमें गिनी जाती है । आपके गद्यलेख असेवत्तम होते हैं वैसेही पद्यभी । आप आजकलके ठनपसिद्ध कवियोंमें हैं जो कहीं कहीं कविताका प्रचारकर रहे हैं । आपकी कवितामें केवलरसही नहीं है वरन् शक्ति भी है । संस्कृत श्लोक भी आपके घनाये अच्छे हैं । प्रसिद्ध तथा माकूळ पुरुषोंमें आपकी गणना की जाती है । भामिनीविद्यास, कुमारसम्भव, गंगालहरी, यमुनालहरी, महिम्नस्तोत्रकाम-मुवादा आपने भाषापद्यमें किया है । अनेक और ग्रंथ भी गद्यपद्यमें आपके रचे हुए हैं । २८ अगस्त सन् १९०२ तककी रची हुई आपकी फुटकरकविताका संग्रह भी "काव्यमं शुधा" नामसे छप गया है ।

महावीरस्वामी (जनियोंके २४ वें अर्थात् अन्तिमतीर्थकर) - ये महारामाबुद्ध के समसामयक थे और उनके पीछेतक जीते रहे थे । इनके बाप मगधनेशने इनका नाम सिद्धार्थरक्षसाथा और महावीरकी उपाधि इनको दी थी । माता पिताके बाद ३० वर्षकी उम्रमें बड़े । माई नन्दीवर्द्धनको राजपाटसौंप इन्होंने कुछदिनोंतक तीर्थोंमें भ्रमण किया और १९ वर्षतक ऋषुवालयकनदीके तीर चिन्तनका प्रकरनेका साधनकके जिनत्वको प्राप्त हुये । पश्चात् जैनधर्मका उपदेश करते हुये देशदेशान्तरोंमें विचरना शुरू किया और अपने अनेक शिष्योंको इधर उधर उपदेश करनेके लिये भेजा । मुख्यशिष्य इनके ११ थे जो गणधर कहलाते हैं । इनके धर्मउपदेशोंसे मुग्धहोकर १ लक्ष श्रावक (गृहस्थजैन) और १४ हजार भ्रमण (विरक्तजैन) होगये । महावीर स्वामी वर्षके ८ महीने उपदेश करते विचरते थे और सर्वांतके ४ महीने किसी नगरमें निवास करते थे । ७२ वर्षकी उम्रमें ५२७ वर्ष पू० सं० ई० कार्तिक शु० ३० स्वाति नक्षत्रमें उषःकाळ इनका देहांत हुआ । इन्होंने कोई ग्रंथ नहीं बनाया लेकिन इनके विछोने इनके उपदेशोंको एकचकक अनेक ग्रंथ रचलिये जिनको जैनलोग भागम कहते हैं । वर्द्धमानगुरु, जैनस्वामी, जैनगुरु तथा निर्घणनाथ भी इनके नाम हैं ।

महिम्नूदगज्जनघी - गजतीके बादशाह नासरुद्दीन मुघलगीके घर स० ११६७ में पैदा हुआ और स० ई० १९७ में सख्तपर बैठा । इसने ३३ वर्षके राज्य कालमें अपने छोटेसे राज्यको पश्चिमम ईरानतक और पूर्वमें पंजाबतक

फैलाया और १७ हमले हिंदोस्तानपर किये, मिनमेंसे ८ हमले तो केवल पंजाबहीपर हुये। पंजाबका राजा जयपाल तथा उसका पुत्र अनङ्गपाल परास्त होकर मारागया और अनङ्गपालका पुत्र जयपाल द्वितीयभी स० ई० १०२१ में परास्त होगया, इसवेवाद् पंजाबपर महिमुद्दका अधिकार होगया। ११ वीं हमला महिमुद्दने शहिर मथुरापर स० ई० १०१८-१९ में किया, मंदिर मकबरा आदिये, २० दिनतक शहिरको छूटा, १०० उदोंपर लादकर छूटका मकबरा गजनीको भेजा और ५००० से अधिक मनुष्योंको कैदीकैके लेगया। स० ई० १०२६-२७ में १६ वीं हमला सोमनाथ महादेवके मंदिरको खण्डित करके किये गुजरातपर हुआ। राजपूत राजे दलबल सहित देवस्थानकी रक्षाके लिये आठटे, ३ दिनतक घोर युद्ध हुआ जिसमें राजपूत परास्त हुये और महिमुद्दने करोड़ों रूपयेकी जवाहिरात छूटली। पश्चात् महिमुद्दने अपनी राजधानी बनाठ सुधारमें धितलगाया। महिमुद्द छारखीया उसने कवि किर्दोसीको प्रत्येक दोर (दोहा) के बदले १ अशकी देनेका वायदा करके शाहनामा नामक अपने वंशकी सघारिख फार्सी में रचवायी थी लेकिन जब यह बनकर ६५ हजार दोरोंमें तैय्यार हुई तो वायदेके खिलाफ महिमुद्द प्रतिशेर अशकीके बदले रुपया देनेलगा लेकिन कधीश्वरने देनेसे इन्कार किया और महिमुद्दके निन्दापर पथरची (दखोकिर्दोसी)। मत समय महिमुद्दने सभधन, बौलठ, जंजाहरातका अपने साम्हने ढेरलगावाया और अपनी सेना, घोहा, हाथी इत्यादिकोंको अपने साम्हने बुलवाया और उनको देगकर रोया और कहा "हाय इतने घोड़े समयके लिये यह सब बटोराया"। एकदके किसी मनुष्यकी माताने महिमुद्दसे जाकर प्रायना की वि मेरे बेटेको ईरानकी सड़क पर सुटेरके मार डाला है। महिमुद्दने उत्तर दिया कि यह स्थान हमारी राज धानीसे इतनी दूर है कि हम कुछ प्रबंध नहीं करसकते। यह सुन बुटियाने कहा कि यदि प्रबन्ध नहीं हो सकता तो इतना रास्य क्यों बढ़ाया। महिमुद्दने कापलहोकर ईरानकी सड़क पर कारखीवी हिफाजतके लिये गाव्द मुकरर किया और सुटेरको मार करवा दिया।

महेशचंद्र न्यायरत्न, सी आई ई वं० महामहोपाध्याय-स ई १८८५ में महाराष्ट्री विक्टोरिया की जुबिलीके अवसरपर आपको ब्रिटिश गवर्नमेंटने महामहोपाध्यायकी असाधि प्रदानकीपी जिसके प्रभावसे छार्ड साइड र्वारोंमें राजा महाराजाओंके पास कुर्सी मिलती है। संसुख कालिज का कक्षाके मिनिसपेल बहुत दिनों तक रहिकर आपने पेशानपाई है। जो प्रतिष्ठा आपकी भारतकी विद्वान मंडलीमें है यह आपकी पदवी न्यायरत्न प्रकर ही है। तन मत धनसे आपने संसुखविद्याके प्रचारवा हयोग किया अपनी जन्म भूमिके प्रामर्श निज स्वयसे एक इद्द स्कूल खोला है जिस

संस्कृत तथा अंग्रेजी सायरेपढाई जाती है अनेक सङ्घर्षोंमें आपके उद्योगसे आपकी जन्म भूमिके ग्राम तक बतगई हैं । इन सबकामोंके उपलक्षमें बृटिश गवर्नमेंटके सं. ई. १८८१ कीसाल की आई ई की उपाधि आपको दी थी । आपकी जन्म भूमि जिहा हवड़ाके नारित नामक ग्राममें है । आपके पिता हरि नारायण तर्क-सिद्धान्त तथा आपके श्वशुर गुरुप्रसाद तर्कपञ्चानन और ठाकुरदास चूड़ामणि मेखिन्द्र पंडित थे । पंडित महेशचंद्र अनेक प्रतिष्ठित सभाओंके मेम्बर हैं । मन्मटकृत काम्यप्रकाशकी टीका, मीमांसा दर्शन भाष्य, कृष्ण यजुर्वेद भाष्य, मूष्णकटिकनाटककी व्याख्या, दयानन्दकृत वेदभाष्यकी व्याख्या, सुप्तसम्ब-त्सरकी व्याख्या आपने रची हैं । आपके १ पुत्री तथा निम्नस्य तीनपुत्र हैं जिन्होंने बृटिश गवर्नमेंटकी चाकरीमें बड़े २ ऊँचे पद पाये हैं—मन्मथनाथ विद्यारत्न, एम् ए । मुनीन्द्रनाथ महाचार्य, एम ए., बी यल । महीमनाथ महाचार्य, बी ए. ।

स ई १८०३ में प० महेशचंद्रन्यायरत्न विद्यमान हैं ।

महादेव गोविन्द रानडे—देखो रानडे ।

माघ पंडित (शिशुपालवध महाकाव्यके कर्ता)—इनके दादे सुमभदेवजी

गुजरात नरेश धर्मदेवके मंत्री थे और इनके बाप का नाम दसकजी था । माघजी बड़े माघि पंडित हुये, ये श्रीमालपुर (गुजरात) में रहिकर विद्वानों तथा कंगालोंको खूब धन बाँटते थे और बड़े मान्यवर तथा खनाटक कवि थे । धारा नगरीके रामा भोज इनके समकालिक थे परंतु ये विना बुलाये उनके दर्बारमेंभी कभी नहीं गये । भोज इनकी दानकीर्ति सुन कर स्वयं इनसे मिलने एक दूके गया था । माघजीकी जन्मपत्नी में एक ज्योतिषीने लिख दिया था के इस कविको दिन २ अधिक धन प्राप्त होगा, अम्तमें इसके पैरों पर सृजन आवेगी और ये दृष्टिही होजायगा । बहुतकालपाछे माघजीकी जन्म पत्नीमें वरुण हूइ दशा होने लगी और परों तक रहू होगये कि खाने तकको न रहा परंतु भि-सुकोंकी भीड़ उसहालतमेंभी द्वार पर लगीरहितीथी । एकदिन कंगालोंकी भीड़ द्वारपर देख माघने कहा

श्लो०—द्वारिद्वानलसन्ताप शान्ति संतोषधारिणा ।

वीनाशाभङ्गजन्मा नु केनायमुपशाम्यतु ॥

पश्चात् बहुत खुशीहो माघजी धारा नगरीको पधारे और अपनी स्त्रीके हाथ स्वरचित काव्य ग्रंथ राजा भोजके पास भेजा । राजाने पुस्तकको देख ३ छत्र रूपया कविकी स्त्रीको देकर सन्मान सहित विदा किया । जब माघकी स्त्री महिलके दरवानेसे निकली तब राजाके द्वारपाल उसको देख माघ कविकी

बड़ी पत्रांसा करने लगे। माधवी स्त्रीने सब धन उनकी दे दिया और छि
 दाय भरको छोट आई। इससे थोड़ेही दिनों पीछे धारानगरमें माधवी
 का शरीर छूटगया और उनकी स्त्री सती होगई। राजा भोजने दोनोंकी
 अन्त्येष्टि क्रिया की, इससे प्रतीत होताहै कि अपुत्रये। शिशुपालवध निरूप्ये
 माधवी काव्यभी कहिये हैं पञ्च महाकाव्योंमें सर्वोत्तमम है। "काव्येयुमाधवी" का
 उक्ति यथापहो। माधवीकाव्यमें राजनीति आदि विषय बड़ी उत्तमतासे निरूपण किये
 गये हैं। सबतरङ्गके शब्द प्रयोग और भाषा शैलीका परिचान उसके पढ़नेसे हो
 जाता है। एक अनुभवी पंडितका कथन है कि "नवसर्गगतं माधवी बवदश्रो म
 विद्यते"। निम्नस्थ श्लोकसे माधवीकी कविताकी सर्वोत्तमता प्रकट होती है-

श्लो०-उपमा कालिदासस्य भारवेत्पर्यगौरवम्।

'दग्निहन' पदच्छादित्यं माधवी सन्ति त्रयो गुणा ॥

माधवीजी संधिया स०ई०१७५०की साल२०वर्षकी उम्रमें सिंधुपुरकी जा
 गीर इनको निजपिता राजाजीसंधियासे मिलीया। यह बड़े पराक्रमिये निदानहूँ
 ने थोड़ेहीकालमें बहुतसा मुस्कलतकर उजैनको अपनी राजधानी बनाया फिर
 तो दिन२इनका प्रताप बढ़तागया, यहाँतक कि सर्वभारतपर इनका मातृबैठगया
 और यदि चाहते तो सहजहीमें हिंदोस्तानके सम्राट बन बैठते परंतु ऐसा इन्होंने
 कभीनहीं विचार। दिल्लीके मुगल सम्राटशाह आलमने शक्तीहीन होनेके कारण
 इनको अपना वेठावना छियाया और येभी धर्म पगसे न बिगनेवाले मरहटाकी
 उस बलविहीनको सदैव अपना शहन्शाह मानते रहे। पूनाका पेशवाभी इनके प्रतापके
 आगे कुछ करनसकताथा परंतु ये उसकोभी माचानपूयाके अनुसार अपना मुक्ति
 मानते रहे। इनके सिवाय हिंदोस्तानमें उनदिनों अनेक और छोटे २ राजाओं, नवाबों
 का राज्य था परंतु उनमेंसे कोईभी इनका सामनाकरनेछापक नया। स०ई०१७६१
 की साल माधवीजी बड़ीधीरतासे पानीपतके युद्धमें लड़ेये। वेशों पूनाके दरवाजे
 बड़े २ कर्मचारीगण कहाकरतेये कि "माधवीजी बड़ा साहसी, बहुत तथा हीर
 शासकहै"। स्वदेशभाषाके सिवाय उर्दू फार्सीभी खूबपढ़ेये और बड़े हिसारी थे।
 मिलनसारतासे ही, माधवीकर्मचारियोंका अपराध बहुधा क्षमाकरदेियाकरतेये। परंतु
 रणसे मुझमाटे हुये कार्यको कड़ादण्ड अक्षयदेतेये। स०ई०१७९४में म्वरसे पीड़ितहो
 कर पूनाके समीप एकगाँवमें देखायेगामीहुये। भाईके पौत्र दौलतखवसंधिया
 इनके उत्तराधिकारीहुये। दौलतखवसंधियाने ग्वालियरको अपनी राजधानी बनाया

माधवाचार्य—कुंग देशके पश्चिम भागमें उदपीपुर नामक ग्राम है, जहाँ
 स० ई० की १४ वीं शताब्दीमें माधवी कुंगके घर श्रीमतीजीके उदरसे माधवी
 चार्यका जन्म हुआ। ये भारतजा गोत्री थे। इन्होंने तथा इनके भाई सायना
 चार्य (विद्यारण्यस्वामी) ने मिलकर श्रवणेश्वर, गुरुतराजानामाधवी, और

दैनरीयसंहितापर भाष्य रचेथे क्योंकि इन भाष्योंके प्रत्यक अध्यायके अन्तमें "इति स्थापणाचार्यविरचित माधववेदार्थप्रकाशे -- इत्यादि" लेख मिलताहै । बड़ेहोकर माधवजी करनाटिकके राजावीरबुद्ध राजाके दरबानमें जिसकी राजधानी विलयानगरमेंथी, प्रधानमंत्री तथा कुलशुभके पदको प्राप्तहुयेथे । वीरबुद्धकेबाद उसके पुत्र हरीहरने माधवको जयन्ती पुरका गवर्नरनियत किया था, इस पदको प्राप्त होकर माधवने गोमाका घेरा किया और स० ई० १३७० में वहाँसे छपद्मी तुकोंको मारभगाया और सप्तकोटीश्वर नामक शिवलिंगकी (जिसकोतुकोने मष्टकरदियाथा) स्थापनाकी । स० ई० १३८१ का मङ्गल एक दानपत्र मिलाहै जिसमें लिखाहै कि सूर्यग्रहणके भवसरपर देशासके महीने में महामन्त्रीश्वरमागभवर्तकाचार्य श्रीमन्माधवाचार्यने माधवपुरनामक ग्रामवसाकर २४ ब्राह्मणोंको दानकर्म दियाया । अन्तमें माधवने गायत्रीका अनुष्ठान किया और प्रत्यक्ष दशन न पानेपर सन्यासी होगये। सन्यासी होतेही गायत्रीने दशनदेकर कहा कि " घर भाग" । उत्तरमें माधवने कहा " मातु में सन्यासी होगया हूँ अब कुछ इच्छा नहीं रखता, परंतु एक प्रार्थना है कि इस देशमें एक पहर सुवर्णकी वर्षा करदो" । इतना कहवैही सुवर्णकी वर्षा होने लगी, उस वक्तके वर्षे सुवर्ण-खण्ड पुतली तथा हुण्ड अथवाक माछवा इत्यादि दक्षिणीय देशोंमें मिलते हैं। पश्चात् माधवने ब्रह्म सम्प्रदायका प्रचार किया और माधुर्य निष्ठाने राधामाधव युगल रूपके ध्यान पूजनके लिये कई पसलें बनाई । इनके मतानुगामी दक्षिणम बहुराई और द्वैतवादी होकर ईश्वर तथा जीवको अलग २ मानतेहैं । निम्नम्प ग्रंथ इनके रचेहुयेहैं—

मीमांसाशास्त्रपर न्यायमाछाविस्तार और जैमिनीयन्यायपरस्नाधिकरणमाछा; धर्मशास्त्रमें काळमाधव, पराशरमाधव, भास्करमाधव और व्यवहारमाधव; व्याकरणमें धातुवृत्ति; आपुर्वेदमें माधवनिदान, काव्यमें संक्षेप शंकरविभय; सर्व शास्त्रपर सर्व दर्शनसंग्रह । माधवनिदानकी गणना छपुष्यीमें है और विद्वान् वैद्य उसके विषयम कहितेहैं कि—

श्लो०—निदाने माधव प्रोक्तं सूत्रस्थाने तु वाग्भटः ।

शारीरे सुश्रुतं प्रोक्तं चरकस्तु चिकित्सके ॥

श्रीमकरनेसे विदित हुआहै कि, सन्यासी होकर माधव तथा उनके भाई स्थापन दोनोंहीने अपना नाम विद्यारण्यस्वामी रक्खा । इन दोनों भाईयोंमें मेल मिलाप प्रशंसनीय था ।

माधवानल (प्रसिद्ध संगीतज्ञ)—पुण्यवतीनगरी (मध्य प्रदेश विहारी) के राजा गोविंद रावके दरबारमें वि० स० १९१९ के लगभग माधवानल ब्राह्मण रहितया जो संगीतादि अनेक शास्त्राका ज्ञाता होकर १५१ ५४

पुष्पवतीकी सब सुंदरिमें ससपर मोहितयीं, यह देख अनेक मनुष्योंने राजसे
 आकर शिकायत की, निदान राजाने माधवानलको अपने राज्यसे निकाल
 दिया। सब तौ माधवानल कामधतीके राजा कामसेनके दरबारमें बस
 गया और सम्मान प्राप्त करनेमें समर्थ हुआ क्योंकि राजा गाने बजानेका रस्ति
 कथा। कामसेनके दरबारमें कामकन्दला नामक बेरा अत्यंत सुंदरी तथा अपने
 काममें परमसुंदरयीं, माधवानल ससीपर मोहित होगया एवं कामसेनके
 माधवानलको अपने राज्यसे निकाल दिया। उन दिनों तख्तनधी गद्दीपर विक्रम
 नामधारी कोई नरेश राज्य करतेथे और शरणागतकी प्रार्थना पूर्ण करनेके लिये
 प्रसिद्ध थे, माधवानलने इन्हींके दरबारमें आकर शरणली। विक्रमने माधवानलकी
 दक्षापर दया करके राजाकामसेनपर शर्द्धा की और उसको परास्त करके माध-
 वानलको कामकन्दला दिखवायी। पश्चात् विक्रमकी आज्ञासे माधवानल और
 कामकन्दला पुष्पवतीमें आरहे, माधवानलने वहाँ अपनी माणव्यभाषे लिये एक
 महिला बनवाया जिसके सण्डेर डाक्टर राजेंद्रलाल मित्र यह यह ही थे
 केलाजुसार अबतक मध्य प्रदेश जिले बिठौरीमें विद्यमान है। अनेक संस्कृत तथा
 भाषाकवियोंने इन दोनोंके प्रेमकी कहानीके विषयमें नाटक रचे हैं।

माधौराव (राजा, सर, टी माधौराव, के. सी यस् आई)

कुम्भकोणम् (संजोर) में स ६ १८९८ की साल जमे। इनके बाप रत्नाराव
 महाराष्ट्र ब्राह्मण संजोर राज्यमें दीवान थे। माधौरावने स ६ १८४१ से १८५५
 तक मद्रास विश्वविद्यालयमें पढकर अण्डलदजेंकी सनद पाई। पश्चात् कुछ
 दिनोंक लिये मद्रास विश्वविद्यालयमें गणितशास्त्रके अध्यापक रहे और स ६
 १८४७ से ४९ तक एकौन्टेन्ट जनरल मद्रासके दफ्तरमें फार्क रहे। पश्चात्
 गवर्नमेंटने इनको ट्रायम्कोरके राजकुमाराका शिक्षक नियत किया, यह काम
 इन्होंने ऐसी योग्यतासे किया कि, जिसके पुरस्कारमें राज्यके दीवान केन्द्रका
 पद इनको दियागया। इस पदपर रहकर इन्होंने अपने कार्यसे राजा, प्रजा
 तथा गवर्नमेंट सबकीको मसल रख्या जिसके उपलक्ष्यसे स ६ १८६६ की साल
 गवर्नमेंटने इनको के सी यस् आई का शिताब दिया। स ६ १८०१ में
 इन्होंने ५००० मासिककी पेन्शनली, इससे कुछ दिन बादही गवर्नमेंटने इनको
 इन्दौर राज्यमें दीवान नियत कर्के भेजदिया, इसपदपर दो वर्षोंनी नहीं रहिये
 पाये थेकि, गवर्नमेंट-भाफ-इन्टिवाने इनको राज्य बदादामें दीवान नियत कर्के
 भेजा। ब्रिटिश गवर्नमेंटका हमपर विश्वास था और जिन २ राज्योंमें ये रहे बरमे
 करेजाने इनकी प्रतिष्ठा तथा महत्ता थी। स० ६० १८७७ में गवर्नमेंटने इनको
 राजाधी पदवी दीधी। पश्चात् तथा मद्रास विश्वविद्यालयने इनको
 बनाया था। अंग्रेजी भाषा बिरान तथा बोल्नेकीशक्ति इनमें बहुत थी। ये लगे

पक्षपात रहित, परिश्रमी तथा मुस्तैव पुरुषधे । वर्तमानकालमें इनकी समान राजनीतज्ञ तथा सुप्रबन्धकार हिंदोस्तानमें कोई दूसरा नहीं हुआ । स ई १८९० में परलोकगमी हुये ।

माधौराव सेंधिया (महाराजा आलीजाह, सर माधौराव सेंधिया, जी० सी० यस्० आइ०, यल० यल० डी०, ग्वालियर नरेश)—महाराजा जीवाजीराव सेंधियाके पुत्र स ई १८५७ में जन्में और स. ई १८८६में ग्वालियरकी गद्दी पर बैठे । श्रीमान्के बालकालमें कौंसिल आफ्-रिजेन्सिका इन्तजामरहा । श्रीमान् संस्कृत तथा अंग्रेजीके पूर्ण ज्ञाता हैं, और शिकारके रसिक हैं और खतुर, वरसाही तथा अनुमची नरेशोंम गिनेजाते हैं। रेखवा घाज़िन ख़ानामानते हैं और फोटोकी तस्वीरें उतारनेमें लिज़्ज़तहस्त हैं । सम्राट् एडवर्ड सप्तमके राज्याभिषेकके अवसर पर आप इङ्ग्लैंड पधारे थे और वहां पर ५० हजार रुपये उस सभाको खर्चेमें दिये थे जिसका मुख्य उद्देश्य हिंदुस्तानियों तथा अंग्रेजोंमें मेलझोळ बढ़ानेका है । उसी अवसर पर कैथुल विश्वविद्यालयने आपको यल यल. डी की उपाधि दीथी । राज्यमें अनेक नये स्कूल आपके समयमें खोलेगयेहैं, और स्त्रीशिक्षाकामी उद्योग कियागयाहै । पार्सीकी, जगह नागरी भक्षरोंका स्वराज्यके दफ्तरोंमें व्यवहारकरनेका हुक्म दे आपने मातृ भाषाका बड़ा उपकार कियाहै । आपके राज्यका विस्तार २९०४६ वर्गमील, वस्ती ३० लाख ३० हजार मनुष्य, खेतोंमें ५५०४ खयार ११०४० पैदल और ४८ तोपेहैं । श्रीमानकी खलामी अंग्रेजी अमलदारीमें तोपके १९ फैर और स्वराज्यमें २१ फैरोंकीहै । ब्रिटिशगवर्नमेंट आपके सुप्रबन्धसे प्रसन्नहै और आप स्वयं प्रसन्नचित्त नरेश हैं । परमेश्वर आपको खिरापूर्करे ।

माधोसिंह सवाई (महाराजा सवाई, सर माधोसिंह, जी सी यस् आई जयपुरनरेश)—महाराजा रामसिंहके दत्तक पुत्र हैं । स ई १८६१ में जन्मे, स ई १८८० में गद्दीपर बैठे और दोषर्षके बाद राजपाटका पूरा अधिकार पाया । राजकालमें श्रीमान् "यतो धर्मं ततो जयम्" इस कि-स्वदन्तीका प्रयोग करतेहैं और निजपूर्वजोंके धर्मपर दृढतासे आरुढ़हैं । आपको गोपालजीका इष्टहै। जयपुरमें माघघसागर नामक तालाब और घृन्दावनमें गोपा। लजीवा बड़ा भारी मन्दिर आपने बनवायाहै । महाराज रामसिंहने जितने सुधार राज्यमें कियेथे उन सबको आपने पुष्ट कियाहै और अनेकनये सुप्रबन्धमी कियेहैं । आप बड़े अनुमची तथा परिश्रमी नरेशहैं, कितने दिनोंतक राज्यका सब काम आपने बिनादीवानके किया था । प्रजापालकका सदैव चिन्तवन रखतेहैं । राज्यके कर्मचारी तथा प्रजा और ब्रिटिशगवर्नमेंट आपसे सबहो प्रसन्नहैं ।

पक्षपात रहित, परिभ्रमी तथा मुस्लिम आमेरअम्बर आपके समयमें जयपुरराज्य राजनीतज्ञ तथा सुप्रबन्धकार हिंदोवानदासके दसकपुत्र थे । स० ई० १५३५ में आ नदासके जीतेजीही बादशाह अकबरने भा

इका हाकिम नियतकिया था और परचात् दस
 माधोराव सेंधिया (मीना प्रतापसिंहके दमनकरनेके लिय भेजाया ।
 सेंधिया, जी० सी० यन्तानाको परास्त किया जिसके उपलक्षमें बाद
 यंर नरेश)—महाराजा ४ (पंजाब) का हाकिम नियतकिया । पत्चात् जब
 और स ई १८८६में गवा मिर्जाहकीमने काबुलसे सिंधमें आयकर उपद्रव किया
 आफरिजेन्सीका इन्तजाली दमनकरणार्थ भेजेगये । संधपहुंच आपने मिर्जाहकी-
 शोकारके रसिक हैं और उनके उपलक्षमें आपके पिता राजा भगवानदास (भगवन्त
 धंजिन बखानामानते सूबेदारी तथा सिपहसालारी दी गई । स० ई० १५७३ में
 पदवर्द्धसप्तमके राज्य काबुलपर चढ़ाई करनेका विचार सुमकर अकबरने
 ५० हजार रुपये उस सुवर्हा पंडुच आपने बादशाही आतङ्क सचपर बिठलादिया
 तथा अग्रेजोंमें मेरठझोलू तथा जाबुलकी सूबेदारीपर रहिकर अफ्गानिस्तानकी
 आपको यल यल कीभर्यत कठोर दण्ड देदेकर खूब डीलाकिया । कहिये हैं कि,
 समयमें खोलेगयेहैं, ४ नाम सुनचे कांपते थे, उनमें टोपीकी जगह पगड़ी और
 गरी अक्षरोंका स्वराज्यावी (सम्मान) पहिरनेकी प्वाल जो अबतक प्रचलित
 था उपकार किया जायी हुई थी । बादको आपकी बदली विहारकी सूबेदारी
 ३० हजार (आपने पांचवर्ष रहिकर पठानोंको दमनकरके बंगाल तथा उड़ी-
 मानकी सलाह टाक वै ली । स० ई० १८८८ में राजा भगवानदासके स्वर्ग-
 है । मिटिशानके समारोहसे आप गद्दीपरबैठे और बादशाहने आपको महा
 परमेस्वरदौलतेमुगलियका खिताब और पद्महारायीका मनसब दिया ।
 हजारीका उच्चमनसब आपको मिला । बादशाह अकबरके दरबार
 माधोमन्यसर्वारकी इज्जत आपके समान नहीं थी । विजय आपसे सचन
 सींगे जिघर भेजेगये जीतहीके छौटे । ब्रह्माके राजाको जिसने बंगालपर
 ई। थी आपने दरियाई छद्माई में परास्त किया । बादको बादशाह अकबर
 या पौर सुलतान खुसरो (शाहजहाँ) का अठाळीक आपको नियत-
 और शाही दरबारमें आपका बहुत कुछ अधिकार बढ़ाया। अकबरके बाद जहाँ
 हस्तपर बैठकर आपको बंगालकी सूबेदारीपर भेजा और एकही वर्ष पीछे
 की सूबेदारीपर बदली करदी । इसीपदपर रहिये हुये स० ई० १६२३ के
 ग पल्लिचपुरके समीप आपने परलोक गमन किया । आपके कई सौ रानिये
 जिनमेंसे मृत्युकके दोदो तीन तीन या इससे भी ज्यादा बच्चे थे । कई रानि-
 आपके साथ सत किया । आपके ज्येष्ठपुत्र जगतसिंहका देहांत आपके
 होने होगया था । उनके नामसे आपने अम्बरमें बहुत बड़ा मंदिर बनवा-

शाहने भी रावसाहबको लिखा कि, यदि आप हुमायूँको पकड़कर मेरे इराद कर दोगे तो मैं गुजरात फतेह करके आपको देवूंगा, निवान रावसाहबने हुमायूँको उलटे पैरों लौट जानेको कछिदिया लेकिन उसको पकड़ाभी नहीं। इस बातसे नाराज होकर शेरशाहने रावसाहबपर चढ़ाई की, ८० हजार सेना लेकर रावसाहबने उसका साम्हना किया लेकिन कई नमकइराज करोंका शेरशाहसे मिल जाना इनकी पराजयका कारण हुआ। साम्हन हीउसे आमदनीसे राव साहबने जोधपुरका राजभवन तथा अनेक किले बनवाये थे। ये अपने समयके राजपूत नरेशोंमें महाबलीये। बाबरशाह अकबरके समयमें भी अन्य राजपूतों की समान इन्होंने उससे मेल जोल निजदेहमें माण रखी नहीं किया। जोधवाँ के मरने पर अकबरने राजपूतोंकी प्रयाके अतुसार उन राज्योंमें राजपूत नरेशोंकी दाढ़ी मूँठ मूँड़नेके लिये नाई भेजे। जब नाई जोधपुर दुर्बार में पहुँचा तो राव मास्देवने उसको निकलवा दिया और कहाकि " शेरोंकी मूँठ फौन मूँड़ सकताहै "। अकबरने यह सुन उपद्रव बढ़जाने के मयसे राव साहबको मनालिया। स० ई० १५८४ में राव मास्देवका देहल हुआ और राव वदय सिंह उनके उत्तराधिकारीने अन्य राजवाड़ोंकी साहसे अतुसार दिल्लीके लफ्तकी डोछा देनेकी रसम जारी की।

माध गुप्त पण्डित—ये कश्मीर प्रान्तसे उज्जैन नरेश विजयमादित्य इन्द्रे दुर्बारमें गये थे। विक्रमने इनकी बुद्धिकी परीक्षा करनेके लिये प्रथम कुछ सत्कार नहीं किया परन्तु ये राजाको स्वच्छन्द गामी, गुण प्राप्ती जान राजसेवे निज देहकी समान करते रहे। राजाके प्रसन्नतापकरने पर पूछ नहीं जाते थे और श्रुष्ट होनेपर झुझाईन नहीं होते थे। राजदेपियासे बात नहीं करतेथे। राजदासियाकी ओर भाँप ठठा कर नहीं देखतेथे और न नीयों की बातें राजा साम्हने कहतेथे। राज निन्दक बहुतेरा बहिकाते थे और भाद्र पूर्वक राजसेवाकी विकलता दिखातेथे परन्तु ये किसीकी नहीं सुनते थे। इसी प्रकार एक करते २ जब १३ महीने होगये तो पण्डित शरद अस्तुमें आपरातने समन राजाने जागकर पवनके झकोरोंसे दोषवर्षी अनियं दिखती देव आवाम दी नि " कोदहै "। बाहरसे भीतर तक सब नौकर पड़े सोतेथे वेचल माधगुप्त जागते थे। राजाको आशा पाप गुरन्त भीतर गये और पण्डिते लम्हाय गाँवें काँपते हुये ब्याही बाहर जाने लगे कि, राजाने पूछा " इस बक्त क्या बक्त है "। माध गुप्तने उत्तर दिया कि, दो बजे हैं फिर राजाने पूछा कि " इस बक्त सब नौकर सो रहे हैं तुमको क्यों नहीं निद्रा आई "। माधगुप्तने हुँकी दो श्लोक उत्तर में पढ़े जिनका भाष्य यह था कि " मुझ मदे" अथ यज्ञ विहित आश्रयको महाराजये दुर्बारमें बदेहुये शरा

ऋतुछोटकर आगर्ह, घरबारकी कुछ सुधि नहीं पाई और मेरीभी कुछ सूरत न निकली, इसी चिन्ताके कारण मुझको निद्रा नहीं आई । श्लोकोको सुनकर राजाने मात्रगुप्तके जानैको कहिदिया। लेकिन विश्वरने ठगा कि, इस ब्राह्मणका सकार अवश्य करना चाहिये । कश्मीर मण्डलका राज्य उनविनों खालीया निदान प्रभात होतेही राजाने मात्रगुप्तको अनुसाशनपत्र देकर कश्मीरभेजादिया और वहाँके दीवानमग्नीने पत्रके देखतेही उनका राजखिलक करदिया । गद्दीपर बैठ कर राजा मात्रगुप्तने कश्मीरके अभूल्य फल फूल तथा शाळ दुशाळे महाराजविक्रमकी भटके छिये भेजे और लेजानेवाले दूतको १ श्लोकभी छिलकर दे दिया जिसका आशय यह था कि "महाराज ! आपके चित्तका कृपाभाव मन, घाणी, वशुद्वारा विखीतरह प्रकट नहीं होताहै परन्तु आप कृपा करते हैं एवं आपकी कृपा भी बिलक्षणहै" । ८ वर्ष ९ महीने पर्यंत राज्य भोगनेके पीछे राजा मात्रगुप्तने महाराजविक्रमके देवलोफ होनेकी खबर सुनकर राज्यत्यागदिया और सन्यासीहो काशीको चलतेहुये रास्तेमें रामाप्रवरसेन जिसके चचाके मरनेसे कश्मीरका राज्य खालीहोकर मात्रगुप्तको दियागयाथा मिछा । प्रवरसेनने मात्रगुप्तको बहुत समझया और कहा कि अब आप मेरी तरफसे कश्मीरका राज्य करें लेकिन उन्होंने येही उत्तरदिया कि जिस मुफ्तिके प्रभावसे हम राजपदको पहुँचये वह अब इस संसारमें नहीं है । प्रवरसेनने कश्मीरकी गद्दीपर बैठकर बहुतसे मुलवजीके लेकिन कश्मीर मण्डलकी आमदनी सदैव मात्रगुप्तके पास काशी भेजदेतरहे (देखो प्रवरसेन) । मात्रगुप्त इस गलेपदी लक्ष्मीको साधु ब्राह्मणको बौट देतेथे और आप भिक्षाकर्के भोजन करतेथे । इसप्रकार १० वर्ष और जीकर काशीमें स्वर्गवासी हुये राजा मात्रगुप्त ओछेचित्तके बादमी न थे, गद्दीपर बैठकर उन्होंने आज्ञा प्रचारकरादीयी कि कोई विखीतरहका ईसा न करे उनकी आज्ञासे सोने चाँदीके टुकड़े दीन गरीबाकोछड़कूओंमे मिछाकर गुप्तचित्तके दिये जातेथे। मात्रगुप्तके वनाये श्लोकोको देखकर येही कहे वनसाहै किसे बडे भारी पडितथे । मेन्ट कविने "हृयग्रीवध" नाटिक रचकर उनकी भेंट किया था और इनाममें पाळ भर सुवर्ण पायाथा ।

मिल्टन (जान मिल्टन—John Milton) इनके बाप वाकिन्ध मशायर (इङ्ग्लैंड)के रहितेवाले बड़े अमीरथे। जान मिल्टनने केम्ब्रिज विश्वविद्यालयमें शिक्षा सम्पूण करनेके पश्चात् "कोमस" आदि पाँचकाव्य अंग्रेजी पद्यमें रचकर प्रसिद्धिपाई । स ई १६३७ में इन्होंने फ्रान्स तथा इटलीकी बिलापताँमें यात्राकी, स ई १६४३ म इङ्ग्लैंड आकर अपना विवाह किया, स ई १६५२ में इनकी मेम तीन कम्पार्ये छोड़कर मरगइ एवं इनको दूसरी शादी करनीपडी । दो वर्ष पीछे इनकी दूसरी मेमभी चलावसी एवं इनको कुछही दिनाबाद तीसरी

शादी करनी पड़ी। बादको ये अंधे होगये, उसीहालतमें इन्होंने "पैरेहायज हात
रु" नामक प्रसिद्ध अंग्रेजी काव्य रचकर स ई १६६७ म छपवाया।

उक्तकाव्यको मिल्टन घोलते गयेये और उनकी बेटियें लिखती गईयीं और
उसके छपनेपर मिल्टनकी भाँझ देवकृपासे सुकगईयीं। नेत्रपावर मिळाने "पै
रेहायजरिंगेण्ड" नामक काव्य रचा। मिल्टनकी कविता अत्यंत कठिनहै और
उसम ग्रीक तथा रामनकथा तराका समावेश बहुतपातसे हुआहै। अंग्रेजोंकी-
श्रद्धासे ये सभ्योत्तम गिनेजातेहैं। ये बड़े स्वरूपवान होकर सद्गीत विद्याके पूर
ज्ञाताये। स ई १६०२ म जन्म, स. ई १६७४ में मृत्यु।

मीरजाफिर जटली-पेनारनौळ (पटियाला) के रहनेवाले छेपद
थे। मुगल सम्राट औरंगजेबके शाहिजादे आममशाहके पास बहुत दिना
तक नौकर रहये। फार्सी तथा उर्दूमें प्रदसन युक्त कविता करते थे। रेल-
तामों में उर्दू शाहिनामा इर्दुका बनाया हुआहै। शान्तम जय करुण सियर
दिल्लिके सफ्तपर बैठती उस भवसर परइहोंने प्य निदा युक्त कविता की थी
निदान बादशाह फर्रुखसिंहाने इनका सर घटस जुदा करवा दिया। अटलका
क्रिये मिलाना ऐसी तुवें मिलानेयो पहिले हैं कि जिनके सुननेसे हँसी भाये।

मीरोंबाई-जाधपुर रायान्तगत मैदूतेके राज रतनधेनवी बेटी थी और
राणा साद्राब पैर मोज राजको सि०स० १५५३ म विवाही गई थी। भोजराज
कुंवर पतहामें सिधारकर मीरोंको विषवा करगये थे। मीरोंके नेहरवा कुछ
वैष्णव था और मारा भी बालकालहोसे तिघरनागर (श्रीकृष्ण) का भातिमें
रखलीन थी। इसी लिये उसको पतियियागकाभी कुछ हुआ था।
विषवा होवे बाद मीरों अपना समय भगवद्भजन तथा साधुसवाम सहये
धियातीथी लेकिन इन बातोंसे लोकनिदा होते देख मीरोंके दुःख
रतनसिंह, यिदमाजीत तथा उदयसिंहने जो राणा साद्राजीके बादकुमरा
सितोड़ (मेवाड) की गद्दीपर विराजे, मीरोंको भनक प्रकारसे पचा
लेकिन उसने प्य नमाना। अन्तम सुसतालियोग दररोदनते दुःश्रीहाकर
मीरों अपने नेहरवा मैदूते चलीगई और यहाँसे कुछ दिनों पाले मुन्दावनको
सिधारी और गङ्गपतक प्रजम नितनये पद पना २ वर गावी हुई विषरतायी
मुन्दावनमें अन्तर बादशाह सासेनको सागलेगर मीरोंके दशनया गये थे।
पश्चात् मीरों मुन्दावनसे दारिबापुरीया पधारी और यहाँ रणडाइजीकी संकम
रहिने लगी। इधर मेवाड़में मीरोंकीक शलेजानकवाद गई भवाळ पड़े और
दिल्लीके मुगल बादशाह भी कईदफ बटाईयां जिससे राजा तथा राजा की
भागये। पद देख खर लोगोंने राजास वदा कि यह दे खोप यहाँसे मीरोंके दुःख
होकर शले जानेसे है। निदान राजाने मीरोंको छानके लिये ब्राह्मणोंका दारिबा

भेना ब्राह्मणोंन द्वारिका पहुंच मीरोंसे राणाका सन्देशा कहा लेकिन उसने जानेसे इन्कारकिया तबसौ ब्राह्मणछोग मीरोंके द्वारपर भद्रमलत्याग धरनादेकर बैठे । इससे अत्यंत दुःखी होकर मीरोंने ब्राह्मणाको खलनेकी आज्ञादी और रणछोड़जीके मंदिरमें जाकर निःसंस्पद गया -

पद-झ्यो जानौ त्यों छीजै स्वजन मुधि ज्यों जानौ त्यों छीजै ।

मुमधितुमेरे औरमकोरु कृपा राखरी कीजै ।

सासा भूषण नैन न निद्रा तन तो पछ पछ छीजै ।

मीरोंके प्रभु गिर्घर नागर मिछविछुइन नहिं कीजै ।

जब मीरोंको बहुत देर हुई तब ब्राह्मणोंने मंदिरमें जाकर देखा लेकिन मीरोंको कहीं नहीं पाया, मीरोंको साहो रणछोड़जीमें लिपटी पाइ, मीरोंतौ छीन होगइ, गिर्घर छालजीन अपने भक्तकी करुणामय बिनती सुनकर उसको अपना लिया । रागगोविन्द तथा जयदेवकृत गीतगोविन्दका भाषा पद्यमें लिखक मीरोंने रचाथा जो अब नहीं मिलते । सेकहा फुटकर पद मीरोंके रचे देण मरमें प्रसिद्ध हैं और भक्तिभावसे भरपूर हैं । चित्तौड़म मीरोंका बनवाया गिर्घर छालजीका बहुत बड़ा मंदिर अबतक विद्यमान है, लेकिन मूर्तिशून्य है । खोज करमेसे मालूम हुआ कि मानसिंह कछवाड़ेने जब चित्तौड़ विजय किया था तौ वह गिर्घर छालजीको आंमरम छे भाये ये और वहा जगतप्रभुनामसे बड़े भारी मंदिरमें बनयो पचराया था । कर्नेल टाड साहबने राजपुतानाके स्वरचित अभिजी इतिहासम रानाकुम्भूके मंदिरके पास चित्तौड़में मीरोंबाईका मंदिर देखकर अमसे यह लिख दिया है कि मीरोंबाइ कुम्भूकी रानी थी ।

मुनीश्वरजी (गणक) - इनके पितारइनायजी सूर्य सिद्धांतके टिप्पणीकार फलिष्ठपुरान्तगत दधिनामक ग्रामके वासीथे । दूसरा नाम इनका विश्व रूपकर था वि० स० की १७ वंशितादिके भीतर इनका समय है । निष्ठार्थदूती नामक छालावतीकी व्याख्या, मरीचिन,मक सिद्धांतशिरे मणिकी व्याख्या, पाठीसार और सावभौम इनके रचे ग्रंथ हैं ।

मुसदरिक कवि - ये भाषा कवि विलग्राम जि० हरदोईके रहने वाले थे । जातिके मुसल्मान थे और वि० स० १६५० मे विद्यमान थे । अर्धो, फारसी संस्कृत तथा हिंदीके अच्छे विद्वान थे । अलक (जुल्क) शतक तथा विलक शतक इनके रचे ग्रंथके दोहे देखने लायक हैं ।

मुर्शिद कुलीखॉ (बगालका नवाब) - यह प्रथम ब्राह्मण था, पीछे मुसल्मान होगया था । फारिसमें मुलाम करके पाठा गया था । औरंगजेबकी मृत्युकी साल स० १७०७में बगालका नवाब था । इसने टाकेसे राम-

धामी बदलकर अपने बसाये मुर्शिदाबादमें कायम कीयी। २१ वर्ष राज्य करते अपने जैबाईको बङ्गालका राज्य दे मरा।

मुरारी मिश्र—अनर्घरायबकाष्पकी मस्तावनाके अनुसार ये मौज्ज्ब गोषोत्पन्न भट्ट वर्धमानके पुत्र थे। कई मीमांसा ग्रंथ तथा अगस्त्य त्रिकर। प्रायश्चित्त मनोहर और अनर्घरायब काष्प इन्होंने रचे थे। प्रसिद्ध पंडित कुमारिल भट्ट इनके गुरु थे।

मुहम्मदसाहब (मुसल्मानोंके पैगम्बर)—शहिरम का (अरब) के एक सम्य षंगम अषदुल्लाके घर सं० ई० ५७० में जमे। माता विलायी मृत्यु चक्षुपनहीम होजानेके कारण सच्चा भ्रूताल्लिषने भापको पाला था। १५ वर्ष की उम्रतक भाप भेड़े चराते रहे ये तथा शूतुर्वानी करते रहे थे। २५ वर्षकी उम्रमें आपने ४० वर्षकी खदीजा नामकी एक अमीर विधवासे शादी की। जो ६५ वर्षकी उम्रमें कई बच्चे छोड़कर मर गई और इतना धन दौलत छोड़ गई कि भाप मकाम सबसे बड़े अमीर होगये। भापको स्वदेगर्वा दीर्घा हालत देखकर बड़ा शोक होता था पण आपने शोच विचार कर पुरान रचा और उपदेश करना शुरू किया। थोड़ेही दिनमें मकका तथा मदीनामें बहुतस लोग आपसे मत्तानुगामी हुये। मकामें हरखाळ पण मेला हुआ करता था।

फकलाल इस मेलेम आपसे अनुयायी बहुतसे आदमी मदीनासे भाप और आपसे आपने साथ ले गये। इसी साल से मुसल्मानोंका खन हिजरी शुरू हुआ है। मदीना पहुंच आपने पण मसजिद तथा कितनेही मदान बनवाये और कई और तौसे शार्दीकी भित्तसे एक ७ वर्षकी थी। पश्चात् आपने युट्टुदियाके शहरमें कई दफे हमले किये और तलवारके जोरसे उनको मुसल्मान किया और उनका अटूट धन लूटा। फिर आपने दूर २ पादशाहाके पास मुसल्मान होनेके लिये पत्र भेजे। किसी भीरने तो कुछ ध्यान नहीं दिया लेकिन मिश्रदगरे दाकि मने दो छोड़िये तथा पण खच्चर मजरके लिये भेजा। सं० ई० ६३० म भारने शहिर मककाको फतेह किया और वहां ३६० मूर्तिपाव पण मंदिरको तोड़कर मसजिद बनाया तथा मककाके रहिनेवाले सब लोगोंको तलवारसे जोरसे मुसल्मान करालिया। अपना महारय प्रकट करनेके लिये आपने अगलियासे पानी बहाया, शंद्रमाके दो टुकड़े फेंके अपनी मारतनासे निकाले और जानबरा तथा दरपतासे अपनेको पैगम्बर पुकरवाया। सं० ई० ६३१ में १३ दिनकी बीमारके बाद वेगल फातिमा नामक पेटको छोड़कर गुंघवर गये। फातिमाकी शार्दी अन्नीके साथ हुए थी जिससे हसन और हुसैन दो बेटे थे। काम तथा मारबरा उपम देश और मिश्रदगया अधिकारश भापके सामने मुसल्मान होगया।

मुहम्मदगोरी—देखोशहाबुर्दन।

मुहम्मदबहादुरशाह (दिल्लीके सबसे पिछले मुगलबाद-शाह)—निज पिता अकबरशाह द्वितीयके बाद स० ई० १८३७ में दिल्लीके सल्त पर बैठकर नाममात्रके बादशाह हुये । सन ५७के गदरमें इन्होंने भी चांगि योंका साथ दिया और अपने नामका सिक्का चलाया । उपद्रव शान्त होनेपर बृटिश गवर्नमेंटने इनका मुल्क खालसा कर लिया और १२ लाख रुपयेकी वार्षिक पेन्शन देकर रगून मुल्क ब्रह्ममें कैद करके भेज दिया । इनकी दो बेगमें एक शहिजादा तथा एक पोता इनके साथ गया और इनके दो शहिजादों तथा एक पोतेको छार्ट कैनिङ्ग घायसराय हिंदने गोलीसे मार दिया । मुहम्मद बहादुरशाह फार्सों तथा बर्दूम काविता भी करते थे और उसमें अपना नाम जफर रखते थे । इनका बनाया दीवान दिल्लीमें छपा था ।

मूककवि सार्वभौम—ये द्रविड देशवासी जन्माथ द्रित्री थे, जब इनके निर्वाहका ठिकाना कहीं नहीं लगा तो कान्ची पुरीमें कामाक्षा देवीके मंदिरमें जापड़े । इस मंदिरमें विद्याकी इच्छासे एक ब्राह्मण बहुत दिनासे तप करता था, एक दिन भस्त्रात्रिके समय भगवतीने वेश्याके रूपमें प्रकट होकर कहा “ वरमोंग ” । विद्यार्थीने भगवतीको वेश्या समझ अपने तप विगड़नेके भयसे कहा कि यदि तूम मेरी इष्ट देवी भगवती हो तो मुझे उसी स्वरूप से दर्शन दो । देवी यह सुन तुरन्त झौट पड़ी और रास्तेमें उस मूक भन्धेको पड़ा देख ठोंकरसे जगाया । मूक जब जागकर चिढ़ाने लगा तो देवीने उसके मुंहमें पीक डालदी जिसके प्रभावसे वह बड़ा कवीश्वर होगया । स्वा० शंकराचार्यने सौन्दर्य लहिरिके निम्नस्प श्लोकोंमें इस कथाका उल्लेख किया है—

श्लो० कदाकाले माता कथय कछिताळस्तकरसं ।

पिषेयं विद्यार्थी तवचरण निर्णेजनलम् ॥

मकृत्या मूकानामपिच कविताकारणतया ।

यदा दत्ते घार्णी मुस्रवमलतान्मूलरसताम् ॥

इनका जीवनकाल वि० स० की ७ वीं शताब्दीके लगभग प्रतीत होता है । ‘ पंचशती ’ इनका रचा ग्रंथ है ।

मूसी—(युहूदियोंके पैगम्बर)—द्वारत ईसासे पहिले भूमण्डल के सर्वत्र पश्चिमी भागमें आपका मत प्रचलित था । स० ई० से प्रायः दो हजार वर्ष पहिले इबराहीमके वंशमें आपका जन्म हुआ । बाइको द्वारत ईसाभी इसी वंशमें पैदाहुये । इबराहीम इसराईल जातिके थे जो किसी आपत्तिके कारण अरबसे मिश्रमें जा बसेथे । परन्तु जब इसरा-ईलकी सन्तति गिनती में बहुत बढ़ गई तो मिश्रके बादशाहने हुकम दिया

करनेका हुकम देकर प्रजाको कुर्य २ करदिया। पश्चिमोत्तर देशके पुष्टि तथा शिक्षा विभागका संशोधनभी आपके वक्तव्य खूब होगया। आपके बनाय भूमिपर सम्बन्धी भाईनभी सम्बन्ध आदि अन्य सूबोंके आइनेसे प्रजाके लिये दशगुन रूप हानि कारक हैं। प्रजाके भ्रम और संदेहको मिटाना आप बनना मुख्य कर्तव्य समझते थे। ३६ वर्षतक इस देशन कठिन परिश्रम कर स० ई० १००१ की साल पर पेनसिल्वेनिया पेनसिल्वेनिया लेकर इंग्लैंड को पधारे और मिथीकाँसलके मेम्बर हुये लेकिन कुछही विनाबाद अत्यन्त ठके सहकारी मंत्रिका पद आपयो दियागया। पश्चिमोत्तर देशके रईसों तथा प्रजागणने चन्देसे लगनक आदि शहरोंमें आपके स्मारकसिद्ध स्थापन किये और हिंदोस्तानके सब समाचार पत्रोंने एकस्वरसे आपको प्रजाहितैषी गवर्नर कही करपुकारा।

मैकाले (टामस बैबिंजटन छाई मैकाले—Thomas Babington Lord Macaulay) ये स्कॉटलैंडके एक प्रार्थान प्रतिष्ठित वंशमें स० ई० १८०० की साल जमे। बचपनहीसे इनकी स्मरण शक्ति विलक्षण थी पाठ पढ़के पढ़नेहीसे पाद होजाताया और बचिता ७ वर्षकी उमरसे करने लगे थे। पम थे की परीक्षाकेम्ब्रूगवालिजसे इन्होंने स० ई० १८२६ में उत्तीर्ण की थी, पचारचनारमें कई वर्षे इनाम पाया था, पश्चात् यथासकतका इतिहास पास कियाया और पार्लियामेंटके मेम्बर होकर छात्रकी उपाधि पाई थी। स० ई० १८२४ में सुप्रीमकोसल बलबन्ताके मेम्बर होकर हिंदोस्तानको आये और बहुत धन उपाजन कर्के दो वर्ष पीछे इंग्लैंडको वापिस गये और फिर पार्लियमटके मेम्बर हुये। थोड़े दिन बीमार रहिवर स० ई० १८५९ में मरे। अमेरीमें इनके रचे बहुतसे ग्रंथ हैं जिनमेंसे पर इंग्लैंडका इतिहास भी दोषे बड़े विद्वान तथा विचार शील पुरुष थे, उद्यतिये पक्षपाती थे और निभय होकर उन पुरादयाकी जो बड़े २ घरानामें पाई जातीहैं मिन्दाकरते थे।

मैक्समुलर—(फ्रेडरिख मैक्समुलर Friedrich Maxmuller) इनकी जन्म भूमि जर्मनीमें थी और वही इनके बाप किसी पुतबन्तानके दारोगापे। इन्होंने बर्लिन तथा पेरिसमें रहिकर संस्कृत पढ़ी थी और स० ई० १८४६ में इंग्लैंडमें जाबसे थे। पश्चात् इस्टइंडिया कम्पेनिमें प्रोगेदको आग्राबाद कर्के छपवानेका काम इनको सौंपा और भारतकोट पूर्वीपार्लियमने इनको नवीन भाषा आकाश प्रोफेसर नियत किया। ये अनेक भाषामांके विद्वान ह्यार संस्कृतके पढ़े भारी पंडितथे। हिंदुओं तथा बौद्धोंके अनेक धर्मग्रंथोंका अंग्रेजी अनुवाद इन्होंने कियाया। प्रोगेदयाभी अमेरी अनुवाद कियाया। संस्कृत तथा पंडित्यापी मूर्तियांसिटीजने पर पर सी थी उपाधि इनको दीयी। स्या० दयानन्द सरस्वती इनको मोनरक वदा करते थ। स० ई० १८९३ में जन्म, स० १० १८९८ में मृत्यु।

मैल्कम—(सर जान मैल्कम—Sir John Malcolm)—ये युवावस्थामें इङ्ग्लैंडसे हिंदोस्तानमें आकर बृटिशसेनामें नौकर हुये । स० ई० १८०२ से १८०९ तक शाह ईरानके दरबारमें बृटिश गवर्नरमदकी तरफसे राजदूतके पदपर नियुक्त रहे । पश्चात् इङ्ग्लैंड को वापिस गये और पर्शिया(ईरान)का विन्हासनीय इतिहास लिखा जो स ई १८१२ में छपा । स ई १८१७ में सेनापति नियतहोकर फिर आप हिंदोस्तानको आये और मरहटों तथा पिन्डारियोंको अनेक युद्धोंमें परास्त किया । स ई १८०१ में इङ्ग्लैंडको वापिस गये और स ई १८२७ में बम्बई के गवर्नर नियतहोकर तीसरी दफे हिन्दोस्तानमें आये । स ई. १८३० में अन्तिम दफे इङ्ग्लैंड को गये और पार्लियामेंट के मेम्बर बनाये गये । छान्द क्रायषका अधिनश्चित तथा हिंदोस्तानका इतिहास भी इन्हाने अंग्रेजीमें लिखाया । स ई १७९९ में स्काटलैंडमें जमे, स ई १८३३ में मरे ।

मोहनदास (भाषाकवि)—यह नैमिषारण्य के समीपकुसरग्राममें अहिवात कायस्थ श्रीपादके घर जन्मेये । “ स्वरोद्वयपवन विशार ” नामक ग्रंथ इन्होंने स ई १९३० कीसाळ गगातट कन्नौजमें सम्पूर्ण कियाया । उक्त ग्रंथमें योग साधनेकी क्रियाहै और स्वर, ज्ञान, आसन तथा कुम्भक आदि प्राणायामोंका वर्णनहै ।

मृगनयनी—ये गुजरातके राजा क्षी कन्या स्वाछियरके सोमवंशी राजा मानसिंह की रानीथी । स ई की १६ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें हुई । खजुराय इतिहासकार जो मुगल सम्राट् शाहजहाँके वक्तमें हुआ लिखताहै कि “ रानी मृगनयनी राजा मानसिंहकी २०० रानियों में सबसे अधिक रूपवती तथा सुंदरी थी, सङ्गीतशास्त्रमें बड़ी निपुणथी और संकीर्णरागवैतसकी समान कोई गाता-बताता या ही नहीं ” । रानी मृगनयनीकेतिकाले ४ प्रकारके राग जो गुजारी, बहीळगुजारी, माळगुजारी और मंगळ गुजारी कहिछाते हैं दक्षिणदेशमें सुप्रसिद्ध हैं ।

म्हात्रे (मिष्टर गणपतिरावकाशीनाथ म्हात्रे प्रसिद्ध मूर्तिकार)—ये बम्बई के रहनेवाले सोमवंशी क्षत्री हैं । इन्होंने बम्बई के सर जमशेदजी जीर्णोद्धार के फारीगरी स्कूलमें चित्रकारीकी शिक्षा पाई है और घर पर बैठकर उसचित्रकारीके आधारपर मिट्टी तथा पाथरकी मूर्तियाँ बनाना सीखाहै इनकी फारीगरीमें बमाल यहहै कि इनके बनाये वस्तु तथा मूर्तियाँ केवल असलके चित्रसेही नहीं मिलते हैं वल् उनकी आकृतिसे भी । जैसे फोटोमें मनुष्यका हाव भाव सबही मालूम होताहै वसही इनकी बनाई मूर्तियोंमें भी । मयिरामि-सुन्द, सरस्वती तथा भिल्लनी आदिकी इनकी बनाई पूरे कदकी मूर्तियोंके देखनेसे सजीवकी भाँस होताहै । बम्बईमें अनेक पार्षियोंके पापाण वस्तु जो इन्होंने

यनाये हैं बिलकुल असह्ये मुताबिक है। महमदाबादमें महाराजी विश्वोरीपके स्मारक फंडमेंसे श्रीमतीकी मूर्ति बनानेके लिये इन्ह १४ हजाररुपयेमें देना दियागयाथा।

इनकी बनाई मंदिरामिसुअकी मूर्तिकी बगइके कारीगरी स्फुल्लये भित्तिये (१२००) रु म खनीदाथा। दूसरी मूर्ति सरस्वतीकी तैयार करके इहाँन पासकी मदर्शनीमें भेजीयी जिसके बगलेम सुअके सिवाय वहाँम कारीगरके सार्दिकिकेटेका इनके पास टेर लगगया। तीसरी मूर्ति भिन्ननी स० इ० १९०२ के विद्वादिधारकी मदर्शनीके लिये इम्हान तैयारकी थी जिसको टेर पियापकी कारीगरके सिवाय लाड वजन तक मसन्न हुयेये। सर जार्जयड पुट (१०००) जो देशी कारीगरीके नामी अनुभवहैं, लिखतेहैं कि "मिस्टर ग्वाथेका मूर्ति बनानेका काम मपूवहै"। आपका जन्म स० इ० १८७६ म टुवाहँ और आप नाम मात्रको अंग्रेजी तथा देश भाषा भी पढ़ें हैं।

यदु (यादवोंके मूलपुरुष)-राजा ययाति इनके पिता थे यनेसे पराकमी हुयेकि इनके वंशज इनके नामसे यादव (यदुवंशी) कहिल्याये। श्रीकृष्णजी इन्हीं यदुवंशमें हुये। कौरवोंके मूल पुरुष राजा पुरु इनके सहाय थे। यदुने कभी राज्य नहीं किया और इनके वंशभामभी कभी कोई राजा नहीं हुआ। मसिद्ध नीतिपंडित शुकान्वाय इनके नानाथे।

ययाति-महाभारत भादि पव १५ भाष्यापम लिखाहै कि "राजा ययाति चंद्रवंशके छठे राजाये, राजा नहुष इनके पिताथे राजा पुरुवरवा इनके परदासथे। यादवोंके मूल पुरुष राजा यदु और कौरवोंके मूल पुरुष राजा पुरु इहाँके दो परम पराक्रमी पुत्रथे"। हरिवंश पुराणम लिखाहै कि "राजा ययातिने इंद्रसे स्वर्गका रथ प्राप्त कक ६ दिनमें सर्वथ पृथ्वी तथा देवतामा ने जीत लियाया"। राजा ययातिवा बनाया एक साष्टाव मवतम महोषा (बुंदेलखण्ड) म मौजूद है। यादुपुरमे ४ मीठ कुने आजमसम गंगा तटपर पषठीकाहै जिसका राजा ययातिवा निलागतिहै हैं। राजा ययाति की २० वीं पीढ़ीमें राजा दुष्यंत हुये जिन्ह पुत्र भरतव नामसे इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा। राजा भरतने प्रथम राजा हस्तिनि दगितनापुर बसायाया। राजा हस्तीकी १४ वीं पीढ़ीमें कौरव पाँदव हुये। यारुमायीपरामायणके अग्रतुकार महाराज रामचंद्रके मृदमपितामहका नामभी ययाति था, इनकी गणना भी ययाति के प्रतापी मरेगांम है।

यवनाचार्य-दसों विवेकीरस।

याजूय-येबाषा भादमके पुत्र सामगी ११ वीं पीढ़ीमें हुये। इस राज्य इनके बापव और इपरादीम इनके दादा। हनरत मूठा तथा हनरत ईला पवन

इन्हींके वंशम उत्पन्न हुये । याकूबका दूसरा नाम इसराइलया, इनके १२ बेटे थे जिनमेंसे सबसे छोटा यूसुफया, पश्चात् इन्हीं घरानों परतोंकी औलाद बहुत बढ़ जानेपर १२ जातियोंमें विभाजित होगई और "वनी इसराइल" नामकी जात होकर अरबदेशमें रहनेलगी अरबमें एकदफे घोर भकाळ पडा, उन दिना याकूबका सबसे छोटा बेटा यूसुफ मिश्रमें बजीरया निदान यूसुफने सब वनी इसराइलको मिश्रम बुलाइया । ४३० वर्ष तक मिश्रमें रहनेके बाद जब वनी इसराइल तादादमें अत्यन्त बढ़गये तौ मिश्रके हाकिमने उनको अपने मुल्कसे निकाल दिया ।

४० वर्षतक इसराइल लोग अरबके जगलाम घुमते रहनेके बाद शहिर बिनभानमें बस रहे । पश्चात् हजरत मूखाने इसराइलको युहूदीधर्म प्रहण कराया (देखोमूसा) । स ६ से १०९ वर्ष पूर्व इसराइलोंने इब्रानी (हेब्रू) राज्य स्थापन किया जिसके दूसरे बादशाह इमरतदारुद् हुये ।

यास्कमुनि (वेदाङ्ग निरुक्तके कता)—निरुक्तम वेदाङ्गके कठिन शब्दों तथा मंत्रोंकी व्याख्या है । यास्कमुनि पारम्पर देशके रहनेवाले यम्कगोत्रोत्पन्न इत्युच्येदी थे । वैशम्पायन ऋषि इनका गुरु थे और सैतरीय इनके शिष्य थे । यास्कमुनि अपने ग्रन्थोंमें लिखतेहैं कि यास्कनामधारी चार और ग्रन्थकार मुझसे पहिले होचुके हैं । निम्नस्व प्रथ यास्कमुनिके रचे मिलतेहैं—“ पदप्रकृतिषण्डिता ” जो शौनकीय ऋक्मतिशाख्यके सूत्रोंका भाष्य छेकर बनाई गइहै और सामवेदीय श्रौतसूत्र । यक्षपीय विद्वानाङ्गके मतानुसार इनका समय स ६ से १०० वर्ष पूर्वहै ।

याज्ञवल्क्यऋषि—मन्वेयो तथा कात्यायनी इनकी दो शिष्ये थीं । “ शुक्लयजुर्वेदकी खडिता ” तथा “ याज्ञवल्क्यस्मृति ” नामक धर्मशास्त्रका ग्रन्थ इनके रचे हुये हैं । यक्षपीयविद्वानाङ्गके मतानुसार इनका समय स ६ से दो हजार वर्ष पहिलेहै । महाराज युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञम इनके उपस्थित होनेका घणन महाभारतमें है ।

युधिष्ठिरअन्ध (कर्मीरनेश)—यह राजा नरेन्द्रादित्यके पुत्र थि स से १२३ वर्ष पहिले कर्मीरको गद्दीपर बैठे । प्रथम तौ कुछ दिनातक इन्हाने पत्नी सावधानीसे काम किया परन्तु बादयो कुसङ्गतिमें पड़जानेके कारण विषय वासनामें फँसगये और लक्ष्मीमइसे मतवाले हा नीचाँकी समान योग्य पुरुषोंका भी विरहकार कालेलेगे । इसी कारण अष्टपुरुषपाने इनको त्याग दिया और मन्त्री लोगभी विगड् बैठे । भागे प्रशसा और पाँछे अनेक प्रकारकी निन्दा होनेके कारण इनका तेज नष्ट होगया । जब इनकी ऐसी दशा दूसरे राजाभाको मालूम हुई तौ उन्होंने कर्मीरको आयेरा । मन्त्रीलोग तौ देखी येही, एवं युधि-

छर, शत्रुभावे युद्ध करनेमें असमर्थ हुये और भवसर पाकर रामियों तथा हा
 सियों समेत घनको भाग गये। इनकी आँखोंसे कुछ घम दीपता या इंसोडिर
 देपियोने ठट्टेमें उनका नाम अम्बपुधिर रखलियाया। इन्होंने ३० वर्ष राज्य
 किया। इनके चरित्रसे यह उपदेश मिलताहै कि "समानदृष्टि होना योग्य
 महान् गुण है परन्तु राजाका समदृष्टि होना अपकीर्तिका हेतु होताहै"।

युधिष्ठिर महाराजा (पाँडव)- यह इस्तनापुराधीश राजा पाँडुके म्ने

पुत्र रानी कुन्तीके उदरसे थे। भीम तथा भजुन इनके सगे भाइयों और नरुप
 या सहदेव इनके सौतेले भाई रानी माद्रीके उदरसे थे। यह पाँचों भाइयों
 कहलातेथे, द्रोणाचार्यने इनको अनेक शास्त्रीय शिक्षा दीयी। कुछ दिनों का
 राजा पाँडुके हाथसे ब्रह्मदत्ता होगई एवं वह राज्य अपने अर्धे भाई धृतराष्ट्र
 सौंप घनको सिधारे। धृतराष्ट्रने कौरवनामक १०० पुत्रोंको जो शुरुहील पाँडुके
 साथ ईर्ष्या रक्षते थे। जब युधिष्ठिर बड़े हुये तो धर्मशास्त्री भ्रातृानुसा
 राजा धृतराष्ट्रने उनको युवराज नियत कियाइस बातपर दुःखान भादि कौरवों
 विरोध किया निदान छात्र होकर धृतराष्ट्रने पाँडवोंको १५ वर्षका घनवा
 और कौरवोंम ज्येष्ठ दुःषोधनको युवराजका पद दिया। घनवासके दिनामें युधि
 ष्टिरके छोटे भाई भजुनने स्वप्नभर विधिसे द्रौपदीके साथ विवाह किया जिस
 निजमातायी भ्रातृानुसार पाँच पाँडवोंने अपनी पत्नी बनाया। १५ वर्ष स्थित
 होनेपर पाँडवाने अपने ससुर पंजाब नरेश राजा द्रुपदकी सहायता पाकर क
 धृतराष्ट्रके राज्यबाट देनेकी माधनायी निदान कौरवों का पाँडवोंक बीषय
 बाँटदिया गया जिसमें पक्षपात वग कौरवोंको बड़े २ नगर तथा घनद्वय पाम्ने
 मिला और पाँडवोंको जंगल, ऊसर तथा उजाड़ पण्ड दिये गये। राज्य घ
 जानेपर महायज्ञ युधिष्ठिरने राज्यसिंहासनपर बैठकर जमुनातट इन्द्रम
 नामक नगर पसावर टसको अपनी राजधानी बनाया। इन्द्रमम्ने रावेर
 अथक विष्टीसे १२ कोसपर दक्षिणकी ओर पड़े हैं। १६ वर्ष राज्यपरनेके
 महाराज युधिष्ठिरने राजसूय यज्ञ किया जिससे वेणु देशांतरोंम उतका या
 स्तृत हुआ। यह बात कौरवोंको बाण समान गयी निदान उद्दान अपनी
 धानी इस्तनापुरमें एक शूतसभा स्थापनकी और वसमें युधिष्ठिरका भी
 या। वक्त सामम युधिष्ठिर अपना सयस्त्र दार गये और यदि धृतराष्ट्र
 भागर शान्ति स्थापन न करते तो पार उपद्रव होजाता। पाँडवोंको १२
 क्षिय फिर बनवासकी आज्ञा दीगई। बनवासके दिनामें कौरवोंम अनेक
 पाँडवोंका पयकरनेके विषये देखिन यह घनगये। १२ वष बाद यने
 पाँडवोंने अपना राज्य मांगा लेकिन कौरवोंने इनकार किया।पटीज
 युद्धको दूर जो गवि बंधन पूर्णपन राखाये छलानुसार ८१५ गठर
 १२

दिन पर्यंत कुरुक्षेत्रके मैदानमें हुआ । इस युद्धमें भारतके सब राजे महाराजे पांडवों तथा कौरवोंके तरफदार थे । अन्तमें सब शूरवीरोंका होम होकर भारतका मार्चीन गौरव नष्ट हुआ, कौरवोंकी हार हुई, और दोनों तरफके दलमेंसे केवल निम्नस्य १० मनुष्य बचे -

पांडवोंभाई पांडव, छोटे श्रीकृष्ण, सातवें सात्यकी, आठवें कृपाचार्य, नवें अश्वत्थामा और दशव कृतवर्मा । राजाओं महाराजाओंके बृहद्बल को तथा कुट्ट भिष्योंको रणशायी हुये देख महाराज युधिष्ठिरके चित्तमें बैराग्यका उदय हुआ परन्तु श्रीकृष्णजीके बहुत समझानेपर राज्य सिंहासनपर विराजे । पञ्चात् महाराजने अश्वमेध पढ़ाकिया और ३६वष पर्यंतभारत भूमिका एकछत्र धमराज्य किया । अन्तम श्रीकृष्णजीके परलोक गमन करनेकी खबर पाकर महाराज अर्धिर हुये और निज पौत्र परीक्षितको राजपाट सौंप भाइयां तथा रानी द्रौपदी सहित दृक्षिण, गुजरात, पंजाब तथा दारिका इत्यादिमें रोतेहुये घूमते किये और हिमाचल पर्यंतपर जाकर बर्कम खीजगये । छेस है कि बसूधाराके बफमें महाराज युधिष्ठिर चले २ ही गुप्त हुये और गिरेनेहीं । विक्रमी सम्बत्से पाहिले महाराज युधिष्ठिरके सम्बत्का प्रचार था । "धृतिक्षमा" भाषि धमके १० लक्षण महाराज युधिष्ठिरमें पूर्णरतिसे विद्यमानये, उन्होने कभी झूठ नहीं बोला और न कभी कोई धर्म बिरुद्ध काम किया और इसीलिये धर्मावतार कहिलाये । अर्धवंशक राज्य केवल ३० पीढीतक और महाराज युधिष्ठिरके पीछे चला । महाराज युधिष्ठिर युगांतरके समयमें हुयेये । समयने उनके वक्तमें बहुत कुछ पलटा सायाथा और रफते २ मनुष्याकी निपतमें जमीन आस्मानका अंतर पहगयाथा ।

उदाहरणके लिये उस समयका एक अभियोग महाभारतसे उद्धृत करतेहैं—
 'महाराज युधिष्ठिरके राज्यमें किसी मनुष्यने अपना पुराना मकान बेचा मोल छेनेवाला जब मकान बनवाने लगा तो उसमें बहुतसा गडा हुआ धन मिला । मुरन्त उसने मकानके पूर्व स्वामीको खबरदी और कहा कि यह धन आपकाहै इसे लीजिये । पूर्व स्वामिने उत्तर दिया कि मैं मकान बन् चुका इस कारण इस धनमें मेरा कुछ सख नहीं । इस प्रकार झगड़ते हुये वह दोनों यापालयमें आये, दोनों कहतेये कि पराये धनको हम नहीं छूसकते । समयके परिवर्तन की परीक्षा के लिये महाराज युधिष्ठिरने उस धनको राजकोषमें रखनेकी आज्ञा दी और इन दोनोंसे कहदिया कि यदि तुम मे से किसी को इस धन पर दावा हो तो फिर विचार करके आना । थोड़े ही वषवाद वे दोनों हाजिर होकर प्रायों हुये बचनेवाला कहताथा कि मैंने मकान बेचाहै नकि उसमें गडा हुआ धन । मोल छेनेवाला कहताथा कि जब मैं मकान मोल छे चुका तो बचनेवाला उसकी किसी भीषपर कुछ अधिकार नहीं रहा ।

रघुमहाराजा (रघुवंशियाके मूल पुरुष)—यह मयोप्याके सुवंशी
नरेश बड़े प्रतापी, यशस्वी तथा परोपकारी हुये हैं। सुयवश इन्द्राक मानके
रघुवंशक कह छाया। इनके पिताका नाम दिक्षीय था। वाल्मीकीय रामायण
लेखानुसार यह सूर्यवंशके २६ वे राजा थे और महाराज रामचन्द्र इनसे १४ वंश
पीछे हुये। शि पु तथा भागवतके लेखानुसार यह महाराज रामचन्द्रके ही
तामह थे।

रघुनाथदास बाबा (रामसनेही)—इनके बाप दुर्गाप्रसाद धरपुर
जाह्नग पंचवारके पाँडे पेंतेपुर जिल्ला सीतापुरके रहनेवाले थे। प्रथम
महाराज रामचन्द्रके चरणाम इनका अनुराग था। बड़े होकर इन्होंने मीरत
खेनाके गोठन्दाजाम नौकरकी और मयोप्यावासी बाबा मौनीदासके दुर्गा
क्रिया। नौकरकी हालतमभी यह सदैव हरि भजनम लवलीन रहते थे मापि
बचन मुक्तही मयोप्याम बड़े भाय और भजनके प्रभावसे प्रसिद्ध साधुओं
गिने गय अथवा यात्राको भानेवाल राज महाराज, सप्त साठवार अथवा ही इन
मिलते तथा भट पूजा दत्ते थे। सदाव्रत इनके यहाँ जारी रहता था और धर्मा
भण्डारभी हुआ करता था। यह देशकाळ्य अनुष्ठान करनेवाले धरपुर पुर
और अन्धे विद्वान् होकर भाषा कविता करनेम निपुण थे। हरिनाम सुमि
तथा विभ्राम सागर इनके ग्ने प्रथ देवने पाये हैं। यि स १००० में ६६ यवा
उत्सव इनका देशंत हुआ। इनके ५ माह औरथ जिनका घंटा पेश पुर्गे है
इनके कोई औराद नहीं थी। स्त्री इनकी मयोप्यागोला मनन छाया भादपी भी
थी इनसे पहिले विधाय सुतापी। इनका विषयम प्रसिद्ध है कि साबाय
नौकरकी हालतम रामभजनम लवर रहनेक कारण यह रूप इनको पहरे
जानेकी सुधि न रही तो मय रामचन्द्र महाराजने इनका रूपम बपासिद होकर
पठिरा दिया था। भिद्रा भि० पद्मगपचने रागाकी गढ़ा का जब सुखाने
फतेद विनाया तो उस अरसर पर भी यह अमर्गी जीवन मौजूद थे। इन
उल्लेख निम्नस्थ कवित्तम है—

कवित्तम।

तोप भट पनी छपनी नौकरकी लापके धाव चढ़ाई।
छे कुट फट्टट छाष्टिणी जिन जापके बहूतय फेर करार।
सुमत एक न एक कहे रघुनाथ धुमानम ताई।
गोठन मार गिपय गरी भिद्रा भुद्रा सम दत्त कुराई।

इस सम्बन्धमें प्रसिद्ध है कि यात्रा दुर्गम पावेही सब गौड़राज मापे
बड़े केवल रघुनाथदास हरिभजनम लवलीन होनेके कारण नहीं बहूत
पोंदी देर पीछे जब सब गोठन्दाज मागेपे तो फौजी अफसर रापर

देखते २ अकेले रघुनाथदासने गोलाकी बौलारसे बरोदलको परास्त किया । पश्चात् जब रघुनाथदास गैरहाजिर होनेके कारण डरते कांपते साहबके सन्मुख पहुंचे तो साहबने प्रसन्न होकर कहा कि "तुमने बड़ा पहादुरीका काम किया, हम तुम्हारा दजा बदलेकी रिपोर्ट करेंगे" । यह सुन रघुनाथदासके बित्तमें वैराग्यका उदय हुआ और यह सब रामचंद्र महाराजकी कृपा समझ इस्तेफा दे दिया । ऐसी बातोंके प्रसिद्ध होजानेसे बाबा रघुनाथ दासकी भसाधारण प्रसिद्धि तथा मानता हुई ।

रघुनाथ परशोत्तम पराश्रमे (प्रथम हिन्दोस्थानी सीनीयर रैगलर)--यह पूनावासी एक कृषिकार महाराष्ट्र ब्राह्मणके पुत्र हैं । ८ वर्ष की उम्रमें ४००० पास कक इङ्ग्लैंडको गयेये और वहा कइ वर्ष पढकर इन्हाने गणितशास्त्रकी "सीनीयर रैगलर" नामक अत्यन्त उत्कृष्ट परीक्षा स ई १८९९ की छाल प्रथम नम्बरसे पासकी । इनसे पहिले किसी दूसरे हिन्दोस्थानीने यह परीक्षा नहीं पास की थी अतएव ये प्रथम हिन्दोस्थानी सीनीयर रैगलर हैं । इस परीक्षा पास करनेकी मुबारकबादीमें बापसराय हिन्दने इनके पिताके पास ठार भेजाया । सेन्ट जान काठिजके म्यूज तथा हिंदोस्थानी अनेक यूनिवर्सिटीअने इनको अपना मेम्बर बनाया है । इनको ५००) रुपये से भी अधिक मासिकपर सूखरी नौकरी मिल सकतीहै लेकिन सजातीय पूना काठिजने इन्हाने १०० रु० मासिक खतनकी नौकरी म्बीकार करके देगदिन्द नन्द दियाहै ।

रघुनाथरावपेड़वा—द्वितीय पेशवा बाजीराव ? इनके बापपे और मन्त्रिम पेशवा बाजीराव इनके पुत्रपे । अथ तृतीय पेशवा बाळाजी बाजीराव दो बाइक पुत्र माधवराव तथा नारायण रावको छोड़कर मरगये तो उनके छोटे भाइ रघुनाथराव अपने भतीजाके बड़े होनेतक राजकाज संभाला । बड़े होकर माधवराव पंच हुये लेकिन स ई १७७१ में अपुत्र मरगये और उनके छोटेभाइ नारायणराव गद्दीपर बैठे । कुछही दिनों पीछे रघुनाथरावकी रानाने नारायणरावको सिं खिलाकर खतम करदिया । नारायणरावके अपुत्र सिंधारनेपर रघुनाथराव पेशा हुये लेकिन ११ महीने बाद नारायणरावकी विधवाके गभसे माधवराव नारायण नामक पुत्रका जन्म हुआ । पेशवा रघुनाथरावने तो उसको हरामया ठादिरास डेविन पेशवाके मंत्री नाना फर्नखीसने परासीखापी मददस माधवराव नारायण को पेशवाकी गद्दी दिलवाइंजय माधवराव नारायण पेशवा हुये ता रघुनाथरावको बड़ी भारी पेशवा दीगइ और इइंते अपनी बायीं सस सुरतमें रहकर पाठी । पेशवा रघुनाथराव बड़े सदार होपर गुणों अमाक समानिये । कवि पद्मानरे निम्नस्य कवित्त सुनाएर पेशवा रघुनाथरावसे १ छाल २५ इनार रूपये दान पायेये:-

यपित ।

सम्पति सुमेरुकी कुचेरकी जो पाये वहुं सुरत लुटावे विलम्ब कर धारना ।
 बड़े पद्माकर सुदेम हय हाथिनवे हलके हजारनको वितर बिगारना ।
 गज गण यशस महीप रघुनाथराव याही गजधोक यहुं तोत्रि द्दहारना ।
 याते गौरि गिरिजा गजाननको गोपरही गिरते गरेते निज गोदत प्रतारना ।

रघुराज सिंहदेव, जी सी यस आई (महाराजारीवाँ)—

भापने पूवज ब्यामदेव सुखकी राजपनने गुमरातसे भाकर प्राय म ई १८५७ में रीवाँ राज्य स्थापन किया था । ब्यामदेव बड़े प्रतापी ये निदान उनके संगत बघेले और उनका देश बघेलेछण्ट पहलाया । ब्यामदेवके पुत्र धरण देवत और बहुतछा मुन्क विजय किया और मंडलाकी राज पुंवारिसे विवाह करके बाँधोगदुका खिला पाया । धरणदेवसे बई पीढी पीछे विक्रमादित्य द्वय जिदोई स ई १६१८ में रीवापछापर चढ़ी खिला बनवाया और उसका भवनी राज धानी बनाया । अनेक पीढी पीछे स ई १८१२ म राजा जयसिंहके समथम रीवाँ राज्यने युटिश गयनमेण्टका भाषिपार्य स्वीकार किया ।

इन्दी महाराज जयसिंहके पीव तथा महाराज विश्वनाथ सिंहके पुत्र महाराज रघुराज सिंहदेव स ई १८१३ में जन्मे और स ई १८३४ में रीवाँकी गद्दीपर बैठे । महाराज रघुराजसिंह बड़े महारामोये, निज पूवजाके धर्मपर भाइठ रहकर रामकृष्णके भक्त्ये बपालकये और भीमदागयत तथा रामायणक अनुकर्मिये दिखाने कि-

दोहा—श्लोकह्नु श्लोकारथ नाहीं, जवळों पाठ कराहीं ।

तबळों अम्बु पानह्नु त्यागत, पुनिका भोजन पाहीं ॥

महाराज रघुराज इस समयके भाषा कवियोंमें सर्वोत्तमये । विद्वानोंका सत्कार करतेये । छात्र सन्तोंके सन्मानीये । सवतीर्थोंकी यात्रा करवायेये । दान पुण्यभी खूब दियाया । कई दफे सोने चाँदीका हुला चढ़ायाथा । रामकाजकी भोर खूब ध्यान देतेये । प्रजापालनमें दक्षिणत ये । राज्यके कर्मचारीगण उनसे प्रसन्न ये । घृष्टिदा गवर्नमेन्ट उनको पसन्द करतीथी । निम्नस्य ग्रंथ भाषा पद्यमें उनके रचे हुये हैं -

भक्तमाळा (रामरसिकावली) रामस्वयम्बर, रुक्मिणीपरिणय जगन्नाथशतक, रघुराजविद्यास, यदुराजविद्यास विनयपत्रिका, सुन्दर शतक और भागवत पर "भारुन्वाम्बु निधि" नामक तिळक । महाराज रघुराजके समयमें रीवों राज्यका विस्तार १३ हजार वर्ग मीलथा । घस्ती १३ लाख मनुष्योंकीथी । सेना में ६९१ सवार, ३१३५ पैदल तथा ५५ तोपथी । स ई १८८० की सालमहाराज रघुराज सिंहदेवने परलोक गमन किया और राजकुंवर धेङ्केशरमण सिंहदेवजू (वर्तमान नरेश) गद्दीपर बैठे ।

रङ्गाचार्य बृन्दावनके—इनका जन्म वि स १८६४ में द्राघिड ब्राह्मण श्रीनिवासाचार्यजीके घर हुआथा । दक्षिणदेशमें कौन्बीपुरीसे ५ कोस पूर्व इनके पिताका निवास था । पांच वर्षकी उम्रसे इन्होंने पढ़ना आरम्भ किया और व्याकरण तथा काव्य पठनेके पीछे वि स १८८५ में विशेष विद्या पठनाय काशीको चले भाये और वहाँ रहकर अभ्यासरणमहाचार्यसे न्यायादि शास्त्र पढ़े । माँडा राज्यस इन्को कुछ वार्षिक मिलता था जिससे इनके भोजन छाज इनका प्रबंध होताथा । वि स १८९० में स्वामीरङ्गाचार्य ब्रजको पधारै और एव छोटेसे मंदिरमें ठहरे तथा कुछ दिनों पीछे गोवर्द्धनकी गद्दी केको प्राप्तहुये । मथुराके सेठ राधाकृष्णजीने वि स १८९१ में इनके उपदेशोंको सुनकर जैनमत छोड़ वैष्णव मत ग्रहण किया तथा इनको शुरु करलिया । पश्चात् सेठजीने इनकी आज्ञासे श्रीरङ्गाजीका बृहत् मंदिर वृन्दावनमें बनवाया । जिसकी सप्यारीम प्राय ४५ लाख रुपये खर्च हुये और ३५ हजार रुपये वार्षिक खर्चकीभू सम्पत्ति भोगरागके खर्चके निमित्त लगाई गई और यह सब दानपत्र द्वारा इनके अर्पण करके सेठजीने अपना स्वयं उसमें कुछभी नहीं रक्खा । मृत्युसे कुछदिन पहिले स्वामी रङ्गाचार्यको चिन्ता हुई कि यह सब वैभव भगवा इनकाहै कहीं ऐसा न हो कि हमारे वंदाज इसे कुमार्गम नष्ट करदेव निदान उन्हेंने मन्दिरकी रक्षाका भार एक वैष्णव कर्माटीको सौंप दिया और अपनेको तथा अपनी सन्तानको वैष्णवोंके भरोसे छोडादिया ।

वि० स० १९३० में स्वामीरक्षाचार्य परमधामको सिधारे । यह बड़े संश्लेष
चिन्त उदार भावसे परिपूर्णया न्याय वेदान्तके बड़े विद्वानये, स्वभावमें हृष्ट
सप्रता अवश्ययी पर घह तेजस्वितासे रिक्त नयी ।

रणछोडलाल (भानयेबिछ रणछोडलाल सी आई०ई०)-स इ १८५१ में
आहिमदाबाद(सिंध) म जन्मेंये। नागरब्राह्मण छोटेशाल इनके पापये। इनके पूर्व
राजा महाराजाओंके दर्बारमें सख्तपाठ्याधिकारी रहेये एवं इनका तंश प्रतिष्ठितपा ।

इन्होंने अंग्रेजी तथा गुजराती भाषाकी शिक्षा पाईयी और सस्यूत कल
कारकी भले प्रकार जानतेये । स० इ० १८४४ में पंच मद्रिलके अखिलेन्ट मुन-
सिन्टेन्डे-इका आहूदा इनयो मिला । १० वर्षतक इसमोहयेपररहपर इन्होंने
इस्तेफा दे दिया और व्यापारकी ओर मनलगानकर आहिमदाबादम रुईका पंचजाण
किया । यह गुजरातमान्तमें रुईका पहिल्लाही पंच था, पचासजनकी दूधानेकी
अनेक लोंगोंमें आहिमदाबाद तथा गुजरातमें रुईके पंच जारी किये इसीकारण
उस देशवाले रणछोडलालजीको " मिल इन्डस्ट्रीका पिता " कहते हैं । या
सूयाभम्भईकीलेजिसलेटिव कौंसिलये मेम्बरभो रहेये और इसीलिये भानरेवि
पहल्लातेये सदैव मधुरभाषणकरते और देशोपकारमें तत्पररहतेये। इनके उपदेश
विहीका चिन्त नहीं दुखताया । आहिमदाबादकी टेम्पलस सोसाइटीकेभी आर
प्रधानभे। आहिमदाबादम पुत्री पाठशाळा, अतिथालय तथा चिबिरिछालय भानने अपने
खर्चसे खोलेये, जो अबतक जारीहैं । आहिमदाबाद मुनिसिपैलिटीमें आपकी
प्रधानताके समयमें पार्किने नल शहरमें जारीकियेये। स० इ० १८८५ में इति
हासयनमेंटने प्रसन्न होयर आपको सी०आई०की पदयी प्रदानयीयी। येस धनाहय
दानेपरमी नृया खर्च करना पसंद नहीं करतेये । आपनेहिंदोस्तानके अनेकगुरुंमें
देशाटन कियाया और कुटुम्बसहित सयतीयोंकी यात्रा कीयी । २४ पेट बीमार
दिकर स०ई०१८९८म परलोक गमन किया। सब सकारी दफतरां, दुर्गा बापादर
तथा यात्रारने एक दिन बंद रहकर शोक मानाया । आपक सुयोग्य पुत्र आप
लालजीने अपने देश मान्य पिताका उचित स्मारण चिह्न स्थापन कर्णायं इ
छालरूपया पृष्टेश गवर्नमेंटको खोया ।

रणजीतसिंह महाराजा (पञ्जाबकेशरी)--इसका पान महार
सिखोंकी सुकरचक्रिया मिसरके सदारय और इनको ८ वर्षका छोटकर मराने
इसी कारण इनको विदोपशिक्षा नहीं मिल सकीयी, केवल हिंदी तथा सं
भाषा कुछ जानतेये । लेकिन इसकी बुद्धिबड़ी बिलक्षणयी, भावमेंको दे
बचरी नच २ का हाट जानतेये और बड़े २ विद्वानयी इनकी समता ८

असमर्थ रहतेये । बहूपनमें सीतलानिकलनेसेइनकी एक भांखभी जातीरहीयी । इनके बापके छोड़े हुये छोटेसे इलाके का प्रबर्धे फुल्ल दिनोतक इनकी माता दीवान मुक्खाकी मवदूखे करतीरही ।

इन्होंने बड़े होकर दीवानको भलाहिदाकर दिया और माताको बदखलन देख मारदाळा । पश्चात् क्रमशः लाहौर, भटक, कर्मीर, मुलतान, पेशावर, कांगडा इंग इत्यादि मुल्कोको विजय किया और छोटेसे सदांरसे सर्वत्र पंजाबके महाराजा बनकर पंजाबकेशरी कहिछाये । अफगानिस्तानके पठानतक इनका लोहा मान गये थे, और अंग्रेज लोग भी इनके द्वार तथा फौजका दुरुस्त करीना तथा सामान देखकर दंगरहिजाते थे । स ई १८०८ में जार्ज मिन्टोगवरनर जनरलार्हिंद और महाराज रणजीतसिंहके बीच सरहद्दके सम्बन्धम संधि हुई थी जिसका पाठन महाराजने अन्त समयतक दृढता सहित किया । स ई १८१७ में महाराजने अवसर पाकर शाहशुजा अमीर काबुलसे कोहनूर हीरा छीन छिया और स ई १८३६ म अपने राज्य भरमें छौंठी गुलाम बनानेकी आळषदकरदी । स० ई० १८३९ में कुछ दिन बीमार रहकर महाराजने परलोक गमन किया । अन्त समय दान पुण्य भी खूबही किया, एक करोड रुपया तो मरने हीके दिन पुण्य हुभा, ४ रानियें और कई छौंठियें सदी हुई और आपके पुत्र स्यादसिंह, शेरसिंह तथा दलीप सिंहने आपके पीछे राज्य किया लेकिन आपसके झगड़ेके कारण स० ई० १८४९ कीसाल पंजाबका राज्यबृटिश गवर्नमेंटके गालमें पुसगया और दलीपसिंहको पेन्शन देखकर इज्जत भेजदियागया । महाराज रणजीतसिंहका राज्य सर्वत्र पंजाब पर होनेके सिवाय पश्चिमोत्तरमें हिंदूकुश और मुळेमान पर्वतों तक फैला हुआथा, इसमेंसे प्रायः दो करोडरूपये वार्षिक आयका मुल्क भागीर तथा सुभाकीमें देखखाया और सब प्रकारकी सेना मिळाकर दोलाख दसहजारपी। महाराज डील डौलमें छोटेये लेकिन वीरता और तेज उनके ब्यहरे पर दमकताथा, रणमें उनका साम्हना कोई नहीं करसकताथा और घोर आपत्तिपडने परभी वह कभी नहीं घबरतेये । घोड़ेपरबठने, शिकार खेलने और हवाखानेको जानेकी उनकी बानपी, प्रति दिन ग्रंथ साहिब सुनतेये और सदैव राजकार्जम दसधिसरहकर दीनदु खियोंको सन्तोष दिखाना अपना कर्तव्य समझतेये ।

काशीमें विश्वेश्वर मायके मंदिरपर और अमृतसरमें दर्बार साहिब पर खोने का पत्र उम्होंने मढयाया था । विधादार्पवसेतु नामक रामनीति विषयक संस्कृत

अप्य भी उन्हें कि हुकमसे बनाया । उनकी समाधि छाहौरम किलेके समीप कर सक बनी है ।

रणजीतसिंहजीकुँवर (भविष्य किकेटिभर अर्थात् गद्दबहाके बिराडाँ)—मुल्ककाठियावाड़में स ई १८७१ की साल जन्मे । छाटियावाड़क काठ साहिबने इह गोदलिया । जाम साहिबके बाद अनेक कारणसे इनको गद्दी नहीं मिली परंतु पह वायदा कियागया कि भवसर मानेपर आपका पुत्रको गद्दी दी जायगी । १० हजार रुपया वार्षिक आपका जामसाहबकी गद्दीसे मिलताह और आप छहनाम रहसेहैं । राजकुमारवालिज रामकोट और ट्रिनिटी काठिन कैम्ब्रजमें आपने शिक्षापाई थी । इंग्लैंड तथा भारतके विभाकी समस्त क्रियेट यमें टियोंको आपने इरादियाह और कई दूजे हिन्दोस्तान भाकर शिमला तथा कश्मीरमें महाराज पटियाळाकी टीमम शरीकहोकर नाम पाया है । स ई १८९१-९२ की साल कैम्ब्रजवालिजकी समस्त क्रियेट कमेटियोंमें सबसे अधिक रन आपहीने किये थे । अंग्रेजीमें आपने एक पुस्तक क्रियेटके खेलके विषयमें रची है ।

रणवीरसिंहजी—(महाराजा सर रणवीरसिंहइंद्रमहेंद्रबहादुर, जी सी. यस भाइ जम्बू प कर्मीरनरेश)—आपके पिता महाराजा गुलाबसिंहजीगो स ई १८४९ में कर्मीर महलका राज्य पृथिशगवर्नमेंटने खोपाया । गुलाबसिंहजीगो पूयज पूर्वकाठम कर्मीरके राजाये लेकिन समयके हेर परसे पृथ दिनके छिम राज्य छिन गया था । स ई १८५७ में महाराज गुलाबसिंहके परमधामको सिधारनेपर उनके पुत्र महाराज रणवीर सिंहजी गद्दीपर बैठे । आप पिढानोंका पूरा साकार परतेये । अनेक अवसरपर पृथिशगवर्नमेंटकोभी आपने मदददी थी जिसके पुरस्कारमें गवर्नमेंटमें आपका जी सी यस भाई तथा गुर्जर शाहनाह जादी विकटोरियाकी पदवीसे विभूषित किया था । अंग्रेजी सेनाके आप अनेक जन्मरखये । आपकी खलामी तोपके २१ पैरोंकीथी । स ई १८८५ में आपने परलोक गमनकिया और आपने ज्येष्ठपुत्र महाराज प्रतापसिंह इन्द्रमहेंद्र बहादुर (वर्तमाननरेश) गद्दीपर बैठे । महाराज रणवीरन निपमति भवे दीकी गिरते हुये हिन्दुधर्म तथा हिन्दुजातिके सुधारके लिये बहुतकुछ दयाग किया था ।

रत्नाकर (सस्कृतकवि)—देखो राजानप रत्नाकर ।

रमेशचन्द्रदत्त—(सर रमेशचन्द्रदत्त, जी० प० ३०, सी० भाई० ई०) आप ब्राह्मी गायक्य हैं, आपने इंग्लैंडभाकर सिरील सर्किटकी परीक्षा समीपकी और बहुत

सेविल सचिवमें ज्वायन्ट मैजिस्ट्रेट नियतहोकर हिंदोस्तानको घापिस आये ।
 और ३ कामिस्तरके पक्षको प्राप्तहुये और स ई १८९८ में पेन्शनपाई । स ई
 १८९२ में घृष्टिश गवर्नमेंटने प्रसन्नहोकर भापको सी भाई ई का खिताब
 दिया या । प्राचीन भारतका इतिहास आपने अंग्रेजी भाषामें लिखा है । पेन्शन-
 नछेनेके बाद आपने इंग्लैंड जाकर कैम्ब्रिजकालिजमें पूर्वी भाषाओंके प्रोफेस-
 रका ओहवा पाया । ऐसे कंचे ओहदे आजतक किसी दूसरे हिंदोस्तानीको
 नहीं मिले हैं । स ई १९०४ से महाराजा घरोडाने आपको अपने राज्यका मुख्य
 मंत्री बनाया है ।

रविशर्मा (जगत्प्रसिद्धचित्रकार)—यह पूनाके रहनेवाले क्षत्रीवं-
 शोद्भव, देशमान्य, पृथ्वीप्रसिद्धचित्रकार हैं । फिरेङ्गीशिल्पकारमी इनकी कारी-
 गरीको देखकर अचरित है । महारानीविक्टोरियाके भवनमें इन्होंने इङ्ग्लैंड
 जाकर भारतीय ढंगके चित्र लिखकर राजाकी छपाधि पाईथी । अनेक चित्र
 बनाये हुये अत्युत्तम हैं और उनकी छवि मनहरण है । घम्बई तथा पूनामें
 इन्होंने चित्रशालाय स्थापनकी हैं जहांसे इनकी बनाई रगीनवस्त्रों खरीदीजा
 सकतीहैं । स ई १९०३ में विद्यमानहैं ।

रमेश्वरसिंहजी—(महाराज सर रमेश्वरसिंह बहादुर, के सी एस आई,
 २^{नं०} ॥ नरेश) महाराज रमेश्वरसिंहजीके घर स ई १८६१ की साल जमे। पूरे
 १० वर्षों नहोने पायेये कि पिताका देहान्त होगया और आपके बड़ेभाई महा-
 गणेशजीरसिंहजी ६ वर्षकी उम्रमें दर्भगाकी गद्दीपर बैठे । राजकुमारोंकी
 गवर्नमेंटकी तरफसे कोर्टआफवार्ड्सका इन्तजाम हुआ और
 क्रमशः कई अङ्ग्रेज शिक्षक राजकुमारको शिक्षादेनेके लिये नियत हुये ।
 पश्चात् कनिष्ठकालिज बनारसमें राजकुमारोंको भेजागया । महाराज रमेश्वरसिं-
 हजीका संस्कृतपढ़नेकी ओर ध्यान विशेषरहा । स ई १८७७ में दोनोंराज-
 कुमारोंको जिमीनारीका कार्य सिखाया जानेलगा। इसीसाल महाराजरमेश्वर
 सिंहकाविवाह हुआ । स ई १८७९ में आपके बड़े भाई छद्मीश्वरसिंहजीको
 राज्यका पूरा अधिकार सौंपा गया । थोड़ेही दिनों पीछे किसीकारणसे दोनों
 भाइयोंमें वैमनस्य होगया जिससे महाराज रमेश्वर सिंहजीने कईवर्षतक भाग
 छपुर भादि जिल्लोंमें ज्वायन्ट मैजिस्ट्रेट के ओहदेपर काम किया । स ई १८८१
 में बंगालके लफ्टिनेन्ट गवर्नरने भाइयोंमें मेल करा दिया जो अंततक चिरस्व्याई
 रहा । स ई १८८५ में आपने मौकरी छोड़दी और भाईसे मिली हुई अपनी
 गृहव जागीरकी देख भाल करते रहे तथा समय पानेपर योग्यकर्मचारियों सहित

भिन्न २ तीर्थोंकी यात्रा करते रहे। स ई १८९७ में कामाख्या में एकपक्षी घाट आपने बनवाया और महामाया भुवनेश्वरीके मंदिरका जंगोत्थार कराया। स० ई० १८९८ में महाराजलक्ष्मीश्वरसिंहके निःसन्तान सिंघारनेपर आप दर्भ-गाराज्यके माछिक हुये दर्भगाकी प्रजा आपके शासनमें सुखचैतसई और हिंदोस्तान भरके हिन्दुभाषी आपपर पूज्य बुद्धिहै क्योंकि आप भारत में महामंडलके प्रेसीडेन्टहैं। आप स्वधर्मप्रिय, विचारशील, नीतिज्ञ तथा सुभाग पुण्य हैं और श्रोत्रियवर्गीमैयिक ब्राह्मणहैं। आपके पूज्य महामहोपाध्याय मरे ठहुरने अपाराविद्याके पुरस्कारमें बादशाह अकबरसे दर्भज्ञाया राज्यपाया

रसखान (भाषाकवि)—सम्पदमहोम विदानी जि० हरदोईवाहे रसखान नामसे पदपूर्तिहै। यह अपने घरसे बड़े भारी रसये। पहिले य किसी स्त्रीपर आसक्तये लेकिन यह अभिमानीनीपी। भागवतके पाँच अनुवादमें गोपियोंके विरहकी कथा पढ़ इनका चित्त मानुषीय प्रीतिसे इतक श्रीकृष्णचंद्रके चरणोंमें छगगया। फिर तो यह किसी स्थानपर भागवतके कथा सुननेको जानेछगे और वहाँ पर एक दिन श्रीकृष्णजीका सुन्दर चित्र देख इन्होंने ध्यासजीसे पूछा कि "यह छावकी सूरत याछा कहाँ रहता है और इसका नाम क्या है?" ध्यासजीने उत्तर दिया कि "यह वृन्दावन में रहताहै और इसका नाम रसखान है"। पश्चात् यह प्रजकों गेटेगये और श्रीनाथजीके मन्दिरमें पहुँचे लेकिन भीतर न घुसने पाये। अस्तु निराग हो गोविन्दगुण्डपर कई दिनतक बिना भोज जलये पड़े रहे। गुण्डि पाकर गोस्वामी सिद्धल नाथजी (वि स १५७२-१६४२) इनको श्रीनाथजीके समुत्त से भाये। दणत पातेही इन्होंने निःसस्य दोहा पढा—

दोहा—कहा कये रसखानको, दूतकचोर छवार।

जो मधु दीनदयालुहैं, तो मापनपापनहार ॥

पहान घरके जब यह चलेछगे तो गोर्खीजीने इनको पूज्यप्रतिमें बुराई आज्ञा अपना लिया और कहा कि "भरे सब कहाँ जातु है"। रसखानकी कविता निपट छलित, माधुर्यताप्रे भरपूर है। गुमान रसखान तथा प्रेमशक्ति (वि स १६७१) इनके रचे प्रप हैं। कई सौ कुटुम्बर दादे भी इनके बनये मिलसे हैं। श्रीकृष्णचंद्रकी भक्तिसे चित्त इनका छाति होगया। अन्त समय तक फिर कहीं नहीं गई और प्रजकी रजमें मिलगये।

रसिक विहारी (भाषाकवि) यह झांसीकी रहने वाली किसी विधवा ब्राह्मणीके पुत्र थे । माता इनको बचपनहींमें लेकर अयोध्याजीकी चली आई थी और कनक भवनमें रहती थी । बड़े होकर यह कनक भवनके महन्त के शिष्य होगये लेकिन महन्तजीके पीछे मुकद्दमा छड़ाने परभी गद्दी इनको नहीं मिली । इनका असली नाम जानकीदासया लेकिन कविता रसिक विहारी नामसे करतेये । इन्होंने अनेक तीर्थोंमें पर्यटन कियाया, अन्तको मेवाड़में पर-लोक गामी हुये । समय इनका स ई १८४० से १८९० तक निश्चय है । कविता उत्तम करतेये । निम्नस्य ग्रंथ इनके रचे हुये हैं—

रामायण सप्तकाण्ड, सुपश कदम्ब, सुमति पत्नीसी, रसकौमुदी नामक विहारी सप्तसर्गके खुने दोहोंका कवित्तोमि टीका ।

रहिमन, रहीम—देखो मन्जुलरहीम खानखाना ।

राठबुद्धहाड़ा (बुंदीनरेश)—अय्यपुरनेरेश जयसिंहसवाईकी वंशिन इनको विवाहीपी । मुहम्मदशाह मुगल सम्राट दिल्ली के दरबारमें इनके समान किसी वृद्धे राजाकी प्रतिष्ठा न थी । एक दफे जब सैयद बारहने मुहम्मदशाह को राज्यराहित करदियाथा तो इन्होंने सैयदका मुँह तलवारसे फेर दियाया । यह उम्रभर बाबशाही दरबारमें रहे । भाषा कविता अच्छी करते थे और कविकोषिदोंके सन्मानी थे । स ई १७४० में इनके साठे जयसिंह सवाईने इनका राज्य छीन लिया ।

राधोजी भोंसला (वरारके भोंसला राजवंशके मूल पुरुष) इनको पेशवाबाजीराव प्रथमने “ सेना साहबसभा ” अर्थात् मरहटासदरोंकी सभाका सेनापति स, ई १७३४ में नियत कियाया और स ई १७४० में बरा रका राज्य दियाया । राज्यपाकर नागपुर में इन्होंने अपनी राजधानी स्थापन की थी । वही साल मरहटोंमें राज्य सम्भ-यी धोर विप्लव उपस्थित हुआ क्योंकि सताराके राजा रामराजाको गद्दीसे उतारकर पेशवाबाजीराव तथा राधोजी भोंसलाने सतारा गढ़म कैदकर दिया और उसका राज्य आपसमें बाँट लिया। राधोजी भासला तथा रामराजा सविन्धीये क्योंकि दोनोंही मरहटाराज्यके मूल पुरुष महाराजा शिवाजीके वंशजये। इतिहास साक्षी है क्योंकि महाराज राधोजी बड़े साहसी वीरपुरुष थे । स ई १७५३ में उनके मरनेके बाद भोंसलाकी गद्दीपर निम्नस्य क्रमसे राजे बैठे—

राधोजी भाखला मयम	स ई १७५३ में मरे
रानोजी भा० (राधोजी भा० १ के पुत्र)	" १७७३ "
माधोजी भा० (" " के भाई)	" १७८८ "
राधोजी भा० द्वितीय (माधोजी भा० के पुत्र)	" १८१६ "
परसोजी भा० (राधोजी भा० २ के पुत्र)	" १८१६ "
परसोजीभा० भाषा साहित्यने गद्या घोट कर मारहाला	
भाषा साहित्य (मद्रासेजोकी सहायता से गर्दीपर बैठे है), परतु" १८१८ में	
राजसे उतार दिये गये-	
प्रतापसिंह नारायण(राधोजी भाखला १ के पौत्र)	" १८१८ में मरे
राधोजी भा० तृतीय	" १८५३ में "

स ई १७५३ में राधोजी भा० तृतीय अपुत्र मरगये, उनके दत्तक पुत्रके श्रुतिशासनमदने राग्य देना स्वीकार नकर पेशान करदी और खुपकेसे भौखला घा वृद्धत राग्य पाल्लाकरलिया । महाराजा भाखलाके धराज भाजकळ भी नागपुरमें रहते हैं और बड़े भाषी जमीदार हैं ।

राजशेखर (संस्कृतकवि)—मधुसूदन, बालरामायण तथा बाल भारत इनके बनाये संस्कृत ग्रन्थ देखाने योग्य हैं । मधुसूदन शंकर शिष्यिजयके एक लेखसे ज्ञात होता है कि राजशेखरजी केरल देशके जैनी राजाये । जीवन बाल इनका विक्रमकी १२ वीं शताब्दी निश्चय है । इनकी शार्वूल विक्रीकृत गचना भाष्यंत रमणीय है और इसी कारण क्षेमेद्र कविने इनके विषयमें लिखा है कि—

स्तो०—शादूलविक्रीदितरेव प्रख्यातो राजशेखर ।

शिक्षरीष परं वक्रै सोष्टेक्षैरुच्यशेखरः ॥

राजानकरत्नाकर (संस्कृतकवि)—इनके नामके साथ राजानक शब्द उपनाम है जैसे बुधे, तिषारी आदि शब्द नामके आदि या अन्तमें होते हैं । इनके पिताका नाम अमृत भाग्यया यह वि सं की दशार्थी शताब्दीके पूर्वार्द्धमें काश्मीरमें हुये । काश्मीरनरेश भवाम्निषम्मिके वषारसे इनका खबन्ध था, निम्नस्थ ग्रन्थ इनके बनाये हुये है—

हरविजय महाकाव्य, वक्रोक्ति पंचाशिका और ध्वनिगाथापञ्जिका । हर विजय महाकाव्य जिसमें ५० सर्ग हैं आयुषमहै इसकाव्यकी उत्तमता वैस राजशेखरजीने कहा है कि—

श्लो० मास्म सन्तुदि स्वात्वारः प्रायो रत्नाकरा इमे ।

इत्थीवसत्कृतो धाम्नाकाविरत्नाकरोऽपरः ॥

राजारामशास्त्री—यह काशीवासी प्रसिद्ध पंडित सब शास्त्रोंमें पारंगत होनेके सिवाय व्याकरणमें अपने समान भारतमें कोई दूसरा नहीं रखतेयोगाय सब ही रजवाड़ेमें इनकी निर्णोत व्यवस्था मानीजातीथी । स्वामें इनका शास्त्रार्थ सुनकर बड़े २ पंडित सन्तुष्ट होतेथे । महाराज संधिया इनकी बड़ी प्रविष्टा करतेथे । प काशीनाथ शास्त्री इनके विद्यागुरुथे । संस्कृत काळिज वनारसमें धर्मशास्त्रके प्रोफेसरका पद इनको प्राप्त था । ५० बालशास्त्री सरसिंहे आदिविषय विद्वान् इनके शिष्यथे । ईश्वरचंद्र विद्यासागर भावि विद्वानोंके विधवा विवाह सभर्षी आन्दोलनका प्रवाह रोकनेके लिये इन्होंने “ विधवोद्वाह शंका स्वमाधि ” नामक संस्कृत ग्रंथरचया जिसका टीका वादको बालशास्त्राने किया था । दक्षिण देश वासियोंकी मार्यतापर इन्होंने बालशास्त्री इत्यादि शिष्य प्रशिष्योंके साथ दक्षिण देशमें जाकर विधवाविवाह सभर्षीके प्रबल प्रवाहको रोकया । वि सं १९३१ में सिधारे ।

राजेंद्रलाल मित्र (राजा, डाक्टरराजेंद्रलाल मित्र, राय-तंबहादुर, यल० यल० डी०, सी०आई०ई०) भास्के प्रथम काळी दास मित्रें कायस्थको बंगालाधिपति महापज मदीसुरने बसौजसे बुढापाया-काळी दाससे २० पीढी पीछे पीतांबर मित्रहुये जोनवाब वजीर अवधकीतरफसे दरबारदिल्लीमें बकीछये और जिनको दरबार दिल्लीने राजा गहादुरकी पदधी तथा तीन हजारों का मनसब और जिला इलाहाबादमें एकबड़ी जागीर दीधी इन्हीं रामापीतांबर मित्रके पौत्र रामा जन्मेजय मित्रकेघर स० ई० १८३४ कीसाळ सूरह (बगाल) राजवाड़ीमें राजेंद्र काळ मित्रनामक पुत्रका जन्म हुआ । आप १४ वर्ष की उम्रतक बंगाली फारसी और अंग्रेजी पढ़तेरहे । १५ वर्ष की उम्रमें डाक्टरी पढनेकेलिये मेडीकैल काळिज कलकत्तामें भरती हुये । परंतु कुछ समय पीछे जब इन्होंने डाक्टरोंकी विशेष शिक्षा पठनार्थ इंग्लैंडजाना चाहा तब पिताने इनको स्कूलसे उठालिया पश्चात् इन्होंने कानूनपढना शुरू किया लेकिन जिससाळ कानूनका इम्तिहान दिया उससाळके पथें चोरिदोबाने केकारण इम्तिहानही मनसूख होगया । इसप्रकार वार २ निराश होकर इन्होंने संस्कृत, हिंदी, फार्सी तथा उर्दूकाव्यको विचार सहित पढना आरभ किया २३ वर्षकी उम्रमें एशियाटिक सोसाइटी बगालमें उपमंत्री तथा पुस्तकाव्यक्त

या मोददा भापकोदिया, जिस पर १० वर्षरहकर सैकड़ों दुष्प्राप्य प्राप्त प्रयोगों के देखनेवा भवसर आपकी मिळा । पश्चात् वलकसेके गवर्नर वाइंसवा उच्चरद आपको प्राप्त हुआ जिसपरवहुतादिनातक रहे । संस्कृत, फि फार्सी, उर्दू, बङ्गला और अंग्रेजीमें सैकड़ों पुस्तकें आपने रचीयाँ और, अ प्राचीन बार्ताओंका पता लगायाया ॥

आप कलकत्तापूनीवर्सिटीके फेलो थे और उक्त यूनीवर्सिटीने सबसे पाँच ० ५०० ० डी० का खिताब आपकीको दियाया । पुरातावादि अनेक फि ओंमें पारब्रत होने, देशहितकरने, सैवदोंग्रयस्वने और कायदक्षता, राग्य तथा उदारताका पूर्ण परिषयदेनेके उपलक्षमें ब्रिटिश गवर्नमेंन्टने आपकोस० १८७७ में रायबहापुरका खिताब, स० ई० १८७८ में सी० आई० ई० की उधि तथा स० ई० १८८८ में राजाका खिताबदियाया । स० ई० १८९८ में परल गामी हुवे । कुंवर रामेंद्रलालमित्र वी० ये०, वी० यल०, सी० आई० ई० तथा कुं महेंद्रलाल मित्र आपसे दो पुत्रहैं ।

राधाकृष्णसेठ (वृन्दावनमें रङ्गजीके मन्दिरके निर्माकर्ता)—यह सेठ छद्मी रङ्गजीके छोटे भाई थे (देखो छद्मीचन्द) । इन्हें १० रङ्गाचार्यके उपदेशसे जैनमत छोड़ वैष्णव धर्म ग्रहण किया और उन गुरु कर लिया । पश्चात् उनके कयनानुसार वृन्दावनमें श्रीरङ्गजीका मन्दिर स ई १८४५ में बनवाना आरंभ किया । सेठजीके पासका कई लाख रुप उठगया परन्तु मन्दिरकी छततक मपटपाई । जब यह बात सेठ छद्मीचन्दय माळूम हुई तो उन्हाने प्यारे भाईका चित्त बुझाना अनुचित समझकर ५ लाख रुपयेके खर्चसे स ई १८५१ में उक्तमन्दिरकी तय्यार करादिया और भोगराग, उत्सव, मेला आदि मन्दिर सम्बन्धी खर्चके लिये ५३ हजार रुपों वार्षिक खर्चतका प्रबंध जो ३३ गांवाँसे भाता है करदिया । पश्चात् सेठ राधा कृष्णने मन्दिरकी सम्पत्ति अपने गुरु रङ्गचार्यको दातपत्र द्वारा देधी । राधाकृष्णकी प्रीति गुरुवरणोंमें अलौकिकथी । एक वृके वर्षाऋतुमें सेठने वृन्दावनमें बहु मूल्यवस्तु पहिने लळे जाते थे अकस्मात् बूसरी तरफसे आते हुये १० रङ्गाचार्य साम्हने पड़गये, देखतेही सेठजीने अपने नियमानुसार रुपों को खाष्टाङ्ग वण्डवतकी जिससे सब वस्तु खराब होगये क्योंकि रास्तेमें कर्षण थी । गुरुके प्रेमाभुनिकल भाये और शिष्यको हाथ पकड़ छातीसे लगाडिया । राजा छद्मजदास सी भाई ई इनके पुत्रये । पंडित रङ्गचार्य और सेठ राधा

कृष्णसरीखे गुरु शिष्य होना जुलूम है (देखो रङ्गाचार्य) । वि सं १९०५ में से० प्रयागकृष्णका वैकुण्ठवास हुआ । वृन्दावनमें “ रामछकमणका मन्दिर ” भी इन्हीं का धनवाया हुआ है ।

राधा (श्रीकृष्णजीकी पटरानी)—गोकुलवासी वृषभानुषाढकी कन्या, भैरवोष्णमुन्दरी होकर श्रीकृष्णजीकी ८ पटरानीयोंमें सबसे अधिक प्रिय थी । वैष्णवोंके मंदिरोंमें श्रीकृष्ण तथा राधिकाकी पूजासेवा साथ २ होती है ।

राधास्वामी शिवदयाल सिंह (राधास्वामी मतके आचार्य) शहर भागराके पन्नीगलीमें स ई १८१८ की साल एकखत्रीके घर छाळा शिवदयाल सिंहका जन्म हुआ । वृन्दावन तथा प्रताप सिंह इनके दो भाई औरये । छाळा शिवदयाल सिंह बाल्यावस्थासेही मुख्य २ लोगोंको उपदेश करने लगये । प्रायः १५ वर्ष तक रहोने अपने मकानके एकान्त कोठेमें बैठकर श्रुत शब्द योगका अभ्यास कियाया और पश्चात् १७ वषतक अपने गृहमें सत संगियों तथा परमार्थी लोगोंको राधास्वामी मतका उपदेश कियाया ।

प्रायः ३००० मनुष्य उनके शिष्य हुयेये जिनमें से प्रधान शिष्यरायसाहि-गराम बहादुर पोष्ट मास्टरजेनरलछये । ईश्वर जो सबसे परेहै छसीका नाम इस मतमें राधास्वामीहै । छाळा शिवदयाल सिंह छसीका अवतार माने जाकर राधास्वामी कहे जाते हैं । इसमतके लोग श्रुत शब्द योगका अभ्यास करते हैं । अर्थात् जीवामाको नेत्रोंके स्थानसे ऊपर ब्रह्माण्डमें चढ़ाकर अन्तरका शब्द सुनते हैं । सहुरु, सत्यनाम तथा सतसङ्गकी इसमतमें जरूरत है ।

मांस शराबादि मादिक वस्तुओंके खाने पानेका निषेध है और तीर्थ, व्रत मूर्तिपूजा तथा पुस्तकोंके खाली पढ़नेसे अन्तःकरणकी शुद्धिका होना नहीं माना जाता । स.ई १८७८म राधास्वामीने परलोकगमन किया । “ सारवचनराधा स्वामी ” नामक पुस्तक इनकी रची हुई है ।

राधाकान्तदेव, राजाबहादुर, के०सी०यस०झाई (सस्कृतकोष शब्दकल्पद्रुमकेकर्ता)—सोभा बाजार कलकत्ताके नवकृष्णादेव नामक रईस इनके दादेधे और इनके चापका नाम गोपीमोहन देधया । यह जातिके कायस्थये । इन्होंने संस्कृत, फार्सी, उर्दू, हिन्दी, बंगला घरपररखे हुये नौकरोंसे पढ़ीपी । हिंदोस्थानम उनदिनी अंग्रेजी रास्यका भारभया । बहुतसे अंग्रेजी

स्कूल उसवक्त तक नहीं खुलेये । बंगाल भरम केवल एकही अंग्रेजी स्कूल । बाजार बालकलेमया इसी स्कूलम ३ वर्ष पढ्यत इहाने शिक्षा पायी और ४ समय दिंडोस्यान भरमें षोड दसरादेशी पुरुष इनकी समान अंग्रेजीका वि नहीं था । यह एशियाटिक सोसाइटी बंगालके मेम्बरये और इहाँकी रियासत काशीका छीस कांजिस जिसम संस्कृत कालिजमी शामिलहै वर्तमान दश पशुशाय । एक सस्कृतपूढत अभिधानका अभाव देख इन्होंने ५० वर्षके निर परिभमसे शब्दचल्पसुम " नामक पूढत शब्दकोष रचाया । इसकोपके रच बहुरतसे पंडितों की सहायतालेनी पड़ीयी और बहुत कुछ खप्य करना पड़ा

यह कोष मलिका विकटोरियाकी भटकरके राधावन्त देवने रात्रा बहा तथा नायटकी पदवियें और सोनेका पदक पायाया । उनदिना अंग्रेजी स्कूल जो पुस्तकें पढ़ाई जातीथीं वह बाळकांवा चित्त ईसाई मनकी और धुस घाळी थीं । यह देव राजा राधाकाठ देव बहादुरने पाठशाळाभाके हित अनेक पुस्तकें रचकर स्वीकार कयाई । पश्चात् हिन्दुकांजिस कलकत्ता खोलनेम बड़ा मयान किया । खीशिक्षाकेभी पक्षगतीये परन्तु कन्या पाठशाळाओंका जारी करना पसन्दनहीं करतेये । आपददताले अपने पूर्वजोंके धर्मपर आ द्रुये । सर्व साधारण आपकी प्रतिष्ठाकरतेये । धन दौळत सब प्रकारके सु आपको प्राप्तये । आपका चरित उनलोगोंको शिक्षादायक होसकताहै । कहतेहै कि "अमीरोंको क्या नौकरों करना है जो बहुत पढ़कर मग खाली करें" । अन्तम कुछ दिनों घृन्दावन पास करके स ई १८६९ की साल परलोक गामी हुये ।

रानडे (आनरोयिलजस्टिस महदिव गोविन्द रानडे नासिकके जिलेमें स ई १८४१ की साल जन्मे और एटिकन्सटन कांजिस बम्बईमें पढकर स ई १८६४ की साल यम ए. की परीक्षा और दोही वर्ष पीछे यल यल बी की परीक्षा उत्तीर्णकी । इसके बाद एटिकन्सटन कांजिसमें ६ वर्षतक अंग्रेजी भाषाके आसिस्टिन्ट प्रोफेसर रहे और फिर कुछ विनीतक आकलकोट तथा कोन्हापुरकी रियासतोंमें नौकरकी । स ई १८७१ में बम्बई के न्याय विभागमें नौकर होगये और बड़ये ३ बम्बई हाईकोर्टके जजके पद को प्राप्त हुये ।

जस्टिस रानडे धर्म शास्त्रहीमें निपुणनयेबरन अत्यंत शुभ आचरण विद्वान, वेदा द्वितीय, अमुर, पक्षपातरहित और बुरे मल्लेके जाननेवाले थे । इस वेदके राजनीति विशारदपुढर्षीमें इनकी गणना है, जबतकतनम प्रागरहे स्वदेशकी

भलाईका प्रयत्न करते रहे । बृटिशगवर्नमेन्टनेजस्टिउर रातडे को राय बहादुर तथा सी आई ई के खिलाफ दियेये, बम्बई प्रांतमें अनेक सामाजिक, धर्मकारिक और शिल्पकारिक सभामोंके स्थापन करनेमें उन्होंने सहायता दीयी । वह स्वभावसेही उद्योगी, परिश्रमी तथा एक राजभक्तये देश सुधारकी अनेक बातों पर उद्येव व्याख्यान दिया करते थे और घोड़ेसे शन्दोंमें दीर्घ भाष्यकहसक्ते थे । जोश हितका कोई पेसा विषय न था जिसको इन्होंने पूर्णरितसे न विचारारहो । अनेकपट होनेके कारण सब लोग उनकी प्रतिष्ठा करतेये और उनके फैसलोंसे जनसन्न रहते थे ।

२। अनेक पुस्तक भी उद्दाने रचों थी । अकस्मात् स ई १९०१ की साल जवा ईकीकी हालतमें बम्बईमें परलाक गामी हुये । बम्बईमें इनका स्मारक चिह्न स्थापन किया गया है ।

३। रानोजीसेंधिया (ग्वाळियर राज्यवंशके मूल पुरुष) - ग्वाळियरके सेंधिया राजाहाराजे इन्हींके वंशमें है । यह वर्णके शूद्रये और वेगवाकी चाकरीमें पढ़ते र गनापतिके उद्यपदको प्राप्त हुये थे तथा जागीर पाई थी । स ई १७५०में वे इनोकी ४ पुत्र छोड़कर परमधामको सिधारे इन चारोंमेंसे माधोजी सेंधिया बड़े प्रतापी हुये जिन्होंने बहुतसा मुल्क फतेह किया और ग्वाळियरको अपनी राजधानी बनाया । प्रसिद्ध है कि रानोजी सेंधिया के मुहपर एक दफे शक्तिसे समय धूप भागई थी तब एक सर्पने भाकर फनसे छाया किया था, इसी कारण ग्वाळियर राजवंशका चिह्न सर्पोंकाफना है ।

४। रामकृष्ण परमहंस - जिहा हुगली (बगाल) के कमरपूरकर ग्राममें ई १८३३ की साल इनका जन्म खुदीराम चट्टोपाध्यायके घर हुआ । राम मार तथा रामेश्वर इनके दो बड़े भाई थे जो अच्छे विद्वान होकर कलकत्तेसे ३ कोस दूर गंगातट दक्षिणेश्वरमें रासमणिदासके बनवाये काठी देधी मन्दिरके पुजारी थे । बड़े होनेपर रामकृष्णको जब पढ़नेके लिये पाठशा-लामें भेजा तब इन्होंने कहाकि " मैं पठ लिखकर क्या करूंगा क्योंकि इस देशका फल रुपयाधमाना है" । निदान थोड़ीसी बंगाला भाषाके सिवाय यह कुछ न पठ सके । पश्चात् पिताने बड़े भाइयोंके पास इनको दक्षिणेश्वरमें भेज दिया । वहाँपर रहकर यह धर्म संबन्धी अनेक विषयोंपर अपने भाइयोंके बीच आचार्य सुनते रहते थे । कुछ दिनों बाद जब इनके भाई राम कुमारजीका देहांत होगया तो यह इनकी जगह कालीजीके मन्दिरके पुजारी हुये । इनका विवाह भी रामचन्द्र मुकजीकी सारदामणि नामक कन्यासे होगया था । कालीजीकी

पूजा करते २ इनके मनमें ऐसी दृढ़ भावना हुई कि दशम पानेकी अभिलाषा यह पद्योत्तक स्तोत्र पाठ करते तथा माँ ! माँ ! कहकर पुकारते छे। करते जब बहुत दिनचाले तो भगवतीमें अवगत विद्यास होकर उन इनको माँके दर्शनाकी चिन्ता रहने लगी और रातमें पद्योत्तक म देवीके सम्मुख बैठे हुये कभी रोते हुये और कभी थिल थिलकर हसते पाये गये। अन्तमें जब इनके प्राण रौने लगे और मनने जगतकी वस्तु माका जर्न पर दिया तो एक दिन देवीके सम्मुख बैठे राते हुये इनकी सम्मत्तकी ही होगई जो छ मासतकरही। पश्चात् इन्होंने अहंकारको जीतनेका प्रयत्न किया, और उसके पदार्थोंको ईश्वरका जानने लगे और कामिनी काश्चरससे बिक्र मन दटाछिया। इसके पीछे तीतापुरी एक संन्यासीसे इन्होंने संन्यास व दीशाली और दृढयोग तथा राजयोगकी क्रिया उससे सीखकर अभ्यास योग सिद्धिसे प्राप्त हुये। योग सिद्धिसे प्राप्त होकर इनका शरीर स्थूल हं या और लोम इनको परमेश्वर कहने लगे। इस प्रकार क्रमशः मनोवृत्तिय शान्ति होने तथा समदर्शिताके बढ़नेसे यह साधन दशासे भाङ्कट। दशा प्राप्त हुये। स० ई० १८६६ की साल ब्रह्मो धर्मप्रचारक बाबू केशवचंद्रसेनसे इन मुझाकात हुई और यह इनका ईश्वरानुराग, भाष्यज्ञान तथा दृढ धारणा देख मत्कृत होकर साकार ब्रह्मके अनुरागी हुये। स० ई० १८८६ में रामकृष्ण प हंस ब्रह्मपदको प्राप्त हुये इनके कहे कई सौ उपदेश हैं जिनको विचारनेसे ब्र ज्ञानके अनेक गूढ रहस्य विदित होसकते हैं।

रामकृष्णधर्मा (भारतजीवन प्रेस बनारसके मालिक)
 अमृतसर (पंजाब) से बाबू होराछाल नामक खत्री रोजगारकी लडाका काशीमें आकर धके ये। वि० स० १९१५ की साल उनके घर रामकृष्ण नामक बालकका जन्म हुआ। पिताके निर्धनी होनेके कारण रामकृष्णने न्याँ र्के यफ० ये० पास करके बी० ये० तक अंग्रेजी पढी। प्रथम रचनाकी ओर प्रयत्न आपकी रुचि है, बरलवार नामसे भाषा कविता करते हैं और आपकी हिन्दी गद्य लेख बढ़ने छापक होते हैं। अन्य महानुभावोंके रसे खेकड़ों में निज व्यपसे छापकर हिन्दी गद्यपद्य रचनाके प्रोत्साहनका आपने भली मरि परिष्प दिया है। स ई १८८४ में आपने बनारसम “ भारतजीवन प्रेस ” स्थापन किया और उसी सालसे “ भारतजीवन ” नामक हिन्दीका छात्र हिक समाचार पत्र जारी किया जो स ई १९०४ तक जारी है और गवर्नेमें के मन्त्र विभागकी रिपोर्टके अनुसार युक्त मान्तके सब हिन्दी वर्ड समा पत्रोंसे अधिक पढा जाता है। आपने अतक हिन्दी गद्य पद्यकी प्राय २५५ स्तक रची हैं जिनमेंसे निम्नस्य मुख्य हैं:-

उगवृतांतमाळा, संसारदण, पुल्लिसवृतांत माळा तथा कान्सेटेविल्लवृतांत माळा नामक ऐतिहासिक ठपपास और कृष्णाकुमारी, वीरनारी तथा पद्मावती नामक नाटक ।

भाप सरलचित्त पुरुष हैं । भूळ विद्विष होनेपर मया हठ किये बिना स्वीकार करते हैं । उद्योगी पुरुषोंमें भापकी गणना है । पिता भापको तीन दशम छोड़ गयेये लेकिन अब धन, मकान, प्रतिष्ठा, नौकर खाकर सबही भापको प्राप्त है । यह सब होते हुये गव तथा ईर्ष्या द्वेषका भापमें बिलकुल अभाव पाया जाता है और परिश्रम सहित अपने कामकाज की देखभालमें स्वयं लवलीन रहते हैं ।

सहनशीलता तथा नस्रताका भापके स्वभावमें समावेश है और इन्हीं सबकारणोंसे सर्व साधारण भापकी प्रतिष्ठा करते हैं । भारतके अनेक राज्य कुर्बानोंमें भापका सन्मान होता है ।

रावणाचार्य लकेश—यह ऋषि पुल्लस्त्यका पौत्र तथा विश्वश्रवा मुनि-का पुत्र वर्णका ब्राह्मण, बड़ा बलवान, अद्वितीय विद्वान और कलाकौशलादिमें निपुणथा । मिस्टर धामस घेननने निश्चय किया है कि, रावणका सीलोनके सिंघाय स्पाम, कम्बोडिया, फिलिपाइन, सुमात्रा, जावा, सेलिविन तथा बोर्नियो आदि द्वीपों और दक्षिणी चीन, कोचीन तथा घमा भादि देशोंमें भी राज्यथा और दक्षिणी भारतके राजाओंपर उसका आतङ्क था ।

हिन्दोस्तानके दक्षिणमें सीलोन (सिंहलद्वीप) रावणकी छका नहीं है । सुमात्रा द्वीपका वाल्मीकीय रामायणके लेखानुसार रावणकी प्राचीन छकासे ठीक मिलता होता है । रामचंद्र महाराजने लक्ष्मणजीके नामपर छकाका नाम बदल कर सौमित्रा (सुमात्रा) रखवा था । रानी सुमित्राके पुत्र होनेके कारण लक्ष्मण जीको सौमित्र कहतेथे । रामायणादि ग्रंथोंमें लेख है कि रावणके राज्यमें इंद्र छिड़काव देतेथे, वायू दाह देतेथे सूर्य रखोई बनातेथे, और कि वह समुद्रको पैदल पार कर सका था और सूर्यकी तपिशसे मंछलियें भून छेता था । यह सब बातें सत्य हैं किन्तु इस प्रकारकी हैं जैसे कोई कोई कि राजराजेश्वरी विकटोरियाके राज्यमें दीपक जलाने और खबर पहुंचाने पर बिजली नौकर थी और अग्नि तथा सरण शक्ती पीसतेथे तथा गाड़ियोंमें जोते जाते थे । रावणने वेदका भाष्य किया था, इसी कारण रावणाचार्य उसको कहा । एकतंभका ग्रथ तथा रावणस्मृति नाम धर्मशास्त्रभी उसने रचा था । यह सब होते हुये भी वह बड़ा अभिमानी अन्याई तथा छम्पट था उसने हजारों ऋषियोंको निरपराध नाश किया था हजारों कुल कामगिरियोंका सतीत्व भङ्ग किया था और पाप पुण्यको कुल नहीं डरवाया अंतमें बहुकुलतिलक महाराज रामचन्द्रने उसको नष्ट किया ।

रावणेश्वर मसादासिंह, राजाबहादुर, के० सी० य
 आई० गिद्धौरनरेश- बंगालम गिद्धौरका राजवश बड़ा प्रतिष्ठित।
 इस पराधीने मूलपुरुष राजा वीरविक्रम सिंहने सीवाराज्यके घरडी स्था
 आकर गिद्धौरमें अपना राज्य स्थापन कियाथा। वीरविक्रम सिंहसे ९ पीढी।
 योई महाराज दुये जि० क्षिने वैद्यनाथ (वैजनाथ) जीका शिवमंदिर बनवाया
 वीरविक्रम सिंहकी १४ वी पीढीमें राजा दलनसिंह दुये मिनको स ई १५
 में मुगलसम्राट शाहजहानने राजाका तिताव दिया। अंग्रेजी प्रयत्नार कर
 कि शाहजहासे लेकर आजतक लगभग तीनसौ वर्षके जीवम गिद्धौर
 राजा बंगालके राजाओंमें बड़े प्रभावशाली घनाइय और राजभक्त
 आये है। स १८५७ के भयंकर गदरमें गिद्धौरनरेश सर जयमंगलसिंह
 बहादुर, के० सी० यस० आई० ने अंग्रेजीसरकारको मददकीपी और सन्ध्याओं
 उपद्रव बड़ी परितासे रोकाया, इसके बदलेमें के०सी० यस० आई० का खित
 स्या राजा बहादुरकी पीढीजात उपाधि पाई थी। सर जयमंगलसिंहके प
 वर्तमान नरेश श्रीमान् महाराजा रावणेश्वर मसादा सिंह बहादुर, के सी य
 आई है। श्रीमान् अंग्रेजी, संस्कृत, हिंदी और फार्सीके अच्छे विद्वान् हैं और
 हारसे उन राजाओंमेंसे एकहैं जो हिंदीसाहित्यकी सेवा करना अपना कर्त
 समझतेहैं। घविल्लीरामने " रावणेश्वर कल्पतरु" नामक भाषा ग्रंथ र
 फर आपसे उचित सत्कार पाया है। आपकी राजमक्ति, सुप्रबोध और सदा
 तासे केशव शृटिंग गवर्नमेन्टकी प्रसन्न नहीं है वरन् सूबे विहारकी प्रशासन
 आपपर बड़ा प्रेम है। आप सर्वप्रिय फाइलानेकी सेवा सदैवही करते रहते है
 विहारकेण्ड होलडस ऐसोसियेशनके आप प्रेसिडेन्टहैं और बंगालके लफ्फादिन
 गवर्नरकी स्पेशलपब्लिक सभाके मेम्बरभी कईके रह चुके हैं। आपकी देशाहि
 युक्तिय केशव बंगाल विहारहीमें आदर नहीं है वरन स ई १९०३ में भारतीकी
 क्षत्रिय महासभाका जो अधिवेशन हुआथा उसकेभी आप सभापति थे। आप
 सोम वंशी क्षत्री हैं। स ई १८५९ में आपका जन्म हुआ है। दीधायुहोमो।
 देश प्रियनरेश।।

राविन्सन क्रूसो-डेनेयलडेबये सादिकके लेखानुसार स. ई १६३३ में
 पार्क (इंग्लैंड) में इनका जन्म हुआ, बचपन मातापिताके अतीव छात्र करने
 के कारण निरुद्यमही बीता। पश्चात् पिताने सामान्य छद्मकोंकी मांति योद्धा
 छिद्रना पढ़ना इनको वरहीमें सिखादिया, पिताकी इच्छा इनको बकाब
 का पेशा सिखानेकी थी पर इनकी अभिलाषा किसी सहाजका मुखियाबनकर

देश विदेश भ्रमण करनेकी थी । इनके माता, पिता, मित्रादिकोंने बहुत समझाया परंतु इनकी विदेशगमनकी इच्छा ऐसी प्रबल हुई कि इन्होंने किसीकी न सुनी और इसी कारण इनको कठिन आपत्तियें झेड़नी पड़ीं । स.इ १६५१में यह किसीकामके लिये हल्दमगरमें गयेथे और वहांसे अकस्मात् किसी मित्रके फुसलाने पर बिना किसीसे पूछे जहाजपर सवार होकर छन्दन को चढ़ते हुये यहीं इनको आपत्तिका आरंभ हुआ और भाग्यवश इनको घरछौटनेका मौका मिला। छन्दनसे जहाज पर सवार हो एफरीकाकी तरफ गये, जहाजरास्तेमें उबाह होगया सब मनुष्य दूबगये केवल राबिनसन मूसो बचा जिसको कईवर्षतक एकनिर्जन टापूमें रहकर समय व्यतीत करना पड़ा। अंतमें एक जहाज ठक टापूके किनारे बालगा जिसपर सवार होकर यह स्वदेशको आये परंतु अपनी षोछीतक भूलगयेथे । इनका सविस्तरवृत्तान्त डैनियलडिफो साहिबने "राबिनसन मूसो" नामक अंग्रेजी ग्रंथम लिखाहै जिसके पढ़नेसे छड़कोंको यह शिक्षा होजाती है कि माता पिताका आज्ञा भङ्गकर घरसे निकल जानेके कारण मनुष्यको अनेक आपत्तियें भोगनी पड़ती हैं और यह कि आपदाके समय निःसहाय मनुष्य किसप्रकार दृढ़ता और धैर्यसे काय करके आपत्तिका निवारण करता है । अनेक विद्वानाकी सम्मतिहै कि डैनियलडिफो साहिबने मल्लेजेंडर सेल्कक नामक स्काटलैंडवासी मल्लाहके चरित्रके आशयपर राबिनसनमूसोका अनुमानित इतिहास छड़काके उपकाराथ लिखा है ।

रामचन्द्र महाराज (मर्यादा पुरुषोत्तम)—अयोध्यामें राजा दशरथकी बड़ी रानी कौशल्याजीके गर्भसे वै० सु० ९ के दिन वेतापुत्रके अन्त में (किरंगी विद्वानोंके मतानुसार स० ई० से ३००० वर्ष पूर्व) अवतीर्ण हुये । महर्षि वशिष्ठ तथा विश्वामित्रसे अनेक शास्त्रों तथा धनुर्वेदकी शिक्षा पाई । १५ वर्षकी उम्रमें हींकर धनुषको तोड़ जनकसुता सीताके साथ स्वयंवर विधिले विवाह किया। २७ वर्षकी उम्रमें पिताका वधन मान १४ वर्षके लिये वनवासको गये । वनवासके १३ व वर्ष पंचवटी बन (नासिक) में से आश्रमको सूना पाय रावणलक्ष्मण सीताजीको हरलेगया । तत्पश्चात् किष्किंघावे रामा सुग्रीवसे महाराजने मेल करके रीळ वन्दरोंकी बड़ी भारी सेना एकत्रकी और समुद्रपर सेतुबंधवाय लंकापर चढ़ाईकी। ३ महीनेसे कुछ अधिककालतक युद्ध रहा जि समें रावण सेना तथा परिवार सहित मारागया, महाराजकी जीव हुई, सीताजी को पुनः पाया, सुमित्रासुत लक्ष्मणके नामपर लंकाका नाम सौमित्रा (Sumatra) रक्खा गया तथा वहांका शासन बिभीषणको सौंपा गया । वनवासकी अवधि पूरी होनेको थी एवं सीताजी पुष्पक विमान पर सवार होकर महाराज अयोध्या पहुंचे तथा राजसिंहासनपर विराजे । इसी साल सीता महाराजकी गभ रदा

द्विदिन रायजने यहाँ रही हुईको फिर बिठाऊ छेनेपर सींगछोकापवात् होते महाराजने उ-धो त्यागकर वाल्मीकि ऋषिके आश्रमपर भेज दिया जहाँ उ-धो तथा कुश दो पुत्र एक साथ उत्पन्न हुये । पश्चात् महाराजने नैमिषार बड़ा भारी भस्ममेध यज्ञ किया जो एक वर्षसे कुछ अधिकमें पूरा हुआ। किन्हीं निमज्जन पाकर साँता तथा लक्षकुश सहित इस यज्ञमें पधार ये । अतमें लक्षकुशने उभाके वधि महाराजको ३० ॥ विमम २० सर्ग प्रति सिद्धिवासे रामायण सुनाइ जिससे महाराज शक्तिशय प्रसन्न हुए । इसी सरपर साँताजीने देह त्यागदी और लक्षकुश दोना पुत्रोंको महाराजने प्रदत्त लिया । फिर भंत समय तक महाराजने दूसरा विवाह नहीं किया और प्रति १ भस्ममेध यज्ञ तथा वीध २ में शक्तिष्टोम, वाजपेय तथा गोमेधादि यज्ञ करे । यज्ञके दिनोमं हरवक्त रात, धन, यज्ञ, शर्करा तथा भन्नादिके बड़े ढेर बटते रहतेये । समय पाकर कौशल्यादि माताजीने देह त्यागी और महाराजने उनके आज्ञा कर्म विधि पूर्वक किये। अन्तको महाराजकी आत्मा पाकर लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न भादर्योंको देह त्यागना पड़ी । सबसे पीछे लक्षकुश दोना पुत्रोंको राज्य सौंप महाराज भी सरपू ठट गुप्त होगये, वह स्थान भवतक भयोप्य १० फौज दक्षिण गुप्तार घाट नामसे प्रसिद्ध है ।

देशविजय तथा राज्यविभाग-महाराज रामचंद्रने एक छत्र राज्य किया नानादेशोंके राजे आश्रित होकर उनके भेंट देते थे ।

लक्ष्मणके पुत्र अंगदको फारूपय देशका राज्यसौंपा और उनके नामसे अ-दीप पुरी पसाई । द्वितीय पुत्र श्वरकेसुके नामसे श्वरकांता नामक सब पुरवाकाकर मल श्रुमिका शासन सौंपा ।

मधुवन (मज मंडल) के राजा लवणके मत्स्याचारोंकी शिकायत स्पष्टनाई शरिरीय सुनकर महाराजने शत्रुघ्नको भेजकर वह देश विजय कराया और वहाँका शासन शत्रुघ्नको सौंपा । अंतमें शत्रुघ्नके पुत्र सुषाण्डको मधुरा (मधुरा) और दूसरे पुत्र शत्रुवादीको वैदेश नगरका शासन सौंपागया ।

केकप देशके रामा युधाजितके मार्यता करने पर महाराजने भरतजीके भेजकर गंधर्वोंका देश जो सिंधके गन्धार (कन्धार) तकया विजय कराया और उसका शासन भरतके पुत्र तक्ष तथा पुष्कलको सौंपा ।

निज पुत्र कुशकेदिये विम्पाके दक्षिण किनारे पर कुशावती पुरी वहाँका कौशल देशका राज्य दिया। लवके दिये भयोण्याका सिंहासन सौंपा तथा उत्तर सण्डके लेकर उत्तरतक सर्वत्र देशका राज्य दिया ।

रामाशुके पीछे ब-इर-द्वारिण साहयकी स्योरीये मधुसार इनकी गवता मधुस्य तथा पशुके बीचकी घन अर्द्ध सभ्य जातियोंमें करना भसंगत नहीं है ।

जो अब समय पाकर नष्ट हो गई हैं । अनेक फिरोगी विद्वान् अनुमान करते हैं कि मध्य एशियासे आये हुये आर्य लोग हिंदोस्थानके असली बासियोंको हिकारत के तौरपर बन्दर तथा रीछ कहतेथे ।

महाराजका डीकडौल-मुखादि सब शरीर सुन्दर, सब वेह जैसी चाहिये वैसी, कृष न बहुत छम्बा न ठिगमाभीर श्यामवर्ण था । नेत्र, बिह्ला, मोठ, तालु, स्तन, मख, हाथ, पांव, और मुखका भीतरी तथा बाहरी भाग कमकाकारथे ।

मंत्री व खभासद-सुर्मत आदि कई ब्यवहार ज्ञाता मंत्रीथे(देखो सुर्मत), वशिष्ठ आदि कई ऋषियज्ञ कराया करतेथे और समय २ पर मंत्रीकामी काम देतेथे । खभासद धमज्ञ व भीतिपरायणथे ।

अयोध्यानगरी-सरयूके दक्षिण तटपर १२ योजन छम्बी तथा ३ योजन शैली अयोध्यानगरीकी शोभा अलौकिकथी । शहर वड़े २ महलोंसे भराहु थापा जिनपर सुनहिछा पानी फिण्या । बस्ती अत्यंत घनी थी । बाजार सब रकारकी स्त्रीजोंसे भरपूरथा। दूर २ से ब्यापारी आतेथे । कुर्बोंका जल मीठाया । उड़क नित्य प्रति छिड़की जाती थीं, विशेष स्थानोंपर फूल बखेरे जाते थे । शहरकोटसे घिरा हुआथा, बाहर खाई थी जिसपर रक्षाके लिये सैकड़ों तोपें फखीरखतीथीं । घोड़ों, हाथियों तथा फौजके लिये कोटके बाहर स्थानबने हुयेथे । बगीचे भी अनेकथे । सरयूतटम सैकड़ों स्थानस्त्रियोंको जलप्रीड़ाके लिये बने थे ।

प्रजागण-सञ्च, सदाचारी, प्रसन्न चित्त, विद्वान्, पापरहित, देखने में सुन्दर, उत्तम वेषधारी, खातेपीते, तन्दुरुस्त, एक दूसरेकी सहायता करनेवाले तथा मेळ मिछापसे मर्घ्यादातुसार चलनेवाले होकर ब्यभिचारि नहीं थे ।

देशकीहालत-रामराज्यमें कमी अकाल नहीं पड़ा । कोई विशेष रोग उत्पन्न नहीं हुआ । कभी कोई अमर्ष नहीं हुआ । प्रजा सुखसेरही और आधि ब्याधिसे कमी नसताई-गई । एक वृके किसी ब्राह्मणने विना अपराध किसी कुत्तेको मारकर घुरीतरह घायल कियाथा, महाराजने उस ब्राह्मणको भी दण्डित कियाथा ।

बाल्मीकीय रामायण-इसको ऋषि बाल्मीकिने उत्तरकांड सहित २४००० श्लोकों तथा १०० उपखण्डोंमें रामराज्यहीमें बनायाथा । जो कुछ महाराजको अंत समयतक करनाथा वही उत्तरकांडमें लिखागया था ।

सिक्का-स ई १९०४ की प्रदर्शिनीमें रामचन्द्र महाराजका सोनेका सिक्का दिखाया गया था । उसका वजन ९ तोले, व्यास २२ ईंच, सोना बहुत खोजा

और एक तरफ रामराज्याभिनेकका चित्र तथा दूसरी तरफ प्राचीन लिखावटका लेख है जो अत्यन्त प्राचीन होनेके कारण घिस गया है और पढ़ा नहीं जाता।

रामदासबाबा (प्रसिद्ध सङ्गीतज्ञ)—यह सूरदासजीके पितासे और गाने बजाने में परम निपुणथे। स० ई० १५५० म अकबर बादशाहके दरबारके गवैयाम नौकर थे। जब बैरमखाने प्यानखानाने घगावतकी थी रामदासजी उसके तरफदार हुये। बैरमखाने प्रसन्न होकर १ लक्ष मुद्रा इनको इनाम दियेथे। यह फारसी तथा संस्कृतके अच्छे विद्वान थे और सर्वांग विद्या में तान सेनके सिवाय कोई दूसरा इनकी समानता नहीं कर सकता था। अबुल फज्ज लिखताहै कि रामदास ग्वालिपरसे भापाया और इतिहासकार वदायूनी लिखताहै कि रामदास छल्लनऊसे आकर आगरमें बसाया।

रामदैवज्ञ (ज्योतिषकार)—इनके पूर्वज बरारसे काशीमें भारहे यो अनन्त वैद्यगर्गगोत्री इनके पिता थे और "नीलवण्ठी" ज्योतिष ग्रंथके रचयिता नीलवण्ठी वैद्य इनके भाई थे। यह बादशाह अकबरके दरबार में नौकरथे। निम्नस्थ ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं—

सुहृत् विन्धामणि, रामविनोद, यंत्रप्रकाश और टोडरानन्द । टोडरानन्द राजाटोडर मल्लके नामसे बनाया था।

राम मिश्र शास्त्री, पं० महामहोपाध्याय—आपके पूर्वज अकबरसे १८ कोसपर किसी ग्रामके रहनेवालेथे। आपका जन्म काशीमें वि सं १९०४ की साल पं० शास्त्रिप्रतापचारीजीके घर हुआ था। आपके पिता योग्य पंडित थे, प्रथम कई वर्षतक आप उन्हींसे पढ़ा बिये। पश्चात् पं० राधा मोहन भट्टाचार्य लक्ष्मण तथा पं० म० म० कैलासचन्द्र शिरोमणि भट्टाचार्यसे आपने अनेक शास्त्रोंकी शिक्षा सम्पूणकी। फिर संस्कृत छात्रिज बनारसमें आपने सरकारी नौकरीकी और अवकाश मिलने पर सदैव अनेक विषयोंपर लेखों प्राचीन ग्रंथ विचार सहित देखते रहे। शुचिधीकी साल गवर्नमेन्टने महाविद्यालय गणना करके आपकी पं० महामहोपाध्यायकी उपाधिसे विभूषित किया जिससे वास्तवमें अपार विद्याकी मतिष्ठा हुई। आप अंग्रेजी भाषाके भी ज्ञाता हैं और सरलता पूर्वक उक्त भाषामें बात चीत करसकतेहैं। स० ई० १९०२में आपने छात्रिजकी नौकरीसे पेन्शनली। अब आप स्वतंत्र होकर बहुधा भ्रमण करते रहतेहैं और सर्वथा स्थायी होकर किसीसे कुछ हप्छा नहीं रखते। आप सदाचार सम्पन्न, आचार शुद्ध तथा विद्वान् बुद्धिके महापुरुष हैं। सदैवसे निजपर साधारण विद्यार्थियोंको पढ़ानेकी अपेक्षा ग्रंथ रचनामें आपकी अधिक रुचि है किंतु गुण

न, विशेष बुद्धिमान विद्यार्थी मिलजानेपर आप भव्य उखका संग्रह करलेते हैं । पं० मोहनलाल घेदान्ताचार्य, पं० अम्बिकादत्त व्यास, पं० देवीसहाय (धर्म विद्याकर सम्पादक) तथा पं० भागवताचार्य सर्रीखे प्रसिद्ध पंडित आपहीसे पढ़कर ऐसे विद्वान हुये । आप पढाते समय निज शिष्योंको धर्म शास्त्र तथा नीतिके अनेक उपदेशभी इस रीतिसे करते रहतेहैं कि ओ उनके चित्त पटलपर अंकित होकर खिरस्थाई रहतेहैं । वैसे तो आप संस्कृत विद्याके सागरहैं परंतु विशेषतः दर्शन विषयम आपको अपूर्व योग्यता प्राप्त है । दर्शन विषयके बड़े २ गूढरहस्य आपके करतल पदार्थकी भांति हैं । आपके मिलनेसे चित्तमें एक प्रकारका उत्साह उत्पन्न होकर हिम्मत बंधती है और आपकी बात २ म कोई न कोई नीतिमय उपदेश झलकता है । काशीमें गंगापार राम नगरमें आपका निवास स्थान है । वृक्षास्वमेध घाटकी तरफ बंगाली टोळामें भी आपका एक मकान है जहां कभी २ आकर आप बैठते है । स ई १९०४ में आपका स्वास्थ्य अच्छा है, केशव स्वामी आपके सुयोग्य पुत्र हैं और निम्नस्य ग्रंथ आपके रचे हुये हैं -

मंत्रमीमांसा, व्रात्यसंस्कार मीमांसा उद्गाह समय मीमांसा, तुरीय मीमांसा, स्नेह पूति, वसक विजय वैजयन्ती, सर्व वेदसार निर्णय, सुबुद्ध बोध व्याकरण, बलाबल परीक्षा, दर्शन रहस्य, रत्न परीक्षा तथा अनेक और । आप श्रीसम्प्रदायके वैष्णव हैं, स्वामी आपकी परम्पराकी उपाधि है । सनातन धर्मका समर्थन करनेको मुलाये जानेपर आप अनेक अवसरोंपर दूर २ शहरोंमें पधारते रहे हैं तथा अबभी पधारते रहते हैं ।

राम मोहनराय राजा (ब्रह्मो समाजोंके संस्थापक) - स० ई १७७४ में आपका जन्म राधानगर जिला बर्धमानमें हुआ था, रामकेतनराय आपके पिता थे । बंगाली भाषा मकानपर पढकर राम मोहन बाबू पटनाको पधारे और वहां रहकर उन्होंने अर्धा, फारसी, तथा रेखागणित सीखी । तत्पश्चात् बनारसमें जाकर संस्कृत पढ़ी । १६ वर्षकी उम्रमें मूर्ति पूजाके खण्डममें एक पुस्तक रची । पश्चात् तिष्यतमें जाकर बौद्ध मतके ग्रंथ पढे २२ वर्षकी उम्रमें स्वदेशको छोडकर भाये और अंग्रेजी पढ़नेलगे । स० ई० १८०३ में पिताका देहांत होनेपर उन्होंने रङ्गपुरके कलेक्टरके दफ्तरम नौकरी करली और थोड़ेही दिनोम सरखी पाकर उक्त दफ्तरम दीधानके पदको प्राप्त हुये । नौकरी करके उन्होंने इतना धन कमाया कि १ हजार रुपया वार्षिक आपकी जमीन्दारी खरीदली । राम मोहन बाबू विद्याके बड़े रसिकये, नौकरी करते२ उन्होंने उच्च श्रेणीका गणित तथा लैटिन, ग्रीक, हेब्रू आदि भाषायें पढ लीयाँ और अनेकानेक मतोंके धर्म सम्बन्धी ग्रंथोंको विचार सहित पढकर ईसाई मतको सर्वोत्तम ठहरादिया था जिससे उनके हजारों शिष्य हो गये थे । वेदान्त दर्शनका अद्भुत उन्होंने हिंदी, बङ्गला, और अंग्रेजीमें किया था ।

एक भंग्रेजी स्कूल तथा स्वरचित प्रयागे छापनेके लिये एक यंत्रालय भी जारी किया था और दो पुस्तकें खतीया खाद्य मिटानेके लिये भी छपवाई थीं। स० ई० १८२८ में उन्होंने कलकत्तेमें ब्रह्मो समाज स्थापन की और अपने मन्त्रियोंके प्रकाश करणार्थ कई पुस्तकें गीतों तथा भजनोंकी बनाईं। स० ई० १८२७ में दक्षिणाटिक सोसाइटी बगाछने उनके अपना मेम्बर नियत किया। स० ई० १८३० में यह तख्त दिल्लीकी तरफसे राजदूत नियत करके इङ्ग्लैंड भेजे गये और असाधारण प्रतिष्ठाके भागी हुये। स० ई० १८३३ में इङ्ग्लैंडसे फ्रांसकी पधारे और वहाँके सम्राटके साथ दोढ़के मोजन करके सम्वाञ्च प्रतिष्ठाको प्राप्त हुये। फ्रांसमें कुछ दिन ठहरकर उन्होंने फ्रांसीस भाषा सीखी और पश्चात् इङ्ग्लैंड में वापिस आये और वहाँके बादशाहकी तरफसे राजाका खिताब पाया। स० ई० १८३३ में घुस्रलनगरमें मरे जहाँ उनकी कबर अबतक मौजूद है। ब्रह्मो समाजी लोग जाति पाँसि तथा खानपानका कुछ विचार नहीं रखते हैं। राजा राममोहन रायके राममसाद राय नामक पुत्रथा जिसके वंशज अब तक कलकत्तेमें हैं। चौबीस परगना भादि बंगालके कई जिलोंमें उनकी जमींदारी है।

रामसिंहजी (महाराजः सवाई सर रामसिंह, जी सी यस आर्इ जयपुर नरेश)—यह निज पिता महाराजा जयसिंह ३ के बौछे दो वर्षकी उम्रमें स० ई० १८१८ की साल गद्दीपर बैठे। बाल्यावस्थामें राजकाज घुटिश पोछीटिकेले पजेट करता रहा और वाळिग होमेपर स० ई० १८५७ की साल राज्यका पूरा अधिकार आपको सौंपदियागया। सन् ५७ के वर्षमें आपने सरकार, अङ्गरेज बहादुरकी तन मन धनसे सहायताकी जिसके बदले में फोटी काविसका परगना तथा पुत्रगोद लेनेका अधिकार आपको दियागया। आप बड़े चतुर, प्रजा पाळक तथा विद्योन्नति करनेवाले थे। जयपुरमें शिल्पमहाविद्यालय, रामनियास बगीचा, अजायबखाना, संस्कृत कालिज और नलकी म्यूनता मिटानेके लिये पार्सिके नल आपहाँके समयमें बनाये गये थे। आपने अङ्गरेजी व संस्कृत कालिखों तथा पुत्री पाठशाला और शिल्प महा विद्यालयके वार्षिक व्ययके लिये ८० हजार ६० राजकोषसे नियत कियेथे। स० ई० १८६८ के अकालमें आपने प्रजाकी बड़ी सहायताकी थी। इसपर प्रसन्न होकर घुटिशगवर्नेमेंठने आपकी सलामी सोपके १९ फेरसे २१ फेरबड़ाईथी। स० ई० १८७५ में आप उस कमीशनके मेम्बर नियत किये गयेथे जो गैकवाइ बरोहापर अठिशा रकीबेन्डकी विष देनेके मुकद्दमेका फैसला करनेके लिये गवर्नेमेंट आफ इन्डियाकी तरफसे नियत हुआ था। उक्त कमीशनमें १ दि म्पोस्थानी राजे और दो भंग्रेज अफसर शामिल थे। तीनोंराजाओंने गैकवाइ को निर्दोष और बीनों अङ्गरेजी अफसरोंने राजाको दोषी उहरायाया, परंतु गव

नैमटने गैकवाड़को राम्यहीन करदिया । उसी साल दाहमाड़े घेलजने जयपुर पधारकर पेरुघट्टहाळकी मींघका पत्थर रफ्साया । आप दोदफे गधनरजेनरछ हिन्दकी व्यवस्थापकसभाके मेम्बर भी रहेये । जयपुरकी प्रजाको सुप्रख्यात महाराजजयसिंह सघाई की मृत्यु (स० ई० १७४३) के पीछे आपके समयका सा अमनचैन कभीनहीं मिळाया।अङ्गरेजों और मेमोंसे आपका खूब मेल रहताथा। स० ई० १८८० में वैकुण्ठवासी हुये और श्रीमान्के दत्तक पुत्र सरसघाई, मींघौ सिंहजी (वर्तमान नरेश) गद्दीपर बैठे । महाराजरामसिंहने अचनतिको प्रात हिन्दूधर्म तथा हिन्दूजातिके उद्धारके लिये अनेक ठपाय कियेये ।

रामानन्दगुरू—(रामानन्दीयसम्प्रदायके आचार्य) भक्तमालके छेलासे विदित होता है कि यह दक्षिण देशके रहनेवाले थे और किसी सन्यासीके शिष्यये । एक दिन यह दर्शन करणार्थ रामानुज स्वामीकी गद्दीके महन्त रामदान उनके पास जानिकले, महन्तजीने इनसे कहा कि “सुम्हारी भायु अब बहुत कम रहि गई है जो कुछ करना होकरलो ” । यह सुन इन्होंने उक्त महन्तको गुरु करलिया। जब मृत्युका समय निकट आया तब गुरूने प्राण ब्रह्माहमें सङ्घवाकर इनको समाधिस्थ कर दिया और मृत्युकाल टल जानेपर प्राण वायु उतार कर बहुकाल जीतेका धरदान दिया। कुछ दिनोंतक गुरू सेवामें रहनेक बाद रामानन्दजी चाट्टिकाभ्रमको पधारे और वहाँसे छौटकर काशाभी में पञ्च गंगाघाट पर कुछ दिनोंतक रहे । पश्चात् छौटकर जब यह निज गुरूके पास फिर पहुंचे तौ वहाँ छोगोंने इन्हें पक्तिम नहीं लिया क्योंकि यह रामानुजीय कई आचारका पालन नहीं कर सकेये । यह देख गुरूकी आज्ञानुसार इन्हाने अपना सर्वान पन्थ चलाया, जो रामायत या रामानन्दीय नामसे विदित है । समय इनका बि ई १४०० से १५०० के भीतर है । इनके अनेक शिष्योंमेंछ कबीर, रैदास, धना, सेन तथा पीपा इत्यादि १२ शिष्य मुख्यये जिन्हाने इस देशमें भाषा कविता तथा वैष्णव धर्मका बहुत कुछ प्रचार किया और यह सिद्ध कर दिखाया कि ‘ जातिपाति पूछै नहीं कोई । हरिको भजे सो हरिको होइ ” । रामानन्दिपोंकी प्रधान गद्दी जयपुर राज्यान्तर्गत गलता स्थानमें है, यह स्थान अत्यंत रम्य है और वहाँ कई बड़े २ मन्दिर वर्तमान हैं जिनमें श्री सीतारामकी मूर्तियें विराज मान हैं । गुरु रामानन्द भाषाके मुकविये । उनकी स्फुट कविता लोकप्रसिद्ध है और “ रामानन्दीय वेदान्त ” उर्हाँका बनाया हुआ है ।

रामानुजस्वामी—(श्री सम्प्रदायके आचार्य) काशीपुरी के निकट भूतपुरीमें केशव यम्बा नामक ब्राह्मणके घर कान्तिमतीके उदरसे जमें । भूतपुरी दक्षिणमें तिरुवलूरकेरत्ये इस्टेशनसे १२ कोस दक्षिण है । १६ वर्षकी अवस्थाम पार्य वेद कण्ठ करलेने पर इनका विवाह कर दिया

गया, विवाहसे कुछ दिना पीछे इनके पिताका देहांत होगया पश्चात् इन्होंने काशीपुरीके ५० यादव मवादा (यादवगिर) तथा कावेरी नदीके तटस्थ रंगपुरमें वासुधावापवे शिष्य पूणाचार्यसे न्याकरण, न्याय, वेदांत आदि अनेक शास्त्र पढ़े और वेदांतो शास्त्रीय तरफा सहित विचारा । इनकी स्त्री रदाकाम्बा शगदालूपी । अतएव उसके म्यभावसे दुःखित होकर एक दिन इन्होंने उसको महर पहुँचा दिया और आप सन्यास ग्रहण कर लिया। फिर देश टा करके हुये यात्रिकाश्रम गये और वहाँसे लौटते हुये अनेक तीर्थोंके दर्शन किये । सन्यास ग्रहण करनेसे पाहिले इन्होंने काशीपुरीके राजाकी कन्यापरसे विवाह बाधा दूरकरके बहुत द्रव्य तथा सत्कार पाया था । बर्दान्तसे लौटकर कापिल तीर्थ गयेये और वहाँसे राजा विदुष्य देवघो शिष्य बनाकर चौबीस मंडल आदि अनेक ग्राम पाये । कपिल तीर्थसे श्रीरंगपट्टनमें आकर वेदान्त सुत्रापर श्रीभाष्य, वेदान्तप्रदीप, वेदान्तसार, वेदान्तसंग्रह और गीता भाष्यादि अनेक ग्रंथ रचे । पश्चात् बहुतसे शिष्योंके साथ चोलमंडल, पाण्ड्यमंडल, कुर्ग इत्यादि देशोंमें विशिष्टाद्वैत मतका प्रचार किया और कुर्ग नरेशको दीक्षित करके केरळदेश (मालाबार) के पंढितोंको जीता । अंतमें फिर द्वारिका, मथुरा, काशी अयोध्या, यात्रिकाश्रम, भैमिपारण्य, पुरुषोत्तमपुरी (अगस्त्य) और वैकुण्ठ गिरि की यात्राकी । पुरुषोत्तमपुरीमें बौद्धाको परास्त किया । परमधाम सिधारनेसे पाहिले भूतपुरीमें अपनी मूर्ति स्थापनकी ओ अथतक वहाँ एक मंदिरमें विद्यमान है । स ई १०१७में जन्म । स ई ११३७ में श्रीरंगपट्टनम मृत्यु ।

शैव लोग इनको कुछ कृतेके अनेक उपाय करते रहे, परंतु कुछ मकरलोक । इनके जीवनकालहीमें वैष्णवमतका खूब प्रचार होगया था और इनके अन्तसमय वैष्णवोंके ७०० मन्दिरो मौजूद थे । रामानुजीयसंप्रदायके विशिष्टाद्वैतमतवादीवैष्णव कहते हैं कि मायाविशिष्ट ब्रह्महै अर्थात् जीव ईश्वरसे अलग होकर जन्म लेता है और मरनेपर ईश्वरमें मिलजाता है ।

रायप्रधीण—देखो प्रधीणराय पादुरी

रायपिधौरा—देखो पृथ्वीराज

ऋतुपर्ण—यह सूर्यधनीनरेश महाराज रामचन्द्रसे अनेक पीढी पूर्व हुये । नैपथ (विहार) का राजा मल अपना राज्य छुपेमे हारकर इन्हेंकि दरबारमें थोड़े हाँकनेपर नौकर हुआ था । राजा ऋतुपर्ण चौंसर खेलेनेमे आद्वितीय थे । इनकी राजधानी रिजोर लिछा पट्टाम थी। रिजोरका प्राचीन संस्कृत नाम रजित क्रांति है । भागवतके छेखानुसार रामचन्द्र इनसे १३ पीढी पीछे हुये और शिव पु०के छेखानुसार ११ पीढी पीछे हुये ।

रिषभदेव—(जैनियोंके प्रथम तीर्थंकर)—यह राजा नाभाके पुत्र थे । इनके १०० पुत्र हुये जिनमेंसे सबसे बड़ा भरत था । रिषभदेवजीने १०० यह कर्कें पुत्रोंको हान उपदेश किया और ब्येष्टपुत्र भरतको राजपाट सौंप भाप तप कर ने वनको सिधारे । भागवतमें लिखा है कि जब तप करते २ इनके शरीरमें केवल हाड़ खामही रहगये तौ दक्षिणमें जाकर इन्होंने जैन मतका उपदेश किया ।

इनको भादि नाथभी कहते हैं ।

जैनियोंके निम्नस्य २४ तीर्थंकर हैं—

ऋषभनाथ, भक्षितनाथ, सभधनाथ, भमिनन्दननाथ, सुमतिनाथ, पद्मप्रभु, सुपार्शना० चन्द्रप्रभु, पुष्यदन्तना० क्षीतलना० अर्थाशना० वासुपूष्यना० विमल मा० अनंतना० धर्मना० शांतिना० कुधुना० अरना० मल्लामा० सुव्रतना० नेमिना० नेमीना० पार्वना० और महावीर । जैन मतम जगत्को ठरपति नह्य है न कोई ईश्वर है । इनके मतमें संसारी और मुक्त दो प्रकारके जीव हैं । ये लोग अपने तीर्थंकरों और सिद्ध देवताओंको मानते हैं । किसी प्राणीका धध नहीं करना पही जैन धर्मकी सार नीति है । जानवरोंपर जैनियाकी बड़ा दया है, वन्हींके उद्योगसे स्यान २ पर पशुशाळार्यें खुली हैं । जैनियोंके मंदिरोंम इन्हीं जैन तीर्थंकरोंकी प्रतिमा खादी, स्वर्ण तथा रत्नोंसे जटित होती हैं । जैनियोंम श्वेतांबर और दिगंबर दो प्रकार होते हैं । दिगंबरोंकी मूर्तिये नङ्गी होती हैं । उदारता, सुशीलता, पुण्य और तप जैनियोंके ४ मुख्य धर्म हैं । स इ १८९१ की मनुष्य गणनाके समय हिन्दोस्तानमें १४१६६३८ जैनये । जूनागढ राग्यात गंत गिरिनारम ऋषभदेवजीका मंदिर है जिसम अन्य सब तीर्थंकरोंकीभी मूर्तियें है । भावू पधत परभी पट्टन (गुजरात) वासी विमलसाहू जैनीका बन बाया हुआ रिषभदेवजीका मंदिर है जिसके तैयार करानेमें १८॥ करोड रुपये खर्च हुये थे । ,

रुक्मिणी (श्रीकृष्णकी पटरानी)—यह विदर्भ (वरारमें बीदर) के राजा भीष्मककी धन्या थी, भीष्मकका विचार इसका विवाह श्रीकृष्णजीके साथ करने काया, लेकिन इसके भाई रुक्मने हठ पूर्वक इसका विवाह श्द्रेरोंके राजा शि शुपादसे ठहरा दियाथा । रुक्मिणीका श्रीकृष्णके चरणोंमें पहिलेहासे अनुरागया एवं विवाहके ऐनवक्त उसने अपनी करुणामय विनती पत्रम लिखकर एक बृद्धब्राह्मणके हाथ श्रीकृष्णजीके पास भेजी । मुरत महाराजटारिकासे धाये और बह पूर्वक रुक्मिणीजीको लेगये। टारिका पट्टच महाराजने बड़ी धूमधामसे विवाहकिया और रुक्मिणीको अपनी पटरानी बना लिया ।

रुचक पंडित (अलङ्कार सर्वस्वकोरचयिता)—यह कश्मीरके राजानक वंशके समारंपारथे । रूपकभी इन्हींका नामथा । वि० सं० की ११ वीं शताब्दीमें हुये ।

सद्वट (काव्यालंकारके निर्माता)—कश्मीर म वि सं की ११वीं शताब्दीमें हुये । इनके रथे काव्यालंकार पर गामिनवगुप्त भाषापने कृतिरचयी और नेमिनामक साधूने वि सं की ११ वीं शताब्दीके प्रथम पादम उसपर टीका रचाया ।

रुस्तम (पृथ्वी प्रसिद्ध ईरानी पाहिलखान)—यह जालका पुत्र तथा शामका पौत्र बड़ा बली पाहिलखान होकर ईरान (फारिस) के बादशाह कैकाकसका सेनापति था । मल्लयुद्ध तथा शत्रुविघामें निपुणया और रणभूमिमें परम भयानक शत्रुहोनेके कारण मध्यप्राशियाके सपुरामे इससे थर २ का पते थे। अनेक मल्लयुद्धोंमें इसने विजय प्राप्त की थी और अफरासियाव इरपादि बड़े २ पाहिलखानोंको पछाड़ा था । रुस्तमहीकी सहायतासे अफरासियावका राज्य जमशौदके पुत्र फौफुबादको मिछाया । अंतमें शत्रुओंने धोखा देकर इसके बेटेको इससे लड़ाकर मरवादाया । पश्चात् इसको भी एक अन्ये कुंए में जो मालुक लकड़ियोंसे पटा हुआ था और जिसके भीतर भाले गड़ेहुये थे गिराकर मारवाला । रुस्तमने मरते हुए अपने धोखा देनेवाले शत्रुको वीरमारकर वध किया । स ई से प्राय १८०० वर्ष पूर्व हुआ । रुस्तमशब्द आजकल वीरता वाचो हो रहा है ।

रूपमती रानी—मैल्कम साहब कृत इतिहासमें लिखा है कि “ रूपमती सारंगपुरकी किसी घेराफी बन्पा, देखने भालने में सुंदर और गाने बसा नेमें निपुणथी, कविताभी करतीथी, सैकड़ों राग उसके बनाये माल्वादेशमें अब तक प्रसिद्ध हैं, जिनको रासधापी और कलावंत लोग कंठ सीखतेहैं । माल्वाके राजा बालबहादुरने रीझ कर उसको अपनी पटरानी बनायाया । रंगमदलके लड़ेर जो बाजबहादुरने रूपमतीके लिये बनवाया था अबतक पड़े हुयेहैं । इस प्रकार राग विद्यासमें ७ वर्ष बीतने पापेथे कि स ई १५७० में मुमल सम्राट अकबर के सेनापति आदमखाने माल्वापर खटाईकी और बाजबहादुरकी परास्त किया ” । खफीखी इतिहासकार लिखताहै कि “ जब बालबहादुर हारकर भागा तो रूपमती आदमखाने (अहमदखाने) के हाथपडी, आदमखाने के हृदय में रूपमतीके दुःख, विरह और विनतीसे किञ्चित्हाज दया नहीं वापस

होती थी और सब्जे प्रेमकी खबर नरखकर वह नाना विधिसे उस पराधीन स्त्रीको खताता था, ऐसी भावसिद्धी वृत्तमें रूपमतीने मिलनेका एक समय नियत किया और खूब सजकर मुंहपर कूमाळ डालकर छेटरही, नियत समय पर जब आदमखीं भाया तौ दासियों ने रूपमतीको जगाया पर मुर्दा पाया क्यों कि वसने विष खाछियाया । रूपमतीका प्रेम अपने प्रियतमके साथ अत्यंत बढ़ा हुआ था जबसे वाज बहादुर आंखों भोट हुआ था वह धिक्क हो यह पद पढ़ती थी और चूट २ रोती थी-

दोहा-हुम विन जियरा रहतहत, मांगत है सुखराज ।

रूपमती दुखिया भई, बिनाबहादुर वाज ॥

उजैनमें एक ताळाबके बीच रूपमती और वाज बहादुर दोनोंकी कब्रें हैं । भूमण्डलके इतिहास में बहुतकम ऐसे दो स्त्री पुरुषका वृत्तांत मिलता है जिनमें ऐसा सच्चा और निष्कपट प्रेमहो, जिनके चित्त परस्परकी प्रीति से ऐसे भाव भिंत हों और जिनकी चित्तकी वृत्तियों में इतनी समानता पाई जाती हो ।

रूपसनातनगोस्वामी-(वैष्णव धर्म प्रवर्तक) भक्तमालकी टीकाके अनुसार रूप और सनातन दोनों भाई बङ्गदेशमें बादशाही पदाधिकारीथे, चित्त में वैराग्य उदय होनेके कारण सर्वस्व छोड़ श्री नित्यानन्द महाप्रभुके शिष्य होगये और गुरुकी आज्ञानुसार वृंदावनमें आकर वैष्णव धर्मका प्रचार किया । नित्यानन्द म० श्रीकृष्ण चैतन्य म० की सम्प्रदायके थे । मिस्टर ग्राउसके लेखानुसार उस समय थोड़ेसे श्रोतियोंके सिवाय वृंदावनमें बिलकुल वनपा, रूप तथा सनातन दोनों भाइयोंने निज शिष्य नारायण भट्टकी सहायता से तीर्थों और देवस्थानों का पता लगा २ कर मूर्तियों स्थापन कीं । रूपगोस्वामीके सेव्य ठाकुर श्री गोविन्ददेवजी थे जिनका बहुत ऊँचा मन्दिर जयपुरके राजा मानसिंह ने वि० सं० १६४५ में १३ लाख रुपयेके खर्चसे बनवायाया । सनातन गोस्वामी के सेव्यठाकुर मदनमोहन जीथे जिनका मंदिर किसी महाशय गुणानन्द नाम कका बनवाया हुआ अबतक वृंदावनमें मौजूद है । Catalogus Catalogorum के अनुसार निम्नस्थ ग्रंथ रूप गो स्वामी कृत हैं-उज्ज्वल नीलमणि, बद्धवदूत, कार्पण्य पुञ्जिका, गोविंद बिरदावली, चैतन्याष्टक, दानकेलिकौमुदी, पद्मावली, मीतसन्दर्भ, विदग्ध भाषण नाटक (स० ई० १५४९), अजबिलासस्तव, संतोषामृत, सरकलिकावल्ली (स० ई० १५५०), उपदेशामृत, गंगाष्टक, गौरांगपुर कल्पतरु, छन्दोष्टावशक, नाटक चंद्रिका, परमार्यसन्दर्भ, प्रेमेन्दुसागर, मयुरा

महिमा, पमुनाटक, ललित माधव नाटक, विद्याप कुसुमाश्रुति, शिवादीक, साधन पद्धति, ईश दूतपाव्य, हरेकृष्णमहामयार्थीरूपण, भक्तसामृतसिन्धु, सुकुन्दसुत्कारनावली टीका, रसामृत और हरिनामामृत व्याकरण। Catalogue Catalogorum के अनुसार यह ग्रंथ सनातन गोस्वामी कृत है—उन्वयस्य करण, भक्ति सिन्धु, भक्ति रसामृत सिन्धु, भागवतामृत, विष्णुतोषिणी, हरि भक्ति विद्यास, उन्वयलनीलमणिटीका, भक्ति चन्द्रमं, षोडशतक व्याख्यान और स्ववमाला। रू. और सनातन दोना भाइयोंकी अस्थि पृथावनमें श्रीराधा वामोदरके मादिरम संविषहै।

रैवती—गुजरातके सूर्यवंशीयजा रैवतकी कन्या श्रीकृष्णजीके माइ बल रासजीको पियाही गई थी और इनसे दो पुत्र उत्पन्न हुयेये। स्वरूप इनका बड़ा सुंदर था और ऊँच लम्बाया। इनके पिता रैवतने फुलस्यली नामक नगरी बसाई थी। इन्होंने अंतमें सत किया।

लल्लुभट्ट (प्रसिद्ध ज्योतिषी)—इनके बापका नाम त्रिविक्रमभट्ट और दादे का नाम शाम्भु था। भार्गवभट्टीयवंशके टीकाकार परमेश्वरजी लिखते हैं कि, प्रसिद्ध ज्योतिषी भार्गवभट्ट इनके गुरुये। इन्होंने पठन पाठनके कार्य भार्गव भट्टादि विद्वानोंके ज्योतिष सिद्धांतोंको श्रेणीबद्ध करके सुगम किया और उसमें अपनी तरफसे अनेक विशेष बातें सम्मिश्रित करके “लल्लुसिद्धांत” रचा। “शिष्यधी वृद्धिदा” तथा “पाटीगणित” नामक ग्रंथभी इन्हींके बनाये हुये हैं। पश्चात् भास्कराचार्यने इनके अनेक ज्योतिषग्रंथोंको विचारसहित पढ़ कर “सिद्धांतशिरोमणि” नामक ग्रंथ बनाया था। लल्लुजी पठनाप्रसक्तके रहनेवाले थे और वि. सं. की छठी सताब्दीके उत्तरार्द्धमें हुये।

लल्लूलालजी (भाषाकवि)—यह भागरेके रहनेवाले सहस्रावदीय ब्राह्मणये भाषागद्य लिखनेकी प्रणाकी प्रथम इन्हींके खड़ाई। सीधे बोधे, चौपाई, सोरटे, छंदभी अच्छे लिखते थे और छाछकविनामसे पद पूर्ति करते थे। निम्नस्य ग्रंथे जिनमेंसे बहुधा खड़ी बोलीमें हैं इन्हींके बनाये हुये हैं—

- १ प्रेमसामर (भागवत वृशमस्कंधका भाषानुवाद)
- २ बाहिकराजनीति (नारायणपंडितके द्वितीयदेशका भाषानुवाद वनभाषामें)
- ३ सभाविलास
- ४ माधवविलास
- ५ छाछकविकानामक विहारी सतसईका तिलक

६ मुंदरदासके प्राचीन भाषानुवादसे सिंहासनबत्तीची वा खड़ी हिंदी बोली में अनुवाद ।

७ शिवदासकृत संस्कृत वेतालपंचविंशतिकाका भाषानुवाद सूरतमिभने जयसिंह सवाई जयपुर नरेशके हुकमसे कियाया । छल्लूने सूरतमिभके अनुवाद का उल्पा हिंदोस्थानी खड़ीबोलीमें किया ।

८ मोतीदासने कामवन्वला मोधवानलनाटकका भाषानुवाद एक संस्कृत के प्राचीन ग्रंथसे स० ई० १७०० के लगभग कियाया । छल्लूने इसी भाषानुवाद का उल्पा हिंदोस्थानी बोलीमें किया ।

९-कवि कालिदासकृत शकुन्तलाका उल्पा हिंदोस्थानी बोलीमें । छल्लू स० ई० १८०३ में विद्यमानथे ।

लालितादित्य—(काश्मीरका प्राचीन राजा)—इसने स० ई० ६९७ से ७३३ तक काश्मीरका राज्य भोगा और कन्नौज, गौडदेश, कालिङ्ग तथा कर्नाटकके राजाओंको परास्त किया और अनेक द्वीपपर अपना अधिकार जमाया । यह भव भूति कधीश्वरके कन्नौज से अपने साथ काश्मीर लियालेगयाया । काश्मीरमें अनेक मंदिरभी इसने बनवाये थे । अन्तमें हिमालय पारकरके चीनपर चढ़ाई करने जाताथा लेकिन रास्तेहीमें मरगया ।

लहिनासिंहसरदार—इसके बाप सरदार देसासिंहको महाराजा रणभी तसिंहजीने सतलुज और रावीके बीचके पहाड़ी मुल्कका गवर्नर नियत किया था । स० ई० १८३३ में सरदार देसासिंह के सिंघारने पर सरदार लहिनासिंहको गवर्नरी का भोद्धा मिला और इन्होंने बड़ी योग्य रीति से मुल्कका इन्तजाम किया । अंतमें जब खालसा फौज विगड़ी तो सरदार लहिनासिंह समय टाककर तीर्पाटनको खलेगये । जब फिसाद कुछ कुछ ठंडा पडा तो लाहौरके ब्रिटिश रेजीडेन्टके बुझाने से वापिस भाये परंतु उपद्रव फैलने के सिद्ध देखकर पुन स० ई० १८४६ में बनारसको पधारें और वहीं परलोकगामी हुये । यह बड़े शिल्पकार तथा भाषिकार थे, खालसा फौजके तोपखानेमें इन्होंने बड़े ३ सुधार किये थे । कौमके जाटये और खालसापन्यको मानते थे । भापके सुयोग्य पुत्र सरदार दयालसिंह मजीठिया जिला अमृतसर के नामी रईस ब्रिटिशगवर्नरमटके कृपामामन हैं ।

लक्ष्मणजी—यह महाराज रामचंद्रजीके छोटे भाई, कोसलेश राजा दशरथके पुत्र सुमिथाजाके गर्भसे त्रेतायुग के अंतमें उत्पन्न हुये थे ।

महाराज रामचन्द्रके साथ इनका धातृ स्नेह भगाध या पर्व धमवासकी वरके साथही गये थे। वनमें जय महाराज व्यापन करते ही यह धनुषबाण छेकर चौकड़ी किया करते थे। महाराजका इशारा पाकर इन्होंने शूर्पनखाके नाक काम काट डाले थे और अन्य सब छद्माइयोंमें जो राक्षसोंसे हुई महापानके साथ २ बड़ी वीरसाजे छड़े थे। यह वीरत्वकी मूर्ति होकर बड़े बड़े स्वभावके थे। धनुषयज्ञके समय रामा जनक पर, महाराजको छोड़नेको सामेके समय भरतजीपर और सीतामाताकी सुधि भूखनेके कारण सुग्रीवपर इनका क्रोध करना विदित है। सियास्थवंपरके अवसर पर जो विवाद इनके और परशुराम जीके बीच हुआ था उससे इनका स्वभाव बहुत कुछ जाना जासकताहै। राम-णके। सुखेन तथा सपरिवार नष्ट करके महाराजने लक्ष्मणजीके नामपर लक्ष्मणनाम सौमित्रा (Sumatra) रक्खा और उसका शासन विभीषणको सौंपा। लक्ष्मणजी अपनी माता सुमित्राके सम्बंधसे सौमित्र कहलाते थे। राम्यसिंहासन भाङ्ग होनेपर महाराजने लक्ष्मणजीको किसी दूर देशके शासनपर नहीं भेजा किन्तु राजकाजकी देख भाळ के लिये अपने पास ही इनको रक्खा तथा अयोध्याके समीपम इनको बहुतसा मुल्क दिया जिसमें इन्होंने लखनपुर नामक नगर बसाया जो अब लखनऊ नामसे मसिद्ध है। औरगभेवने पवित्र स्थान जामनगर लखनपुरके छण्डेरोंपर एक मसजिद बनवायी थी। यह मसजिद अब लखनऊम किल्ला मन्दीरभवनके भीतर है। सीताजीकी खेरी बहिन उर्मिणा से लक्ष्मणजीका विवाह हुआ था जिससे अङ्गद और अङ्गकेतु दो पुत्र थे। महा राजने लक्ष्मणजीके पुत्र भगदको काकरूप देशका राज्य दियाथा और वहाँ अङ्गदीय पुरी नामक नगरी बसाई थी। वृद्धे पुत्र अङ्गकेतुको मङ्गभूमिका राज्य दिया तथा चन्द्रकाया नामक एक उत्तम पुर वहाँ बसाया था। महाराजके वैकुण्ठ पधारमेसे पहिले सरयूतट अयोध्याम लक्ष्मणजीको देह त्यागना पड़ी। यह स्थान "लक्ष्मण घाट"के नामसे मसिद्ध है। लक्ष्मणजीका रंग गोर था, और डीठ सुहोला था।

लक्ष्मणदाससेठ मथुराके (राजा लक्ष्मणदास, सी आई. ई.) सेठ राधाकृष्णके घर भा कृ ८, वि सं १९१० को मथुरामें भापका जन्म हुआ पिता भापको ५ वर्षका छोड़ मरेये। सेठ गोविन्ददासके पीछे भाप सेठ घरनेके माळिक हुये। निज पूर्वगोंकी समान राजभक्त होकर भाप सदैव गवर्नेमेन्टके दातृकोषोंमें चन्दा देते रहतेये और स्वदेशी धर्मकार्योंमें भी सहायता करनेसे ईद मदी मोड़तेये। बड़े धर्मलुत्सगी थे तथा भारतधर्ममहामंडलकी शोभाये। गिरिदामकी यात्रा सालमें कई दफे श्री बख्शोसहित धूमधामसे किया करतेये।

अन्तमें कर्मचारियोंके अप्रबन्धसे आपकी कलकत्तेकी कोठीका काम ठीका पड़ गया। आप जिसे आपकी हुंडी पत्नी सब बन्द हो गई थी लेकिन आपने सर पन्टोनी मैकडोनल्ट छफ्टिनेन्ट गवर्नरकी सहायतासे दीप्रही बात बना ली थी तथा सब प्रबन्ध ठीक कर दिया था। इस घटनासे सेठजी का चित्त मग्नाहूत हो गया था, चिन्ताने भीतरही भीतर शरीर खरलिया था निदान ४० वर्ष १ महीनेकी उम्रमें अश्वरोगसे पीड़ित होकर परमधामको सिधारेसेठ द्वारिकादास तथा दामोदर दास आपके दो पुत्र हैं। बुद्धिशागवर्नमेन्टने सेठ लक्ष्मणदासजीको सी आई ई सी पदवी स ई १८८६ में और राजाका स्थिताप स ई १८९३ में दिया था तथा धारण्यकता पढ़नेपर अदायतमें हाजिर होनेसे माफ किया था।

लक्ष्मणसेन—(बंगालके अन्तिम सेन वंशी नरेश) नदियामें इनकी राजधानी थी। स ई १२०२-३ में जब शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीके सेनापति यादवियार खिलजीने बंगालपर चढ़ाईकी सो उन दिनों यह बहुत बूढ़े थे, निदान मुसलमानोंकी फौजका साम्हना नकरसके और कुटुम्बसहित पुरी (बङ्गीसा) को भाग गये और शेष अवस्था जगन्नाथजीके मन्दिरमें रहकर काटी। गीतगोविन्दके कर्ता जयदेव मिश्र महाराज लक्ष्मणसेनके वंशरके कविराज थे। लक्ष्मणसेनका दूसरा नाम अशोक सेन था और यह स ई ११४९ में निज पिता केशवसेनके बाद बंगालकी गद्दीपर बैठे थे। इनके पूर्वज धीरसेनने स ई ९८६ में बंगालका राज्य पाछवंशी राजाओंसे छानकर सेन वंशी नरेशोंकी मूल रोपणकी थी। धीरसेन और लक्ष्मणसेनके बीच ७ और राजाओंने राज्य किया। राजा लक्ष्मणसेनजी बड़े विद्योत्साही गुणग्राही थे, अनेक विद्वान् पंडित उनके वंशरम रहते थे। नदियामें महाराज लक्ष्मणसेनके सभास्थानके द्वारपर लगे हुये पत्थर पर निम्नस्य श्लोक अंकित है—

श्लो०—गोवधनश्चशरणो जयदेव समापति ।

कविराजश्चरामानि समितौ लक्ष्मणस्य च ॥

लक्ष्मीश्वर सिंह (महाराजा सरलक्ष्मीश्वर सिंह बहादुर, के सी यस आई दरभङ्गा नरेश)—महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहके पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मीश्वरसिंहजी स ई १८६३ में दरभङ्गाकी गद्दीपर बैठे। बाल्यावस्थामें रियासत का प्रथम कौट आप-बाईसके द्राप होता रहा और आपको अङ्ग्रेजी तथा देशी शिक्षा दी गई। स ई १८७९ में राज्यका पूरा अधिकरण आपको सौंपा गया और सबसे आप तन मन धनसे प्रजाका हित तथा राज्यका प्रबन्ध करते रहे। कई वर्षतक आप धायसरायकी लेजिसलेटिव कौंसिलके मेम्बर रहे और स्वदेशा भक्तिका परिचय सदैव आपसे मिलता रहा। भारत धर्म

महामण्डलके भाप प्रधानके और निज पूर्वजाके धर्मपर दृढरादिकर सबै धर्म-
कार्यमें तत्पर रहतेथे । स ई १८७३-७४ के अकादमें ३० लाखसे अधिक
रुपया भापने प्रजा की रक्षा में खर्च कियाया । खड़पुर तथा दरभंगामें भापने
रोगियोंके हितार्थे दवाखाने बनवाये थे और सैकड़ों स्कूल, सैकड़ों मीठ पत्नी
सड़क तथा छात्रों दरस्त पथिकोंके आरामके लिये निजपत्न्यमें छगवाये थे ।
राज्यकी नदियोंके सब घाटापर पुल बनवा दिये थे और अकादके समय खेत
खाँवनेके लिये नदिरें खुदवा दी थीं। धृपी तथा गाय बैल और घोड़ोंकी उत्पत्तिके
सुधारया भी भापने प्रशंसनीय प्रयत्न किया था । भाप मातृभाषा हिन्दीके हितै
धीये और विद्वानों तथा गुणाजनोंका सत्कार करते थे । ४१ वर्षकी वयमें ता १७
दिसंबर स.ई १८९८को भाप निःसन्तान परमधामको सिधारे और भापके छोटे भाई
महाराज रमेश्वर सिंहजी (यत्तमाननरेश) राज्यके माणिक हुये काशीके स्वामी
विशुद्धानन्द सरस्वती भापके गुरु थे । उन्हींके उपदेशसे भापने काशीमें दर्मज्ञ
पाठशाळा स्थापन की थी और दर्मज्ञ घाट बनवायाया । काशीजानेपर भाप
सदैव विद्वाना तथा विद्यार्थियोंको दान पुण्यसे प्रसन्न किया करतेथे । स्वामी
विशुद्धानन्दसरस्वतीने भापका मृत्युका तार पाकर गद्दकण्ठसे कहा-

श्लोक-लक्ष्मीयास्पति गोविन्दे धीरभीर्षारमेण्याते ।

गते मुञ्जे पश' पुञ्जे निरपठम्बा सरस्वती ॥

दमज्ञानरेश भेषियकुलोत्पन्न प्राक्षण हैं ।

लक्ष्मीबाई (झांसीकी मर्दानेरानी)-राजागगाधरराय बुंदेलेकी
रानीथी । गगाधरराय स.ई १८५२ में एक दत्तक पुत्रको छोड़कर सिधारगयेथे ।
रानीने अपने कैपालक पुत्रको गद्दी विधानके लिये ब्रिटिशगवर्नमेंटसे मायता
की, परंतु गवर्नरजेनरल लार्ड डेल्हौसीने यह बात स्वीकार नकी और डा.सी
की रियासत ब्रिटिशराज्यमें मिलाकर रानी की पेन्शनकरवी। इससे १९वर्षबाध सन्
५७ का गवर् हुमा जिसमें रानीने झांसीकी पलटनको एकसापा और ४ सून सन्
५७को झांसीका किला घेरा,जिसने अंग्रेज किलेमें थे काटडाळे गये और किलेपर
अधिकार जमाकर रानीने नये सिरेसे झांसीका राज्य स्थापन किया । पर
उसके यह विश्वास था कि अक्षय एक दिन अंग्रेजा से घोरयुद्ध करना होगा
निदान उसने राजा रामचन्द्ररायके समयकी २० तोपें धरती से खुदवा-
कर निकलवाई और १४ हजारसेना एकत्र की । एकवर्षमी पीलने न पाया
कि २५ अगैल स०ई० १८५८ को अङ्गरेजी फौजने झांसीका किला व्या घेरा । रानी
के सिपाही बड़ी धीरसासे छड़कर कटमेरे, बूसरेदी दिन झांसीका शहर और
तीसरे दिन झांसीका किला रानीसे छूटगया परंतु दो हजार सेना सहित रानी
बच कर निकल गई और फादपीकी सड़क पर होती हुई ग्वाकियर पहुँच गई

की बागी फौजसे मिलगई । जय ग्वाळियरको भी अंग्रेजोंने विजय कर लिया
 सौ रानी छिपरानदीके किनारेकी तरफ भागी, परन्तु रास्तेमें मुरारके निकट
 एक अंग्रेजी फौजसे सामना हुआ, जिसमें १७ जून स० ई० १८५८ को धीरसा
 सहित छड़कर कटमरी ।

लक्ष्मीचन्द्र सेठ (सेठ वंश मथुराके सस्यापक)—इनके

पिता मनीराम खण्डेलवाल्लवैभ्य जयपुरराज्यके रहनेवाले, धर्मके दिग्गम्यरी जैन
 ग्वाळियरस पारखजीके साथ मथुराको अपने तीनों पुत्रों लक्ष्मीचन्द्र, राधाकृष्ण
 तथा गोविन्ददास सहित आयेये । पारखजीके कोई भौलाद नहीं थी निदान अन्त
 समय उन्होंने लक्ष्मीचन्द्रको गोविंठाळकर अपनी अट्ट सम्पत्तिका मालिक
 बनालिया (देखो पारखजी) । पारखजीके उत्तराधिकारी होनेपरभी इन्होंने निज
 पूर्वजाका जैनमत नहीं त्यागा और मथुरामें एक जैनमन्दिर बनवाया लेकिन
 वैष्णवसम्प्रदायसे भी किसी प्रकार इनको द्वेष नहीं था । इनके पुत्र रघुनाथ
 दासजी तथा इनके सबसे छोटे भाई गोविन्ददासजी निःसन्तान सिधार गये,
 केवल इनके भाई सेठ राधाकृष्णजीका वंश खला । से० राधाकृष्णसे इनको
 बड़ी प्रीति थी । इनसे बिनाकहे सुने इन्होंने प रङ्गाचार्यके उपदेशसे जैनधर्म
 त्याग घृन्दावनमें रङ्गजीका मन्दिर बनवाना आरम्भ किया था लेकिन निजका
 कई लाखरुपया खर्च करदेनेपर छत्तभी नहीं पटपाईथी । जब यह बात इनको
 मालूम हुई तो माइका शिष्य बुखाना उचित न समझ इन्होंने उनसे कुछ नहीं
 कहा और ४५ लाख रुपयेके खर्चसे स० ई० १८५१की साल एक मन्दिर तैय्यार
 करादिया तथा उसके खर्चके निमित्त ५३ हजार रुपये धार्मिक बचतकी जाय-
 दादलगायी । इनके शारीरक बल, उदारता तथा मिलनसारिकी कृतानियें भव-
 तक मथुरामें प्रसिद्ध हैं । इनके तथा इनके भाई घेठोके सुख जैनकी सीमा नहीं
 थी, समय आनन्दसे बिना किसी तरहकी चिन्ता के बीतता था । अजमें यदि
 किसी शोकका छोकरा मातःकाळ देरतक सोता रहता है तो उसकी माता बहु-
 धा कहते सुनी जातीहै कि “ मरे छोरा ! पेसोहू कहा सेठ लक्ष्मीचन्द्रको
 घेठोहै, एतो दिन चढि आयो, उठे नाहि हैरे” ।

लाङ्गफेलोफधीश्वर—(H. W Longfellow) यह अमेरिकानिवासी

कवीश्वर स. ई १८०७ में जन्मे और १८८२ में मरे । यूनीवर्सिटीकी सर्वोच्च
 परीक्षा उत्तीर्ण करनेके पीछे इन्होंने यूरोपके अनेक देशोंकी यात्राकी, यात्रासे
 छोटकर हार्वर्ड यूनीवर्सिटी कालिजमें प्रोफेसर (अध्यापक) का पदपाया
 और पद्यरचनाकी भार ध्यान दिया । इनके रचे अनेक ग्रन्थ अंग्रेजी पद्यमें
 विद्यमान हैं जिनके कारण इनका नाम चिरंजीव है । अक्सर तथा प्रसङ्गसे
 अनुकूल शब्द प्रयोग करनेकी इसकी शक्ति अलौकिक थी और इनकरचे पद
 ऐसे मनोहर हैं कि हृदय पकटपर अंकित हो जाते हैं तथा श्रोताओंके कानोंको
 सुभाषित हैं । इनके विचार और अलंकार भी प्रभाव शाली तथा धर्माश्वरोंसे हैं ।
 यह फ्रांस, जर्मनी, इटाली, स्पेन, हॉलैंड, डेन्मार्क, स्वीडन, और स्वीटनलैंड

इत्यादि देशोंकी भी भाषायें जानतेथे और अनेक महापुरुषोंके भीवनचरित्र भी लिखकर इन्होंने समाचार पत्रोंमें छपवायेथे । स ई १८६९ में जब यह दूसरी दफे यूरोपकी यात्राको भायेथे तो भावस फार्ड विश्वविद्यालयमें इसको ही ही यह की पदवी प्रदानकी थी ।

लारेन्स (सरहेनरी मांटगोमरी लारेन्स Sir Henry
Montgomery Lawrence) यह लफटिनेट कर्नल अलेग्जेंडर विलियम लारेन्सके पुत्र थे और लंदनके स्कूलमें विद्यार्जन करके ईस्ट इन्डिया-कम्पनीके ताप खानेमें भर्ती होकर स ई १८२२ की साल बंगालको भायेथे । स ई १८४३ में कान्पुरकी घटाईपर भेजे गये और वहाँपर जो वीरता इन्होंने की उसके बदलेमें मेजरका पद पाया । कुछही दिनों पीछे नेपाल वृत्तमें ब्रिटिश रजीमेंट नियत करके इनको भेजागया और बाघको सतलज नदीके किनारेको छड़ाइयामें अनेक साहस पूरा काम करनेके बदलेमें लफटिनेट कर्नलका पद इसको दियागया । स ई १८४६में लारेन्स साहबको लाहौर वृत्तमें रजीमेंट नियत कियागया, वहाँमी इन्होंने अथवा काम करके के.सी.पी की उपाधि पाइसन ५७ के गवर्नर बामिणों से यही वीरतासे छडे, परन्तु अत्यन्त एक तोपका गोला फटकर इनके छात्र और इसकी मृत्युका कारण हुआ। इन्होंने फिरकी सिपाहियोंके अनाथ बच्चोंके लिये लारेन्स शाळा स्थापन कीथी । इङ्ग्लैंडमें सेन्टपालके गिर्जेमें इसका स्मारक चिह्न है । इसका स ई १८०६ की सालमें जमे और स ई १८५७ में मरे ।

लाल कवि— देखो कल्लुछाछ ।

लालगुरु— यह माल्याके रहनेवाले साधू मुगल सम्राट जहांगीरके समयमें हुये । जातिके खत्रीथे, भाषा कविता अच्छी करतेथे, भगीलोग इसकी पूजा करते हैं तथा इनका नाम लेते हैं ।

लालमुझकद— यह अकबर बादशाहके मंत्री राजा वीरबलका पुत्रथा । बखली नाम इसकाछाछ था और अपने पितासेभी अधिक ठोड़ी पसंदथा । कुछहीसे इसके मनमें विरक्ततावसाई हुईथी, संसारको मिथ्या जानताथा और मानुषीय बुद्धिको अत्यन्त समझता था । स० इ० १५८३ में कान्पुरकी छड़ाईमें निज पिता राजा वीरबलके मारे जाने पर यह अपना सर्वस्व छुटाकर सन्यासी होगया आगराके पास फतेपुर सीफरी नामक ग्राममें इसके भापके वनघाये महिछाके खण्डेर अबतक पड़े हैं । लोग इसको बडाचतुर समझते थे पर यह लुकमान हकीमकी तरह अपनी बुद्धिको गुच्छ जानताथा । इसको बनाई सैकड़ों पहेलियों देखाभरमें प्रसिद्ध हैं जिनमेंसे अत्येक इसबातकी प्रकाशक है कि गम्भीरगूढवातोंमें बड़े २ चतुर विद्वानोंकी युद्धि वैसीही अल्पज्ञहोतीहै जैसीकि साधारण बातोंमें वीरगंधारोंकी । मन्त्रोंके लिये आकषुद्रककी एक पहेली नीचे लिखते हैं—

छाछबुझकड़ बुझियो और नचुझोकोय । पैराचकी धांधकर कोई दिरनाकूदो होय । छोग इसको चतुरस्रमझ बहुधावातोमें सम्मति लिया करतयेपर यह इस मतिष्ठाकोभी बुच्छ जाना करताया और इसीलिये इसने अपना नाम बुझकड़ रखालियाया ।

छालावाबू—इस बंगाली कायस्थने स० इ० १८१० की साल २५ छात्र रुपयेके खर्चसे वृन्दावनम एक मन्दिर बनवाया और बहुतसी जायदाद उसके रागभोगके निमित्त कृष्णार्पण की। आजकल इस मंदिरका वार्षिक व्यय प्रायः २२ हजार रुपयाहै । बडीतय्यारी रहतीहै । बहुत छोग भोजन पातेहैं ।

छालावाबूका असली नाम कृष्णधर्मसिंहया । यह दीवान प्राणकृष्णके पुत्र थे । इन्होंने प्रथम कई बपतक बर्दवान, कटक और उड़ीसामें मौकरी कीयी और ३० वर्षकी उम्रमें ब्रजमें आकर बसेये । गोवधनमें राधाकृष्णके चारों तरफ पकड़ घाट इन्दीके बनवाये हुये हैं । ४० वर्षकी उम्रमें पैरागी होकर ब्रज मंडलमें विश्वरमे लगेये, अतमें गोवधनमें एक घोड़ेका छाससे मरे । ब्रजमें निम्नस्य लोकोक्ति इनके विषयमें प्रसिद्धहै—“छालावाबू मरगये घोड़ा दोष लगाय । पारखके कीड़ा परे विधि सौं कहा विसाय ” । यह अपने घरके बड़े अमीरये, अवसक इनका वंश बंगालमें पायकपाड़ा नरेशके नामसे प्रसिद्ध है । शारेनहैस्टिंगजु गवर्नरजेनरल हिन्दके दीवान गंगागोविन्दसिंह इस वंशके अधिष्ठाताये और बडी भापे सम्पासे छोड़ मरेये ।

लिकर्गस (Licargus) इस प्रसिद्धत्यागी पुरुषने स्वायंवेशवासियोंके हिसाप धर्मशास्त्र (कानून) रचाया । इसके पिता राजा यूनोमसके मरनेपर पोलीडेफटीज इसका बड़ा भाई स्वाटांके राज्यसिंहासनपर बैठा, पर घोड़ेही दिन पीछे अपनी रानीको गर्भधती छोड़कर सिंधारगया। गर्भधती विधवाने अपनेदेवर लिकर्गससे कहा कि यादतुम मुझसे शादी करलो तो निश्चयहोकर राज्य करो क्याकि जो बच्चा मेरे पैदा होगा उसको मैं मारवाळुंगी ” । परन्तु लिकर्गसने यह बात पसंद नहीं की और केरीलाल नामक भतीजापैदाहोनेपर उसको पाला और बड़े होनेपर उसको रामपाट सौंप दिया । पश्चात् लिकर्गस देशाटनको निकला और अनेक देशोंके धर्मशास्त्रासे जानकारी प्राप्त की । देशाटनसे लौटकर लिकर्गसने स्वाटांकी हालत बच्छी नहीं पाइ क्याकि राजाका स्वेच्छाचारी होना प्रजागणको नापसंद था । यह देख लिकर्गसने राज्यको सुधारना चाहा, निदान उसने राजा और प्रजाके हितार्थ धर्मशास्त्र बनाया जिसपर चढ़नेसे सब बखेदे दूर होगये और घोड़ेही समयमें स्वाटांके खनेवाले धीर सिपाही बन गये । इसके पीछे लिकर्गस फिर बाहर चलेगये और स० इ० से ८७० वर्ष पूर्व बृद्ध होकर शहर फ्रेटमें मरे ।

लीलावती—यह पटनाक राजाकी बेटी उज्जैनके राजा भोजको विवाही थी। खूब छिन्नी पढी थी और राज्यकी पुत्री पाठशाळाभाकी देख भाळ रखती थी।

लीलावती २—भास्कराचार्य ज्योतिषीकी पुत्रीका नाम लीलावती था जिसके नामसे लीलावती नामक भङ्गाणितकी पुस्तक रचकर " भास्कर दिवाकर " उक्त ज्योतिषीने चिरजीव किया।

लीलावती ३ (पहिल मण्डनमिश्रकी स्त्री)—काशीसे चलकर गयाजीके रास्तेमें शोणभट्टनदके किनारे ब्राह्मणवास नामक ग्रामहै। वहाँ विष्णु मित्र नामक ब्राह्मणसे घर इसका मन्म हुआ। इस पुत्रीके अतिरिक्त उसके और कोई सन्तान नहीं थी निदान उसने इसको शनै २ काव्य, व्याकरण, भूगोल, खगोल, अलङ्कार, गीत, वाद्य, नृत्य, कलाशास्त्र, पादशास्त्र तथा गणितमें प्रवीण करके वेद उपवेद और शास्त्र पुराणाकी शिक्षा देकर सब विद्याओंमें निपुण करवियाया। पश्चात् इसका विवाह मुमक्षिद्व मीमांसक पंडित मण्डन मिश्रसे होगया। दम्पतिमें खूब प्रेम रहा। पश्चात् जब शकर स्वामी और मण्डन मिश्रमें शास्त्रार्थ हुआ तो लीला मप्यस्य ठहराई गई। मण्डनमिश्रके परास्त होनेपर लीलाने शकर स्वामीसे शास्त्रार्थ किया लेकिन भाँतनसकी। इसके पीछे मण्डनमिश्र और लीला, शकरस्वामीके शिष्य होकर सन्यासी होगये। शकर स्वामीने शृङ्गपुर (शृङ्गगिरि) में मठबनवाकर लीलाको सरस्वतीनामसे उत्तम रहनेकी आज्ञा दी। जबतक जीती रही उसने शिक्षा, दीक्षा तथा ज्ञान उपदेशके द्वारा समाजधर्मका प्रचार किया। वहाँके लोग उसको " भारती " की उपाधिसे युक्त करके साक्षात् देवीके समान मानतेये।

लीहङ्गचङ्ग (चीनीराजनीति विशारद)—यह पृथ्वीवर अपने समयमें सबसे अधिक धनाढ्यसे, पासमें डेढ़ अरबरुपया नकदया, प्राय १० लाख रुपयेकी मासिक आमदनी थी और अर्द्धशेमें ९ हजार सिपाही निजके रखतेये। धनोपार्जन तथा राज्यसे उच्चाधिकारसे इसको बड़ा प्रेम था, और ऐसी विशिष्ट नीतिके ये कि पहुंधा घड़े २ अङ्गरेज राजनीतियोंको इनकी चालसे बळ भावमें पढ़ना होताथा। यद्यपि अफ़सिके उपोपारकी बुद्धिके अच्छा नहीं समझते थे परंतु अफ़सकी सेती इनके समयमें अधिक होती थी, चारम्बारके अकाफ़से घड़े हुंकी होतेये परंतु इन्हींके आधीन कर्मचारी अथका संग्रह करके भाष महंगा करकेमें अगुभाये यह घड़े बिठान तथा सुखेखक भी ये, चीनके उच्चाधिकारियोंमें इनको सबसे अधिक पदवियाँ मिली थीं और इनका भातङ्ग निरपमति यदवा देख मानेक चीनी राजनीतज्ञ कहा करतेये कि लीहङ्गचङ्ग चीनका राज्य किया चाहतेहैं। यूरोपियन राज्योंमेंभी इनका बड़ा सरदार या क्याकि चीन दुर्बारमें जो कोई यूरोपियन राजदूत भावा था उसका काम इनसे पिनानिठे नहीं चलताथा इन्हींके द्वारा चीनसे मिश्र २ राज्योंके साथ स-

न्धि हुआकरतीथी कोपलेकी खान खोदने तथा चीनके समुद्राकिनायेंपर इंग्लैंडके जहाज जानेका अधिकार पहिले पहिल इन्हींने दियाया और चीन तथा जापान राज्योंम युद्ध मिटाकर सन्धि कराना इन्हींका कामया । इन सबकामोंके बदलेम चीनके प्रधान आमात्यका पद इनको दियागयाया जिसपर अतसमयतक रहे । चीनी सम्राटकी आज्ञासे स ई १८९६ में यूरोप और अमेरिकाके अनेक देशोंमें यात्रा करके बड़ा सन्मान पायाया तथा बहुत कुछ अनुभव प्राप्त कियाया । चीनके सम्राटोंके समयमें ५० वर्षतक आपने राजसेवाकी। यूरोपके सन्नुष्ट करनेके लिये यह इके खीने अपने बड़े २ राजनीतिज्ञोंके सर धड़से जुदा करवा दियेये परंतु लीहगचग मरनेकी घडतक निजनीति निपुणताके कारण बचेरहे । इतने धनाढ्य होनेपरभी बडी सादीचाळ रखतेये और ठाठपसदनेये, चीनके कामळ और रेशमकेसे रोमवाळे थमड़ाका व्यापार करतेये और उपाजित द्रव्यमेंसे दीन दुस्सियो तथा सम्बधियाकी मददकरतेये । इनके सुप्रबंधके कारण चीन राज्यकइ इके घोर कुघट नार्भोमें पड़ने परभी यूरोपीय बादशाहोंके पंजेमें पडने से बचगया । स ई १९०१ में ७ वर्षकी ठम्रपाकर तथा कई बखे छोड़कर परम धामको सिधारे ।

लुकमान (Lokman)—मार्धान इतिहासकार लिखतेहैं कि लुकमान प्रथम कि र्सी इसराइलके गुलामये और कुछ दिनोंतक बढई तथा दर्जाका पेशा करते रहे-थोफिरफ्री विद्वान कहतेहैं कि यह यूनानके रहनेवालेये और इसप इन्हींका नामहै । भरषदेशवासियोंने लिखाहै कि लुकमान आषके धर्मये । मुसल्मानोंके पैगम्बर मुहमदनेभी कुरानमें लुकमानकी बुद्धि, विद्या और चातुर्यताकी तारीफ की है । हिंदोस्तानी पंडितोंकी रायहै कि लुकमान भारतषपके रहनेवाले लोक-मान नामक ब्राह्मणये और स्वदेशसे निकालेजानेपर यूनानमें जावसेये । सक्षित यह ऐसे अतुर पुरुषये कि प्रत्येक जाति तथा देशके मनुष्य इनको अपनाया चाहतेहैं । इनकी कहानियें तथा कहावत जो चातुरीसे भरपूरहै पृथ्वीके सब भागोंमें प्रसिद्ध हैं । स ई से प्राय १ हजार वर्ष पहिले यह इसराइल जातिके बादशाह दाऊदके समयमें विद्यमानये । आपने समयमें सएसे अधिक बुद्धि मान गिने जातेये परंतु यह अपनी बुद्धिको सुच्छ जाना करतेये । औरचक्र पाजे तथा उठानेकी पसगका आविष्कार इन्होंने किया ।

लेबनिज (G W Leibnitz) यह जर्मनीके रहनेवाले प्रसिद्ध सत्त्व विद्वानी होगये हैं । इाके धाप जो छीपजिगके विश्वविद्यालयमें कानूनके प्रोफेसर ये इनको ६ वर्षका छोड़कर मरगयेये । लेबनिजने स० इ० १६६५ में यम प. की परीक्षा उत्तीर्ण की और यूनानीहकीमोंके धनाये प्रथोका पढना आरंभ किया और बादको कानूनका इम्तिहान पास किया । स ई १६७२ में लेबनिज

साहस्य पेरिखनगरवोगधे और वहाँ अनेक गणितज्ञपाठितासे मुखाकाश की पन्चात्
 छेवनिज लन्दननगरमें आये और न्युटन आदि अनेक विद्वानासे मिछे कुछ दिन
 पीछे न्युटन और छेवनिजम एक नियमके अन्वेषण करनेपर झगडा पैदा हुआ
 दोनों कहतेथे कि उक्त नियम हमारा निकाला हुआ है, परंतु लोगोंने गिणय करके
 न्युटनको उक्त नियमका आविष्कार उद्विराया इस बातसे छेवनिजको बुझ हुआ
 निदान शहन्दाह जमनाने पुम विचार करवाया और अन्तमें यह निर्णय किया
 गया कि छेवनिज तथा न्युटन दोनोंहीको उक्त नियमका एकही समयमें अनुभव
 हुआ। यह नियम अब छेवनिजकी थ्योरम (Leibnitz's theorem) के
 नामसे विद्विष है परंतु शोककी बात है कि यह निर्णय छेवनिजके मर जानेके
 पीछे हुआ।

छेवनिज वडे चतुर तथा गणितशास्त्रके पूण ज्ञाता थे पर कमण्ट्री और
 लाटन्वीर्माथे। स० ६० १७११ में पीटर दीमठ महाराजा उसने छेवनिजको
 मिथीकौन्सेलरके पदपर नियत कियाया। स० ६० १७१६ में ७० वर्षके हो,
 मर मरे।

लामहर्षण (व्यासमहर्षिके शिष्य)—व्यासमीसे पुराणोंकी
 रेशेदा पाकर इन्होंने पुराणोंकी हरपणिका संहिदा रची और उसको अपने पुत्र
 उग्रभवासूतको पढाया। बादको उग्रभवासूतने हरपणिका संहितामें अपने ग्रन्थो
 सर मिलाकर १८पुराण पुष्ष् २२वनादियोबरदेवकीके हाथसे नैमिषारण्यमें मारगेयो

लोलिम्बराज (वैद्य) वैद्यजीवननामक ग्रंथ इनका बनायाहुआ है वै
 द्यजीवनके पहिले दो श्लोकोंसे ज्ञातहोताहै कि लोलिम्बराजने अपनी मियपानीके
 अनुपेधसे इस ग्रन्थकी रचना कीथी। इस ग्रंथमें कपोलकारिपत वातां कुछभी नहीं
 है केवल शरक आदि सुनियोंके धनाथे ग्रंथोंके गूढ रहस्योंका वर्णन है।
 लोलिम्बराज वैद्यकशास्त्रमें धन्वन्तरिके समानेध सङ्गीतशास्त्रके पूण ज्ञाता
 थे, वडे २ बुद्धिमान कायियोंके शिरोभूषणथे और राजा महाराजाभाकी
 सभामें इनका बड़ा सत्कार होता था। इनके पिता दिवाकरमीमी अद्वितीय
 वैद्य थे। वि स की १५ वीं शताब्दीमें हुये।

ल्युवर (मार्टिनल्युवर—Martin Luther) यह जर्मनीके सूरे सेकस
 नीमें स ई १४८३ की साल जन्मे। पिता इनके दृष्टिहीने निदान शिक्षा प्राप्त
 करनेम प्रथम इनको बर्फी कठिनाइ भेजनीपड़ी, परन्वात् जब इनके बापकी
 हास्यत कुछ सम्बद्ध गई तब उसने इनको १८ वर्षकी उम्रमें कानून पढ़नेके छिये
 फालिगमें बिदलादिया। वहाँ स ई १५०५ में इन्होंने यम. ए की परीक्षा
 उत्तीण की और फालिजके पुस्तकालयकी पुस्तके देखते २ वडे ग्रन्थहानी बन
 गये। तपतो इनके नातेदार भाशा करने लगेथे कि थोड़ेही दिनोंमें की

अच्छा पद इनको मिलजायगा परंतु ईश्वरको कुछ औरही करना मंजूर था क्योंकि उन्होंनेदिना पकरोज अगलमें हवाखाते वक्त इनके एक मित्रपर विजली गिर पड़ी जिससे वह मरगया और यह बाल २ बचगये । यह देख इनको बेराग्य उत्पन्न होगया और सत्कारको अस्वार्थ समझ इन्होंने घरबार त्याग दिया और सेन्ट अगस्टाइनके अस्पलके साधुओंकी मण्डलीमें रहने लगे, जहां भिक्षाकरके भोजन करना पड़ताथा । पश्चात् अगस्टायनके गिर्जेके पुजारीका पद इनको प्राप्त हुआ और थोड़ेही दिन पीछे सैक्सनके कालिजमें ब्रह्मज्ञानके प्रोफेसरके पदपर यह नियत कियेगये । इनकी विद्वक्षण शिक्षामणाछी तथा अपूर्व योग्यताकी तारीफ सुनकर वृत्तसे विद्यार्थी आनेलगे जिससे उक्त कालिजकी बड़ी उन्नति हुई । उन्होंनेदिनों इनको बाइबिलकी एक प्राचीन प्रति लैटिन भाषामें विचार सहित पढ़नेपर यह बात भले प्रकार प्रतीत हुई थी कि पोपके अनुगामी ईसाई लोग अनेक स्थलोंपर बाइबिलके अर्थ असली भाषाके विकृष्ट लगाते हैं परंतु धर्म सम्बन्धी विषयोंमें किसी राजा प्रजाको रोमके पोपकी सम्मति उल्लंघन करनेकी शक्ति न थी क्योंकि रोमके महाराजाका प्रभाव यूरोपके अन्य सब राजाओंपर छाया हुआ था और वह पोपका सत्प चित्तसे सहायक होकर पुराने ढर्रके अनुसार सबको च्छनेकी शिक्षा करताया । यदि कोई राजा पोप की शिक्षाके विकृष्ट आचरण करता तो गद्दीसे उताराजाता था और प्रजागण यदि ऐसा करनेका साहस करते तो आईनके अनुसार भागमें जलाये जातेथे । पोप मनुष्योंसे रुपयालेकर इसबातकी सनद देताथा कि उनके उन्नतभरके पाप क्षमाकर दियेगये और धनाढ्य मनुष्योंके मरनेपर पोप उनके उत्तराधिकारियोंसे मनमाना रुपया इस छिये लेतेथे कि मृतककी नर्कसे निकालकर स्वर्गमें भेजनेकी सिफारिश करदीजायगी । इस प्रकार धोकेसे रुपया इकट्ठा करनेकी पोपकी अनेक चाछेर्या पर किसीको ढरके मारे उनको अभ्रमाणित कहिने तकका साहस नहीं होताथा । स्युदरने दृढचित्त होकर इस प्रकारकी ९९ बातोंका गिर्जेमें खड़े होकर खण्डनकरना आरभ किया। पोपके काममें जब यह बात पहुँची तो उसने स्युदरके वध करानेकी फिर की । दाहन्दाहरोमनेभी स्युदरको बहुत धमकाया सहस्रों मनुष्यभी शत्रु बनगये परंतु इन्होंने दृढता सहित अपने मन्तव्य सबको सुनाविये । केवल डिटेन्बगका पर्लेक्टर पहिले पहिल स्युदरका खेछा हुआ और वसीकी कोशिससे स्युदरके प्राणवन्धे फिरतो दाने २ हजारों मनुष्य अनुगामी होगये, विद्वान और शिक्षितलोगोंने इनकी शिक्षा ग्रहण की और इसप्रकार ईसाइयोंमें प्रोटेस्टेन्टमत खडा होगया तथा पोपकी शिक्षापर च्छनेवाले रोमन कैथलिक लोग थोड़ेही रहिगये । स्युदरने बाइबिलका जर्मन भाषामें अनुबाद करके छपवायाथा और ४२ वर्षकी उम्रमें वैथेरायन नामक एक बाइसे विवाह कियाथा जिससे कई बच्चे पैदा हुयेथे । स ई १५४६ में स्युदर विसीगावन

एक धर्मसम्बन्धी विवादवा निवटारा करने गये और वही बातें करते हुए सिधार गये । बड़े साहसी, दृढचित्त तथा दृष्ट पुष्ट और अपने बच्चोंसे बड़ा प्रेम रखते थे ।

वार्जिल (Virgil)—यह छैटिनकवि स ई से प्राय ७० वर्ष पहिले मुल्क इटलीमें मान्डुआ नामक नगरके समीप वे-होर्नमें जन्मेये । प्रथम शिक्षा इन्होंने मिळन नामक नगरमें रहकर पाई और बादको नैपल्समें जाकर ग्रीकभाषा, म्हाविद्या, विज्ञानविद्युत और गणितशास्त्र पढ़ा । फिलिप्पीकी छद्माइके बाद मिसमें इनकी जायदाद सिपाहिपाने छूट लीयो, यह रोममें जाबसे और वहाँके बादशाह अगस्टसकी मददसे पुन अपनी जायदाद पाई । पश्चात् इन्होंने कई ग्रंथ रचे और अंतिम बादशाह अगस्टसकी आज्ञानुसार पृथ्वीमखिज्ज ग्रंथ "इनिपद" छैटिनपद्यमें रचा । यह ग्रंथ इन्होंने ११ वर्षमें सम्पूर्ण कियाया । होमरके सिवाय कोई दूसरा कवि छैटिनभाषाम इनकी समानता नहीं कर सकताहै । अफलातून की किताबोंकीको यह मानतेये । स ई से १९ वर्ष पहिले ग्रन्थजिभममें मरे

ह्वीटस्टोन (चार्ल्सह्वीटस्टोन—Charles Wheatstone) यह विद्युतशास्त्रका मुख्य आचार्य लन्दनके शिक्टोरियाके शासनके प्रथम वर्षमें अर्थात् स० ई० १८३८ की साल लन्दन नगरके यूस्टन स्क्वैर मुहल्लेसे कैमरु नामक मुहल्लेतक बिजलीका तार लगानेमें समय हुआ था । इससे पहिले भूमण्डलपर और कहीं बिजलीके तारसे खबर नहीं भेजी जाती थी पर अबतो ह्वीटस्टोनके आविष्कृत नियमके अनुसार हजारों मीलतक रूग गया है । यदि बिजलीके बलसे तार लगानेकी क्रिया खसारेमें नहीं होती तो आम कहत खम्भ देशोकी जैसी उन्नति देखनेमें आती है उसका दशांशमी न होता । इसी महाशयने स० ई० १८५७ की साल सुंबककी सुईका आविष्कार कियाया जिससे जहाज खलाया जाता है । यह लन्दन नगरका रहनेवाला था ।

बाजिदउलीशाह (छछनऊके रंगीले नवाब) स० ई० १७११ में मुगल सम्राट दिल्लीने अगड़ाइ क्षत्रियोंसे खबरकर अवधका सूबा आदतखाना को दिया और उनकी संवत्ति कई पीढीतक वहाँ राज्य करती रही और नवाब खज़ीर अवध कहलाती रही । नवाब खमीरकी राजधानी फैजाबादमें थी परंतु नवाब आस्फुदौलाके वृत्तमें छछनऊमें राजधानी नियत की गई । पश्चात् नवाब खज़ीर गाजि उद्दीन हैदरको ईस्ट-इन्डिया-कम्पनीने स० ई० १८३० में बादशाह अवधका खिताबदिया । गाजि उद्दीन हैदरसे खार पीढीवायु अमजद अलीशाह हुये जिनके पुत्र बाजिद अलीशाह स० ई० १८५७ में अवधके तख्तपर बैठे । यह जमाने होकर सन्निवधिवाके बड़े शक्ति थे और राजकाजकी और कुछ त्याग

नहीं देतेये जिसके कारण प्रजापर बड़ा अन्याय होता था। यह देख लाड छल
हौजी गवर्नरमनरल हिंदूने कोट-आफ-डेरक्सकी रायसे १३ फरवरी स० ई० १८५६
को अवधका मुल्क अंग्रेजी अमल्दारीमें मिला छिया और वाजिद अलीशाहको १
लाख रुपया मासिक पन्शनदेकर मटियाबुज कलकत्तेमें रहनेका हुकम दिया जहाँ
स ई १८८७में उनका देहांत हुआ। वाजिद अलीशाह बड़े सरसाले थे, उन्होंने एक
दिन प्रसन्न होकर फर्जद अलीखानेदारोगा सिक्क-दर बाग छस्त्रनरुको अहागीराबा
दकी आगीर तथा राजाका सितार दिया था जिसको उसके वंशज अवतक
भोग रहे हैं। वाजिद अलीशाहकी माता अपने बेटे अब्बाद अली तथा अपने पोते
मिर्जाहामिद अलीको लेकर स० ई० १८५६ में निज हुकूमका दावा करने इन्-
ग्लैन्ड गई थी पर स० ई० १८५८ में वहा मर गई और फ्रांसमें दफनकी गई। थोड़े
दिना बाद अब्बाद अलीभी मर गये और अपनी माताके समीपही दफन हुये।
वाजिद अलीशाह उदू तथा भाषा कविता भी खूब करतेये। उर्दू में तीन दीवान
और तीन मसनवी उनको बनाई मौजूद हैं जिनमें अफतरनामसे पदपूर्ति की है।
भाषामें भी सैकड़ों फुटकर पद उनके बनाये मिलते हैं जो छलित और रोच
कई और जिनम रसिया नामसे पदपूर्ति की गई है नमूनेके छिये पदां पर उनके
एक पदका थोड़ासा भाग लिखते हैं—

पद-मोहनरसिया भायेवगियामें फूलरही सब कली कलारे।

कोई कली हरनामजपतहै कोई पुकारे भली भलीरे।

वार्डस्वर्थ—(विलियमवार्डस्वर्थ—William Wordsworth) इनकी गण-
ना अंग्रेजी भाषाके श्रेष्ठ कवीश्वरोंमें है और इनकी कविताम प्रकृतिसका वर्णन
बहुतायतसे पायाजाताहै। विकट घन, विशाल पर्वताकी चोटियें, पानीके
झरने झीलें और फूल फलोंसे लदे हुये रुख इत्यादिकी आधौकिक छटाके
दृश्य तथा उनकी चिसलुभानेवाली शक्तिपर आपने पदरचना कीहै जैसा
आश्चर्यजनक दिव्य विवर्ण छोटी २ चीजोंका इन्होंने किया है वैसा किसी
अन्य कविको करना कठिनहै। यह बड़े हृदयवित्त, पारिभमी और अनुभवशील
पुरुष थे और फम्बर छेन्दके रहनेवाले किसानकीलके घर स० ई० १७७० में
जन्मे थे। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयसे बी ए. की परिक्षा उत्तीर्ण करनेके पीछे
फ्रांस इत्यादि देशोंकी यात्राभी इन्होंने कीथी और साठही, कोलरिज तथा विस्स
म आदि मासिक विद्वानोंसे इनकी मित्रताथी। स० ई० १८४३ में मृटिदा गवर्नमें
उने इनको ३०० पाँड वार्षिक वेतन देनेका ठहराव किया और एकही वर्ष
पीछे राजकविके पदपर इनको नियुक्तकिया। स० ई० १८५० में परलो-
कगामी हुये।

वाल्टर रैले—(सरवाल्टर रैले—Sir Walter Raleigh) इन्होंने अनेक बार
 बढ़े २ समुद्री सफर किये और अमेरिकाके समुद्री किनारोंपर कई वस्तियों
 बसाईं। हेवम शायरके एक सभ्य पुरुषके घर स० ई० १५५१ में जन्मे थे और
 कुछ दिनोंतक स० ई० १५६८ के पीछे आक्सफोर्डके विश्वविद्यालयमें शिक्षा
 पाकर प्रोविस्टेंट लॉगोंकी सहायताके लिये फ्रांसको चले गयेथे। वहाँ
 ५।६ वर्ष रहनेके पीछे अपने सालके साथ अमेरिकाको गये और वहाँ कई
 वर्ष उद्धरकर अनेक वस्तिये बसाईं। स० ई० १५७९ म आइर तथा तम्बाकूका
 बीज लेकर इंग्लैंडको वापिस आये और उनकी खेतीका प्रचार किया। पश्चात्
 इंग्लैंडसे इन दोना खीजोंकी खेतीका प्रचार पृथ्वीके सर्वत्र भागोंमें होगया।
 स ६ १५८८ में इन्होंने इंग्लैंडकी तरफसे युद्ध करके स्पेनवालोंके जहाजों
 जहाजोंके बंदेको परास्त किया जिससे ग्रेट ब्रिटेनकी मालिका एलिजाबेथ इनपर
 बहुत प्रसन्न होगई। मालिका एलिजाबेथके मरनेपर रैले साहित्यके समयने पल्लव
 आया क्योंकि जेम्सप्रथमने गद्दीपर बैठकर इनको किसी अपराधमें कैद करदिया
 कैदमें रहकर इन्होंने अनेक ग्रंथ अंग्रेजीभाषामें रचे बिनमेंसे इनका बनाया
 खसारका इतिहास जो स ३ १६१४ में छपा उत्तम है। स ३ १६१५ में कैदसे
 छुटकर रैलेसाहित्य गायनाको चले गये और वहाँ स्पेनवालोंकी एक वरती कैद
 देनेके अपराधमें इंग्लैंडके बादशाह जेम्सप्रथमने स ३ १६१८ में इनका शिर
 कटवा डाला। इनका मस्तक बहुत ऊँचा था और मुख छम्मा था।

वाल्टर स्काट—देखो स्काट।

वासकोडी गामा (Vascode Gama)—यह पुतगाली मल्लाह सबसे
 पहिला किराड़ी था जो हिंदोस्तानमें आया। स ३ १४९८ में पुतगालके वाट-
 शाहने कई जहाज देकर इसको पूरबकी तरफ भेजा था, इस यात्राम इसने
 पूर्वी हिंदके द्वीपोंको जानेका रास्ता खोज किया और हिंदोस्तानके किनारेपर
 पहुंच कैलीकटके मुकाम लंगर डाला तथा ६ मास वहाँ रहकर पुतगालको
 छोड गया। स ३ १५०२ में दूसरी दफे २० जहाजोंका बंदा लेकर हिंदोस्तान
 को आया, कैलीकटके जमोरनको परास्त करके पुतगाली राज्यकी हिंदोस्ता-
 नमें मूळरोपण की और कोचीन तथा कनानोरके राजाओंसे सन्धि की। स. ई.
 १५२४ में पुतगालके बादशाहने इसको पुतगाली हिंदका पहिला वायसराय
 नियत किया। स. ई. १५२५ में कोचीनमें मरा।

वाशिङ्गटन आर्विङ्ग—(Washington Irving) यह अमेरिका
 कावी ग्रंथकार स ३ १७८३ की साल न्यूयार्क नगरमें जन्मे। वाप इनके ब्यापार
 करनेके लिये स्काटलैण्डसे अमेरिकामें जाबसे थे और वहाँ इनको बालक छोड

कर परमधामको सिधारे थे । वड़े भाइने इनकी शिक्षाका प्रबंध किया था । हावर्ड यूनीवर्सिटीमें शिक्षा सम्पूर्ण करके इन्होंने यूरोपके फ्रांस, इटली, स्वीडन, डेन्मार्क, हॉलैंड तथा इंग्लैंड इत्यादि देशोंकी यात्रा काभी जिसका मुख्य उद्देश अपने विगडे हुए स्वास्थ्यको सम्हालनेका था । यात्रासे छोटकर इन्होंने बकाळत पढ़ी और बैरिस्ट्रीका इम्तिहान पास किया परन्तु बकाळत कभी नहीं की और ग्रंथ रचनाकी ओर मन लगाया । स ई १८०९ में इन्होंने प्रहसन युक्त न्यूपाकका इतिहास लिखकर अपनेको अमेरिकावासी ग्रंथकारोंमें सर्वोत्तम सिद्ध कर दिया । दूसरीदफे इन्होंने इंग्लैंडकी यात्रा फिर की और " स्केचबुक " नामक ग्रंथ लिखना आरंभ किया जिसने यादेही दिनोंमें पेट्रान्टिक महासागरके दोनातरफ आदर पाया । इनके विचार मनहरण और सौंदर्यवासे परिपूर्ण हैं, लेख प्रहसनयुक्त हैं और विषय छांटनेकी शक्ति विद्वान है । अंतमें अमेरिकान्तगत ' सनी सायट " नामक अपनी रियासतमें आकर बसे थे और वहाँ स० इ० १८५९ म परमधामको सिधारे ।

विलियमवेण्टिङ्ग (Lord William Bentinok) इनके चाप पोलेण्डके तृतीयदुक् थे, इन्होंने प्रथम फौजमें नौकरी करके फिलिपिन्स, रूस और मिश्र इत्यादि देशोंकी लड़ाइयामें बड़े २ बहादुरीके काम किये और ब्रिटिश सेनामें उच्चपदपर उरखी पाई । यह स० इ० १८०३ म हिन्दोस्तानको मद्रासके गवर्नर नियत होकर आयेये । वहाँपर इन्होंने सिपाहियोंकी मूर्ख, दाढ़ी तथा पगड़ी इत्यादिके सम्बन्धमें कुछ नियम जारी कियेये जिसे स० इ० १८०६ को साब्र बेल्जोरमें गदर होगया था । उसीसमय कोट आफ डेरेक्टने इनको इंग्लैंड बुलाकिया और इटली, स्पेन इत्यादि देशाम सेनापति नियतकरके भेजदिया ।

स० इ० १८२८ में गवर्नर जनरलके पदपर नियुक्त करके फिर इनको हिंदोस्तान भेजागया । इनके शासनकालमें हिंदोस्तानसे सती होनेकी रसम घन्दी गई, और ठगोंको नष्ट किया गया, अंग्रेजोंको हिन्दोस्तानमें पतनेकी आशा मिली और कुंग अंग्रेजी राज्यम मिलायागया । स० इ० १८३५में बीमार होनेके कारण दस्तोका देकर इंग्लैंडको चलेगये और ग्लास्गोकी प्रजाकी तरफसे स ई १८३६ में पार्लियामेण्टके मेम्बर बनायेगये । स० इ० १७७४ में जन्मे और स० इ० १८३९ में मरे ।

वैशम्पायन—यह व्यासजीके शिष्यये, राजा जम्रेनयको महाभारत इन्होंने सुनायाया । ब्राह्मण साहब अनुमान करते हैं कि हरिष्य पुराण इन्होंने रचा था ।

शकेट—देशो अलेग्जहर दीयेट ।

शकुन्तला-पद्मपुराणमें लिखा है कि, गांधितनय राजा विश्वामित्रने महर्षि वाशिष्ठस्य कुछमें परास्त होकर ब्रह्मबलको भेष्ट और क्षत्रियबलको तुच्छ जान आक्षण बननेके लिये तप करना आरंभ किया । देवताओंने यह देव मेनका अप्सराको तप उड़ानेके लिये भेजा विश्वामित्रने मोहितहो उसके साथ भोगविद्यास किया जिससे शकुन्तलानामक कन्या उत्पन्न हुई । विश्वामित्रका जब मदनमद दूर हुआ तो भतिशय लज्जितहो चलते हुये और मेनकाभी कन्याको वनमें आब यहाँसे बछड़ी । देवयोगसे ऋषिकण्व उधर होकर निकले और कन्याको मकेला पदा देख निज आश्रममें उठा लाये और पुत्रीवत् उसको पाला । जब शकुन्तला १३ । १४ वर्षकी हुई तो एक दिन चंद्रवशो राजा दुष्यंत शिकार खेलते हुये उधर जानिकले और ब्रह्मोत्सवसुदये शकुन्तलाको देख मोहित हुये तथा गांधव रीतिसे उसके साथ विवाहकर भोगविद्यास किया । चलते समय राजाने अपनी भगूठी निशानीके तौरपर शकुन्तलाको वृं और शीघ्रही बुठाभेननेका विस्वास दिखाया पर वैशगतेसे राजधानीमें पहुँच राजाको शकुन्तलाकी कुछभी याद नरही । जब शकुन्तलाको कई महानेका गम होगया तो ऋषिकण्वन एकघाय तथा अपने वृं शिष्योंको दिकान्तके लिये साथ करके शकुन्तलाको उसके पति के घर भेज देना मुनासिब समझा । रास्तेमें नहाते वक्त राजा दुष्यंतकी वीहूँ अंगूठी शकुन्तलाकी संगठनीमेंसे सालावम निकल पड़ी । जब शकुन्तला वृं में पहुँचो तो राजाने उसे नहीं पहिचाना और बहुतासे समझाये जानेपरभी उसे कपटघायी धरया समझ भङ्गीकार नहीं किया और कहा कि, इस पुरुषशी लोग महारमाआके मार्गमें आसन रखनेवाले गणिकामोंके रूपमात्रसे नहीं दिगसकते राजाके ऐसे वचन सुन ऋषिशिष्य क्रुद्धहो शकुन्तलाको वहीं छोड बछड़िये और कहगये कि राजा ! तुम इसके पश्चात्तापसे भतिशय अनुत्तम होतगे । गौतम राक्षपुरोहितनेभी राजाको बहुत कुछ समझाया पर राजाने शकुन्तलाको घरमें नहीं धुसने दिया और कहा कि पुंभलीके संसगसे कुछकामिनीमां वृं बत होताई छाधारहो गौतम पुरोहितने शकुन्तलाको अपने घर उठराया और वहाँसे उसकी माता मेनका शीघ्रही उसके खेगाई परंतु अपने पास रखना शकित न समझ कर्यप मुनिको उसे छोपदिया । कर्यपजीके आश्रम (कर्मोर) में शकुन्तलाके गर्भसे भरत नामक पुत्र हुआ । उधर कुछ दिन पीछे एक मनुआके द्वारा शकुन्तलाके हापसे सालावमें गिरीहुई अंगूठी राजा दुष्यंतके पास पहुँची जिसेदेख वह विरहसे विकल होगये । जब भरत कुछ बड़ा होगयाया तो एक दिन दुष्यंत कर्मोरकी तरफ जा निकले और वहाँ कर्यपजीने शकुन्तलाकी पुत्रसहित उनसे मिलाकर दोनों तरफका विरहदाह शान्तकिया । शकुन्तलाका पुत्र भरत बड़ा पराक्रमी, छत्रघायी राजा हुआ जिसके नामपर इस देशका नाम भारत वर्ष पड़ा ।

शतानन्द—यह गौतम ऋषिसे पुत्र जनकपुरी (तिरहुत) में रहते थे और राजा जनकके दरबारमें इनका सरकार होता था । सिय स्वयंवरके अवसरपर रामचन्द्र महाराजसे इनकी बातचीत हुई थी । वाल्मीकीय रामायणमें इनके लिये निम्नस्थ विशेषणोंका प्रयोग किया गया है—महष्ट रोम, महातेजस्वी, महातपस्वी, परमचक्षुर, मुनिश्रेष्ठ । रामचन्द्र महाराज तथा ऋषि विश्वामित्रके कहने सुननेसे गौतम ऋषिने इनकी माता महत्याको मर्द्रीकार किया था ।

शम्भूनाथपंडित—(झाँकोटके प्रथम हिन्दोस्थानी जज) आपके पिता शिवप्रसाद कश्मीरी पंडित स्वदेशसे ग्वाळियर जाकर महाराज संधियाके दरबारमें किछी उच्चपदपर नियत हुए थे और वहाँ उन्होंने मकानभी बना लिया था । ग्वाळियरसे बादको काशी चले गये जहाँ सि स १८७६ की साल शम्भूनाथ जन्मे । शम्भूनाथने बाह्याध्यायम उर्दू, फार्सी, संस्कृत तथा हिंदी पढ़ी थी । पश्चात् ५० शिवप्रसादकी कलकत्ते चले गये, जहाँ शम्भूनाथने अंग्रेजी पढ़ी और सदरजीवानो भद्राळतमें १६५० मालिकपर लेखककी नौकरी करली । पीछे तरकी पाकर २५५० वेतनपर मुद्दारर इजराय डिगरी हुये । सरकारी काम बड़ी मेहनत, हाशियारी और इमान्दारीसे करते थे जिससे भफसर लोग अत्यन्त प्रसन्न थे । फुर्सतके वक्त मकानपर नाना शास्त्रोंका भवळोकन करते रहते थे जिससे अनित्यमति विद्योन्नति भी होती जाती थी । इसी पक्षपर रहते हुए पंडितजीने झाँकोटकी कार्यवाहीपर एक किताब लिखी जिससे सर्व न्याधारणका ठमकी विद्या का परिचय मिला और जज साहब उक्त पुस्तकको देखकर बड़े प्रसन्न हुये । नौकरीहीकी झालतमें आइन पढकर कलाळतकी उच्च परीक्षा पंडितजीने उत्तीर्ण की। पंडितजी धर्मपरायण थे झूठे मुकद्दमे कभी नहीं छेते थे दान दुखियोंकी कलकत्त बेवाम करते थे जिससे अय बर्कीहोंकी अपेक्षा पहिले पहिले उनकी आमदनी कम होती थी परन्तु उनकी प्रतिष्ठा दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती थी । पश्चात् सीनियर गवर्नमेंटहोडरका पद तथा गवर्नमेंट ग्वाळिज कलकत्तामें आइ-मके प्रोफेसरका पद सकारने आपको दिया । वहाँ दिनों गवर्नमेंट हिंदने सुप्रीमकोर्टकी जगह कलकत्तेमें झाँकोट नियत किया था जिसमें एक हिंदोस्थानी जज रखनेका प्रस्तावभी मंजूर हो चुका था । इसी उच्च पदपर पंडित शम्भूनाथ नियत किये गये, ६ वर्षतक बड़ी लियाकतसे काम किया, सब लोग अत्यन्त प्रसन्न रहे । झाँकाटमें कोर वृत्त जज आपसे अधिक योग्य नहीं समझा जाता था । स्वदेशियाकी अनेक प्रकारसे मदद करते थे, विधवाओं तथा अनाथकोंके गुप्त रीतिसे सहायता देते थे और दान दुखियोंको धन्न, भोजन वेंटवाते रहिते थे । आप वास्तवमें न्याय तथा देशप्रिय हाकिमथे, गवर्न लेशमान्नी आपमें नहीं था

और इसीलिये सब लोग आपकी प्रतिष्ठा करतेये। वि० सं० १९२३ में ४० वर्षकी उम्रम परलोकगामीहुये। बाल दाढ रहिन सदिन अमेजी नहीं था।

शमशुद्दीन अलतमुश (दिल्लीकाबादशाह)—मुल्कतान कुतबुद्दीन मेवकने इसको बच्चपनमें एक सीद्दागरसे खरीद लियाया और बड़े होनेपर अपनी घेटीकी शाही इसके साथ करवाया। स १२१०म इसने कुतबुद्दीनक बेटे मारामशाहका गद्दीसे उतारदिया और थाप दिल्लीका बादशाह बन बैठा। स० इ० १२१५ में गजनीके बादशाहो छाहौरपर चढाई की पर शमशुद्दीनस हारकर उसे छोटना पडा। स ई १२३३ में शमशुद्दीनने ग्वालिपरका क़िल्ला सरकिया और २६ वर्ष राज्य कर्के स ई १२३६ में मरगया। कुतबुद्दीनफ़ीरोज इसका बेटा गद्दीपर बैठा। दिल्लीमें कुतबकी लाटका एक भाग मल्लतमशका बर थाया हुआई।

शाहाबुद्दीन मुहम्मदगोरी—मुल्क गजनी तथा गोरके मुल्कतान गिया मुद्दीन मुहम्मदने स ई ११७४ म अपने छोटे भाई शाहाबुद्दीन मुहम्मद गोरीको गजनीका गवर्नर नियत कियाया, फघात शाहाबुद्दीनने शाहिभाई सुखरो मालिकके छाहौरछीन लिया और घोड़ेहों दिनोंबाद सुरासान विजय किया। स ई १२०३में बड़े भाईके मरनेपर मुल्क गजनी तथा गोरकाभी राज्य पाया। स ई ११९१ में पृथ्वीराज महाराजा दिल्ली व भजमेरपर चढाई की परन्तु विद्यावड़ीके मैदानमें परास्त होकर छाहौरकी तरफ लौटगया। स ई ११९३-९३ में फिर चढाई की जिसमें पृथ्वीराज परास्त होकर कैद होगया। स ई ११९४ में जयचंद महाराजा कन्नौजपर चढाईकी और उसको भी परास्तकरके घप किया। पश्चात् ग्वालिपर तथा बनारसके राजामोंको परास्तकिया और इसके सेनापति वाकित्यार खिलजीन स ई ११९९में विहार तथा स ई १२०३ में बगाल, राजा रुद्रमणसेनसे छीन लिया। बनारसम शाहाबुद्दीनने थाप १०० मंदिर नष्ट किये थे। स ई १२१६ में सिन्धु नदीके किनारे डेरमें युसकर बकर्येन इसको मार डाला। इसके कोई बेटा नहीं था निदान इसका भतीजा गमनी तथा गोरके राज्य का मालिक हुआ और इसका सुयोग्य गुलाम कुतबुद्दीन मेवक दिल्लीके सफतपर बैठकर हिंदोस्तानका बादशाह हुआ।

शशुद्ध—यह अवध नरेश राजा दशरथके पुत्र रानी सुमित्राके वदरसे जन्मे थे। लक्ष्मणजी इनके सगे भाई थे। सीतामहारानीकी भतीजी भुतकीतिसे इनका विवाह हुआ था। जबसक महाराज रामचंद्र बनवास करते रहे शशुद्ध और भरतभी अयोध्यामें रहे। महाराज रामचंद्रके राजसिंहासन भारद होनेपर रामचंद्रसे बचनादि क्रुपियोंने घाँवे राक्षसराजा मधुपुत्र लवणके प्रयाचारों

की आकर शिकायतकी । महाराजकी आज्ञा पाकर शत्रुघने सखेन व्रजमण्डलपर चढ़ाई की और लवणको मारकर उसकी राजधानी मधुपुरीको विध्वंस करदिया तथा उसके समीप मधुरा (मधुरा) नामक नगरी बसाई और महाराजकी आज्ञानुसार वहा रहकर बहुकालतक उस देशका शासन करते रहे । अतमें महाराजके घेरुठ पधारनेके अवसरपर शत्रुघर्जने निज पुत्र सुबाहुको मधुराका राज्य और दूसरे पुत्र शत्रुघातीको वैदिशनगरका राज्य देकर इस लोकका सम्यध छोड़ादिया ।

शाकटायन—इन्होंने संस्कृत व्याकरणकी एक पुस्तक रचीथी । शब्दानुशासन तथा अणादि सूत्रांके कताभी यही थे । पास्कमुनि तथा पाणिनि ऋषिसे पीछे इनका समय प्रतीत होताहै । इनियल साहित्यके मतानुसार यह ब्राह्मण थे और निमोनाक्षवम्मा जैनी लिखताहै कि यह जैनीये । इनका व्याकरण पाणिनिमतके शत्रुकूलहै ।

शाक्यसिंह—देवोपुत्र

शाखायण—ऋग्वेदका ब्राह्मण तथा ऋग्वेदीय श्रौत सूत्र और ऋग्वेदके गृह्यसूत्र इन्होंने बनायेये । श्रौतसूत्र १८ अध्यायमें विभागेतहैं और उनमें राजसूय, बालपेय, भस्वमेध, पुरुषमेध, गोमेध इत्यादि बड़े २ यज्ञोंके करनेके नियम लिखे हैं । गृह्यसूत्र ६ अध्यायोंमें है और उनमें सब सांसारी संस्कार तथा ज्योतिष और ढाकिनी आदि विद्याओंका वर्णन है ।

शान्तनू—यह षड्रथशी महाराज प्रियव्रतके पुत्रये । महारानी गंगासे इनके भीष्मनामक पुत्र हुआ था । परचात राजा शान्तनू सत्यवती एक सुदरी बाढापर मोहित होगये और उसका विवाह इनके साथ इस शतपर होगया कि उसकी भौलादखी राजगद्दी मिलेगी । राजपुत्र भीष्मने अपने पिताकी विधय वासना पूरी करके लिये राजपाटका दावा छोड़ादिया और अपना विवाह तक नहीं किया । सत्यवतीके गर्भसे विश्वित्रधीर्य तथा विश्वाङ्गदो पुत्र हुये । अंतम महाराज शान्तनू राजपाट त्याग घनकी चळ दिये। मधुरा तथा गोवधनके बोधमें वस स्थानपर आपने तप किया था जहांपर शान्तनुकृण्ड और शान्तन गढ़ी है । इनये विशेष घृतातके लिये देखो भीष्म पितामह ।

शारङ्गदेव—इसनामके एक सङ्गीतज्ञने प्राचीन कालमें होकर सङ्गीत रत्नाकर नामक संस्कृत ग्रन्थरचाया जिसमें अनेक प्रकारके नृत्योंकामी वर्णन है। सङ्गीतरत्नाकरके रचनेमें इन्होंने अभिमव गुप्त, श्रीतिघर, घोहळ और सोमेश्वर नामक सङ्गीतार्याओंके ग्रंथ ग्रन्थयन कियेये ।

शारङ्गधर (वैद्य)—यह जातिके भाट प्रसिद्ध कवि चद्वरदाईक वंशप्रथे । रणधम्भोनरेद्रा हमीर सिंहदेशके दरबारमें इनका आदरथा । इनके दादे रघुनाथ गुरुये हमीरसिंहदेशके यह वैद्यकशास्त्र पारङ्गत होकर संस्कृतके बड़े भारी विद्वानये और संस्कृत तथा भाषामें श्रुष कविता करतेये । भाषाम हमीर गौरा तथा हमीरकाव्य इन्हींके रचे हुये हैं । संस्कृतम शारङ्गधर पद्धति (स०इ०१३६३) और शारङ्गधरसंहिता (वैद्यक) इनके रचे ग्रन्थ हैं । शारङ्गधर संहिता ऋषिकृत ग्रन्थसे प्रतिष्ठामें पून नहीं है, परदेशी वैद्यकग्रन्थोंमें उसकी गणना करते हैं ।

शार्लमेन महाराजाफ्रांस (Charlemagne, emperor of Franco) इनकी बाल्य ही प्रेट भी कहते हैं । ज्येष्ठ भ्राताके मरनेपर स० इ० ७७३ की साल फ्रांसके तख्तपर बैठे । स० इ० ७७४ में इन्होंने लोम्बार्डी विजय की और स० इ० ७७८ में स्पेनराज्यके अनेक मुल्कभी जीते तथा सैक्सनलोगोंको परास्त किया । स० इ० ८०० में अनेक पश्चिमी देश जीतकर इन्होंने अपने राज्यमें मिलाये । यह बड़े रणदल, कार्यकुशल, अनुभवशील और न्यायी थे । फरासीसके वास्ते एक धर्मशास्त्र इन्होंने बनायाथा । अनेक महिला तथा गिरजे भी बनवाये थे । यह बड़े विद्वान और विद्वाने, विद्योन्नति इनके समयमें बहुत कुछ हुई, प्रायः सर्वत्र यूरोपपर इनका आतङ्क था । शहिर पेक्सला शाला पल्लमें अपने बनवाये हुये गिरजेमें दफनाये गये । जैसे विक्रमादित्य इस देशमें प्रसिद्ध हैं वैसेही शार्लमेन फ्रांसमें । स०इ० ७४२ में जन्मे, स० इ० ८१४में मरे ।

शालिवाहन महाराजा—(शाकाकार) यह विक्रम शाकारके सम काळीन बड़े पराक्रमी राजा थे । प्रतिष्ठानपुर में इनकी राजधानी थी । बाल्मीकीय रामायण ४०६०, ८९ सर्गके लेखाह्वसार राजा इलमे मध्यदेशमें प्रयागसे थोड़ीदूर दक्षिण एक बड़ी उत्तम प्रतिष्ठानपुर नामक राजधानी बसाईयी जो अब गंगाके धांये किनारे भूसी नामसे प्रसिद्ध है । किसी कुम्हारके घर इनका जन्म हुआथा । बड़े होकर इन्होंने एक बृहत्त राज्य स्थापन किया था और अनेक विजय प्राप्त करनेके स्मार्कमें स० इ० से ७८ वर्ष पहिले अपने नामक शाका जारी किया विक्रमादित्य महाराजा उजैन इन्हींके परास्त होकर रणसाह हुयेये महायात्री प्राकृत भाषामें इनका रचा अक्षयती नामक एक पद्यमय कोष मिलता है जिसमें आदिरसात्मक और आम्पानन्द विशेष हैं । बाणभट्टने स्वचित्त हर्षचरितमें उक्त कोषकी इसप्रकार प्रशंसा की है ।

श्लोक—भविनाशिन प्राग्य मकरोच्छात वाहन ।

विशुद्धजातिभिः कोषरत्नैरिषुमापितै ॥

शाहआलमर (मुगलसम्राट दिल्ली)—आलमगौर द्वितीयके घर स ई १७०८में जमे और स ई १७५९में घजोरेके हाथसे मरने वापके मारेजानेकी खबर पाकर बिहारसे दिल्ली आकर तख्तपर बैठे । स ई १७६४की सातवखबरकी कड़ाईमें परास्त होकर प्रयागको चले गये और स ई १७६५ में २४ लाख रु० सालियानापर बंगाल, बिहार तथा उड़ीसाकी दीवानीका ठेका ईष्ट इन्डिया कम्पनीको ददिया और आप अङ्गरेजोंकी हिकाजतम स ई १७७८ तक प्रयाग हीमें रहे । तबुपरत एकान्तमें जीवन व्यतीत करनेसे थककर दिल्ली भाये परंतु रुहेला सदा गुलामकाइरने काबू पाकर १० अगस्त स ई १७८८ का खानेपर चढ़कर इनकी आंख निकाल छीं । खुशुदीन शाहआलमने स ई १८०६ तक नाममात्रको राज्य करके जीवनकी दौड़ पूरी का । यह फार्स तथा बबूके सुकषिणे आफताबनामसे पक्षपुति करते थे, इनका बनाया १ दीवान मिलता है । दिल्ली में कुतुबशाहकी दरगाहके समीप, मोतीमसजिदके निकट, सम्राट बहादुर शाहकी कबरके पास इनका कबर है ।

शाहजहाँ (पञ्चम मुगल सम्राट दिल्ली)—पिता अहागौरके जीते ही इनका प्रभाव प्रबल होने लगा था । स ई १६२८ में जहाँगौरके मरनेपर १० वर्षकी उम्रमें दक्षिणसे आकर तख्तपर बैठे और आगरेसे दिल्लीको अपनी राजधानी बढाई । इनके समयमें कृष्णारका सूबा मुगल राज्यसे अलग होगया, लेकिन दक्षिणदेशवर्ती अहिमदनगर, बीनापुर और गाल कुंहाकी रेयासतोंसे इन्होंने अपना आधिपत्य स्वीकार कराया तथा राजस्व वसूल किया और अपने पूर्वजोंका मुल्क बलख तथा बुखारा वजयक छोर्गसे जीत लिया । इन्होंने नौकरा चाकरोंको बड़ी २ जागीरें दी थीं और राजपूताकी कई रक नई रियासत स्थापन की थीं जिनमेंसे कोटा और रतलाम अथतक मौजूद हैं । यह बडे दातारभी थे, करोड़ों रुपयेक दान पुण्यका पत्रा इनकी तयारीखसे अगता है । नई दिल्लीको " शाहजहानाबाद " नामसे इन्होंने बसाया था और उत्तम एक बड़ाभारी किला, जुम्मा मसजिद, शहिरपनाह और बीचमें पानाकी महिर घनघाई थी । किलेके भीतर दीवानखान, दीवानभाम, मोतीमसजिद और अतिमुंदर भवन बनवाये थे । आगरेमें अपनी प्यारी बेगम ताजमोहलके छिपे सज्जमरका रोजा बनवाया था जिसकी गणना पृथ्वीके नर्दान उत्त आशयोंमें है । आगरेमें मोतीमसजिद तथा जामा मसजिदभी इन्होंने बनवाई थी । ७ करोड १० लाख रु के खजसे खान, खाड़ी और अवाहिरातका तख्त तालुसभी इन्हीका बनवाया हुआ था जिसको सम्राट मुहम्मदशाहके वक्तमें नादिरशाह ईरानको छेगया । इनके समयमें भानेवाले किरड़ी यात्रियोंने इस देशका सुनहरीहिंदोस्तान छिखाहे, उनका यहां खोनेकी भदियां नजर आई थीं और मुगल दरार तथा दर्वाजी लोग अवाहिरातसे छड़े हुये वारोंकी समान थम

कसे दीखे थे। सब चीमोंकी तरह सोनाभी इनके यत्नमें खस्ता होकर १४ व० तोले घिकताया। इनके ४ प्यारे बेटे और ४ बेटियाँ, प्रत्येक बेटेको इतना बढ़ाया था कि, वह कराहों बरफकी भावनाक सूबोंके मासिक और छाया फौजके घनी होगये थे और इनके काबूम भरहकर आपसमें द्वेष रखने लगे थे। ७० वर्षकी उम्रम जब यह बीमार पड़े तो इनके बेटोंने तसतके छिपे झगड़ा ठाना और औरङ्गजेब (आलमगीर) अपने सब भाईयाको ठिकाने छगाकर तथा इनको भागरेके किलमें कैद करके सऊतपर बैठ गया। कैदके जमानेमें यह लड़के पढ़ाते, केवळ मांस-रोधी खाते और गरम पानी पीनेको पास थे। ९ वर्ष कैद झूटकर स ई १६५८ में यह मरे और ताजगंजके रोअें अपनी बेगमके पासही दफन हुये। इनके दरवारके कवीश्वर सुदरमहाकवि-पने सुन्दरश्लोक " में लिखा है कि-

सैन पहर छौ रविचरै, जाके देखन मांहि ।

जीव छइ धरती इती, शाहजहां नर नाहि ॥

शाहमदार- यह प्रसिद्ध सुख्तमान फकीर, जिसका असली नाम वादि सहीन या शैखमुहम्मद सैफुदीवस्तामीया सुरीद था। इसके मतपर खलनेवाले फकीर, जो मशरी कहलाते हैं भा बक़ली इस देशम बहुत हैं। मशरीके फकीर एक झंडी हाथमें रखतेहैं जिसको मदारका झंडा कहतेहैं और बहुतसे मशरी फकीर रीष बदरोंका तमाशाभी करते फिरतेहैं। सुख्तमान तथा हिन्दुओंकी नीच नीमें मशरीके झंडेको पूजती हैं। शाहमदार २० दिनबर स ई १४३४ को १२४ वर्षके होकर मरे और कन्नौजके समीप मफनपुरमें दफनत्थेयथे वहाँ खालमें एकदफे इनकी कबरपर मेला भवतक होता है।

शिवकुमार शास्त्री, प० महामहोपाध्या- काशीके दो ब्रह्म सत्तर ठ-दीग्राममें वृषकौशिकगोत्री प० रामसेबक मिश्र सूरुपायी ब्राह्मणके घर वि सं १९०४ की साल फा फू ११ को आपका जन्म हुआ। आपके पूर्वजोंका मूलक ग्राम सूरुवारधर्मपुर था। भस्मार्थ हीनेके पीछे कई घपतक अपनेपर पर न्यातिप पढ़ा। १४ वर्षकी उम्रमें आप अपने खवाके पास गये जो बेति पाराभघानीमें भाजीविकल्पश रहते थे। वहाँ आपने प धामीदस खोबेलेछयुकी सुदी पढ़ना आरंभ किया। बेतियासे उसीसाल भार काशीमें खले भाये और वहाँके प्रधान विद्वान पण्डितोंसे परिश्र सहित न्याकरण, काण्ड भलद्वार तथा न्यायादिपद वर्तनकी शिक्षा पाई। और गौविन्द पुराणमें मकान बनवाकर वहाँ बस रहेथे। वेदाङ्ग धर्म शास्त्र तथा पुराण इत्यादि खेकडों ग्रंथ आर विचारसहित परर देखते रहे तथा भवभी अकलाश पामेर देखते रहते हैं। आपके विद्यागुहर्मांसे प० बुग-वत

प० कालीप्रसाद शिरोमणि प० शास्त्रशास्त्री तथा स्वा० विशुद्धानन्दजी मुख्य थे।
 गवर्नमेंटने इससमयके महाविद्वानोंमें आपकी गणना की है, जुबिलीकी साठ
 अपारविद्याके पुरस्कारमें आपको प० महामहोपाध्यायी उपाधि मिली है जिसके
 मभावसे छार्ट साहबके दरबारमें कुर्सी मिलती है । आप संस्कृत विद्याके
 समुद्र होकर पददर्शनके अद्भुत पंडित हैं और वेदान्तके गुरु रहस्योंका ज्ञाता
 तो इससमय आपकी समान भूमदलभरमें कोई दूसरा नहीं है । काशीके वर्त
 मान पंडितोंमें आप मुख्य समझे जाते हैं । संस्कृतफालिग बनारसमें प्रोफेसर
 का पद आपको प्राप्त था परंतु स्वल्प वेतन होनेके कारण आपने इस्तेफा दे
 दिया । आप शान्तिकी मूर्ति होकर सर्वथा गर्वरहित हैं, उनातन धर्मका समर्थ
 न करते हैं और शिष्योंको पहाने तथा पूजापाठ करनेमें बहुधा समय बिताते
 हैं । आजकल दशन विषयमें आप एक ग्रंथ रच रहे हैं । आपका प्रेम किसी
 वस्तुपर नहीं है । यद्यपि आप प्रगट नहीं कहते हैं परंतु आपका दर्शन करनेपर
 सहजहीन जांच हो जाती है कि, संसार आपकी दृष्टीमें मुच्छ है और उससे
 आपका चित्त छदास है । हिन्दोस्थान भरकी शिक्षित मंडलीमें आपका नाम
 विदित है, मिलनेवालेके चित्तमें आपकी ओरसे पूज्यबुद्धि उत्पन्न होती है । यदि
 किसी स्थानके लोग विधर्मियोंके आक्रमणसे निराश होकर आपको बुलाते हैं
 तो धर्मकार्य समस्त शास्त्रार्थ भयवा सनातन धर्मका संरक्षण करनेके लिये आप
 सुरत पधारते हैं । महाराजा दरभंगा तथा राजा साहब हर्षादा (लखनऊ)
 काशीके इस सदाचारी महाविद्वानको आर्थिक सहायता पहुंचाकर धा-
 रसवमें अपना धन सुफल कर रहे हैं । भीतर बाहर एकसा होकर चित्त
 आपका ईपा द्वेष रहित है और आपकी स्मरणशक्ति अछौषिक होकर विचार
 आपके अयुक्तश्रेणीके ब्रह्मज्ञानियोंके हैं जो ओतभोत भास्तिक भावसे परिपूर्ण हैं।
 सन ई० १९०४ में आपको एक पुत्र तथा एक पौत्र है ।

शिशुपाल (चंदेरीकाराजा) — जब महाराज युधिष्ठिर भारतवर्षका
 राज्य करतये तो उससमय चैनदेश (बुंदेलखण्ड) में राजा शिशुपा
 लका राज्य था । इसकी राजधानी चंदेरीमें थी । आजकल चंदेरी नगरी
 लखित पुरसे १८ मील पश्चिमकी ओर स्थित है । शिशुपालकी राज
 धानी चंदेरी आधुनिक नगरीसे मात्र ७ मील उत्तर पश्चिमकी ओर
 स्थित थी छत्त अथ वृद्धी चंदेरी कहते हैं और हूफूटे मन्दिर उसकी
 प्राचीनताकी साक्षी देते हैं । शिशुपाल राजा दमघोषका बेटा था । श्रीकृष्णमहा
 राज इसके कुतरे भाई थे लेकिन आपसमें बिगाड़ था, क्योंकि श्रीकृष्णजी
 इसकी मंगेतर दाम्पिणीको विवाहने दिन बलवृषक ले भागेये । महाभारतके
 युद्धके पीछे जब महाराज युधिष्ठिरने अश्वमेध रूप किया तो श्रीकृष्णजी तथा

शिशुपाल दोनों वसमें भाये थे । श्रीकृष्णजीने शत्रुका मष्ट करना उचित समझा वहीं इसको बध करवाया ।

शिवप्रसाद (राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द)— इनके पूर्वजोंने स ई की ११ वीं शताब्दीमें जैनमत ग्रहणकर छिया या और जब अकाठहान खिलजीने रणथम्भोरको लूटाया तो रणथम्भोरसे भाईमदाबाद (सिंध) में भागसे थे । पश्चात् खम्पानेरमें जा रहे और वहाँसे खम्भातमें जा बसे । खम्भातसे नादिरशाहकी चढ़ाईके वक्त मुर्शिदाबाद चले भाये और राजा शिवप्रसादने मुर्शिदाबादको छोड़ बनारसमें मकान बनालिया । बाबू गोपीचंद इनके पिताथे, रायदासचंद इनके पितामह थे और इनके धनाध्यक्ष ननिहालियोंको जो मकसूदाबाद (मुर्शिदाबाद) में रहते थे मुगलसम्राट मुहम्मदशाहने जगतसेठका खिताब दिया था (देखो, जगतसेठ) । पिता इनको १२ वर्षका छोड़ मरेथे । बनारसबाण्डाजमें पहुँचकर यह १७ वर्षकी उम्रमें एल्ने गधनरजनरल अजमेरके दफतरमें महाराज भरतपुरकी तरफसे बर्काऊके पदपर नियत हुये । पश्चात् सिक्खोंके युद्धके अवसरपर मीरमुन्शी फौजका पद इनको प्राप्त हुआ पर स ई १८५२ में माताके अधिक वृद्ध होनेके कारण इस्तेफा देकर बनारस चले भाये और बनारस एल्नेर्वाके मीरमुन्शीकी जगह पाळी । पश्चात् स्कूलाके अलिस्ट्रेट इन्स्पेक्टरका ओहदा इनको मिला और थोड़ेही समय पीछे बनारस द्वितीयके इन्स्पेक्टर आफ स्कूलके पदपर तरकी पागये । ३० वर्ष गवर्नमेन्टकी चाकरी बढी मर्शावाके साथ करके ५ हजार रुपये वार्षिककी पेन्शन पाई । ब्रिटिशगवर्नमेन्टमें काय दक्षता तथा राज्य भक्तिपर भ्रमण होकर सितारे हिन्द तथा राजाका खिताब इनको दियाया । देशियोंके सम्बन्धमें यदि किसी बातका विचार करना होताथा, तो गवर्नमेन्ट अवश्यही इनसे रायतलब करती थी । इन्होंने निजके तौरपर अपनी विद्या बहुतकुछ बढ़ाई थी और हिंदीस्यासके इतिहाससे बहुतकुछ जानकारी रखते थे । इनका रचा इतिहास तिमिरनाशक पढ़ने योग्य है अनेक और पुस्तकेंभी स्कूलोंके हितार्थ रची थी । स ई १८९४ में परमधामको सिधारे । भापके पुत्रपौत्र बनारसमें रहस हैं ।

शिवराज—देखो सेवाजी ।

शिवाजी मरहटा— देखो सेवाजी ।

शिवाजी द्वितीय— देखो साहू ।

शुकदेवजी—देखो शुक्रदेवजी ।

शुक्राचार्य—यह भृगुऋषिके पुत्र महा यशस्वी ब्रह्मर्षि होकर दैत्याके पुरोहितये और पाताळ (अमेरिका) के राजा बलिके दरवारमें पुरोहित तथा मन्त्रीके पदको प्राप्तये । यह बड़े नीतिज्ञये, धामनजीको पृथ्वीका दान देते समय इन्होंने राजाबलिको सचेत किया था जिसके कारण धामनजीने इनकी एक मांस फोड़ धीपी । कांगेदो अवसक इसीके तौरपर शुक्राचार्य कहते हैं । इनकी कन्या देवयानी चन्द्रवशी राजा पयातिको विवाहीयी । देवयानीके पुत्र ययुके वशमें अनेक पीढ़ी पीछे श्रीकृष्णमहाराज हुये । “शुक्रनीति” नामक ग्रंथमें इन्हींका कहा हुआ उपदेश है । भृगुऋषिकी सन्तान होनेके कारण यह तथा इनके वंशज भार्गव कहलाये ।

शेरशाहसूर—इसका असली नाम फरीद या और इसका भाप इबनसूर जातिके अफगान पेशावरके निकट "रोह" नामक ग्रामका रहनेवाला था परंतु बादको बिहारमें आबसाया। इबनसूरको जमाऊल्लो गवर्नर जौनपुरने सबग्राम और टाँडा जांगीरमें देकर ५०० खघार खट्यार रजमेका हुकम दियाथा। फरीदने बड़े होकर मुहम्मद खोदानी बादशाह बिहारके यहां मौकरी की तया एक शेर मार कर शेरखो बिसाब बाया। पछाट सुलतान बिहारने शेरखोको अपता बबीर बना लिया। सुबेदार बंगालको कर्नाटमें परास्तकरके शेरखो बहुतने साल अस्था-

बका भागी हुआ और मौकापाकर विहारका मुलतान बन बैठा । स ई १५४० में शेरशाहने हुमायूँको कन्नौजकी लड़ाईमें परास्त करके सिन्धकी तरफ भगादिया और शेरशाहनाम धारण करके बादशाह बन बैठा । आगरेम राजधानी नियत की । मालवा, माड़वाइत्यादिक कईदेश फतेह करके शेरशाहने स ई १५४५ में काछिअरके किलेका घेरा किया । किलेकी दीवार सब टूट गई तो शेरसूत्रने धावा करनेका हुक्म दिया परन्तु इसी अवसरमें तो पका एक गोला फटकर उसको छगा जिससे वह घायल होकर मरणमुल्य होगया । उस हालतमें भी शेरशाह निरंतर अपनी सेनाको उत्तेजना बतारहा । संध्या समय सेनापतियोंने आकर खबर सुनाई कि, काछिअरगढ़ फतेह होगया । यह सुनतेही शेरशाहने कहा कि "परमेश्वर तू धन्य है ! " और प्राण छोड़ दिये मृतक शरीरको सहभाममें लेजाकर तालाबके बीच एक रोमेमें जिसको शेरशाहने पहिलेसे बनवा रक्खाया और जो अबतक विद्यमान है दफनाया गया । कहतेहैं कि, शेरशाहके समयमे खोरी तथा डकैती बिलकुल बन्द होगई थी और पाषिक लोग सड़कोंके किनारे अपना भस्वाव रखे हुये निर्भय सोते रहतेये । बंगालसे पंजाबतक १५०० कोस लम्बी पकी सड़क उसने बनवाईथी जिसपर दोनों तरफ सायेदार मेवेके दरखत लगवायेये और २।२ कोसपर थोडा तथा पुलिसकी चौकिये बिठलाईथी तथा कुये खुदावियेये । डॉक पंजाबसे बंगालमें ३दिनेमें पहुंच जातीथी । राज्यभरमें १०।१० कोस पर हिन्दू मुसलमान महुता आको कक्षापक्षा खाना देनेके लिये घरमपुर तथा खैरपुर सुलवा दिये थे और सब चौकियों तथा महुताज खानोंमें १।१ नक़ाय रखवादियाया । शेरशाहके खानेके वक्त सब नक़ारे बर्भादिये जातेये जिससे राज्य भरमें महुताओंको एकही बर्कम खाना घटना शुरू होजाताथा

दिल्लीके मूरवशीबादशाहोंकी सूची ।

शेरशाहसूर	स ई १५४५ मे मरा
सलीमशाहसूर (शेरशाहका छोटा बेटा) "	१५५४ "
फीरोजशाहसूर (सलीमसूरका बेटा) "	१५५४ में मुह
	मदक़ाद आदिलने इसको मारवाला
मुहम्मदशाहआदिल (शेरशाहका भतीजा)	१५५५ में इबरा-
	हमि सूत्रने इसे गद्दीसे उतार दिया.

हमराहीमखौंसूर (मुहम्मदशाहआदिलका बहनोई) "१५५५ में सि-
कन्दर शाहसूने इसे तख्तसे उतार दिया

सिकन्दरशाहसूर (शेरसूरका भतीजा) " १५५५ में हुआ

यूने इसे खराहेन्दके निकट परास्त करके सूरवशका भन्तकपदिया

शेरसिंह (महाराजा पंजाब) - यह पंजाबके शही महाराजा रणजीत
सिंहजीके पुत्र रानी महताब कुँवरके पेटसे स० ई० १८०७ में जन्में थे। खड्ड
सिंह तथा मोनिहालासिंहके बाद इन्होंने पंजाबकी गद्दीपर बैठना स्वाहा पर
जम्हूरेश महाराज गुलाबसिंह तथा अन्यसिक्ख सद्दर चाहते थे कि, राजकाज
खड्डसिंहकी रानी चंद्रकुंवरके हाथमें रहे निदान दोना तरफसे छड़ाई ठनी
दिनकी छड़ाईके बाद रानी चंद्रकुंवरने लाहौरका किला सखी करदिया।
और, शेरसिंह स ई १८४१ में गद्दीपर बैठे। लेकिन द्वेषकी भाग बुझी नहीं
थी, सद्दरलोग मगटमें चुपथे और छिपे २ शेरसिंहके नष्ट करनेकी किक्र कर
रहे थे। आखिर इन्होंने अपनी तरकीबे छड़ाकर महाराज शेरसिंह और धनीर
ध्यानसिंहके दिळोंमें फर्क डालदिया। यह सुभवसर पाकर अतरसिंह तथा
भजीतसिंह सिंघवालोंने राजा और धनीरके बीच खूब अदावत करदी, अवर
राजासे मिलकर धनीरके मारनेका हुक्म लिखाडिया और वही हुक्म धनीरको
दिखलाकर राजाके मारनेकी पुगत ठहराई। घोड़ेही दिनोंबाइ सिंघवाले
दोनों सद्दर ५०० सवार लेकर लाहौर भाये और महाराज शेरसिंहसे मिले।
महाराज शेरसिंहने जाना कि, धनीरके मारनेके सिये भाये है, इतनेहीमें सद्दर
भजीतसिंहने एक भरिहुई दुनाली चम्बूक महाराजके सम्झने करके कहा कि,
देखिये महाराज क्या अच्छी बटूक है। महाराजने, न्योही लेनेको हाथ बढ़ाया
स्योही भजीतसिंहने घोडा दवाया। दोनों गोलिये पार होगई और महाराजके
मुहसे केवल यह निकलने पाया कि, " यह देगा की "।

शैक्सपियर (William Shakespear) यह मसिद्ध अंग्रेजी कवि
माळिका एलिजाबेथके समयमें, इङ्ग्लैण्डके स्ट्रेटफोर्ड भात ऐवन नामक ग्राममें
हुये थे। बाप इनके एन वेन्ने तथा वस्ताने बुननेका पेशा करते थे। १८
वर्षकी उम्रमें इनका विवाह हुआ जिससे ३ बच्चे हुये। पश्चात् लन्दनमें आकर
यह एक नाटिक कम्पनीके मेनेजर होगये। कुछ समय पीछे एक धन्य
नीके नाटिक बम गये। स० ई० १६०४ म इनके पिताका देहांत होगया और
स० ई० १६०५ में यह अपने गोंवको छीट भाये। फिर अत समयतक यह

वहाँ रहे और एक बड़ी जायदाद मील छे सके । कविता करनेकी शक्ति इनमे देवीपी । सैकड़ों पुस्तक इन्होंने निर्माण कीं जिनमेंसे ३५ नाटक हैं । शृङ्गार, वीर, करुणा इत्यादि ९ रस जैसे इन्होंने दर्शाये जैसे कोई दूसरा भग्नेमी कवी-रवर्ग नहीं दर्शासका । सर्व प्रकारके विचारोंका इनकी कवितामें समावेश हुआ है और वितके सुदृमभावोंको तो ऐसी उत्तमतासे इन्होंने चित्रित किया है कि मानों मूर्तिसमान बनाकर दिखला दिया है । नाटकपात्र इनके सब कर्तव्यपरायण है और पदलाळित्य इनका ऐसा ही प्रसिद्ध है जैसा संस्कृत कविदण्डिका । इन्द्र-लैन्डमें इनके नामके अनेक मछे होते हैं और इनके हाथकी छड़ी तथा घण्टा अथवा छन्द इनके अंसायष घरमें रक्खे है और आश्चर्यकी भाँखसे देखे जाते हैं । स० ई० १६१६ में ५३ वर्षके होकर मरे और स्वेच्छानुसार निम्न जन्मभूमिके ग्राममें दफनाये गये ।

शैखचिह्नी— चिह्नी अप भ्रशयु इलीका है । सुदृती पार्सीभाषामें ठठोळको कहते हैं । वास्तवमे यह बड़े ठठोळ तथा चतुर पुरुष थे । अनेक कहानियों इनकी इस देशमें प्रसिद्ध हैं । धानेश्वर (पंजाब) में इनकी कबर देखनेलायक बनी है । प्रधीत होता है कि, यह मुगळ सम्राट शाहजहाँ (स० ई० १६१८-५८) के वक्तमें हुये ।

शैखजलाल— इनको मखदूममें जहानियां तथा जहाँगशभी कहते है । पृष्ठीके अनेक भागोंमें भ्रमण करनेके विषय इन्होंने ७ दफे मक्काकी यात्रा की थी । इनके मुदीद (चेले) को जलाळिये भयवा मछड़े कहलाते हैं अथवा इस देशमें बहुत हैं । इनके धाप सय्यद अहिमदकबीर मुळतानके रहनेवाले थे । और इनके दादा सय्यद अलाळ बुखारी थे । शैखबहादुरीन अकरियाके पौत्र शैखकतुबीन अमुलफतह इनके पीर (गुरु) थे । मुळतान फीरोजशाह तुगलक इन का मुदीद था, इन्होंने मक्कासे लाकर उसको एक चप्पर दिया था । जिसपर मुहम्मद साहबके चरणका चिह्न था । मुळतानके समीप मच्छामें स० ई० १३८४ की साल ७८ वर्षकी उम्रमें इनका देहात हुआ । वर्षमें एकदफे इनकी कबरपर मेला होता है जिसमें लोग घूट २ से जाते हैं । लोगोंको विन्यास है कि, इनकी कबरकी मट्टी खानेसे पागलोंको भाराम होजाता है । इनके एक मुदीदने इनके जीवनचरितकी पुस्तक लिखी थी और उसका नाम किताबेकुतबी रक्खा था ।

शौनकऋषि- छान्दोग्यऋषिके पवित्र प्राचीन वंशमें वेद पढ़नेपढ़ाने तथा यह करामेका काम सदैव रहा। इनका घर नैमिषारण्य जिला सीतापुरमें था। शौनक नामके निम्नस्य पांच प्रसिद्ध ग्रंथकार इस वंशमें हुये थे-

शौनकगृत्समदमहर्षि-इन्होंने ऋग्वेदका द्वितीय मण्डल प्रकट किया।

शौनकाचार्य २- यह शौनकगृत्स मदमहर्षिके पौत्र थे। ब्राह्मण शर्ष आदि ४ वर्ण इन्होंने कायम किये थे। शौनकशास्त्रा प्रवचन तथा ऋग्वेदके कल्पसूत्र इनके रचित ग्रंथ हैं।

शौनकाचार्य ३- इन्होंने वेदाङ्ग शिक्षा रची थी और परीक्षितके पुत्र जन्मेभयका यह करायया। महाभारतमें सूतभीके सम्वादके प्रवर्तक बारी हैं। यह नैमिषारण्यमें रहकर ८८ हजार ऋषियोंके अग्रगण्य गिने जाते थे। प्रसिद्ध पं० अरवलायन इनका शिष्य था।

शौनक ४- यह पाणिनि ऋषिके समकालिक थे क्योंकि "पाणिनिशिक्षा" के सगुहीता पं० व्याटिके रचे "विकृतवलि" नामक ग्रंथमें इनका नाम है और शौनकीयक ऋक्प्राति शास्त्रके अनेक स्थलोंमें पाणिनिऋषिके सपाठी पं० व्याटिकानाम है। निम्नस्थग्रंथ ऋग्वेदपर इन्होंने रचे थे।

शौनकीय ऋक्प्रातिशास्त्र, अनुषाङ्गप्रातिशास्त्र, सूक्तानुक्रमणी, आर्षानुक्रमणी, छन्दानुक्रमणी, ऋक्पादयोर्विधान और स्मावृत्त।

शौनक ५- इन्होंने अथर्व वेद संहिताका सम्पादन किया था जो शौनकीय संहिता कहलाती है। चिदाभ्यासका तथा ४ भागोंमें अथर्ववेदीय प्रातिशास्त्रमी इन्हींका बनाया हुआ है।

शकराचार्य स्वामी (स्मार्तधर्मप्रवर्तक)- पुण्डितस्ववेत्ता पंडित के. वी. पाठक स० ई० ७९९में इनका होना निश्चयकरते हैं। यह मलायार प्रदेश शान्तगर्त मलाड़ी ग्राममें विश्वजीत उपनाम शिवगुरु एक बृद्ध ब्राह्मणके घर विशिष्टा नामकी माताके गर्भसे जन्मे थे। परम्परासे बड़े आनेवाले वैमनस्यके कारण कुटुम्बियोंने इनके जन्ममें शंका व्यक्त करके इनके माता पिताको त्याग दिया था। ५ वर्षकी उम्रमें इनके पिताका देहांत होगया। ८ वर्षकी-उम्रमें इन्होंने ममदातटवासी गोविन्द भगवत्पाद एक सिद्ध पुरुषसे सम्पाद्यधर्ममें

वीक्षा छी और उनसे सम्पूर्ण विद्या पठ १६ वर्षकी उम्रमें काशीको चले भाये । काशीमें जब एकदिन यह गंगास्नान किये आरहे थे तो रास्तेमें चार कुर्सोंको रस्सीमें बांधेहुये साम्हनेसे एक चांडालको आता देख इन्होंने कहा कि, "गच्छ दूरे" । चांडाल मार्ग न छोड़ कहने लगा कि, "वेद तथा उपनिषद् परब्रह्मको अद्वैतीय अनवय्य असङ्ग तथा सत्य वतछाते हैं परन्तु मुझमें यह भेद बुद्धि देख मुझे बड़ा आश्चर्य होता है । स्थलके भयसे आपने मुझसे मार्ग छोड़नेको कहा किन्तु मेरी और आपकी आत्मामें कुछ फर्क नहीं है । महात्माजम मोहकूपमें फलकर इस क्षणभङ्गुर नरवर देहमें वृथा आत्माभिमान करत रहते है" । यह कहकर चांडाल गुप्त होगया और उसकी जगह चारों वदसमेत एक विद्वान् दृष्टि पड़ा जो चास्तात शिष्या माछूम होता था । पछमात्रमें वह भी अन्तर्भ्यान होगया और इनको उपदेश कर गया कि "एक मात्र परब्रह्मही सत्य है और सब मिथ्या है" । इसी उपदेशके आधारपर इन्होंने स्मार्तधर्मका प्रचार करना चाहा निदान प्रयागमें जाय प्रसिद्ध पं० कुमारिलभट्टसे भेंट की कुमारिलजीने इनका अभिप्राय समझ इनको उपदेश किया और कहा कि "यदि माहिष्मतीवासी मीमांसक पंडित मण्डनमिश्रको मुझ शास्त्रार्थमें परास्त कर सको तो भारतके अन्य सब पंडित परास्त होनेके लक्ष्य हो जावेंगे" यह सुन यह माहिष्मतीको विधारे और पं० मण्डनमिश्रको शास्त्रार्थमें परास्त करके उसको शिष्य करलिया (देखो मण्डनमिश्र) पश्चात् इन्होंने अनेक और विद्वान् शिष्य किय जिमेंसे सुरेश्वराचार्य (मण्डनमिश्र), पद्मपादाचार्य, हस्ता मल्लकाचार्य, मोटकाचार्य इत्यादि १० प्रधान शिष्य थे । इन १० शिष्योंकी गणना वेदान्त दर्शनके आचार्योंमें है और चर्वाचियोंकी १० शाखायें इनके नामसे प्रसिद्ध हैं । फिर इन्होंने भारतके प्रत्येक भागमें दिग्दिग्जय करके स्मार्तधर्मका प्रचार किया और पूर्वोक्ति चारों दिशाओंमें निम्नस्य देव दर्शन मठ बनवाये और उनमें अपने विद्वान् शिष्योंको नियुक्त किया—

उड़ीषामें गोवर्धन मठ बनवाकर पद्मपादाचार्यको र्खा ।

द्वारिकामें शारदा मठ बनवाकर विश्वरूपाचार्यको र्खा ।

मदुवाळमें जोशी मठ बनवाकर मोटकाचार्यको र्खा ।

मैसोरमें शृगगिरि मठ बनवाकर पृथ्वीधराचार्यको र्खा ।

उपरोक चारों गहियोंकी परम्परामें होमेवाले महन्त शंकराचार्य नाम धारण करते हैं शंकरस्वामीने ब्रह्मसूत्रोंपर अद्वैत भाष्य और कठ केमादि १० उप निषदोंपर भाष्य तथा भगवद्गीतापर भाष्य रचा था। "विवेकचूडामणि" नामक ग्रंथभी इहीका विरचित है। वास्तवमें एकदिन शंकरस्वामीकी प्रपरचना, अनुपम प्रतिभा, अमानुषिक शक्ति, अलौकिक क्षण्णतीय शक्ति, सारगर्भ उपदेश

और अतृप्त क्राय कलापने हिमालयसे रासकुमारीतक बड़ाभारी धर्म विष्क
व उपस्थित किया था और यौद्धधर्मसे नूबेहुय भारतकी रक्षा की थी। ३२ वर्षके
उम्रमें शंकरस्वामी केदारनाथके शिखरपर स्वस्वरूपको प्राप्त हुये। स्वामीके
दक्षिणदेशस्थ शिष्योंने काशीपुरी कामाक्षीदर्वाके मंदिरमें उनकी मूर्ति पधराई
जो अतक विद्यमान है। स्वार्थधर्मके अद्वैतवादी शिव, देवी, गणेश आदि
सपत्नताभाको एक परब्रह्मका अर्थ मानकर अभेदबुद्धिसे पूजते हैं और
जीवको ईश्वरसे अलग नहीं मानते।

शृङ्गीश्रुति-घर पटाखे ८ कोस दूर ईशान नदीके तट सेनाग्राममें
इनकी तपस्याका स्थान है। इस स्थानपर राजा परीक्षितकी सेना आकर पड़ी
थी इहाँ कारण इसका नाम सेना पड़ा। यहाँपर राजा परीक्षितने शृङ्गीश्रुतिके
गछेमें सैन्य डाला था। शृङ्गीश्रुतिकी पत्नी शुफा अतक एक बच्चाके भीतर
बना है और उसके सर्वक शिष्य आशपासके खेत मानकार हैं। इनके पुत्रका
नाम शिङ्गीश्रुति था।

श्रीसेन-इन्होंने ज्योतिषके रोमकविज्ञानका वर्तमानवशमें सङ्गठनकिया।

श्रीहर्षपंडित-(महाकाव्यनैषधके कर्ता)-डाक्टर ब्रह्मर चाइ
वने कन्नौज नरेश जयन्ती चंदके एक दानपत्रसे लिख किया है कि पं० श्रीहर्ष
वि सं १२२५ में विद्यमान थे। प्रसिद्ध है कि इन्होंने पंचम अवस्थामें वाग्देवी
के प्रसादसे सम्पूर्ण विद्या प्राप्त की थी। नैषधकाव्यके पढ़नेसे विवित होता
है कि, यह दार्शनिक पंडित महाकवि विद्वान् अमोक्ष प्रविभाषाछां थे।
कैमकवि राजशेखर स्वराचित प्रबन्धकोशमें लिखते हैं कि "श्रीहीरसुत श्रीहर्ष
ने बनारसमें जन्म लेकर राजा जयन्तीचंदके आदेशसे नैषधकाव्य रचा था।
राजा जयन्तीचंदका राज्य कन्नौजसे बनारसतक सर्वत्र देशमें था नैषधकाव्यमें
लिखा है कि श्रीहर्षकी माताका नाम मामलदेवी था। कन्नौजके राजा जयन्ती
चंदकी सभामें पं श्रीहर्षको आसन तथा दोषीड़ा पान मिला करता था।
पं० लक्ष्मणरायण पं श्रीहीरकी शास्त्रार्थमें हाराया था। पं श्रीहर्षने स्वराचित
"खण्डन खण्डखाण्ड" ग्रंथमें लक्ष्मणकृत "न्यायकुतुमाञ्जलि" का खण्डन
रके पिताके बैरका पढ़ाया किया। निम्नस्वग्रंथ औरभी इहाँके बनाये हुये हैं -
अर्णवखर्जनकाव्य, नवसाहस्राक्षरचर, गौडोर्वाशकुलमशस्ति, शिवभक्तिविशि-
ईश्वरभिसन्धि, स्वपाशमस्ताव, स्वैर्यविचार और विनयप्रशस्ति। गीतगाविन्द
के कर्ता जयदेव मिश्रने "प्रसन्नरायण" नाटकमें पं श्रीहर्षकी सरस्वतीका हर्ष
रूप लिखा है।

श्रीहर्षदेव (कश्मीर नरेश)-राजतरङ्गिणीके लेखानुसार यह अनेक
भाषाओंके पंडित होकर सरकवि तथा सम्पूर्ण विद्याओंकी रानिये। वेरादेश

न्तरोंमें हमकी प्रसिद्धियाँ । स० ई० १०९१ तथा ९७ के बीच काश्मीरकी गद्दी को प्राप्त हुए ।

श्रीहर्षवर्द्धन (रत्नावली आदि नाटकोंके कर्ता) — "हर्ष चरित्र" में पं० घाणभट्ट लिखत हैं कि श्रीहर्षवर्द्धनके दादे पुष्पभूपति और बाप प्रभाकर वर्द्धन यानेश्वर (पंजाब) के राजाये । श्रीहर्षकी बहिन राजभी कन्नौज नरेख गृहवर्माको विवाही थी । राजा प्रभाकर वर्द्धनके मरनेपर मालवराजने भ्रव खर पाकर गृहवर्माको घघ किया और राजभीको कैद करलिया । यह सुम कर श्रीहर्षके बड़े भाई राज्यवर्द्धनने मालवराजपर खड्ग की और परास्त करके उसको घघ किया । मालवराजके एक मित्रने डेरेमें घुसकर राज्यवर्द्धनको भी मारहाला । तब श्रीहर्षने यानेश्वर, कन्नौज तथा मालवाका एक

छत्रराज किया। कन्नौजको राजधानी बनाया। बहिनराजश्रीकी खोम कराई लेकिन माछूम हुआ कि यह बौद्धमत ग्रहण करके विरक्त होगई। सिंहासन चढ़ होनेसे कुछही दिन हीसे श्रीहरषने भी बौद्धमत ग्रहण करके शिखादित्य श्रीहरषचंद्रन अपना नाम रखया। पहिले साँण लिखतेहैं कि 'महाराज श्रीहरष सप्तशास्त्र पारङ्गमये और महायैष्याकरण तथा सत्कवि होनेक सिवाय प्रथमराजमें भी सिद्धहस्तये। पाणिनि, व्याकि, शंकर, चन्द्र और धरदसि भाषि विद्वानोंके विचारोंकी पार्यालोचना करके, उन्होंने एक बड़ा किङ्गातुरासन बनायाया। वे दिग्विजयी, धार्मिक तथा जितेंद्रिय राजाये और राज्यविस्तारके द्वारा उन्होंने अत्यन्त सशो काम

किया था ” । खीनीपथिक होईयसङ्ग अपनी यात्राके प्रथमे लिखता है कि, “ महाराजा सिखादित्य प्रति ५ वर्षपर त्रिवेणी तट प्रयागमें एक बड़ी भारी सभा किया करता था जिसमें दूर ३ के राजे महाराजे, पंडित विद्वान, साधु सात छुलाये जाते थे । कितनेही दिनोंतक सबकी वाशत होती थी । अन्तमें महाराज सिखादित्य अपना सब धनवीलत छुड़ा देता था । और अपने सब भाभूयणभी किसी दिन पुरुषको देकर उसके बिपडे भाप धारण करलेता था” । स० ई० ६३४ में महाराज सिखादित्यने बौद्धोंकी एक बड़ी सभा भी थी जिसमें द्वाभारों आसन तथा ब्राह्मण विद्वानोंके सिवाय २१ राजेभी शरीक थे । यह सभा तीन दिनतक रही थी । निम्नस्य ग्रंथ इनके बनाये हुये हैं—

रत्नावली, नागानन्द और प्रियदर्शिका । स० ई० ६५० म ४० वर्ष राज्य करके महाराजा सिखादित्य वर्षवर्द्धन परलोकगामी हुये ।

श्रीचंद्र (सिक्खोंकी उदासी सम्प्रदायके आचार्य)—यह गुरु नान्दकजीके द्वितीय पुत्र थे । इन्होंने सिक्खोंकी उदासी सम्प्रदायका प्रचार किया । इनके मतको माननेवाले हजारों उदासी फकीर अबभी हैं ।

श्रीधराचार्य (ज्योतिषी)—यह बङ्गदेशके दक्षिण देशवर्ती भूस्मृष्टि नामक ग्राममें जावसेये । इनके पिताका नाम बद्धदेवशर्मा था और शाके ९१३ में इनका जन्म हुआ था । “ ज्योतिषत्रिशती ” तथा वैशेषिक सूत्रोंपर “ न्यायकदकी ” नाम तिलक इन्होंने रचे ग्रंथ हैं ।

श्रीपति (भाषाकवि)—यह प्रयागपुर निवा बहरायचके रहनेवाले थे । काव्यसरोज, श्रीपतिसरोज तथा काव्यकल्पद्रुम इनके बनाये ग्रंथ लिखपास हैं । यह वि० स० १७०० में विद्यमान थे ।

श्रीलालपंडित—यह अवधीय ब्राह्मण जयपुर राज्यान्तगत भाण्डेरके रहनेवाले थे । संस्कृतके पूर्णज्ञाता होकर गणिशास्त्रमें निपुण थे । प्रथम भाग्यकालिजमें संस्कृत प्रोफेसरके पदपर नियुक्त हुये थे । स० ई० १८४८ म जब पश्चिमोत्तर देशके मधुपदि ८ मिल्डोंम सरकारी स्कूल नियत हुये तो पाठशाळाभाके विभीटर जनरलकी आह्वातुसार निम्नस्यग्रंथ इन्होंने रचे थे ।

शाळापद्धति, समयमवोध, भक्षार्थीपिका, गणितमकाश (पांचभाग), बीजगणित, भाषाचित्रिका इन्धरता निदर्शन और ज्ञानवालीसी । स० ई० १८५२ म जब भागरमें नार्मलस्कूल सरकारने खोला तो पं० श्रीलालको इसका हेडमास्टर नियत किया । ५ वर्षबाद पंडितजी जिज्ञा चरैरोंके डेटोटी इन्सपेक्टर हुये । स० ई० १८५८ में ग्वाछियर कालिजके हेडमास्टरका पद पंडितजीको मिला । स० ई० १८६७ में अश्वदि रोगसे पीडित होकर भागरेको भाये और यमुना घटे बह रवागी ।

श्रीधर (भाषांकवि)— मोहल जिळा खीरोके राजा सुब्बासिंह चौहान ने श्रीधर नामसे पदपूर्ति की है । भाषासाहित्यमें “ विद्वन्मोद सरस्वती ” इनकी रचनी हुई है । यह कवि सुवशाशुकेके शिष्य होकर वि० सं० १८७४में विद्यमान थे ।

श्रीधरस्वामी (भागवत तथा विष्णुपुराणके टीकाकार)— यह दक्षिण देशस्य किसी ब्राह्मण कुलमें जन्मे थे । प्रथम कुछ विनातक व्यापार करत रहे पश्चात् काशीको चले भाये । इनका रचा भागवतभाष्य काशी मरवा की समाम ५० भागवत भाष्यमें जो उस वक्ततक बस चुके थे सर्वोत्तम ठहराया गया था । श्रीधर भाष्यमें कर्म, उपासना तथा ज्ञान सबही अपना २ भाग करनेमें प्रधान ठहराये गये हैं, परन्तु अन्यटीकाकारोंने अपने २ मन्त्रमयके भक्तिसार कर्म, भक्ति, ज्ञान, योगादि ? । ? विषयको प्रधान ठहरानेका उद्यम किया है । श्रीधरभाष्यसे प्रसन्न होकर काशीनरेशने १००० मशार्फिये समाज कीश श्रीधर स्वामीको दीयी जो इन्होंने उत्तीसमय पंडितो तथा साधुभाको बांटा दी । वि० सं० के २६ व शतकमें इनका समय है । यह रामानुजय सम्प्रदायके थे और इनके गुरुका नाम परमानन्द था । निम्नस्थ ग्रंथ तथा टीकाएँ इनके बनाये हैं—

भगवद्गीतापर सुषोधिनीतिलक, भगवद्गीतासार टीका, भागवतपुराण टीका, विष्णुपुराणपर धारमप्रकाशटीका, वेदस्तुतिटीका, ब्रह्मविहार भाषाघटीका और पदायप्रकाशिका पुराणटीका ।

सगर महाराजा - वाल्मीकि रामायण ५० का० में लिखा है कि सूर्यवंशम राजा अश्विष्ठ हुये जिनको इंद्रेय, तालजंघ तथा शशबिन्दु देहाक रामाओंने परास्त करके निकाल दिया। राजपरहित राजा अश्विष्ठ अपनी दोनों रानियों सहित हिमवान पवतपर जा रहे और थोड़ेही दिनबाद परलोक सिधारे । दावों रानियें इस समय गर्भसे थीं, एकने काछिन्दी नामक दूसरीकी गम नाश करनेके छिये गरल दिया । भागवतपुष्पम ऋषि उनदिनों हिमवान पवत (हिमालयका भाग विशेष) पर तप करते थे, कालिन्दीने जाकर उनको प्रणाम किया, मुनिके आशीर्वादसे गरके सहित काछिन्दीने पुत्र जना और इसी छिये उसका नाम सगर पड़ा । यह होकर सगरने शक, यून, कम्बोज, तालजंघ, शर, पाक बिन्दु तथा इंद्रेय जातिवालोंको परास्त करके पृथ्वीका एकसम्र राज्य किया । अनेक टीपोंमेंभी सगरका राज्य था । घालीद्वीपमें अतक उनकी पूजा होती है । समुद्रका नाम सगर इन्हींके नामसे पड़ा । सगरका बनवाया सगरताल अभी

सक तद्विखीलकासगज जिह्वा एटाके गढ़ीबकेरी नामक ग्राममें मौजूद है ।
सगर सन्ततिहीनये एवं हिमयान पर्वतपर जाकर उन्होंने तप किया जिसके
प्रभावसे रानीकेशिमीके १ पुत्र और रानी सुमतिके ६० हजार पुत्र हुये । अंतमें
सगरने बद्रिकाश्रममें उस स्थानके समीप जिसको अब ज्योममयाग कहिते हैं
अश्वमेध यज्ञ किया और कुछ काल पीछे निजपौत्र भंशुमानको राजपाटसौंप
वनको सिंधारे । सोरो जि० एटोंमें कपिलदेव मुनिकी गुफाके साम्ने
सगरके ६० हजार पुत्रोंके भस्म होनेकी पुराणोक्त कथानक प्रसिद्धी है ।
इनका वंशवृक्ष महाराज सूर्यके चरित्रमें लिखा गया है सो देखो ।

श्रद्धारामपदित (सनातनधर्मके प्रथम पंजाबी उपदेशक)—
वि० स० १८१४ की साल जयदयालु ब्राह्मणके घर फिलौर जिला आलन्धरमें
जन्मे थे । पिता तथा चाचा इनके साधारणरीतिके पुरोहित होकर यज्ञमात्रीके
द्वारा अपना गुजारा करते थे । पं० श्रद्धारामजी संस्कृत, अर्था, फार्सी तथा अंग्रेजी
के बड़े पदित होनेके सिवाय अमत्कारी ज्योतिष तथा रमलशास्त्रके विद्वान
होकर बड़े प्रतापी हुये । भाषाकविताभी करते थे, सर्गावशास्त्रमें निपुण थे
और ग्रन्थरचनार्थ सिद्धहस्त होकर सत्यामृतप्रवाह, भाग्यवती सिद्धादि-
राजदीपिधिवा, मसूले मजादिव तथा रमलकामधेनु आदि अनेक ग्रंथोंके
रचयिता थे । पलाब तथा युक्त मान्तये अनेक नगरोंमें अपने स्वर्धसे
जाकर सनातन धर्मका उपदेश करते थे और यदि कोई आडता तो भीमदाग-
बस आदि पुराणोंकी कथा कहकरदे थे जिसको निम्नस्थ विद्रोहसाम्राज्यके कारण
हजारोंको सुनते तथा हजारों रुपये चढ़ाते थे—

पहिछे तो पथोचित काळके रागमें राजके साथ सस्वर पाठ करना फिर
स्पष्ट भाषामें अर्थ कहना, प्रसंगको भुवि स्मृति पुराण कुरान ईजील आदिके
अमार्णसि विभूषित करते जाना और साथही वेदविद्मर्तोका खण्डन इस
रीतिले करते जाना कि, समझ सब पर कोई दुरा नमाने ।

घरपर हों या बाहर पदितजीके पास छोटे बड़े सरकारी मौकरो तथा सेठ
साहूकार आदि हजारों अमीर गरीबोंकी भीड़ लगी रहती थी । अनेक राजे
महाराजे तथा पंजाबके लफ्ठिनेन्ट गवर्नरसक उनके गुणोंकी प्रतिष्ठा करते थे ।
वेसे महारपुरुपको ईपांलुभाके द्वारा बहुतकुछ सन्ताप भोगना पडा था जिसका
दिशदर्शन मात्र यहाँ लिखते हैं—

अपुत्र विचारोंके पुरुष होकर पदितजी विनाशुछाये किस्कीके यहाँ नहीं
जाते थे, पिताके धनी पसमानोंकोभी अपनी अपार विद्याके भागे मुबल समझ
दन्होंने त्याग दिया था । प्रकृतिके नियमानुसार बेसी दशामें साधारण माता

पिताके पुत्रका विलक्षण प्रताप देख जन्मभूमिके पित्तनेही लोग इपालू लोगे ये परन्तु कुछ करसक नहोकर बात २ म उठा उढाया करत तथा दूर रतक स्वर्ग साधारणके चित्तमें कुसंस्कार दृढाकर निरन्तर अपनी गणना पढानेका उद्योग किया करते थे । चढ़ती जवानाके दिनमें किसी अवसर पर पंडितजीने अपनी माताके एक थपेड़ा मारकर अतिशय पक्षात्ताप किया था । इसीकारण बाहिकाये जानेपर उनकी माता तथा चचाभी स्त्रियोंके सहस्र स्वभावके अनुसार अपने पुराने यजमानोंसे, जो पंडितजीके मुख्य इपालू थे, मिलगइयाँ जिससे घरका भेद सहजहीमें बाहर होजाया करता था । अनुचित बुर करनेपर पंडित जी ब्रह्मतेजपर आ जाते थे, इसी बुनियादपर इपालूभौन छोटे दमके मनुष्योंको सिखलाकर पंडितजीके बनानेके छिये अधिष्ठ किया जिससे बात २ में एक मर्मस्पर्शा शब्द घोळकर तथा विकार सूचक श्रेष्ठ बनाकर पंडितजीका रूप तपाने लगे । यह चालसमग्र पंडितजीने बन " बन्दरके हाथके चिमटा " की यथाशक्ति अपनेसे दूर रखनेका प्रयत्न किया । किछोर तथा छाहीमें पंडितजीने हरिद्वान मन्दिर बनवाये थे जिनमें हर साल २ । ४ उत्सव धूमधामसे होते और अपने द्वारपर दाल भाटेका सदाव्रत जारी किया था । अनेक और देशहितके काम करनेको ये जिनके पूरे होनेमें इपालूभौके उद्योगसे देर दूर शीघ्रही वि० सं० १९३८ को साठ पंडितजीको मृत्युने भाघेरा । टपोहीने जिसप्रकार पंडितजीको निरन्तर सन्तप्त करनेका उद्योग करते थे उसका एक उदाहरण यहाँ छिपते हैं-

दाळ भाटेके सदाव्रतके विषयमें इपालू लोग हाटघाटमें देशीविदेशी सबके विकार सूचक श्रेष्ठ बनाते हुये पापदर्शी शब्दोंमें कहाकरतेये कि " भजी उनके यहाँ तो सदाव्रत खुला है जिसको इच्छा हो ले इनकारतो किसी हेहीनहीं " । जो करना था सो पंडितजीने सदैव किया और इपालूभौने वातावरण किंचिमात्र ध्यान न करनाही उनको उचित औपाधि समझी । सन्तान नहींथी परं अन्तसमय पंडितजीको निज भ्रातागो पंडितामहाबाहुन की नौकामहाधार केवल एक विद्वान दिग्गज प० सुकसीविवेके सहारे छोड़ पड़ी । पंडितजीके ढेरियोंमें अनाथ विधवाकोभी कलनहीं देने की परन्तु वरमें उसको कुछ विशेष हानि नहीं पहुंच सकी । धिक्कार ! ऐसे ढेरियोंको जो तनमें प्राणरहित सदैवही गाळ बजाते रहे लोकमें कुछ बरें न सके अनेक समाचार पत्रों तथा बड़े १ लोगोंने पंडितजीके मृत्युपर एकत्रसे कहा था कि " प० अक्षराम वास्तवमें देशहितकी महाविद्वान थे " ।

सम्माजी-महाराज शिवाजीकी पत्नी सईबाईके उदरसे स १६५५ का साठ राजगडमें जन्मे । पिताके जीतेजी इन्होंने किसीप्राण्णीसे बसाव

व्याभिचार क्रियाया जिसके बदलेमें महाराज शिवाजीने इनको कुछ दिनोंके लिये कैदकक्षमें अपनी न्यायपरिताका परिचय दियाया । पश्चात् इन्होंने निजपिताके विरुद्ध उपद्रव ठाना जिससे महाराज शिवाजीको इतना शोक हुआ कि वह मरही गये । स० ई० १६८० में पिताके सिंघारनेपर यह राज्यसिंहासन पर विराजे और ९ वर्षतक राज्य करते रहे । यह बड़े निर्दोष, प्रजा इनके शासनसे ठकला उठायी, शराब बहुत पीतेथे, बड़े खेणथे और बहुधा अन्तरपुरहीमें रहितेथे । इनका राज्यकाल पुतगाछियों तथा मुगलोंसे लड़नेमें बीता, स० ई० १६८९ में मुगल सम्राट औरंगजेबने बीबी बतों सहित इनको पकड़वा लिया और लोहेकी गरम सलाखसे इन्हें मन्धा करवाके जिंदा इनकी कटघाटाही क्युंकि मुसलमानोंके पैगम्बर मुहम्मदको इन्होंने कुवाक्य कहेथे बादको औरंगजेबने इनका सिर धड़स जुवा करवा दिया और इनके पुत्र शिवाजी द्वितीय (साहू) को बहुत दिनातक कैदमें रक्खा ।

सर्वज्ञमुनि (सक्षेप शारीरक माण्यके कर्ता)—यह स्वामी श्रीकराचार्य (स० ई० ७९९-८३१) के शिष्योपशिष्यथे ।

सरस्वती—प० मण्डन मिश्रकी स्त्री लीला अपनी अपार विद्याके कारण सरस्वती कहलातीथी (देखो लीलावती) ।

सलीमचिंद्गी शैख (करामाती फकीर) शैखबहादुरहीनके घर दिल्लीमें स० ई० १४७८ की साल जमे । बड़े होकर इराहीम बिरतोके मुयेद हुये और आगेरेके समीप फतेपुरखीरमें आरहे । इन्होंने २४ दफे मक्का मदीनाकी यात्राकीथी केवल सीकरीके साछापमें पैदा हुए सिंघादोंकी रोटी खातेथे और हिंदोस्तानके मुख्य पहुंचे हुये साधुओंमें इनकी गिनती थी । मुगल सम्राट अकबर इनको बहुत मानताथा । शहिजादा सलीम (जहाँगीर) इन्हींकी आशिषसे पैदा हुआथा । अकबरने खीराम इनकी मटीके स्थानपर ५ लाख रुपये के खर्चसे एक मसजिद बनवादीथी जो अबतक मौजूद है । एक मसजिदके बननेसे कुछही महीने बाद स० ई० १५७१ की साल दोखनी परछाक गामी हुये । इनका एक बेटा बंगालमें मारागया, दूसरा इनकी गद्दी पर खीराममें बेटा और इनके पोते इसलामखीको मुगल सम्राट जहाँगीर (सलीम) ने बंगालका सुबेदार बनादिया ।

सलीमशहिजादा—देखो जहाँगीर ।

सहजो बाई (भाषाकावि)—यह प्रसिद्ध महारमा चरणदासजीकी गिप्पा कविता करनेमें निपुणथी । जातिकी दूसरथी और इसके पिताका नाम

हरिमसायु या । दिल्लीके परीक्षित पुरमें रहती थी । निम्नस्य ग्रंथ इसके रचे हुये हैं:-

सहस्रो बाईके शब्द (योग), सोलह सिष्यनिर्णय और सहस्र प्रयाग सहस्र भंग (वि० सं० १८००) ।

सहस्र पाँचव-चन्द्रशेखर राजा पांडुके कनिष्ठ पुत्र, रानी माद्रीके बंदर से थे । ज्योतिष तथा वैद्यक खूब पढ़ेये । "ध्याधि सिन्धु विमर्दन" नामक वैद्यक ग्रंथ इनका रचा हुआ छुप्त होगया है । इनकी स्त्रीका नाम विजयाया जिससे सुहोत्र नामक एक पुत्रया । इनका विशेष वृत्तान्त युधिष्ठिरके सम्बंधमें हो चुका है ।

साउदी (रावर्ट साउदी- Robert Southey) एक अंग्रेजी कविके बाप वुस्टल नगर (इंग्लैंड) में बजामये और वेस्टमिनिस्टर स्कूल तथा आक्सफोर्डे कालिजमें इसने विद्या पढी थी । १०० से अधिक पुस्तके पद्य, इतिहास तथा जीवन चरित्रोंकी इसने रची थीं । सं० ई० १८११ में इंग्लैंडके कविराजका पद इसको प्राप्त हुआ और ३०० पाँच वार्षिक वेतन नियत हुआ । सं० ई० १७७५ में जन्म, सं० ई० १८४३ में मृत्यु ।

साङ्गाराना (हिंदूपति महाराना संग्राम सिंह चित्तौड़ नरेश)- वि० सं० १५६६ में निज पिता राना रायमलके बाद मेवाड़ राज्यके अधिकारको प्राप्त हुये । दिल्ली, मालवा तथा गुजरातके मुसलमान बादशाह इनके राज्यको चारा तरफसे घेरे हुयेथे परंतु यह निर्भय होकर राज्य करतेये और जिधर जाते सधर विजयही पातेये । १८ वके इन्होंने दिल्ली तथा मालवाके बादशाहोंको परास्त कियाया । माड़वाड़, भम्बर, ग्वाछियर, अजमेर, सीकर, रायसेम, काल्पी, चंदेरी, बूंदी, रामपुरा और बाघुसे राजे आधीन होकर इनको राजस्व देतेये । यह एक वके लड़ाईमें मालवाके बादशाह महिमुद्द खिलजीको पकड़ लाये और ६ महीनेतक चित्तौड़के किल्लेमें कैद रखकर उसको छोड़ाया । दिल्लीके मुगल सम्राट बाबरपर १ लाख रुपया लेकर रानाजी चढगयेये और उसके अमीर सदाँपर अपनी ऐसी धाक बिठादी थी कि बाबर स्वयं अपने जीवन चरित्रकी पुस्तकमें लिखता है कि "मारे डरके कोई सदाँ साङ्गारानासे लड़नेकी बाततक सुँहसे नहीं निकाळताया" । सं० ई० १५२७ की साल अन्तिम युद्धमें जो राणा और बाबरमें हुआ, राणा से कई नम कहराम सदाँ बाबरसे मिल गये जिससे रानाकी हार हुई । दूसरेही वर्ष रानाने फिर दखल सहित बाबरसे लड़नेको कूच किया लेकिन रास्तेहीमें

परलोक गमन किया । बाबर बादशाह अनुमान करते हैं कि १० करोड़ रुपये वार्षिक भायका मुल्क राणा साङ्गाजीके अधिकारमें था । राणा साङ्गाजी बड़े तेजस्वी और नरेशाये, उनके समयमें मेवाड़ राज्यको बड़ी रौनक हुई थी । उनके पुत्र याना रतनसेन उत्तराधिकारा हुये ।

सादी (फार्सीकाबि)— इनका पूरानाम शैख मुखले हुषीन सादीया । मुल्क इरानके शहिर शीराजके रहिने वालेये । इनके घाप मन्बुल्ला निर्धनी ये निवान इनको बहुत दिनोंतक कूट हांकनेका पेशा करना पड़ाथा । ४० वर्षकी उम्रमें इन्होंने पढ़ना छिन्नना शुरू किया । शहिर बलैपोके किसी सौदागरकी बेटीसे इनका विवाह हुआ था, कई दफे मक़े मदीनेको पैदल गयेथे, वूर ३ देशोंमें भ्रमण कियाथा, और हिंदुस्थानकी दुसैरकोभी आवेये । इन्होंने फारसीमें कई पुस्तकें रचीयी जिनमेंसे गुलिस्तौं, बोस्तौं, तथा करीमा जगतमसिख हैं । इनके घचममें बहुत शक्ति पाई जातीहै। स० ई० १२९५ में १२० वर्ष के होकर मरे।

सान्दीपन गुरु (कृष्ण बलरामके विद्यागुरु)— यह पंडित जी अनेक शास्त्रोंके ज्ञाता होकर शस्त्रविद्या तथा रणकार्योंमें भी दक्ष थे । उजैनके रहिने वालेये और वहाँ एक पाठशाळामें पढातेये । कृष्ण बलरामने मजसे उजैन जाकर इनसे विद्या पढ़ीयी । उजैनमे अबतक इनकी पाठशाळा बनी है और उसमें कृष्ण बलराम तथा सुशामा भादि विद्यार्थीयाकी मूर्तिय रक्खी हैं ।

सायणाचार्य (वेदभाष्यकार)— इनके रचे २९ संस्कृत ग्रंथ हैं । इन्होंने तथा इनके भाई माधवाचार्यने मिलकर ऋग्वेद भाष्य रचाया (वेदो माधवाचार्य) । डाक्टर बुल्हर (Doctor Bulher) साहेबके मतानुसार सायणाचार्य स० ई० १३३१ से १३८३ तक संन्यासी होकर विद्यारण्य स्वामीके नामसे रहेये । यहतम सुयानिये तथा पञ्चदशी इन्होंक रचे ग्रंथहैं ।

सालारजंग (नवाब सर सालारजंग बहादुर, जी सी यस आई)
यह हैदराबादके निजाम नजीरुद्दौलाके समयमें स० ई० १८५३ की साल ७वीरके पदपर नियत हुये और रियासत हैदराबादको बिगडनेसे रोकलिया बंधुके निजाम नजीरुद्दौलाका राज्य प्रबंध चलाय था । उन दिनोंरियासतपर बहुत ऋण हागयाथा, सालारजंगके सुमबन्धसे ऋण थोड़ेहो दिनोंमें चुका दिया गया और रियासतकी आमदनी बहुत कुछ बढी । सन् ५७ के गदरके समय निजाम अफजलुद्दौला हैदराबादको गद्दी पर चम्पकरतेये लेकिन यह सालारजंगहाथे सुमबन्धका कारण था

कि दक्षिणमें गदर अधिकतासे नहीं फैलने पाया गदरके बाद सालारजंगसे हैदराबाद राज्यमें अनेक कृत्य तथा छाछावसुदवाये, सड़कें निकलवाई, म्यादाख्त स्थापन किये, पुलिसविभागके प्रबन्धन सुधार किया और जेलखाना, स्कूल इत्यादिके लिये इमारतें बनवाईं । निजामभक्तजल्लुहौलाके 'बाद मीर' महिष अर्थात् गद्दीपर बैठे जितकी घालघालमें वृद्धि गवर्नमेन्टने कौन्सिल आफ रिवेन्यू नियत की और सालारजंगको उसका प्रधान मुकर्र किया । वृद्धिदागवतमेन्टने आपको सर तथा जी सी एस आई के खिताबदियेये । आपको सारादरी हैदराबादमें देखने लायक बनोइ और आपके मकानका अहावा साइड ग्यारह फीट रुखा हिबोस्तान भरमें अद्वितीय है ।

सालिगरामरायबहादुर (राधास्वामीसम्प्रदायकेप्रचारक)

रायबहादुरसिंह कायस्थकेपर भाग्य सु पीपलमंडीमें १४ मार्च ए. ई. १८१९ की जन्मे वास्यावस्यामें हिन्दी, फारसी तथा अंग्रेजीकी शिक्षापाई । पश्चात् गवर्नमेन्टके डॉकविभागमें मौजूरी की और बढ़ते २ पश्चिमोत्तर अक्षय देशके डाकखानोंके इन्स्पेक्टरजेनरलके पदको प्राप्तहुये । स. ई. १८७७ में पेन्शनकी और ६ दिसंबर स. ई. १८९८ को परलोक गामीहुये । आपने राधास्वामी छाछा शिषुदयाल सिंहकी चलाई हुई राधास्वामी सम्प्रदायका प्रचार बहुत कुछकिया (देखो राधास्वामी) । स. ई. १८७८ में राधास्वामी मतके माननेवाले केवल ३००० थे परन्तु रायसालिगरामके उद्योगके प्रभावसे स. ई. १८९१ की मनुष्य गणनाके समय इस मतके अनुगामी १७६४३ निकले । आप बड़े अनुमथशील पुरुषथे, राधास्वामी मतके वरुं २ ग्रंथ आपने बनाकर छपवायेये । भाग्य तथा प्रयागमें इसमतकी सभायें नियतहुई हैं । काशीके पं० ब्रह्म शंकर मिश्र यम ये आपके प्रधान शिष्य आजकल वर्तमान हैं ।

साहू (मरहठाराजा)—इनका असलीनाम शिवाजी द्वितीय था लेकिन

मुगलसम्राट औरंगजेब साहूनामसे इनको पुकारतेथे । जगत प्रसिद्ध मरहठ वीर महापति शिवाजी इनके दादाथे और सम्भानी इनके बाप । स० ई० १६८९ में औरंगजेबने सम्भानीको पकड़ाकर मरवाडाला और साहूको कैदकर लिया । साहूका विवाह एक अभीर मरहठकी बेटीसे करवा दियागया और कैदमें उनके साथ अच्छा बर्ताव किया जाताथा । औरंगजेबके बाद बहादुर शाहने दिल्लीके तख्तपर बैठकर स. ई. १७०८ में साहूको कैदसे छोड़ दिया और तख्तवाहिकी भाधीन रहकर महापट्ट देशके शासनका हुकम दिया । मरहठाने इतने दिनाबाद अपने राजाघोषों पर बड़ी सुशीलताई, केवल बहकावतक देनाभारतकेसाय कैदमें रहनेके कारण साहूकी वीरता तथा परिश्रमकरनेकी बात जो मरहठोंके स्वभाविय गुण हैं जाते रहे वे । साहूने अपने

पूर्वजाकी गद्दीपर सत्तारामें बैठकर जिला औरंगाबादके परगना सिधारीके पैठलसे अनसनकरली । पैठल सैय्याजीराट इसलामदेमें मारागया और उसकी बिधवाने अपने, बच्चोंको साहूके पैरोंपर डालकर क्षमा मांगी । साहूने उसके बड़े पुत्र रानोजीके पालन पोषणका धरन दिया और थोड़ेही दिनोंबाद उसको भोंसलाकी पदवी देकर भाकलकोटका राज्य जागीरमें दिया । भाकलकोटमें रानोजीके वंशज अचतक राज्य करतेहैं । साहू आरामतल्लब तो होइगयेये निदान उनसे राज्य प्रबंध ठीक २ नहोसका, प्रजा थोड़ेही दिनोंमें उकळा छठी और यदि साहू राजकाज अपने ब्राह्मण भत्री बालाजी विश्वनाथको सौंपकर स० ई० १७१२ में अलहिदा नहोआवे तो शीघ्रही बड़े २ उपद्रव सड़े होकर मरहटा राज्यको नष्ट छटकर देते । राजा साहूसे राज्यकाजका पूरा भारि फार वाकर पेशवाने पूनामें अपनी राजधानी स्थापन की और ऐसी उत्तमतासे काम चलाया कि पेशवाका पद उनके वंशमें पुरतैनी होकर ७ पीढीतक रहा । साहू तथा उनके उत्तराधिकारी सत्ताराम रहिकर केशळ नाममात्रके राजाये, शासन वास्तवमें पूनामें रहिकर पेशवा करताथा क्योंकि युद्ध विग्रह इत्यादि सबही राजकाज उसके हुकमसे होवेये । स० ई० १७४८ में राजा साहूका देवलोक ६५ सालकी उम्रमें हुआ ।

सिकंदर आजम—देखो भकेगडर धीमेट.

सिकंदर प्रथम सम्राट् रूस (Alexander I Emperor of Russia) निजविता महाराज पालके वध होनेपर स० ई० १८०१ में रूसके तख्तपर बैठे । यह बड़े प्रभावालक थे । २ हजारसे अधिक स्कूल और २०४ अखाड़े इनके समयमें मुल्क रूसमें प्रभागणके दिगार्य जारी हुयेये । वास्तवका अचा इन्होंने मिटायाया । स० ई० १७७७ में जन्मे, स० ई० १८२५ में मरे ।

सिराजुद्दौला (अन्तिमनवावमगाला)—निजदादा अहमदशाही के बाद स० ई० १७५६ में गद्दीपर बैठा । बड़ा मर्पाई तथा क्रोधी था, दोही महीनेमें अंग्रेजोंसे बिगाड़ करबैठा और तुच्छ बातोंपर क्रुद्ध होकर कलकत्तेमें अंग्रेजोंकी घोट्टी जा घेरी और १७६ अंग्रेजोंको पकड़कर कारकोठरीमें ट्रेसदिया, जिनमेंसे पहले दिन केशळ २३ मनुष्य जीते बचे । यह खबर जब अंग्रेजी अफसर क्लायवुसादिवके कानमें पहुंची तो उन्होंने कुछ पौम छेकर मदराससे सूच किया और पहुँचतेही कलकत्तेपर अधिकार करलिया । मद्रासने सुलह करली और जो कुछ कम्पनीका तुक्खान हुआया वहभी संपकरदिया । स इ १७५७ में जब यूरोपमें अंग्रेजों और फरार्सीसोम युद्ध आताही क्लायवसे मांथा पांकर अ इ नगर फरासिंसोसे छीन लिया । इसकार

वाहसे सिराजुहौलाके राजप्रबंधमें हलचल हुई, पर यह फ़रासीवाका तरफ़ धार होगया । फ़ायज़ने यह देख सिराजुहौलापर चढ़ाई की और स० इ० १७५७ में पलासीके मैदानमें उसको परास्तकरके भगादिया और मीरजाफ़िरको अपनी तरफ़से नबाब बनाया । कुछही दिनोंबाद मीरजाफ़िरके बेटेने सिराजुहौलाको पकड़वाकर २० वर्षकी उम्रमें मरवाढाळा ।

१) सिलादित्यप्रतापशील—यह विक्रमादित्यहर्ष महाराजा उज्जैनका बेटा निज पिताके बाद प्रायः स० इ० ५५० म गद्दीपर बैठा । स० इ० ५८० के लगभग सिलादित्यके परलोक गमन करनेपर उसका बेटा प्रभाकर उषन गद्दीपर बैठा । सिलादित्यप्र० को शत्रुभांने राजरहितकर दियाया लेकिन कश्मीर मरेश प्रवरसेन ने मदद देकर फिर उनको राज्य दिखवाया और मड़ाराजविक्रमादित्यको निज पूर्वजोंका दिया हुआ १२ पुतळियोंका सिंहासन कश्मीरका डेगया ।

२) सिलादित्य हर्षवर्द्धन (धौद्ध महाराजा)—देखो भीष्म कर्न ।
 ३) सीतामहारानी (जानकीजी)—मिथलादेश (तिरहुत) के राजा जानककी कन्या महासुंदरी तथा गुणवती भैतायुगके अग्रतम हुई । महाराज रामचंद्रने स्वयम्बरमें शङ्कर धनुषको तोड़ सातामीके साथ विवाह किया । सीतामीकी उम्र विवाहके समय ७ वर्षकी थी और महाराज संसृक्त १५ वर्षके थे । विहार प्रदेशान्तरगत जनकपुरमें शङ्कर धनुषका आधाहिस्सा अबतक देखनेमें आताहै, दूसरा आधाहिस्सा सीतामढ़ी स्टेशनसे ३ कोस दूरपरहै । सुसराळमें आकर जानकी मांने अपने शुभ भाषणोंद्वारा सास, समुद्र इत्यादि कृदुम्बियोंको अर्पित प्रसन्न किया । पतिमें उनका प्रेम अगाधिया । २७ वर्षीय जम महाराज रामचंद्रको वनवास दियागया तो सीतामहारानी उनके साथही गई । जानकीजीका यह मूलमंत्र परम प्रशस्नीपहै—

४) चौ०—जहँ लगनायमेद अरुनाते । पियविनु तियाहि तरणिते ताते॥ अनुधनयाम धरणि पुरराजू । पतिविहीन सब लोक समाजू । वनवासके १३ व वर्ष महापुत्र रामचंद्र बम्बई प्रदेशान्तरगतनासिक शहरसे थोड़ी दूर गोदावरीतट पंचवटी तक में जो अत्यन्त रम्यहै कुटीरनाकरजारहै।पहोसे मा०शु०८को अवसर पाकर रावल छद्देश सीताजीको हरलेगया । रामजीने रावलको ससेन तथा सपरिवार नष्ट कर सीताजीको १०दिन १४मास अकाम रहनेसे उपरांत पुनः पाया । तदुपरांत रामजी सीतामहारानी सहित भयोण्याके राजसिंहासन पर विराजे, इसीसाळ साता माताको गर्भ रहा निचसे छष तथा कुश दोपुत्रहूये । परचात महाराज रामचंद्रने अश्वमेध यह किया और इसी अवसरपर सीता माताने देह त्यागदी । साभरज इष्टिसे देखनेपर सीताजीकी जीवनीसे दो उपदेश मिलतेहैं, एक तो यह कि

स्त्रीका भर्त्सित प्रेम करनेसे पुरुषको अनेक कष्ट सहन करने पड़ते हैं, दूषण यह कि पतिव्रता अन्य सञ्चेहितपियोंकी भांजा उल्लंघन करनेसे स्त्रीको घोर अपमानमें पड़ना होता है । यदि महाराज रामचंद्र प्रेमसे विवश हो सीताजीको अपने साथ घनको न छोड़ते और यदि सीतामहाराजी देवरकी भांजा उल्लंघन कर आश्रमसे बाहिर रावणको भिक्षा देने न निकलती तो रावण उमको बंधुकर हरलेजाता ।

सीताराम वी ए (भाषाकवि)—अयोध्या नगरीमें स० इ० १८५८ की साल छाळा मुखदेव प्रशाद श्रीवास्तव कायस्थके घर आपका जन्म हुआ । आप अंग्रेजीमें वी ए पास हैं, संस्कृतके पूण ज्ञाता हैं और भाषाकविता कच्छी करते हैं । काळिदास, भवभूति आदिके रचे हुये वीसियों काव्या तथा नाटकोंका अनुवाद आपने भाषा पद्यमें किया है ।

कविता आपकी उत्तम है और भाषा शैली पुराने ढंगकी नहीं है । खड़ीबोलीकी कविताका प्रचार करनेवाले कवियोंमें आप प्रधान हैं । बहुत दिनोंतक युक्त प्रान्तमें शिक्षा विभागके असिस्टन्ट इन्स्पेक्टर रहिनेके बाद गवर्नमेन्टने आपको डेप्युटी कलेक्टरकी ओहदेपर नियत किया है जिसपर स० इ० १९०३ तकविद्यमान हैं । अतएव आपका पेशा है कि जिससे आधीन कर्मचारियोंकी आप पर पूर्य सुखि है ।

सुकरात (Socrates)—एक यूनानी हकीमका आप मूर्ति यमानेका पेशा करवाया । सुकरातने बड़े २ महान्नी विद्वानोस विद्या पढ़ी और फिर कुछ दिनोंतक फ्रांजमें नौकरी करके कइलडाइयामें धीरता दिखाई । एक दफे मखिद्व इतिहासकार जैनोंफन घायल पड़ाया सुकरात उसको उठाकर लड़ते भिड़ते रणभूमिसे बाहर निकाल लाये । यह युद्धके समय फौजमें लड़तेये और युद्ध शान्तिहोनेपर पड़ा लिखा करतेये । बड़े क्रूरपये और इनकी पति जैन्टिप बड़ी करकशार्थी पर यह उस्से कुछभी नहीं कहितये । पश्चात् निज जन्म भूमि येवेन्समें बसकर सुकरात लड़कोंको पढ़ातेये, इनके पढ़ानेका तरीका यह था कि प्रभोत्तर करते हुये पाठकसे सुहसे प्रत्येक बातको खिद्व कराबेतेये । इनका ध्वन था कि विवेक मनुष्यको सुरेकामोसे रोकता है इसलिये विवेकसे बचना चाहिये । आवागमनको मानतेये, किसानको दुःख नहीं देतेये और सबके सहायक रहतेये । साफ काहनेवालेये और इसी कारण इनके बहुत शत्रु होगयेये । अनेक शत्रुओंने मिलकर सुकरातको यूनानी लड़कोंके विगाहने तथा मूर्तियोंकी निन्दा करने और नयामत बचानेका दोष

लगाया। राजाने प्रथम इनको ? महीनेके लिये कैद किया और पश्चात् वि-
द्विष्टाकर मरवा डाला। इनके ७ बच्चेये, यूनानी हुकीमोंमें यह बड़े चतुर गिने
जातेहैं, अफ़्जातून तथा जैनोफन इनके शिष्योंने स्वराचित ग्रंथोंमें इनके
मनोक उपदेश संग्रह कियेहैं। सुकरातके मरनेके पीछे यूनानी लोग बड़े पछ
ताये और सुकरातके शत्रु बड़े दुःखले मरे। जन्म ४६९ वर्ष पूर्व स० ई० ५०५
और मृत्यु ३९९ वर्ष पूर्व स० ई० ५०५।

सुखदेवमिश्रः (भाषाकाषि)—यह काम्यकुञ्ज ब्राह्मण कम्पिष्ठ जिहा
पटाके रहनेवालेये और बादशाह औरगजेबके दरबारमें भाते जातेये। एक
दिन बादशाहके दरबारमें बहुतसे कवीश्वर बैठे हुयेये और नगरमें किसाके
घर सरसवम गाने बजरहेये। बादशाहने कवीश्वरोंसे दरियापत् किया कि वी-
श्वरमेसे क्या शब्द निकलता है ? और कवियोंने तो अपना मतमाना बताया
परंतु सुखदेवजीने यह बोहा पद उत्तर दिया—

दो०—द्वार द्दामे नाबजत, कहत पुकार पुकार।

हरि बिखराये पशुभये, पढ़त खामबर मार न ।

यह बोहा सुन बादशाहने सुखदेवजीको इनाम दिया और कविराजकी पद
वी दी। पश्चात् सुखदेवजी दिल्लीके बड़े २ र्खसों अमीरसे मिलकर प्रतिष्ठाके
भागी हुये। दिल्लीसे छोटकर कम्पिष्ठ भाये और घड़ोले अमेठीके राजा हिम्मत
बहादुरके दरबारम जाकर आदर पाया “फामिष्ठ अलीमकाश” नामक ग्रंथ
इन्होंने औरगजेबके मंत्री फामिष्ठ अलीके नामसे बनाया। निरुन्मय ग्रंथ और
भी इन्हींके बनाये हुयेहैं—वृत्तविचार पिङ्गल, छंद विचार पिङ्गल और अष्टास
प्रकाश। वृद्धावस्थामें सुखदेवजी घरबार छोड़ गंगातट रहतेये, उसी समयका
बनाया यह पद है—

पद—इननासी, पोतनको हितकर में देश विवेक कितेहों करोड़ा।

बांध्यो रह्यो ममताकी धरारिन ज्यों बली बैठ रहे और घोड़ा।

छोड़के दीनव्यालुवी भाश अजान सोहै में कितो रंगोड़ा।

एकदिना यह छांदि हैं मोहि पही जियजान अमी में छोड़ा।

वि सं १७२८ में विद्यमान थे।

एक दूसरे सुखदेवमिश्र दौलतपुर जि० रायपुरके रहनेवाले वि० सं० १८०३
में विद्यमानथे, जिनका बनाया “रत्नाजव” नामक ग्रंथ भाषा साहित्यमें अग्रणी
है। अछोपर जि० फतेपुरके राजा भगवत राय श्रीश्रीके दरबारमें इनका
आदर होता था।

सुखदेवजी (व्यासजीकेपुत्र)—बाल्यवस्थाहमें यह वनको बड़े
गयेये। पश्चात् नारद मुनिके उपदेशसे घरको लौट भाये और व्यासजीसे

शिक्षा पाई । राजा परीक्षितको सप्ताह इन्होंने सुनायाया । बादकोइनका विवाह हुआ जिससे ४ पुत्र और १ पुत्री हुई । अंतमें संसारसे बन्धनमुक्त होकर गुरुदेवनी कैलाश पर्वत पर तप करने चले गये ।

सुषेणवैद्य—यह रावण लक्ष्मणके राजवैद्य थे। रावण सरीसे विद्वान पंडित तथा कला कौशलदिमें निपुण राजाके पदां राज्य वैद्यका पद पाना किसी साधारण पुरुषका काम नहीं था । लक्ष्मणजीके जब शक्ति घाण लगा या तो सुषेण वैद्यहीने सश्रीवनी बूटीके प्रयोगसे उनको माराम कियाया । “भामुवेंद महोदधि” नामक ग्रंथ सुषेणका कहा हुआ है । उक्त ग्रंथमें पदार्थके गुण दोषोंका अच्छा वर्णन है ।

सुदरकवि—यह ग्राम असनी जिला फतेपुरके रहनेवाले भाट वि० सं० १९३० में विद्यमान थे । “रसप्रबोध” नामक ग्रंथ इनका बनाया अच्छा है । एक सुदरकवि मेवाड़ देशके रहनेवाले दादू बेहनाके शिष्य प्रायः वि० सं० १७६१ में विद्यमान थे जिनके रचे सुंदरगीता, सुदर विद्यास, हरिबोधचिन्तामणि तथा सुदर सांख्य नामक ग्रंथ हैं ।

सुदर महा कविराय—यह ग्वालियरके रहनेवाले नागर ब्राह्मणये । मुगल सम्राट् शाहजहाँने इनको महाकविरायकी पदवी दीथी । “सुंदर भृंगार” नामक ग्रंथ इनका बनाया भाषा साहित्यमें अच्छा है । सिंहासन बत्तीसीका भाषानुवाद तथा ज्ञान समुद्र नामक ग्रंथभी इन्होंने रचे हुये हैं । वि० सं० १६८८ में विद्यमानये ।

सुदामा पांडे (श्रीकृष्णजीके सपाठी)—यह अत्यन्त रू पर बड़े सुशील, कुलीन, सन्तोषी और महात्यागी ब्राह्मण थे । सान्दीपनि गुरुकी पाठशालामें, जो ठजौनमें था, इन्होंने श्रीकृष्णजीके साथ २ शिक्षा पाईथी । परन्तु अठवार स्थापन करके बहुत दिनोंतक छद्मके पदार्थयेये, इनकी बनाई बाणसूदी प्रसिद्ध हैं । इनकी स्त्री पवित्रतापी । दरिद्रसे महादुःख पाय स्त्रीने पचादिन ठेकाठाकर इनको श्रीकृष्णजीके पास द्वारिका भेजा । द्वारिका पहुंच महाराजसे इनकी मेंट हुई, महाराज अपने बालापनके मित्रकी दीनदशा देख रोनेलगे—

क० कैले बेहाळ विवायन सों भये कंटक जाळ गढ़े पगघोये ।
 हाय महादुःख पायो सखा तुम भाये इतने किते दिन खोये ।
 देख सुदामाकी दीनदशा करुणा करके करुणामिधि रोये ।
 पानी परातयो हाय सुभो मर्हि नैननहके मळसे पगघोये ।

परचात महाराजने बड़े भादर साकारसे इनको अपने पास रखता और हुन रीतिसे विस्वकर्मा भाये निज सेवकोंको आह्लादी कि सुदामाके लिये भाकर विशाल भवन तैयार करो और अष्ट सिद्धि मय निदसे उसको भरवो । महाराजकी आज्ञा शुरत पालनकी गई कई दिन पीछे जब सुदामा अपने घरको लौटने लगे तौ महाराजके नेवामे आँसू उमैड़ भाये और मुहसे कुछ बात न निकली । रास्ते २ सुदामा अपने मनमें सोचते भातेये कि महाराजने हमको कुछ दित नहों । प्रामम पहुँच अपनी दूटी मँडैया तथा दीन ब्राह्मणीको भी म. पीया, तदौ बहुत दुखीहो इधर उधर पूँछने लगे । सुनसेही सुदामाकी ब्राह्मणी दौड़ी गयी और निजस्वामाके शरणोंमें छिपट गई तथा भादर पूर्वक उनको भीतर लेगा । सुदामा भाति विभव देख महा उदास हुये और कहने लगे कि मिये । माया बड़ी ठगनी है, संसारको इखने ठगाहै सो प्रभुने ये मांगे सुझेई । सुगम्भी शुभरात देशमें सागर तट पोरखंडर (सुदामा पुरी) के रहने वाक्य जहाँपर एक छोटेसे मंदिरमें इनकी और इनकी स्त्रीकी मूर्ति भवतक विराज मानहै ।

शुद्धोदन (सूर्यवशीनरेश)—पौत्र मतके आचार्य गौतम बुद्ध इनमें पुत्रये । कापिल वस्तु में इनकी राजधानीपी । इनसे पीछे केवल छ पाँचों तप और सूर्य वशाका राज्य खला । शि पु के छेखानुसार यह रामचंद्र महायजने ४८ पाँचों पीछे हुये और भागवतके छेखानुसार ५२ पाँचों पीछे ।

सुधाकर कुवे, ५० महामहोपाध्या—आपके पूज्य सज्जण ब्राह्मण ब्रह्मपुर जिला गोरखपुरसे बनारसमें भाबसेये । ५० सुधाकरकी संस्कृतके अपूष विद्वान होकर बड़े बुद्धिमान तथा गणित शास्त्र पारङ्गत हैं । स० ई० १८८३ में संस्कृतकाछिजबनारसमें पुस्तकालयके पदपर नियुक्त हुयेये । आज कल्ह (स० ई० १८०३) में फ्रान्सकाछिज बनारसम गणित तथा ज्योतिष शास्त्रके प्रोफेसर होकर यम ये के छात्रोंको उर्क शास्त्रीकी शिक्षा देते हैं । स० ई० १८८७ में महामहोपाध्यायकी उपाधि अपार विद्याक पुरस्कारमें बृटिश गवम मेन्टेने आपकी प्रदानकी है । आप हिंदी तथा संस्कृतमें अनेक पुस्तकोंके रचयिता हैं और अग्रजी, फार्सी इत्यादि अन्य देशीय भाषाओंके भी अच्छे ज्ञाताहैं । पुराने धर्मके लोगहैं और बनारस की घनी वस्तामें रहना पसन्द न कर बदनानदीपार एक गाममें रहते हैं । काशी नरेशकी सभामें आपका साकार होताहै । मिलने वालोंके चित्तमें आपकी तरफसे पूज्य बुद्धि उत्पन्न होता है ।

सुबन्धु (वासुध दत्ताके रचयिता)—पह भाख पीछत बजैन नरेश खिजादित्य प्रतापशौलके दरबारम स० ई० की छठी शताब्दीके उत्तमजमें

वियमान था । ब्राह्मणके घर इसका जन्म हुआ था, कारभरिमें इसने शिक्षा पाई थी, ५० मनोरथ इसका गुरु था और ५० असङ्ग इसका भाई था । शिखा वित्तके द्बारमें वैदिक मत्तानुगामी पदितोंने इसको परास्त किया । पश्चात् यह मगध देशको चला गया और नाळन्द देशके विद्यालयमें अध्यापक होगया । अन्तमें मैसालमें जाकर परलोक गामो हुआ ।

सुवशाशुक्ल (भाषाकवि)—विगइपुर जि० उन्नावके रहनेवाले ब्राह्मण थे अमेठी नरेश उमरावासिंह बन्धलगोत्रीके द्बारमें रहकर इन्होंने अमरकोष, रसतराङ्गिणी, तथा रसमञ्जरीका अनुवाद भाषापरधमें किया था और पादकों ओझके राजा सुवशासिंहके द्बारमें जाय “विद्वन्मोद तरङ्गिणी” के रचनेमें उनकी सहायता की थी । वि० सं० १८३४ में वियमान थे ।

सुन्वासिंह—देशी शोधर कवि

सुमद्रा—यह वसुदेवजीकी बेटी होकर श्रीकृष्णजीकी बहिन थी और अर्जुनको विवाही थी । अमिमन्त्र इसके उदरसे जन्मे थे जिनके पुत्र परीक्षित हुए ।

सुमन्त्र—यह महाराज दशरथके ८ मन्त्रियोंमेंसे मुख्य थे । दशरथजीके बाद रामचन्द्र महाराजके समयमें भी मन्त्रीका पद इन्होंने बहुत दिनोंतक भोगा था । पारसीकीय रामायणके लेखानुसार यह बड़े व्यवहार दक्ष विद्या विनय सम्पन्न, अनुचित कार्य करनेमें लज्जावान, नीतिमें निपुण, अकरणीय काम करनेसे दूर, लक्ष्मीवान, महाबुद्धि, अति पराक्रमी, कीर्तिकारी, राजकाजमें सावधान, भाषाकारी, तेजस्वी पशुस्वी, क्षमाधारी और श्रोत्र, काम, अर्थके लिये भी झूठ नहीं बोलने वाले थे । इनको सब धर्म विदित था, बुद्धिबलसे मवेश्यमें टिके हुए लोगोंके मनकी बात भी जानते थे, अपना पराया नहीं खमझते थे, विश्वासनीय दूतोंके द्वारा स्वामिण्य करके कार्य करते थे सुहृदपतामें परीक्षित, अनुचित कार्यपर पुत्रको भी दण्ड देनेवाले, सजाना इकहा करनेमें निपुण सेनाको वश करनेमें क्षम, शत्रुको भी निरपराध दण्ड नहीं देनेवाले और सहाहसे रहने वाले थे । धीरे शत्रुओंके व्रमन करनेमें उत्साह युक्त, पवित्र चित्त मज्जरक्षक, सदाचारी, मनमाना काम नहीं करते वाले तथा अपनेसे अधिक बुद्धिमानीसे सहाह लेने वाले थे । सुन्दर वस्त्र धारण करने वाले, सुन्दर वेष बनाये रहनेवाले, मिछाप तथा बिगाड़ करनेमें क्षम, सत्य रज सम सीनों गुण समय २ पर धारण करने वाले, राजकाजकी सम्मति को शुभ रखनेवाले सूक्ष्म विचारमें धारण और सदा सवधे मिपचचन न द सुसकी सहित बोलने वाले थे ।

सुमन्त्र (सूर्यवंशके अन्तिम नरेश) - यह गौतम बुद्धके पिता
 राजा शुद्धोदनसे छ'पोंकी पीछे हुये। मंत्री इनको राजरहित करके गद्दीपर बैठा
 सुरेन्द्रनाथ घनजी (अगत विख्यात वक्ता) - कलकत्तेके मास्टर
 डाक्टर बाबू दुर्गाचरण बन्धोपाध्यायके घर स ई १८४९में आपका जन्म हुआ।
 कलकत्ता विश्वविद्यालयकी भी ये की परीक्षा उत्तीर्ण करनेके पश्चात् छिविह
 विषयकी परीक्षा पास करने आप इन्डिस्ट्रिजल एजुकेशन बोर्डके
 बड़ी कोशिशसे आपको सिविल इंजीनियरिंग मजिस्ट्रेटरी मिली क्योंकि आपकी बुद्धि
 ज्यादा होगयी। इस पदपर आप बहुत दिनों तक नहीं रहे वष ५०६में
 मासिककी पेन्शनपर आप मौकरीके बन्दनसे मुक्त होगये। पश्चात् आपने
 "बङ्गाळी" नामक समाचार पत्र अंग्रेजीमें जारी किया जो अब वैज्ञानिक प्रकाशित
 होता है। उन्हीं दिनों प्रमथराय एक मिथ्या आन्डोलन-हार्डकोर्टके लजोंके खिलाफ
 आपके पत्रमें उपायिभक्तके अपराधमें हार्डकोर्टने आपको कैद कर दिया। जिसके
 दिनों सुरेन्द्रबाबू जेलमें रहे बंगालियोंने शोक सूचक कांठे धरने पहिने और
 बन्दा कर्के प्रसिद्ध बैरिस्टर बाबू छालमोहन घोषको अपील करने इन्डिस्ट्रिजल
 बोर्डके घुटनेपर चार घोंकी गाड़ीमें बिठलाकर । छाँसों - बंगाली ब्राह्मण
 प्वाणिके साथ फूल बरसाते हुये ठमको मकान पर लाये तबहीसे सुरेन्द्र बाबू
 कृतकृत्य होकर स्वदेश हितका बीजा उठाया। आपमें व्याख्यान देनेकी बहुत
 शक्ति है। आप विना तय्यारहुये देन 'वक्तुपर' सूचना पाकर बड़े २ नगरीर
 व्याख्यान, प्रभाषणाळी पुस्तकोंके समझ, देनेको सहज स्वभावसे उठ खड़े होते
 हैं। व्याख्यान सुनकर विषयहो विरोधियोंको भी आपका अनुयायी बनना पड़
 ता है। आप हिन्दुस्थानी कांग्रेसके महा सहायकों तथा मुखियाओंमें से हैं। वी
 बूके कांग्रेसके प्रेसीडेन्ट भी हो चुके हैं और कई दफे कांग्रेसकी तरफसे इन्डिस्ट्रिजल
 जाकर भारतवाशियोंकी दीन दशापर व्याख्यान देकर वहाँके बड़े २ लोगोंकी
 सहायताके हैं। आप मधमसेन्टकी व्यवस्थापक सभाके आनरेबिल मेम्बर हैं।
 रिपब्लिकन कलकत्ताक कोलमेमें भी आपने बहुत कुछ उद्योग किया था।
 सफल जीवन ऐसे महानुभावोंका।

सुरेन्द्रमोहन ठाकुर (राजा, सर सुरेन्द्रमोहन ठाकुर) - आप हरि
 कुमार ठाकुरके पुत्र हैं, महाराजा जतेंद्रमोहन ठाकुर आपके ज्येष्ठ भ्राता हैं।
 राजा सुरेन्द्रमोहनने श्रमोदविद्याके सञ्चारके छिये बहुत कुछ प्रयत्न किया है।
 किन्तुनेही श्रेष्ठ वक्त विषयमें रहे हैं और वी म्बुजिक स्कूल (मान विद्यालय)

आपने सबसे सर्वसाधारणके हितार्थ स्थापन किये हैं। कई बाजे भी आपने नये बनाये हैं। संस्कृत, हिंदी, बंगला तथा अंग्रेजीके आप पूण विद्वान हैं और मिश्र विषयापर प्राय १०० पुस्तकोंके रचयिता हैं। मृदंग भजरी, हारमोनियम सूत्र, भारतनाट्यरहस्य, मुक्तावली नाटक (बगला) और मालविकाग्नि मित्र नाटकका बंगालुवाद इत्यादि आपहीके विरचित हैं। निज पूर्वजोंके धर्म पर आरुढ़ रहकर आप बड़े उदारचित्त, धानी तथा देशहितैषी हैं। ब्रिटिश गवर्नमेंटने आपकी काररवाइयों पर प्रसन्न होकर नाइट (Knight) की आई ई तथा यमा बहादुरकी भसाधारण उपाधियें आपको प्रदानकी हैं।

फिलोसोफिकयाके विश्वविद्यालयने आपको डाक्टर आफ् म्युजिककी उपाधि दीहै जिसको ब्रिटिश गवर्नमेंटने भी स्वीकार कियाहै। नेपाल द्वारासे आपने सम्मानसाहित सङ्गीत-शिल्पविधासागर तथा भारत सङ्गीत नैयापकके खिताब प्राप्त कियेहैं।

सङ्गीतशास्त्रमें आज दिन आप सरीखा कोई दूसरा नहीं है और शिल्पशास्त्रमें भी पूर्ण विद्वता आपको प्राप्तहै। इसी कारण इटली, आस्ट्रिया, स्वीडनी, डेन्मार्क, स्वीडेन, फ्रांस, मांठीनीगरो, हवाईनदीप, पुर्त गाल, हाँडैड, इरान, स्पामदीप, चीन तथा बोलीवियाके राजा महाराजाओंमें भी आपकी उपाधियें तथा पदक सम्मानार्थ प्रदानकियेहैं। यूरोप, अमेरिका, अफरीका, आस्ट्रेलिया तथा एशियाकी अनेक बड़ीसभामोंके आप प्रधान अथवा सभा सदस्यहैं। बंगालके आठ जिलोंमें आपकी बड़ी भारी जिर्मादगारी है, पछासीकी रणभूमि तथा हिन्दुओंका तीर्थ गंगासागर आपहीकी जर्मादाराय हैं। आप कलकत्ता भाड़े देशविद्यालयोंके भी सभासदहैं और कलकत्तेमें आनरेरी मैजिस्ट्रेट, मैजिस्ट्रेट आफ् पुब्लिस तथा जस्टिस आफ् पीसके पद पाये हुयेहैं। आप स. ई १८४० में जमे, आपके ज्येष्ठ पुत्र कुंवर प्रमोदकुमार ठाकुरहैं।

सुरेशचन्द्र विस्वास लफ्टिनेन्ट—एक बंगाली कायम्पके घर स इ १८६१ की साल जिला नदियामें जन्मे। कुछ बड़े होकर घरसे भ्रमसत्र होकर निकलगये और ईसाई होकर वर्मा तथा मदरासमें आजीवकाकी तलाशमें घूमते फिरे। कुछदिनों बाद एक जहाजपर नौकरी करके इङ्ग्लैंडको चले गये और वहां पहुंचकर कषाईकी दुकान की। इङ्ग्लैंडसे जर्मनीको गये और वहां सिहालयमें नौकरीकरली तथा एक जर्मन छेडीसे विवाह करलिया। स इ-१८८५ में जर्मनीसे मैक्सिको (अमेरिका) को पधारे और वहांसे वानिलम

जाकर, बादशाही फौजम भरतीहोगये । स ई १८२३ म आपने धारीकी लडाईमें, षड़ी धीरताके कामकिये और छपिटेनेन्टके पदपर तरफिपाई । जब आप रंगून (बर्मा) मेंथे तौ एक मछले मकानमेंसे एक लडकीको निकाल आपने निज धीरताका परिचय दियाया ।

आपही एक ऐसे भारतवासी हैं जिन्होंने दूसरी विलायतकी फौजमें ऐसा सख पद पाकर बुरूप तथा अमेरिका वासियों पर हुकूमत कीहै । स ई १९०३ में विद्यमानहैं ।

सुरेश्वराचार्य-देखो मण्डन मिश्र ।

सुलेमान (Solomon)-इसराईल जातिके पहिले, बादशाह इसरत, वाउद इनके बाप थे । निज पिताके बाद स ई० से १०१५ वर्ष पूर्व तख्तपर बैठे यह बड़े धीर तथा चतुर थे, इसराईल जातिकी उन्नति इनके समयमें बहुत कुछ हुई । इनकी बनाई कदावर्षे सया गीत प्रसिद्ध है देव तथा परी इनके वशमें धीरा राजधानी इनकी जुरुखलममें थी । शहिर वैतुल मुकदस इन्हेंकि समयमें बनाया गया । स ई से १०३३ वर्ष पहिले जन्मे, स. ई से ९७५ वर्ष पहिले मर ।

सुश्रुत (आयुर्वेदीय सुश्रुत साहिताके रचयिता)-धन्वन्तरि प्रणीत आयुर्वेदके आश्रय पर इन्होंने अपने मामकी संहिता रची जो सब क्रियाओंकी यथोचित प्रकाशक, सब मान्य और प्रामाणिक है । चरक, सुत तथा धाम्बह ऋषियाकी बनाई संहितायें बृहस्पती कहिजाती हैं और वैद्यक ग्रंथोंमें सबसे प्राचीन हैं । इस बातके प्रमाण मिलते हैं कि चरक संहिताके पीछे सुश्रुत संहिता बनी । सुश्रुत संहिताके प्रथम टीकाकार जैम्यट उपाध्याय विस की १२ वीं शताब्दीमें हुये । बाबू रमेशचंद्र दत्त जी यस. ने स्वर्चित प्राचीन भारतके इतिहासम निर्णय किया है कि सुश्रुत स ई की छठी शताब्दीमें हुये ।

सूत-(उग्रभयासूत)-भ्यास शिष्यछोमहर्षण इनके बापथे। इन्होंने ब्यासकृत पुराण संहितामें अपने प्रसोत्तर मिठाकर १८ पुराण पुष्यक ९ रचे (देखो भ्यास महर्षि) । यह नैमिषारण्यमें रहकर पुराणोंकी तथा शौचा करतेथे । एक वृके बलरामजी नैमिषारण्यमें गये, सब ऋषि उनको देख उठ खड़े हुये लेकिन सूतजी नहीं उठे निदान बलरामजीने क्रोधमें आकर उनको धर्षी धम किया (स्कंध पु सेतुबधखण्ड १९ अध्याय) । पत्रपु० सृष्टिसण्ड० १ अर्थापमें लिखाहै कि जब उग्रभयासूत निजपिता छोमहर्षणकी आज्ञानुसार नैमिषारण्यमें ऋषियोंके धर्म विषयक संशय मिटाने गये तौ ऋषियोंने उनसे पुराणकी कथा पूछी । सूत यह सुन प्रसन्नहुये और कहने लगे कि " सूतका यही धर्म है कि देवता, ऋषि

और तेजस्वी राजाओंकी उत्पत्ति, यश, वश आदिका घणन करे और उन लोगकी प्रशंसा करसारहे तथा इतिहास पुराण बाँचे क्योंकि वेद पढ़ने पढ़ानेका सूतको अधिकार नहीं है" । मनुस्मृति १० वें अध्यायमें लिखाहै कि क्षत्रियके द्वारा ब्राह्मणकी गर्भसे जो पुत्र उत्पन्नहो वह सूत जातिका होताहै । नैमियारण्य में एक मंदिरमें बड़े सिंहासनपर सूतजीकी गद्दी भवतक है ।

सूद्रक (मृच्छकटिकनाटकका कर्ता)—यह किसी देशका राजा था ।
वि सं की पहिली शताब्दीमें हुआ ।

सूरदास (भाषाकवि)—व्यापूनी इतिहासकार लिखताहै कि सूरदास के बाप बाबा रामदास लखनऊसे भाकर गऊ घाटपर, जो आगरेसे ० कोस मथुराकी सड़कपरहै, बसे थे । हिंदी, संस्कृत, फारसी तथा सङ्गीतशास्त्र सूरदासने अपने बापसे पढ़े थे । सूरदासके छ' और भाई थे जो आगरेकी लड़ाईमें मारेगयेये । मक्तमालके लेखातुसार यह सूरध्वज अथवा सारस्वत ब्रह्मण्ये, परंतु इनके रवेष्टकूट पदोंकी प्रस्तावनासे ज्ञात होताहै कि यह कवि चंद्रदाईके वश में होकर भाटये । सूरदासजी ज'माथये भाषा कविता उत्तम करते थे और सङ्गीत शास्त्रके मर्मोंको खूब समझतेथे । बादशाह अकबरने उनकी भरती अपने दर्याके नगरनोंमें कीथी।मसिद्ध सङ्गीतज्ञ वानखेनसे इनकी मैथीपी (देखोवानखेन) बहुतदिनोंतक शाही दरबारमें रहिनेके पीछे सूरदास अजको चले आये और महामधु बल्लभाचार्यके शिष्य हो विष्णुपद बना २ कर गातेहुये विचरनेलगे । पदोंका गूढ आशय समझ लोग इनके पीछे फिर २ कर लिखनेलगे और इसतरह सवालक्ष पदोंका सूरसागर नामक ग्रंथ बन गया । कविराजगंगने सूरसागरके विषयमें लिखाहै कि—

श्री०—पढ़न प्रबध सूरजननागर । बांध्योअनहुसेसु भवसागर ।

चिनु प्रयास कालिकाल मंझार । तेहि प्रसाद उतरत सख पार ॥

गो० विद्वलनाथजीने सूरदासकी गणना अजके अष्टछापम धीयी (देखो विद्वलनाथ) । यद्यपि सूरजी चबुहीनेये लोकित उनके ज्ञानचक्षु सुळे हुयेये । एकदके दरबार अकबरीमें बैठे हुये सूरजी अपनी आदतके विरुद्ध ईस पदे बादशाहने ईसनेका कारण पूछा । उत्तरमें सूरजीने कहा कि इसवक्त भातका अट्टका उतारते हुये जगन्नाथजीके रसोइयेकी धोती सुलगाई जिस्से थोड़ी देरके लिये वह अकबरनीय कठिनार्थम पढ़गया, यह देख मुझे हँसी आगई । यह सुन बादशाहने हुक्म दियाकि पुरी (ठड़ीसा) के पंचनवीससे दर्यापत किया जाय कि जगन्नाथजीके मंदिरमें इसवक्त क्या हुआ । पंचनवासने ठीक सूरदासजी की कही हुई रसोइयेकी पुर्घटनालिखी । सूरदास कमी ईसते न थे भीर जब

कभी हैंसतेये तो उसमें कुछ रहस्य होताया इसीछिये हुक्म था कि उनके हैंसनेकी खबर बादशाह अकबरको पुरतकी जापाकरे। कहते हैं कि एक दिन बादशाह अकबरने अपनी किसी दासीके चाबुकमारा, दासी सिर झुकाय, हायजोड़, धुप खड़ी होरही, सूरदासजी ठीक उसीवक्त अपने मकानपर बैठे हुये खिलखिलाकर हैंसपडे। पचैनवीस द्वारा जब यह खबर बादशाह अकबरको हुई तो भाग्रह पूर्वक हैंसनेका कारण सूरदाससे पूछाया। सूरजीने कहा कि एकदफे श्रीकृष्णचंद्रने रसवादमें अपनी किसीदासीके फूझमाराया, मिससे उसने ७ दिनतक मान किया था, भाग उसीदासीके आपने चाबुक मारा परंतु वह कुछभी मान नकरसकी, यह देख मुझको हैंसी आई। अकबरने कहा यह बात कैसे सखी जान पड़े। सूरजीने उत्तर दिया कि अपनी सबदासियोंको क्रमशः मेरे सामने होकर निकालिये, जो दासी सामने आतीथी सूरजी उसकी मुनाकर कहतेये कि "मुजरी सखी हेरत शाहनई" और तौ सब सुनती हुई खलीगई लेकिन जब चाबुकसे मारी हुई दासी निकली तौ उसने रोकर कहाकि "उद्व तुमसो पहां गोपाळ कहां" यह सुनतेही सूरदासको मूर्च्छा भागई और वह दासी पछाड़खाकर गिरी और मरगई। सूरदासके बनाये पद-ज्ञान तथा भक्तिसे भरपूरहैं। स ई १४८३ में जन्मे और स ई १५११ में गोकुळ (मथुरा) में परमधामको सिधारे। रीर्धनेश महापना रघुपना सिंहदेव इनकी कविताके विषयमें लिखते हैं-

क० कविकुळकोक कजपाइके किरिनकाभ्य, विकसे चिनोदित हैनेरे और दूरके सुखिगो भग्नान पक मंदभो मयंक मोह, विषय विकार अन्धकार मिटेकरके हरिकी विमुक्तताई रजनी पराई गई, मूकभये कुकवि उलूक रसमूकके छायो तेज पुहुमिमें रघुपन करद्वारे, जन जीव मूरसूर उद्यम होत सूरके।

सूरदास मदन मोहन (मदन मोहन सूर)—यह संहीलेके पाने वाले कायस्य बहिरापधमें बादशाह अकबरकी तरफसे पदाधिकारीये। इन्होंने एक दफे मालगुजारीका ३११००० ६० खासु सेवामें छगाविया और भाग्यके मोरे भागगये और बादशाह अकबरके पास यह पद छिस्तकर भेज दिया।

पद-तीनछास तेरह हजार सबसाधुन मिलगटके।

सूरदास मदन मोहन भाधीरातमें सटके।

अकबरने बुंदवाकर इनको भ्रजवास करनेके छिये भेजदिया। यह मन्ने नहीं थे, भापा कविता अच्छी करतेये, जिनें पदोंमें सूरदास मदन मोहनकी छाने यह इन्हेंक बनाये हुयेहैं।

सूर (विल्वमंगलसूर)—यह दक्षिण देशस्य ब्राह्मण, महामनु ब्रह्मके चार्यके दीक्षा गुरुये। यह बड़े पंडित थे। "कृष्णकर्णामृत" तथा "गोविंद मा-

घ" आदि सस्कृत ग्रंथ इनके रचेहुये हैं । भक्तमालमें लिखा है कि यह चित्तामणि वेत्सापर आसक्तये, एक दिन अर्द्धरात्रिके समय गोस्वामी तुलसीदासकीसी बुपंट्यापें झेककर नदीपार सखे मिलनेको गये छेकिन सखसे तिरस्कृतहो बेरागीबन घृदावन चले भाये । रास्तेमें पुन' किसी सुन्दरीको देख मोहित हुये और आँसोको सब सपाधियोंका कारण समझ सुईयें चुभोकर फोड़लिया । बहुत दिनों घृदावनमें रहनेके उपरांत इनका देहांत हुआ ।

सूर्य (सूर्यवंशीनरेशोंके मूल पुरुष)—यह करपपजीके पुत्र तथा मरीचिके पौत्रये । इनके पुत्र वैवस्वत मनुने राज्यस्थापन किया और इनके पौत्र इक्ष्वाकुने शहर अयोध्याको बसा कर अपनी राजधानी बनाया. महाराज राम चंद्र इनकी ३८वीं पीढीमें हुये । सम्भवत' सूर्य सिद्धात नामक ज्योतिष ग्रंथ जिसके रचयिताका कुल पतानहीं लगता इहाँका बनाया हुआहो । वाल्मीकीय रामायणमें लेख है कि रामचंद्रके विवाहके समय राजपुरोहित महर्षिवशिष्ठने निम्नस्य क्रमसे दशरथजीका गोत्रोच्चारण कियाया -

ब्रह्मा, मरीचि, करपप, सूर्य, वैवस्वत मनु, इक्ष्वाकु, कुक्षि, विकुक्षि, वाण, अनरण्य, पृथु, विश्वीक, धु-धुमार, युवनारथ, मान्धाता, सुसन्धि, सुवलन्धि, भरत, अश्विन, उगर, असमंजस, अंशुमान, दिक्षीप, भागीरथ, ककुत्स्थ, रघु, कल्माषपाद, शशरथ, सुदर्शन, अभिवर्ण, शीम्रग, मरु, प्रशमुक, अम्बरीष, महुष, ययाति, माभाग, अन्न, दशरथ और रामचंद्र ।

भागवत तथा शि.पु में दिया हुआ वंशक्रम उपरोक्त वंश क्रमस्य अनेक अर्थोंमें विश्व है लेकिन सूर्यवंशके विषयमें वाल्मीकीय रामायणके लेख अधिक विरवाचनीय हैं । शि. पु के लेखानुसार महाराज रामचंद्रके बाद ५४ राजा-ओंने और भागवतके लेखानुसार ५८ राजाओंने राज्य किया । सुमन्त सूर्य वंशका अन्तिम राजा हुआ ।

सेनापति (भाषाकवि) इन्होंने संपास धारणकरके सब उच्च घृन्दावनमें विताई । काम्यरूपद्रुम तथा पट क्रतुवर्णन इनके रचे ग्रंथ आद्युत्तम हैं वि सं १६८० में विद्यमानये ।

सेनभक्त—यह आतिके नाई ये, गुरूरामानन्दके शिष्य थे रीवाँनरेशके यहाँ नापितकर्म करतेये जब राजाको इनका महारथ विदित हुआ तो वह इनका शिष्य होगया । इनका एक पन्थ प्रचलित है और इनकी कविता सिक्खाके ग्रंथ साहबमें संगृहीत है ।

सेवाजी (मरहटा राज्यके सस्थापक)—इनके बाप शाहजी भोंसले महाराजाधिराजके वंशमें थे और बीजापुरके नवाबके यहां किसी कचे पदपर नौकरथे। स ई १६२७ में जीजाबादके गर्भसे सिवाजीका जन्म हुआ, इनके जन्मसे ३ वर्ष पीछे शाहजीने मुक्ताबाई नामक मरठिनसे विवाह किया और जीजाबाई तथा सेवाजीको पूनाकी जागीरपर भेजदिया और दादाजी करण देव नामक एक कार्पेदक्ष तथा स्वामीभक्त बृद्ध ब्राह्मणको उनकी रखवाली तथा जागीरके प्रबंधके लिये साधकर दिया। दादाजीने पूनामें पहुंच एक मद्रिक बनवाया और सेवाजीको युद्ध विद्याकी शिक्षादी। मासल पर्वतवासियोंपर जो बड़े उद्योगी, कामकार्मी, साहसी, परिश्रमी तथा लड़ाकू होतेथे, सेवाजीका अत्यंत विश्वास और स्नेहथा।

मासलियोंके छड़कोंके साथ शिकार करते हुये दूर २ घूमकर सेवाजी पहलदड़ियों तथा झाड़ियोंकी राहघाटसे सूष परचित होगयथे। धीरे २ सिवाजीके साथियाका जमावें बढ़ता गया, जिनकी एक छोटीसी पलटन बनाकर स ई १६४६ में मार प्रवेशस्थ तोरनका किल्ला मो एक अगम्य बिकटपहाड़ परथा उगहोंने जीत लिया और इसीकिल्लेकी मरम्मत घरघाते धुक बहुतसा गढ़ा हुआ धनभी पाया। स ई १६४७ में दादाजीने मरते समय निम्नस्थ बातें देशशिवाजीको किये—

शय्यापरसे उठकर जगदीश्वरका स्मरण किया करना, सुख दुःखमें एक साथ रहना, क्रोध और मोहर्म भाकर पक्षपात न करना, एक पक्षकी बात सुनकर न्याय न करना, सत्यको कर्मी न छोड़ना, अपने विभवपर अमिमान न करना, विचार करते समय हठ न करना, खुशामादियोंकी बातोंमें न भ्राना, भोजन तथा वस्त्रमें आहम्बर न करना, यथार्थ वादी पंडितोंको खातिर करना, नशा न खाना परस्त्रीगमन न करना, भाहार तथा निद्राको यथाशक्ति घटाना, अपना काम घूसपर न छोड़ना, मातृहिन्योंको एक दम नौकरोंसे न छुड़ाना जहांतक होसके काम करना, नौकरोंके कतबके भेदसे बर्ताव करना, आपत्तिके समय भी धर्मविरुद्ध आचरण न करना और न शिष्टाचारसे बाहिर होना और विचार पूरा होजाने से पहिले गुप्त रहना।

स ई १६४८ में सेवाजीने रामगढ़का किल्ला बनवाया और बीजापुर सरकारकी कई गदियें छीनकर तथा २० लाख रु लूटकर अपना अधिकार बढ़ाया। यह देख पुरपुरे नामक जागीरदारकी सहायतासे बीजापुरसरकारने शाहजीको कैद कर लिया। इस हासलमें शाहजीने निजपुत्र सेवाजीको लिखा कि “पुरपुरेने मेरे साथ विश्वासपात किया है, मुन्दापी सञ्जीवीरता इसीमें है

कि इस मुटले तुम अपने पिताका बड़काछो" । जबतक शाहजी कैदमें रहे तब तक सेवामी शान्तिसे रहे परंतु बादकी उन्होंने फिर अपनी कार्रवाई छुड़करवी। छाचार होकर धीमापुर सकारने सेनापति अफजलखानको सेवामीके दमनकर्णार्थ भेजा । सेवामीने भीठी २ घाँते घनाकर अफजलखानसे एकान्तमें मुलाका-तकी उद्विगई, कब सेवामी निकट पहुँचे तो अफजलखानने उनकी गर्दनपर तलवार चलाइ परंतु वे कपड़ोंके भीतर फौलादी कवच पहिने हुयेये इसलिये कुछ असर न हुआ और बड़ी कुर्तीके साथ उन्होंने बयतखेले अफजलकी भीतें खाचहाळीं । दोड़ो २ मघई पर सेवामीके खुने हुये सिपाही झाड़ियोंमेंसे निकल अफजलकी फौज पर दृष्टपदे और पलक मारतेमें उसको भगादिया । पश्चात् सेवामीने कोकन प्रदेश हा अधिकांश तथा धीजापुर सकारके अभेद्युर्ग वनेछागढको जीतकर अपने अपुष कौशल तथा असीमसाहसका परिचय दिया । धीजापुरके मघाब अली आदिलशाहने यह देख स्वयम् सेवामीके दमन करनेके लिये चढ़ाईकी । लड़ाई दो वर्षतकरही और अतिम लाभका भाग सेवामीकी तरफरहा । इन्हीं दिना अघसर पाकर सेवामी अपने पिताके शत्रु घुरपुरेपर बढघाये और उसको सपरिवार मारकर नष्टकरदिया । शाहजी यह समाखार पाप निजपुत्रको देखनेके लिये धरकंठित हो खल पड़े । पिताका भागमन सुन सेवामी १२ मीलतक भगवा-नी लेने मङ्गे पैरोगये, पिताके देखते ही पृथ्वीपरसाष्टांग दंडवत् कर्णार्थ छेद गये दोनों और प्रेमाश्रु बहिने छगे, कउगद्गदहोगये, पिताने सपूतको गळेसे लगा लिया, पुत्रने बड़े भागत स्वागतसे पिताको छाकर गद्दीपर बिठलाया और आप उनकी जूठी चढाकर सड़ेरदे । कुछ दिनबाद् अर्थात् प्रसन्नतापूर्वक शाहजी अपने स्थानको गये । इस समय सेवामीके पास १३० मीलछन्दा, १०० मीलचौ-दा राज्य था और सेनामें ५० हजार पैदल तथा ७ हजार सवारये । कुछ दिनबाद् न वाष धीजापुरने अपने रणकुशल दृषशी सेनापतिको सेवामीके दमन करनेके लिये भेजा लेकिन सेवामीकी सतुराईके भागे उसकी वीरता कुछ काम नहीं करसकी । इन्हीं दिनों औरंगजेब अपने बड़े बापको कैद करके तख्तपर बैठा, सेवामीने देशकालके विचारसे दर्बार धीजापुरसे मुछह करली और मुगलोंके राज्यपर हायककना आरंभकिया । औरंगजेबने दक्षिणके सूबेदार सापरताखानको मुकाब छेके लिये भेजासापरताखानने प्रबल दलके साथ पहुँचतेही पूनापर दखलकर लिया और जिसमहिद्धमें सेवामीकी बाल्यावस्था स्पतीत हुईथी उसमें रहिनेलगा और बड़ी सावधानीके साथ महिद्ध तथा नगरकी रक्षामें सेना नियत करके यह घोपणा प्रखारकी कि माझा बिना कोई इधियारबंद मरहटा नगरमें न आवे, सेवामी एक दिन अघेरी रातमें आधीरातसे समय २५ सिपाहियों सहित एक बरातके साथ नगरमें घुसगये और मकानम घुसकर सापरताखानके सब साधियोंका काम समाम

कर। सिंहगढ़को छोट भाये, केवल सापस्ताखों सिद्धकीको राह भागबचा। मात होतेही मुगलोंकी सेनाने सिंहगढ़पर घटाईकी, सेवाजीने किलेपरसे तोपके गोले बरसाये जिससे अधिकांश मुगलसैनिक मारेगये और बाकी भागबचे स ई १६५६ में औरंगजेबने धोकेसे सेवाजीको अपने दरबारमें बुल्लकर नजर बन्दूकर लिया परंतु वह बड़ी चालाकीसे एकटोकरेमें बैठकर निकलगये और साधुके वेषमें अपनी राजधानीमें जा पहुँचे। स ई १६६८ में सेवाजीने शहिर सूरतको छूटा और बहुत धिभय लेकर रायगढको छोट भाये। इसी साल शाह जीके देहांत होनेसे बंगलौर, भर्ती, तम्पोर, पोर्टोनोवो जागीरमें पाये। फिर सेवाजीने राजाका खिताब धारण किया, अपने नामका सिक्का ठटवाया, शिवशक जारीकिया, सीनेका तुळा चढाया और रायगढमें नारायणका एक बड़ाभारी मंदिर बनवाया। स.ई १६७५ में गुजरात तथा करनाटक विजय किये और स.ई १६७९ में औरंगजेबके मुकाबलेमें मवाबवीजापुरको मद्द देकर कुम्भा तथा हुंगमद्राके बीचका मुल्क जिसको रायपूर दोभावा कहतेहैं पाया और दक्षिणमें मैसोरसक सब देश जीतलिया। औरंगजेबको अफगानिस्तानके साथ विग्रहमें लगा देख कौंकन प्रवेश तथा दोनों घाटोंपरभी शिवाजीने अपना पूरा अधिकार जमालिया था। धीमापुर, गोलकंडा, खानदेश इत्यादिके मुकतानोंने बरा, स्त होकर उनको शीघ्र देना स्वीकार किया था। औरंगजेबने भी बड़ी भारी जागिर तथा राजाका खिताब उनको दिया था। अंत समयतक उन्होंने मुगलोंके ३७ और किले जीते। कहतेहैंकि-

दो०-औरंगा पछिताय मन, करतो जतन अनेक।

शिवा छेइगो दुर्ग सब, कोजाने निश एक।

स ई १६८० में शिवाजी ज्वरसे पीडित होकर परम धामको सिधारे, शत्रुओंको भी यह समाचार पाय हुआ हुआ, औरंगजेबने स्वयं कहा कि "यद्यपि सेवाजी बड़ा वीर था, इसने मेरे मुकाबिलेमें एक स्वतंत्र राज्यस्थापन कर्के अपनी देके रखी, मेरी फौज निरन्तर १९ वर्षतक लड़कर उसका कुछ न करसकी"। सेवाजीकी विरक्षण राजनीति तथा अशौकिकधीरताने मुसलमानोंके खूबही मान मर्दित कियेये। "मिर्जपुरहै अब ना मिलै, तारों कहा विषाय" की छत्तिके अनुसार सेवाजी मित्य प्रति अपना अधिकार बढ़ातेये और औरंगजेब कुछ कर सक न होकर उल्टी उनकी खातिरकरताया। माता पिताके देहांत होनेपर सेवाजी बाळकोंकी तरह अधीर होगयेये, म्रियपत्नी सईबाईके वियोगकाभी दुःख उनको उठाना पड़ाथा, कपूत सम्भाभिनेभी उनको दुःखही दियाथा परंतु वह बड़े धीर पुरुषये अंत समय तक अपना काम दृढ़ता पूर्वक करते रहे। उनकी सेनाका प्रबन्ध प्रशंसनीयथा, प्रजागणकी उनके राज्यमें सुख देन था, शेर ब-

करी एक घाट पानी पीतेये, धर्तीकी उपजमेंसे ३ भाग किसानको और दो भाग सरकारको जातेये, बड़े ३ पर्वोंका अधिकारी ब्राह्मणोंहीको घनापापा, नवराम्रिपर महिषमर्दिनी दुर्गाका पूजन बड़े समारोहसे करतेये और विजय व्रशमीके दिन फौजकी हाजरीछेते तथा जहां कहीं खदाई करनी होती उठी दिन करते । भूषण कविने महाराज सेवाजीके वृत्तांतमें शिवराज भूषण ग्रंथ रचकर बहुत कुछ पापापा (देखो भूषण) । निम्नस्य कवित्त शिवराज भूषणसे उद्धृत करतेहैं—

क० दक्षिणजीत छियो दलकेबल पश्चिमजीतके चामर राछपो ।

रूपगुमान हरयो गुजरातको सूरतको रस चूसके चाछपो ।

पजन पेछ म्लेक्षमले भूषण सोई बछपो जोदीन है भाण्यो ।

सौरगहै शिवराजबली नित नौरंगमें रंग एक नराछपो ।

महाराजा स्वताराके यहां अवतक सेवाजीके भवानी नामक खड्गकी नित्य प्रति पूजा होतीहै ।

सेल्युकस यह सिकंदर आजमका सेनापतिथा । सिकंदरके मरनेपर बाबुलकी सूवेदारी इसको मिलीथी । अपना राज्य सब तरहसे पुष्टकर लेनेके पीछे स्वाधीन होकर इसने यूनानियोंके ३४ शहिर बसाये । ८२ वर्षकी उम्रमें स ई से ३८० वर्ष पूर्व वध कियागया ।

सैमुअलजानसन(Samuel Johnson)इसके बाप लिचफील्ड (इंग्लैंड) के रहनेवालेये, पुस्तकें बँचाकरते ये । यह स ई १७१८ में भाक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीमें पढ़ने छिये भरती हुये लेकिन निर्धनी होनेकेकारण स ई १७३१ में विना डिगरी प्राप्त किये ही स्कूल छोड़नापड़ा । पिताके देहांत होजाने के पीछे ग्रंथ रचनाकी ओर इन्होंने ध्यान दिया जिससे प्रतिष्ठा और धनके भागी हुये । स ई १७५३ में इनका अंग्रेजी कोष छपा और स ई १७५९ में माताके देहांत हो जानेके पीछे इनकी प्रसिद्ध पुस्तक "रैसलाज" छपी । स ई १७६१ में इंग्लैंडके बादशाह जार्ज ३ ने ३०० पाँड वार्षिककी पेन्शन इनको दी । स ई १७७३ में स्कॉटलैंडके पश्चिमी द्वीपोंकी यात्रा इन्होंने की और स ई १७७५ में भाक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीने यह यह डी की उपाधि इनको प्रदानकी । स ई १७७९ में इन्होंने अंग्रेजी कवीशरोंके जीवन चरित्रकी पुस्तक लिखना शुरू की लेकिन उसीसाळ बहुत दिन बीमाररहिकर ७० वर्षकी उम्रमें शहिर लन्दनमें परलोकगामी हुये और वेस्टमिनिस्टर पेचीमें दफनाये गये ।

सैयदअल्ली बिलग्रामी,नवाब इमादुल मुल्क-भापके पूर्वज बिलग्राम जिजा हर-दोईके रहनेवालेये । स.ई १८६६ में मेर्जीटिन्वी फाकिज कलकत्तेसे आपने वी ए.

तथा धी यत्न की परीक्षाएँ पास कीं। अंग्रेजी, फारसी, अरबी, तुर्की, हिंदी, ग्रीक, फारसीसी, संस्कृत इत्यादि १७ भाषाओंके भाषा विद्वानहैं। फेरीकी भाषाकोई दूसरा मुसल्मान आपके समान संस्कृतका ज्ञाता नहीं हुआ। हैरावाद दक्षिणके नवाब निजामके प्रायवेटसेक्रेटरी आप बहुत दिनोंतक रहे। पश्चात् उक्त राज्यकी शिक्षाविभागके डेप्युटी तथा अध्यापक पदोंपर रहे। आपके पुस्तकालयमें ४२००० रु की पुस्तकें हैं। आप दाढ़ी नहीं रखते हैं और कपड़े पगड़ी इत्यादि बगावटियोंकेसे पहिनते हैं। मिठनसार, सदनशील तथा परिभरी पुरुष हैं। फारसीभाषासे अरबीमें आपने एक बहुत बड़ी पुस्तकका अनुवाद करके उसका नाम "तमहुने अरब" रखा है। जियाउलमीके ल मुसाहदी, रायलस्कूल आफ सायन्स लण्डन, रायल एशियाटिक मुसाहदी आफ ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैंड, नार्थ आफ इंग्लैंड इ-स्टीयुशन आफ इंजिनियर, एशियाटिक मुसाहदी बगावट व बम्बई, यूनीवर्सिटी कलकत्ता व बम्बई, और वाय सरायकी व्यवस्थापक समाके आप मेम्बर हैं। "तमहुने अरब" में अरब लोगों की अनेक विद्याओं तथा रहिन सहिन, ढंगवाळ इत्यादिका वर्णन है।

सय्यद अहिमदखॉ (आनरेबिलिटाक्टर सर सय्यद अहिमदखॉ, के०सी० प० ४० आई०, यल० यल० डी०) इनके बाप मुहम्मद नकीखॉ दिल्लीके सुगल सम्राट बहादुरशाहके यहां धरती थे। सय्यद अहिमदको प्रथम शिक्षा निजामतासे मिली थी। २० वर्षकी उम्रमें सय्यद अहिमद सकार अंग्रेजी की चाकरीम मुहम्मद फौजदारीके सचिवेदार हुये और तीन वर्षकेभीतरही कामिन्तरीक नायब सचिवेदार होकर आगरेको बढ़ा आये। पश्चात् बटवें शिप्टीकलेक्टर तथा सब जम हुये और दिल्ली, रोहतक तथा बिज नौरम रहे और पेशन लेनेके बाद अफी गढ़म बस रहे। स ई १८४७ में आपने प्रसिद्ध फार्सी पुस्तक "आखारसनादी व" छपवाई जिसका अनुवाद फ्रेंच भाषामें भी हुआ, रायल एशियाटिक सोसाइटीने इसी पुस्तक रचनेके उपलक्षमें आपको अपना मेम्बर नियत किया। स ई ५७ के गढ़में आपने ब्रिटिश गवर्नमेंटको सहायता दी जिसके बख्शमें उक्त गवर्नमेंटने आपको तथा आपके ज्येष्ठ पुत्रको निन्दगी भरके लिये २०० रु मासिक की पेन्शन दी। स ई १८५८ में आपने गढ़के घुंतांतमें एक पुस्तक रची जिसका अंग्रेजी अनुवाद सर आकलैंड कार्लिन्गने किया। पश्चात् "भारतके साम्यभक्त मुखरमान" नामक पुस्तक आपने बनाई। इन दोनों पुस्तकोंसे ब्रिटिश गवर्नमेंटका शक जो मुखरमानकी सरफसे था दूरहोगया। स ई १८६९ में सय्यद साहब इंग्लैंडकी यात्राको गये और उहाँ अवसरपर एडिम्बरोविश विद्यालयने आपको यल० यल० डी० की उपाधि दी। आप दो दफे लेजिस्लेटिवकॉन्सिलके मेम्बर भी रहेये। स ई १८८२ में आप एजूकेयन

कमीशनके मेम्बर नियत किये गये जिसके अंतम प्रसन्न होकर बृटिश गवर्नमें
 टने आपको के सी एस आई की उपाधि दी। मुदमइन पेइल्लो मोरियन्टेड फालिज
 अलीगढ़ भापहीका स्थापन किया हुआ है। इससेके छफ्टिनेन्ट गवर्नमेंने कित-
 नोही वफे वफे बढ़िया शान्मं आपकी प्रशसार्कायी। आपने मुसल्मानोंकी धर्म
 पुस्तक कुरानकीभी सरूसीर(टीका) कीयी जिसके कारण धर्मको विश्वास मूल
 क माननेवाले मुसल्मान लोग कृतघ्री होकर आपके घेरी बनगयेथे। स ई
 १८१७ में दिल्लीमें अमे, स ई १९०० में अलीगढ़में मरे।

सैय्याजीराव ३ (महाराजा सरसैय्याजीराव गैकवाड़,
 सेनाखासखेल, शमशेरबहादुर, जी सी एस आई बरो-
 डानरेश)—जब स ई १८७५ में महाराजा मल्हार-राव गैकवाड़
 बघेदाकी गद्दीसे उतारे गये तो उनके स्वर्गवासी ज्येष्ठ भ्राता खैंदेरावकी
 विधवारानी जमना बाईने बृटिश गवर्नमेंटकी भाङ्गसे गायकवाड़के कुटुम्बी
 काशीरावके पुत्र गोपाळरावको खान्दशके एक ग्रामसे बुलाकर गोदलिया
 और सैय्याजीराव नामसे गद्दीपर बिठलाया। आपकी बाल्यावस्थामें राज्यके
 दीवान रामा सरटी माधव रावने बढ़ी योग्यतासे राज्य प्रबंधकिया और बालक
 महाराजाकी शिक्षाका राजेश्वरी इस्तभाम किया। स ई १८८० में महापती
 तञ्जोरकी भवीजीसे आपकी शादी हुई और एकही वर्ष पीछे राज्यका पूरा
 अधिकार आपको मिल गया। स ई १८८५ में महाराजाजीका १ पुत्री छो-
 डकर देहांत होगया निदान दूसरी शाही करना पड़ी। स ई १८८७ में महा-
 राजा साहब अस्वस्थ होनेके कारण इङ्गलैंड गये और राजरजेश्वरीमाता
 विकटोरियासे मिलकर जी सी एस आई की उपाधि पाई। इसके सिवाय कइदके
 और भी आप इङ्गलैंड हो भायेहैं। श्रीमान अंग्रेजीके अच्छे विद्वान हैं और राज्यके
 सुधारमें छवळीनरहते हैं। राज्यकी प्रजा आपके समयमें सुखचैनसेहै न्यायहोताहै
 शिक्षा विभागका प्रबंध अत्युत्तम हुआ है, पानी के नल, शफाखाने, कालिज
 और न्यायालय जावजा बनाये गये हैं। महाराज गैकवाड़की खलामी तोपके २१
 फौजकी है, राज्यका विस्वार ८५७० वर्ग मीलहै; वार्षिक आय १ करोड़ ५३ लाख रु की
 है। फौजमें ३५६२ सवार, ४९८८ पैदल और ३८ तोपहैं। आपके वक्तमें बरोडा
 राज्यकी पैगायश हुईहै, मजापरसे अनेक बुखदाईकर उठाये गयेहैं, जाबता दीवानी व
 फौजदारी रियासतके लिये रखा गया है, पुलिस तथा सेनाकी हालतमें अत्यन्त
 सुधार हुआ है, सइस पाठशाळाया जारी हुई हैं, शिल्प विद्याका एक कालिज बरो-
 डा राजधानीमें खोलागयाहै, नीच वर्णके लोगोंकी शिक्षाकाभी प्रबन्ध हुआहै,

खर्चीत तथा कृपा विद्याकी शिक्षाके लियेभी स्कूल जारी हुये हैं, पुत्री तथा स्त्री पाठशाळाएँभी स्थापन की गईं हैं जिनमें पठने लिखनेके सिवाय सीना, पिरोना तथा भोजनबनानाभी सिखाया जाता है । राजधानी बरोडामें श्रीमानने २० लाख रु० के खर्चसे लक्ष्मीविद्यालय नामक एक उत्तम भवन बनवाया है । वासराय छार्ड स्फरनका कथनहै कि "सैम्याजीसे अधिक प्रजापालक नरेश कोई दूसरा नहीं होसकताहै" राजधानी बरोडामें "नजरबाग महिह" देखने योग्यहै, वहाँपर महाराजा गैकवाड़की ३० लाख पौंड कीमतकी जवाहिरात रक्खी हुई है जिस्मेंसे १ हारमें एकहीरा कोहनूरसेभी बड़ाहगाहै । ईदराबादके सिवाय अन्य सब राज्योंसे बरोडा राज्यकी आमदनी अधिकहै । ब्रिटिश गवर्नमेन्टके लिये कर नहीं देना पड़ताहै । गवर्नर बम्बईके भाषीन न होकर यह रियासत घायसराय हिंदूके भाषीनहै ।

सोमदेवमठ (कथा सरितसागरके रचयिता)—यह कश्मीर के रहनेवाले ब्राह्मणथे । जब स ई ११२५ में कश्मीरकी रानी सूर्यवतीका पुत्र मरगया तो सोमदेवने शोकप्रसितरानीका चित्त बहिलानेके लिये "कथा सरित सागर" नामक ग्रंथ १८ वर्ष भयवा ११५५मध्यायमें रचा । इस ग्रंथमें प्राचीन कथानकोंका समूह संक्षेपसे वर्णितहै ।

सोलन(Solon) यूनानके सप्त बहुर पुरुषाम इनकी गणनाहै । यह एक छात्रनहकीमके मानथे इनके पूर्वजोंने किसी समयमें यूनानकी बादशाही कीथी। देश विदेश इन्होंने बहुत भ्रमण कियापा । एकदफे जब यह देशाटनसे स्वदेश को छोटे तो इन्होंने यूनानियोंको आपसके झगड़ेमें तत्पर पाया निदान खूब सोच विचारकर इन्होंने उनके लिये एक धर्मशास्त्र बना दिया जिसपर चलनेसे परस रके झगड़े मिटगये । यूनानमें अन्याई राजाका राज्यथा इन्होंने उसकोभी बहुत कुछ समझाया और कहाकि अधिक अन्याय करना बुराहै । यूनानियोंने मसन्न होकर धर्म शास्त्रीकी उपाधि सोलनको दीथी । स ई से ५५९ वर्ष पूर्व ७९ वर्ष की उम्रमें मरे ।

सम्राटसिहराना—इसका नाम साङ्गराना प्रसिद्धहै सो देखो ।

सयुक्तासती— देखो संयोगता

संयोगता (रायपिथौराकी सतीरानी)—यह कश्मीरके महाराजा जयचंदकी बेटी अत्यंत रूपवती तथा गुणवतीथी । पृथ्वीराज और जयचंदमें बहुत विभेसे द्वेष चला जाता था, जब पृथ्वीराजने अश्वमेध यहकिया तो

जयचंदने राजसूय यज्ञकी सप्यारीकी । इस यज्ञमें भारतके सब राजे महाराजों
 भाये लेकिन दिल्लीनरेश पृथ्वीराज और उनके बहिर्भोजी खिसौड़के रामासमर्सी
 नहीं भाये । जयचंदने और राजाभोंकी नजरमें तुच्छकरनेके लिये उन दोनों
 की सुवर्ण मूर्तियों बनवाकर एकको ज्योड़ीपर और दूसरीको घर्तन मोजनेकी जगह
 पर खड़ाकरवा दिया । यज्ञके अंतम जयचंदने राजकुमारी संयोगताका स्वयं-
 वर रचदिया, जब संयोगता जयमाळा छेकर निकली तौ उसने चारों तरफ
 देख भाळकर पृथ्वीराजकी सुवर्ण मूर्तिमें माळा ढाळदी । जयचंद यह देख खड्ग
 छेकर कन्याकी गरदन काटनेको उपस्थित होगया । पृथ्वीराज पहिलेहीसे जुनी
 हुई फौजके साथ कन्नौजमें भाछिपाया, खबर पातेही सभामें घुस पड़ा
 जयचंदके हाथमेंसे खड्ग छीन लिया, किसीको उसका सामना करनेका ह्वाधनहीं
 पड़ा और सबोंके देखते हुये वह अपनी प्राणवल्लभाको थोड़ेपर छादकर दिल्ली
 की ओर खल पड़ा । रास्तेमें ५ दिन बराबर जयचंद और पृथ्वीराज की फौजों
 में घोर युद्ध हुआ जिसमें दोनों तरफके बड़े २ सुभट शूरवीर काम भाये
 लेकिन दम्पति कुशलसे दिल्ली पहुंचगये । जपसे पृथ्वीराज संयोगतासहित दिल्ली
 भाया उसे राजकाजकी खबर न रही और महर्निश रङ्ग महिलमें विताने
 लगा । जयचंद इस अपमानको बिलकुल नहीं सहिसकाया निदान सहायता
 देनेके धायदेपर उसने शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरीको कानुलसे पृथ्वीराजपर चढ़ाई
 करनेके लिये बुलाया । संयोगताको जाये एक वर्षही घीवने पायाया कि
 राजदूतोंने शहाबुद्दीनके सखेन खड्गि भानेकी खबरदी यह सुन महाराजनी संयो-
 गता बोली "मिये उठिये, क्षत्री धर्म निवाहिये, यदि प्राण प्यारे आप रणशाह हुये
 तौ मैं आपके साथसती हो स्वर्गपहुंचूंगी" । तुरंत पृथ्वीराजने अपनीसेना सुधारन
 शुरू किया लेकिन अफसोसकि बड़े २ सय सेनापति कन्नौजके युद्धम एक वर्ष
 पहिलेही काम भासुकेये । रणपर चढ़ते समय क्षत्रीकुलकी मर्पादालुसार पृथ्वी
 राज माता, भगनी तथा रानियोंने विदा होनेगया । जब रानी संयोगताके महि
 लमें पहुंचा तौ दोनोंको बोलनेकी सामर्थ्य न रही, सेनाके डंके बजरहे थे भतपय
 राजा अपनी प्यारी रानीके हाथसे स्वर्णके कटोरिम पानी पीकर तुरन्त खल दिया
 रानी सतीपी उसे व्यापगया कि डंकोंका शब्द पुकार पुकार कुछ औरही बहिर-
 हाई । पश्चात प्राचीन प्रथाके अनुसार जब रानी सेना लेकर अपने पतिके पीछे
 रणभूमिको चलने लगी तौ उसने ठंडी सांस भरकर कहा "योगनीपुर भाज में
 तुमसे विदा होतीहूँ, अपने मियतमसे स्वर्गमें मिलूंगी भव उनका दर्शन यहां
 दुर्लभहै" । अंतमें सुसल्मानोंकी विजय हुई, पृथ्वीराज रणशाह हुये । सुनतेही

महाराणी सयोगता सतीहोनेको तय्यार होगई, शहाबुद्दीनने सतीका यौवन, रूप, अवस्था तथा साहस देख बहत समझाया पर सतीने ऐसे जवाब दिये कि शहाबुद्दीनकी आंखें खुल गई। अर्तम पृथ्वीराजका शिर उसको दे दिया गया और वह जलकर राख होगई। पृथ्वीराजके रणभूमिको नामके समपसे सतीहोनेके घटक महाराणी संयोगता सतनाही जल पीकर रहीपी जो महाराज पृथ्वीराज जर्दीमें खलते घट पीनेसे स्वर्णके कटोरेमें छोड़ गयेये। काविसंदने पृथ्वीराज सौके संयोगत खण्डमें इस सतीका सविस्तर वृत्तांत लिखा है। पुरानीदिहलीमें रज्जुमहिलके खण्डैर अथवाक इस सती रानीका स्मरण पविकोंको कयतहै।

स्काट (सरवाल्टरस्काट—Sir Walter Scott)—स ई १७७१ में जन्मे, इनके बाप स्काटलैंडके शाही वफतारमें क्लार्क (लेखक) थे। इनके माता पिता स्काटलैंडके उन सीमावर्ती मार्चान वंशोंमेंथे जिनकी धीरताका साक्षी इतिहास है। इन्हीं वंशोंको धीरताका वर्णन स्वरचित ग्रंथोंमें कर्कें स्काटने अपने पूर्वजोंका नाम धिरंजीव किया है। शुरूमें स्काटका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहताया एवं जल वायुवदलनेके लिये वह अपने दादाके ग्राममें, जो किलखोके निकट था गयेये, इस स्थानके समीप अनेक छद्दाई झगड़े इनके पूर्वजोंसे पहिले समपमें होचुकेये अतएव वहां इन्होंने अनेक खण्डैर तथा स्थान देखे देखे जिनके सम्बन्धमें अनेक धीरताकी कहानियाँ प्रसिद्धी। इन्हीं धीरताके किस्साका स' माघेश पश्चात् स्काट साहबने स्वरचित गद्यग्रंथोंमें बड़ी तारीफके साथ किया। इन्होंने स्काटलैंडके देश विद्यालयमें शिक्षा पाईयी, पश्चात् स्काटलैंडकी अदालतोंमें कुछ दिनोंतक घकालतकीपी। एक लड़कीसे इनको प्रेमया ऐकित उससे विवाह न होसका था। स ई १७९७ में एक कपलीसी छद्दी मिश कारपटारसे इनका विवाह हुआ और स ई १७९९ म सेटलैंड शायरके गेरिफका पद इनको मिला। उन्हीं सालसे इन्होंने कविता करना शुरू किया। स ई १७९९ तथा १८१४ के बीच इनके रचे अनेक काव्य छये जो धीरससे परिपूर्ण हैं। स ई १८१४ में इन्होंने उपन्यासोंके लिखनेकी तरफ ध्यान दिया और कितनेही उपन्यास अत्योत्तम लिखकर देशभरमें प्रसिद्धि पाई। स ई १८२६ में वेलेन्डायनका छापाखाना जिसमें इनकी धारकतपी छूटगया उसके कारण १ लाख २० हजार पौंड इनपर ऋण होगया। विवाहिया बनना इन्होंने स्वीकार न किया एवं रातदिन ग्रंथ रचनामें मेहनत करके यहतला ऋण निपटया परंतु धोरपरिभ्रम करमेसे इनकी स्मरणशक्ति घटगई और यह देखे निर्वह होगये कि म्यास्य सम्हालनेके लिये इटैली तथा भूमध्य सागरम इनकी जाना पड़ा।

इस यात्रास कुछ लाभ न हुआ निदान स्वदेशको लौटे और कुछ दिनतक बेहोशपड़े रहनेके बाद सिधारगये । यह बड़े उदार चित्त और सामानीये, कोईभी इनका शत्रुनपा, उम्रभरमें किसीसे नाराजी नहीं हुई थी । लोग इनसे मिलकर प्रसन्न होते थे क्योंकि इनकी बातचीत सादा, नम्र, दिखलुभाने वाली और मार्धान कथानकासे परिपूर्ण होतीथी ।

स्टीफेन्सन (जार्जस्टीफेन्सन— George Stephenson) यह एक प्रसिद्ध अंग्रेजी आविष्कार हुयेहैं, इन्होंने चलनेवाली रेलगाड़ीकी सम्भावना सिद्ध करनेके लिये छोको मोटिव एंजिन (धुपेवीकल) बनाई थी और स ई १८१४ में उसी कलसे रेलगाड़िय चलाकर दिखलायाया यह इर्हाकि परिश्रमका परिणामहै कि आजकल रेलगाड़ियें भव २ करती सैकड़ों कोस घंटोंमें चली जातीहैं । स्टीफेन्सनके बाप कोपलेवी खानमें नौकरथे । २० वर्षकी उम्रमें स्टीफेन्सनका विवाह हुआ था और स ई १८१२ में १०० पाँड वार्षिक वेतनपर कोपलेवी खानमें इंजिनियरका पद इनको मिला थाइसी खानकेदिय स ई १८१४में इन्होंने एक धुपेवीकल बनाइया जो ८ गाड़ियोंको ४ मील प्रति घंटेके हिसाब से चलासकतीथी । इसी कलको स्टीफेन्सन साहबने और सुधारा जिससे यह फी घंटे १५ मीलजानेलगती । इनके जीतेजी कई एक रेलकी सड़केभी इङ्ग्लैण्डमें तैयार होगई थीं और यह उनके चीफ इंजिनियर नियत किये गयेथे । स ई १७८१ में इङ्ग्लैण्डमें जन्में, स ई १८४८ में मरे ।

स्वर्णमई (कासिमबाजारकी महारानी स्वर्णमई, सी० आई० ई०) जिहावर्दघानके भटाकोल नामक ग्राममें स ई १८२७ की साल जन्मी और ११ वर्षकी उम्रमें कासिमबाजारके राजा कृष्णनाथ रायको ब्याही गई । कृष्णनाथ रायके परदावेदोषान कृष्ण कान्तनन्दीने धारेनहैस्टिङ्गज साहबके प्रात एककाठिनस्थलपर बचायेथे एवं जब धारेन हैस्टिङ्गज गधनेरजेनरल हुये तो उन्होंने बाबू कृष्णकान्तको अपना दीवानबनाया, जिससे कृष्णकान्तके धन और सामर्थकी कुछ सीमानरही और बड़ी भारी ज़िम्मेदारी खरीद करसकोपही अतुल विभव विरसतमें स ई १८३२ की साल राजा कृष्णनाथरायको मिला । स ई १८४४ में राजा कृष्णनाथराय आत्मघातकके निर्वंश मरगये और उसी पत लिखगये कि मेरी स्त्री कुछ न पावे और सब जायदाद ईष्टइन्डियाकम्पनी लोकेवे । राजाके मरतेही ईष्टइन्डिया कम्पनीने राज्यपर अपना अधिकार करादिया निदान महारानी स्वर्णमईने कलकत्तेके सुप्रीम कोर्टमें कम्पनीपर नार्दिशकी और यह बात प्रमाण करादी कि बर्सीयत मामा लिखते समय राजा बेहोशथा ।

स ई १८४७ म महारानीकी टिकरी हुई और सब जायदाद मुर्शिदाबाद, राय शाही, पधना, दीनापुर, मास्वा, रंगपुर, बोगड़ा, फरीदपुर, कैचोर, बन्धिया, चर्दघान, हथड़ा, चौबीस परगना, गाजीपुर तथा आजमगढ़के जिलोंमें है उसको मिलाई । महारानीने जायदाद पाकर रायराजविलोचनराय एक मुख्य पुरुष को अपना दीवान नियत किया औरसब ऋण जो जायदादपर पहिले भ्रमबर्षके कारण होगयाथा अल्प कालमें चुका दिया । महारानी जबतक जीतीथी प्रतिवर्ष १ लाख रुपया पुण्यार्थ खर्च करती रही, बंगालमें कोई ऐसा घर न होगा जो महारानीकी दासव्यताकी प्रशंसा न करता हो, अकाळ पीड़ितोंके महारानीने सदैव छात्रों रुपसे सहायताकी, सैकड़ों स्कूला तथा शफाखानोंके छात्रों रुपसे चन्दोंमें दिये । महारानीके दीवानने राज्यप्रबंध बड़ी नीति, बुद्धि मानी, सच्चाई और धर्मके साथ किया और पहिलेकी भवेसा आमदनी बहुत बढ़ाई, यह सब आमदनी राज्यके सुधारमें, आसामियोंका सुख चैन बढ़ाने, दीनदुखियोंका क्लेश दूर करने, पुछ तथा सड़क बनवाने और उचितरीतिसे पुण्य करनेमें लगाई गई । महारानीके पुण्यके काम पदोंमें रहिकर इतने कामदापक और लोकहितकारी नहोते यदि दीवान सारथितले उसका सहायक न होता । बृदिश गवर्नमेंटने स ई १८७२ में स्वर्णमईको महारानीकी उपाधि देकर ययार्थमें धन सीति और दयाकी प्रतिष्ठाकीथी । स ई १८७८ में रामराजेन्दरी विकटोरियाने भी महारानीके परमोदारवाके कामोंपर शीलकर उसको सी० आ० ई० अर्थात् भारत की सुकुटमणिकी उपाधि दी थी । वर्तमान कालमें महारानी स्वर्णमईके समान कोई दूसरी स्त्री नहीं हुई जिसने निजयत्नको नियमितरीतिसे सर्व साधारणके उपकारम लगाया हो । दीनाका दुखदूर करना, विषयार्थोंके भासुखाना, भूकोंको भोजन, नगोंको वस्त्र, योगियोंको औषधि, यात्रियों तथा पयिकोंको शरण और विद्यार्थियों तथा ग्रंथकारोंको सहायता देना इसदयावंतीके नित्य कर्मये । इसके कोई सन्ताननथी परन्तु यह मनुष्य जाति मात्रको अपना कुटुम्ब मानतीथी । स ई १८९५ में वेकुठवाली हुई और राज्य अपनी बहिनके बेटेको सौंपाई ।

हकीकतराय (खालसापन्थके बलिदान)—इसके बाप बागमर खत्री स्वालकोटके दाकिमके पास कारकुनयोविवाह इनका बचपनहीमें पंजाबके अकिसों प्रतिष्ठित सिद्ध धर्ममें होगयाथा । किची मुहल्लाके मकतबम जो सहिर स्वालकोटकी एक मसजिदमें था यह फारसी पढ़नेको जायाकरलेथे । एक दिन आदाबुवादमें अपने सपाठी मुखलमान कड़कोंके मुँहसे हिन्दुओंके देवताओंके छिपे गाली सुनकर इस्कीकतके मुँहसे मुखस्मानी मतकी कुछ निन्दा निकलनई ।

मुसलमान लड़कोंने बातका वितण्डा करादिया, मुस्लाजीनेभी सुनतेही काजी-
जीको इतलाकी, काजीजीने तुरंत हुकम देदिया कि काफरको सूछी देदो ।
आचार होकर हकीकतके बापने लाहौर जाकर हाकिम भालाके पास भपीलकी
लेकिन उसनेभी काजीजीका हुकम बहालरखा । हकीकतकी उम्र उसवक्त १७।
१८ वर्षकी थी, गछेसे १६ वर्षकी कामिनी बंधीहुईथी निदान माता पिताने भक्तु
धारा बहा २ कर घेढेको बहुत कुछ समझाया और कहाकि “बेटा मुसलमानों
का राज्य है कुछ घद्य नहीं चरु सकताहै, तुमहीं हमारे बुढ़ापेकी टेकहो, तुम्हारे
बिना हम अंधे होकर बूढ़ २ भर पानीको तड़फ २ कर मरेंगे, इस बहूके देखते
औरभी कळेजा टूक होताहै क्योंकि इसका तुम्हारे सिषाय कोई सहारा नहीं है,
बेटा बिचारकर देखो और छाषारीका मुकाम समझ मुसलमानही होकर
प्राण बचाओ” । पापाणका हृदयभी माता पिताका विलाप कलाप सुनकर वे-
धित होसाया लेकिन धीर हकीकतरायने धर्मकी अपेक्षा प्राणको तुच्छ समझ
मुसलमान होना स्वीकार न किया निदान मलेस हाकिमके हुकमसे लाहौरमें
वसंत पंचमीके दिन लड़कोंकी बातोंमें निरापराध हकीकतरायका छोहूबहाकर
बागमलका वेश नष्टकर दियागया । लाहौरमें हकीकतरायकी समाधि बनीहै
जिसपर प्रति वर्ष वसन्तके दिन बड़ा भारी मेलाहोताहै । किसी कवीश्वरने सत्य
ही कहाहै कि-

धो०-धन दे दारा राक्षिये, दारादे तनराख ।

धन दारा तन सबे दे, एक धर्मके काज ॥

स ई १७३४ में जन्मे, स ई १७५२ में धर्मके लिये जान देदी ।

हमीरसिंहदेव (राना उदयपुर)-यह राना भगवतसिंहके भती-
जेये, स ई १३०१ में उदयपुरकी गद्दीपर बैठे और स ई १३१३ में दिल्लीके
बादशाहको परास्तकरके चितौड़ गढ़ इत्यादि निज पूर्वजोंका सब राज्य, जो
दिल्लीके खिलजी सम्राट अलाउद्दीनेने राना लखमसी (लखमण सिंह) के
वक्तमें छीन लिया था, पुनः विजय करलिया । इनके समयमें मेवाड़ राज्य
की कीर्ति पुनः स्थापन हुई, यह बड़े प्रभापाठक थे ।

हमीर देव चौहान (रणथम्भोरनरेश)-यह व्यावर (भजमेर)
नरेश महाराजा घोसल देवके वंशमें बड़े धीर तथा दृढ प्रतिज्ञनरेश हुयेहैं ।
अन्तिमें दिल्लीपति पृथ्वीराज चौहान इनसे कई पीढ़ी पीछे होकर दिल्ली-भज-
मेरके राज्यको प्राप्त हुये । कवि सारङ्ग धरने हमीर देवके नामसे “हमीरगौरा”
तथा “हमीरकाव्य ” नामक ग्रंथ रचकर बहुत कुछ इनाम पायाया । सारङ्ग

धर काविके दादा रघुनाथ इनके गुरुये । कहियेहैं कि मीर मुहम्मद मुगलनाम क सदारसे विह्लीके बादशाह अछाठहीनकी एक बेगमकी आँखलङ्कणी जष यह खबर अछाठहीनको हुई सौ वृह अपनी जान छेकर भागा और कई राजाभोके दवारम गया लेकिन किछीने उसको शरण नधी । अन्तमें वृह हमीर देवके दवारमें रणथम्भोर पहुँचा । हमीरदेवने हाथ सुनकर उहायताका वचन दिया । खबर पातेही अछाठहीनने हमीरदेवसे अपना अपराधी मांषा लेकिन राजाको शर्णागतका पारित्याग करना स्वीकार नहीं हुमा निदानभसा उहीनेने रणथम्भोरपर चढ़ाई कीनताजेके विषयमें मुसल्मान इतिहासकारों तथा हिन्दू कवीश्वरोंके छेख एक दूसरेसे विरुद्धहैं । इतिहासोंमें लिखाते कि स १२००में कई महीनेतक छड़नेकेबाद हमीरदेव परास्त होकर मारेगये और मीर मुहम्मद जष पकड़कर लायागया सौ अछाठहीनने उससे पूछा कि 'अष छोड़ विष जानेपर तुम ठीक २ चलागे' लेकिन उसने उत्तर दिया कि "पवि वश चला सौ मुहारा सरकाटकर महाराजा हमीरके पुत्रको तप्त दिह्लीपर बिठलाकेगा" । यह सुनकर अछाठहीनने उसको हार्थके पैरसे कुचछयाहाला । लेकिन कवीश्वर लोग 'हमीरहठ' में लिखतेहैं कि, अन्तिमदिनके मुठको जाते वृक हमीरदेव फोटकी रक्षाके लिये मीरमुहम्मदको छोड़गये और रानियोंसे कहिये कि, जब किलेपरसेरणभूमिमें हमारा झडा गिरा देखो सौ हमको रणदाई हुमा जान मुम लोग पेश्वरसे सम्पार की हुई अग्निमें भस्म होजाना । अन्तमें महाराजकी जीत हुई, अछाठहीन परास्त होकर भागा, भाषीवश भागदके वृक्तम किसीको संभेकी सुधिनरही । संभेकी गिरादेख राजभवनमें कुलाहल मचगया रानियें तुरंत अग्नि में प्रवेशकरगई, राजघासियोंने क्षणमात्रमें महिलपरसे कूट २ कर जानखोकी, राजमाता राजभगनियों तथा राजकन्याओंने टफरें मार २ कर प्राणहवटाके, यह अनर्थ हुमा देख मीरमुहम्मदनेभीजाना धिक्कार समस्त कुपमें गिरनेसे बर नहीं की । महाराजने छोटकर जष राजभवनमें सिद्धियासक न पाई और देखा कि जिसके लिये इतमी आपसि घटाइ यहभी नहीं है सौ हमके बिसमें घैराग्यका ववष हुमा और निज पुत्रको राजातिष्ठकदे शिषजके मधिरमें जाकर वन्हाने अपना शिर काटकर चढ़ा दिया । महाराज हमीरसँहदेवके शिवको शिरकाटकर चढ़ानेकी तस्वीर भवतक महाराजा पटियालाके भवनमें विद्यमानहै । निम्नस्थ दोहा आपसीके विषयमें मखिद्ध है—

दो०—सिंहगमन सापुरुष वचन, कदली फल पकवार ।

त्रियातेक हमरिहठ, चड़े न दूजी बार ॥

हरगोविन्दजी (सिक्खोंके छठेगुरु)—गुरु भञ्जुनसाहबके घर स ई १५९५ में जन्मे । माताका नाम गगाया । स ई १६०६ में गद्दीपर बैठे । ठाट भमीरी रखतेये । दो तलवारें बाँधतेये, एक शूरियार्हकी दूसरी भमीरीकी । वित्त आपका बन्नेपनहीसे रण सम्बंधी कामें तथा डंड कुरती, पटेबाजी, फरी गदका तथा सीरन्दाजी इत्यादि में लगताया । बड़े स्वरूपवान तथा झुठपुष्टये । स ई १६११ में निजपिता गुरु भञ्जुन साहबकी समाधि इन्होंने बनवाई थी । दिल्लीके मुगल सम्राट जहाँगीरने वीषान चण्डूछाळके कहनेसे इनको ग्वाळि-परके किलेमें नजरबन्द किया परंतु पोड़ेही दिनाबाद इनके मदस्यके शरिफ मुनकर इनको अपने पास बुलाकररक्खा । एकदिन अवसर पाकर गुरुने बाद शाहसे चण्डूछाळकी सब कर्तूत जो उनके पिता गुरु भञ्जुनके मरवाने तथा उनको नजरबन्द करानेमें उसनेकीपी कहिदी । चण्डूछाळ बादशाहके हुकमसे गुरुको सौंपागया, गुरुने उसको मरवाढाळा । आपसे पहिले जो पांच गुरुहुये मुल्कीमामलोंसे कुछ सरोकार नहीं रखतेये लेकिन आपने दीनी तथा मुल्की दोनोंही प्रकारके मामलोंमें हिस्सा लिया । स ई १६४४ में परछोकगामिहुये ।

हरदत्तपठित (पद्मञ्जरीके कर्ता)—जयावित्त तथा धामनकृतका शिक्षा अष्टाध्याईके ऊपर इन्होंने पद्मञ्जरी नामक व्याख्या लिखायी ।

इसबातके प्रमाण मिलते हैं कि ये मायकविले पीछेहुये (देखो माय) आप स्त्रम्ब तथा गौतम धर्म सूत्रोंका भाष्यभी इन्होंने रचाया ।

हरखोंग—इस काशीनरेशने अपने राज्यमे सब चीजें एक भाव सेचनेकी आज्ञा दीथी । इसीकारण प्रसिद्ध है कि—“राजहरखोंगराजा टकेसेर भाजी टरेसेर राजा” । हरखोंगके समय इत्यादिका कुछ विशेष हाल नहीं मालूम ।

हरदीक्षित (बृहच्छब्देन्दुशेखरकेकर्ता)—यह भद्रोजि दीक्षितके पौत्र थे । वि सं की १८ वीं शताब्दी मे इन्होंने भद्रोजिदीक्षितकृत सिद्धांत कौमुदी पर बृहच्छब्देन्दुशेखर और मनोरमापर शब्दरत्ननामक व्याख्याकीपी हर्ष—देखो श्रीहप ।

हरिदास—यह योगिराज इस समयमें योगाभ्यासकी महिमाको प्रकट क नेवाले साधुओंमेसे थे । पंजाबकेशरी रणजीतसिंहजीने प्रशसा मुनकर इनको अमृतसरसे अपने दरबारमें बुलायाया, यह वर्षोंकी समाधि लगासकतेये ।

गवर्नर जनरलहिंदके सैनिकमन्त्री आसवर्न साहिब अपने योजनाम्ये में लिख तेहैं कि स ई १८३८ की साल ६ ता जूनको रणजीतसिंहजीने हरिदासफकीर को एकचन्द्रक में बन्द कराके घर्तोंके भीतर गड़वादिपा, दश महीने बाद जब

जमीन खोदकर सम्बूक खोला गया तो साधू पत्र भासन बैठे हुये मिले, शरीरमें विलफुल प्राण नहीं मालूम होतेये, लेकिन थोड़ीही देर बाद कुछ २ घास चबती मालूम हुई और अधिक समय नहीं बीताया कि महायोगीश्वरने नेत्र खोल कहा कि "बहुत सोये"। प्राय स ई १८०८ में इसका जन्म हुआ, ये पंजाबके रहने वालेये।

हरदेवलाल (हुलकाकेदेवर)—घाबूकृष्णबलदेव धर्मा "बुद्धेकल्प पर्यटन" में लिखतेहैं कि स ई १६२८के लगभग जब मोरछाके राजा जुझारसिंह दिल्लीद्वार में रहने लगे तो राजप्रबन्धका भार उनके भाई हरदेव सिंहके शिर पर ड़ा, हरदेवसिंहके वक्तमें घूसखामेवाळोंका निर्वाह न था पर्य ईपायश उन्होंने भाइयोंमें धननस्य करानेके लिये राजा जुझारसिंहको लिखा कि कुँवर हरदेवसिंहका राज माहिपी से अछीक सम्बन्ध है। पत्रदेखतेही राजाने मोरछे भाकर रानीसे कहा कि यदि हरदेवसिंह से तुम्हारा पृथित सम्बन्ध नहीं है तो अपने हाथसे उसे विष देदो। रानीने बड़े दुःखसे धर्म रक्षार्थ राजाका प्रस्ताव स्वीकार करके भोजन प्रस्तुत कियो। भोजन परोसते समय रानीके अशु संवाचनहो गया। हरदेवसिंहने क्रान्तहो कारण पूछा जिसके उत्तरमें रानी श्रीकें मारकररोनेलगी। बहुत प्रबोध करनेपर बोळी कि बेटा ! अब मैं माताकहे जाने योग्यनहीं हूँ, महाराजको मेरे सतीत्वमें सन्देह है। स्त्रीका पहिछा धर्म सतीत्व रक्षा है जिसकी इस समय परीक्षा है। इसकारण यह दुर्भागिनी भाग्यपुत्र सरीखे देवरका विषपूरित भोजन परोस कर पुत्र हत्या करनेकी प्रस्तुत हुई है। यह सुमतेही हरदेवछाळने यह भोजन खालिया और कहा कि माता ! तेरी धर्मरक्षासे मेरी मुकीर्ति युगानुयुग होगी। रानिनेभी इनसौजन्य पूरित घाबूकोंको सुन भायंत कातरहो विचन्द्राळिया। जुझारसिंहभी यह धर्मपरीक्षा देखरोनेलगे। हरदेवसिंह रसोईका शेष विषपूरित भोजन धाहर उठवाळाये और उन्होंने अपनी दशाका अन्तिम समाचार इष्टमिर्तों सेवकों तथा कमचारियोंसे कहा। उनमेंसे बहुतोंने जो हरदेव सिंहके सट्टोंसे अनुरक्तये वह विषपूरित भोजन मुरंत खाळिया और थोड़ीही देरपीछे सबके सब अटल निद्रामें सोगये। इसजयम्यपापसे सारा ओर हाहाकार मचगया। उजातीय तथा विजातीय सब लोगोंने महाराज जुझारसिंहको सर्वदा भयमदभानकर उनसे सम्बन्ध छोड़िया। उन्हीं दिनोंसे हरदेवछाळ तथा हुलकादेवी विशुक्ति काके विर्मोंमें पुजनेलगे। हुलकादेवीके मन्दिर और हरदेवछाळके चौतरे तथा कूप समस्त भारतवर्षमें ठौर २ धने हैं।

हरिदासस्वामी (वैष्णवधर्मप्रवर्तक)—"भक्तसिन्धु" ग्रन्थके आधारपर मिस्टर ग्रीचने लिखा है कि अछीगढ़के पास एक गाँवमें जिसको भव हरिदासपुर कहते हैं मद्रधीरनामक सनाढ्य ब्राह्मण रहितये जिनके पुत्र राम

धीरके इष्टदेव गोवर्धनपर विराजमान श्री गिरिधारीजीये । ज्ञानधीरका विवाह मथुरामें हुआ था जिससे एकपुत्र भाशधीरहुआ । भाशधीरका विवाह वृंदावनके निकटस्थ राजपुर ग्राममें गंगाधर ब्राह्मणकी कन्यासे हुआ था जिससे हरिदास-जीका जन्महुआ । बचपनहीसे हरिदासजी भगवद्भक्तिमें छीनये और अल्पकालकी भाँति खेलना छूटना उनको पसन्द नहीं था। १५ वर्षकी उम्रमें हरिदासजी गृहस्थागीहो वृंदावनमें मानसरोवरपर जा बसे और घोड़ेही दिनपीछे वहाँसे निघवनको उठगये । वहाँपर श्रीधामके विहारीजीकी मूर्ति इनको मिलीथी जिनका बड़ाभारी मन्दिर अबतक वृंदावनमें है, इस मन्दिरके अधिकारी स्वामी हरिदासके भाई जगन्नाथके वंशधर हैं । हरिदासजी परम विरक्त तथा महात्यागीये और सर्वेश्वर ईश्वरके ध्यानमें मग्न रहतेये । भक्तमालावर्णित यमुनाजीमें पारसपत्थरके केंक देनेकी कथा इन्हींके विषयमें है । सद्गीतशास्त्र इनको पूर्णरीतिसे आताथा, सुप्रसिद्ध गवैया तानसेन इनका शिष्यथा । एकदफे मुगलसम्राटमकबरने स्वाहा कि स्वामीजीका गानासुने परन्तु यह कठिनया निदान तानसेन बादशाहके हाथ खेचकके रूपमें तानपूर छिपाकर स्वामीजीके पास पहुंचा, यह विषय वृंदावनमें अत्यन्तक मौजूद है । स्वामीजी अपने प्राचीन शिष्यको देख प्रसन्न हुये, तानसेनने कुछगाया परन्तु जानबूझकर बूझकी तब स्वामीजीने स्वयं गाकर बतलाया, बादशाहने मोहितहो स्वामीजीके शरणलुये और मोरो तथा बंदरोंके जुगानेके खर्चके लिये जागीरदी । स्वा० हरिदासके बनाये पदोंके दो छोटे ग्रंथ हैं । सिद्धांत नामक ग्रंथमी इन्हींका बनायाहुआ है । गवैयोंके विषय साधारण लोग इनके बनाये पदोंको नहीं गासकते हैं । यह कवितामें अपना यह छाप रखतेये—“श्रीहरिदासके स्वामीरामा कुंजविहारी” । इनकी गद्दीके मुख्यस्थान वृंदावनमें तीन हैं श्रीधामके विहारीजीका मंदिर, निघवन और मौनीदासजीकी टट्टी । इनकी शिष्य परम्परामें अनेक मुकयिहूये हैं जिनमेंसे मौनीदासजी ९ वेंये । मौनीदासजीकी टट्टीमें स्वामीहरिदासजीका जन्मोत्सव हरसाळ बड़े समारोहसे होता है । स्वा० हरिदासकी भाषाकविता सूरदास तथा तुलसीदासकी कविताके समान है और उनके बनाये संस्कृतपद जयदेव स्वामीकृत पदोंसे कम नहीं । डाक्टर प्रीभर्जन साहब अपने ग्रंथमें लिखते हैं कि. स ई १५६० में हरिदासस्वामी विद्यमानये ।

हरिनाथ (भाषाकवि)—प्रसिद्ध कवीश्वर नरहरिषू इनके पिता थे ।

यह भाट महापात्र ग्राम भसनी जिला फतेपुरके रहनेवाले थे। हरिनाथ बड़े भाग्यवान, सदाचित्त और दानीहुये, जिस दरारमें गये छाखों रुपये, हाथी, घोड़े, ग्राम इत्यादि प्राप्तकरके छोटे पर पास कुछ नहीं रक्खा सब टुटादिया। पीछे नरेन्द्र नेजाराजमथयेलेने १ छाख रुपया और वीररानी दुर्गावतीने सवाळस रुपया इनको इनाम दिया था, पश्चात् हरिनाथजीने महाराज मानसिंह जयपुर नरेन्द्रके दरबारमें पद्य निरस्य बोहे मुनाय दोळस रुपये इनाम पाये—

दो०-बलिघोई घीरतिछता, कर्णकरी त्रै पात ।

सीन्धी मान भहीपने, जब देखी कुम्हलात ॥

दो०-जातिजाति ते गुण अधिक, मुन्यो न भबहु कान ।

सेतुबाँधि रघुवरतरे, देला वै नृप मान ॥

जब हरिनाथजू रूपये तथा अनेक सामान सहित घरको छोटे भारदेये लौ रास्तेमें एक नागापुत्र उनको मिछा और उसने हरिनाथजूकी प्रशंसामें यह दोहा पढा-

दो०-दान पाप दोई बढे, की हरि की हरिनाथ ।

उन यह लम्बे पग बिये, इनबढ लम्बे हाथ ॥

यह सुनतेही हरिनाथजूने सब धनधान्य उस नागापुत्रको देहिया और आप रीतेहाथ घरको छोटाये । वि स की १७ वीं शताब्दीमें इनका समय है ।

हरिश्चंद्र मारतेन्दु (हिन्दी सम्राट) यह बानूजी काशफि रहने वाले बाबू गोपालचंद्रजी अग्रवाल वैष्णवके पुत्रये माता इनको केवल ५ वर्षका, पिता ८ वर्षका छोड़कर मरगयेथे, बनारसके क्वीन्स काॅलेजमें कई वर्षतक इन्होंने अंग्रेजी, पढ़ीयी, संस्कृत तथा फार्सीकीभी पूर्ण ज्ञाता थे, तामिळ और तैलङ्गके सिषाय इसदेशकी अन्य सबभाषाओंकोभी बड़े परिभ्रमसे घरपर पढ़ा था । कविता रचनपनही से अनेक भाषाओंमें करतेथे लेकिन हिंदी कविता करनेमें निपुणथे । १६ वर्षकी उम्रमें इन्होंने “कविवचनसुधा” नामक पत्र निकालना शुरू किया था, पश्चात् अनेक और पत्र, पत्रिकायें निकाली थीं तथा सैकड़ों गद्य, पद्य पुस्तक रचकर हिंदी भाषाका भण्डार परिपूर्ण कियाथा, बा० हरिश्चंद्रके पहिले साधारण रीतिसे इस मान्दमरमें केवल संस्कृत, फार्सी तथा अंग्रेजीके पठन पाठन का चर्खाथा, भाषाप्रपोंका रचना, छपवाना तथा पढ़ना तुच्छ काम गिना जाताथा । बा० हरिश्चंद्रके उद्योगसे देशमर की रुषि शर्मा २ इस भोर बड़ी, सब लोगोंको हिन्दी लेख पढ़नेकी अभिलाषा उत्पन्न हुई । फिर तो उसरोत्तर क्रमसे सैकड़ों अच्छे २ अंगकार होगये और फायदा होते देख अंगोंको छापकर प्रकाशित करनेवाले सहजहीमें मिलने लगे । इसी कारण बा हरिश्चंद्रको “हिन्दी सम्राट” कहना पर्याय है । स० ई० १८७० से १८७४ तक बा० हरिश्चंद्र बनारसमें आनेरेपी मजिस्ट्रेट तथा मुनिसिपेल् कमिश्नर रहे । बनारसमें श्रीरामभास्कर, हिंदी डिपेटिंग क्लब, अनाथराक्षिणी सभा तथा काव्यसमाज आपने स्थापनकी थी । आप अनेक बड़ी २ सभामें तथा समाजोंके मेसीडेन्ट तथा मेम्बरभी थे । घनाढय ती थे ही, विद्वानोंकाभी

सत्कार खूब करतेये । काशीके पढितोंने जो प्रशसा पत्र हरताशर करके आप-
फो दिया था उसमें लिखा था कि-

दो०-सब सज्जनके मानकों, कारण इक हरिश्चंद्र ।

जिमे स्वभाव दिनरैतसे, कारण नित हरिश्चंद्र ।

बहुतेह कि सहस्रो मनुष्याका कल्याण बानूहरिश्चंद्रके द्वारा होताथा । वि-
द्योन्नतिके लिये उन्होंने बहुत फ़ुल व्यय किया था । वह पके राज भक्त थे और
देशहितके आगे अपने धन, मान तथा प्रतिष्ठाको मुच्छ समझते थे। उनका शीळ
स्वभाव ऐसा था कि साधारण लोगोंके लिये भारतके बहुतसे राजाओं महा-
राजाओं तथा यूरोप और अमेरिकाके प्रधान लोगोंसे उनकी मैत्रीयी । काशीके
बड़े २ पढित तथा सर्वसाधारण उनकी प्रतिष्ठा करतेये और काशीनरेशकी
सभामें उनका बड़ा भादर होताथा । स ई १८८९ में हिंदीसमाचारपत्रोंके
सम्पादकोंने एकमत होकर उनको भारतेन्दुकी उपाधि दी थी । वह धैर्यवसे और
मत वा धर्मको विश्वासमूळक मानकर प्रमाणमूळक नहीं मानतेये । अहिंसा,
दया, शीळ, नम्रता आदिकोभी धर्मके लक्षणोंमें गिनतेये । अंतमें कितनेही दिन
भीमार रहकर लिपारे । अन्तिम दिन जब आतपुरसे प्रेरित टहिलुनीने आकर
आपसे पूछा कि आज आपकी तबियत कैसीहै ? तब आपने उत्तरमें कहा कि
आज रातको अन्तिम पत्तनिका गिरकर तमाशा खतमहोगा । स ई १८५० में
जन्मे, स ई १८८५ में लिपारे ।

हरिश्चंद्रदानी (सूर्यवशीनरेश)—यह राजा विशंकुके पुत्रये, महा
राज रामचंद्र इनसे ३० पीढी पीछे हुये । एकदके हरिश्चंद्रके राज्यमें घोर दुर्भिक्ष
पड़ा, लोग भूखों मरनेलगे तब उन्होंने अपना सब धन धान्य प्रजाकी रक्षामें
कृपादिया और आप निर्धन होगये । ऐसी आपतिके समयमें ऋषि विश्वामित्रने
उनके धर्मकी परीक्षा करनी चाही और आकर कहा कि “महाराज ! मुझे धन
दीजिये और कन्यादानका फल लीजिये” । सुनतेही महाराजने अपना बच्चा
बचाया माळ अस्वाभ बंधकर ऋषिके अर्पण किया । पुनः ऋषिने कहा कि धर्म
मूर्ति ! इतने धनसे मेरा काम न चलेगा और मुझे आपके लिये कोई दूसरा
यनादय धर्मात्मा संसारमें दृष्टिगोचर भी नहीं होता, हूँ ! काशीमें एक स्वपच
मायापात्र है कहो तो उससे आकर धनमाँगू । महाराज हरिश्चंद्र इतनी बात
सुनतेही स्त्री पुत्र समेत विश्वामित्रको सापळे उस स्वपचके घर गये और उससे
कहा कि “भाई ! तू हमें एक घणके लिये गिरवी रखले और इनका मनोरथ
पूर कर” । श्मशानमें जाय चौकी देने और जो मृतक भाये उससे करलेनेका
काम स्वपचने महाराज हरिश्चंद्रको साँपा और विश्वामित्रको रुपये गिन दिये,
हरिश्चंद्रकी रानीने विषज हो एक ब्राह्मणके घर चौका बतन धोनेकी नौकरी

करली। कितनेही दिन पीछे महाराजका पुत्र रोहिताश्व मरगया, महापत्नी
 वसे छे मरघटमें गई और ज्योंही खिता बनाय अग्नि चस्कार करने लगी
 त्योंही महाराज हरिश्चंद्रने भाकर कर माँगा। महारानीने बिरुकारी फोड़,
 रोकर कहा कि "महाराज ! यह भापका इकलौता पुत्र रोहिताश्व है और
 सिवाय इस चरित्रके जो पहिने खड़ी हूँ मेरे पास देनेको कुछ और नहीं
 है"। महाराजने कलेजे पर पत्थर रखकर कहा कि "रानी ! मेरा इसमें कुछ
 वश नहीं है, मैं दूसरेका चाकर हूँ यदि उचित रीतिसे कार्य न करूँगा तो
 अधर्मी ठहरूँगा"। इस बातके सुनतेही महारानीने चरित्र उतारनेके
 छिये ज्याही आँसुल पर हाथ ढाळा कि तीनों लोक कौपने छगे, हाहाकार
 मचगया, पृथ्वी पुकार उठी कि "वस ! वस !! वस !!! परीक्षा होबुकी,
 हरिश्चंद्र दानी और धैर्यवान् है"। महाराजके सब कष्ट स्वप्नवत् होगये-
 पुत्र रोहिताश्व जीउठा और महाराज तथा महारानीका कर्त्तव्यसम्भ "भाचन्द्र
 दिवाकर" भटल होगया। पश्चात् महाराज हरिश्चन्द्र बहुकालतक धर्म
 राज्य करके बुद्धिभ पंदको प्राप्त हुये।

हरीराय (सिक्खोंके सतम गुरु)—यह गुरु हरगोविन्दजीके
 पौत्र थे और इनके पिताका नाम वृत्ताजी था। शाहजमका राजहूत इनकी
 महिमा सुनकर दिल्लीसे छोटती समय इनके वहाँनोंकी भाया था। मुल्की
 मामलातमें भी इन्होंने खूब दिस्सा छिया, यह पञ्जाबके हिन्दुओंके पेट्या गिने
 जाते थे। इनकी समाधि कीरतपुर मुल्क पञ्जाब में है, हरकृष्णजी इनके
 कनिष्ठ पुत्र ५ वर्ष की उम्र म गुरुकी गद्दीपर बैठे। स० ई० १६२९ में जन्मे
 स० ई० १६९१ में विधारे।

हातिमसाई—यह अरबदेशवासी अब्दुल्लाका पुत्र बड़ा परोपकारी और
 दानी हुआ, मुसलमानोंके पैगम्बर मुहम्मद साहिबके जन्मसे चौड़ेही दिन पहिले
 मरजुका था। इसका बेटा प्राद को मुसलमान होगया। इसके वृत्तान्तमें पर
 फारसी किताब मिलती है, जिसका अनुवाद उर्दू भाइरेजी इत्यादि कई भाषा
 ओंमें होगया है। हातिमसाई की कब्र अषतक अरबके एक गाँवमें मौजूद है।

हाफिज (फारसी कवीश्वर)—मसिह फारसी ग्रन्थ दीवानहाफिज
 इसका बनाया हुआ है। पूरा नाम इसका मुहम्मद शमशुद्दीन घामुल्क ईरानके
 शहिर शीराजका रहने वाला था, कुछ दिनोंतक मुल्तान वादादके दरबारसे
 इसका सम्बन्ध रहा। स० ई० १३८८ म मरा।

हाफिजराहिमतखॉ (रुहेला)—इसका बाप शाहभाळमखॉ स० ई०
 की १७ वीं सदीके अंतमें अफगानिस्तानसे भाकर मुगल सम्राट् दिल्लीके दरार

में किसी उच्चपद पर नौकर हुआ था। शाहआलमखॉ के हाफिज रहमतखॉ तथा दारुदखॉ दो पुत्र थे। दारुदखॉ ने अपनी धीरसासे मुगल सम्राटको सुश किया और नवाब का खिताब तथा रामपुर (रुहेलखण्ड) की जागीर इनाममें पाई। दारुदखॉके वंशज अबतक रामपुरमें राज्य करते हैं। हाफिज रहमतखॉ ने उस मुल्कके अधिकांशपर जो अब किस्मत रुहेलखण्डमें शामिल है बहुत दिनोंतक हुकूमत की और पीछी भीतको गॉखसे बसाकर शहिर बनाया और हफीआबाद नाम रक्खा। बरेली और पीछीभीतके बीच हाफिजगज भी उन्हींने पयिका तथा फौजके ठहरनेके छिये बसाया था। पीछीभीत, बरेली और भौठला जि० बदायूंमें अबतक हाफिज रहमतकी बनवाई मसजिदें तथा अन्यान्य इमारत भग्नावस्थामें पड़ी हैं। बरेली में उस स्थानपर जिसको अब भी किला कहिये हैं उन्हींने एक कोट बनवाया था जिसको सन ५७ के गदरके बाद ब्रिटिश गवर्नमेंटने सुदधाकर फिकवा दिया। हाफिज रहमत यथाशक्ति न्याय करना चाहता था, राठपहाड़सिंह खत्री जिसकी गढ़ी बरेलीमें अबतक टूटी फूटी पड़ी है उसका दीवान था। कहते हैं कि एक दफे शहर बरेलीसे ३ कोस पूर्व मरियाबल ग्राममें वेशीका मेला देखने राठ पहाड़की बेटी रयमें बैठकर गई थी, हाफिज रहमतके भाजेकी उस पर आंस पड़ी, देखतेही मोहित होगया और सवारोंको हुकम दिया कि पकड़ लो। रयवानको जब यह मालूम हुआ तो उसने सुरंत चादरसे कसकर छड़कीको कमरसे बांध लिया और सवारोंको घोसेमें डालनेके छिये रयके पीछेका तौंगा छुरीसे काट खड़क पर छोड़ दिया और हवाकी समान बैलोंको उड़ाता हुआ अपने मालिककी प्रतिष्ठाको लेकर गढ़ीके फाटकमें घुस पड़ा और सवार उस को न पकड़ सके। स्वामिभक्त चाकरकी काररवाई देख राठ पहाड़की आँखोंसे कृसन्नताके आंस बहने लगे, उसने रयवानके हायोंमें सोनेके कड़े डलवा दिये और पूरी तनफ्वाह पर आज्ञम नौकरोंसे माफ किया बैलोंको प्रतिदिन ५ सेर जलेभी बाँधदी और हुकम दिया कि उनसे कुछ काम न लिया जाय। जब यह बात हाफिज रहमतके कानमें पहुँची तो उसने अपने भाजेको उधिस दण्ड दिया। हाफिज रहमत प्रायः १२ बख्तोंका बाप था। आलमगीरिगंज, जुलफि कारगंज तथा शहामचगंज नामक शहर बरेलीके मुहल्ले उसीके बेटोंक नामसे प्रसिद्ध हैं। हाफिजरहमत खॉ अन्तमें नवाब वजीर अबघसे लड़कर कटरा जि० शाहजहाँपुरके मैदानमें मारा गया और उसके छड़कोंकी बात तक किसीने नहीं चूही। हाफिजरहमत अपने समयके सब रहेला सदाँका मुखिया समझा जाता था।

हारीत मुनि (आयुर्वेदीयहारीतसहिताके कर्ता)—इहाने आयुर्वेद अपने पिता ऋषि जाबालिसे पढ़ा था। ऋषि जाबालि राजा दश

रथके समयमें विद्यमान थे। हारीतमुनिने दो वैद्यक ग्रन्थ रचे थे जिनमेंसे एक बृहद्धारीत संहिता और दूसरा लघुहारीत संहिताके नामसे प्रसिद्ध है। उक्त दोनों ग्रंथोंमें श्रीमान् आग्नेय महर्षि और हारीतमुनिके प्रसंग आते हैं। व्यासकृत महाभारतमें वैशम्पायन ऋषिने हारीतके विषयमें यह कथन लिखाया है कि "मैंने जाबाखिपुत्र हारीत को एक सरोवरमें नहानेको जाते हुये देखा, वह धीररथकी मूर्ति थे, तेज उमका सूर्यकासा था, मस्तकपर जटा लच्छाटमें त्रिपुण्ड्र, कानोंमें स्फटिकमाळा, बायें हाथमें कमण्डलु, वहिनेमें दण्ड, कंधेपर कृष्ण मृगछाला और गलेमें यज्ञोपवीत सुशोभित था, उनकी मूर्ति शान्तिमय थी, स्वभाव क्यालु या और एक दहिल्लुवा साय या"।

हार्डिङ्ग (वार्डकौन्ट हेनरी हार्डिङ्ग—Viscount Henry Hardinge) यह शहर बरहम (इंग्लैण्ड) के रहनेवाले एक पादरीके पुत्र थे। थोड़ेही उमरसे यह फौजमें भरती होगये थे और स० ई० १८०४ में कप्तानके पदपर तरफ़ी पाकर बड़ते २ अगरेजी सेनामें बख़्शपदको प्राप्त हुये थे। बहुतसी छद्माईयोंमें ड्यूक आफ् वेल्डिङ्गटनके साथ २ बड़ी बहादुरीसे लड़े थे। स० ई० १८४४ में गवर्नरजनरल हिंदू नियत होकर आये और मुद्रकी तथा फ्रीगेमशाह की छद्माईयोंमें सिक्खोंकी सेनाको परास्त किया। स० ई० १८५५ में फील्ड मार्शलका पद इनको दिया गया। स० ई० १७८५ में जन्मे और स० ई० १८५६ में मरे।

हारूरशीद (खलीफाबग्दाद)—ये अबू अब्दुल्ला मंसूरकी पुत्र, बग़दादके अल्म्यासर्धक्षोत्पन्न पंचम खलीफा थे। अपने बड़े भाई अल्लहदीके बाद २०।२२ वर्षकी उमरमें स० ई० ७८६ की साल सल्तनत पर बैठे। शाम, पैलेस्त्यान, अरब, ईरान, आर्मेनिया, काबुलिस्तान, जेतोखिया, आज रवायजान, धैविलम, ऐसीरिया, सिन्ध, सुरासाम, ताघरिस्तान, जाबुलिस्तान, बड़ा बुखारा, और मिअ इत्यादि देशोंमें इन्हींका राज्य फैला हुआ था। इनके शासन कालमें अधिक मुस्क तो विजय नहीं हुआ लेकिन अनेक काम देशोन्नति, मज्जापादन और राज्यप्रबंधके सफलतापूर्वक हुए। यह फार्सी तथा अरबीके विद्वान होकर गुणी जनोंका खूब सलकार करते थे। किसी कविकी पद्यरचनापर प्रसन्न हो कर इन्होंने ५ लाख अशार्फिये इनाम दीया। अनेक और कवीशरोंको भी १।१, २।२ लाख दिरम दिये थे। अनेक सड़कें, सफाखानें, स्कूल, कारखों सराबों भी बनवाई थीं। डाक्टरी, पुलिस तथा शिक्षा इत्यादि अनेक राज्य विभाग स्थापन करनेका भी अतुल्य परिश्रम किया। इन्होंने अरबके बावराहोंमें हुआ था। इन्होंने यूनानियोंको कई दफ परास्त किया था, अन्तिम बड़े स० ई० ८०४ में इनकी हार हुई और ४० हजार सेना मारी गई लेकिन दूसरीही साल क्रिजिया पर चढ़ाई करके उन्होंने फिर शाह यूनानको परास्त किया और उसके अनेक सुबों

पर अधिकार जमाकर राजस्व चुसल किया। फ्रांसके सम्राट् चार्लस वीप्रेटके साथ हाईकी मित्रता थी और एक बर्तीष वसत यही हाईने उसकी नमस्की थी। स ई ८०९ म २३ वर्ष राज्य करके मुरासानमें मरे और वूस (मराहद) में दफन किये गये। यह मुसल्मान थे; वेटा अलममोन इनका उत्तराधिकारी हुआ।

हावर्ड (जानहावर्ड—Gohn Howard) इस प्रसिद्ध अगरेज जगत द्वितीयका घाप शहर लन्दनमें सौदागरी करताया और इसको छोटासा छोड़कर मरगपाया। षडे होकर इसने अपने से ३७ वर्ष यही एक विधवाके साथ शादी की लेकिन वह तीनवर्ष बादही मर गई। स ई १७५६ में यह पुतगालकी राजधानी लिस्वको उनलोगोंकी सहायता करणार्थ गये जिनकी भूकम्पसे हानि हुई थी। लिस्वसे छोटकर यह हेम्पशायर (इङ्ग्लैन्ड) में बस रहे और स ई १७५८ में इन्होंने अपना दूसरा विवाह किया लेकिन दूसरी स्त्रीभी स ई १७६५ में एक बेटा छोड़कर मर गई। उस समय यह वेडफोर्डके समीप कार्डिफ्टन म रहतेथे और वहाँ इन्होंने कुछ जायवाद् भी खरीदलीथी। स ई १७७३ में शेरिफका ओहदा इनको मिला, उक्त ओहदेपर रहकर स्पष्टरीतिसे इनको जीव्य हो गई कि जेलखानोंमें कैदियोंके साथ पशुओंके समान बर्ताव किया जासाहै निदान इन्होंने सर्कारी आज्ञा लेकर इङ्ग्लैडके जेलखानाका दौरा किया और उद्योग करके पार्लियामेटसे आईन पास कराया जिससे कैदियोंकी तकलीफ बहुत कुछ घटाई। पश्चात् इन्होंने युरूपके अन्यायियोंमें भी धमन करके जेलखानोंकी दीन दशाकी जीव्य की और भिन्न २ राजाओंसे उद्योग करके उसमें सुधार कराया। अंतमें यह क्रीमियाको गये, वहाँ उन दिनों दुस्वार फैल रहाथा, एक बीमारका इलाज करते समय हावर्ड साहब को उसकी बीमारी घटलगी और मृत्युका कारण हुई। स० ई० १७९७ म जमे, स० ई० १७९० में मरे।

द्वितहरवश गोस्वामी (राधावल्लभीय सम्प्रदायके आचार्य)—
 देववन्द जि० सहारनपुरमें व्यास स्वामी उपनाम हरिराम छुड़के घर तारा घटीके उदरसे मिति वैशाख शुक्ल ११ वि० स० १५५९ को जन्मे। प्रथम विवाह इनका देववन्दमें रुक्मिणी नामक कन्यासे हुआ जिससे दो पुत्र और १ कन्या उत्पन्न हुए। इन तीनों बालकोंका विवाह करनेके बाद गोस्वामी भी द्वितहरवशजी वृंदावन वासकी इच्छासे घर्यार छोड़ चलते हुये। मार्गमें होइलके पास शरियावल्ल ग्राममें एक ब्राह्मण इनको मिला जिसने अपनी दो कन्यायें तथा श्रीराधावल्लभ ठाकुरकी मूर्ति इनके भर्षणकी जिसको लेकर यह वृंदावनमें आये और वहाँ मितिवा० शु० १३ वि० सं० १५८२को श्रीराधावल्लभजीकी स्थापना की और राधावल्लभीय सम्प्रदायका प्रचार किया। राधावल्लभीय लोग अपने नामके पहिले द्वित लिखते हैं। द्वित हरवशके शिष्योंमेंसे अनेक अछे कवीश्वर हुये हैं। इनकी पहिली स्त्रीका वंश देववन्दम है और विछरी दोनों

खियोंका वृंदावनमें। " श्रीराघामुधामिधि " तथा " कर्मानन्द " काव्य इन्होंने बनाये संस्कृत ग्रंथ हैं। भाषामें इनके रचे ग्रंथ " वृंदावनशतक " और " हित श्रीराघामिधि " हैं।

हिमाचलराम (भाषाकवि)—यह शाकद्वीपीयाह्वयण रियासत भटौली जि बहियपचके रहनेवाले थे। नागछीला, वृधिछीला इत्यादि इनके रचेग्रंथ हैं। वि स १९१५ में मृत्युवश हुए।

हिल (सर रोलैंड हिल—Sir Rowland Hill)—यह वर्मिन्गन (इंग्लैंड) के रहनेवाले महाशय प्रथम लोगोंको गणित शास्त्रकी शिक्षा देकर अपना निर्वाह किया करते थे पश्चात् दक्षिणी आस्ट्रेलियन कमीशनके मंत्रीका पद इनको प्राप्त हुआ और स ई १८३७ में डाकखानेके नियमांके सुधारकी तरफ इनका ध्यान किरा निदान इन्होंने एक पुस्तक रची और उसमें इस बातपर जोर दिया कि सिद्धियोंपर सौलके हिसाबसे महसूल छेना चाहिये, वृत्तिके हिसाबसे नहीं। कुछ दिनोंबाद पार्लियामेंटने एक कमीटी इनके विचारोंकी जाँचके लिये नियत की जिसने खूब जाँच करनेके बाद इनकी राजकीयोंकी सिफारिशकी एवं स ई १८४० में पेनीपोटेजका आईन जारी किया गया और हिल साहिबको इंग्लैंडके पोष्टमास्टर जनरलका मोहवा मिला। योवेही दिनों बाद मालूम हो गया कि पेनीपोटेजका आईन जारी करनेसे सरकारको बहुत फायदा हुआ है। स ई १८६४ में हिल साहिबको दो हजार पाँच घण्टिककी पेन्शन मिली और के सी वी की उपाधि स ई १८४० हीमें मिल चुकी थी। भास्करोंई विश्वविद्यालयमें भी सी सी पद की उपाधि आपकी दी थी। स ई १७९५ में जन्मे स ई १८७९ में मरे।

हुमायूं (द्वितीय मुगलसम्राट्दिल्ली)—यह मुगल सम्राट् बाबरका बेटा था, इसके तीन छोटे भाई और थे। २२ वर्षकी उम्रमें यह बीमार पड़ा, जीनेकी कुछ आशा न रही, तब तो बाबरने जो अपने बेटोंको अत्यंत प्रेम करता था इसके पलंगके चारों तरफ घूमकर इत्थरसे मार्चना की कि " हे परमात्मन् ! इसको जी दाम दे और बचलेमें मुझे ले "। उसी वक्तसे हुमायूंको आराम हो चला और बाबर बीमार हो मर गया। मरतेवक्त बाबरने हुमायूं से कहा कि अपने छोटे भाइयोंके साथ किसी तरहकी गई न करना। पितृभक्त हुमायूंने स ई १५३० में तख्तपर बैठकर गजनी, काबुल, कंधार तथा पंजाब अपने भाईका मुरोंको, सम्भल घुसरे भाई अकफरीको, अलवर तोसरे भाई बिंदाळको दिए और केवल आगरे तथा दिल्लीके भाग पासका मुल्क अपने पासरखा। स ई १५४० में शेरशाह बंगालके सुबेदारने हुमायूं को परास्त किया, ऐसी हीन दशामें हुमायूं ने अपने भाइयोंसे मददमांगी लेकिन उन्होंने मदद देनेके बजाय उसकी जान भी छेलेनी चाही निदान लाचार होकर उसे ईरानकी तरफ भागना पड़ा, यत्नेमें अमरकोटके किलेमें स ई १५४२ की साल उसके अफसर पैदा हुआ।

हुमायूँ के पास उसवक्त एक मुश्कनाफेके सिषाय और कुछ न था निदान उसी को तोड़ अपने सदारोंम थोड़ा २ घांट खुशी मनाई । हुमायूँ बड़ा दयालु, उदार और विद्वान् था, ज्योतिषमे पूरा अभ्यास रखताथा, भक्तधरकी जन्मपत्नीमें अस्मत्तम ग्रह देख खुशी के मारे नॉखनेलगाया । स ई १५४४ में ईरान पहुँचनेपर शाह ईरानने यथोचित हुमायूँ की खातिर की और कुछ दिनबाद १० हजार फौज देकर हिंदोस्तानकी तरफ घापिसभेजा । रास्तेमें हुमायूँ ने अपने फूतमी, निर्दयी भाई कामरौँ कोपरास्त कर्के काबुल, कंधार तथा पंजाब छीन लिया और दिल्लीकी तरफ बढ़कर स ई १५५५ में सिकन्दरशाह सूर को परास्त करके दिल्ली का सख्त विजय किया । सदारैरमखौँको जिसने हरहालत में हुमायूँ का साथ दिया था सर्वोच्चपदवी खानखानाकी दी गई और आगरेसे बढ़कर दिल्ली में राजधानी नियत कीगई । दिल्लीमें केवल ७ महीने राज्य करनेके बाद सन्ध्या समय एक दिन हुमायूँ बाळाखानेपरसे नमाज पढ़नेके लिये उतरते वक्त नीचे गिरपड़ा और ४९ वर्षकी उम्रमें मरगया । हुमायूँ अपने पिताकी समान दृढ चित्त महोकर बड़ा दयालुथा, उसके बुझदाई भाई कईवके उसके हाथमें पड़े लेकिन उसने कभी जानसे नहीं मारा और इसी लिये उसको अनेक कष्ट उनके द्वारा भोगने पड़े । कहते हैं कि जब हुमायूँ शेरसूरसे हारकर भागा जाताथा तो भोजपुरके समीप उसका घोड़ा गंगामें गिर पड़ा जिससे वह डूबने लगा, इस मौकेपर निजाम नामक मिरताने उसकी जान बचाई और इनाममें यह मोंगा कि जब हजरत आगरेमें पहुँचें तो एक दिन दोपहरके वक्त वहाँ घंटेकी बादशाही मुहाको अता फर्मौँ । जब हुमायूँ आगरे पहुँचा तो निजाममी हाजिर हुआ, हुमायूँके हुकमसे उसने २३ घंटे तख्तपर बैठकर इजलास किया और तमाम अमीर धीर उसका हुकम बजाछाये । निजामने इस थोड़ेसे वक्तमें अपनी मशकमेंसे कटघाकर समदेका सिक्का चलाया और अपने भाई बंशुको निहाल करदिया । हुमायूँ स ई १५०८ म पैदा हुआ, स ई १५५६ में मरा ।

हुलासरामकवि—यह संहलद्वीपीम्राट्टण प्रयागवृत्तके पुत्र जि वारावकी, वहिसीछ फतेहपुर, ग्राम रामनगरके रहनेवाले थे । बुद्धिमकाश और वैताळ पञ्चविंशतिकाका भाषापद्यमें अतुषाद तथा रामायण छंदाकाण्ड इनके रचे ग्रंथहैं । वि स १८४५ में जमें, वि स १९१२ में मरे ।

हेमचन्द्र (प्राकृतका अन्तिमवैयाकरण)—कुमारपाल अरिचले पता लगता है कि चम्बईमदेशान्तर्गत खम्भातके रहनेवाले चाचिग नामक वैद्यके घर वि स ११४५ में चाङ्गदेव नामक पुत्रने जन्म लिया । चाङ्गदेव ९ वर्ष की उम्रमें जैन मत ग्रहण करके साधु होगया और तबहीसे उसका नाम हेम चन्द्र प्रसिद्ध हुआ जिसकी गणना जैनियोंके महत्पुरुषांमें है । बड़े होकर हेमचन्द्रने पटन (गुजरात) के राजा सिद्धराज तथा कुमारपालके दरारमें बड़ा सरकार

१८२३ में हिंदोस्तानको आये और अफगानिस्तान तथा सिक्खोंकी लड़ाइयोंमें बड़ी धीरतासे लड़े। सन् ५७ के गदरमें लखनऊ तथा कान्हापुरमें इन्होंने यागियोंको परास्त किया। लखनऊ रेजीडेन्सीमें थियेहूये अंग्रेजोंके प्राण इन्होंने बड़ी धीरतासे लड़कर बचाये, उक्त अवसर पर इन्होंने ४०० सेनासे ५० हजार यागियोंको परास्त कियाया लेकिन अंतमें आप भी घायल हुये और कुछही दिन धाव मरगये। जब इनकी धीरताकी रिपोर्ट इङ्ग्लैंड पहुंची तो पार्लियामेंटमें प्रसन्न होकर अंग्रेजी सेनामें मेजर जनरलका मोहदा तथा १ हजार पौंड वार्षिककी पेन्शन इनको दी, लेकिन जब यह खबर हिंदोस्तानमें आई तो ईश्वरका साहस मर चुके थे। स ई १७९५ में जन्मे, स ई १८५८ में लखनऊमें मरे।

हैस्टिङ्गज (वारेन हैस्टिङ्गज - Warren Hastings) इन्होंने वोर सेस्टर शायर (इङ्ग्लैंडके) एक प्राचीन प्रतिष्ठित वंशमें जन्म लेकर वेस्ट मिनिस्टर इस्कूलमें शिक्षा पाई थी। स ई १७५० में क्लार्कके पदपर नियत होकर ईस्ट इन्डिया कम्पेनीकी चाकरोंमें हिंदोस्तानको आये। फार्सी तथा हिंदोस्तानी भाषाभी खूब जानतेथे और बढ़ते ३ गवर्नर जनरलके पदको प्राप्त हुये थे। इन्होंने हिंदोस्तानमें अंग्रेजी अमल्दारी बहुत कुछ बढ़ाई। स ई १७८५ में नौकरी छोड़ इङ्ग्लैंड चले गये और वहाँपर उन अत्याचारोंके कारण, जो हिंदोस्तानमें रहिकर इन्होंने काशीनरेश श्वेतसिंहपर तथा अवधकी बेगमोंपर किये थे, पार्लिया मटने इनपर मुकद्दमा कायम किया। ८ घण पर्यंत मुकद्दमा चला, अंतमें स ई १७९५ की साल निरपराध समझ साफ छोड़दिये गये। उक्त मुकद्दमेमें इनका बहुत खर्च हुआ था जिससे गरीब होगयेये लेकिन पाई ही दिनबाद पार्लिया मंटने ४ हजार पौंड वार्षिककी पेन्शन इनको दी। स ई १७६६ में जन्मे, स ई १८१८ में मरे।

होमर - (Homer) इस यूनानी कविके देश, काल तथा चरित्रोंकी निश्चय ठीक हाठ हात नहीं होता। अनेक विद्वानोंकी सम्मति है कि यह सिमथा की रहनेवाली एक अनापलङ्कीके पुत्र थे। प्रसिद्ध ग्रंथ "इलियड" तथा "ओडेसी" इन्हींके रचेहुये हैं उक्त ग्रंथोंका अनुवाद अंग्रेजीमें कबिपोपने किया है। होमर अंधे थे और इनसे पहिले यूरुपमें कोई दूसरा कवि नहीं हुआ। समय इनका स ई से प्राय ८०० वर्ष पूर्व है।

होलराय (कविहोल) - मुगलसम्राट् अकबरके दीवान राजा हरब शराय इनका सत्कार करतेथे। हरबशरायने जि० बाराबर्काम इनको कुछ जमीन दीथी जिसपर इन्होंने अपने नामका होलपुर गाँव बसायाया। एक दिन गो० तुलसी दासजी होलपुरमें होकर निकले, होलरायजीने उनकी बड़ी भाड भगतकी और उनके लोटेकी प्रशंसामें कहाकि-

“ लोटा तुलसीदासको छात्रटकाको मोल ” ।

शुर्सीईमाने यह मुनकर कहाकि-

“मोल तोल कसु है नहीं लेठ रायकवि होल” । होलरायजीने उस छोटेकी मूर्तिके समान स्थापनाकी और जबतक जति रहे उसकी पूजा करते रहे । उक्त लोटा होलपुरमें अबतक मौजूद है । होलराय वि स १६४० में विद्यमान थे । ग्रामहोलपुर अबतक उनके वंशजोंके अधिकारमें है ।

हंसराज (हंसराज निदानके कर्ता)—इनकी कविता श्लोक बद्ध अति अनूठी है । श्लोक ऐसे ललित हैं कि जिनके पढ़ने तथा श्रवण मात्रहीसे चित्तको आनन्द होता है । यह बड़े वैद्य थे । विशेष हाथ इनका नहीं मालूम ।

ह्यूम (डेविडह्यूम—David Hume)—इस प्रसिद्ध इतिहासकारने धर्म-विक्रमशापर(इङ्ग्लैन्ड)के एक सम्य मनुष्यके घर जन्म लेकर एडिनबरो (स्काटलैन्ड)के विश्व विद्यालयमें शिक्षा पाई थी । स ई १७३४में वृस्टल नगरके किसी प्रधान कार्यालयमें क्लर्क (लेखक) होगये थे लेकिन काल्य रचनाकी ओर अधिक रुचि होनेके कारण थोड़ेही दिनोंबाद नौकरी छोड़ फ्रॉंसको चले गये । इन्होंने बहुतसी पुस्तकें रची थीं जिनमेंसे इङ्गलिस्तानका इतिहास मुख्य है । यह अनेक प्रसिद्धि सकारि मोहर्षोंपर भी रहे थे, अंतमें थोड़ीसी पेन्शन पाकर अपनी जन्मभूमिमें आ रहे । इसके घाप घर विक्रमशापरसे स्काटलैन्डकी राजधानी एडिनबरोमें जावसेये और वहाँपर स ई १७९१ में डेविड ह्यूमका जन्म हुआ था । स ई १७७६ में डेविडह्यूम सिधारे ।

ह्योई थसङ्ग—(Huen Thsang)—यह चीनीपथिक बौद्ध साधु था । स ई ६२९ में चीनसे चलकर फरगाना, समरकन्द, बुखारा तथा बल्ख होता हुआ हिंदास्तानको आयाया और इस देशको चारों दिशाओंमें भ्रमण करके स ई ६४५ में चीनको लौटगया था । इसने अपनी यात्राके ग्रंथमें लिखा है कि “उन दिनों काबुलसे लेकर बगालतक और हिमालयसे लेकर संहरुद्वीपतक सर्वत्र देश छोटे ३ राज्योंमें विभाजित था । कश्मीर, मगध और उड़ीसाके सिवाय बौद्धमतकी दशा अन्य सब जगह गिरसी हुई थी । भारतवासी मनुष्य सस्त्रे, विद्वान, शूरवीर, परिश्रमी तथा उद्योगी थे ” ।

ह्योईथसङ्ग ने अपने यात्राके ग्रंथमें उस समयके अनेक छोटे ३ राज्योंका भी, जिनके अब नामतक नष्ट होगये हैं, ब्योरेवार खविस्तर वृत्तांत लिखा है । प्रत्येक राज्यके सम्बन्धमें उसकी सीमा सहित लम्बाई चौड़ाई तथा फसलों और फल फूलोंका हालभी लिखा है । मनुष्योंकी समाजिक और धार्मिक व्यवस्था और रहिन सहिन द्रुग् ब्याज इत्यादिकाभी वर्णन किया है । संक्षिप्त उक्त पुस्तकके देखनेसे भारतवर्षकी दशा जो स ई के सातवें शतकमें थी स्पष्ट मालूम होजाती है ।

क्षेमकरण मिश्र (कवीश्वर)—यह सरस्वरीया ब्राह्मण ग्राम घनौली सहिखील रामसनेही घाट जि० बाराबंकीके रहनेवाले थे। पिताका नाम भाषार मिश्र, पितामहका छलीराम और प्रपितामहका नाम छाल मणि मिश्रया। वि० सं० १८३५ में इनका जन्म हुआ, ७ वर्षकी अवस्थासे संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया कई बड़े २ पंडित विद्वानोंसे विद्यापढी, पश्चात् बहुत दिनोंतक मयुरामें रहकर विंगल शास्त्राध्ययन किया। यह संस्कृत तथा भाषा दोनोंहीमें कविता करत थे। संस्कृतमें श्रीराम रत्नाकर पृथ, रामास्पद, गुरुकथा तथा भाद्रिक इतने रच्ये ग्रंथ हैं। भाषामें रामगीतमाळा, कृष्णचरितामृत, पदविद्यास, वृत्त भास्कर पशुनाथ घनाक्षरी, गोकुलचंद्रमा तथा कथानक नामके ग्रंथ इन्होंने रचे थे इन्होंने अम्बाळा, घरोडा तथा बम्बई आदिस्थानोंमें जाकर बहुतसा द्रम्योपार्जन कियाथा और गयाश्राद्ध, ब्रह्मभोज तथा ८ घन्याभाके विवाह धूमधामसे करनेमें खूब खर्च किया था। अन्तावस्थाने १४ वर्ष पर्यंत अयोध्यावास करके क्षेमकरणजी वि० सं० १९१५ की साल परमधामको सिधारे।

क्षेमराज श्रीकृष्णदास सेठ 'श्रीवेंकटेश्वर' स्टीम प्रेस बम्बई के मालिक—आपसाधारण रीतिसे अपना नाम क्षेमराज श्रीकृष्णदास लिखते हैं। आपके पिता श्रीकृष्णदासजी राजपुतानाके 'रोखाघाटी प्रदेशमें बुरु नगरके रहनेवाले थे। जन्म आपका कार्तिक शुदी ८ वि० सं० १९१३में हुआ। छद्मी वेंकटेश्वर प्रेस, कल्याण (बम्बई) के मालिक सेठ गंगाविष्णुजी आपके बड़े भाई थे। प्राय ३० वर्षसे आप कुटुम्बसहित बम्बईमें रहते हैं और भास्तिवृता, सरलता, व्यापारकुशलता तथा देशहित इत्यादि सुदृढ गुणोंक उदाहरण हैं। आपका जारी कियाहुआ " श्रीवेंकटेश्वर समाचार " सप्ताहिकपत्र हिंदीके सच्चात्म समाचार पत्रोंमें है।

प्राचीन संस्कृत विद्या तथा मातृभाषा हिन्दीके उद्धारके लिये आपका पुस्तक प्रकाशनका व्यापार अत्यंत प्रशंसनीय है। इससे जगदुपकारके साथ २ छात्रोंही रूपसेका नफा आपको हुआ है। हजारों संस्कृत तथा हिन्दीके बुभुक्षु प्राचीन और अर्वाचीन ग्रंथोंको छापकर तथा उनके लिखक रक्षवाकर और आवश्यकीय विषयोंपर नयेग्रंथ बनवाकर सर्व साधारणके लिये आपने ऐसी बड़ी सुलभता करदी है कि भारत भूमिमें पहिले की अपेक्षा अब बहुत कुछ विद्याकी वृद्धि देखनेमें आती है। बड़े २ राजे महाराजे बम्बई जानेके अवसरपर श्रीवेंकटेश्वर प्रेसमें पधारते हैं, सेठजी इनका खन्मान करना अपना सौभाग्य समझते हैं और वहभी सेठजीकी उचित प्रविष्टा करके सर्व साधारणको देय दितका ठठेसना देते हैं। सेठजी स्वधर्ममिय पुरुष हैं बड़े नीतिनिपुण हैं। सेठ क्षेमराज श्रीकृष्णदासजी आजदिन सं० १९६३ में तम पुत्र और दो कन्याभाके पिता है। स्वास्थ्य अच्छा है और धन प्रविष्टा गौरव सुदृढि शक्ति सब कुछ प्राप्त है। देसेही उद्योगी सरपुरुषोंका जीवन सफल बहाता है।

जीवन चरित्रस्तोम (मदनकोष) परिशिष्टभाग ।



आकलैड (जार्ज एडिनलार्ड आकलैड—(George Eden Lord Auckland)—स ई १७८४ म जमोहरहमके घैरोनेट, विलियम एडिनके तृतीय पुत्रये ई स १८०६ में आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटीसे ग्रेजुएट हुये । एडाइमिन्टो गवर्नरजगरल हिंदकी घड़िनेसे आपकी शादी हुईथी । प्रथम बहुत दिनोंतक आपरलैडके चीफ सिफेटरीरहये । १८३६ से १८४२ तक गवर्नरजनरल हिंदके पदपर काम किया । १८४८ में इंग्लैंडमें परलोकगामीहुये । आप बड़े योग्य शासकये, माळ विभाग का प्रबंध आपने प्रशंसनीय कियाया । लेकिन रूसियोंके मयसे दोस्त मुहम्मद की जगह ब्रिटिश गवर्नमेंटसे मिथसा रखनेवाळे शाहशुजाको काबुलकी गद्दीपर बिठलानेके लिये अंग्रेजी फौज अफगानिस्तानमें भेजकर बैठेबिठये जो अशान्ति आपने फैलाई उसके लिये आपका शासन इतिहासमें बदनामहै । अंग्रेजी फौज काबुल, कंधार तथा गजनीपर अधिकार करके १८३९में शाहशुजाको काबुलकी गद्दीपर बिठलानेमें समर्थ हुई लेकिन प्रजाका मन मुठ्ठीमें नहीं आसका क्योंकि वह लोग शाहशुजाको नापसंद करतेये । १ वर्ष तो काम बेसतके चलागया लेकिन १८४१ म दोस्त मुहम्मदके पुत्र अकबरखोंके सफलानेसे अफगानिस्तानकी समस्त प्रमाने उपद्रव उठाया और अंग्रेजी फौजको जो केवल १६००० थी घेरलिया । सर विलियम बैकनाटन साहब सेनापति गोलीसे मारेगये और बड़ी खुशामद दरामदके घाद अंग्रेजी सेनाको हिंदोस्तान वापिसमानेकी आहा भिळी । लेकिन अफगानिस्तानमें रहिनेके कारण यह बीमार और जादेसे फड़कड़ाती हुई सेना दूर नहीं पहुंचने पाई थी कि अलेख्य अफगानोने दूटकर बड़ी निर्दयतासे उसको नष्ट करढाळा । केवल यापल होकर डाक्टर ब्रिडन (Dr Brydon) साहबने फटेहालों कई दिनके पाकेसे एक अधमरे टहूपर उषों रषों भागकर जलालाबादके किलेमें खबर पहुंचाई कि १६००० फौजम केवल मँही बचाई । यह खबर सुनकर अफसरों और सिपाहीयोंकी आंखोंसे आंसू चलनेलगे और जहां ३ यह खबर पहुंची सब

छोगोंने शोक मनाया। वास्तवमें यह शोक नहीं भिटसका जबतक कि लाई भाकल्लेडके उत्तराधिकारी काट एलनबरोके शासनमें अंग्रेजी सेनाके कारुण्यर चढ़ाई करके इस हत्याके बदलेमें अफगानोंके रक्तसे नहींनाछ नहीं बहा दिये।

आलकट (कर्नेल यच यस आलकट—Col H S Olcutt)—अमेरि कन विविध युद्धमें बड़ी धीरसासे लड़े। युद्धविभागके स्पेशल कमिश्नर रहे मैडमल्वेघेतसकी प्योसोफिकल सोसाइटी स्थापन करनेमें भाषाईकी मददसे सफल हुई थी। स ई १९०५ में धूरे हैं और प्यासोफिकल सोसायटिमेंके प्रधान हैं।

एडीसन (टी ए एडीसन प्रसिद्ध आविष्कार—T A Edison, the famous inventor) उत्तरी अमेरिकामें ओहियोस्टेटके मिलन नामक नगरमें ११ फरवरी, १८४७ की साल जन्मे। अब न्युजर्सी (उत्तरीअमेरिका)में रहते हैं। भापके पिताके घरका निकास हाथैडका या औरमाताके घरका निकास स्कूल छेडका। भाव प्रथम टेलीग्राफका काम करतेये। पश्चात् १८७१ से ७६ तक LawGold Indicator कम्पनीके सुपरिन्टेन्डेन्ट रहे। निम्नस्य आविष्कार भावने कियेहैं -

- 1 Gold and stock Printing टेलीग्राफ
 - 2 System for Quadruplex and sextuplex Telegraphic transmission
 - 3 The carbon Telephone Transmitter (दूर बैठे बातचीत करने का यंत्र)
 - 4 The Microtacometer for detection of small variations (गर्मी और सर्दीके सूक्ष्मतर अन्तर जाननेका यंत्र)
 - 5 The Acrophone and Magophone for amplifying and magnifying sounds (इस यंत्रके द्वारा अत्यंत मंदस्वर भी भारी आवाजके समान सुनाई देता है)
 - 6 Electric pen (बिजलीका कलम)
 - 7 Electric Railway (बिजलीकी शक्तिसे चलनेवाली रेलवे)
 - 8 Kinetograph
 - 9 Phonograph (इस यंत्रमें बातचीत अथवा राग भरकर, रबड़ी मलियाटाप सुनाया जाताहै।)
 - 10 The Incandescent Light System (बिजलीकी रोशनी)
- आसफनाह दशहजारी सिपहसालार खानखाना बहादुर-

(मुगल सम्राट शाहजहाँके मुख्यमंत्री)—आपका असली नाम स्याजा अबुलहसन था । आपकी बटी मुमताज महल (ताजमहल) की शादी शाहजहाँ (स ई १६२८-५८) के साथ हुई थी और बादशाह जहाँगीरकी बेगम नूरजहाँ आपकी छोटी बहिन थी । बहिनके साथ आपका कुछ विगाहपा, इसलिये पहिले कुछ समय तक आपको बादशाहका वीरभोजन बनना पड़ा था । फिर आपको बंगालकी सूबेदारी दी गई । पश्चात् मुख्य मंत्रीके पदपर तरकी हुई और अटककी जागीर मिली। सिपह साठार महावतखाने स ई १६२७-२८में जब बादशाह जहाँगीरको कैदकर लिया था तो उस अवसरपर आसफजाहने अटकके किलेमें भाग कर पनाह ली थी । महावतखाने किलेको घेरकर इनकोभी पकड़ लिया लेकिन शीघ्रही पंजाबकी सूबेदारीपर भेज दिया । सन्दी दिनोंजहाँगीरका देहाव होगया और भाइयोंके मुकाबलेमें इन्होंने शाहजहाँकी सख्तपानेके किये मदद की शाहजहाँने तख्तपर बैठकर इनको अपना मुख्य मंत्री बनाया और ६ हजारी मनसब तथा “आसफखान” का खिताब दिया । पश्चात् “आसफजाह” का खिताब तथा वसहकारी मनसब इन्होंने पाया । फिर बीजापुरके नवाब आदिल शाहको परास्तकरके इन्होंने सिपहसाठार खानखाना बहादुरकी सपाधि प्राप्त की । यह बड़े विद्वानथे । दिल्ली भागरा और कश्मीरमें इनके बड़े २ मकामथे । छाहौरमें मरे और जहाँगीरकी कबरके पास दफनाये गये । दाह करोड ६० की जवाहरात छोड मरेथे ।

एलजिन (विकटर अलेकजडर ग्रूस, यम ए, के. जी, जी सी यस आई , जी सी आई ई, पी सी , यल यल ही , डी सी यल , एलजिन और कित कारडाइनके ९ वें अर्क—

१६ मई, स ई १८४९ की सालममें । आपके पिता अष्टम अर्क आफ एलजिन १८६२-६३ में वायसराय हिंदिये और उनका देहाव हिमालय पर धर्मशाळा नामक स्थानमें हुआ था । हमारे चरित नायककी शादी १८७६ की साल सौये-स्कोके अर्ककी बटी कान्सटैन्ससे हुई थी। एटन और वैलियककाजिज भाक्सफोर्डसे यम ये की परीक्षा पास की । १८८६में विकटोरिया महारानीके घरेलूविभागके खजांची तथा कमिस्तर तामीरातका ओहदापाया । थोड़ेही दिनोंबाद फायकशा परके छाडलफतिनेन्तका पद आपको मिला । १८९४ से ९९ तक वासराय हिंदियेके उच्च पदपर रहे । सहवास सम्मति आईन आपहीके शासनमें जारी हुआ था एलजिन १९०५ म विद्यमानहैं । प्रसिद्ध लार्ड ग्रूस आपके पुत्रहैं । एनीवि-सेन्ट (सेन्ट्रल हिंदूकालिज बनारसकी सस्थापक) आप ध्येसोफिकल सोसाइ-

टियोंकी प्रशारक होकर देशदेशान्तरोंमें धर्मोपदेश करती हैं। वैज्ञानिक तथा ब्रह्मज्ञानिक विषयोपर अंग्रेजीभाषाम अनेक ग्रंथ आपके विरचित हैं। विक्रियम पेजबुद्ध साहसकी पत्नी एमिलोकी कुशासे स ई १८४७ की साल आपका जन्म हुआ। १८६७ की साल शिवसी (छिनकन शायर) के पादरी फ्रेंक विसेन्डेके साथ शादी हुई। लेकिन ईसाई मतपर आपको विश्वासनहीं था, इसकारण १८७३में विवाहका बंधन टूटगया। पिता आपको बालक छोड़ मरे थे निदान एक घनाढ्य छेडी (सख घरानेकी स्त्री) के साथ गुप्तविद्या पठनार्थ आप इन्डोइवे जर्मनी तथा फ्रांसको चलीगई थीं। विद्योपार्जन निजके तौरपर कियाया पश्चात् विज्ञानकी प्रथम परीक्षा छन्दन यूनीवर्सिटिसे पासकी थी। १८७४ की साल जातीय साधारण समाजमें संयुक्त हुई और बहुत दिनोंतक प्रसिद्ध नास्तिक सरस्वालय ब्राडरल यम पी के जीरी किये हुये पत्र "नेशनल रीफार्मर" का सम्पादन किया। १८८७ से ९० तक छन्दनके स्कूलबोर्डकी तथा कई अन्य सभाओंकी मेम्बर रहीं। १८८९ में मैडमवैट्सकीकी चेलाहोकर एपासो फिकल सोसाइटीमें शामिल हुई और तबसे उपदेश करती हुई पुनियाक प्रायःसब भागोंमें हो आई हैं। आपके उपदेशसे बहुतसे लोगोंने एपासोकी धर्म ग्रहण कियाहै। १८९८ में आपने सेन्ट्रल हिंदूकांजिज बनारसकी बुनियादढाली और देश देशान्तरोंसे बन्दाकरके बहुतसा रूपया उसके व्यय निर्वाहके लिये जमा किया। भगवद्गीता आदि प्राचीन संस्कृत ग्रंथोंको विचारती रहतीहैं। मांस नहीं खाती हैं भाषण आपके अमत्कारिक होतेहैं। १९०५ में जीवित हैं। गुप्त विद्या विषयक अनेक ग्रंथ आपने बनाये हैं।

पतमादुहौला मिर्जाग्यास (महिला नूरजहांके चाप) इनका बसली नाम छवाजा ग्यासवेग था। चाप इनके मुहम्मद शरीफुद्दीन खुरासानके रहनेवाले थे और शाह ईरानके दरबारमें मन्त्री थे। पिताकी मृत्युके पीछे ग्यास गरीब होकर हिंदोस्थानको खीबझों सहित नौकरीकी तलाशमें पैदल चले। रास्तेमें इनके एक लड़की हुई जिसका नाम मेहकसिखा रखा। आगरा पहुँचकर बादशाह अकबरकी फौजमें तीनसांकी मनसबदारी इनको मिल गई और फिर तरकी पाकर कागुलके सूबेदार हुये। पश्चात् कमिसेरियट विभागके कमिसेरियट केनरल का मोहवा और पतमादुहौलाका खिताब आपको मिला। बादशाह अकबरके बाद जहांगीरने तख्तपर बैठकर आपकी बेटी मेहकसिखा (नूरजहां) को अपने हरममें दाखिल किया और आपको मुल्कमेंभीका पद तथा छन्दनारी मनसब दिया। आप बड़े दानी और दिलेर थे। फारसमें गधरबना भर्ती परतेये। बादशाहने साथ कश्मीरको जातेहुये १००१ हि० की साल रास्तेमें मरगये। आपका मयूरा "पतमादुहौलाका इनामबादा" आगरामें अस्तक

विद्यमान है और दर्शनीय इमारतों में गिना जाता है। सघनाट शाहजहाँ के मुख्य मंत्री भासफ़लाह आपके पुत्र थे ।

ऐम्हर्स्ट (विलियम लार्ड ऐम्हर्स्ट William Lord Amherst)
 घापनगर (इङ्ग्लैंड) में स० इ० १७७३ की साठ जन्मे । पिता आपके विलियम ऐम्हर्स्ट नामक थे । क्रायस्ट चर्च काठिज, आक्सफोर्डसे यम० १० पास किया काठिज, छोड़नेके बाद यूरोप में भ्रमण करके अनेक मुलकोंकी भाषाये सीखी तथा वहाँकी रीतिरसम आदिका अनुभव प्राप्त किया । १७९७ में आपके तथा प्रथम लार्ड ऐम्हर्स्टका वेदांत हुआ और आपने उनका सिताष पाया । पश्चात् ब्रिटिश गवर्नमेंटने राजदूत बनाकर आपको चीनदरबारमें भेजा । क्रमशः अनेक और उच्च पद पाये । फिर गवर्नर जनरल हिन्दुका ओहदा आपको मिला जिसपर १८२३ से २८ तक रहे । इङ्ग्लैंड घापिस जाकर १८२९-३० में बादशाह जार्ज चतुर्थकी और १८३०-३३ में बादशाह विलियम चतुर्थकी सेवामें छाह आफ दी वेब-कैम्बरका पद पाया । १८३४ में नायट (Kt) का सिताष पाया । १८३५ में गवर्नर जनरल, कनाडाका पद आपको दिया गया लेकिन आपने अस्वीकार किया । १८३७में आपकी स्त्री मरी । १८३९ में दूसरी शर्दी की । १८५७ में परलोकगामी हुये ।

आपका हिंदोस्थानी ब्राह्मण प्रथम ब्रह्मायुद्ध और भरतपुरका किल्ला विजयकरनेके लिये प्रसिद्ध है । १८२४ में ब्रह्माके राजा बळोम्पङ्गाने बंगालके अंग्रेजी मिलापर हाथ फेंकना शुरू किया । जब समझानेपर भी उसने नहीं माना तो छाह ऐम्हर्स्टने छद्मार्थका इस्तिहार जारी किया । ३ तरफसे अंग्रेजी फौजन ब्रह्माको घेरा । २ वर्षसे अधिक तक युद्धचला गवर्नमेंटकी २० हजार सेना नष्ट हुई और १४ करोड़ रुपये खर्च पड़े । अन्तमें अंग्रेज जीते और ब्रह्माके राजानें १८२६ में मानदेहकी सन्धि स्वीकार की जिसके अनुसार उसका आसामपर कुछ अधिकार नहीं रहा और आराकान तथा टेनासेरिम अंग्रेजोंको मिले । इससे कुछ ही महीनेबाद १८२७ की साठ भरतपुरमें गद्दीके घास्ते झगड़ा फैला । यह सुभवसर पाकर छाह ऐम्हर्स्टने छाह फोम्बर मियरको भरतपुरपर चढ़ा दिया । छाह फोम्बर मियरने सुरग ढगाकर भरतपुरके किलेको सड़ा दिया जिससे भारतवासियोंके दिलमेंसे उक्त गद्दीके भ्रमण होनेका श्रुमान निकल गया ।

ओयामा (मार्क्युस ओयामा जापानी साम्राज्यके सर्वोच्च सेना-ध्यक्ष—Marquis O'yama, Field Marshal of Japan)—जापानके प्रतिष्ठित

समुदाई बंगलमें स'ई १८४३की साल जन्मे फ्रांसदेशमें शिक्षापाकर फ्रांसवर्षाओं स्थित जापानी राजदूतके सैनिक भफसरका पद पाया। आपके वंशम वीरताका काम पहिलेहीसे होता आताहै। आप बड़े कुरूप छेफिन लम्बे चौड़े हृष्टपुष्ट हैं श्री आपकी सुंदर, सुशीला, सुशिक्षिता, गर्वहीन है और अमेरिकाके एक क्राफिममें शिक्षा प्राप्तकियेहुये है। फ्रांससे छोटनेपर जापानके सेनाविभागमें एक संधा पर आपको दियागयाकुछ समय पीछे आपको बुद्धिमान देखकर जापानी सरकारने यूरोपके देशोंसे युद्धपद्धति सीख आनेके लिये भेजायहांसे छोटकर यमागाटाकी आधीनघामें आपने जापानी सेनाका प्रशसनीय सुधार किया। पश्चात् क्रमशः युद्ध विभाग और जलसेनाके प्रधान रहे। शिक्षाविभागके मंत्रीका भी काम किया। १८९४ में युद्धविभागके मंत्रीका पद पाया। चीन जापानके संग्रामके समय जापानी सम्राटसे आज्ञा लेकर युद्धमसम्मिलित हुये और अपनी १० हजार सेनाके साथ बड़ी बहादुरीसे लड़कर पोर्ट आर्थर टिळबर्ट और टिछिनघानमें अधिकार किया चीनयुद्धके पश्चात् आप जापानी साम्राज्यके अत्यंत प्रिय कर्मचारी होगये पहिले फौन्ट, फिर मार्कुयसकी उपाधि पाई और जापानी साम्राज्यके सर्वश्रेष्ठ सेना-पक्षका पद पाया। सेनाको सुयोग्य बनानेके लिये सैनिकापर बड़ी दृष्टि रखतेहैं और अन्याय नहीं करतेहैं। निम्नकर्मचारी तथा सैनिक आपपर विश्वास रखतेहैं और आदरणीय मानते हैं। इस जापानयुद्धमें जो १०४०६ म हुआ आपहीने पोर्ट आर्थर, मंजुरिया, मुकदन हत्यादिको फतेह करके रुस जैसे बृहत् साम्राज्यकी सेनाके धुरें उड़ादियेहैं जिससे बुनियाभरका रुसि याको परास्त होवे देख दांतामें संगछी दाबना पड़ी।

फर्जून (जार्ज नैथेनियल फर्जून, एम ए., जो एम एस भार, जो एम आई ई, पी सी, एफ भार एस, जे पी., डी एल केडिलेस्टनके प्रथम धरन (George Nathaniel Curzon, M.A. G.M.S.I., G.M.L.L., P.O., F.R.S., J.P., D.L., 1st Baron of Kedleston) — ११ जनवरी, स ई १८५९ की साल स्कॉटलैंड तथा ब्रिटिशके चतुर्थ धरन रॉबर्ट वेल्फ्रेड नैथेनियल होलडेन फर्जूनके घर केडिलेस्टन (मायरलैंड) में जन्मे। एटन और कैलिफोर्न क्राफिज आक्सफोर्डमें एम ए. तथा डी एल की परीक्षाये उत्तीर्णकीं। १८९५ में पार्लियामेंट (अमेरिका) के एक रॉसकी परत सुंदरी बेटी मेरी विक्टोरियानामकसे शादी की। आप पहिले मिटिगुगवनमेन्टकी सेवामें १८८० की साल युनीयनके मेसीडेन्ट हुयेये। १८८५ म मुख्य भाषण क्राई साहित्यवरीके मंत्रीके प्रायवेट उपमंत्रीका पद पाया और उही साल उही शायरकी तरफसे पार्लियामेन्टकी मेम्बरीके लिये फोशिरा की। १८९१ से ९२

तक उपमर्षी आफ स्टेट रहे । १८०५ से १८ तक विदेशी मामलातके उपमर्षी आफ स्टेटके पदपर काम किया और मध्य एशिया, इरान अफगानिस्तान पामी उपर्युक्त स्पामर्षी, इन्डो श्याना तथा कोरियामें भ्रमण करके पूर्वीय देशोंका अनुभव प्राप्त किया तथा राजकीय भौगोलिक समाकी तरफसे खोनेका पदक पाया । १८८३ में लोथियन प्रबन्धका इनाम (Iothian essay prize) और १८८४ में आर्नल्ड प्रबन्धका इनाम (Arnold essay prize) भी आपको मिलाया । १८८३ में आर्नल्ड काठिन आफ एशियाके मेम्बर हुये और १८८६ से ८९ तक लौथ पोर्ट (लकाशायर) की तरफसे पार्लियामेन्टके मेम्बर रहे । १८९९ से १९०५ तक घायसराय हिन्दके पदपर नियुक्त रहे । यह पद इस समय पृथ्वीके राज्यकर्मचारियोंमें सर्वोच्च गिनाजाताहै । आपके शासनमें इस देशमें निरन्तर अकाल और महामारी फैलीरही है लेकिन आपने देशके इन दोनों शत्रुओंका प्रबन्ध भी प्रयत्ननीय कियाहै । यूनीवर्सिटी कमीशन, पुलिस कमीशन, आबपाणीकमीशन, कृषिकमीशन आदि कई कमीशन नियत करके और तिनवतकी शान्तिमिशन, कागुलकी राजनैतिक मिशन और ईरानकी व्यापारी मिशन भेजकरके आपने साम्राज्यकी सीमा दृढ करने गवर्नमेण्टका बल प्रभाव बढ़ाने और अनेक प्रकारसे प्रजाका हित साधन किया । रेलवे आपके समयमें बहुत बढ़ी, यूनीवर्सिटी ऐक्ट जारी हुआहै प्रभापरसे कई कर यटाये गयेहैं, किसानोंके हितकर २ । ३ आईन पास हुयेहैं, सेनिकोंका वेतन बढ़ाया गयाहै और सुपकेसे कई देशी राजाओंमें राज्यके इस्तीफामो देदियाहै। राजनीति आपके विद्वान है और आप अनुभवी विद्वान तथा सुप्रसिद्धका हैं । आपण आपके माधुर्यवासे भरपूर होतेहैं । साम्राज्यको दृढ करने और गवर्नमेण्टका बल बढ़ानेके साथ २ प्रजाका हित करनेमें आप अपना कर्तव्य समझतेहैं । १९०३ में राजराजेश्वर एडवर्डसप्तमके राज्याभिषेकके अवसरपर आपने दिल्लीमें एक प्रभाषोत्पादक वृद्ध वृषार कियाया जो इतिहासमें अद्वितीय है । आपके शासनमें नहरें, रेलवे, सड़कें अस्पताल और धार यटानेके लिये करोंको उपयुक्त मजदूरी दीगई । मुसाफिरोके मारामकी बातें खोखनेके लिये रेलवे योर्ट नियत कियागया । शिक्षा विभागके लिये डैरेक्टर जनरलका पद स्थापन किया स्कूलमास्टर्स, पुलिसवालों और लेक्चररमट आदिके क्लर्कोंका वेतन बढ़ाया । फौज बढ़ाई । सेनापञ्चिका खशोधन किया । कागुल तथा तिनवतके पड़ोसी राज्योंसे सीमा दृढ करनेके लिये मेकडोल बढ़ाया । राजा प्रजाकी सुविधाके लिये आसामकी श्रीकमिश्नरीमें धगालका कुछ भाग मिलाकर नई कफटिने न्ट गवर्नरी नियत की । भारतके शिल्प व्यापारको सहाधारण करनेना दीगई शिल्प व्यापार सम्बन्धी एक नया विभागभी स्थापन कियागया पृथामें कृषिका

लिट्रिज खोला । माचीन स्पानोंकी रक्षाके लिये भी एक नया विभाग स्थापन किया डाक, सारनमक इत्यादि विभागोंका महसूलपटवार्ता ५० लाख पौंड पर प्रतिदशमान माफ किया । किछानोंके करका बोझा घटाया ३ करोड़ रुपया व्याजका छोड़ा । इस प्रकार हमारे व्यापार वापसरायने अनगिनती सुधार किये और २० करोड़ रुपयेके अधिकभारतकी प्रजाका चर भरणे शासनमें पठाया यह सब करनेपर भी बड़ी भारी प्रशंसाकी बात यह है कि, सर्कारी कामदती घटनेके बजाय बढ़ी और सजानेमें बधत् रही । छाट कजनकी रामनीति अत्युच्चश्रेणीकी है । आप राजा प्रजाके सच्चे हितचिन्तक हैं आपवरीसा दूसरा धायसराय हिंदीस्थानमें नहीं आया । स ई १९०५ में इस्तेफादेकर विजायत चलेगये । निम्नस्थ अथ आपके रचेहुये हैं-1 Russia in Central Asia (1889) 2 Persia and the Persian Question (1893), 3. Problems of the Far East (1894)

किचनर (हर्बर्ट हॉरे शियो किचनर, जी सी वी, जी सी यम जी, लार्ड of खर्तुम—Herbert Kitchener, G C B, G C M G, 1st Baron of Khartum)-स ई १८५० की एक आपरलेंटम जन्मे । आपकेपिता यश यश किचनर मिटिशसेनाम लकटिनेज वर्नेछथे । बुलाखिय नगरकी Royal marine Academy नामक पाठशाळामें शिक्षा पाकर रायल इन्जिनियर हुये उन्नतिकरके १८९६ में मेजर जनरलके पदपर पहुँचे और १९०० में दक्षिणी अफरीकामें ब्रिटिश सेनाके कमांडर इन चीफ हुये । आप पीरताकी मूर्तिहैं, युद्धकोशल आपका अछौदिवद है । आपके इतना है कि वैज्ञिक आपके नामके कांप उठतेहैं, ऐसीछाके युद्धमें फरावीसोंको परास्त करके मिछरमें अंगरेजोंका विजयवंत आपहीने पयायाहैखर्तुमको विजय कर अंगरेजोंकी कौशलको आपहीने उज्ज्वल किया है जनरल जनके पदका बदला आपहीने लिया है । छाटे रावर्टसके इन्फैंट चलेजानेपर ट्रांसवालका विजय भी आपहीने किया है । अक्षित आप मिश्र और दक्षिणी अफरिकामें ब्रिटिश राज्यके बढ़ानेवालेहैं । ऐसी प्रशंसनीय राजसेवाके उपलक्षमें, (१) ब्रिटिशराज्य तथा प्रदाने आपका सरकार किया है (२) पार्लियामेन्टने दोदके आपकी स्तुति कीहै (३) खस्राट एडवर्ट सतमक साथ भोजन करनेका सम्मान आपको मिला है (४) एक छात्र रुपया इनाम आपको दियागया है (५) जी सी वी, जी सी यम जी, और लार्ड आफ खर्तुमकी उपाधियें आपकी

दीर्घाहैं (६) १९०२ की साल भारतके कमांडरइन चीफ अर्थात् प्रधान सेनाध्यक्षका उच्च पद आपको दियागयाहै । नई सैनिक योजना आपहीके समयमें हुई है । १९०५ म अथ ५५ वर्षकेहैं लेकिन शाही नहीं कीहै । आप शिक्षामन्त्रकेभी समर्थक हैं । गाडनूकाछिज खतुंम आपहीका स्यापितहै ।

कार्न वालिस (चार्लिस) मार्कुयस आफ-कार्नवालिस- Charles, Marquess of Cornwallis) -इङ्ग्लैंडके एक प्रतिष्ठित अमीर खान्दानमें सन् १७२८ की साल जन्मे । पटन और कैमब्रिजके कालिजोम शिक्षा पाई और पिताके मरनेपर अर्द्ध आफ-कार्नवालिसका खिताब पाया । १७५८ म ब्रिटिश सेनामें भरती होकर कैप्टिन हुए और शनै २ उच्च पदपर पहुँचे, १७७६ की साल उस युद्धपर जो अमेरिकाकी रियासतोंने संयुक्त होकर स्वाधीनता प्राप्तकरनेके लिये ब्रिटिश गवर्नमेंटसे ठानाथा भेजेगये। इस युद्धके अन्तर्गत अनेक छोटी-मोटी छद्म-युद्धोंमें आपने विजय प्राप्त की लेकिन अन्तको यार्कटाउनकी छद्म-युद्धमें संयुक्तरियासतोंके कमांडर-इन-चीफ जनरल वॉशिंग्टनसे परास्त होगये । १७८६ से ९२ तक हिंदोस्थानके कमांडर-इन-चीफ तथा गवर्नर जनरल रहे । आपके शासनमें धंगलौर विजय हुआ, कलकत्तेमें निजामत खबर अदाकत स्थापिहुई, प्रत्येक जिलेमें कलेक्टर और जज नियुक्तहुए, जमीन्दारों द्वारा जमाबन्दी खसूल करनेका सवैवके लिये बृह प्रपन्थ कियागया और १७९०-९२ में द्वितीय मैसूर युद्ध हुआ जिसमें मैसूरके दोष सुलतानने धारकर युद्धके खर्चका ३ करोड़ रुपया दिया और उसका भाधा राज्य अंग्रेजों तथा उनके साथी मरहटों और हैदराबादके निजामने आपसमें बाँटलिया ; इस युद्धमें बड़ी सज धजसे लार्ड कार्नवालिस स्वयं संयुक्त हुएये जिससे औरंगजेबके समयका रसद इत्यादिका प्रबन्ध याद आताया । कई महीने पीछे शासनकी अवधि पूरी होनेपर इङ्ग्लैंड वापिस गये और मार्कुयसका खिताब पाया । उस समय हिंदोस्थानमें अंग्रेजी राज्य केवल बंगाल आसाम उत्तरीयसर्कार और बम्बई तथा मद्रासके निकट घर्ती समुद्रतट पर हैं स्थानापर था । परन्तु जब अनेक युद्धोंके खर्चसे जो निरन्तर लड़ाई खेलिजल्ली गवर्नर जनरल हिंदूके १० वर्षके शासनमें होतेरहे, अंग्रेजी खजाना खाली होगया तो ईस्ट इन्डियाकम्पेनीके डैरेक्टॉने वूसरीदके आपको गवर्नर जनरल नियत करके हिंदोस्थानमें भेजा और आज्ञा दी कि जिस्तरहोसके युद्धकी अन्ती शान्तकरना । हिंदोस्थान पहुँचनेसे केवल १० हफ्ते पीछे १८०५ की साल पश्चिमोत्तरदेश (संयुक्तप्रान्त) म वाराणसरतहुण गाजीपुरम खरसे लार्ड कार्नवालिसका वेदान्तहुआ ।

कैलासचन्द्र शिरोमणि भट्टाचार्य, प महामहोपाध्याय-ज्ञान संस्कृत कालिज घनारसमें सीनियर प्रोफेसरहै । स ई १९०४ में अधिकृत हुए होगयेहैं, पाठश्रीर सवार होकर कालिजमें पढ़ाने आतेहैं । १८२९ में पं घनर्याम सार्वभौम भट्टाचार्य धंगाली ब्राह्मणके घर जिज्ञा सद्धानमें जन्म । आपकी समान न्यायदर्शनका शाखा सिद्धांत इस समय हिंदोस्थानमें घिरछाही होगा । "सूक्ती उपारव्या" नामक पुस्तक आपकी घिरासित है । घनारस कालिजके मासिकपत्र "पंडित" में आपने संस्कृतके अनेक प्राचीन ग्रंथ संपादन करके छपवायेहैं । गवर्नमेंटने पं. महामहोपाध्यायकी उपाधिसे आपको विभूषित कियाहै । रहिनसहन पुराने ढंगकाहै ।

कृष्णचन्द्रसिंह-(महाराजा नदिया) आपके घापका नामरघुमया महाराजाका सखिताव आपको सुगळ बादशाह विज्ञाने दियाया । काशासे पंडित बुलाकर आपने घाजपेय तथा अग्निहोष यह २२ छाय रूपके सखेंवे कियेये यहके अन्तर्में पढिताने आपको "अग्निहोषी घाजपयी श्रीममहाराज राजेंद्र" की उपाधि प्रदान की थी । नदिया (नवद्वीप) आपके समयमें न्यायदर्शनकी पूनीर्षासिटी गिनामाताया । उन सब छात्रोंके क्लिये जो नदियामें घूर २ से पढनेके आतेये आपने छात्रवृत्तियें नियतकी थीं । पंडित विद्वानोंको हनाये जागीर तथा मिलके आपने दी थीं । बगालमें अतक प्रसिद्धहै कि "जिसने कृष्णचंद्र सिंह दान नहीं पाया वह ब्राह्मणही नहीं" । आप संगीत तथा शिल्पविद्याक मधारकष घामवापीरूप घनारसकी सीढियें आपने घनयाइ थी । दो छाय रूपके सखेंस पिसुआइ कियाया । धंगालमें जगद्गानी पूजा जो प्रतिघष अकटूषरके महीनर्में हुमा करतीहै । आपहीकी जारीकीहुई है । १७५७ में पलासीके युद्धके अवसरपर अग्नेजी जेनरल छाईं क्लायषको मधव देकर आपने राजेंद्र पहापुरकी उपाधि पाइयी । ७० वर्षको उम्रमें परलोकगामीहुये और महाराजा शिष्यचंद्रसिंह आपके उत्तराधिकारी हुये । तत्रसार ग्रंथके रचयिता तथा धंगालमें कालीपूजाका प्रचार करनेवालेताजक पंडितकृष्णानन्द सार्वभौम उपनाम भागमवागाई आपहाके वधाम धे । आनन्दमंगळ" और विद्यासुंदर" नाटकोंके करता पं० भारतचंद्रभी आपहाके वधारको सुरोभित करतये ।

कृष्णराजेंद्र ओडियर, महाराजा घहापुर, जी सी पल भाई (मैसूरनेरघ) भाव महाराजा घामराजेंद्र जी सी पल भाई के पुत्रहैं । स. ई १८८४ में जन्में । १८९५ में पितासे परलोकगमनकरनेपर मैसूरके गदीपर बैठे । वरद्वारके

हालां राणा विमलसिंहकी राजकुमारीसे विवाह किया। १९०२ की साल मैसूरमें दशर करके लाह कजन घाघसराय हिंदने राज्यके पूर्णअधिकार आपकोसँपे नावाछिगीकी हालतमें राज्यप्रबंध आपकी माता घाणी विद्यास और आपके पिताके दीवान सरशेखात्रि ऐमर करतेरहेये। राज्याभियेकके स्मारकमें एक शिल्पविद्यालय और एक अनायालय राजधानी मैसूरमें खुला। इस राज्यमें ३० हजार बगमील भूमिहै, प्राय ५० लाख भावादीहै और आमदनी प्राय दो करोड रुपया धारिक है। यह राज्य एक आदर्श वेसी राज्य है, अग्रेषों की बस्ती इसमें बहुतहै और यहाँका प्रबंध उत्तमहै। सालभरमें एक बफे राज्यकी प्रजाके, ४०० चुने हुये प्रतिनिधि शासन परिपाटीकी जँच करके चुटियोंको दूर करतेहैं। अपने पिताके किये हुये सुप्रम्वन्धोंमें आपने कुछ हस्तक्षेप नहीं किया है।

गगाधर शास्त्री तैलंग, पं० महामहोपाध्याय, स ई १८५०में काशीमें जन्मे आपके पिता नरसिंहशास्त्री तैलंग ब्राह्मण घरदार सहित बगलौरसे काशीमें उठ आयेये। पं० राजारामशास्त्री और बालशास्त्रिसे आपने विद्या पढ़ी। काव्य पदुद्देशन में अपूर्व योग्यता रखते हैं। संस्कृत श्लोक अच्छे बनातेह। यह भी कराना जानते हैं अनेक शिष्योंको पढ़ाकर आचार्यपरीक्षा पास कराई है। गवर्नमेंटने अपार विद्याके कारण आपको पं० महामहोपाध्यायकी उपाधि दीहै। निरपनैमित्तिक कामांतुष्टानसम्पन्न सदाचारी ब्राह्मण है। रहन सहन पुराने ढगका है। कई पुरोंके बाप हैं। वाचस्पति मिश्रकृत "न्यायभाष्य" और जगन्नाथपंडितराजकृत "रसगगाधर" का सम्पादन आपने किया है। शाश्वतधर्मदीपिका नामक ग्रंथ भी आपहीका संग्रहित है। संस्कृतकालिज, बनारसके मासिकपत्र "पंडित" को लेखोंद्वारा सहायता देतेहैं। संस्कृतकालिज, बनारसमें प्रोफेसरका पद आपको प्राप्तहै। १९०५ मे अधिक पठन पाठनके कारण कुछ अशक्तसे होरहेहैं।

ग्रिअर्सन(-श्री ए. ग्रिअसन, बी ए, सी आई इ G A Grierson, B A, O I E) आपछेंहकी रामधानी बखलिनके समीप हेनाजियेरी नामक कस्बेमे ७ जून सन् १८५०को जन्मे। जार्ज ऐबरहेम ग्रिअर्सन यह यल डी आपके पिता थे। अजधरी और ट्रिनिटी कालिज बखलिनमें शिक्षा पाकर बी ए और फिलॉसोफर आफ, ट्रिनिटी (Ph D) के इम्तिहान पास किये। गणितशास्त्रमें बड़ी योग्यता (Honors) प्राप्त की। हिन्दोस्पानीभाषा तथा संस्कृतके लिये बनीफा पातेरहे १८७३ की साल सिविल सर्विसमें नियत

होकर हिंदोस्थानको भाये और अधिस्टेन्ट कलेक्टर मैजिस्ट्रेटका पद पाया। १८८० म विहार प्रदेशमें स्कूलाके इन्स्पेक्टर हुए। १८८७ में गयाके कायम मुकाम कलेक्टर हुए। १८९० म हावड़ाके मैजिस्ट्रेट हुए। १८९६ म पटनाके पेडीशनल कमिश्नर हुए और उसी साल सूबे विहारमें अफीमके एजेन्टके पदपर बढेगये। अनेक देशीभाषाओंकी जाँच पताँलके लिये १८९८ म गवर्नमेन्टमें भापको स्पेशलहजुटीपर नियत किया। अंतमें विधानसभ गये। लिन्डस्ट (किम्बरली) में रहतेहैं। १९०७ में जीवितहैं। नाना भाषाभाके सीखने और प्रंपरखनेका अनुराग है। प्रंपरखनाके उपलक्षमें गवर्नमेंटमें भापको सी भाई इ की उपाधि दीयी। एशियाटिक सोसाइटी बंगालके, रायल एशियाटिक सोसाइटीके फोल्कलोर समा और कलकत्ता पूर्वी एसिटीके सभासद् हैं। निम्नस्थ अंग्रेजीप्रप भापके विरचित हैं-

- १ मैथिली भाषाका व्याकरण
- २, विहारप्रदेशकी, सात भाषाओंके व्याकरण
- ३ " के किसानाका रहन सहन
- ४ हिंदोस्थानी वाक्यका इतिहास
५. विहारीकी सतसईका अनुवाद
- ६ काश्मीरी व्याकरणपर प्रबंध

गुरुदासवनर्जी जस्टिस, सर, यम डी ये. यल, नाइट (स्वधर्मानुरागी) स ई १८४४में जन्मे। अनेक महत् पुरुषोंक सहश केवल ३ वर्षकी उम्रम भापमें पिटुहीन होगयेये। पढाने लिखानेकी श्रेष्ठा जनमीको करनेको पढीयी जो ईश्वर से डरनेवाली होकर इस समयम दुर्लभ थी। माताकी ईश्वरभक्ति और धर्मनिष्ठाका शक्तय प्रभाव भापके स्वभावपर पढाया और इसी कारण पश्चिमी शिक्षाके उपपन्न धर्मसम्बंधी उदासीनताके इस विशिष्टकालमें भापका धर्माचरण सर्वथा निष्कलङ्क रहसका। कितने सन्तोषकी बात है कि, यह भाग्यवती माता अपने पुत्रको हार्दिकोर्टका जज होते देखनेको और स्वदेशवासियोंके विद्वानं सदर्शज प्रसिष्ठा व प्रेम पानेका अनुभव करनेको प्रभुरकाळ तक जीवित रहीयी। प्रेसीडेन्सीकाळिज कलकत्तेसे २१ वर्षकी उम्रमें आपने यम ये पास किया और एक ही वर्ष पीछे भाईमकी थी यल परीक्षा उत्तीणकी। मट्टीकुलेशन और यफ ये की परीक्षाओंमें भी आपका नम्बर यूनीवर्सिटीभरम प्रथम आया। थी यल की परीक्षा पासकरनेके पीछे वेरहामपुर (बंगाल) में पत्रालय धरना आरंभ किया और यहाँके काळिजमें भाईमके भाग्यपकवा पद पाया। १८७२की साल कलकत्ता हार्दिकोर्टमें घयालत करनेको भाये। इससे

५ वर्ष बाद भाईनकी डी यल परीक्षा उत्तीर्ण की और टागोर-ला प्रोफेसरका पद पाया । नवयुवकाके धर्म, शिक्षा, लोकआचार इत्यादिके हितसाधनका आपको बड़ अनुराग है । कई वर्ष तक सभासद रहनेके उपरान्त १८७२ की साल कलकत्ता विश्वविद्यालयमें सर्वोच्चस्थान जिसतक हिंदोस्थानी पहुँचसकतेहैं आपको प्राप्तहुआया अर्थात् आप उक्त विश्वविद्यालयके वायस-चैनसेक्टर नियत कियेगयेये । इस स्थितिमें जो बहुमूल्य सेवा आपने फीधी उसका स्मरण मविष्यमें होनवाली कई पीढीतक रहेगा । १८८७ की साल आप बंगालकी व्यवस्थापक सभाके मेम्बर पनायेगये और प्रौढ-स्वतंत्र निणयशक्ति सम्पन्न होनेके कारण विख्यात हुये । १८८८में कलकत्ता हाईकोर्टके जजका उच्च पद आपको प्राप्तहुआ । इस स्थितिमें जो सफलता और क्वासि आपने प्राप्त की उसके लोक विदित होनेके कारण इस क्षुद्र निबन्धमें लिखनेकी आवश्यकता नहीं है । १९०२ में लार्ड कर्जनके विश्वविद्यालयसम्बन्धी कमीशनमें आपकी नियुक्ति हुई । दो हिंदोस्थानी मेम्बरोंमेंसे एक आप थे । यहां आपकी कतव्यपरायणता सत्यशीलता तथा सामर्थ्यका विकास हुआ और जब कमीशनके सहाकारी फिर्गी मेम्बरोंसे आपकी राय विपरीत पडी तो वेधटक आपने भिन्नमतका लेखा पेश करदिया जो पुनोर्वाँल्टीपेक्टकी कड़ाई बहुत कुछ घटानेमें समर्थहुआ । १९०४ की साल १५ वर्ष पदवत न्यायाधीशके भासतपर बैठकर ५९ वर्षकी उम्रमें आपने पेशाव लीअव वायसरायने पेसी जल्द राज्यसेवासे अलग होनेका कारण पूछा तो आपने उत्तर दिया कि मेरी उम्र बहुत होनेआई, अब मुझको जीवनका शेषभाग शास्त्राध्ययनमें बिताना चाहिये और अपनेसे कनिष्ठोंकी उत्पत्तिका मार्गमी नहीं रोकना चाहिये ।

अब आप अपना बड़ पौरुष जिसकी अभी आपमें कमी नहींहै प्रकृत अधिक स्वतन्त्रताके साथ परमात्मा तथा स्वदेशकी सेवामें लगावगे । गवर्नमेन्ट तथा प्रजा दोनोंहीका आपपर सदैव विश्वास रहाहै । राजराजेश्वरने आपकी सेवाको स्वीकार करके नायट (Kt.) की उपाधिसे आपको विभूषितकिया है । हालमें आपने शिक्षाविषयक एक पुस्तक रचीहै जो मनोहर और आभ्यासिक है । आपके चरितसे विदित होताहै कि, किसतरह कोई हिन्दू अस्पृश्यभेगीकी शिक्षा पाकर आपुञ्चपद पाताहुआ, राजा तथा प्रजाका समान रीतिसे विश्वासपात्र रहकर निपुण सरयधर्मावलम्बी हिन्दू रहसकताहै ।

प्रिफिथ (आर टी यच प्रिफिथ, यम ए, सी आई ई -
R T H Griffith, M A, O, I. E.) फोर्सली (विल्टशायर) में २५ मई

१८२६ की साल जन्मे पिता आपके रेवरेण्ड भार. सी प्रिफिय यम ए. कोवड़ी (विल्सोपर) में रेक्टर (Rector) थे । छीस कालिज भाक्सफोर्डसे भी ए की परीक्षा १८४६ म और यम ए की परीक्षा १८४९ में उत्तीर्णकी । संस्कृतक प्रोफेसर यच यच विल्सन साहससे भाक्सफोर्डमें संस्कृत पढ़ी । १८४९ से ५१ तक मार्लबरो कालिजके आसिस्टन्ट मास्टर रहे । १८५४ से ६२ तक क्वीन्सकालिज, बनारसमें अंग्रेजीभाषाके प्रोफेसर रहे । १८६३ से ७८ तक क्वीन्सकालिज, बनारसके प्रिन्सीपेल रहे । १८७० से ८५ तक पश्चिमोत्तर देश व भवध (युक्तप्रान्त) में शिक्षाविभागके डैरेक्टर रहे । १८८५ में गवर्नमेंटने सी आई ई की उपाधिले आपको विभूषित किया । पेशम पारक एकान्त घासकी इच्छासे कोटागिरी (नीलगिरीपर्वत) पर पधारे । गवर्नमेन्टकी आकरीमें आपका मातङ्क मसाधरण था, धुरन्धर विद्वान् और न्यायशास्त्र होनेके कारण निम्न कर्मचारी आपपर विश्वास रखतेथे और आङ्गणीय मान लेथे पेशा महाविद्वान जो अंग्रेजी, संस्कृत, ग्रीक लैटिन फार्सी भादि भाषाओंमें समान रीतिसे निपुण होकर कथिता करनेमें विलक्षणशक्ति सम्पन्नहो, फठिन साखे प्राप्तहोसकताहै । बगीचा फुलवाड़ी लगाने, ग्रंथ मखलोकन करने और कवितारचनेकी ओर आपकी विशेष रुचि है । बनारस कालिजका मासिक संस्कृत पत्र " पंडित " आपका जातीकियाहुमा है, इसका सम्पादन भी ८ वर्ष पर्यंत आपने कियाथा । कुमारसम्भवका, यूसुफगुलेखाका, ऋग भादि श्वारा वेदोंका और सात जिल्दोंमें वाल्मीकीरामायणका अनुवाद अंग्रेजीगद्यमें और कृष्ण यजुर्वेदका अनुवाद अंग्रेजीगद्यमें आपने कियाहै । इसके सिवाय प्राचीन संस्कृत लेखोंके भाष्यपर औरभी कई पद्यमय अंग्रेजीग्रंथ आपने रचेहैं । स ई १९०६ में वृद्धहैं, शारी महीं फीहै ।

गोपालकृष्ण गोखले—सी ये, सी आई ई (राजनीतिविशारद पंडित स ई १८६६ की साल एक साधारण स्थितिके महाराष्ट्र ब्राह्मणके घर आपका जन्म हुआ । पिताका देहान्त आपकी बाल्यावस्थाहीमें होगया । प्रथम कुछ समय तक कोरहापुरमें पढकर आपने एडकिन्स्टनकालिज धम्बईसे बी० ए० पास किया और एक मये स्कूलमें जो सार्वजनिकसभा पूनाकी तरफसे स्वदेश हितके लिये खोलागयाथा ७५) रु० मासिक पर नौकरी की । माता और श्वेय भ्राता भाशामें थे कि छीप्रही कोई उच्च पद आपको प्राप्तहोगा आपका विचार भी स्वार्थरहित स्वदेशीकार्यसे बहुत दिनोंतक सम्बध रखनेका नहीं था फठिन सार्वजनिक सभाके तिलक रानडे भादिक परस्वार्थी मेम्बरके गिरोहम खोदेही दिन रहनेके पीछे आपके विचार पलटगये । यावत जीवित आपने

सार्वजनिक सभाके मेम्बर रहनेका प्रण किया और २० वर्ष तक ७५ रु० मासिकपर उक्त स्कूलमें नौकरी करनेकी शपथ की। बहुत वर्ष नहीं बीतने पाये थे कि आपलोगोंके निरन्तर उद्योगसे वह स्कूल वर्तमान फर्गुसन कालिज पूनाके रूपमें परिणत होगया जिसके कारण बम्बईके गवर्नरने अनेक अवसरोंपर सार्वजनिकसभाके मेम्बरोंकी सराहना की। १८८७की साल सार्वजनिकसभाके प्रेमाधिक पत्रके लिये एक उपयुक्त ईमानदार सम्पादककी आवश्यकता हुई। सभाके प्रधान मिस्टर महादेव गोविन्द रानडेने सुयोग्य समझ पत्रके सम्पादन का भार आपको सौंपा। इस अवस्थामें सरकारी रिपोर्टों तथा प्रुचरितलेखाओंका संग्रह तथा संक्षपकरमा आपका कृतव्य था जिसको प्रुत्तिमानोंसे पाठनकरनेके छात्र २ स्वल्पव्यय तथा राजनीति सम्बन्धी शिक्षा प्राप्तकरनेका अवसर आपको मिलता था। इस कार्यमें महाशय रानडेसे आपको असाधारण सहायता मिलती थी। और इसी कारणसे आपके और उनके बीच गुरुशिष्यसम्बन्ध पैदा हो गया था कि महाशय रानडेके स्वर्गवासी होनेपर भी उसमें अन्तर नहीं पड़ा। मिस्टर रानडेके विषयमें आपकी लेखनवि निकले हुए अनेक लेखोंको पढ़नेसे जो समय २ पर समाचारपत्रोंमें प्रकाशितहूए हैं उपरोक्त कथन सहजहीमें विदित हो सकता है।

१८९७ की साल जब ब्रिटेन और भारतवर्षके राजस्व व राज्यकरादि सम्बन्धी नातेको जाँचने तथा नियमित करनेके लिये इङ्ग्लैण्डमें वेल्ची कमीशनकी नियुक्ति हुईथी तब कमीशनके सामने इस घृहस प्रश्नके विषयमें हिंदोस्थानी राय मकटकरनेके लिये इस देशसे बुलाये जाने पर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (बङ्गाळ) सुब्रह्मण्य पेय (मद्रास), दिनशा पट्टलजी घात्वा (बम्बई) और गोपाल कृष्ण गोखळे (पूना) इङ्ग्लैण्डको पधारे थे।

कमीशनकेमेम्बरोंने तत्त्वांककी श्रेष्ठता, व्याख्याकी स्पष्टता और मन्देशानुरागी विश्वासकेनीतिमय उत्तराहकोलिये आपकी बड़ी प्रशंसाकी। स्वदेशको छोटकर पंडितजीने स्वेच्छा पूर्वक प्रेगका प्रबन्ध करना आरंभ किया जिसके लिये सर्वसाधारणने तथा बम्बई गवर्नर लार्ड सैडहस्टने आपकी बहाई की और बम्बईकी व्यवस्थापक सभाका मेम्बर आपको बनाया। सर पी० एम० मेहताके अलग होनेपर वायसरायकी व्यवस्थापकसभाकी मेम्बरी आपको दी गई।

स्वदेशहित तथा राज्यसेवाका परिषय सदैवही आपसे मिलताहै एवं गवर्नमेन्टने प्रसन्न होकर सी० आई० ई० की उपाधिसे आपको विभूषित किया है। आपने फगूसनकाजिजमें बहुतकाल पठ्यंत कठिन परिश्रम कियाहै, स्वदेशके परिमित व्यय व अल्पान्य राजनीति सम्बन्धी प्रश्नोंका विचार पूर्वक अध्ययन व अशोधन कियाहै, स्थिर तर्कण व स्पष्ट व्याख्याकरणकी अद्भुत शक्ति आपमें पाइजातीहै। सतपथसे कदापि नहीं हटनेवाली और किसी हाहतमें नहीं हिलकनेवाली स्वतन्त्रताका आधाहन आपमें हुआहै। स्वदेशवाचियोंके पक्षमें सदैव चित्तके पूर्ण उत्साहका परिषय आपसे मिलता रहा है। अन्तःकरण व बुद्धि की निर्मलता, तेजोमय योग्यता और स्वार्थका सर्वथा अभाव आपके स्वामात्रिक गुण हैं। हमारी जातीयसभा इण्डियन नेशनल कांग्रेसके आप महासहायक हैं। लोकरू सेल्फ गवर्नमेन्टके पक्षपाती होकर उसको अधिक विस्तृत करानवा उद्योग करनेके लिये १९०५ की साल आप इङ्ग्लैंडकी पधारे थे। वहाँसे छोट कर राजनैतिक चीरोंकी संख्या बढ़ानेके लिये आपने पूनामें Servant of Indian Society (वन्देमातरमसभा) स्थापितकी है। ऐसेही अनेकानेक दिव्य कारणोंसे पंडित गोपालकृष्ण गोखलेकी गमना हमारे स्वदेशहितैषी राजनैतिक मुखियाओंकी शिरमौर श्रेणीमें की गई है।

“इण्डियन नेशनल कांग्रेसका मत आपका मत है और दुनियांमें जो कुछ है वह सब हमारी भलाईके लिये है” यह आपका विश्वास है

१९०५ के अन्तमें कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन जो बनारसमें हुआ पाठसके सभापतिका आसन आपने ग्रहण किया था।

ग्रिफिन (सर लेपिल ग्रिफिन, के० सी०एस आई०— Sir Lepel Griffin, K. C. S. L.)—स० ई० १८४० में जन्मे। १८६० में सिविलसर्विस परीक्षा उत्तीर्ण करके बिंदोस्थानको अ.सिस्टेन्टकलेक्टर-मैजिस्ट्रेट होकर आपो १८७० में पञ्जाबके चीफ सिक्किटरीका पद पाया। १८८०में चीफपोलीटिकल अफसर होकर अफगामिस्तानको गये। १८८१ में के० सी० एस० आई० का खिताब पाया। १८८७ से ८८ तक इन्दौर दरबारमें रजिस्ट्रार रहे। १८८८से ८९ तक देहरादू (दक्षिण) रजिस्ट्रार रहे। १८८९ में शादी की। इण्डियापसो सियेशमके ईरानी इम्पीरियल बैंकके, और अफगांकी जवाहरराजकी खानोंवाली कंपनीके आप प्रधान हैं। ब्रिटिशगवर्नमेन्टकी शाकरीमें अनेक राजाओं महाराजाओंको गद्दीपर बिठलानेका आपको अवसर मिला था इसी कारण बहुधा इतिहासकारोंने राज्यदाता (King Maker) का विशेषण आपको दियाहै। इङ्ग्लैंडमें १९०६ की साल जीवित हैं “एशियाटिकनैमासिफिकेशन” नामक पत्रके जन्मदाता आपही हैं।

पंजाबके सरदार, पंजाबके राजे, मध्यहिंदके प्रसिद्ध स्मारकविद्, रणभोत सिद्धका चरित्र, इत्यादि कई अंग्रेजी ग्रंथ आपके विरचित हैं ।

जर्मशैदजी नसरवानजी टाटा (पार्सी कामवीर) स० इ० १८३९ की साल गुजरातदेशके शहर नौसारीमें पार्सी जातिके पुजारियोके वंशमें आपका जन्म हुआ । १३ वर्षकी उम्रमें प्रारंभिक शिक्षा पानेके लिये बम्बईमें आये।इससे ३ वर्ष पीछे प्लकफिन्स्टन कालिजमें भरती हुए लेकिन २० वर्षके होने नहीं पायेये कि पिताको व्यवसायमें मदद देनेके लिये कालिज छोड़दिया।१८३५ की साल छद्मनाम हिंदोस्थानी बैंक खोलनेके विचारसे आप इङ्ग्लैंडको पधारे लेकिन ३म दिना बम्बईमें तबादलेका भाष गिरजानेसे आपको बड़ा टोटा हुआ इस कारण बैंक खोलनेकी योजना छोड़कर आप १८५७ में स्वदेशको वापिस आये। ऐसीसिनियाके साथ ८न दिनों अंग्रेजोंका युद्ध ठनाहुआया, पिताके साथ शरीक होकर आपने लड़ाईपर रसद पहुँचानेका ठेका लिया जिसमें खूब नफा हुआ । फिर आपने हिंदोस्थानमें रुईका सूत बनवाकर बँचनेका प्रशसनीय बृहत् व्यवसाय जारीकिया जिसका फल यह हुआ कि धीरे२ बम्बईमें कपडा बिननेका इस्तकारीकी मूल आरोपण । होगई । शीघ्रही आपने बम्बईके सर्मापम तेलका पक्क पैत्र खरीदकर उसको पुतलीघरमें परिणित किया और कुछ समय तक उसका बलाकर बड़ा लाभ उठाया १८७२की साल कामदेके साथ उस पुतलीघरको बेचकर आप इङ्ग्लैंडको दूसरी दफे गये । वहाँ पहुच लडनगापरके अनेक पुतलीघरोंका आपने अवलोकन किया और कातने-बिनने की इस्तकारीकी सर्वोत्तम नवीन रीतिकी खोजमें बड़े परिश्रमसे लगे रहे और उक्त विषयका अच्छा अनुभव प्राप्त करके भारतको लौटे और १ जनवरी १८७७ को अथात् मिस्र दिन मास्केका विकटोरियाने कैसरे-हिंदुवा खिताब लियाथा उस दिन आपने नागपुरमें "अंग्रेसमिळ" नामक पुतलीघर जारी किया । इससे पढा भारी लाभ हुआ निम्न कईअन्य स्थानोंमें भी आपने पुतलीघर जारी किये । पहले २ काम इतना बड़ा कि अब एक लाखसे भी अधिक महंग्यभारके पुतलीघरमें काम करवई । कई दफे निष्कल उद्योग करनेके पश्चात् आपने १८७७ को साल टाटाकम्पनी स्थापनकीयी । कापनिपुण तथा बुद्धिमान मालिक होनेके कारण इस कम्पनीकी दोना गोलाइमें खूब उन्नति हुई वैरिख तथा न्युयाकम भी कम्पनीयी शाखायें खोलीगई । चीनमें व्यवसाय फैलाने और जापान तथा पूर्व एशियाके साथ भारतका तिजारतीसम्बध दृढ करनेके लिये आपने हाँगकौंग और शंघायम व्यवसायके केन्द्र स्थापन किये । हिंदुस्थानी रुई शरीक कपडा बिननेके छापक नहीं होतीयी भत करोडोंरुपेयकी विदेशस भारतमें आतीयी । गवमन्टके अतुभवी अफसर मिश्रकी रुईको शरीक कपडाको बिनानेके लिये उत्तम बतलातेये लेकिन इनकी रायमें उसका इस देशमें

पैदा होना असम्भव था । भारतहितैषी टाटाने * १८९६ में एक छोटी पुस्तक रचकर सरकारी अफसरोंकी रायका खण्डन किया और लिखकिया कि, यदि भारतीय घायुकी अत्यंत खुशकीका और जलसे खूब सीखनेका प्रबंध किया जासके तो मिश्रकी रईकी खेती इस देशम सफलता पूर्वक होसकती है । तबुना करनेके लिये शीघ्रही आपने एक खेत बुवाकर सफलता पाई फिरतो आपने मिश्रकी रईके बीज बिनामूल्य घाटना भारतम किया जिसका फल यह हुआ कि हमने रेशेवाली रई भारतमें डेरों होयी है ।

आपने भारतवासियोंको लोहेकी दस्तकारी सिखाने कामी उद्योग क्रियाया इस कार्यकी पूर्तिके लिये अमेरिकाके अनुभवी कारीगरोंको बुलाकर नौकर रखा सन लोंगोंके तजुर्वा करनेपर सिद्धहुमा कि मध्यहिंदमें अच्छा लोहा निकलता है अतः गवर्नमेंटकी आह्वासे मध्यहिंदमें लोहेकी खानें खोदनेका कारखाना आपने जारीकिया । रेशमकी दस्तकारीके भी आप ही जन्मदाता हैं जिसका प्रारंभ जापानियोंके हंगपर मैसूरमें हुआ है ।

भारतवासियोंको उच्च शिक्षा दिलानेके भी आप पक्षपाती थे और तब तब धनसे सहायता करते थे । एक वृषे बम्बईके गवर्नरने किसी जलसेमें, शिक्षासम्बन्धी शिक्षा पर एक व्याख्यानदियाया और चन्देसे उसके लिये धन एकत्र करनेके वास्ते रईकोंका ध्यान आकर्षित किया। उस व्याख्यानका आप परदेखा प्रभाव पड़ा कि पार्लामेंटकी शिल्प शिक्षा प्राप्तकरणार्थ बिछायत मेमनेके लिये चन्देसे आपने एक स्थायी फण्ड स्थापन किया और आपभी जी खोलकर फण्ड चन्दा दिया । १८९६ में एक फण्डको बड़ाकर आपने ऐसा प्रबंध किया कि जिससे प्रत्येक जातिका भारतवासी उससे लाभ उठासके। अन्तम नवीन घातोंके आविष्कार और विज्ञानकी उन्नतिके लिये एक कालिज खोलनेके वास्ते आपने ३२ लाख रुपयेकी जादाद अर्पणकी जिसकी खालिस वार्षिक भाय १२५००० इ० होते हैं । गवर्नमेंटने भी इस काममें मदद दी है और महाराज टाटाकी योजनाके अनुसार बम्बईमें वैज्ञानिक खोजवा कालिज (Research Institute) खोलनेकी यात स्थिरहुई है ।

आपने बहुत धन कमायाया । बड़ी भारी जमीन्दारी माल ली थी । पुतली घाट से, भारतके फलाका विछायतमें व्यापार करनेसे, मैसूरमें रेशमकी खेतीसे और टोहा बनानेके कारखाना भाद्रिसे भी आपको बड़ी भारी आमदनी थी । उन्नत आपनेको तथा भारतवासियोंको धनाढ्य बनानेमें लगेरहे । कई बरोड़का मगदूर होनेपर भी गर्व तथा दिखावटका आपमें छेद नहीं था । मई १९०४ में, जमनीके एक स्वास्थ्यकर स्थापन आपका देहांत हुआ । आपकी मृत्युसे केवल पारसियोंहीकी नहीं विन्तु भारतभरकी हानि हुई ।

आप वहीनी धीर नहीं थे, कामधीर थे । भारतके शिल्प और व्यापारकी उन्नति जो इस समय दृष्टि गोचर होती है विरोधत आपहीके उद्योगसे हुई है । निज उद्योगसे बढ़नेवालोंम ऐसे मनुष्यका उदाहरण सहसा नहीं मिलेगा जिसने महाशय टाटाकी सदृश मातृभूमिकी उन्नति करतेहुये अपनेको तथा स्वदेशवासियोंको धनाढ्य बनानेकी सदैवकोशिश कीहो और अपने उपाजित द्रव्यको ऐसी उदारताके साथ देशोन्नतिमें लगाया हो । अब आपके वृद्ध व्यवसायके प्रबन्ध करता आपके कई पुत्र हैं । बम्बईमें आपका बड़ा भारी महल है ।

जावजी दादाजी—आपकी गणना हम महत्पुरुषोंम है जो परम उद्योगी होनेके कारण गरीबसे अमीर हुये हैं । दादाजी नामक आपके पिता, शाहपुरके रहनेवाले गरीब थे और उद्यर निर्वाहके कारण उमरखाड़ी, बम्बईमें भाकर बसे थे । छद्मकपनमें जावजी स्फूळके उद्दण्ड लड़कोंमें गिनेजातेथे और बड़े होकर उन्हेंनि अमेरिकन मिशन प्रेसमें २ रुपये मासिकपर टायप साफ करनेकी नौकरी की थी और बड़से २ सौ रुपया बेतन पाने लगेथे । इसी धाकरीद्वारा कुछ पूजा जमा करके स ई १८६४की साल बम्बईम उन्होंने एक छोटासा छापाखाना जारी कियाया जो अब निर्णयसागर नामसे प्रसिद्ध है । जावजी टायपके कामम निपुण थे, नौकरोंके साथ अच्छा बरताव करतेथे, किसी धर्मसे द्वेष नहीं रखतेथे, सुख दुःखको समानभावसे देखतेथे, धैर्य और हठतासे उद्योग किये जातेथे और पर बाहर सबको प्रसन्न रखतेथे । इन्हीं शुभ गुणोंके द्वारा निर्णयसागर प्रेसकी भस्माधारण उन्नति हुई और जावजी बड़े धनी सेठ होगये । जनवरी १८८६ से आपने "काव्यमाला" नामक मासिक पुस्तक जारी कीथी जिसम अतृपलब्ध प्राचीन सस्कृतग्रंथ सरोधन करके टिप्पणीसहित छापेजातेहैं । बहुतसे और ग्रंथ भी निजव्ययसे छपवायेथे जिससे व्यवसायकी उन्नति हुई, विद्याका विस्तार हुआ और प्राचीन ग्रंथ नष्टहोनेसे बचे । निर्णयसागरके वर्तमान मासिक, सेठ मुकायम जावजी, आपके पुत्र हैं । इस प्रेसम छपाईका काम अगुस्तम, निहायत साफ और विद्यापतीरंगवा होता है । स ई १८१९ म जम, स ई १८९० में मृत्यु ।

डेवी (सर हम्फरी डेवी वैरोनेट—Sir Humphery Davy Bart.)
 कार्लवालम स ई १७७८ की साल जमे । छद्मकपनम संकुचितरीतिकी शिक्षा पाई । १७ वर्षकी उम्रमें एक डाक्टरके पास काम सीखनेके छिये उम्मेदवारी की और गम्भीरतासे विद्या अध्ययनमें चित लगाया । २ वर्ष बाद रसायन विद्याकी तरफ ध्यान आकर्षित हुआ । आप उन दिना अपने मित्र टानकिन साहबके मकान पर रहकर अपरिचित मिश्रित द्रव्योंके योगोंसे नवीन विद्वान्त स्थिर करनेकी खोज किया करते थे । टानकिन साहब आपके इस उद्योगको

पृथा समझते थे और इसी कारण अपसन्न रहते तथा शोक किया करते थे कि अगर किसी दिन आग लग गई तो मकाम हिल जायगा और हम सब बर्बाद-यगे। लेकिन आपकी प्रारब्धमें इन परीक्षाओंसे विद्धि प्राप्त होनी थी। ११ वर्षकी उम्रमें प्रकाश और उष्णताके विषयमें आपने एक निबंध लिखा। आपका पहिला ही क्लास सम्बन्धी लेख था। २१ वर्षकी उम्रमें डाक्टर वेडजेने यूस्टलके एक चिकित्साछपकों निरीक्षक आपको नियत किया। इस समयसे आपके खोजकी चरमकारिक गतिका आरम्भ हुआ। १८०१ में राजकी रसायनिक कमराकाके डैरेक्टरका पद आपको प्राप्त हुआ और दूसरी वर्ष रसायन विद्याके प्रोफेसरका ओहदा मिला। पोटेशियम, सोडियम, मैग्नेशियम स्ट्रोनियम नामक धातुओंका तथा क्लोरायन गैसको आपने दूब निकाला और सिद्ध किया कि आयोडाइन मिश्रित पदार्थ न होकर मूलवस्तु है। रसायन सम्बन्धी सृणमणिशक्तिकी भी उन्नति आपके द्वारा हुई।

पश्चात् खानोंकी गम भयककी परीक्षा करनेमें मत लगाया जिससे डेनोइ सुरक्षित दीपककी उत्पत्ति हुई। यह दीपक बारीक चारके पिंजरेमें रखा जिसके कारण खानोंके भीतरकी असाधारण वायु नहीं जल पाती है। असाधारण वायु अधिक एकत्र होजानपर कभी २ पिंजरेके भीतर जाकर दीपक की छपटसे जलने लगती है लेकिन छपट पिंजरेके बाहर नहीं निकल सकती है और ऐसा हातेही असाधारण वायुकी अधिकतम जानकर खान खोदनेवाले तुरन्त बाहर निकल भाते हैं। १८१८ में स हम्फ्री डेवीको वैरोनेटका शिक्षा मिला। २ वर्ष पीछे रायल सोसायटी अध्यानका पद पाया। इस प्रकार सेजोमय कार्यवृत्तापसे परिपूर्ण वर्ष वर्ष भूयैयते। १८२७ में सक्तेका रोग हुआ। १८२९ में मृत्यु हुई। शहर जेनीवसे बाहर समाधि दी गई।

नवल कि शौर, सी आइ ई -आपके पिता यमुनाप्रसादभार्गव सासनीया जिला अलीगढ़के रहनेवाले थे। उनके ५ पुत्र थे जिनको शिक्षादेनेम कोशिश की थी। हिन्दी उर्दू पढ़कर १२ वर्षकी उम्रमें नवलकिशोरको भाग्य कालिका भरती कराया था। यहां ५ वर्ष पढ़कर "कोहनूरप्रेस" छात्रोंमें मौकरी की और छापेखानेका काम सीखा स्वामीके सदैव भुमखिन्नाक से सन् ५७ के गढ़ पीछे अंग्रेज हाकिमोंकी सम्मतिसे छपसत्र ई "नवलकिशोरप्रेस" स्थापनकिया और "अथधमसखार" नामक उर्दू समाचार पत्र निकाला। "अथधमसखार" को निपक्ष और सर्व हितकारी होनेके कारण सघने स्वीकारकिया। आमदनी बढ़नेके साथ २ मु० नवलकिशोरने, प्राचीन ग्रन्थोंके खोजकरने, छाप करके समकी छपवाने और उनके विषय रचनाएँ इत्यादिमें कोशिश की।

जो अन्य संकटों रूपके खर्चसे नहीं मिलते थे वह ही आपके उद्योगसे कौटुंबिकोंके मोल होगये जिससे पठन पाठनमें अत्यन्त सुलभता हुई और प्राचीन विद्या मष्ट होनेसे बची। इसके सिवाय जिन विषयोंपर जखरत देखी अन्यका रोंको पारितोषिक देकर नये ग्रन्थ रचवाये। फिर प्रत्येक शहर और गांवमें अपने एजेण्ट नियत किये जिससे देशभरमें संस्कृत भर्षी फारसी, उर्दू, हिंदी पुस्तकोंका प्रचार होगया और कारखानेकी बढ़ी उत्पत्ति हुई। पश्चात् कानपुर, झाहीर, दिल्ली, भागल तथा बजमेरम "नवल किशोरप्रैस" की शाखायें खोली गई और मुद्रताओंके लिये दया, भस्त्र, वस्त्र आदिका सदाव्रत जारी किया गया। देशदितके कामोंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने मुन्शीजीको सी आई ई का खिताब दिया, प्रयाग यूनीवर्सिटीका सभासद बनाया और लखनऊके लखनऊ अधि-पतिक निरीक्षक तथा लखनऊकी जुंगीका मेम्बर नियत किया। पश्चिमोत्तर देशकी गवर्नमेंटको मुन्शीजीपर बड़ा विश्वास था, लार्ड साहबके वर्चस्वियाकी सूचीमें उनका नाम था और दिल्लीके दरबार कैसरिके भवतर पर उनको अव-धके रईसोंमें अखिल मन्बरकी कुर्सी मिलीथी। शरीफ गरीबोंकी शुभ रीतिसे सहायता करते थे। हजारों कन्याओंके विवाहार्थ मद्द दीथी और देशोपकारके कामोंमें चन्दा देनेसे भी नहीं चूकथे। चन्दाकी सूचीमें निम्नस्थ स्थानोंमें सुस्पष्ट है—

१ भागलकाछिज, बोहिङ्ग दौखेके लिये २० हजार रुपया नकद और १५ हजार रुपया वार्षिक भायकी भूखम्पति।

२ लेहो अफग्न फन्डमें १५ हजार रुपया।

३ जुबिली हार्ड स्कूल लखनऊके लिये १५ हजार रुपया।

अन्तमें इतना कहना और शेष है कि, मुन्शीजी बड़े परिश्रमी तथा पुरुषार्थी थे, सब काम सुद देखतेथे, लखनऊमें उनके उद्योगसे कागज़ बनानेका कार-खाना खुलाया, लखनऊ और उत्तरांचके जिल्लोंमें बड़ा भारी इलाका ठहाने रखीदाया और इन सब कामों पर हजारों मौकर उनके नियुक्त थे। भले चने योगिताजाकी समान मृत्यु पाई। मु प्रयागनारायण सुयोग्य पिताके पुत्र हैं।

वि सं १८९२ में जन्म।

वि सं १९५१ म मृत्यु।

नार्थब्रुक—(दामल जान वेरिङ्ग छाड नाथब्रुक, पी सी, डी सी यल, यल यल, डी यल भार. यल, जो सी यल आई—Thomas George Baring, P C, D. C. L., L L D, F R S, G C S I, Earl of North Brook) स ई १८२६ की साल लन्डनम जमे। पिता आपके प्रथम थेन नार्थब्रुक ये तिनके सिघारने पर १८६६ में वेरनकी उपाधि आपको मिली। १८४८ में शाही की लेकिन १ पुत्र और १ पुत्री छोड़कर सी १८६७ में चलबसी फिर दूसरे

शादी नहीं की। फ्राइस्ट चर्च काळिज, भाक्सफोर्डमें शिक्षा पाई थी। बोर्ड आफ ट्रेडके, होम आफिसके, इन्डिया आफिसके और पेहमिरैल्टीके प्रमश प्रमोव्ड सिक्रेटरी रहे थे। १८५० से ६६ तक पार्लियामेन्टके मेंबर रहे। १८५९ से ६९ तक साम्राज्य हिंदके उपमंत्री रहे। बीचमें कई महीने तक १८६१ की एक सेनाविभागके उपमंत्री रहे। १८७२ से ७६ तक घायसराय हिन्दके पद पर काम किया। पश्चात् इङ्ग्लैंड जाकर जलसेनाविभागके मंत्रीका पद पाया और उस पर १८८० से ८५ तक रहे। १९०४ में परमधामको विधारे। आपके हिंदोस्थानी शासनमें विहारमें बुराकाल पड़ा जिसका प्रबंध आपने अत्युत्तम ढंग और अन्य कामोंमें खर्च घटाकर अकालके कामोंमें खर्च करनेसे गवर्नमेन्टके की भी स्थिति नहीं बिगड़ने पाई। इस अकालमें गवर्नमेन्टने ९ करोड़ रुपये खर्च किये थे। जोधपुर और काश्मीर राज्योंके भीतरी झगड़ोंको आपने बुद्धिमानीसे शान्त किया था। अंग्रेजी रेजीडेन्टको विष देनेके अपराधिम पूरा सच न होनेपर भी महाराजा गैकवाड़ आपहणिये समयमें गद्दीसे उतारेगये थे लेकिन उनके उत्तराधिकारी वर्तमान गायकवाड़ महाराजा सैयाजीरावकी शिक्षाका अच्छा प्रबन्ध किया था और उनके बालकपनमें राधा सर टी० माधवरावको दीवान नियत करके बड़ोदा राज्यकी हालत नहीं बिगड़ने दी थी। इन्कमटैक्स घटाकर, म्युनिसिपैलिटियोंके सुखदायी करोंको दूर करके तथा अनेक निरर्थक खर्च घटाकर देशोपकारी कामोंमें खर्च करके आपने प्रजाका हित किया था और गवर्नमेन्टकोषकी भी हालत नहीं बिगड़ने दी थी। भारतीय सेनाके खर्चकी धारीकीसे जांचकरके १ लाख रुपयेकी बचत निकाली थी। १८७५-७६ की साल राजराजेश्वर पड़बड समयमें, मिंस आफ वेल्सकी स्थितिमें हिंदोस्थान भाये थे जिसका प्रभाव देशी नरेशों और प्रजापर अच्छा पड़ा था। आपको २३ लाख रुपया वार्षिक वेतन मिलता था लेकिन अपने खर्चके लिये धरसे रुपया मंगवाते थे। वेतनका रुपया दान पुण्यमें खर्च होता था। आपका कथन है कि "भारतका शासन इस प्रकार करना चाहिये जिससे प्रजाका भला हो और भारतवासियोंको विदित होजाय कि हम उन्हींके हितके लिये शासन करते हैं" प्रजाकी स्वतंत्रताको नष्ट करनेवाली फौजदारी कानूनकी शक्तिको और देशी नरेशोंको फट पढ़ानेवाली पोलिटिकल एजेन्टोंकी सफ्टीको, प्रशिक्षणत सुनते ही आपने उठा लिया था।

इङ्ग्लैंडमें १० हजार एकड़ भूमि आपकी जमींदारीमें है। "ईसामसीहके उप देश" नामक अंग्रेजी ग्रंथ आपका विरचित है। इस समय आपके पुत्र वार्डकोन्ट बेरिङ्ग लन्दनमें विद्यमान होकर पार्लियामेन्टके मेंबर हैं।

निजामुल्मुल्क, फतेहजंग, आसफजाह, हफतरेहजारी, सूवेदार बहादुर (हैदराबाद राज्यके संस्थापक) - आपका नाम कमरुद्दीन खों था और आप

गंगानी उर्दान खों के पुत्र थे । मुगलसम्राट, औरंगजेबके समयमें आपका पांच हजारी मनसब था । औरंगजेबकी मृत्युके पीछे तख्तके लिये जो झगड़ा उसके बेटोंमें हुआ उससे आप बिलकुल अलग रहेथे । पश्चात् वहाबुरशाहने तख्तपर बैठकर खानदौरों, खानबहादुरका खिताब और भयधकी सूबेदारी तथा खखनऊकी फौजदारी आपको दी । कुछ समय पीछे नौकरी छोड़, फकीर हो आप दिल्ली चलेगये । जहां दारशाहने तख्तपर बैठकर फिर आपको तख्त दिया । फर्गससिपरने तख्तपर बैठकरनवाब निजामुल्लुल्क, फतेहजंगका खिताब; हुसैनजारी मनसब और दक्षिणकी सूबेदारी आपको दी । मुहम्मदशाहने तख्तपर बैठकर आपका पद और उपाधिबहाल रखी । मुहम्मद अमीनखों कोकानाके मरनेपर मुख्य मंत्री नियत होकर आप दिल्ली आये । मंत्रीके पदपर रहतेहुये आपने औरंगजेबके समयके कायदे जारी करने चाहे लेकिन दुर्बारके अन्य सदा आपके खिलाफ हो गये।पश्चात् दक्षिणकी सूबेदारी पर आपको भेजा गया लेकिन शीघ्रही नौकरीसे अछिड़दा करदियेगये । इस समय मुगल साम्राज्यकी गिरतीका जमाना था' अत एव कुछ फाज एकत्र करके शकर खैर बके युद्धमें अपने उत्तराधिकारीको परास्त करके आपने दक्षिणके सुबेपर अधि कार करलिया और इस समयसे नाममात्रको आप दिल्लीके आधीन रहे । मुगल सम्राट् दिल्लीने इसी समय आपको भासफजाहका खिताब दियाया । अन्तमें आप मरहटोंसे लड़तेरहे और कर्नाटक तथा अर्काट विजय किये । स.ई १७४८ में १०० वर्षके होकर इस दुनियासे फूच किया ।

नौरोजजी मानकजी घाडिया, सी आई ई (पारसी दानवीर)— आप सुरत नगरके रहनेवाले हैं । आपकी माता मोटली बाईके धापदादाने अहाम बनानेके काममें करोड़ों रुपये पैदाकियेथे जो अन्तमें मोटली बाईको मिले । मोटली बाईके पिताका नाम सेठ नसरवानजी घाडिया था । मोटली बाई २६ वर्षकी उम्रमें विधवा होगईथी और उसने पार्लियोंमें विधवाविवाहकी प्रथा रहने पर भी दूसरी शादी नहीं की थी । वह बड़ी दानवीर थी और सदैव अपनी जायदादकी रक्षा करनेमें जो साहसित्थीपमें है तथा अपने एकलेख पुषके लालन पालनमें लगी रहतीथी । १८९७ में मोटली बाईका देहात ८६ वर्षकी उम्रमें हुआ ।

माताके पश्चात् घाडिया महाशयने १ करोड़ रुपया दान किया । दुनिया भरमें जिसकिसी मनुष्यपर यकायक शोचनीय दैवविपत्ति पड़ेगी वह इस करोड रुपयेकी आमदनीसे मदद पावेगा ।

अग्निसे, जलसे, ज्वालामुखीके संहारसे, बुर्भिशसे भूकम्पसे विपद्ग्रस्त होनेपर अथवा किसी अन्यप्रकारकी दैवविपत्ति निरुपाय होनेपर मनुष्य इस करोड रुपयेकी आमदनीसे सहायता पावेगा ।

भाऊनगरी-(सर मन्वरजी मरवानजी भाऊनगरी)के सी. आई. ई. ए. ई. १८९५ से १९०५ तक फनजरवेष्टिव दफ्तर शरीक होकर यूटिश पार्लियामेन्टके मेम्बर हैं और इङ्ग्लैंडमें रहते हैं। एक अभीर पारसी सौदागरके घर १५ अगस्त, १८५१ की साल बम्बईमें जन्मे। एडविन्सटनकालिज, बम्बईमें शिक्षा पाई। कालिज छोड़नेके पीछे समाचारपत्र सम्पादनका काम करते रहे। १८७३ की साल भाऊनगरराज्यकी तरफसे एजेन्ट नियत हुये और बादको उक्त राज्यके कानूनी सलाहकारका पद आपको मिला। १८९५ में इङ्ग्लैंड चले गये और ब्रिटिश पार्लियामेन्टमें मेम्बरी पाई। १८९७ में ब्रिटिशगवर्नमेंटने के, सी. आई. ई. की उपाधिले आपको विभूषित किया। घोडेकी पीठ पर सवारी छेने और व्यायाम करनेके अनुरागी हैं। आपसे पेशतर केवल दादाभाई नौरोजीही ब्रिटिश पार्लियामेन्टकी मेम्बरी पानेम समर्थ होसके थे और हुन्ही धोर्नोको सिवाय कोई तीसरा हिंदोस्थानी मेम्बर अब भी पार्लियामेन्टमें नहीं हैं।

आपने इस्टइंडिया कम्पनीके राजप्रबन्धका इतिहास अंग्रेजिमि रखा है और महाराणी विक्टोरियाके हार्डिङ सम्बन्धी खगितका अनुवाद गुजरातीमें किया है।

भालचद्रकृष्ण भाटवडेकर, यल यम, जे पी, नायट, - इस समय हिंदोस्थानी प्रसिद्ध राजनैतिक पुस्तकमें आपकी गणना है। स. इ. १८८५ से गिरगांव बम्बईमें रहिकर हिकमत करते हैं। १९ फरवरी १८५० को जन्मे। कृष्ण शास्त्री भाटवडेकर आपके पिता थे और माताका नाम रुक्माबाई था। सावित्रीबाईसे आपकी शादी हुई है। एडविन्सटन हार्डिङ्ग और ग्रान्ट मेडीकेल कालिजमें पढकर डाक्टरीकी यल यम परीक्षा उत्तीर्णकी है और सोनेका पदक पाया है। १८७४ से ७६ तक बीडरा, पालनपुर और वैसीनर्म अडिस्टेन्ट सर नियन रहेये। १८७६ से ८५ तक विज्ञान सम्बन्धी वैशीभाबाई कालिज म मि-सीपेठ और चीफ़ मेडीकेल अफसर, बरोडाम रहेये। बम्बई यूनीवर्सिटीके सभासद हैं और कर्माश्कत यूनीवर्सिटीके सिन्डीकेट भी होते हैं। बम्बईकी म्युनिसिपेल् कापोरेशनके, मेडिकेल् यूनीयनके और ग्रान्टकालिजकी मेडीकेल सभाके प्रधान हैं। १८९७ से ९९ तक लेजिसलेटिव कांसिलके चेअरमैन और १९०१ म लेजिसलेटिव कांसिलके मेम्बर रहे ये। बम्बईकी इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके भी मेम्बर हैं।

म्युनिसिपेल् कापोरेशन बम्बईके प्रधान रहिकर जो राजा और प्रजा की सेवा आपने कीयी उसीके पुरस्कारमें नायट (Kt.) की उपाधि पाई है। सनातन हिन्दुधर्मके अनुरागी हैं। इन्डियन नेशनल कांग्रेसके सहायक हैं।

स ई १९०५ तक घनस्पतिविद्या, खीचिकिता, कुष्ठ, मदिरादोष निवारण आदि विषयोंपर कई अंग्रेजी ग्रंथ भापने रचे हैं ।

महावतखौं, हफ्तहजारी, खानखाना सिपह सालार बहादुर—भाप का असली नाम जमानावेग था । भापके पिता गयूरवेग, काबुलके रहनेवाले सैयद थे और भापके पूर्वज शीराजवे भाकर काबुलमें बसे थे । अकबरने मिर्जा हकीमकी मातृद्वितीमें भापको मुगलसेना में भरती किया और चित्तौड़की लड़ाईमें बहादुरीसे लड़कर भापने प्रसिद्धिपाई थी । पश्चात् शहिजादे सलीम (जहाँगीर) के निजके ओहदेदारोंमें रखे और कुछ कालतक शागिर्दपेशोके बख्शशाका पद भोगा था । उस समय भापका मनसब तीन हजारोंथा और महावतखौंखिताब था । जहाँगीरने तख्तपर बैठकर शहिजादे खुरम (शाहजहाँ) की मातृद्वितीमें भापको दक्षिणकी लड़ाई पर भेजा । वहाँ आपने ऐसी उत्तम राजसेवा की कि जिसके प्रभावसे भापकी प्रतिष्ठा और दर्जा दर्भारके अन्य सरदारोंकी अपेक्षा अधिक बढ़गया । इसके बाद खानदौरोंकी जगहकाबुलकी सूबेदारी पर भेजे गये थे ।

मुगल सम्राट् जहाँगीरके तीन बेटे थे खुरम, शहिरयार और परबेज । शहिरयारको नूरजहाँकी बेटी जो पहिले पति शेरअफगनसे थी विवाही थी । इसी कारण नूरजहाँ चाहती थी कि जहाँगीरके बाद शहिरयारको खत मिले ।

चौद दिनों पीछे जब खुरमने बिगड़कर उपद्रव किया तो नूरजहाँने अपना इरादा पूरा करनेके लिये भापको काबुलसे तलब किया । दिल्ली पहुँच भापने इलाहाबादकी सूबेदारी पाई और साधियोंको छितर बितर करके खुरमका पक्ष लूटा कर दिया । फिर शहिजादेपरबेजकी मातृद्वितीमें बिहारके मुलतान मानसारमीको परास्त किया । परबेजके साथ भापका मेळ बढ़ना नूरजहाँको घुसा लगा, निदान अपने भाई आसफखौं घजीरकी मारफ्त उसने दरबारके सब सरदारोंसे भापके खिलाफ जस्य करायी और जहाँगीरके काबुलके दौरेपर आते समय भापको बुलाया । लेकिन भदलीके ५०० रामपूत सवारों सहित हाजिर होनेपर भापको बादशाहसे मिलनेकी आज्ञा नहीं मिली इस अप्रतिष्ठाको भाप बरदाश्त नहीं करसके, निदान जब फौज उतरमानेके बाद बादशाहकी सवारी झेळमपार शेरहीपी तो आपने राजदम्पतिको कैद कर लिया । यह खबर पातेही घजीर आसफखौंने अपनी जागीरपर भागकर भटकके विलेम पनाह छी लेकिन वहाँसे भी कैद कर लिये गये ।

इसके बाद प्रायः १ वर्ष तक राग्यमें भापका पूरा अधिकार रहा अंतमें मौका पाकर नूरजहाँने भापके भदलीके सिपाहियोंको मरवाशाखा और बादशाहको कैदसे मुड़ाया । इस हालतमें भाप भागकर गुजरातके पास शाहि

जादे हुएमसे जा मिले, जो उन दिना बागी होरहाया। कुछ ही दिन पछे जहांगीरने परछोकयात्रा की। सुरमने तख्तपर बैठकर अपना नाम शाहजहां रखा और आपको हफ्तहजारी मनसब, खानखाना सिपहसालार बहादुरका खिताब, ४ लाख रुपया मकद इनाम, भनमेरकी सूबेदारी और आपके बेटे खानममोंको माळवाकी सूबेदारी दी। पश्चात् दक्षिणकी सूबेदारी पर आपकी बयली होगई। वहां आपने राज्यप्रबंधमें सुधार किया, बीजापुरका घेरा किया, अमरकोट और महानकोटके किलोंको उदादिया, पाकूब इचरीको परास्त किया, फतेहखानोंको कैद करके दौलताबादको लूटा, लूटका २५ लाख रुपया बादशाहकी भेंट किया और ५ लाख रुपया इनाम पाया। फिर मरहटोंसे लड़ते रहे। १०४४ हि०में ८ बेटे छोड़कर परछोकयात्रा की। और नजफशरीफ में छेबाकर दफनायेगये।

मालोजी भोंसले (मरहट्यराज्यके सत्यापक महाराज शिवाजी भोंसलेके दादा)—आप राना चित्तौड़के वंशमें थे। आपसे ७८ पीढी पहिले शिव राय राना चित्तौड़के कनिष्ठ पुत्र भीमसिंहने भोंसलानामक युगमें भागकर अपनी जान बचाईथी, इसीसे उनके वंशज भोंसला कहलाये। मालोजीके पिता सम्भाजी भोंसला दौलताबादके समीप वेरुलमें रहतेथे और कई ग्रामके जमीन्दार थे। २५ वर्षकी उम्रमें मालोजी अहमदनगर राज्यमें कुछ युद्धसवारोंके अफसर नियत हुये और धीरे २ पाँच हजार युद्धसवारोंके अफसर होगये। स. ई. १५९४ में आपके पुत्र शाहजी भोंसलाका जन्म हुआ। स. ई. १६०४ में निजाम शाही सरकारने मालोजीको सूबा और पूनाये परगने जागीरमें बिये। स. ई. १५५२ में जन्म, स. ई. १६१८ में मृत्यु।

मीरजुम्ला, मुअज्जमखॉ, हफ्तहजारी, सिपहसालार, खानखाना बहादुर—आपका असली नाम मीर मुहम्मद खॉ था। पिता आपके असफहानने रहनेवाले एक अमीर सैयद थे और गोलकुंडामें रहकर जौहरीका पेशा करतये। आपने पहिले पहिल गोलकुंडाके नवाब अब्दुल्ला कुतबशाहके दरबारमें नौकरी की थी और शीमे ३ उखतपद पर पहुँचकर करनाटक विजय कियाया, हीरेकी खानोंपर अधिकार कियाया, राज्यप्रबंधमें सुधारकियाया और मीर जुमलाका खिताब पायाया। लेकिन दरबारके अमीर खदारोंने ईषक हाकर आपके बसंठी पुत्र मुहम्मद भमीनकी तरफसे कुतब शाहका विल फेरदियाया जिसके कारण हस्तीफा देवर आप औरगजेबके पास चले आयेथे। औरगजेबने आपको अपने पिता मुगलखघाट शाहजहांकी खिदमतमें दिल्ली भेजादिया। वहां आपने एक बहुत बड़ा हीरा, १० हाथी और १५ लाख रुपयेकी जवाहरत बादशाहकी भेंटकी और दरिबान आला (मुकुपमंधी) का पद, मुअज्जमखॉका खिताब, ६

हजारी मनसब तथा ५ लाख रुपया नकद इनाम पाया। पश्चात् औरंगजेब की मातृहितीमें बीजापुर विभय करनेके लिये भेजेगये। वहां आपने विद्वर तथा कल्याणका किला फतेह किया और गुरुवर्गके नवाब आदिलशाहको परास्त करके १ करोड़ रुपया वसूल किया तथा काकणप्रदेशका राज्य छीन लिया। औरंगजेबके वापिस जानेपर काकण प्रदेशका शासन आपके हाथमें रहा। छह ही दिनों शाहजहांके बीमार पड़नेसे तख्तके चास्ते उसके बेटांमें झगड़ा हुआ और गुप्त राजनैतिक कारणोंसे वजीरके पदसे आपको बदल दिया गया और जुमलासुल्तानका खिताब दियागया। इसी समय औरंगजेबसे भी आपकी कुछ मनबन होगई जिसके कारण दौलाताबादके किलेमें आपको कैद किया गया, धन धान्य सब खालसा करलियागया और आपके घरके लोगोंको शाही शुक्राम बना लियागया। औरंगजेबने तख्तपर बैठकर आपको फिर तख्त किया और दफतहजारी मन सब, १० लाख रुपये नकदका खिलत और खानदेशकी सूबेदारी दी और अपने भाई शाहशुजाको परास्त करनेके लिये आपको भेजा। शाहशुजाको परास्त करके बिपहसालर, खानखाना बहादुरका खिताब आपने पाया। फिर कूचविहारका राज्य लड़ाईमें जीता और अतमें आसामपर चढ़ाई की। कई महीने तक युक्ति पूर्वक लड़कर आसामके राजा धनसुखसे खिराज वसूल किया लेकिन वसंतका मौसम आजानेसे फौजमें गुस्तर फैला जिससे अधिकांश सैनिक मर गए और आपभी खरदी लगनेसे बीमार पड़गये। अन्तमें छाधार होकर बंगालकी तरफ कूच किया लेकिन खिरपुर पहुँचतेही १०७३ हि० में इस आसारखंसारका सम्बन्ध छोड़ना पड़ा। हैदराबाद (दक्षिण) में आपकी बड़ी भारी हबेली थी।

मिन्टो (सर गिल्बर्ट जान इलियट-मरे-किनिन्मीड, अर्ल आफ मिन्टो, वायसराय हिंद-Sir Gilbert John Elliot Murry Kynyn Mound Earl of Minto, Viceroy of India)-इंग्लंडके प्रसिद्ध इलियट वंशमें आपका जन्म हुआ है। आपके प्रपितामह प्रथम अर्ल आफ-मिन्टो स १८०७ से १८१३ तक हिन्दोस्तानके गवर्नर जनरल रहेथे और यहांसे वापिस जानेपर उत्तम राज्यसेवा करनेके पुरस्कारमें उनका दर्जा बढ़ाया गयाथा और अर्लदम आफ-मिन्टो उनको प्रदान की गईथी। जनरल सर टामस हिसलोप, जो १८१७ की साल मेहदीपुरके समामने संयुक्त थे, आपके दादा थे। प्रथम अर्ल आफ-मिन्टोके भाई सर थू इलियट, म्यूरिच, बर्लिन और नेपिल्समें आमात्यका पद भोगनेके उपरांत मदरासके गवर्नर नियुक्त हुयेथे। इसलिये भारतसे आपका सम्बन्ध पुराना है। आपका जन्म १८४५ में हुआथा। ईटन तथा ट्रिनिटी कॉलेजमें आपने विद्या पढ़ीथी। बहादुरीका परिचय पढ़नेके सम

यमें ही आपसे मिलने लगाया । इन्तके कालिजमें आप कसरती रहकर
 उपासये । ट्रिमिटी कालिजमें दौड़वी कसरतमें आप प्रथम आयेये । वि
 प्राप्त करनेके अवसर पर रीत्यानुसार १० मीलकी घुड़ दौड़में उत्तीर्ण
 आपने यूनीवर्सिटी स्टीपिल मेसका प्रथम पारितोषिक पायाया । आप बड़े
 पुर, साहसी पुरुष हैं । संसारके प्रायः सब भागोंका भ्रमण भी आपमें किय
 सैर और शिकारकेभी बड़े शौकीन हैं । विद्याभ्यासग और साहित्यसेर
 योग्यता भी सदैवसे आपके वंशमें पाई जातीहै । अब भी आपके छोटे
 आनरेबिल आर्वर इलियट यम पी पहिन्धरोरीव्युके सुयोग्य संपादक हैं ।
 मी गंभीर सैनिक विषयोंपर एडिबरोरीव्यु, नायनर्टीस सेंजुरी, यूना
 सर्विस मैगजीन आदि पत्रोंमें निबन्ध लिखा करते हैं । आप युद्ध विग्रह
 राज्यशासन दोनोंके अतृभवी हैं और ६० वर्षके होजाने पर भी शरीरसे दृढ
 प्रसन्नचित्त हैं । १८६७में आप अंग्रेजी सेनामें भर्ती हुयेये । १८७१ में किसी वि
 य कारणसे पेरिसमें गुप्त रूपसे रहे और एक भयानक आग जुझामें स
 हुए । पश्चात् किसी गुप्त कार्यके लिये स्पेनकी सीमामें भेजेगये । १८७४ में रु
 रुम संग्रामके अवसरपर जब रुसके विरुद्ध रुममें सेना भेजी गई तो
 रुसके साथ थे । और डेन्युव नदीपर आपने रुसियोंसे मुकाबला किया
 १८७८ की साल अफगानिस्थानकी लड़ाईमें आपने शूरता प्रकटकी थी ।
 १८८१ में एड राघटसके साथ प्रायवेट लिफ्टेन्टरी होकर रास तुशतमें
 गयेये । १८८२ में अर्वी पाराके खिलाफ आप मिश्रकी लड़ाईपर भेजे ग
 और वहा अफगानिस्थानके अन्तर्गत जिसमें लाई वेल्डिजलीने विजय पाई
 आप भागकाहये युद्धमें घायल हुयेये । उसी साल जब लाई ऐन्सडोन का
 डाके गवर्नर जनरल नियत हुये तो आपको उनके जैंगी लिफ्टेन्टरीका
 दियागया । १८८५ में उत्तरी पश्चिमी कनाडाका बलवा दबानेके लिये आप
 नियुक्ति हुई । उपद्रव शांति करनेमें आपने सफलता पाई । १३ वर्ष पश्
 छार्ड पेवर्टॉनके उत्तराधिकारी होकर आप गवर्नर जनरल कनाडाके उच्च पदा
 प्राप्त हुये । कनाडाके राज्य और प्रजाकी आपके शासनमें बड़ी उन्नति हुई
 सर्वसाधारणकी भलाई पर आपका सदैव ध्यान रहा । १९०५ में वायसर
 हिंदके पद पर नियुक्त होकर जब आप भारतको पयान करनेके लिये
 लैडको वापिस आये तो राजराजेश्वरकी गवर्नमेंटने कनाडाका मत्युत्तम शास
 करनेके पुरस्कारमें आयुष्म शब्दोंसे भराहुआ प्रशंसापत्र आपको दिया । आप
 पत्नी लेडी मिन्टो महारानी विक्टोरियाके प्रायवेट लिफ्टेन्टरी सर आर्ल
 केकी लड़कियोंमेंसे एक हैं । भारतको पयान करते समय लेडी मिन्टोंने ए
 विश्वायीके जलसेम कहाया कि यदि मेरे पतिके शासनमें कनाडाकी प्रजा
 सदा पूर्वी प्रजाकी भी सुख चैन हुआ तो मुझको सन्तोष होगा । लाई मिन्टो

हिंदोस्थान^२ आने पर लेडी मिंटोंके भाई वर्तमान थर्ड मे कनाडाके गवर्नर जेवरल नियुक्त हुयेहै । राक्सघरोशापरमें शहर हैनिकसे ६ मील दूर आपका राजमसाद "मिंटोभवन" बहुत सुंदर, भव्य और दर्शनीय है । उसमें पहलेसे ही मनुष्यव्यवस्था प्राचीन शिबों तथा पदार्थोंका संग्रह है । आपने उसमें और भी बढ़ती धीहै । स्काटलैंडके प्रसिद्धकवि सर वाल्डर स्काटने मिंटोभवनको भाकर देखाया और "ले आफ वी लास्ट मिन्स्ट्रूज" नामक काव्यमें उसका वर्णन कियाया ।

मेओ—(रिचर्ड सौथवेल, पष्ठ अर्ल आफ् मेयो—Richard Southwell, 6th Earl of Mayo)—इंग्लिन (भायरलैंड) में २१ फरवरी, स १८२२को जन्मे । आपके पितापंचम अर्थ आफ्-मेयो थ । और आपका वंश प्राचीन तथा प्रतिष्ठित था आपके अनेक पूर्वजोंने भी बड़े-२ उच्च पद पायेये । युवा होकर लार्ड मेयो ६ वर्षे अयरलैंडके मुख्य मंत्री रहे । १८६९ में पापसराय हिंदू होकर हिंदोस्थानको आये लेकिन ऐन्डमन द्वीपमें १८७२ का साल एक कैदीके हाथसे मारेगये । आपके शासनमें इसदेशके भीतरी प्रबन्धमें बहुत कुछ उन्नति हुई । लार्ड लॉरेन्सका विचारहुआ अम्बाला दरबारभी शेरमलीको समीरकाबुल बनानेके लिये आपहीके शासनके पहिले वर्षमें सफलतासहित सम्पूर्ण हुआ । १८६९-७० में इंग्लिश आफ् एडिन्बरो हिंदोस्थानमें आये जिससे देशीनेरेशोंके चित्तमें सरकारकी शुभ चिन्ताने पहिलेकी अपेक्षा अधिक दृढतासे स्थितिपाई ।

लार्ड मेयोने कृषिविभाग स्थापनाकिया और अनेक विभागोंका सुधार किया । मालजुजारी और नमकका महसूल घसूल करनेके कायदोंमें बहुत कुछ सुधार किया । आपके समयमें सड़क, रेलवे और नहरोंने बहुत विस्तार पाया जिससे देशकी दशाभ अधिक उन्नति हुई । लार्ड डेल्होवीका खोचाहुआ पब्लिक वर्क्स विभाग (मुद्रकमा सामीरात) भी आपहीके समयमें स्थापित हुआ । मेयोकाछिज, अजमेर आपके स्मारकमें खोलागया ।

म्युर (सर विलियम म्युर, के सी यस ज़ाई, यल यल यल डी, डी सी यल—Sir William Muir, K¹ Q¹ S¹ I, L L D D C L)—म्युरसेटल कालिज, इन्डादावाद आपको स्थापित है । १८१९ में जन्मे । ग्लासगोके रद्नेवाल विलियम म्युर आपके पिता थे । १८४० में शाहीकी । एडिनबरो और ग्लासगोकी यूनीवर्सिटियोंमें तथा हैर्लाथरी कालिजमें शिक्षा पाई । १८३७ में बंगाल सिविल सर्वि समें भरतीहुए । पश्चात पश्चिमोत्तरदेशकी गवर्नमेन्टके सिक्रेटरी तथा योर्ट आफ् रेवीन्युके मेम्बर रहे । सन ५७ के गदरमें खबर विभाग (Intelligence)

Department) के अफसर होकर आगरेमें रहे। फिर गवर्नमेन्ट हिन्दूके मंत्री होगये। १८६७ में गवर्नर जनरलकी कांसिलके मेम्बर हुए और के सी आई ई का खिताब पाया। १८६८ में पश्चिमोत्तरदेशके लफ्टिनेन्ट गवर्नरका पद पाया। १८७४ में इङ्ग्लैंड जाकर मालविभागके मंत्री हुए। १८७६में कांसिल आफ इन्डियाके मेम्बर हुये। १८८५ से १९०० तक एडिनबरो यूनिवर्सिटीके मिथी-वेल् और भायर्स चैनसेल रहे।

हिंदोस्तानसे पेशवा पाकर इङ्ग्लैंडको वापिस जाने पर आपको भारतके सिक्रेटरी आफस्टेटके वृषभमें नौकरी दीगईयी। १९०५ की साल एडिनबरो (स्काटलैंड) में आपका देहान्त हुआ। आपको घोड़ेपर चढ़नेका अनुराग था। फिलासोफर आफ डिप्लिनिटी (Ph D) की उपाधि आपको प्राप्त थी। निम्नलिखित ग्रंथ आपके विरचित हैं-

- 1 Life of Mohomed
- 2 The Caliphate.
3. Mamluke dynasty
- 4 The Coran its Composition and teaching
- 5 The Mohomedan Controversy

रावर्टस (सर फ्रेडरिक रावर्टस, पी सी ,के पी ,जी सी वी ,जी सी यस आई ,जी सी आई ई , वी सी , डी सी यल ,यल यल , डी , लार्ड आफ कन्धार, मिटोरिया ऐन्ड वाटरफोर्ड—Sir Fredrick Roberts, P C., K. P., G C B, G C S I, G O L E., V C., D O L, L L. D, 1st Larl of Kandhar, Pretoria and Waterford) स हैं १८१२ की साल कानपुर में जन्मे। आपके पिता जनरल सर वेवरेहम रावर्ट, जी सी वी भायरलैंडके रहनेवाले थे। एटन, सैन्टस्टैंड और वेस्टिस्कोम्बी के कालिर्जमें शिक्षा पाकर बंगालके घोपखानेमें लफ्टिनेन्टके पद पर नौकरी की। १८५९ में एक कप्तानकी घेठी नौरा हेमरीटासे शादी की। शनै २ उम्रति करवेहुये १८८५ में हिंदोस्तानके कमान्डर इन चीफ हुए। १८५७ के गद्दमें छखनकं, दिल्ली, बुलन्दशहर, भागरा, मलीगढ, फलौज, कानपुर, सुदार्गम, फतेहगढ़, मियागज इत्यादि स्थानोंमें घागियोंको परास्त करके शान्तिस्थान की। १८६७ से ६८ तक देवीखानियाकी चढ़ाईमें और १८७१-७२ में तुशारकी चढ़ाईमें सेनापति रहकर विभव प्राप्तकी। १८८६ की साल ब्रह्माकी चढ़ाईमें भी भापही सेनापति थे। १८७९ से ८० तक काबुल क. भारतके युद्धमें घांका शगदा सदैयके लिये बुकाकर आपने ब्रिटिश गवर्नमेन्टकी सीति अट्टरली

और छार्ह भाफ कन्धारकी उपाधि पाई । १९०१-०२ में ट्रान्सवाल (दक्षिणी ऐफरिका) के युद्धमें आप बर्फी बहादुरीसे लड़े और अंग्रेजोंकी विगड़ी बात बनानेमें समर्थ हुये । इसी युद्धमें आपका एकलौता पुत्र रणशायी हुआ लेकिन आपने छफ् नहीं की । थोड़ेही दिन पश्चात् आप इङ्ग्लैंड बुलालिये गये । उपरोक्त लड़ाइयोंके सिवाय अन्य बीसियों मोर्चोंपर भी जाकर आपने शत्रुका साम्हना कियाहै लेकिन कहींसे हारकर नहीं लौटेहै । गवर्नमेंट हिन्द्ने बीसियों दफे सर्कारी कागजोंमें आपकी प्रशंसा की है । लड़ाइयोंमें कई दफे आप घायल हुये और कई दफे आपका थोड़ा मारागया लेकिन आपके प्राण बाल ३ बचे गये । सैनिक लोग पिताके समान आपको प्यार करते है और आपका नाम सुनतेही प्रेमसे विह्वल होजाते है । आप राजा तथा प्रजाके प्यारे हैं और भाय रलैंडके रहनेवाले हैं । बृटिश गवर्नमेंटने धीरताके कामोंसे प्रसन्न होकर आपको (१) अनेक पदक प्रदान किये है (२) छार्ह भाफ कन्धार और जी सी बी, जी सी यस आई तथा जी सी आई ई की उपाधिय दी हैं (३) बड़े २ इनाम भी दिये है और (४) बृटिश साम्राज्यकी सेनाके फील्ड मार्शल-शुल्को पद दियाहै जिस पर आप १९०६ तक विद्यमानहै । पार्लियामेंटकी छार्ह और कामस सभाओंने भी आपकी कार्यवाहियोंपर दो दफे कृतज्ञता प्रकाश की है । अनन्यधीर विपाही होनेके सिवाय आप विद्वान भी असाधारण श्रेणीके हैं । १८८१ में आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीसे डी सी यल की उपाधि पाईथी । १८८० में एडलिन यूनिवर्सिटीने और १८०३ में केम्ब्रिज तथा एडिनबरोकी यूनीवर्सिटियोंने यल यल डी की उपाधि आपको दीथी ।

“वेल्डिङ्गटनकी उन्नति” और “हिंदोस्थानमें ४१ वर्ष” नामक अंग्रेजी ग्रन्थ आपके विरचितहैं ।

रिपन (जार्ज फ्रेडरिक सैमुअल राविन्सन, के जी पी सी, जी सी यस आई, जी सी आई ई, डी डी, डी यल जे पी डी सी यल., प्रथममार्कुइस आफ रिपन—George Frederick Samuel Robinson, K G, P C., G C S L, G O L E, V D, D L., J P, D O L., 1st Marquis of Ripon)—

२४ अक्टूबर, स ई १८१७ को लन्डनमें जन्मे । आपके किसी पूर्वजको स ई १६८० में वैरीनेटका खिताब मिलाया, एवं आपका वंश मास्वीन और प्रतिष्ठित है । आपके बापको अर्लकी उपाधि प्राप्त थी और आपकी माता वकिन्ध मशापरके शत्रुय घेरनकी बेटी थी । प्रथम अर्ल डीप्रेकी पौषी हेनरीटा, सी० आई० से आपकी शादी हुई । हलनगरकी तरफसे १८५२—५३ में, हर्ट्स-

फोल्डकी तरफसे १८५२—५७ म, वेस्टरायडिङ्ग (यार्कशायर) की तरफसे १८५७—५७ में पार्लियामेंटके मेम्बर रहे। १८५९—६१ में युद्ध विभागके उपमन्त्री रहे। इन्डिया आफिसके उपमन्त्री १८६१—६३ में रहे। युद्ध विभागके मंत्री १८६३—६६ में रहे। १८६६ में हिंदोस्थानक मंत्री आफ स्टेट हुए। १८६८ से ७३ तक काँसिलके छार्ज प्रेसीडेन्ट रहे। १८७१ म बार उस कामेटीके प्रधान थे जिसने वारिशिंगटनकी संधिका मसौदा तैयार किया था। १८७७ से ७४ तक फ्रीमैसन्सके ग्रैंडमास्टर भी आपहों थे। १८८० से ८४ तक वायसराय हिंदूके पद पर काम किया। १८८१ में जलसेनाविभागके मंत्री हुए। १८९२ से ९५ तक विदेशीवस्तियोंके मंत्री आफ स्टेट रहे। १८९५ में रिपनके मुख्यनायकका कामभी आपके विपुर्द रहा। १९०२ में जीवित हैं और इंग्लैंडमें २१,८०० एकड़ भूमिके जर्माँदार हैं। आपके हिंदोस्थानी शासनमें (१) ऐयूबखानोंको परास्त करके अमीर अब्दुल रहिमानको काबुल कंधारकी गद्दी दी गई (२) देशी समाचार पत्रोंको स्वतंत्रता दी गई (३) छोकरल सेल्फ गवर्नमेंटका आईन जारी हुआ (४) शिक्षा विभागका सुधार हुआ विद्याविस्तार हुआ (५) बाहरसे आनेवाले सूखी इत्यादि तिनारती अखबार पर से महसूल हटाया गया (६) कुछ हिंदोस्थानी सेना ब्रिटिश गोरी सेनाको मदद देनेके लिये १८८२ में मित्र देशको भेजी गई जो वहाँ पर बड़ी हटता और वीरतासे लड़ी। पश्चात् इसी सेनाके कुछ अफसर और सिपाही इंग्लैंडको भेजे गये जिनका आगत स्वागत वहाँपर सत्र हॉर्गमें प्रतिष्ठा सहित किया। सर्जिस लार्ड रिपनने अपने शासनमें हिंदोस्थानियोंको अनेक स्वत्व दिये, उनकी भाँषिष टका सुधारनेका उद्योग किया, विद्योन्नति की और देशियोंकी प्रतिष्ठा बढ़ाई। रिपन का डिज, छपनक आपके स्मारकम खोला गया था।

लिटन (लार्ड बुलवर लिटन, जी सी यस आई—Lord Bulwer Lytton, G C S I) आप नामी फवि होकर अनेक प्रयोंके रचयिता थे। राजनैतिक पुरुषा तथा सुप्रसिद्ध वक्ताओंमें आपकी गणना है। स १८७३ से ८० तक वायसराय हिंदू रहे। आपने राज्य सम्बन्धी आईन बनाकर हिंदोस्थानी मजासे इधियार लेलिये थे और देवी पेपरोंका मुंह बन्द करनेके लिये भी आईन बनाया था। १८७४ में मलिका विकटोरियाने कैसर-हिंदूया खिताब दिया, इसके प्रकाश करनेके लिये आपने दिल्लीमें मुहुरत द्वार किया। १८७६—७७ में इस देशमें मयात्रक अकाल पटा, जिसमे सरकारने ११ करोड़ रुपया खर्च किया, बाहरसे धनुवेरा नाम मँगवाया और बाकाल पीड़ित लोगोंमें रेल और जहाजद्वारा पहुंचाया लेकिन मदान शोकथा स्थल है कि धन भी ५३ लाख ५० हजार मनुष्य मर गये,

१८७८ में शेर अली अमीर काबुलने ब्रिटिश राजदूतका अनादर किया और काबुलम आये हुए रूसी मिशनकी प्रतिष्ठाकी। इस पर अमसन्न होकर लार्ड लिटनने सैबर, कुर्रम और बोलानकी घाटियोंके रास्तेसे ब्रिटिश फौजको काबुल पर चढ़ा दिया। शेर अली सुकिस्ता रफी तरफ भाग गया और वहीं मर गया। शेर अलीके पुत्र याकूबखानि गदमकके स्थानपर सन्धि की मिसके अनुसार घाटियोंके पश्चिमी छोरतक अंग्रेजी सीमा बढ़ाई और काबुलमें ब्रिटिश रेजीडेन्ट रखनेकी बात स्थिर हुई। कुछ ही महीने पीछे अफगानोंने सर उठाया, ब्रिटिश रेजीडेन्ट सर छुई कैपेनरीको मारखाला और द्वितीय अफगानयुद्धकी नींवत पड़्यी। ऐसी हाकतमें याकूबखाने सख्त त्याग दिया और कलकत्ते पहुँचाये गये। सर फ्रेडरिक रायटने काबुल पर चढ़ाई की और वहाँकी संपद्रवा प्रजाको खूब ही डीखा किया। इसी भवसरपर लार्ड सालिसबरी मुख्यमंत्रीको इङ्ग्लैंडमें कमजरवेटिषदलकी पराजय होनसे अपना पद त्यागना पड़ा, यह सुनतेही लार्ड लिटन भी इस्तीफा देकर इङ्ग्लैंडको पधारे। युद्धका खर्चा निर्वाह करनेके लिये आपने हिंदोस्थानी प्रजापर इन्कमटैक्स लगायाया। आपके पुत्र लिटनके द्वितीय अल, हटफोड शायर (इङ्ग्लैंड) में रहतेहैं और ४००० एकड़ भूमिके जमीदार हैं। आपकी पुत्री लेडी एलिजाबेथकी शादी लार्ड वैलफोरके साथ हुईयी जो लार्ड सालिसबरीके पीछे १९०२में इङ्ग्लैंडके मुख्य भामात्य हुए। १८९१में लार्ड लिटन परलोकगाभी हुए।

लेयब्रज (सर रोपर लेयब्रज, यम ए , के सी आई ई Sir Roper Leith bridge, M A., K O I E) २३ दिसंबर, स ई १८४० की साल डेवनशापरमें लन्ने। ई लेयब्रज आपके साथ थे। आक्सफोर्ड कालिजसे यम ए पास किया। लैटिन, ग्रीक, हेब्रू आदि प्राचीन भाषाओं और गणित शास्त्रमें अपूर्व योग्यता दिखलाई। १८६८ से ७६ तक बंगालके शिक्षाविभागमें रहे। १८७१ से ७८ तक 'कलकत्ता वैमालिक रिज्यु' का संपादन किया। १८७७ में शिक्षासम्बधी कमीशन, शिमलाके मंत्री बनाये गये। १८७८ में पोलीटिकल एजेंट हुए और के सी आई ई का खिताब पाया। १८९२ में पेन्शन ली। १८९५ में स्त्री मरी। १८९७ में दूसरी शादी की। बेपुटी लेफटिनेंट और लार्डका खिताब आपको प्राप्त है। डेवन तथा केन्टके जास्टिस आफ पीस भी हैं। १९०१ में डेवनशापर एसोसिएशनके प्रधान बनाये गयेये। जूनियर कनज, रवेटिषडल, लण्डनके भी आप प्रधान हैं। एक्सटरके शिक्षारुग्धो डायोसिपनबोर्डके और डायोसिपन यानफ्रेन्सके मेम्बर हैं। ओकहैम्पटनकी फुपिभाके उपप्रधान हैं। अपीलके धमिभर होकर ओकहैम्पटनमें इनकमटैक्सकी अरीलें सुनतेहैं। शिकारकरने और गाने बजानेके अनुरागी हैं। शिक्षासम्बधी तथा राजनैतिक आन्दोलनोंमें हिस्सा लेतेहैं। १९०७ में जीवितहैं। हिंदोस्थानकी

स्वर्णचरितावली, हिंदोस्थानका इतिहास, बंगालका इतिहास तथा भूगोल और अंग्रेजी नूतन काष्पसंग्रह आपके रचे अंग्रेजी ग्रन्थ हैं ।

लैन्सडौन (हेनरी चार्लस कीथपेटी फिट्जमारिस, के जी, पी सी, जी सी एस आई, जी सी आई ई, जी सी यम जी, डी.सी. यल, यल यल डी पञ्चम मार्कुइस आफ लैन्सडौन—Henry Charles Keith Petty Fitzmaurice, K G P C, G C S I, G C I E, G C M G, D O L, L L D., 5th. Marquess of Lansdowne) भारत इङ्ग्लैंडके एक अत्यंत भव्य प्राचीन वैरन वंशमें हैं । आपके अनेक पूर्वजोंने भी बड़े २ पद पायेये । १४ जनवरी, स० इ० १८५५ की साल आपका जन्म हुआ । १८६६ म पिताके देहांत होनेपर मार्कुइस आफ-लैन्सडौनका खिताब पाया । १८६९में ड्यूक आफ् एवरकार्नकी घेटी माह, सी० आइ० से शादी की और उसी साल ब्रिटिश गवर्नर मटवी आफ् सीमें मंत्री कोषविभागका पद पाया जिसपर १८७२ तक रहे । १८७२से ७४ तक सेनाविभागके उपमंत्रिका पद भोगा । १८८०में हिंदोस्थानके उपमंत्री आफ-स्टेट रहे । १८८३से ८८ तक कनाडाके गवर्नर जनरल रहे । १८८८से ९३तक वायस राय हिंदके पद पर काम किया। इङ्ग्लैंड वापिस जाने पर सेनाविभागके मंत्रीक पद १८९५ से १९०० तक भोगा । १९०० म विदेशी मुत्काफे मंत्री आफ्-स्टेटका पद पाया जिस पर १९०५ तक हैं । १४२००० एकड़ भूमि आपकी जमींदारीमें है । आप प्रमाणिक और पढ़े शासक हैं ।

वाशिङ्गटन (जार्ज वाशिङ्गटन, अमेरिकाकी संयुक्तरियासतोंके प्रथम प्रेसीडेण्ट—George Washington 1st President of United States, America) आपके पूर्वज इङ्ग्लैंडसे अमेरिकाम आयसे योवरर्जानियामें स० इ० १७३२ की साल आपका जन्म हुआ । युवावस्थामें जनरल मैडर्री माताहितामें सरासिासे कनाडामें लड़ते रहे । जब अमेरिकाकी रियासतोंने संयुक्त होकर स्वाधीनताके लिये ब्रिटिश गवर्नमेंटसे युद्धताना तो सेनाया कमाण्डर इन-चीफ् आपको नियत किया । बड़ी बुद्धिमानी और धीरसाके साथ १७७९ में आपने अंग्रेजोंसे वोस्टनर साली बचा लिया । पर्यात् वह वष तक युद्ध जारी रहा जिसमें आप कई बड़े हारे लेकिन १७८१ की साल आपके टाउनसे युद्धमें ब्रिटिश जनरल लार्ड कानवालिसको आपने पूर्णरितिसे परास्त कर दिया । इसके दो वर्ष पाछे संधिची नौबत पहुंची जिसके अनुसार अमेरिकाकी संयुक्त रियासतोंने स्वाधीनता पाई और आपको संयुक्त रियासतोंका प्रेसीडेण्ट बनाया। युद्ध तथा शांतिमें समान रितिसे सर्वोत्तम शासक और स्वदेशियोंके भावत प्रतिभावा न होनेके कारण अमेरिकावाले आपको सर्वश्रेष्ठ पुरुष मानते थे। आप बड़े मजबूत,

शान्ति स्वभावके भग्नेजये। बाहरी भाव सर्वथा शान्तिमय मालूम होताया लेकिन दिल जोशसे भराहुआ था जिसको भाप जल्ल करसकते थे और दूसरोंमें व्याप्त करसकते थे। जेनरल घांशिंगटनका स० ई० १७९९ में देहान्त हुआ।

वेङ्कटरमणसिंहजूदेव, सर, महाराजा, बहादुर, जी सी यस आई (रीवाँनरेश) भाप सर रघुराजसिंहजू देव, जी०सी० यस० आई० के पुत्र हैं। इस राज्यके संस्थापक महाराज व्याघ्र देवकी भाप३२ र्वाँ पीढीमें हैं। वि० सं० १९३३ में भापका जन्म हुआ। पूरे ६ वर्षके भी नहीं होने पाये थे कि पिताका वैकुण्ठवास होगया। मातृगण्यके अनुरोधसे श्रीमानकी शिक्षाका प्रबन्ध राजधानी रीवाँ तथा सतनाहीमें कियागया और वहीं दूर नहीं भेजे गये। अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत भाषाओंके ज्ञान के बाद साहित्य, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, कानून गणित, युद्ध विद्या भादि की शिक्षा भापको दीगई। पश्चात् राजकाजका व्यवहारिक काम भापको सिखायागया और स्वराज्यका दौरा तथा भारतके प्रत्येक भागकी सैर कराके देश विदेशकी रीति भांति और बाल ठालसे भापको परिचित किया गया। १८९१ ई० में हुमराऊकीराज कुमारीसे विवाह हुआ। १८९५ ई० में राजकाजका भार अटिश गवर्नमेन्टकी आज्ञासे भापको सौंपागया। सिंहासनारूढ होनेके दिनही श्रीमानकी प्रथम आज्ञा राज्यछिपि उर्दूके स्थानमें देव नागरी कर देनेकी हुई। श्रीमान हिंदीके बड़े प्रेमी हैं। राज्याधिकार पानेके कुछहीदिन बाद श्रीमानका विवाह रत्नलाम नरेशकी भगिनीसे हुआ। दोषप बाद १२ मार्च स० ई० १९०३ को श्रीयुक्त रजौनिन महारानी साहिबाके गर्भसे वर्तमान महाराज कुमारका जन्म हुआ। श्रीमानबड़े विद्यानुरागी हैं। प्रजाकी विद्योन्नति धरना अपना मुख्य कर्तव्य समझते हैं। सतनामें श्रीमानने अपने नामसे एक स्कूल खोलाहै। रीवाँमें पहलेहीसे हाई स्कूल, बोर्डिंगहाउस तथा संस्कृत पाठशाळा है और दीन विद्यार्थियोंके लिये बहुतसी छात्र वृत्तियें नियत है। इसके सिवाय राज्यके प्रत्येक बड़े गाँवमें हिंदी और उर्दूकी पाठशाळायें हैं। प्रजाके रोग निवारणार्थ राज्यके छोटे ३ गाँवोंमें भी अस्पताल हैं। रीवाँ, सतना और उमरियामे बड़े २ अस्पताल है। इन अस्पतालोंमें औपधि मुफ्तवाँटी जातीहै। राज्यारूढ होतेही श्रीमानने सतनामें अपने नामका नेत्रौपचालय खोला दियाया। राज्याधिकार पानेके एकही वर्ष बाद रीवाँ राज्यमें घोर बुभंशपड़ा जिसमें प्रजाकी प्राणरक्षाके लिये अनेक प्रयत्न किये गये और अज्ञान रूपसे खर्च किये गये। इस सुप्रबंधसे सुरा होकर महारानी विकटोरियाने श्रीमानको जी०सी० यस० आई० का खिताब दिया। उमरियाके भासपास कोयलेकी खानि खोदनेका काम पहलेसे गवर्नमेन्टके हाथमें था राज्यको गवर्नमेन्टसे कुछ कर मिळता था। स० ई० १००२ में श्रीमानने वहाँके कुछ कारखानेको १३ लाख रुपयमें गवन-

मेन्टसे मोल छेलिया जिससे दर्बारकोभव बहुत आमदनी होतीहै। रीतोंका आधेसे अधिक भाग धन युक्त है जिसमें अच्छी २ लकड़ियोंके सिषाय चिपोंको छाल और कप्या आदिकी सपज विशेषतासे होतीहै। श्रीमानने इससे आमदनी पूर्वापेक्षा बहुत बढ़ाई है। श्रीमानने राज्यके दीवान राव सनाईब सिधुकी सेवासे प्रसन्न होकर उन्हें २५००० रु० वार्षिक आमदनीकीजागीर देकर सालाका ठाकुर बनाया था। वह जागीर अबतक उनकी विधवा और पुत्रके अधिकारमें है। स० ई० १९०४ से सेना विभागके कमांडर-इन-चीफ की जगह खाली रखकर उक्त पदका काम एक मिछीटेरी सिक्रेटरीकी मददसे श्रीमान खुद करतेहैं। अबसर आनेपर अनेक और विभागोंमें भी फेरफार करके श्रीमानने सुयोग्य कर्मचारियोंकी नियुक्तिकीहै। श्रीमान निपुण शिकारी हैं। अयोग्य और अपराधी कर्मचारियोंपर दया नहीं करतेहैं। राजमद और युवावस्थाके दुर्घटनाओंका केश माधमी आपम नहीं पाया जाताहै। इसी कारण अत्यन्त पुष्ट और नीरोगहैं। स्वभाव अत्यन्त सरल है। साधारण मनुष्योंकी तरह परिश्रम करनेसे भी नहीं हिचकते हैं। सब बातोंकी खबर रखते हैं। ईर्ष्याय अन्याय होनेकी संभावना नहीं रहती ॥

वेलिजली (रिचर्ड काली, मार्कुइस आफ-वेलिजली—Richard Colley Marquess of Wellesly)—२०जून, स ई १७६०को दृक्लिन(आयरलैंड) में जमे। गैरेट, प्रथम बर्ल आफू-मार्निङ्गटन आपके पिता थे। एटन काउन्सिल में शिक्षा पाई। वियरल्लस्टनकी सरफसे पार्लियामेंटके मेम्बर हुये। शीघ्र ही मैनी कोषविभागका पद पाया। १७९३ में प्रिंसीपॉसिलके मेम्बर हुये और पिताके मरने पर लार्ड मार्निङ्गटनवा खिताब पाया। १७९८ से १८०५ तक गवर्नर जनरल हिंदू रहे। १७९० में मार्कुइस आफू वेलिजलीका खिताब पाया। १८११ और १८३३ में दो बड़े आयरलैंडके लार्ड कफ्टिमेन्ट हुए। १८३१ में लार्ड स्टेवेंडका पद पाया। दो शादिय कीं। पहिलीस बई बच्चे हुए जो मरगये। दूसरी शादीसे जो ६५ सालकी उम्रमें कीपी कोई सन्तान नहीं हुई। आप बड़े मिठान थे और प्रेषकार भी थे। जब हिंदोस्थानमें गवर्नर जनरल होकर आये तो उन दिनों दिल्लीके मुगलराज्यकी हीन वशा थी; अनेक राजे, नवाब और सुबेदार स्वाधीन हो बैठेथे; मरहठे जोरपर थे और आपसमें फूट होनेके कारण फरासीसका दबदबा बढ़ता जातथा। यह हालत देख लार्ड वेलिजलीने राजाओं, नवाबों इत्यादिकों अपने साथ एक सहायक सेनालीमें प्रिंसीपॉसिल फरासीसका दबदबा घटानेकी खाल सार्चा। उसीके अनुसार सबसे प्रथम निमान हैदराबादने विना युद्धकी नीमत आये १७९८ की सन्धिसे अनुसार विना अंग्रेजापी सम्मतिसे किसी किराईको न रखनेका वायदा किया और फरासीसी सेनाको अपने राज्यसे दूर किया। १८०१ में नवाब वजीर अबदाल खानकी सन्धिसे अनुसार सहायक सेनाके पक्षके लिये गंगा और यमुनाके

घाणिका मुल्क (दोआबा) और वहेलखण्ड अंग्रेजोंको बेदिया । परचात् वेल्डि-जकीने मैसूरके टीपू मुल्कतानकी फुरासीखेसि सम्बध तोड़ने और अंग्रेजोंके साथ सहायक मंडलीम सम्मिलित होनेके लिये लिखा । टीपूके कान न करने पर १७९९ में तृतीय मैसूरयुद्ध भारत हुआ।लार्ड वेल्डिजकीने खुद चढ़ाई की। टीपू वीरतासे लड़कर श्रीरङ्गपट्टनके किल्लेमें मारा गया और उसका राज्य अंग्रेजों तथा उनके साथी निज़ाम और मरहटोंने आपसमें बाँटा लिया । इसी समय कर्नाटक और टैन्जोरका राज्य भी अंग्रेजी अधिकारमें आया । यह सब मिलाकर प्रायः सतनाही मुल्कका जितना भव मद्रास प्रेजीडेन्सीमें दाखिल है ।

टीपूके मुफावलेमें अभी तक अंग्रेजोंके साथ दो दफे मरहटे लड़ चुके थे लेकिन निज़ामकी तरह सहायक मंडलीमें दाखिल नहीं थे । बरोडाके गापकवाड़, नागपुरके भासला, इन्दौरके होलकर और मालवाके संधिया उस समयके मुख्य मरहटा सरदार थे और पूनाके पेशवा इन सबके प्रधान थे, लेकिन नष्टबुद्धिको प्राप्त होनेके कारण आपसम मिलकर नहीं चलते थे । १८०२ में होलकरसे परास्त होकर पेशवाने अंग्रेजोंके साथ वैसीनकी संधि की जिसके अनुसार अंग्रेजोंके सिवाय किसी देशी, या फिरंगी शक्तिसे सम्बध न रखनेका वायदा किया और सहायक फौजके खर्चके लिये कई मिले अंग्रेजोंको दिये जिससे बम्बईकी तरफ अंग्रेजी राज्य पहिलेकी अपेक्षा अधिक बढ़ गया। मरहटोंकी स्वाधीनताका नाश करके यह मेळ संधिया और भोंसलाको पखन्द नहीं आया मतपव द्वितीय मरहटा युद्ध छिड़ा । इसमें गवन्नर जेनरलके भाईसर आर्यर वेल्डिजकी (इपूक आफ-वेल्डिजटन) और लार्ड लेक अंग्रेजी फौजके सेनापति थे और दूसरी तरफ संधिया, भासला और जस्वन्तराव होलकर थे । आर्यर वेल्डिजकीने असाई और आरगंमके युद्धोंमें भोंसलाको परास्त करके अहमदनगर छोड़ लिया छोट लेफने अलीगढ़ और लखवाड़ीके युद्धोंमें संधियाको परास्त किया और दिल्ली तथा आगरा के शहर छीनलिये । हारकर भोंसला और संधियाने १८०३ के अन्तमें संधिकी जिसके अनुसार संधियाने मुगल सम्राट शाह आलम मध्य सहित जमुनाके उत्तरोत्तर सब देश अंग्रेजोंके हवाले किया जो नवाब अजीर अवधसे पायेहुये मुल्कके साथ मिलकर पश्चिमोत्तर प्रदेश हुआ । भोंसलाने अंग्रेजोंको बड़ीसा और निज़ामको बरार दिया । महाराजा जस्व-तराव होलकर इस अवसरपर पराजित नहीं होसके उन्होंने १८०४ में कर्नैल फानसन साहबको मध्य हिंदम बेतख्त हराया और १९०५ में लार्ड लेकका मुंह भरतपुरके किलेपरसे फेर दिया गया ।

शायस्ताखीं, हफतहजारी, खानेजहाँ, अमीरूल उमरा, उमदतुल्मुल्क, सिपह सालर वहादुर आपका मखली नाम मिर्जा भूतालिया।मलिका नूजहाँ

के आप समीपी नातेदारये। मुगलसम्राट शाहजहांकी फौजम अपने बाप यमीर खाने भासफखौंके नीचे नौकर हुयेये और कई छद्माइयोंमें बहादुरीसे लड़कर पञ्च हजारी मनसब तथा दायस्ताखौंका खिताब पायाया। फिर दक्षिणदेशीय निजामशाही वंशके बादशाहोंको परास्त करके तथा मरहटासे लड़कर बिहारकी सूबेदारी पाईथी। पश्चात् माळवाकी सूबेदारी पर भेजेगयेये और औरंगजेबके साथ यल्लख तथा यकलानाकी छद्माइयोंमें रहेये। कुछ दिनों बाद इहिआदे मुरादकी जगह कुछ दक्षिणकी सूबेदारी पाईथी फिर औरंगजेबकी मातहितामें तानाशाह और अबुल हसनसे लड़ेये। भतमें मुगल सम्राट् शाहजानि प्रसन्न होकर छःहजारी मनसब तथा खान जहाँका खिताब आपको दियाया। औरंगजेब और दाराशिकोहमें भेद करानेका काम भी आपको सौंपागयाया। शाहजहांके बीमार पड़नेपर जो तख्तके वास्ते झगड़ा हुआया उसमें आप औरंगजेबके सपके थे। औरंगजेबने तख्तपर बैठकर आपको हफ्तहजारी मानसब, अमीरुल उमराका खिताब तथा दो करोड़ दामकी जागीर दीथी और मुल्हमां शिकोहदेी पकड़नेके लिये आपको तईनाघ कियाया। मुल्हमांशिकोहको पकड़लाने पर दक्षिणकी सूबेदारीपर फिर भेजेगयेये। कई सिपह सालारोंके मारे जानेपर औरंगजेबने आपको शिवाजी मरहटाके दमन परणार्थ भेजा लेकिन वहाँ आपका छोटा पुत्र अबुल हसन मारागया, आपकीभी एक उगली कटगई। आपकी फौज छिन्नर वितरहोगई और आपको जान सुराकर भागनापड़ा। इसके पीछे बंगालकी सूबेदारी आपको मिली। वहाँ चिटागांव विजय करके उमद जुल्मुल्कका खिताब पाया। फिर आगरेकी सूबेदारीपर बदली होगई। भतमें बंगालकी सूबेदारीपर और फिर आगरेकी सूबेदारी पर बदल दियेगये। ११०५ हिजरीमें मरे।

शाहजी भोंसला (मरहटाराज्यके संस्थापक महाराज शिवाजी भोंसलाके पिता)—आपकेपिता माळोजी भोंसला सृपातया पूनाके जागीरदारये। लुखर्जा यादवरावकी पुत्री जीजीबाईसे स० १०१६०११ म आपकी शादी हुइयो। जीजीबाईके पिता निजाम शाहीद्वारके भाधीन एक बड़े जागीरदारये। जब मुगल सम्राट दिल्लीने महमद नगरपर अधिकार करलिया तो स ई १६२१ में लुखर्जा मुगलोंकी तरफ चले गये और शाहजी निजामशाही सरकारकी तरफ होगये। किसी २ छद्माइम समुर दामादकामी सामना होनाता था। स ई १६२६ में शाहजी हारकर भागे। जीजीबाई जो उनके साथ २ युद्धस्पलम छद्माइी थी घोड़ेपर सवारहो उनके साथ भागी। लुखर्जा ने पीछा किया और जीजीबाईकी जो उनदिनों गर्भलेथी पकड़कर शिवनेरीके किलेमें छेद करदिया। स ई १६२७ थी साल केद्वीमें जीजीबाईके गर्भसे शिवाजीका जन्म हुआ। स ई १६३० में लुखर्जाके मारेजानेपर जीजीबाई मुगलोंके हाथ पड़ी और मरहटोंने निककर

बड़ी कठिनाईसे उसको छुड़ाया । पश्चात् शाहजीने नवाय धीजापुरके यहाँ मौकरी करके कनाटकमें बड़ी जागीर पाई और अपने ज्येष्ठपुत्र शम्भाजीको तथा नई विवाहिता स्त्री मुकाबाईको अपने साथ रखके जीजीबाद और शिवाजीको पूनाकी जागीरपर भेज दिया । पूनामें शिवाजीका वैभव बहुत कुछ बढ़ा (देखो शिवाजी) । स ई १६४५ म सुलताम धीजापुरकी अनुमतिसे बाजीपोरपुरेने शाहजीको दगासे कैद करा दिया । स ई १६५३ में शाहजीने कैदसे रिहाई पाई । इससे पहिलेही उनके पुत्र शम्भाजी विद्रोहियोंके हाथसे मारे जानुकेये और शिवाजीने अवसर पाकर अपने पिताके शत्रु बाजीपोरपुरेको सपरिवार नष्ट करदिया था । कैदसे छूटकर शाहजी अपने पुत्रसे मिलनेको गये । स इ १५९४ में जन्मे, स ई १६६४ में मृत्यु ।

शाहूछत्रपति, महाराजा, जी सी यस आई, (कोल्हापुर नरेश)—आप कागळ नरेशके पुत्रहैं और कोल्हापुरकी गद्दीपर दत्तक होकर आयेहैं । स० ई० १८७४ मे जन्मे । १८८३में महाराजा शिवाजी स्वतंत्रके याद कोल्हापुरकी गद्दीपर बैठे । १८८५ से ९० तक राजकुमारकाछिजमें शिक्षा पाई और हिंदोस्पात तथा सीलोनमें भ्रमण करके अनुभव प्राप्त किया। १८९१की साल बढोदामे आपका विवाह हुआ । १८९४ में ब्रिटिश गवर्नमेंटने राज्यका पूर्ण अधिकार आपको सौंपा आप घोड़ेपर खूब चढ़ते हैं, एक दफे ६ घंटेमें ११० मील घोड़ेकी पीठपर गयेये । १८९८ में ब्रिटिश गवर्नमेंटने जी सी यस आई का खिताब आपको दिया । १८६२ में कोल्हापुर राज्यसे प्राणदण्ड देनेका अधिकार छेड़िया गयाथा लेकिन १८९६ में आपको फिर मिलगया । कोल्हापुर राजधानीमें आपने एक बृहत् विद्यालय तथा एक शफाखाना बनवायाहै और कई बाग लगवायेहैं । राजप्रथम आपको प्रशसनीयहै । ब्रिटिश गवर्नमेंट आपसे प्रसन्नहै । व्यापारियाको उत्तेजना आपसे मिलतीहै । राजराजेश्वर पद्मयह सप्तमके राज्याभिषेकके अवसर पर निमंत्रण पाकर आप इङ्ग्लैंड पधारेये । कोल्हापुर राज्यके भर्तगत विठ्ठलगढ़, कागळ भादि ११ छोटे राज्यहैं और इस राज्यसे मरहटा राज्यके संस्थापक महाराज शिवाजीके वंशका नाम खिरस्वायी है ।

सरदारसिंह, महाराजा, जी सी यस आई (जोधपुर नरेश)—आप स्वर्गीय महाराजा यशवन्तसिंह, जी सी यस आई के पुत्र हैं । स० ई० १८७७ में जन्मे । चूडीकी राजकुमारीसे तथा महाराज राजाराम सिंहकी राजकुमारीसे शादी हुई जिससे कई सन्तान हैं । अमेजी भाया और पोछो तथा सैनिक छामोंमें अच्छी योग्यता रखतेहैं । १८९७ में ब्रिटिश गवर्नमेंटने आपको राज्यका पूरा अधिकार दिया । १९०१में सीलोन, आस्ट्रेलिया, फ्रांस और लण्डनकी यात्रा करके राजकीय प्रथम इत्यादिका अनुभव प्राप्त किया । जोधपुर नरेश राठौरजातिके मुखिया होकर छ राठौरराज्योंके अग्रणीहैं । जोधपुरराज्यमें ३७००० वर्गमील भूमि है ।

३१६२ सवार। ३६५३ पैदल और २१ तोपें रखनेका अधिकार है। नेशनल सलामी १७ फ़रेंकी है। वार्षिक आय ४९, ३७००० रुपयेकी है।

सालिसबरी (रायड आर्यर टालबट गैस्कापन डेविल, के जी, पी सी यफ भार. यष, डी सी यल यल यल यल डी, डी यल, जे पी तृतीयमाइ इस भाफ सालिसबरी Robert Arthur Talbot Gascoyne Cecil, B G, P C, F R S, D O L, L L D, D L, J, P 3rd Marquess of Salisbury)-३फरवरी, स० ई० १८३० को हैटफील्डमें जन्म पिता भापके द्वितीय मार्कुइस भाफ-सालिसबरीये जिनके देहांत होनेपर १८६८ मार्कुइसका खिताब पाकर भाप हाइसभाम वासिलि हुये। १८५७ में एक बर्मी रफी बेटीसे शादीकी। पटन और फ्रायस्ट चर्च कालिज, आक्सफोर्डमें शिक्षा पाकर ग्रेजुएट हुये। विज्ञान और रसायनादि शास्त्रोंमें अपूर्व योग्यता रखतेये इसके सिवाय प्रसिद्धवक्ता तथा प्रवक्ता भी थे। १८५३ में आइसोल्सकालिज आक्सफोर्डके सभासद बनाये गयेये। १८६९ से अन्त समय तक भावसपोड यूनीवर्सिटीके चैन्सेलर रहे। १८५३ से ६३ तक स्टैमफोर्डकी तरफसे पार्लियामेंटके मेम्बर रहे। १८६६ से ६७ तक भारतके मंत्री भाफ-स्टेट रहे। १८७४ से ७८ तक इन्डिया कौंसिलके मेम्बर रहे। १८७६ की साल कान्स्टैन्टीनोपिलकी कांफरेन्समें राजदूत होकर गयेये और १८७८ की साल वर्डिनकी कामिशन घुटिश गवर्नमटकी तरफसे असीम शक्ति पाकर संयुक्त हुये धोभाधिकार विद्या यल वासियाकी दृष्टिमें भाप विद्यापुद्धिके छिदागले सर्वापरहोकर फानजर वेदिव दलके सर्वस्वीकृत प्रधान पुरुष थे। इसी कारण १८८१ से ८५ तक, १८८६ से ९२ तक और १८९५ से १९०२ तक, कुल प्राय २० वर्ष इंग्लैंडके प्रधान मंत्री रहे। बीच २ में गैर मुफलाये मंत्री भाफ-स्टेट तथा मंत्री कोय विभागके पद पर भी काम किया। भापके मंत्रित्वके समयमें घुटिश राज्यकी बहुत उन्नति हुई और अन्य राज्योंकी दृष्टिमें उसका बल प्रभाव बहुत कुछ बढ़गया। आयर्लैंडवालोंको भापहाने शशाभूत किया, निसर तथा सोडानमें मंत्रित्वकी प्रधानता भापहीके समयमें प्रतिष्ठित हुई और भापहीके समयमें सम्पूर्ण दक्षिण अफरीका अफ्रीकी राज्य बनगया। भाप ग्रेट इस्टन रेल्वके प्रधान थे। १९०० से लार्ड मिथिलीलि और वेस्ट मिनिस्टरके हार्ड स्टैषंडका कर्तव्य तथा अनेक और बड़े २ फाम भापकी सुपुर्दगीम थे। २०३०० एकर भूमि भापकी जमींदारीमें थी। वार्डकौन्ट फ्रेनघॉन भापके पुत्र हैं। भापका वंश प्राचीन और प्रतिष्ठित है। भापके अनेक पूर्वज भी बड़े २ पदोंपर रहेये। १९०३ में मुद्रापके कारण इस्तीफा दिया और भापके भात्रे हाट वेल्फोर सुपुर्दगी हुये। १९०४ में परलोकगामी थे।

सुलतानसिंह राना (प्रसिद्ध लक्ष्यवेधी) दक्षिणके निवासी इन्हें राणा सरतानसिंह कहते हैं। वि सं १९३० की साठ हॉबर्टिके क्षत्रिय राज्यवंशम आपका ज म हुआ। हॉबर्टिके समीप रंगपुरमें आपकी कुछ जागीर है। आपके किसी पूर्व पुरुषने मुगलपुत्रके समय महाराना उदयपुरकी रक्षा करके रानाका खिताब पायाया। आपके पिताका नाम भूपतिसिंह और काकाका नाम केशरीसिंह था। काका केशरीसिंह बचपनहीसे आपको गोदम बैठलाकर बन्दूक बछाना तथा निशाना लगाना सिखाया करतेये और रामायण, महाभारतादिकी कथायें सुनातेये। इस प्रकार बड़े होतेहुये आप हिंसक जीवोंका शिकार करने लगे और महाभारतके अजुहार निशानेबाजीका अभ्यास बढ़ाने लगे। धीरे २ लक्ष्यवेधमें पारगत होगये। भेद इतनाही रहा कि प्राचीन धीर तो घाणसे लक्ष्यवेध करतेये लेकिन आप बन्दूकपा पिस्टोलस करतेहैं। वि० सं० १९६२ में आपकी उम्र ४२ वर्षकी है। इस समय आप ३०।५५ प्रकारके प्रयोग करसकतेहैं। पुत्र शूरसिंहको भी आपने इस विद्यामें पारगत करदियाहै। (१) बन्दूकको दहिने भयवा बायें कंधेपर या टांगोंके बीचमें रखकर खड़े, बैठे छेदेहुये हाथसे भयवा पैरसे बन्दूक चलाकर ठीक निशाना मारसकतेहैं। इसीका नाम सक्ष्यवेध है। (२) चौखुटी छकड़ी पर धंधीहुई चार कुम रियोंमेंसे जिसे कहाजाय उसे चक्र कराते रहनेकी स्थितिमें तोड़देतेहैं इसीको चळलक्ष्यवेध कहते हैं। (३) श्लोक पठते २ निशाना मारतेहैं। (४) जलतीहुई मोमबत्तीको गोलीसे बुझादेते हैं परन्तु बत्तीमें कुछ अन्तर नहीं आताहै। (५) किसीके शिर भयवा हाथमें नारियल देकर उसकी नरेंदीको तोड़देतेहैं परन्तु न तो उस मनुष्यके कुछ घोट आती है और न गोला टूटने पाताहै इसीका नाम भयानक वेध है। (६) कुपेंके पानीमें पड़ेहुए सूखे नीबूमें देखी गोली मारतेहैं कि वह कुपेंके चार आपडताहै। (७) एक घड़ेके भीतर ४ रगकी कुमरियोंको रखकर धड़ेक घूमते रहनेपर जिस रगकी कुमरीको कहा उसीको बिना देखे तोड़ देतेहैं इसीका नाम महारयवेध है।

८) महाराजा दशरथ और पृथ्वीराजके शब्दवेधा बाण मारनेकी बात प्रसिद्धी है, आप भी आँखोंमें पट्टी बाँधकर चार रगके रखेहुये घड़ेका शब्द सुनते और उसे मननकरके फिर घड़ोंका स्थान बदलदेनेपर भी जिस रगके घड़ेको कहा उसीको तोड़देतेहै। (९) द्रुपदराजाकी सभांम जिस मारस्यवेधने सब राजाओंकी बुद्धि बकरादीर्घा वह मारस्यवेध भी आप करतेहैं अथात् ऊपर खम्भेपर एक मछली टांगीजातीहै उसके नीचे एक बड़े बर्तनमें भरकर पानी रखाजाताहै जिसमें मछलीको छाया पड़तीहै, उस छायाको देखतेहुये आप एटकतेहुए तराजूमें चढ़तेहैं और शरीरका गुरुत्व केन्द्र ठीक रखतेहुए ऊपर टंगीहुई मछलीका वेध करतेहैं।

इन दिनों आप प्राचीन धनुर्विद्या और मंत्रोंकी खोज कर रहे हैं और इस उद्योगमें हैं कि कोई राजा महाराजा उपायामशाला खोलकर ऐसा प्रबंध करे कि जिससे प्राचीन धनुर्विद्याके सहारे इस प्रकारकी मिशानेबाजीकी शिक्षाका प्रचार हो। आपकी विद्याका समतकार उदयपुर, निजाम, बड़ोदा, पोरबन्दर, षाँसा, शाहपुरा, खिरोही, लीमड़ी, खंघात, बड़वान, सांगली, इचलकरंगी, भाधनगर, घांगघा, भरतपुर, किरानगढ़, जूनागढ़, मैसूर आदिके नरेशाने देखा और प्रसन्न होकर सर्टिफिकेट दिया है।

हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) इस महादार्शनिकका जन्म सन् १८२० की साल इंग्लैंडके डरबी नामक शहरमें हुआ। इसके बाप छड़वाँको पढाया करते थे और स्वचा पादरी थे। बाप और स्वघरसे इ ने पिर शिक्षा पाई थी और किसी मदरसे में नहीं पढ़ा था। वैज्ञानिक विषयोंकी ओर इसकी प्रवृत्ति शुरूहीसे थी। यह जबतक किसीयातको तजरिबसे खूब नहीं करते तबे जबतक उसपर विश्वास नहीं करते थे। इसी आदतके अनुसार पूरा तब ज्ञानियोंके सिद्धांतोंको सुपस्थापनमानकर इन्होंने उनकी परीक्षाकी और उनके खण्डनीय अंशका कठोरता पूर्वक खण्डन किया। १७ वर्षकी उम्रम काम सीखकर यह रेलवेके मुहकमेंभ यंत्रिनियर हुये लेकिन ८ वर्ष बाद इस्तेफाद दिया। अनेक सामयक पुस्तकोंमें लेख लिखते २ इनकी लेखन शक्ति प्रबल हुई और सम्पादन करना तथा ग्रथ रचनाही इनका एक मात्र व्यवसाय हुआ ३० वर्षकी उम्रम इन्होंने स्पेशल स्टेटिक्स नामक किताब लिखी जिसमें सामाजिक और राजनैतिक विषयोंका विश्चार था। इनकी बुद्धिका मुकाब विशेष करके सृष्टि रचना और अघ्यारम विद्याकी तरफ था। यह प्रवृत्ति धीरे धीरे मविदिन बढ़ती गई और यह उरक्रान्त वादी होगये। उरक्रान्तके १६ सिद्धांत इन्होंने निकाले। संसारके सब दृष्टादृष्ट व्यापार इन्हीं नियमके अनुसार होते हैं इस वाक्यके सिद्ध करनेके लिये इन्होंने अपरिमित श्रम किया। यह सृष्टिक्या ईश्वरने पैदाकी है, या पदार्थोंहीम कोई ऐसी शक्ति है जिसके कारण सब आपसी आप उत्पन्न होगये हैं? जन्म क्या है, पुनर्जन्म क्या है, मरण क्या है, धम्मक्या है, पापपुण्य क्या है, सुख दुःख क्या है, संसारमें जितनी घटनाएँ होती हैं वह किन नियमके अनुसार होती हैं? दिन रात स्पेन्सर साहब इन्हीं बातोंके विश्चारमें संलग्न रहते थे। यह अम्पास इन्होंने इतना बढाया कि संसारमें ऐसा कोई भी शास्त्रीय विषय शेष नरहा जो इनके मानसिक विश्चारांकी कसौटी पर नफसा गया हो। नये २ सिद्धांतोंके जिहालनेमें इनकी बुद्धि विलक्षण थी। ५० वर्षतक इन्होंने यह काम किया और अपने नये २ सिद्धांतोंसे संसारको शक्ति और स्तम्भित कर दिया। १८८२ में स्पेन्सर साहब

अमेरिकाको गये, वहाँ उनका बड़ा भादर हुआ। योरप और अमेरिकाके विश्वविद्यालयोंने उन्हें दर्शनशास्त्रकी शिक्षा देनेके लिये कितनेही ऊँचे २ पद देना चाहा, परन्तु उन्होंने फुलफुलतल्लतापूर्वक अस्वीकार किया। यूनिवर्सिटीकी उपाधियें पानेकी इच्छा आपको कभी नहीं हुई और यदि विनापूछे कोई उपाधि आपको दीगई तो उसकी परवाह आपने नहीं की। स्वार्थान रहकर अपनी सारी उन्न विद्याभ्यासङ्गम सर्व करदी और अपने अभूतपूर्व धारवज्ञान पूर्ण ग्रंथोंसे संसारको अनन्त ज्ञान पहुँचाया। कित्तौ-बोके छपवाने और प्रकाशित करनेमें नफानुकसानका कभी विचार नहीं किया। आपकी तर्कशक्ति अद्वितीय थी, प्रतिपादनशक्ति विलक्षण थी, विप-क्षियोंकोभी आपके साम्हन सर झुकाना पड़ता था। आप अत्यंत कर्तव्य निष्ठ, दृढ निश्चय और निर्लोभी थे। आपका विद्याभ्यास दीर्घ, ज्ञानमण्डार अगाध और परिश्रम अप्रतिहत तथा। योरपमें आपका तत्वज्ञानी विरुद्धाही हुआ। आपने सवशक्तिमान् ईश्वरकी अपने समाज-घटना-शास्त्रमें कही स मालोसमा कीहै लेकिन सृष्टि सन्बन्धनी एक "अगम्य मर्यादा और सव व्यापक शक्ति" की महिमागाई है। अन्तके ५७ वर्षोंमें वह धनुधा बीमार रहे। अन्तमें ८ दिसबर १९०३ ई० को इस लोकसे उठगये। वह मरे थे कि हमको गाढ़ने की जगह जल्दानी वैसाही किया गया।

निम्नस्य ग्रंथ स्पेन्सरके रचे हुये हैं -

1 Principles of Psychology (मानस शास्त्रके मूलतत्त्व)

2 A Synthetic Philosophy in 5 parts—1 First principles, 2. Principles of Biology, 3. Principles of Psychology, 4 Principles of Sociology, 5 Principles of Ethics. (संयोगात्मक तत्वज्ञान पद्धति ५ भाग—१ प्राथमिक सिद्धान्त, २ जीवनशास्त्रके मूलतत्त्व ३ मानस शास्त्रके मूल-तत्त्व, ४ समाज शास्त्रके मूलतत्त्व, ५ नीतिशास्त्रके मूलतत्त्व)

3 Facts and Comments (व्याख्य और टीका)

4 Essays (निबन्ध ३ मिल्ल)

5 Various fragments (बहुसखी फुटकर बातें)

6 The study of Sociology (समाजशास्त्रका अध्ययन)

7 Education (शिक्षा)

हुरुक- (जापानकी पटरानी) - २८ मई १८५०को आपका जन्म उस उच्च वंशम हुआ जिसमें से जापानके उम्राट्, मिकाडो अपने लिये रानिय चुनाकरवैहें। आपको प्रथमही से रानीके योग्य शिक्षा दीगईपी। १९ वर्षकी उम्रमें वसमान मिकाडोसे आपकी शादी हुई। जब आप विवाहके भाई तो उस

समय जापानमें देशमुखारकी ह्छासे प्राचीन रीति नीति और स्थिति परिवर्तन होरहाया। देशस्थितिके परिवर्तनम सबसे अधिक और प्रथम भाग आपहीने लिया। पुरानी पोशाकके बदले यूरोपियन पोशाकका प्रचार किया जिसको प्रजागणने खुशीसे मङ्गीकार किया। यद्यपि पोशाक यूरोपियन ढंगकी पहनतीहैं लेकिन स्वदेशके आचार विचारोंको मानतीहैं। निमकी पूजीमेंसे दीन दुबियाको सहायता देतीहैं। अस्पतालोंमें जाकर रोगी सैनिकोंकी देखभाल किया करती हैं। चीन-जापान युद्धके अवसरपर आपने रामधरानेकी स्त्रियोंसे घायल सैनिकोंके लिये पहियें तैयार कराईंयीं जो अस्पतालोंमें काम आईं। घायलोंकी शुभ्राके लिये आपने स्त्रियोंकी Red Cross Society स्थापन कीयी। आप दयालु और बुद्धिमती हैं। सशर्ण, जागीरदार और दरबारियोंको सालमें एक दफ़ भोजन दिया करतीहैं। प्रभाकी हितकामनाके लिये सदैव चिन्तित रहतीहैं। कविता भी करतीहैं जो राजा मजाका समर्थ दृढ़ करनेवाली और आपसमें प्रीति बढ़ानेवाली होतीहै।

आपके गुणाका प्रभाव समाम राज्य पर इस तरह पड़है कि जिसस सम्पूर्ण प्रभा, राज्यके हानिनाशकी अन्ता हानिनाश समझतीहै। इस-जापान युद्धके समय जो १९०५ में जारीया रामधरानेजापानने अपने आरामके लिये १ पैसा भी खर्च न करनेका प्रण कियाया, देश आराम छोड़ दियाया, जापानी सैनिकोंके मारेजानेका हाल सुन २ कर आंसु बहायेये और रणशायी सैनिकोंकी माताओं और विधवाओंको सख्छी और सहायता दीयी। जापानी सैनिक भी भरने साम्राज्यकी प्रतिष्ठा बचानेके लिये जा तौड़कर लये और स्त्रियोंको परास्त करदेनेमें समर्थ हुये थे।

हार्डिङ्ग (वॉर्कौट हेनरी हार्डिङ्ग-Viscount Henry Hardinge)-सर हेनरी हार्डिङ्ग जो वॉर्कौट का खिताब पाकर एड हार्डिङ्ग हुये, स १७८५ की साल केन्ट (इंग्लैंड) में जमेये। रेवेरेन्ड हेनरी हार्डिङ्ग आपके बाप थे। आप १७९८ में अंग्रेजी सेनामें भरती हुए। १८०२ में लफ़्टिनेन्ट और १८०४ में कैप्टिन होकर दामे २ छत्रपद पर पहुँचे। इयुक्त आफ्—वेल्श स्ट्रानकी मातृ-हिस्तीम अनेक मुस्लाम लड़कर कैन्सी वी का खिताब पाया। पेनिनसुलर संग्राममें आपका एक हाथ भी जातारहाया। १८४४ से ४८ तक गवर्नर जनरल हिंद रहें। इंग्लैंडमें १८५६ की साल मरे। जय भान हिंदोस्थान मयिधे तो उध समय वंजाभी विपन्न राज्यके सिवाय अन्य सब हिंदोस्थानी राजे अंग्रेजोंके परास्त होनुकेये। सर वॉर्डिस मेटकाफके साथ जो महाराज रणजीत सिंहने संधि कीयी उसका पालन उद्दिने अपनेजति जी १८४५ तक पूर्णरितिके किया या स्वेडिन महाराजके सभराधिकारियोंमें आपसमें फूट फैली और साछवा कीगने गढ़कर अपनेही अमीर वजोरोंको मारना शुरूकिया। देवी दशमैं यनी

वन्दाने ६० हजार खालसा फौजको १५० तोपों सहित अंग्रेजी मुल्कपर चढ़ाई करनेके लिये भेजकर धरकी बला बाहर डालना चाही । यह खबर पतेही कमांडर इन-थीफ सर ब्लगफ और गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग मोरचे पर जाइते । ३ सप्ताहके बीच मुदकी, फिरोजपुर, मझीवाल और सोधरावनमें ४ युद्ध हुये । यद्यपि अंग्रेजी सेनाकी बड़ी हानि हुई लेकिन अन्तिम युद्धमें सिक्ख, सेना सतलज पार हटादीगइ और लाहौरपर अंग्रेजी अधिकार होगया । अंतमें सन्धि हुई जिसके अनुसार महाराज रणजीत सिंहके बालक पुत्रको लाहौरकी गद्दी मिळी, रावी और सतलजके बीचका मुल्क (जाळधर दो भाष) अंग्रेजोंको मिळा, खालसा फौजकी तादाद घटाईगई और लाहौर द्वारमें ब्रिटिश रेजीडेन्ट नियत कियागया । इस राजखेवाके उपलक्षमें सर हेमरी हार्डिंगको वाइकौनृका खिताब मिळा ।

हेस्टिङ्गज (लार्ड फ्रैन्सिस राडन, मार्कुइस आफ हेस्टिङ्गज—Lord Francis Rawdon, Marquess of Hastings) भायरलैंडमें ९ दिसंबर १७६०-१७५४की साल जन्मे। जान लार्ड राडन आपके चाप थे। हारोमें शिक्षा पाकर उस समयकी रीतिके अनुसार सर्वत्र यूरोपमें भ्रमण करके अनुभव प्राप्त किया था देशाटनसे लौटकर ब्रिटिशसेनामें भरती हुये और १७७३ में लफटिनेन्टका पद पाया। कुछही समय पीछे आपको अमेरिकामें उस युद्ध पर जाना पड़ा जो अमेरिकाकी रिपब्लिकने संयुक्त होकर स्वाधीनता पानेके लिये अंग्रेजोंसे ठानाया । ८ वर्ष पर्यंत वहा बड़ी धीरतासे झड़कर लूटा पद पाया । १७९३ में पिताके मरनेपर अर्ल आफ म्यापरा (लार्ड म्यापरा) का खिताब पाया । १८१४-१३ में हिंदो-स्थानके गवर्नर जनरल रहे । आपके हिंदोस्थान आनेके बहुत दिन पहिलेसे नैपाली गोरखे ब्रिटिश सीमामें आकर प्रजाको सतायाकरते थे । लार्ड मिन्टो और सर आर्ज धारलोने अनेक दफे उनको समझाया था लेकिन उन्होंने कान नहीं किया था १८१८ म लार्ड हेस्टिङ्गजने जनरल आर्कटलॉनीको पंजाबकी तरफसे नैपालपर चढ़ा दिया । पहिली दफे हारकर दूसरी दफे जनरल आर्कटलॉनीने हिमालय पर्वतपर स्थित गोरखोंके अनेक किल्लोंको जो अब पंजाब रेजीडेन्सीमें शामिल हैं फतेह करा दिया । दूसरी साल १८१५ में जनरल आर्कटलॉनीको पटनाकी तरफसे काठमांडूपर चढ़ाई करनेका हुक्म मिळा। हारकर गोरखोंने सेगौलीकी सन्धि स्वीकारकी जिसके अनुसार नैनीताल, मसौरी और शिमला अंग्रेजी अधिकारमें आवे । एधर मर्प्राहिके विदारियाकी लूटमारसे प्रजा तगयी । १८१७ में लार्ड हेस्टिङ्गजने उनपर चढ़ाईकी । विंदारी सर्दार चीनू परास्त होकर जगलको गागा और शीतेकी शिवार हुआ । दूसरा विंदारी सर्दार करीम हारकर अंग्रेजोंकी शरणगत हुआ। तीसरा विंदारी सर्दार अमोरखी टाकफा नवाय बना दिया जाने पर वश कियागया ।

विठारियोंको पामाल होते देख १८१७ में पूनाके पेशवा नागपुरके भासव और इन्दौरके होलकरने सर उठाया लेकिन परास्त हुये । यह युद्ध जो इतिहास तृतीय मरहटायुद्धके नामसे प्रसिद्ध है १८१८ में सन्धिद्वारा खतम हुया सन्धिकी शर्तोंके अनुसार पेशवाका मुल्क खालसा किया गया । पेशवाको दू हजार पाठह वार्षिक पेंशन देकर विटूर (फानपुर) में कैद किया गया । पेशवा की जगह प्राचीन मरहटाराज्यका नाम खिरस्यापी रखनेके लिये महााराष्ट्रियाजोंके एक वंशजको बोदावा मुल्क देकर सताराका राजा बनाया गया । भोंसला और होलकरके वंशके दो बालक घुटिया गवर्नेमंटकी रक्षा में नागपुर और इन्दौरकी गदियोंके धारिष करार पाये । संक्षेप इस सन्धिद्वारा अंग्रेजोंके प्रायः सब मुल्क मिळा जिनसे वर्तमान बम्बई प्रेसीडेन्सी बनी है । इस समय राजपुखानाके राजाभैरवी भी अंग्रेजी रक्षा में आना स्वीकार किया । छत्तीसगढ़ने केवल घुटिशराज्यकी सीमाही नहीं बढ़ाई किन्तु छुट्टेरे विठारियोंके नष्ट करके और मरहटों तथा गोरखोंको परास्त करके देशमें अमन चैन फैलाया जहाँ सुटजानेके भयसे रास्ता खटना काठिन था वही ठाटें हेस्टिंग्सके शासन प्रतापसे एक बुद्धिवाणी सोनेका ठेका शायमें लिये हुये खफर करनेमें लग्यो गे । १८२३ में ठाटें हेस्टिंग्स इङ्ग्लैंड वापिस गये और कुछही समयपरे परमधामको विधारे ।



